हृदन्तरज्ञान-तमो-वितान-निवारणं पण्डित-मण्डलीड्यम्। 卐 त्रिकालदर्शि प्रसरन्मयूखं 'मार्तण्ड पञ्चांग' मिदं चकास्तु ॥

श्री शंकरः शं करोतु।

भारतीय एवं पाश्चात्य ज्योतिष के विषयों से अलंकृत

पंचांग-प्रवर्तकः

चित्रापक्षीय निरयण, दृक्सिद्ध

अखिल भारतोपयोगी

विक्रम संवत् २०५६, शक संवत् १९२१
सन् १९९९-२०००, जय हिन्द संवत् ५२-५३

भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते॥

दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
स्व॰ पं॰ श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

श्री मार्त्तण्ड पञ्चांगम्

राजा गुरु

मंत्री बुध

पञ्चांगप्रवर्तक

अनेक ग्रंथों के यशस्वी लेखक स्व॰ पं॰ श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

सम्पादक मण्डल

श्री प्रियव्रत शर्मा, M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य, स्वर्ण-रजत पदक प्राप्त

दृक्सिद्धान्तभास्कर डॉ॰ शक्तिधर शर्मा M.Sc, Ph.D. (Nuclear Physics), (U.S.A.), F.R.A.S. (LONDON), M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), तीन स्वर्ण पदक प्राप्त

ज्योतिर्भूषण श्री इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,

गौरवशाली 72वाँ प्रकाशन वर्ष
स्थापित संवत् १९८४

प्रकाशक: रुचिका पब्लिकेशन्स
7/6411 देवनगर, आर्य समाज रोड़, करोल बाग, नई दिल्ली-110005

मूल्य ३५.००

अब प्रकाशित है

ग्रहयोग एवम् दाम्पत्य जीवन

अब प्रकाशित है

मिलान सम्बन्धी प्रत्येक समस्या का परिपूर्ण समाधान करने वाला चिरप्रतीक्षित यह अद्वितीय ग्रन्थ अब प्रकाशित हो गया है।

(लेखक :- प्रियव्रत शर्मा एम.ए., सिद्धांत ज्योतिषाचार्य, साहित्याचार्य)

विवाह-सम्बन्ध के निर्णय के लिए लड़के ओर लड़की के अष्टकूटों के गुणों की गणना और उनकी कुण्डलियों के मिलान पर आज तक कोई प्रामाणिक पुस्तक नहीं लिखी गई है। "ग्रहयोग एवम् दाम्पत्य जीवन" पुस्तक इस अभाव की पूरी तरह पूर्ति करती है। यह पुस्तक पांच अध्यायों में विभाजित है- प्रथम अध्याय में अष्टकूट का सांगोपांग विवेचन, द्वितीय अध्याय में मङ्गली दोष पर विस्तृत विमर्श, तृतीय अध्याय में विवाहमुहूर्त्त के साधन की सुबोध प्रक्रिया दी गई है। चतुर्थ अध्याय में ऐसे बीसों मौलिक कोष्ठक दिए गए हैं, जिनकी मदद से १९७० से २००० ई. तक (३१ वर्षों में) पैदा हुए वर-कन्याओं का जन्मलग्न, जन्मनक्षत्र, जन्मनवांश और जन्मकुण्डली बिना पुराने पंचांगों की सहायता के १०-१५ मिनटों में ही जानकर दैवज्ञ उनकी ग्रहस्थितियों का मिलान तथा अष्टकूटों के गुण आदि का निर्णय सरलता से कर सकता है। पंचम अध्याय में ज्योतिषसम्बन्धी अनेक विषयों पर अनेक वैदुष्यपूर्ण ज्ञानवर्धक मौलिक निबन्ध दिए गए हैं, जो ज्योतिष के चौंका देने वाले अज्ञात रहस्य उद्घाटित करते हैं। इस पुस्तक में दिए अनेक महत्त्वपूर्ण विषयों में से इन कुछ विषयों पर दृष्टिपात कीजिए:-

(१) **लड़का-लड़की के नक्षत्र चरणों के आधार पर बनाई गई विस्तृत गुणमिलान-सारणी ३६ बड़े पृष्ठों पर फैली है, जिसमें सभी अष्टकूटों के गुण और दोष तथा उनके अपवाद एक ही दृष्टि में तुरन्त देखे जा सकते हैं। इस प्रकार की परमोपयोगी विलक्षण महान् मिलानसारणी का निर्माण सचमुच एक ऐतिहासिक प्रयास है।**

(२) वर्ण, गण, नाड़ी आदि सभी दोषों के परिहार- वाक्यों का सोपपत्तिक सप्रमाण विवेचन तथा उनका वैज्ञानिक, मौलिक विश्लेषण तथा "नाड़ीदोषस्तु विप्राणाम्" और "एक-नक्षत्र-जातानां नाड़ीदोषो न विद्यते" - आदि अनेक निराधार परिहार वाक्यों का सप्रमाण निराकरण।

(३) मंगलदोष के अनेक परिहार वाक्यों की प्रामाणिकता पर विस्तृत सप्रपञ्च विचार-विमर्श एवं मंगली दोष के अनेक परिहार-वाक्यों का विश्लेषण-पूर्वक सप्रमाण खण्डन-मण्डन।

(४) मंगलीदोष का प्रतिशत बल बतलाने वाली अद्भुत मौलिक सारणी, जिसकी सहायता से लड़का-लड़की के मंगलीदोष का बल सूक्ष्मतापूर्वक बिना गणित के मिनटों में जाना जा सकता है। स्पष्टता के लिए अनेकों उदाहरण दिए गए हैं।

(५) मिलान में उपयोगी अन्य बीसों मौलिक सारणियां, जो लेखक के विस्तृत गम्भीर अध्ययन एवं अथक परिश्रम का परिणाम हैं।

(६) मिलान पर मिलने वाले विभिन्न मत-मतान्तरों का विश्लेषण।

इसके अलावा इस पुस्तक में अनेक ऐसे विषय आपको मिलेंगे, जो गुणमिलान और कुण्डलीमिलान पर आपकी विशेष ज्ञान वृद्धि करेंगे। "नाड़ी दोष होने पर भी सम्बन्ध किया जा सकता है", "वर कन्या की कुण्डलियों का मिलान न होने पर भी सम्बन्ध करने का ज्योतिषशास्त्र में निर्दिष्ट शास्त्रीय विधान क्या है?" - इस प्रकार की अनेक मिलान-सम्बन्धी समस्याओं का शास्त्र-प्रतिपादित समाधान विस्तारपूर्वक इस पुस्तक में सप्रमाण प्रस्तुत किया गया है। विषकन्या योग और मंगलीक दोष के उद्गम तथा विकास पर विशेष ऐतिहासिक विवेचन दिया गया है।

यह पुस्तक आपको वह सब कुछ बतलाएगी जो मिलान के लिए अपेक्षित है। इसे पढ़कर आपको आश्चर्य होगा कि मिलान में अनेक मूर्धन्य दैवज्ञ भी कितनी अक्षम्य त्रुटियां करते हैं और इस विषय में उनका ज्ञान कितना अधूरा है।

पुस्तक छप चुकी है। इसका पूरा मूल्य ३२५ रु. (डाक व्यय सहित) मनीआर्डर द्वारा नीचे लिखे पते पर भेजें। V.P.P. नहीं की जाएगी। पंचकूला में पोस्टल सुविधाएं सीमित हैं, प्रतिदिन एक व्यक्ति से अधिक से अधिक २०-२५ रजिस्टर्ड पार्सल ही पोस्ट आफिस द्वारा स्वीकार किए जाते हैं और हम भी उसी क्रम में पुस्तकें ग्राहकों को भेजेंगे, जिस क्रम में हमें उनके मनीआर्डर प्राप्त होंगें। इसलिए मनीआर्डर भेजने के बाद पुस्तक प्राप्त करने के लिए दो-तीन सप्ताह तक आपको प्रतीक्षा करनी पड़ सकती है-यह ध्यान रखें।

प्रो. प्रियव्रत शर्मा
59/6 (अभिजित्), P.O. पंचकूला-134109 (हरियाणा)

मूल्य ३०० रु. + डाक व्यय २५ रु.

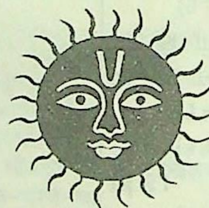
हृदन्तरज्ञान-तमो-वितान-निवारणं पण्डित-मण्डलीड्यम्। त्रिकालदर्शि प्रसरन्मयूखं 'मार्तण्ड पञ्चांग' मिदं चकास्तु॥

श्री शंकरः शं करोतु।



भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते॥

भारतीय एवं पाश्चात्य ज्योतिष के विषयों से अलंकृत



चित्रापक्षीय निरयण, दृक्सिद्ध

अखिल भारतोपयोगी

विक्रम संवत् २०५६, शक संवत् १९२१

सन् १९९९-२०००, जय हिन्द संवत् ५२-५३

पंचांग-प्रवर्तकः



दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
स्व. पं. श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

श्री मार्तण्ड पञ्चांगम्

राजा गुरु

मंत्री बुध

पञ्चांगप्रवर्तक
अनेक ग्रंथों के यशस्वी लेखक स्व. पं. श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

सम्पादक मण्डल
श्री प्रियव्रत शर्मा, M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य, स्वर्ण-रजत पदक प्राप्त
दृक्सिद्धान्तभास्कर डॉ. शक्तिधर शर्मा M.Sc, Ph.D. (Nuclear Physics), (U.S.A.), F.R.A.S (LONDON), M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), तीन स्वर्ण पदक प्राप्त
ज्योतिर्भूषण श्री इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,

गौरवशाली 72 वाँ प्रकाशन वर्ष
स्थापित संवत् १९८४

प्रकाशकः रुचिका पब्लिकेशन्स
7/6411 देवनगर, आर्य समाज रोड़, करोल बाग, नई दिल्ली-110005

मूल्य ३५.००

इस पञ्चाङ्ग में प्रयुक्त ज्ञातव्य सांकेतिक शब्द

अ.-	अस्त, अश्विनी, अनुराधा (नक्षत्र)। अतिगण्ड (योग), अग्नि (बाण)।
अं.-	अंग्रेजी (तारीख, मास), अंश।
आव.-	आवश्यकता में।
उ.-	उपरान्त, उदित, उत्तर।
उ. गो. -	उत्तर गोल।
क. -	करण, कर्क, कला।
कृ. -	कृष्णपक्ष, कृत्तिका (नक्षत्र)
क्रां. सा. -	क्रान्तिसाम्य (महापात)
गोधू. -	गोधूलि (लग्न)
घ. -	घड़ी।
घं. -	घण्टा।
चौ. -	चौर (बाण)
ति. -	तिथि।
द. -	दक्षिण।
द. गो. -	दक्षिण गोल।
दा. -	दान, पूजन।
दि. -	दिन।
दि. मा. -	दिनमान।
दि. ल. -	दिन का रु. न।
न. -	नक्षत्र।
निं. -	निम्बार्कों के लिए।
नं. -	नेप्च्यून।
नृ. -	नृप (बाण)।
प. -	पल, परिघ (योग), पश्चिम।
प्र. -	प्रविष्टा (पंजाबी तारीख)।
प्रा. -	प्रारम्भ।
भ. -	भद्रा, भरणी (नक्षत्र)।

भा. -	भाद्रपद।
मा. -	मार्गी।
मि. -	मिनट, मिथुन।
मृ. -	मृगशिरा, मृत्यु (बाण)।
या. -	यावत् (=तक)।
रा. -	रात्रि, राशि।
रो. -	रोग (बाण), रोहिणी।
ल. -	लग्न।
व. -	वक्री, वक्रगति से, वणिक्, वज्र, वरीयान् (योग)
वा. -	वार
वि. -	विकला, विष्टि (करण), विष्कम्भ, विशाखा।
वि. मु. -	विवाहमुहूर्त।
वै. -	वैष्णवों के लिए, वैधृति (योग) वैशाख।
व्र. स. -	व्रत सबके लिए।
शु. -	शुक्लपक्ष, शुक्रवार, शुक्र (ग्रह) शुभ, शुक्ल (योग)।
श. -	भारत सरकार द्वारा संचालित शक संवत्, तारीख-मास।
स. -	समाप्त।
सं. -	संक्रान्ति, संवत्।
सां. का. -	साम्पातिक काल।
सा. -	सायन।
स्मा. -	स्मार्तों के लिए।
ल. -	लग्न

इस पंचाग के तिथि, नक्षत्र, योग, ग्रह भोगांश और ग्रहों के क्रान्ति-शर की गणित श्री शक्तिधर शर्मा द्वारा विकासित *Computer Program* से की जाती है।

इस पञ्चाङ्ग के लिए आवश्यक निर्देशन

(१) इस पञ्चाङ्ग का निर्माण ग्रीन्विच से पूर्व रेखांश ७६°। ५२' एवं उत्तर अक्षांश ३०°। ४४' के आधार पर किया गया है, अतः यहां जहां विशेष निर्देश न किया गया हो वहां 'सूर्योदय' से हमारा अभिप्राय इसी स्थल के सूर्योदय से रहता है।

(२) यहां सर्वत्र निरयणपद्धति को अपनाया गया है। जहां सायनगणना की गई है, वहां निर्देश कर दिया गया है। चित्रापक्षीय अयनांश प्रामाणिक माने हैं। इस पञ्चाङ्ग में दिए गए अयनांश धूनन-संस्कार-संस्कृत (स्पष्ट) हैं।

(३) तिथि, नक्षत्र एवं करणों के सम्मुख दिए गए घटी-पल उनका सूर्योदय से समाप्तिकाल बतलाते हैं।

(४) इस पंचांग में केवल सूर्योदयव्यापी ही करण लिखे गए हैं, दूसरे नहीं।

(५) चन्द्रसञ्चार वाले कालम में राशियां के साथ दिए गए घड़ी-पल चन्द्रमा के राशिप्रवेश का काल बतलाते हैं।

(६) चन्द्रसंचार के आगे वाले कालमों में सूर्य के उदयास्त, जोकि भा. स्टैं. टा. में हैं, उपरोक्त स्थल के ही हैं। इनका सम्बन्ध सूर्यकेन्द्र से है। ये सूर्योदयास्तकाल किरण-वक्री-भवन संस्कार रहित हैं। प्रत्यक्ष देखने के लिए दो मिनट सूर्योदय में घटाएं एंव सूर्यास्त में जोड़ें।

(७) घड़ी-पलों वाले २४ पक्षों के लस्टर में पंचक-भद्रा की प्रारम्भ-समाप्ति, ग्रहों के उदयास्त, वक्र-मार्ग तथा राशि-नक्षत्र-प्रवेश आदि के सभी काल भी घड़ीपलों में ही हैं। यह घड़ीपल उपरोक्त स्थल के सूर्योदय से बीता काल बतलाते हैं।

(८) पंक्तियों (अष्टमी, पूर्णिमा, अमावस्या) के स्पष्टग्रहों के नीचे दैनिक-गति, उसके नीचे मार्गी या वक्री, उसके नीचे उदित या अस्त, फिर चरण सहित नक्षत्र का (जिस में ग्रह है उसका) निर्देश किया गया है।

(९) पंक्तियों की सभी कुण्डलियां सूर्योदय-कालिक हैं।

(१०) पञ्चाङ्ग की गणित, आचार्यों एवं ऋषियों द्वारा अनुमोदित सूक्ष्म दृक्तुल्य पद्धति द्वारा की गई है।

(११) यहां दिए गए ग्रह एवं शर भूमध्य दृश्य हैं।

(१२) जिस घटीपलात्मक तिथि, योग, नक्षत्र के आगे (६०/०) लिखा है, उस तिथि योग नक्षत्र की वृद्धि समझें। घण्टामिनटात्मक तिथि, नक्षत्र योग के आगे (. . . .) ऐसा चिह्न उस तिथि, नक्षत्र, योग की वृद्धि बतलाता है।

(१३) यहां दिया गया भा. स्टैं. टा. ८२°/३०' पूर्व-रेखांश के स्थल का स्थानीयमध्यमकाल है।

(१४) दैनिक लग्न सारणियां चण्डीगढ़ के लिए हैं, ये सारणियां चित्रा-पक्षीय निरयणलग्नों का समाप्तिकाल बतलाती हैं।

(१५) पञ्चाङ्ग में क्षीणतिथि, नक्षत्र, योग के समाप्तिक्षण ही दिए गए हैं, पूर्ण भोग नहीं।

संक्षिप्त विषय-सूची (सं. २०५६ वि.)

अनन्त श्री विभूषित श्रीकांचीकामकोटि-पीठाधिपति , जगद्गुरु श्री शंकराचार्य जी का शुभाशीर्वाद
(मुद्रा)

श्रीमत्परमहंस-परिव्राजकाचार्यवर्य्य-श्रीमच्छंकर-भगवत्पद-प्रतिष्ठित-श्रीकांचीकामकोटिपीठाधिप-जगद्गुरु-श्रीमच्चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती-श्रीपादादेशानुसारेण श्रीमज्जयेन्द्र सरस्वती-श्रीपादै:क्रियते नारायण स्मृति: ।

श्रीसदाशिवआप्टे-महोदयस्य शिष्यै:श्रीमुकुन्दवल्लभ शर्मभि: प्रवर्तितम् अधुना श्रीप्रियव्रतशर्म-श्रीशक्तिधरशर्म-श्रीमदिन्दुशेखर शास्त्रिभि:तन्त्रद्वारा शुद्ध-स्फुट-गणित-रीत्या परिशोध्य स्वीकृतया दृग्गणितपद्धत्या सम्पाद्यते। एतत्पञ्चांगं धर्मशास्त्रसम्मतैकमात्र-दृग्गणितपद्धत्यनुसारि व्रतपर्वादि-धार्मिक-कृत्यानुष्ठाने धार्मिकै: प्रयोज्यम्-इति सम्मन्यामहे। एतस्य सम्पादक: डॉ. शक्तिधर शर्मा ज्योतिष-गणितादि-विषयेषु महत्प्रागल्भ्यं भजते, इति अस्माभि: स: सप्रसादं "दृक्सिद्धान्तभास्कर:" इति विरुदेन पूर्वमेव सभाजित:। अधुना श्रीमार्तण्डपंचांगमेतत् स्वर्णजयन्ती - महोत्सवमनुभवत् अशेषास्तिक - लोकोपकारकं सद् श्रीचन्द्रमौलीश-कृपया प्रचुरं प्रचारं प्राप्नुयादित्याशास्महे।

काञ्चीक्षेत्रम् नारायणस्मृति:

अनल चैत्रामावस्या (सन् १९७६ ई.)

इस वर्ष के विशेष ज्ञानवर्धक, उपयोगी एवं रोचक नए विषय

पाठकों के लिए हर्षद समाचार:- सं २०५७वि. का श्रीमार्त्तण्डपंचांग "वास्तुशास्त्र विशेषांक" होगा, जिसमें लगभग ३० पृष्ठों के मौलिक महानिबन्ध में वास्तुशास्त्र के सभी सिद्धान्तों के पूर्वाग्रहमुक्त विशद सचित्र विवेचन के साथ-साथ उनकी प्रामाणिकता को गणित एवं तर्क के निकष पर पूरी तरह कसा जाएगा। अपनी प्रति पहले ही सुरक्षित करवा लें।

प्रमुख-प्रमुख व्रतपर्व (१ जनवरी सन् १९९९ ई. से सन् २००० ई. तक)

व्रतपर्व	तारीख	वार	व्रतपर्व	तारीख	वार	व्रतपर्व	तारीख	वार	व्रतपर्व	तारीख	वार
इंग्लिश नववर्ष प्रारम्भ	१ जन, '९९	शु.	भद्रकाली एकादशी (पं.)	११मई'९९	मं.	सिद्धि विनायक व्रत	१३सितं'९९	चं.	अक्षय नवमी	१७नव.'९९	बु.
माघस्नान प्रारम्भ	२ "	श.	शनैश्चरी अमावस	१५ "	श.	ऋषि पञ्चमी	१४ "	मं.	कूष्माण्ड नवमी	१७ "	बु.
संकट चतुर्थी	५ "	मं.	वट सावित्री व्रत (अमा पक्ष)	१५ "	श.	सूर्य षष्ठी	१६ "	गु.	भीष्मपञ्चक प्रारम्भ	१९ "	शु.
लोहड़ी (पंजाब)	१३ "	बु.	भावुका अमावस	१५ "	श.	श्री महालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ	१७ "	शु.	तुलसी विवाह	२० "	श.
मकर संक्रान्ति	१४ "	गु.	मल (अधिक) मास प्रारम्भ	१६ "	र.	श्री राधाष्टमी	१८ "	श.	वैकुण्ठ चतुर्दशी	२१ "	र.
मौनी अमावस	१७ "	र.	**श्री गंगा दशहरा**	२४ "	चं.	श्रीचन्द नवमी	१९ "	र.	भीष्मपञ्चक समाप्त	२३ "	मं.
गौरी तृतीया (गौतरी)	२० "	बु.	मल (अधिक) मास समाप्त	१३ जून	र.	श्री वानम जयन्ती	२२ "	बु.	कार्त्तिकस्नान समाप्त	२३ "	म.
वरदा, तिल चतुर्थी,	२१ "	गु.	रम्भा तृतीया	१६ "	बु.	श्रवण द्वादशी	२२ "	बु.	कार्त्तिक-पूर्णिमा	२३ "	मं.
कुन्द चतुर्थी	२१ "	गु.	**निर्जला एकादशी**	२४ "	गु.	अनन्त चतुर्दशी	२४ "	शु.	**श्री गुरुनानक जयन्ती**	२३ "	मं.
श्री पंचमी, **बसन्त पंचमी**	२२ "	शु.	वटसावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष)	२८ "	चं.	**श्राद्ध प्रारम्भ**	२६ "	र.	श्री कालाष्टमी (भैरवाष्टमी)	३० "	मं.
रथ सप्तमी	२४ "	र.	रथयात्रा (पुरी)	१४ जुला.	बु.	श्री महालक्ष्मी व्रत समाप्त	१ अक्तू.	शु.	गुहषष्ठी, चम्पाषष्ठी	१४ दिस.	मं.
आरोग्य सप्तमी	२४ "	र.	कुमार षष्ठी	१८ "	र.	**श्राद्ध समाप्त**	९ "	श.	मित्र सप्तमी	१५ "	बु.
श्री भीष्माष्टमी	२५ "	चं.	विवस्वत् सप्तमी	१९ "	चं.	शनैश्चरी अमावस	९ "	श.	श्री गीता जयन्ती	१९ "	र.
भीष्म द्वादशी	२८ "	गु.	चातुर्मास्य व्रत नियमादि प्रारम्भ	२८ "	बु.	**शारद नवरात्र प्रारम्भ**	१० "	र.	श्री दत्त जयन्ती	२२ "	बु.
माघस्नान समाप्त	३१ "	र.	**गुरु पूर्णिमा**	२८ "	बु.	उपाङ्ग ललिता व्रत	१४ "	गु.	**सन् २००० ई. प्रारंभ**		
श्री महाशिवरात्रि	१४ फर."	र.	(व्यास पूजा)	२८ "	बु.	श्री दुर्गाष्टमी, महाष्टमी	१८ "	चं.	इंग्लिश नववर्ष प्रारम्भ	१ जन.	शु.
होलाष्टक प्रारम्भ	२३ "	मं.	हरियाली अमावस	११अग.	बु.	महानवमी (पूजा, उपवास)	१८ "	चं.	लोहड़ी (पं.)	१३ "	गु.
गोविन्द द्वादशी	२७ "	श.	**खग्रास सूर्य ग्रहण**	११ "	बु.	महानवमी (बलिदान)	१९ "	मं.	मकर संक्रान्ति	१४ "	शु.
होलिका दहन,	१ मार्च"	चं.	मधुश्रवा तृतीया	१४ "	श.	**नवरात्र समाप्त**	१९ "	मं.	माघस्नान प्रारम्भ	२१ "	शु.
होलाष्टक समाप्त	२"	मं	**संधारा तीज**	१४ "	श.	विजया दशमी (दशहरा)	१९ "	मं.	**संकष्ट चतुर्थी**	२४ "	चं.
सं. २०५५ वि. पूर्ण	१७ "	बु.	भारत स्वतंत्रता दिवस	१५ "	र.	भरत मिलाप	२० "	बु.	मौनी अमावस	५ फर.	श.
नवरात्र प्रारम्भ	१८ "	गु.	नाग-पञ्चमी	१६ "	चं.	शरत्पूर्णिमा	२४ "	र.	शनैश्चरी अमावस	५ "	श.
गौरी तृतीया (गणगौर)	२० "	श.	**श्री दुर्गाष्टमी**	१९ "	गु.	कोजागर व्रत	२४ "	र.	गौरी तृतीया (गोंतरी)	८ "	मं.
श्री लक्ष्मी पञ्चमी	२१ "	र.	दूर्वाष्टमी	१९ "	गु.	कार्त्तिक स्नान प्रारम्भ	२४ "	र.	तिलचतुर्थी	९ "	बु.
स्कन्दषष्ठी	२२ "	चं.	ऋग्वेदियों का उपाकर्म	२५ "	बु.	महर्षि वाल्मीकि जयन्ती	२४ "	र.	वरदा, कुन्दचतुर्थी	९ "	बु.
श्री दुर्गाष्टमी	२४ "	बु.	यजु- उपाकर्म	२६ "	गु.	**करक चतुर्थी** (करवा चौथ)	२७ "	बु.	श्री पंचमी, बसंत पंचमी	१० "	गु.
श्री रामनवमी	२५ "	गु.	**रक्षा बन्धन (राखी)**	२६ "	गु.	अहोई अष्टमी (पं.)	३१ "	र.	रथसप्तमी, आरोग्य सप्तमी	१२ "	श.
नवरात्र समाप्त	२५ "	गु.	संकष्ट-चतुर्थी	३० "	चं.	गोवत्स द्वादशी	४ नवं.	गु.	भीष्माष्टमी	१३ "	र.
अनङ्ग त्रयोदशी	२९ "	चं.	**श्री कृष्ण जन्माष्टमी (स्मा.)**	२ सितं.	गु.	धन त्रयोदशी	५ "	शु.	भीष्मद्वादशी	१६ "	बु.
वैशाखस्नान प्रारम्भ	३१ "	बु.	श्री कृष्ण जन्माष्टमी (वै.)	३ "	शु.	नरक चर्तुदशी	७ "	र.	माघस्नान समाप्त, माघी पूर्णिमा	१९ "	श.
वैशाखी (पं.)	१४अप्रै.	बु.	श्री गुग्गा नवमी	४ "	श.	श्री हनुमान् जयन्ती	७ "	र.	**श्री महाशिवरात्रि व्रत**	४ मार्च	श.
श्री परशुराम जयन्ती	१८ "	र.	कुशोत्पाटिनी	९ "	गु.	दीपावली	७ "	र.	होलाष्टक प्रारंभ	१३ "	चं.
अक्षय तृतीया	१८ "	र.	पिठोरी अमा	९ "	[illegible]	अन्नकूट, बलि पूजा	८ "	चं.	गोविन्द द्वादशी	१६ "	गु.
श्री गंगा जन्म	२२ "	गु.	हरितालिका-गौरी तृतीया	१२ "	र.	गोवर्धन पूजा	८ "	चं.	होलिका दहन	१९ "	र.
श्री जानकी जयन्ती	२४ "	श.	कलंक चतुर्थी	१३ "	चं.	यम द्वितीया (भाई दूज)	१० "	बु.	होलाष्टक समाप्त	२० "	चं.
बुद्ध पूर्णिमा, वैशाखी पूर्णिमा	३० "	शु.									

एकादशी व्रत

(सन् १९९९ ई.)

माघ कृष्ण	१३ जन.
माघ शुक्ल (स्मा.)	२७ जन.
फाल्गुन कृष्ण	१२ फर.
फाल्गुन शुक्ल	२६ फर.
चैत्र कृष्ण (स्मा.)	१३मार्च
चैत्र शुक्ल	२७ मार्च
वैशाख कृष्ण	१२ अप्रै.
वैशाख शुक्ल	२६ अप्रै.
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण (स्मा.)	११ मई
प्र.ज्येष्ठ शुक्ल	२५ मई
द्वि. ज्येष्ठ कृष्ण	१० जून
द्वि. ज्येष्ठ शुक्ल	२४ जून
आषाढ़ कृष्ण	९ जुला.
आषाढ़ शुक्ल	२४ जुला.
श्रावण कृष्ण(स्मा.)	७ अग.
श्रावण शुक्ल	२२ अग.
भाद्रपद कृष्ण	६ सितं.
भाद्रपद शुक्ल	२१सितं.
आश्वि. कृष्ण	५ अक्तू.
आश्विन शुक्ल	२१अक्तू.
कार्तिक कृष्ण	३ नवं.
कार्तिक शुक्ल	१९ नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण	३ दिसं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	१९ दिसं.
(सन् २००० ई.)	
पौष कृष्ण	२ जन.
पौष शुक्ल	१७ जन.
माघ कृष्ण	१ फर.
माघ शुक्ल (स्मा.)	१५ फर.
फाल्गुन कृष्ण	१ मार्च
फाल्गुन शुक्ल	१६ मार्च
चैत्र कृष्ण	३१ मार्च

(स्मा.=स्मार्तों का व्रत)

वैष्णवों का व्रत स्मार्तों के व्रत के दिन से दूसरे दिन होता है। जिसके आगे "(स्मा.)" नहीं लिखा है वह व्रत तिथि स्मार्त और वैष्णव दोनों के लिए है।

पक्षों का प्रारम्भ

(सन् १९९९ ई.)

माघ कृष्ण	२ जन.
माघ शुक्ल	१८ जन.
फाल्गुन कृष्ण	१ फर.
फाल्गुन शुक्ल	१७ फर.
चैत्र कृष्ण	३ मार्च
चैत्र शुक्ल	१८मार्च
वैशाख कृष्ण	१ अप्रै.
वैशाख शुक्ल	१७ अप्रै.
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण	१ मई
प्र.ज्येष्ठ शुक्ल	१६ मई
द्वि.ज्येष्ठ कृष्ण	३१मई
द्वि. ज्येष्ठ शुक्ल	१४ जून
आषाढ़ कृष्ण	२९ जून
आषाढ़ शुक्ल	१४ जुला.
श्रावण कृष्ण	२९ जुला.
श्रावण शुक्ल	१२ अग.
भाद्रपद कृष्ण	२७ अग.
भाद्रपद शुक्ल	१० सितं.
आश्विन कृष्ण	२६ सितं.
आश्विन शुक्ल	१० अक्तू.
कार्तिक कृष्ण	२५ अक्तू.
कार्तिक शुक्ल	९ नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण	२४ नवं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	८ दिसं.
पौष कृष्ण	२३ दिसं.
(सन् २००० ई.)	
पौष शुक्ल	७ जन.
माघ कृष्ण	२२ जन.
माघ शुक्ल	६ फर.
फाल्गुन कृष्ण	२० फर.
फाल्गुन शुक्ल	७ मार्च.
चैत्र कृष्ण	२१ मार्च

उत्तरी भारत में कृष्णादि एवं दक्षिणी भारत में शुक्लादि मासों का प्रचार है। ऊपर दिए गए पक्ष कृष्णादि हैं।

श्री सत्यनारायण व्रत

(सन् १९९९ ई.)

पौष	१ जन.
माघ	३१ जन.
फाल्गुन	१ मार्च
चैत्र	३१मार्च
वैशाख	३०अप्रै.
प्र.ज्येष्ठ	२९ मई
द्वि. ज्येष्ठ	२८ जून
आषाढ़	२७ जुला.
श्रावण	२६ अग.
भाद्रपद	२४ सितं.
आश्विन	२४ अक्तू.
कार्तिक	२२ नवं.
मार्गशीर्ष	२२ दिसं.
(सन् २००० ई.)	
पौष	२० जन.
माघ	१९ फर.
फाल्गुन	१९ मार्च

अमावस्याएं (स्नान-दानार्थ)

(सन् १९९९ ई.)

माघ	१७ जन.
फाल्गुन (भौमवती)	१६ फर.
चैत्र	१७ मार्च
वैशाख	१६ अप्रै.
प्र.ज्येष्ठ (शनैश्चरी)	१५ मई
द्वि. ज्येष्ठ	१३ जून
आषाढ़ (भौमवती)	१३जुला.
श्रावण	११ अग.
भाद्रपद	९ सितं.
आश्विन (शनैश्चरी)	९ अक्तू.
कार्तिक (सोमवती)	८ नवं.
मार्गशीर्ष (भौमवती)	७ दिसं.
(सन् २००० ई.)	
पौष	६ जन.
माघ (शनैश्चरी)	५ फर.
फाल्गुन (सोमवती)	६ मार्च
चैत्र (भौमवती)	४ अप्रै.

श्री [illegible]ेश चतुर्थी व्रत

([illegible] १९९९ ई.)

माघ	५ जन.
फाल्गुन	४ फर.
चैत्र	५ मार्च
वैशाख	४ अप्रै.
प्र.ज्येष्ठ	४ मई
द्वि.ज्येष्ठ	३ जून
आषाढ	२ जुला.
श्रावण	३१ जुला.
भाद्रपद	३० अग.
आश्विन	२८ सितं.
कार्तिक	२७ अक्तू.
मार्गशीर्ष	२६ नवं.
पौष	२५ दिसं.
(सन् २००० ई.)	
माघ	२४ जन.
फाल्गुन	२२ फर.
चैत्र	२३ मार्च

संक्रान्तियां

(सन् १९९९ ई.)

माघ	१४ जन.
फाल्गुन	१२ फर.
चैत्र	१४ मार्च
वैशाख	१४ अप्रै.
ज्येष्ठ	१५ मई
आषाढ	१५ जून
श्रावण	१६ जुला.
भाद्रपद	१७ अग.
आश्विन	१७ सितं.
कार्तिक	१७ अक्तू.
मार्गशीर्ष	१६ नवं.
पौष	१६ दिसं.
(सन् २००० ई.)	
माघ	१४ जन.
फाल्गुन	१३ फर.
चैत्र	१४ मार्च

दशावतार जयन्तियां

(सन् १९९९ ई.)

श्री मत्स्य जयन्ती	२० मार्च
श्री रामनवमी	२५ मार्च
श्री परशुराम जयन्ती	१८ अप्रै.
श्रीनृसिंह जयन्ती	२८ अप्रै.
श्री कर्म जयन्ती	३० अप्रै.
श्री बुद्ध जयन्ती	३० अप्रै.
श्री कल्कि जयन्ती	१६ अग.
*श्री कृष्ण जन्माष्टमी(स्मा	२ सि[illegible]
श्री कृष्ण जन्माष्टमी (वै.	३ सितं.
श्री वराह जयन्ती	१२ सितं.
श्री वामन जयन्ती	२२सितं.

* अर्धरात्रि व्यापिनी अष्टमी के ही दिन श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का व्रत करना चाहिए। श्रीमद् भागवत एवं स्कन्द-विष्णु पुराण आदि इसी का समर्थन करते हैं। स्मार्तों वाली जन्माष्टमी अर्धरात्रिव्यापिनी होती है।

आश्विन कृष्ण पक्ष के श्राद्ध

(सन् १९९९ ई.)

पूर्णिमा	२५ सितं.
प्रतिपदा	२६ सितं.
द्वितीया	२६ सितं.
तृतीया	२७ सितं.
चतुर्थी	२८ सितं.
पंचमी	२९ सितं.
षष्ठी	३० सितं.
सप्तमी	१ अक्तू.
अष्टमी	२ अक्तू.
नवमी	३ अक्तू.
दशमी	४ अक्तू.
एकादशी	५ अक्तू.
द्वादशी	६ अक्तू.
त्रयोदशी	७ अक्तू.
चतुर्दशी	९ अक्तू.
अमावस	९ अक्तू.
सर्वपितृ	९ अक्तू.

प्रदोष व्रत

(सन् १९९९ ई.)

माघ कृष्ण	१५ जन.
माघ शुक्ल	२९ जन.
फाल्गुन कृष्ण (शनि)	१३ फर.
फाल्गुन शुक्ल (शनि)	२७ फर.
चैत्र कृष्ण (सोम)	१५ मार्च
चैत्र शुक्ल(सोम)	२९ मार्च.
वैशाख कृष्ण(भौम)	१३ अप्रै.
वैशाख शुक्ल (भौम)	२७ अप्रै.
प्र. ज्येष्ठ कृष्ण	१३ मई
प्र. ज्येष्ठ शुक्ल	२७ मई
द्वि. ज्येष्ठ कृष्ण	११ जून
द्वि. ज्येष्ठ शुक्ल(शनि)	२६ जून
आषाढ़ कृष्ण(शनि)	१० जुला.
आषाढ़ शुक्ल	२५ जुला.
श्रावण कृष्ण (सोम)	९ अग.
श्रावण शुक्ल (भौम)	२४ अग.
भाद्रपद कृष्ण भौम	७ सितं.
भाद्रपद शुक्ल	२३ सितं.
आश्विन कृष्ण	६ अक्तू.
आश्विन शुक्ल	२२ अक्तू
कार्तिक कृष्ण	५ नवं
कार्तिक शुक्ल	२१ नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण	५ दिसं.
मार्गशीर्ष शुक्ल(सोम)	२०दिसं.
(सन् २००० ई.)	
पौष कृष्ण (भौम)	४ जन.
पौष शुक्ल	१९ जन.
माघ कृष्ण	२ फर.
माघ शुक्ल	१७ फर.
फाल्गुन कृष्ण	३ मार्च
फाल्गुन शुक्ल	[illegible] मार्च
चैत्र कृष्ण (सोम)	२अप्रै.

सोम = सोम प्रदोष व्रत
भौम = भौम प्रदोष व्रत
शनि = शनि प्रदोष व्रत

वर्गीकृत व्रत-पर्व (१ जनवरी सन् १९९९ ई. से ४अप्रैल सन् २००० ई. तक)

सिक्ख पर्व अवतार दिन (प्राचीन परम्परा के अनुसार)*

(सन् १९९९ ई.)	
श्री गुरु हरराय जी	२९ जन.
श्री गुरु तेग बहादुर जी	६ अप्रै.
श्री गुरु अर्जुन देव जी	८ अप्रै.
श्री गुरु अंगददेव जी	१७ अप्रै.
श्री गुरु अमरदास जी	२९ अप्रै.
श्री गुरु हरगोबिन्द जी	२९ जून
श्री गुरु हरकिशन जी	६ अग.
श्री गुरु रामदास जी	२६ अक्तू.
श्री गुरु नानकदेव जी	२३ नवं.
(सन् २०००ई)	
श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी	१४ जन.

गुरयाई मिली

(सन् १९९९ ई.)	
श्री गुरु हरराय जी	१५ मार्च
श्री गुरु अमरदास जी	१८ मार्च
श्री गुरु तेग बहादुर जी	३० मार्च
श्री गुरु हरगोबिन्द जी	९ मई
श्री गुरु अर्जुन देव जी	११सितं.
श्री गुरु रामदास जी	२३ सितं.
श्री गुरु अंगददेव जी	२९ सितं.
श्री गुरु हरकिशन जी	१ नवं.
श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी	११ दिसं.

जोती जोत समाए

(सन् १९९९ ई.)	
श्री गुरु अंगद देव जी	२१ मार्च
श्री गुरु हरगोबिन्द जी	२२ मार्च
श्री गुरु हरकिशन जी	३० मार्च
श्री गुरु अर्जुन देव जी	१७ जून
श्री गुरु रामदास जी	१२ सितं.
श्री गुरु अमरदास जी	२५ सितं.
श्री गुरु नानकदेव जी	४ अक्तू.
श्री गुरु हरराय जी	१ नवं.
श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी	१३ नवं.
श्री गुरु तेग बहादुर जी	१३ दिसं.

*नानकशाही कैलेण्डर के अनुसार

जैन व्रत-पर्व

(सन् १९९९ ई.)	
श्री मेरुत्रयोदशी	१५ जन.
मर्यादा महोत्सव	२४ जन.
आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण	२५ मार्च
श्री जैन महावीर जयन्ती	२९ मार्च
श्री महावीर केवल ज्ञान	२५ अप्रै.
श्री महावीर च्यवन	१८जुला.
तेरापन्थ स्थापना	२८ जुला.
चातुर्मास्य प्रारंभ	२८ जुला.
श्री जयाचार्य निर्वाण	७ सितं.
पर्युषण पर्व प्रारंभ	८ सितं
संवत्सरी महापर्व	१५ सितं.
श्री कालू निर्वाण	१६ सितं.
आचार्य श्री तुलसी पट्टारोहण	१९ सितं.
आचार्य भिक्षु निर्वाण	२३ सितं.
श्री महावीर निर्वाण	८ नवं.
आचार्य श्री तुलसी जन्म	१० नवं.
ज्ञान पंचमी	१३ नवं.
चातुर्मास्य समाप्त	२३ नवं.
श्री महावीर दीक्षा	२ दिसं.
आचार्य श्री तुलसी दीक्षा	२७ दिसं.
(सन् २००० ई.)	
जन्म श्री पार्श्वनाथ	१ जन.
श्री मेरुत्रयोदशी	३फर.
मर्यादा महोत्सव	१२ फर.

क्रिश्चियन त्योहार

(सन् १९९९ई.)	
नया साल प्रारंभ	१ जन.
गुड फ्राईडे	२ अप्रै.
ईस्टर सण्डे	४ अप्रै.
क्रिस्मस डे	२५ दिसं.
(सन् २००० ई.)	
नया साल प्रारंभ	१ जन.

मासिक शिवरात्रि व्रत

(सन् १९९९ ई.)	
माघ	१५ जन.
फाल्गुन	१४ फर.
चैत्र	१६ मार्च
वैशाख	१४ अप्रै.
प्र.ज्येष्ठ	१४ मई
द्वि. ज्येष्ठ	१२ जून
आषाढ़	११जुला.
श्रावण	९ अग.
भाद्रपद	८ सितं.
आश्विन	७ अक्तू.
कार्तिक	६ नवं.
मार्गशीर्ष	६ दिसं.
(सन् २००० ई.)	
पौष	४ जन.
माघ	३ फर.
फाल्गुन	४ मार्च.
चैत्र	३ अप्रै.

मासिक कालाष्टमी व्रत

सन् १९९९ ई	
माघ	९ जन.
फाल्गुन	८ फर.
चैत्र	१० मार्च
वैशाख	९ अप्रै.
प्र.ज्येष्ठ	८ मई
द्वि. ज्येष्ठ	७ जून
आषाढ़	६ जुला.
श्रावण	४ अग.
भाद्रपद	३ सितं.
आश्विन	२ अक्तू.
कार्तिक	३१अक्तू.
मार्गशीर्ष	३० नवं.
पौष	२९ दिसं.
सन् २००० ई.	
माघ	२८ जन.

महापुरुषों के जन्मदिन

(सन् १९९९ ई.)	
स्वामी विवेकानन्द जी	८ जन.
श्री रामानन्दाचार्य	८ जन.
बाबा श्री लाल दयाल जी	१९ जन.
नेताजी सुभाष	२३ जन.
लाला लाजपतराय	२८ जन.
श्री गुरु रविदास जी	३१जन.
महर्षि दयानन्द सरस्वती	११ फर.
श्री रामकृष्ण परमहंस	१८ फर.
श्री चैतन्य महाप्रभु	२ मार्च
श्री बल्लभाचार्य	१२ अप्रै.
डा. अम्बेडकर	१४ अप्रै.
श्री छत्रपति शिवाजी	१७ अप्रै.
आद्य जगद्गुरु श्री शंकराचार्य	२० अप्रै
श्री रामानुजाचार्य	२१ अप्रै
श्री रवीन्द्रनाथ टैगौर	९ मई
श्री महाराणा प्रताप	१६ जून
लो.मा.बाल गंगाधर तिलक	२३ जुला.
गो.स्वा. श्री तुलसीदास	१८ अग.
स्वामी शिवानन्द जी	८ सितं.
श्री महात्मा गांधी	२ अक्तू.
श्री लाल बहादुर शास्त्री	२ अक्तू.
महाराज अग्रसेन जयन्ती	१० अक्तू.
श्री माध्वाचार्य	२०अक्तू.
स्वामी रामतीर्थ	२२ अक्तू.
श्री जवाहर लाल नेहरू	१४ नवं.
श्री वीर बैरागी	२१ नवं.
भगवान् श्री सतसाईं बाबा	२३ नवं.
(सन् २००० ई.)	
श्री नेताजी सुभाष	२३जन.
स्वामी विवेकानन्द	२७ जन.
श्री रामानन्दाचार्य	२७ जन.
लाला लाजपत राय	२८जन.
बाबा श्री लाल दयाल जी	७ फर.
श्री गुरु रविदास जी	१९ फर.
महर्षि दयानन्द सरस्वती	२९ फर
[illegible]	[illegible] मार्च

मुस्लिम त्योहार

(सन् १९९९ई.)	
शहादत-ए-हज़रतअली	१०जन.
जमतुल विदा	१५ जन.
शब-ए-कद्र	१६ जन.
इदुल फित्र	२० जन.
इदुलज्जुहा	२९ मार्च
मुहर्रम (ताज़िया)	२७ अप्रै.
चल्हम	५ जून
आखिरी चहार शम्बा	९ जून
ईद-ए-मिलाद	२७ जून
ईद-ए-मौलाद	२ जुला.
फतिहायज़्दहुम	२५ जुला.
जन्म श्री हज़रत अली	२३ अक्तू.
शब-ए-मिराज	६ नवं.
शब-ए-बारात	२४ दिसं.
रमज़ान का पहला दिन	१० दिसं.
शहादत-ए-हज़रतअली	३० दिसं.
(सन् २००० ई.)	
शब-ए-कद्र	५ जन.
जमतुल विदा	७ जन.
इदुल फित्र	९ जन.
इदुलज्जुहा	१७ मार्च

सूचना

सभी मुस्लिम-त्योहार चन्द्र-दर्शन (नया चाँद दिखाई देने)पर ही निर्भर करते हैं। कई बार स्थान-भेद या आकाशीय वातावरण के कारण चन्द्रदर्शन की तारीख आगे- पीछे हो जाने पर इन मुस्लिम त्योहारों के दिन में एक दिन का अंतर

भारत सरकार के अवकाश (१ जनवरी सन् १९९९ ई. से ४ अप्रै. सन् २००० ई. तक)

(सूचना : अवकाश की इस सूची को भारत सरकार के गज़ट की सूची से मिला लेना चाहिए)

इंग्लिश नववर्षारम्भ (१९९९ ई.)	१ जन.
मकर संक्रान्ति	१४ जन.
पोंगल	१४ जन.
जमतुल विदा	१५ जन.
इदुल फित्र	२०जन.
भारत गणतंत्र दिवस	२६ जन.
जन्मदिन श्री गुरु रविदास जी	३१जन.
श्री महाशिवरात्रि व्रत	१४ फर.
गुडी पड़वा	१८ मार्च
श्री रामनवमी	२५मार्च
इदुलज्जुहा	२९ मार्च

श्री महावीर जयंती	२९मार्च
गुड फ्राईडे	२अप्रै.
वैशाखी	१४अप्रै.
विशु (केरल)	१५ अप्रै.
मुहर्रम	२७ अप्रै.
श्री बुद्ध जयन्ती	३० अप्रै.
ईद -ए- मिलाद	२७ जून
रथयात्रा (पुरी)	१४ जुला.
भारत स्वतन्त्रता दिवस	१५ अग.
ओनम (केरल)	२५अग.
रक्षाबन्धन	२६ अग.

श्री कृष्णजन्माष्टमी (वैष्णव)	३सितं.
श्री गणेश चतुर्थी	१३सितं.
जन्म श्री महात्मा गांधी	२ अक्तू.
श्री दुर्गाष्टमी	१८ अक्तू.
दशहरा	१९ अक्तू.
जन्म श्री हजरत अली	२३अक्तू.
महर्षि वाल्मीकि जयन्ती	२४ अक्तू.
दीपावली	७ नवं.
भाई दूज	१० नवं.
श्रीगुरु नानक जयन्ती	२३ नवं.
बलिदान दिन श्रीगुरु तेगबहादुर जी	१३दिसं.

क्रिसमस डे	२५ दिसं.
(सन् २००० ई.)	
इंग्लिश वर्षारम्भ (२००० ई.)	१ जन.
इदुल फित्र	९ जन.
अवतार दिन श्री गुरु गोविन्द सिंह जी	१४ जन.
मकर संक्रान्ति	१४ जन.
पोंगल	१५ जन.
भारत गणतंत्र दिवस	२६ जन.
जन्म श्री गुरु रविदास	१९ फर.
श्री महाशिवरात्रि व्रत	४ मार्च

पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश व जम्मू-काश्मीर, उ.प्र. के मेले (१ जन.१९९९ ई. से ४ अप्रै. सन् २००० ई. तक)

सन् १९९९ ई.

लोहड़ी (दांऊ, बिन्दरख)रोपड़	१४ जन.
मुक्तसर (पं.)	१४ जन.
बसंत पंचमी	२२ जन.
मस्तुआणा (पं.)	१ फर.
श्री महाशिवरात्रि,मण्डी(हि.प्र.)प्रा.	१४ फर.
श्री नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी,गढ़वाल)	१४ फर.
माणकपुर शरीफ (रोपड़)प्रा.	३ मार्च
होला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.)	३ मार्च
श्री गुरु रामराय(देहरादून)	७ मार्च
श्री वीरमदास, बधौछी (पटियाला)	९ मार्च
शीतला माता, कुराली (पं.)	११ मार्च
पिहोवा (हरि.)	१६ मार्च
जन्म बाबा अतरसिंह जी,नानकसर चीमा	१८ मार्च
माईसर खाना (पं.)	२३ मार्च
श्री मनसा देवी (हरि.)	२४ मार्च
बहुफोर्ट (जम्मू-काश्मीर)	२४ मार्च
ज्वालामुखी(हरचोवाल,गुरदासपुर,पं.)	२४मार्च
माता कांसा देवी(कांसल,रोपड़)प्रा.	२९ मार्च
देवी मेला, थीहरा (कैथल)	३० मार्च
कशाथा, नहयाणी सह (कुल्लू) प्रा.	१६ अप्रै.
पिंजौर(हरि.)	१६ अप्रै.

समागम (८ दिन,हरिहर घाट)] मणिकर्ण (कुल्लू)प्रा.	२४ अप्रै.
पीपल जातर (कुल्लू) प्रा.	२९ अप्रै.
आनी आउटर सिराज (कुल्लू) प्रा.	७ मई
ढूंगरी जातर (मनाली) प्रा.	१५ मई
बंजार (कुल्लू) प्रा.	१५ मई
शाढ़ी जातर (नगर, हि.प्र.) प्रा.	१९ मई
श्री गंगादशहरा	२४ मई
भून्तर (कुल्लू) प्रा.	१५ जून
क्षीर भवानी काश्मीर	२१ जून
सपोर यात्रा, धारलदा (ऊधमपुर)	२३जून
नमाणी एकादशी, नौमे गुरु] बरहे, (बठिण्डा)	२४ जून
पिपलू (ऊना, हि. प्र.)	२४ जून
शुद्धमहादेव यात्रा(ऊधमपुर)	२८ जून
बरसी- बाबा सन्तोख सिंह जी] नान केसरी(चीमा)प्रारम्भ	९ जुला.
शरीक भवानी (जम्मू कश्मीर)	२१ जुला.
गुरुपूर्णिमा,नदीपार आश्रम, कुराली	२८जुला.
बाबा.प्यारा सिंह-झाड़.साहिब गु.] अमरगढ़,चमकौर साहिब	५-७ अग.
श्री नैनादेवी (हि. प्र.)	१९ अग.

श्री चिन्तपूर्णी	१९ अग.
श्री अमरनाथ यात्रा (काश्मीर)	२६ अग.
कैलाश यात्रा (काश्मीर) प्रा.	७ सितं.
श्री गुसाई आंणा,कुराली (पं.)	११ सितं.
श्री गणेशोत्सव (मण्डी,हि. प्र.)प्रा.	१३ सितं.
मेला पट (काश्मीर) प्रारम्भ	१४ सितं.
श्री वामन द्वादशी (अम्बाला, पटियाला)	२२सितं.
बाबा सोढल (जालन्धर)	२४ सितं.
मेला छपार(पंजाब)	२४ सितं.
मेला श्री गोइंदवाल (पं.)	२५ सितं.
श्री आशापति यात्रा (काश्मीर) प्रा.	८ अक्तू.
श्री ज्वालामुखी (हि.प्र.)	१८ अक्तू.
श्री तारा देवी (हि. प्र.)	१८ अक्तू.
हरचोवाल (गुरादासपुर, पं.)	१८ अक्तू.
दशहरा (कुल्लू) प्रारम्भ	१९ अक्तू.
श्री शाकम्भरी देवी (उ.प्र.)	२३ अक्तू
देवी मेला, थीहरा (कैथल)	२३ अक्तू.
दीपावली (अमृतसर)	७ नवं.
बाल मेला	१४ नवं.
बाबा रुद्रानन्द, नारी (ऊना,हि.प्र.)प्रा.	१८ नवं.
रेणुका (नाहन,हि.प्र.)	१९ नवं.
जन्म श्री वीर वैरागी(नकोदर,पंजाब)	२१ नवं.
श्री रामतीर्थ अमृतसर (पं.)	२३ नवं.

कपालमोचन (हरि.)	२३ नवं.
श्री पुष्करराज(राज.)	२३ नवं.
पुरमण्डल देवि का स्नान,(जम्मू)	६ दिसं.
जोड़मेला फतेहगढ़ साहिब(पं)प्रा.	२६दिसं.
संगीत मेला बाबा हरवल्लभ(जालंधर)प्रा.	२८दिसं.
सन् २००० ई.	
लोहड़ी (दाऊं, बिन्दरख,रोपड़)	१४ जन.
मुक्तसर (पंजाब)	१४ जन.
मस्तुआणां (पंजाब)	१ फर.
बसन्त पंचमी	१० फर.
माणकपुर शरीफ (रोपड़) प्रारम्भ	२१ फर.
श्री महाशिवरात्रि(मण्डी,हि.प्र.) प्रा.	४ मार्च
नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी,गढ़वाल)	४ मार्च
होला, श्री आनन्दपुर साहिब(पं.)	२१ मार्च
श्रीवीरमदास, बधौछी,(पटियाला)	२१ मार्च
शीतला माता(कुराली,पंजाब)	२३ मार्च
श्री गुरु रामराय (देहरादून)	२५ मार्च
पिहोवा(हरियाणा)	३ अप्रै.

अपने नगर के प्रसिद्ध मेलों की तिथि , तारीख आदि का स्पष्ट विवरण लिखकर भेजिए हम उसे इस सूची में समाविष्ट करेंगे।

– सम्पादक

गण्डमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल (भा० स्टैं० टा०)

(१ जनवरी सन् १९९९ ई० से ४ अप्रैल सन् २००० ई० तक)

सन १९९९ई.	प्रारम्भ घं. मि.	सन् १९९९ ई.	समाप्त घं. मि.	सन् १९९९ ई.	प्रारम्भ घं. मि.	सन् १९९९ ई.	समाप्त घं. मि.	सन् १९९९-२०००ई.	प्रारम्भ घं. मि	सन् १९९९-२०००ई.	समाप्त घं. मि	सन् २000 ई.	प्रारम्भ घं. मि.	सन् २००० ई.	समाप्त घं. मि.
४ जन.	१० १६	६ जन.	१० ३७	१२मई	१९ ५४	१४ मई	१४ ४८	१६ सित.	२१ १८	१९सितं.	३ ९	२२ जन.	२ २८	२३ जन.	२२ ४६
१४"	३ ५०	१६"	७ ४६	२०"	२२ २७	२२"	२३ ०८	२६"	६ ५२	२८"	३ १२	३१ "	७ ०४	२ फर.	१३ १४
२३"	८ ०४	२५ "	५ ३२	३०"	१६ २०	१ जून	२१ ५७	४ अक्तू.	१७ १५	६ अक्तू.	१७ १२	१०फर.	० ५९	१२ "	० २९
३१"	२० ०९	२ फर.	२० १८	९जून	४ ४४	११"	० ५३	१४"	५ ००	१६"	११ ०७	१८ "	१३ ०१	२० "	९ ३०
१० फर.	१२ १३	१२ "	१६ ३२	१७"	७ २६	१९"	६ ४४	२३"	१६ ५६	२५"	१२ ३०	२७ "	१४ ४५	२९ "	२० ५१
१९"	१४ १९	२१ "	११ ००	२६"	२२ ३५	२९ "	३ ५९	३१"	२२ ४०	२ नवं.	२२ ४६	८ मार्च	७ १५	१० मार्च	६ ००
२८"	४ ०३	२ मार्च	४ ५३	६जुला.	११ २४	८ जुला.	८ ५५	१० नवं.	११ ५६	१२ "	१८ ०७	१६ "	२१ ०४	१८ "	१८ ४०
९ मार्च	२० २९	१२"	१ २९	१४"	१७ ३२	१६"	१५ ५३	२०"	३ ३४	२१"	२३ ३२	२५ "	२३ ०४	२८ "	०४ ५७
१८"	२२ ५८	२०"	१८ १७	२४"	५ ३२	२६"	१० ५३	२८ "	५ ३६	३०"	४ ३७	४ अप्रै.	१५ २६	०६ अप्रै.	१३ १०
२७"	९ ५७	२९ "	११ ३६	२अग.	१६ ५०	४अग.	१४ ५५	७ दिसं.	१८ १२	१०दिसं.	० १९				
६ अप्रै.	३ ५३	८ अप्रै.	९ २६	११"	३ १३	१३"	१ ३१	१७"	१२ ४६	१९"	१० १३				
१५ "	९ २५	१७ "	३ ५८	२०"	१३ १६	२२ "	१८ ४७	२५"	१५ १३	२७"	१२ ३४				
२३ "	१५ २८	२५ "	१७ ०९	२९"	२२ ५१	३१"	२० २१	४जन.	० २०	६जन.	६ २७				
३ मई	१० २१	५ मई	१६ ०५	७ सितं.	११ १२	९ सितं.	१० १५	१३"	१९ ३२	१५"	१८ ३३				

पंचकों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल (भा० स्टैं० टा०)

(१ जनवरी सन् १९९९ ई० से ४ अप्रैल सन्२००० ई० तक)

सन् १९९९ई.	प्रारम्भ घं. मि.	सन् १९९९ ई.	समाप्त घं. मि.	सन् १९९९ ई.	प्रारम्भ घं. मि.	सन् १९९९ ई.	समाप्त घं. मि.	सन् १९९९-२०००ई.	प्रारम्भ घं. मि.	सन् १९९९ ई.	समाप्त घं. मि.	सन् २००० ई.	प्रारम्भ घं. मि.	सन् २००० ई.	समाप्त घं. मि.
१९जन.	२२ ०६	२४ जन.	६ ५४	५ जून	१६ ५३	१०जून	३ ०६	२० अक्तू.	६ ३२	२४ अक्तू.	१४ ५५	४ मार्च	१७ १४	९ मार्च	६ ४७
१६फर.	६ १८	२० फर.	१२ ४०	२ जुला.	२२ २८	७ जुला.	१० २४	१६ नवं.	१५ ०६	२१ नवं.	१ ५२	१ अप्रै.	१ ५९	५ अप्रै.	१४ ३०
१५मार्च	१६ ०८	१९ मार्च	२० ३९	३० "	४ २९	३ अग.	१६ ०२	१३ दिसं.	२१ ४६	१८ दिसं.	११ ५१	पंचकों में घास, लकड़ी का संग्रह एवं खाट आदि का बुनना निषिद्ध है। दक्षिण दिशा की यात्रा भी पंचकों में नहीं करनी चाहिए ।			
१२अप्रै.	१ ५९	१६अप्रै.	६ ४९	२६ अग.	१२ ००	३० "	२१ ४२	१० जन.	३ २५	१४ जन.	१९ २१				
९ मई	१० २१	१३मई	१७ ३५	२२ सित.	२१ ०२	२७ सितं.	५ ०९	६ फर.	९ ३९	११ फर.	० ५६				

रविवार कैलेण्डर (१ जनवरी सन् १९९९ ई. से ३० अप्रैल सन् २००० ई .तक)

सन् १९९९ई.		रविवार की तारीखें				सन् १९९९ई.		रविवार की तारीखें				सन् १९९९ई.		रविवार की तारीखें				सन् २०००ई.		रविवार की तारीखें			
जनवरी	३	१०	१७	२४	३१	मई	२	०९	१६	२३	३०	सितम्बर	५	१२	१९	२६	–	जनवरी	२	९	१६	२३	३०
फरवरी	७	१४	२१	२८	–	जून	६	१३	२०	२७	–	अक्तूबर	३	१०	१७	२४	३१	फरवरी	६	१३	२०	२७	–
मार्च	७	१४	२१	२८	–	जुलाई	४	११	१८	२५	–	नवंबर	७	१४	२१	२८	–	मार्च	५	१२	१९	२६	–
अप्रैल	४	११	१८	२५	–	अगस्त	१	०८	१५	२२	२९	दिसम्बर	५	१२	१९	२६	–	अप्रैल	२	९	१६	२३	३०

ग्रहण विवरण (सं.२०५६ वि.)

इस वर्ष (संवत् २०५६ वि. में) भूगोल पर निम्नांकित चार ग्रहण होंगे:-

(१) खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (२८ जुलाई १९९९ ईस्वी)
(२) खग्रास सूर्यग्रहण (११ अगस्त १९९९ ईस्वी)
(३) खग्रास चन्द्रग्रहण (२१ जनवरी २००० ईस्वी)
(४) खण्डग्रास सूर्यग्रहण (५ फरवरी २००० ईस्वी)

इनमें से नं.(३) व (४) वाले ग्रहण भारत में दिखाई नहीं देंगे। इन ग्रहणों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है-

भारत में अदृश्य ग्रहणों का संक्षिप्त विवरण

(i) खग्रास चन्द्रग्रहण (२१ जन.२००० ई., पौष पूर्णिमा,शुक्रवार) - यह ग्रहण यूरोप रूस, अफ्रीका, खाड़ी देशों तथा उत्तरी दक्षिणी अमेरिका में दिखाई पड़ेगा। इस ग्रहण का स्पर्श भा.स्टैं.टा. के अनुसार दिन के ८ घं. ३१ मि. पर और मोक्ष दिन के ११ घं. ५५ मि. पर होगा।

(i) खग्रास सूर्यग्रहण (५फर.२०००ई., माघ अमा, शनिवार) - यह ग्रहण एण्टार्क्टिका (दक्षिणी ध्रुवप्रदेश) में दिखाई देगा। यह ग्रहण भा.स्टै.टा. के अनुसार १६ घं. २६ मि. से प्रारम्भ होकर २० घं. १३ मि. पर समाप्त होगा।

भारत में दृश्य ग्रहणों का विस्तृत विवरण

(ii) खण्डग्रास चन्द्रग्रहण(२८ जुला. १९९९ ई., आषाढ़ी पूर्णिमा, बुधवार)- यह ग्रहण २८ जुलाई'९९ को सायं चन्द्रोदय के समय अरुणाचल, नागालैण्ड, मणिपुर, मेघालय, मिज़ोरम, त्रिपुरा,आसाम के पूर्वी भाग एवं दक्षिण-पूर्वी बंगाल में बहुत थोड़ी देर के लिए दिखाई देगा। इन स्थलों पर चन्द्रमा ग्रस्त ही उदित होगा, और उदय के कुछ मिनट बाद ही ग्रहण समाप्त हो जाएगा। भारत के अन्य किसी भी प्रान्त में यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा। यहाँ दिया गया ''ग्रहण चित्र(१)'' देखिए -इसमें दी गई 'क-ख' रेखा से दाईं ओर बसे स्थलों पर ही यह ग्रहण दिखाई पड़ेगा। इस ग्रहण के स्पर्श मोक्ष का काल (भा.स्टैं.टा.) इस प्रकार है-

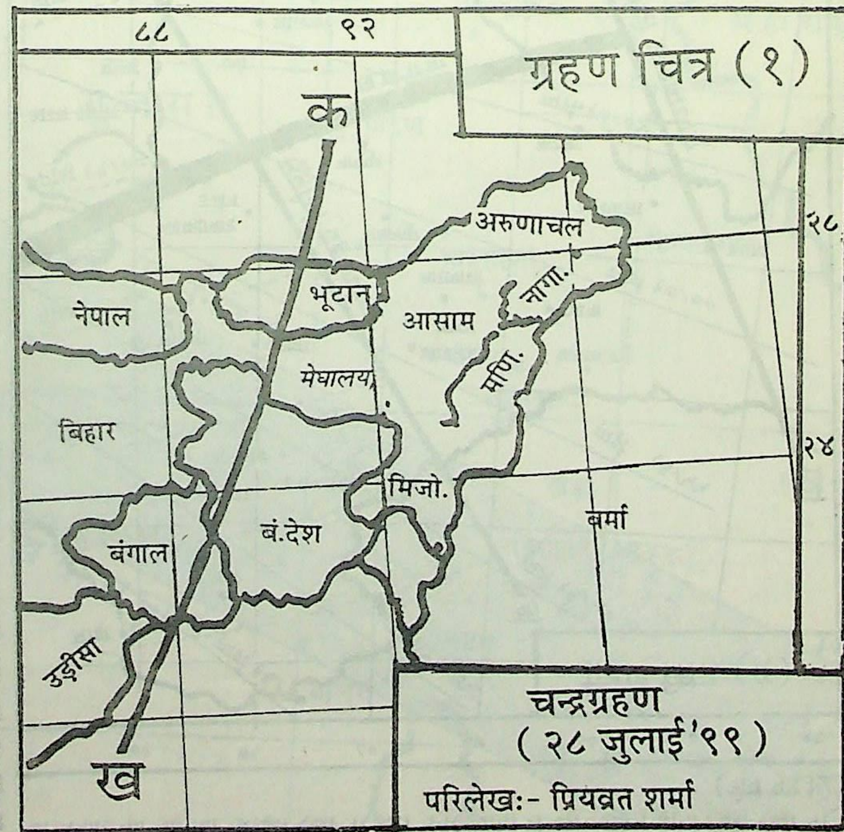
ग्रहण स्पर्श १५ घं. ५२ मि.
ग्रहण मोक्ष १८ घं. १५ मि.

ग्रहण का सूतक- इस ग्रहण का सूतक २८ जुलाई'९९ को प्रातः सूर्योदय के समय प्रारम्भ हो जाएगा।

ग्रहण का राशिफल- यह ग्रहण मकर राशि और श्रवण नक्षत्र में होगा, अतएव यह मकर राशि एवं श्रवण नक्षत्र वालों के लिए नेष्ट होगा। बारह राशियों के लिए इस ग्रहण का फल निम्नलिखित होगा-

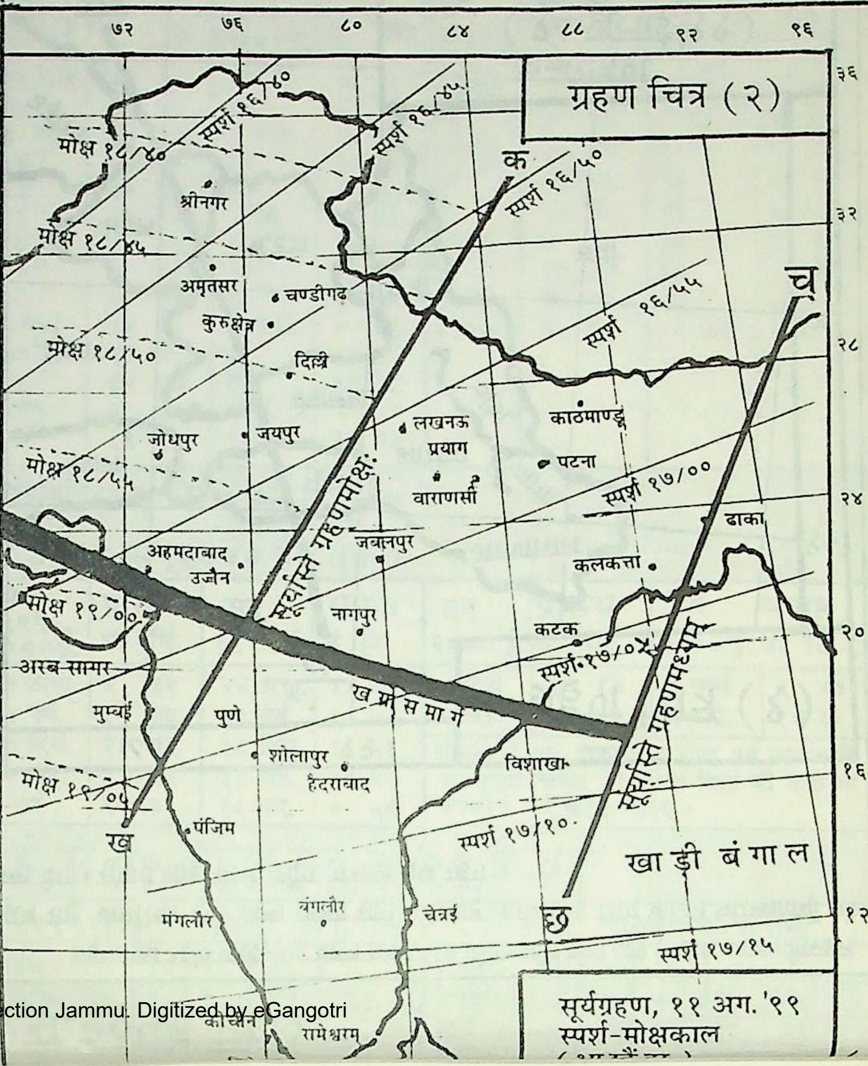
राशियां	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	सुख	अपमान	महाकष्ट	स्त्री/पति कष्ट	सुख	चिन्ता	कष्ट	धन लाभ	हानि	दुर्घटना	हानि	लाभ

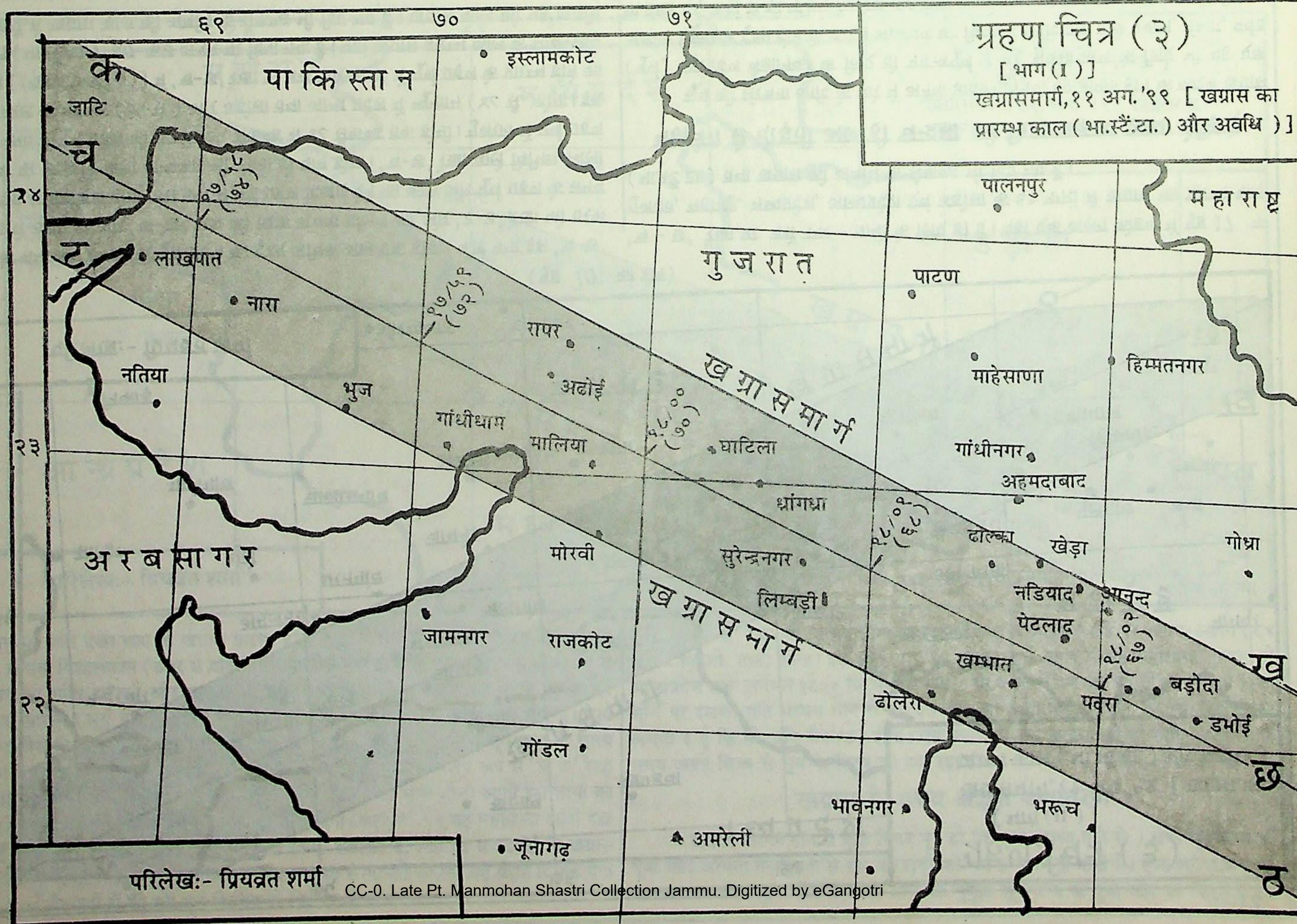
ग्रहण का अन्य फल- यह ग्रहण मकर, मेष प्रभाव राशि वाले देशों (भारत, अफगानिस्तान, अरब राष्ट्र, अमेरिका एवं अन्य यावन राष्ट्रों)के राष्ट्र नेताओं के लिए कठिन परिस्थितियों को जन्म देगा। सुपारी,लाल मिर्च, लौंग, मसाले तेज रहेंगे ।



(ii) खग्रास सूर्यग्रहण(११ अगस्त १९९९ई., श्रावण अमा, बुधवार)- यह ग्रहण ११ अग. '९९ को शाम के ४ बजकर ४० मिनट पर प्रारम्भ होकर सूर्यास्त काल तक भारत में सर्वत्र दिखाई पड़ेगा। ''ग्रहण चित्र (२)'' में दी गई इस ग्रहण का स्पर्श (प्रारम्भ) व मोक्ष (समाप्ति)बतलाने वाली रेखाओं से भारत के किसी भी स्थल पर इस ग्रहण का प्रारम्भ व समाप्ति काल (भा.स्टैं.टा.) जाना जा सकता है। अपने नगर-ग्राम की स्थिति उसके अक्षांश-रेखांश के अनुसार इस चित्र में जानकर उस नगर-ग्राम में इस ग्रहण का स्पर्श-मोक्ष काल आप सरलता से जान सकते हैं। यहां अलग से पृष्ठ 15 व 16 पर लगभग सवा दो सौ भारतीय नगरों में इस ग्रहण का प्रारम्भ व समाप्तिकाल दिया गया है । इसके साथ ही यहां इन नगरों में ११ अगस्त के दिन सूर्यास्तकाल भी दिया गया है। क्योंकि भारत के बहुत बड़े भाग में सूर्य ग्रस्त ही अस्त होगा (अर्थात् ग्रहणसमाप्ति से पूर्व ही सूर्य अस्त हो जायेगा।) अत: इन नगरों के साथ दिए गए सूर्यास्तकाल से यह ज्ञात किया जा सकता है कि अमुक नगर में ग्रहण का मोक्ष सूर्यास्त से पहले होगा, या नहीं। 'ग्रहण चित्र (२)' में दी गई 'क-ख' रेखा से दाईं ओर बसे स्थलों पर सर्वत्र सूर्य ग्रस्त ही अस्त हो जाएगा। इस रेखा से बाईं ओर बसे नगरों में ग्रहण-समाप्ति के बाद ही सूर्यास्त होगा। इसी चित्र में 'च छ' रेखा भी दी गई है । इस रेखा से दाईं ओर वाले स्थलों पर इस ग्रहण का मध्य (परमग्रास) नहीं दिखाई देगा, क्योंकि वहां पर ग्रहण-मध्यकाल से पूर्व ही सूर्य अस्त हो जाएगा। इस रेखा से बाईं ओर बसे स्थलों पर तो सभी जगह ग्रहण का परमग्रास देखा जा सकेगा। इस चित्र में दिखाई गई काली पट्टी, जो गुजरात से खाड़ी बंगाल तक जा रही है, इस ग्रहण के खग्रास का मार्ग है। इस पट्टी में बसे नगर-ग्रामों में इस ग्रहण की खग्रास आकृति दिखाई देगी। (अर्थात् इन नगरों में सूर्य का बिम्ब बिल्कुल ढक जाएगा।) इस खग्रास मार्ग से ऊपर और नीचे स्थित नगर-ग्रामों में यह ग्रहण खण्डग्रास के रूप में ही दिखाई पड़ेगा। खग्रास मार्ग से ऊपर (उत्तर की ओर) स्थित नगर-ग्रामों में सूर्य का बिम्ब दक्षिण की ओर से तथा नीचे (दक्षिण की ओर) स्थित नगर-ग्रामों में उत्तर की ओर से कटा दिखाई पड़ेगा। कोई नगर-ग्राम इस खग्रास-मार्ग के उत्तर या दक्षिण की ओर जितना अधिक समीपस्थ होगा, वहां सूर्य उतना ही अधिक ग्रस्त दीखेगा। इसी प्रकार कोई नगर-ग्राम इस खग्रास मार्ग से दक्षिण या उत्तर में जितना दूरस्थ होगा, वहां सूर्य का ग्रस्त भाग उतना ही कम होगा। पृष्ठ 18 पर ६९ नगरों में इस ग्रहण का परमग्रासकाल (ग्रहणमध्यकाल) तथा परमग्रास का मान बतलाने वाला एक कोष्ठक भी दिया गया है ।

'ग्रहण चित्र (३)' देखिए-इसमें इस ग्रहण का खग्रासमार्ग काफी बड़ा बनाकर दिखाया गया है। यह चित्र तीन भागों में है। इसमें गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, आन्ध्रप्रदेश एवं उड़ीसा के उन नगर-ग्रामों को स्पष्टतापूर्वक देखा जा सकता है, जहां इस ग्रहण की खग्रास आकृति दिखाई पड़ेगी। इस चित्र में अंकित 'क-ख' और 'ट-ठ' रेखाओं के मध्य बसे नगर-ग्रामों में ही इस ग्रहण का खग्रासरूप देखा जा सकेगा। इन दो रेखाओं की मध्यवर्ती रेखा 'च-छ' पर बसे नगर-ग्रामों में पूर्ण ग्रहण का काल अधिकतम होगा, और पूर्णग्रहण के समय पृथ्वी पर छाने वाले अन्धकार की गहनता भी इस रेखा पर बसे नगर-ग्रामों में अधिकतम होगी। इस रेखा पर एवं (शेष पृष्ठ 12 पर)




ग्रहण चित्र (३)
[भाग (I)]
खग्रासमार्ग, ११ अग. '९९ [खग्रास का प्रारम्भ काल (भा.स्टैं.टा.) और अवधि)]
६९
७०
७१
२४
२३
२२
क
च
ट
ख
छ
ठ
पाकिस्तान
गुजरात
महाराष्ट्र
अरबसागर
खग्रासमार्ग
खग्रासमार्ग
इस्लामकोट
जाटि
लाखपात
नारा
नतिया
भुज
रापर
अढोई
गांधीधाम
मालिया
घाटिला
पालनपुर
पाटण
माहेसाणा
हिम्मतनगर
गांधीनगर
अहमदाबाद
धांगध्रा
मोरवी
सुरेन्द्रनगर
लिम्बड़ी
ढोलका
खेड़ा
गोध्रा
नडियाद
आनन्द
पेटलाद
जामनगर
राजकोट
खम्भात
बड़ोदा
पदरा
डभोई
ढोलेरा
गोंडल
भावनगर
भरूच
अमरेली
जूनागढ़
परिलेखः- प्रियव्रत शर्मा

ग्रहण चित्र (३)
[भाग (II)]
खग्रासमार्ग, ११ अग. '९९ [खग्रास का प्रारम्भ काल (भा.स्टैं.टा.) और अवधि]

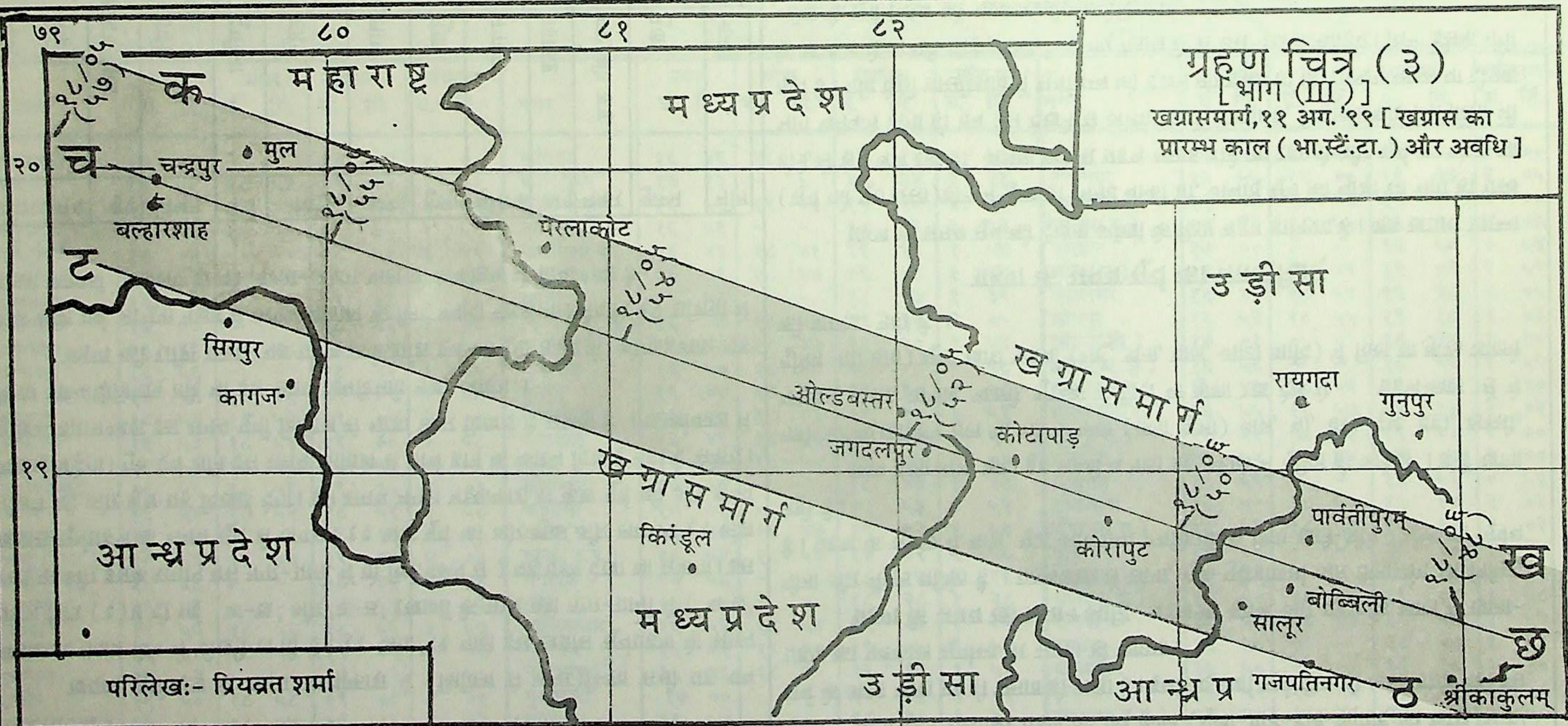
परिलेखः- प्रियव्रत शर्मा

(पृष्ठ 10 का शेष)

इसके समीपस्थ स्थलों पर पूर्ण ग्रहण का दृश्य अधिक आकर्षक होगा। कोई नगर इस 'च-छ' रेखा से उत्तर की ओर 'क-ख' रेखा की तरफ अथवा दक्षिण की ओर 'ट-ठ' रेखा की तरफ जितना अधिक हटा होगा, उस नगर में पूर्ण ग्रहण दिखाई देने का काल और पूर्ण ग्रहण के समय पृथ्वी पर छा जाने वाला अन्धकार भी उतना ही कम होगा। 'च-छ' रेखा वाले विभिन्न स्थलों पर भारत में पूर्ण ग्रहण की अवधि ७५ सैकण्ड से ४८ सैकण्ड तक होगी। गुजरात में पूर्ण ग्रहण का काल अधिकतम (७५ से.) और उड़ीसा तथा आन्ध्र प्रदेश में न्यूनतम (४८ सै.)होगा। इस चित्र [(ग्रहण चित्र (३)] में 'च-छ' रेखा पर बसे नगर-ग्रामों में पूर्ण ग्रहण के प्रारम्भ होने का काल (भा.स्टैं.टा.) कुछ-कुछ अन्तर पर दिया गया है। यहां खग्रास प्रारम्भ काल के साथ-साथ कोष्ठकों में खग्रास काल की अवधि के सैकण्ड भी दिए गए हैं। खग्रास काल की यह अवधि 'च - छ' रेखा पर बसे नगर - ग्रामों के लिए ही है। यहां एक अलग कोष्ठक में पृष्ठ 17 पर गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, आन्ध्रप्रदेश एवं उड़ीसा के ६३ नगरों में खग्रास का प्रारम्भ काल (भा.स्टैं.टा.) तथा खग्रास की अवधि के सैकण्ड भी दिए गए हैं।

महावेग से दौड़ती आ रही चन्द्रमा की विशालकाय छाया देखिए

सूर्य की संरचना आदि के बारे में अनेक ज्ञातव्य विषयों का ज्ञापक होने के कारण खग्रास (पूर्ण) सूर्यग्रहण वैज्ञानिकों के लिए तो महत्त्वपूर्ण है ही, सर्वसाधारण के लिए भी यह एक अत्यन्त विलक्षण दृश्य होने के कारण आकर्षण का विषय है। यदि एक ऊंचे मकान, मीनार, पर्वत या टीले पर, जहां से दूर पश्चिम क्षितिज तक बिना किसी रुकावट के देखा जा सकता हो, बैठकर



पश्चिम की ओर देखा जाए तो खग्रास प्रारम्भ होने से ३-४ सैकण्ड पूर्व ही पश्चिम क्षितिज की ओर से एक विशालकाय (उत्तर से दक्षिण तक फैली) भीषण, काली छाया अत्यन्त तीव्र गति से तूफ़ान की भांति आपकी ओर भागती आ रही नज़र आएगी। आप तक यह छाया पहुंचते ही खग्रास प्रारम्भ (सूर्य पूर्ण ग्रस्त)हो जाएगा, और चारों ओर अचानक अन्धकार छा जाएगा। ऐसा लगेगा जैसे कि अचानक रात हो गई हो। ११ अग.१९९९ वाले इस खग्रास सूर्यग्रहण के समय ग्रहण चित्र (३)में दी गई 'क-ख' और 'ट-ठ' रेखाओं के मध्य (विशेष रूप से 'च छ' रेखा पर और इसके समीप स्थित नगर-ग्रामों में) शान्त तूफ़ान की भांति दौड़ी आती इस छाया का दिल दहलाने वाला, लेकिन रोचक रूप देखा जा सकेगा। जहां से आप यह महाछाया आती देख रहे हैं, यदि वहां से पूर्व क्षितिज़ तक भी बिना किसी रुकावट के देखा जा सकता हो तो खग्रास समाप्त होने के तुरन्त बाद पूर्व क्षितिज की ओर महावेग से भागती जा रही यह छाया दिखाई देगी और ३-४ सैकण्डों में ही यह पूर्व क्षितिज में विलीन हो जाएगी।

'च-छ' रेखा पर इस महाछाया का विस्तार अलग-अलग स्थलों पर अलग-अलग (६४ से ९४ कि.मी. तक) होगा। इस (११ अग'९९ वाले) सूर्य ग्रहण में यह महाछाया गुज़रात से आन्ध्रप्रदेश तक लगभग १८०० कि.मी. का मार्ग ८ मि.६ से. में तय कर जाएगी। इस प्रकार भारत भूमि पर इसकी गति मध्यम मान से १३,३७० कि.मी. प्रति घण्टा (२२३ कि.मी. प्रति मिनट अथवा ३ $\frac{3}{4}$ कि.मी. प्रति सैकण्ड) होगी। यह महाछाया उस चन्द्रमा की ही होगी जो ग्रहण के समय अपने बिम्ब से सूर्य के बिम्ब को ढक रहा होगा।

खग्रास के समय अद्भुत वातावरण

खग्रास प्रारम्भ होने से कुछ मिनट पूर्व ही ग्रहण से (ग्रस्त होने से) बची सूर्यबिम्ब की पूर्वी कोर अत्यन्त तेजस्विता से हीरे की लड़ी की भान्ति चमकती दीखेगी। ऐसा लगेगा जैसे कि अत्यन्त चमकदार कुछ हीरों से जड़ा छोटा सा मुकुट सूर्यबिम्ब के पूर्वी कोर पर किसी ने रख

दिया हो। हीरे की भान्ति चमकते इन मनकों को Baily's beads कहा जाता है। कुछ ही क्षणों के लिए सूर्य चमकते हीरे की अंगूठी की शक्ल में भी दीखेगा और क्षणों में ही यह दृश्य भी समाप्त हो जाएगा। पूर्ण ग्रहण प्रारम्भ होने से सात आठ मिनट पहले ही सूर्य की धूप काफी धूमिल पड़ जाएगी, आकाश और पृथ्वी पर चारों ओर विलक्षण से रंगों की तरंगे तैरती सी नजर आएंगी। खग्रास प्रारम्भ होते ही दृष्टि सहसा निष्क्रिय हो जाएगी, और कुछ सैकण्ड बाद अनुभव होगा कि अन्धकार इतना घना नहीं है। इस समय सभी पक्षी चहचहाते सांय काल की भान्ति अपने-अपने घोंसलों की ओर दौड़ेंगे, कुत्ते और दूसरे पशु भी अचानक भयाक्रान्त से दीख पड़ेंगे। फूलों की पंखुड़िया बन्द हो जाएंगी, पर्याप्त ठण्ड महसूस होने लगेगी।

दिन में ग्रह व तारे देखिए

खग्रास सूर्यग्रहण के समय ऊर्ध्वाकाश में (क्षितिज से ऊपर) स्थित सभी ग्रह एवं चमकदार नक्षत्र दिन में दीखने लगते हैं। ११ अग.'९९ वाले इस खग्रास सूर्यग्रहण के समय ग्रहण चित्र (३) में दी गईं 'क-ख' और 'ट-ठ' रेखाओं के मध्य बसे नगर-ग्रामों में ('च छ' रेखा पर और इसके समीप बसे नगर-ग्रामों में तो विशेषरूप से) यह दृश्य देखा जा सकेगा। इस खग्रास सूर्यग्रहण के समय सूर्य से लगभग १३ अंश पूर्व की ओर शुक्र और लगभग १९ अंश पश्चिम की ओर बुध ग्रह दिखाई देगा। इस समय मंगल मध्याकाश से कुछ पूर्व की ओर झुका दिखाई पड़ेगा। गुरु एवं शनि इस समय क्षितिज़ से नीचे होने के कारण दिखाई नहीं दे सकेंगे। वृश्चिक तारामण्डल इस समय पूर्वी क्षितिज से थोड़ा ऊपर दिखाई दे सकता है । ऊर्ध्वाकाश में स्थित अन्य दीप्तिमान् तारे भी इस समय टिमटिमाते नजर आएंगे ।

ग्रहण की राशि फल- यह ग्रहण कर्क राशि एवं आश्लेषा नक्षत्र में होगा। अतः यह कर्क राशि एवं आश्लेषा नक्षत्र में उत्पन्न जातकों के लिए ज्यादा नेष्ट होगा। मेषादि १२ राशियों में उत्पन्न जातकों के लिए इसका अलग-अलग फल नीचे कोष्ठक में दिया गया है-

राशियां	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	कष्ट	धन-लाभ	हानि	दुर्घटना	हानि	लाभ	सुख	अपमान	महाकष्ट	स्त्रीपति कष्ट	सुख	चिन्ता

ग्रहण का अन्य फल- यह ग्रहण कर्क, मकर राशि वाले देशों एवं प्रान्तों के लिए नेष्ट है।। ग्रीस, जर्मनी, जापान एवं मुस्लिम राष्ट्रों में कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि, कहीं आन्तरिक अशांति रहे। मूंग, तिलहन एवं पशुओं के व्यापार से लाभ हो ।

ग्रहण का सूतक:- इस ग्रहण का सूतक ११ अग.९९ को प्रातः ४ बजकर ४० मिनट पर ही प्रारम्भ हो जाएगा। जहां यह ग्रहण ग्रस्तास्त होगा -वहां के धार्मिक लोगों को सूर्यास्त के बाद स्नान करके सायं सन्ध्या जपादि करना चाहिए, लेकिन खाना-पीना तब तक उन्हें नहीं करना चाहिए जब तक कि वे १२ अगस्त के सूर्योदय के बाद शुद्ध (ग्रहण-मुक्त) सूर्यबिम्ब को नहीं देख लेते। यह नियम बाल,वृद्ध एवं रोगियों के लिए नहीं है ।

ध्यान रहे- ग्रस्तास्त ग्रहण का पर्व काल (पूजा-पाठ-दान-जपादि का काल) चन्द्र/सूर्य के अस्त काल पर ही समाप्त हो जाता है। इसलिए जहां सूर्य ग्रस्त ही अस्त होगा वहां इस ग्रहण का पर्वकाल सूर्यास्त पर समाप्त हो जाएगा।

ग्रहण के समय खान-पान आदि- ग्रहण के सूतक और ग्रहण के काल में खाना-पीना और मैथुन वर्जित है । ग्रहणकाल में सोना, मूत्र-पुरीषोत्सर्ग और तैलाभ्यंग भी निषिद्ध है। ग्रहण के सूतक में बाल, वृद्ध और रोगी व्यक्तियों के लिए खाने-पीने , सोने का निषेध नहीं है।

पका हुआ अन्न, कटी हुई सब्जी व फल ग्रहणकाल में दूषित हो जाते हैं । उन्हें खाना नहीं चाहिए।लेकिन तेल या घी में पका (तला हुआ) अन्न, घी, तेल, दूध, दही, लस्सी, मक्खन, पनीर, अचार, चटनी, मुरब्बा में तिल या कुशा रख देने से ग्रहणकाल में ये दूषित नहीं होते। सूखे खाद्य पदार्थों (गेहूँ, चना, दाल, आटा आदि) में तिल या कुशा डालने की जरुरत नहीं है ।

ग्रहण के समय सूर्य को मत देखिए

ग्रहण के समय सूर्य को देखना आँखों के लिए बहुत हानिप्रद है। जब खग्रास प्रारम्भ (सूर्य को पूरा ग्रस्त)होने में कुछ ही मिनट बाकी हों, अर्थात् सूर्य का थोड़ा सा भाग ही ग्रस्त होने से शेष बच रहा हो, अथवा खग्रास ग्रहण समाप्त होने जा रहा हो और सूर्य का थोड़ा सा भाग चमकने लगा हो तब उसे देखने से अन्धापन हो सकता है, जिसकी कोई चिकित्सा भी नहीं है। यदि ऐसी ग्रासस्थिति में सूर्यबिम्ब को देखने की इच्छा हो तो वैल्डिंग ग्लास या दीपक [illegible] ग्लास में से उसे देखना चाहिए। बिना इसके नंगी आँख से सूर्य बिम्ब को भूलकर भी मत देखिए।

भारत के प्रसिद्ध नगरों में सूर्यग्रहण (११ अग. १९९९इ.) का स्पर्श मोक्ष आदि काल (भा. स्टै. टा.)

इन नगरों में खण्डग्रास ही दिखाई देगा। जहां मोक्ष काल नहीं दिखाया गया है, वहां मोक्ष से पहिले ही सूर्यास्त हो जायेगा।

नगर	स्पर्श घं.	स्पर्श मिं.	मोक्ष घं.	मोक्ष मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.	पर्वकाल * घं.	पर्वकाल * मिं.
अगरतला	१७	०२	–	–	१८	०२	१	०
अजमेर	१६	५२	१८	५३	१९	१२	२	०१
अनन्तनाग (का.)	१६	४४	१८	४३	१९	२०	१	५९
अनूपशहर(उ.प्र.)	१६	५३	१८	५०	१९	००	१	५७
अमरावती	१७	०२	–	–	१८	५१	१	४९
अमरोहा	१६	५२	१८	४९	१९	००	१	५७
अमृतसर	१६	४६	१८	४६	१९	१८	२	००
अमेठी	१६	५७	–	–	१८	४३	१	४६
अम्बाला	१६	४९	१८	४८	१९	०९	१	५९
अयोध्या	१६	५६	–	–	१८	४२	१	४६
अर्की (हि.प्र.)	१६	४८	१८	४६	१९	०९	१	५८
अलवर	१६	५२	१८	५२	१९	०६	२	००
अलीगढ़	१६	५३	१८	५१	१९	००	१	५८
अलमोड़ा	१६	५२	१८	४८	१८	५६	१	५६
अहमदाबाद	१६	५६	१८	५९	१९	१५	२	०३
आगरा	१६	५४	१८	५२	१८	५९	१	५८
आजमगढ़(उ.प्र.)	१६	५७	–	–	१८	३७	१	४०
आबू (राज.)	१६	५४	१८	५७	१९	१७	२	०३
आरा (बि.)	१६	५८	–	–	१८	३१	१	३३
इटारसी	१६	५९	–	–	१८	५४	१	५५
इटावा	१६	५५	१८	५२	१८	५५	१	५७
इन्दौर	१६	५८	१८	५८	१९	०२	२	००
इम्फाल	१७	०२	–	–	१७	५२	०	५०
उज्जैन	१६	५०	१८	५८	१९	०३	२	००
उदयपुर(राज.)	१६	५५	१८	५७	१९	१३	२	०२
उन्नाव	१६	५६	–	–	१८	४९	१	५३
उधमपुर (का.)	१६	४४	१८	४४	१९	२०	२	००
ऊना(हि.प्र.)	१६	४७	१८	४६	१९	१३	१	५९
एटा	१६	५३	१८	५१	१८	५७	१	५८
कटक	१७	०५	–	–	१८	१९	१	१४
कटनी	१६	५९	–	–	१८	४५	१	४६
कठुआ(का.)	१६	४६	१८	४५	१९	१७	१	५९
कन्नौज	१६	५५	–	–	१८	५१	१	५६
कपूरथला	१६	४७	१८	४६	१९	१६	१	५९
करनाल	१६	५०	१८	४८	१९	०७	१	५८
कलकत्ता	१७	०३	–	–	१८	११	१	०८

नगर	स्पर्श घं.	स्पर्श मिं.	मोक्ष घं.	मोक्ष मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.	पर्वकाल * घं.	पर्वकाल * मिं.
कांगड़ा	१६	४६	१८	४५	१९	१४	१	५९
कांचीपुरम्	१७	१३	–	–	१८	३४	१	२१
काठियावाड़	१६	५६	१९	००	१९	२०	२	०४
कानपुर	१६	५६	–	–	१८	४९	१	५३
कारगिल(का.)	१६	४३	१८	४१	१९	१८	१	५८
कालका(ह.)	१६	४९	१८	४७	१९	०८	१	५८
काशी	१६	५८	–	–	१८	३७	१	३९
किशनगढ़(रा.)	१६	४८	१८	५३	१९	३०	२	०५
कुराली(प.)	१६	४८	१८	४७	१९	१०	१	५९
कुरूक्षेत्र	१६	५०	१८	४८	१९	०८	१	५८
कुल्लू	१६	४७	१८	४५	१९	१०	१	५८
कैथल(ह.)	१६	५०	१८	४९	१९	१०	१	५९
कोटखाई	१६	४९	१८	४६	१९	०७	१	५७
कोटा	१६	५५	१८	५५	१९	०५	२	००
कोयम्बटूर	१७	१५	–	–	१८	४३	१	२८
कोहिमा	१७	०१	–	–	१७	५३	०	५२
खन्ना(पं.)	१६	४८	१८	४७	१९	१२	१	५९
खुर्जा(उ.प्र.)	१६	५२	१८	५०	१९	०२	१	५८
गंगटोक	१६	५८	–	–	१८	१७	१	१९
गया	१७	००	–	–	१८	२८	१	२८
गाजियाबाद	१६	५२	१८	५०	१९	०४	१	०५
गुड़गांव	१६	५२	१८	५०	१९	०५	१	५८
गुरदासपुर	१६	४६	१८	४५	१९	१७	१	५९
गुआहाटी	१७	००	–	–	१८	०३	१	०३
गोरखपुर	१६	५७	–	–	१८	३८	१	४१
ग्वालियर	१६	५५	१८	५३	१८	५८	१	५८
चण्डीगढ़	१६	४९	१८	४७	१९	०९	१	५८
चम्बा(हिं.प्र.)	१६	४६	१८	४५	१९	१५	१	५९
चित्तौड़गढ	१६	५५	१८	५६	१९	१०	२	०१
चूरू (रा.)	१६	५०	१८	५१	१९	१३	२	०१
चीरापूंजी	१७	०१	–	–	१८	०२	१	०१
चेन्नई	१७	१३	–	–	१८	३२	१	१९
छतरपुर	१६	५७	–	–	१८	५०	१	५३
छपरा(बि.)	१६	५८	–	–	१८	३१	१	३३
जब्बलपुर	१७	०१	–	–	१८	४६	१	४५
जम्मू	१६	४५	१८	४५	१९	२०	२	००

नगर	स्पर्श घं.	स्पर्श मिं.	मोक्ष घं.	मोक्ष मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.	पर्वकाल * घं.	पर्वकाल * मिं.
जयपुर	१६	५३	१८	५३	१९	०८	२	००
जामनगर	१६	५५	१९	००	१९	२३	२	०५
जालन्धर	१६	४७	१८	४७	१९	१५	२	००
जालौर(रा.)	१६	५२	१८	५५	१९	१८	२	०३
जोरहाट	१७	००	–	–	१७	५४	०	५४
जीन्द(ह.)	१६	५०	१८	४९	१९	०९	१	५९
जैसलमेर	१६	४९	१८	५४	१९	२८	२	०५
जोधपुर	१६	५२	१८	५५	१९	१८	२	०३
झरिया(बि.)	१७	०१	–	–	१८	२१	१	२०
झांसी(म. प्र.)	१६	५६	–	–	१८	५५	१	५९
झालरापाटन	१६	५६	१८	५६	१९	०३	२	००
झालावाड़(रा.)	१६	५५	१८	५७	१९	११	२	०२
झूंझनू(रा.)	१६	५१	१८	५१	१९	११	२	००
टोंक(रा.)	१६	५४	१८	५४	१९	०७	२	००
डिब्रूगढ़	१६	५९	–	–	१७	५२	०	५३
डीडवाना	१६	५१	१८	५३	१९	१४	२	०२
डूंगरपुर(रा.)	१६	५६	१८	५८	१९	१२	२	०२
तिरूपति	१७	१२	–	–	१८	३६	१	२४
त्रिवेन्द्रम	१७	१९	–	–	१८	४०	१	२१
थानेसर(ह.)	१६	५०	१८	४८	१९	०८	१	५८
दतिया	१६	५६	१८	५३	१८	५५	१	५७
दरभंगा	१६	५८	–	–	१८	२७	१	२९
दार्जिलिंग	१६	५८	–	–	१८	१८	१	२०
दिल्ली	१६	५२	१८	५०	१९	०६	१	५८
देवबन्द(उ.प्र.)	१६	५०	१८	४८	१९	०४	१	५८
दंवरिया(उ.प्र.)	१६	५७	–	–	१८	३६	१	३९
देवास(म.प्र.)	१६	५८	१८	५८	१९	०१	२	००
देवप्रयाग(उ.प्र.)	१६	५०	१८	४७	१९	११	१	५७
देहरादून	१६	५०	१८	४७	१९	०४	१	५७
द्वारिका	१६	५५	१९	००	१९	२८	२	०५
धनबाद	१७	०१	–	–	१८	२९	१	२०
धर्मशाला(हि.)	१६	४६	१८	४५	१९	१३	१	५९
धुरी(पं.)	१६	४८	४८	४८	१९	१३	२	००
नरैना	१६	५२	१८	५४	१९	१४	२	०२
नबलगढ़(रा.)	१६	५१	१८	५२	१९	११	२	०१
नागपुर	१७	०२	–	–	१८	४६	१	४४

* स्पर्श से मोक्षतक का काल 'पर्वकाल' कहलाता है, जहां सूर्य मोक्ष से पूर्व ही अस्त हो जाता है वहां स्पर्श से सूर्यास्त तक के काल को 'पर्वकाल' माना जाता है ।

भारत के प्रसिद्ध नगरों में सूर्यग्रहण (१९ अग . १९९९ई.) स्पर्श मोक्ष आदि काल (भा. स्टै. टा.)

इन नगरों में खण्डग्रास ही दिखाई देगा। जहां मोक्ष काल नहीं दिखाया गया है, वहां मोक्ष से पहिले ही सूर्यास्त हो जायेगा।

नगर	स्पर्श घं.	स्पर्श मिं.	मोक्ष घं.	मोक्ष मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.	पर्वकाल * घं.	पर्वकाल * मिं.
नागौर(रा.)	१६	५१	१८	५३	१९	१७	२	०२
नाथद्वारा(रा.)	१६	५६	१८	५५	१९	०१	१	५९
नाभा(पं.)	१६	४९	१८	४८	१९	१२	१	५९
नारनौल(ह.)	१६	५१	१८	५१	१९	०८	२	००
नालागढ(हि.)	१६	४८	१८	४६	१९	१०	१	५८
नाहन(हि.)	१६	४९	१८	४७	१९	१७	१	५८
नासिक	१७	०१	१९	०२	१९	०६	२	०१
नीमच(म.प्र.)	१६	५५	१८	५६	१९	०८	२	०१
नैनीताल	१६	५२	१८	४८	१८	५७	१	५६
पंचकूला(ह.)	१६	४८	१८	४७	१९	०९	.१	५९
पंजिम	१७	०८	–	–	१९	०१	१	५३
पटना	१६	५९	–	–	१८	२९	१	३०
पटियाला	१६	४९	१८	४८	१९	१०	१	५९
पठानकोट	१६	४६	१८	४५	१९	१६	१	५९
पांडिचेरी	१७	१५	–	–	१८	३२	१	१७
पानीपत(ह.)	१६	५०	१८	४९	१९	०७	१	५९
पालमपुर(हि.)	१६	४७	१८	४५	१९	१२	१	५८
पाली(रा.)	१६	५३	१८	५५	१९	१६	२	०२
पिलानी	१६	५१	१८	५१	१९	११	२	००
पुंछ(का.)	१६	४३	१८	४३	१९	२५	२	००
पुणे	१७	०३	१९	०३	१९	०४	२	००
पुरनिया(बि.)	१६	५९	–	–	१८	२०	२	०१
पुरी(उड़ीसा)	१७	०६	–	–	१८	१८	१	१२
पोरबन्दर	१६	५६	१९	०१	१९	२४	२	०५
पोर्टब्लेअर	१७	१६	–	–	१७	४०	०	२४
प्रतापगढ़(उ.प्र.)	१६	५७	–	–	१८	४२	१	४५
प्रयाग	१६	५८	–	–	१८	४२	१	४४
फरीदकोट	१६	४७	१८	४७	१९	१८	२	० ०
फरीदाबाद	१६	५२	१८	५०	१९	०४	१	५८
फाज़िल्का	१६	४७	१८	४८	१९	२०	२	०१
फिरोजपुर	१६	४७	१८	४७	१९	१८	२	००
फुलेरा	१६	५२	१८	५३	१९	१०	२	०१
बगलौर	१७	१२	–	–	१८	४२	१	३०
बदायूं	१६	५३	१८	५०	१८	५६	१	[illegible]
बलिया	१६	५८	–	–	१८	३३	१	३५
बाड़मेर	१६	५१	१८	५५	१९	२४	२	०४

नगर	स्पर्श घं.	स्पर्श मिं.	मोक्ष घं.	मोक्ष मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.	पर्वकाल * घं.	पर्वकाल * मिं.
बांसवाड़ा(रा.)	१६	५६	१८	५८	१९	०९	२	०२
बिजनौर(उ.प्र.)	१६	५१	१८	४८	१९	०२	१	५७
बिलासपुर(म.प्र	१७	०२	–	–	१८	३५	१	३३
बिलासपुर(हि.)	१६	४८	१८	४६	१९	१०	१	५८
बीकानेर	१६	५०	१८	५२	१९	१९	२	०२
बीजापुर	१७	०६	–	–	१८	५४	१	४८
बुलन्दशहर	१६	५२	१८	५०	१९	०२	१	५८
बूंदी(रा.)	१६	५५	१८	५५	१९	०६	२	००
वृन्दावन	१६	५३	१८	५२	१९	०१	१	५९
बठिण्डा	१६	४८	१८	४८	१९	१६	२	००
भरतपुर	१६	५३	१८	५२	१९	०२	१	५९
भागलपुर	१७	००	–	–	१८	२१	१	२१
भिवानी(ह.)	१६	५१	१८	५०	१९	०९	१	५९
भीनमाल(रा.)	१६	५३	१८	५६	१९	३०	२	०३
भुवनेश्वर	१७	०५	–	–	१८	१८	१	१३
भोपाल	१६	५८	–	–	१८	५६	१	५८
मण्डी(हि.प्र.)	१६	४७	१८	४५	१९	१०	१	५८
मथुरा	१६	५३	१८	५२	१९	१	१	५९
मदुरै	१७	१७	–	–	१८	३७	१	२०
मन्दसौर	१६	५६	१८	५७	१९	०७	१	१०
महेन्द्रगढ़(ह.)	१६	५२	१८	५१	१९	०८	१	५९
मारवाड़(जं.)	१६	५३	१८	५५	१९	१५	२	०२
मलेरकोटला	१६	४८	१८	४७	१९	१३	१	५९
मिर्जापुर	१६	५८	–	–	१८	३८	१	४०
मुंगेर(बि.)	१६	५९	–	–	१८	२३	१	२४
मुजफ्फरनगर	१६	५१	१८	४८	१९	०४	१	५७
मुम्बई	१७	०२	१९	०३	१९	०९	२	०१
मुरादाबाद	१६	५२	१८	४९	१८	५९	१	५७
मेरठ	१६	५१	१८	४९	१९	०३	२	१२
मैसूर	१७	१३	–	–	१८	४६	१	३३
मोगा(पं.)	१६	४७	१८	४७	१९	१६	२	००
रतनगढ़(रा.)	१६	५०	१८	५१	१९	१४	२	०१
रतलाम	१६	५७	१८	५८	१९	०६	२	०१
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
रांची(बि.)	१७	०१	–	–	१८	२५	१	२४
रामपुरबुशहर,हि.	१६	४८	१८	४५	१९	०७	१	५७

नगर	स्पर्श घं.	स्पर्श मिं.	मोक्ष घं.	मोक्ष मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.	पर्वकाल * घं.	पर्वकाल * मिं.
रामेश्वरम्	१७	१७	–	–	१८	३१	१	१४
रायपुर(म. प्र.)	१७	०३	–	–	१८	३६	१	३३
रिवाड़ी	१६	५२	१८	५१	१९	०७	१	५९
रीवां	१६	५८	–	–	१८	४२	१	४४
रोपड़(पं.)	१६	४८	१८	४७	१९	११	१	५९
रोहतक	१६	५१	१८	५०	१९	०८	१	५९
लखनऊ	१६	५५	–	–	१८	४८	१	५३
लुधियाना	१६	४७	१८	४७	१९	१३	२	००
विजयवाड़ा	१७	०८	–	–	१८	३५	१	२७
विशाखापत्तनम्	१७	०७	–	–	१८	२५	१	१८
शाहदरा	१६	५१	१८	५०	१९	०४	१	५९
शिमला	१६	४८	१८	४६	१९	०८	१	५८
शिलांग	१७	०	–	–	१८	०२	१	०२
श्रीनगर(का.)	१६	४३	१८	४२	१९	२२	१	५९
संगरूर(पं.)	१६	४८	१८	४८	१९	१२	२	००
सरहिन्द(पं.)	१६	४८	१८	४७	१९	११	१	५९
सहानरपुर	१६	५०	१८	४८	१९	०५	१	५८
सागर	१६	५८	–	–	१८	५२	१	५४
सांगानेर(रा.)	१६	५३	१८	५३	१९	०८	२	००
सिरसा(ह.)	१६	४९	१८	५०	१९	१४	२	०१
सीकर(रा.)	१६	५१	१८	५२	१९	११	२	०१
सूरत	१६	५८	१९	०१	१९	१२	२	०३
सूरतगढ़(रा.)	१६	४८	१८	५०	१९	१९	२	०२
सोलन(हि. प्र.)	१६	४९	१८	४७	१९	०८	१	५८
हमीरपुर(उ. प्र.)	१६	५६	–	–	१८	४९	१	५४
हमीरपुर(हि. प्र)	१६	४७	१८	४६	१९	१२	१	५९
हरिद्वार	१६	५०	१८	४७	१९	०३	१	५७
हाथरस	१६	५४	१८	५१	१९	००	१	५७
हापुड़(उ प्र)	१६	५२	१८	५०	१९	०२	१	५८
हांसी(ह.)	१६	५०	१८	५०	१९	१०	२	००
हिसार	१६	५०	१८	५०	१९	११	२	००
हैदराबाद	१७	०७	–	–	१८	४५	१	३८
होशंगाबाद	१६	५९	–	–	१८	५४	१	५५
[illegible]ारपुर	१६	४७	१८	४६	१९	१४	१	५९

* स्पर्श से मोक्षतक का काल 'पर्वकाल' कहलाता है, जहां पूर्ण मोक्ष से पूर्व ही अस्त हो जाता है वहां स्पर्श से सूर्यास्त तक के काल को 'पर्वकाल' माना जाता है।

गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश, व उड़ीसा के वे नगर/उपनगर जहाँ खग्रास (पूर्ण ग्रहण) दीखेगा

(जहां मोक्षकाल नहीं दिया गया है, वहाँ मोक्ष से पहिले ही सूर्य अस्त हो जायेगा) (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

नगर	स्पर्श घं.	स्पर्श मि.	मोक्ष घं.	मोक्ष मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	पर्वकाल घं.	पर्वकाल मि.	खग्रास प्रारम्भ घं.	खग्रास प्रारम्भ मि.	खग्रास की अवधि* सेक.
अकोला (महा.)	१७	०२	–	–	१८	५४	१	५२	१८	०४	५८
अढोई(गु.)	१६	५४	१८	५८	१९	२४	२	०४	१७	५९	४७
आकोट(महा.)	१७	०१	–	–	१८	५५	१	५४	१८	०४	६
आनन्द (गु.)	१६	५७	१९	००	१९	१३	२	०३	१८	०२	१४
ओल्ड बस्तर (म.प्र.)	१७	०५	–	–	१८	३३	१	२८	१८	०५	३०
करंजिया (महा.)	१७	०२	–	–	१८	५२	१	५०	१८	०४	४५
कलिंगपत्तनम् (आं.)	१७	०७	–	–	१८	१९	१	१२	१८	०६	३२
कोटापाड़ (उड़ी.)	१७	०५	–	–	१८	३१	१	२६	१८	०५	४४
कोरापुर(उड़ी.)	१७	०६	–	–	१८	२९	१	२३	१८	०६	४८
खम्भात (गु.)	१६	५७	१९	००	१९	१४	२	०३	१८	०१	३८
खामगांव (महा.)	१७	०१	--	--	१८	५६	१	५५	१८	०३	२७
खेड़ा (गु.)	१६	५६	१८	५९	१९	१४	२	०३	१८	०१	६
गान्धी धाम (गु.)	१६	५५	१८	५९	१९	२५	२	०४	१७	५९	१४
चन्द्रपुर (महा.)	१७	०४	–	–	१८	४४	१	४०	१८	०५	५७
चौपाड़ा (महा.)	१७	००	१९	००	१९	०२	२	००	१८	०३	४३
जगदलपुर (म.प्र.)	१७	०५	–	–	१८	३२	१	२७	१८	०५	५०
जलगांव (महा.)	१७	००	–	–	१९	००	२	००	१८	०३	३०
जामनेर (महा.)	१७	०१	–	–	१८	५९	१	५८	१८	०३	२
टपाल (महा.)	१७	००	१९	००	१९	०३	२	००	१८	०३	६३
टेक्काली (आं.)	१७	०७	–	–	१८	२३	१	१६	१८	०६	१६
डभोई (गु.)	१६	५८	१९	००	१९	११	२	०२	१८	०२	६०
ढोल्का (गु.)	१६	५६	१८	५९	१९	१५	२	०३	१८	०१	२०
ढोलेरा (गु.)	१६	५७	१९	००	१९	१६	२	०३	१८	०१	८
तलोदा (महा.)	१६	५९	१९	००	१९	०७	२	०१	१८	०२	१६
दरयापुर (महा.)	१७	०१	–	–	१८	५३	१	५२	१८	०४	१५
धौली (महा.)	१७	००	१९	००	१९	०१	२	००	१८	०३	५८
ध्रंगध्रा (गु.)	१६	५५	१८	५९	१९	२०	२	०४	१८	००	५०
नड़ियाद (गु.)	१६	५७	१८	५९	१९	१४	२	०२	१८	०१	७
नन्दुरबार (महा.)	१६	५९	१९	००	१९	०६	२	०१	१८	०२	२
नरसन्नपेठ (आं.)	१७	०७	–	–	१८	२३	१	१६	१८	०६	३२
नारा (गु.)	१६	५४	१८	५९	१९	३०	२	०५	१७	५८	३७
नौपाड़ा(आ.)	१७	०७	–	–	१८	२३	१	१६	१८	०६	२६
पदरा (गु.)	१६	५८	१९	००	१९	१२	२	०२	१८	०२	६४
परलाकोट (म.प्र.)	१७	०४	–	–	१८	३८	१	३४	१८	०५	२०
पार्वतीपुरम् (आं.)	१७	०६	–	–	१८	२६	१	२०	१८	०६	३७
पालकोण्डा (आं.)	१७	०७	–	–	१८	२५	१	१८	१८	०६	३९
पेटलाद (गु.)	१६	५७	१८	५९	१९	१४	२	०२	१८	०१	४९
बड़नेरा (महा.)	१७	०२	–	–	१८	५२	१	५०	१८	०४	१
बड़ौदा (गु.)	१६	५७	१९	००	१८	१२	२	०३	१८	०२	५२
बल्लारशाह(महा.)	१७	०४	–	–	१८	४४	१	४०	१८	०५	४३
बालापुर (महा.)	१७	०१	–	–	१८	५५	१	५४	१८	०४	३५
बुरहानपुर (म.प्र.)	१७	००	–	–	१८	५८	१	५८	१८	०३	२४
बोब्बिलो (आं.)	१७	०७	–	–	१८	२६	१	१९	१८	०६	३८
बोरसाद (गु.)	१६	५७	१८	५९	१९	१३	२	०२	१८	०२	५४
भुज(गु.)	१६	५३	१८	५९	१९	२७	२	०६	१७	५९	२
भुसावल (महा.)	१७	००	–	–	१९	००	२	००	१८	०३	३८
मल्लकापुर (महा.)	१७	०१	–	–	१८	५८	१	५७	१८	०३	४१
मालिया (गु.)	१६	५५	१८	५९	१९	२२	२	०४	१८	००	४६
मुर्त्तजापुर (महा.)	१७	०२	–	–	१८	५३	१	५१	१८	०४	५०
मुल (महा.)	१७	०४	–	–	१८	४३	१	३९	१८	०५	२२
यवतमाल (महा.)	१७	०३	–	–	१८	४९	१	४६	१८	०४	५१
राजुर (महा.)	१७	०३	–	–	१८	४६	१	४३	१८	०५	५३
राजरा (महा.)	१७	०४	–	–	१८	४३	१	३९	१८	०५	३०
रापर (गु.)	१६	५४	१८	५८	१९	२४	२	०४	१८	००	२२
लाखपात (गु.)	१६	५२	१८	५८	१९	३२	२	०६	१७	५८	३७
लिम्बड़ी (गु.)	१६	५६	१८	५९	१९	१८	२	०३	१८	०१	३४
शाहपुर (म.प्र.)	१७	००	–	–	१८	५८	१	५८	१८	०३	४०
शेगांव (महा.)	१७	०१	–	–	१८	५६	१	५५	१८	०४	५१
श्री काकुलम् (आं.)	१७	०७	–	–	१८	२४	१	१७	१८	०६	१७
सालूर (आं.)	१७	०७	–	–	१८	२७	१	२०	१८	०६	२३
सुरेन्द्रनगर (गु.)	१६	५६	१८	५९	१९	१८	२	०३	१८	०१	५५

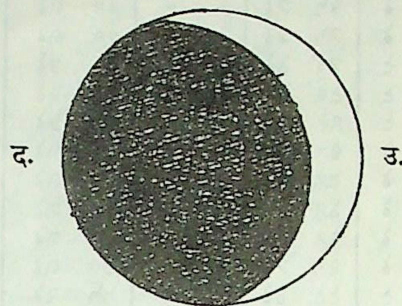
* जितने समय तक खग्रास (पूर्ण) रहेगा उस समय को यहाँ '**खग्रास की अवधि**' लिखा गया है। नगर के अक्षांश में एक कला की अशद्धि से 'खग्रास की अवधि' में ३ सेकण्ड का अन्तर आएगा। रेखांश में अशुद्धि सेभी खग्रास की अवधि में अन्तर आता है, लेकिन यह अन्तर अपेक्षाकृत कम होता है।' 'जैसे प्रामाणिक एटलसों में दिए गए नगरों के अंक्षांश रेखांशों में भी ३ कला तक की स्थूलता अक्सर रहती ही है। अतः यह जान लेना चाहिए कि नगर के अक्षांश -रेखांशों में स्थूलता (अशुद्धि) के कारण इस कोष्ठक में दिए गए 'खग्रास की अवधि' के सेकण्डों में सामान्यतः ८-१० सेकण्डों का अन्तर कहीं कहीं अवश्य दिखाई देगा।

-प्रियव्रत शर्मा

कुछ नगरों में ग्रहण मध्यकाल (परमग्रास काल) (भा.स्टैं.टा.) ओर परमग्रास मान (प्रतिशत) (सूर्य बिम्ब = १००)

नगर	ग्रहण मध्य घं.	मि.	परम ग्रास	नगर	ग्रहण मध्य घं.	मि.	परम ग्रास	नगर	ग्रहण मध्य घं.	मि.	परम ग्रास
अजमेर	१७	५५	९०	जयपुर	१७	५६	८८	बीकानेर	१७	५४	८७
अमृतसर	१७	४९	७९	जालंधर	१७	५०	७९	भरतपुर	१७	५५	८६
अम्बाला	१७	५१	७९	जैसलमेर	१७	५४	९१	भुवनेश्वर	१८	०३	९५
अयोध्या	१७	५७	८३	जोधपुर	१७	५६	९२	भोपाल	१८	०१	९५
अलवर	१७	५५	८५	झांसी	१७	५६	८९	मण्डी	१७	४९	७७
अलीगढ़	१७	५४	८४	त्रिवेन्द्रम्	१८	१६	६९	मथुरा	१७	५५	८६
अहमदाबाद	१८	००	९९ १/२	दतिया	१७	५६	८९	मुंबई	१८	०६	९३
आगरा	१७	५६	८६	दरभंगा	१७	५७	८१	मेरठ	१७	५३	८४
उज्जैन	१८	०१	९६	दिल्ली	१७	५३	८३	रोपड़	१७	५०	७९
उदयपुर(रा.)	१७	५९	९५	देहरादून	१७	५१	७९	रोहतक	१७	५३	८३
करनाल	१७	५२	८१	नवलगढ़	१७	५४	८६	लखनऊ	१७	५५	८४
कलकत्ता	१८	००	८८	नागपुर	१८	०३	९८	लुधियाना	१७	५०	७९
कांगड़ा	१७	४८	७७	नीमच	१७	५८	९४	वाराणसी	१७	५८	८५
कानपुर	१७	५६	८६	नैनीताल	१७	५३	८०	शिमला	१७	५०	७८
कुरुक्षेत्र	१७	५१	८१	पटना	१७	५७	८३	श्रीनगर(का.)	१७	४५	७४
कुल्लू	१७	४९	७७	पटियाला	१७	५१	८१	सहारनपुर	१७	५२	७८
गोरखपुर	१७	५८	८३	पूना	१८	०६	९३	सागर	१७	५९	९३
ग्वालियर	१७	५७	८८	प्रयाग	१७	५८	८६	सीकर	१७	५४	८७
चण्डीगढ़	१७	५१	७९	बंगलौर	१८	१२	८२	हरिद्वार	१७	५२	७९
चम्बा	१७	४८	७७	बठिण्डा	१७	५१	८१	हाथरस	१७	५५	८५
चूरू	१७	५३	८५	बून्दी	१७	५८	९१	हिसार	१७	५३	८३
चेन्नई	१८	१२	८४	बिलासपुर	१७	५०	७८	होशंगाबाद	१७	५९	९५
जम्मू	१७	४८	७७	(हि.प्र.)				होशियारपुर	१७	४९	७८
जबलपुर	१८	०२	९३								

सूर्यग्रहण ११ अग. '९९
कुरुक्षेत्र में परमग्रास का मान
(१७घं. ५१ मि.)



परिलेखः- प्रियव्रत शर्मा

१. यदि पूर्णिमान्त के समय सूर्य का राहु या केतु से अन्तर ९ अंश से कम हो तो उस दिन चन्द्रग्रहण अवश्य होता है ।

२. यदि अमान्त काल में सूर्य का राहु या केतु से अन्तर १३ अंश से कम हो तो उस दिन भूगोल पर सूर्यग्रहण कहीं न कहीं अवश्य होता है ।

३. खग्रास सूर्यग्रहण की परम अवधि ७ १/२ मिनट है। यह तभी संभव है जबकि सूर्य उच्चस्थ (पृथ्वी से परम दूरी पर) और चन्द्रमा नीचस्थ (पृथ्वी के समीपतम) हो ।

४. खग्रास सूर्यग्रहण के समय चन्द्रमा की पृथ्वी पर पड़ने वाली महाछाया चन्द्र की पूर्वाभिमुखगति और पृथ्वी के पूर्वाभिमुख अक्षभ्रमण के कारण पश्चिम से पूर्व की ओर भूपृष्ठ पर बड़ी तीव्र गति से भागती नज़र आती है।

५. सबसे पुराना ग्रहण, जिसका वर्णन चीन के प्राचीन ग्रन्थों में मिलता है, २२ अक्तूबर २१३७ ई. पू. हुआ था । 'ही' 'हो' नाम के दो विलासी चीनी ज्योतिषियों ने प्रमादवश इस ग्रहण की भविष्यवाणी नहीं की, जिससे तत्कालीन क्रुद्ध चीनी राजा चुंग-क्यांग ने उनका वध करवा दिया था ।

शनि की साढ़ेसाती (बृहत्कल्याणी), ढैया (लघुकल्याणी) और गुरु-राहु का गोचरफल (सं. २०५६ वि.)

जन्म कुण्डली में शनैश्चर का शुभग्रह से संबंध हो अथवा महादशा का अंतर शुभ चल रहा हो, तो ढैया और साढ़ेसाती का अशुभफल कम होता है । यदि चन्द्र, शनि जन्म में अशुभ ग्रहों से युक्त हों तो साढ़ेसाती व ढैया महान् अशुभ, चिन्ता, अवनति, धनहानि, झगड़ा, कार्य में विघ्न ,रोजगार में कमी, व्यर्थ कलह एवं रोग, पशु-पीड़ा आदि का कारण बनती है । यदि जन्म-कुण्डली में शनि अष्टमेश या मारकेश भी हो तो भी ढैया, साढ़ेसाती विशेष अनिष्ट फलप्रद होती है । यदि जन्म में शनि लग्नेश, पंचमेश, नवमेश होकर ३, ६, ११ में स्थित हो तो सुख-सम्पत्ति मिलती है, व्यापारादि में लाभ होता है । शनि के अष्टकवर्ग में अधिक रेखाएं हों तो शुभ, कम रेखाएं हों तो अशुभ फल निश्चित होता है। शान्त्यर्थ-सतनाजा को तेल का हाथ लगाकर पक्षियों को डालना चाहिए या शनिवार को तेल में मुख देखकर उसमें मिष्ठान्न, गुलगुले आदि बनाकर, गरीबों को, भैंसे या कुत्ते को दें या बन्दरों को गुड़-चने डालते रहें । अष्टगंध से शुभ मुहूर्त में बना हुआ शनि यंत्र धारण करना विशेष शान्तिप्रद है ।

साढ़ेसाती में प्रत्येक राशि के लिए शनि का अशुभ फल इस प्रकार है :-

मेष राशि वालों को बीच के अढाई वर्ष खराब है । वृष को पहिले अढाई वर्ष, मिथुन को अंत के अढ़ाई वर्ष, कर्क को बीच के अढ़ाई वर्ष, सिंह को पहिले ५ वर्ष, उसमें भी मध्य के अढ़ाई वर्ष खराब हैं । कन्या को पहिले ५ वर्ष,उसमें भी मध्य के अढ़ाई वर्ष विशेष अशुभ हैं । तुला को आखिर के अढ़ाई वर्ष वृश्चिक को अंतिम ५ वर्ष नेष्ट हैं, उसमें भी पहले अढ़ाई वर्ष विशेष अशुभ हैं । धनु को प्रारंभ के अढ़ाई वर्ष, मकर को पहिले ५ वर्ष, उसमें भी पहिले अढ़ाई वर्ष विशेष खराब हैं। कुंभ को आदि एवं अंत के अढ़ाई वर्ष, विशेषत: अंत के अढ़ाई वर्ष अधिक अशुभ हैं। मीन को पूरे साढ़ेसात वर्ष नेष्ट हैं, उनमें भी अंत के अढ़ाई वर्ष विशेष अशुभ फल वाले होते हैं ।

इस वर्ष (सं. २०५६वि.में) शनि मेष राशि में ही रहेगा , जिसकी ढैया आदि का फल विभिन्न राशिवालों के लिए नीचे बाईं और कोष्ठक में दिया गया है।

नोट:- जिन राशियों का इस कोष्ठक में निर्देश नहीं है उन राशि वालों के लिए मेषस्थित शनि के काल में ढैया या साढेसाती नहीं हैं ।

मेष राशिस्थ शनि की साढ़ेसाती, ढैया

(पूरे सं. २०५६ वि. के लिए)

राशि	ढैया या साढ़ेसाती	पाद	साढ़ेसाती किस अंग पर	साढ़ेसाती चढ़ती या उतरती	फल
मेष	साढ़ेसाती	चाँदी	हृदय	......	व्यापार में वृद्धि, राज सम्मान,यश प्रताप बढ़े , मांगलिक कार्य हों।
वृष	साढ़ेसाती	लोहा	मस्तक	चढ़ती	रोगभय, रक्त विकार,पति/स्त्री को कष्ट, व्यापार में हानि, सन्तान कष्ट।
कन्या	ढैया	लोहा	.....	.....	रोगभय, रक्त विकार,पति/स्त्री को कष्ट, व्यापार में हानि, सन्तान कष्ट।
मकर	ढैया	लोहा	.....	......	रोगभय, रक्त विकार,पति/स्त्री को कष्ट, व्यापार में हानि, सन्तान कष्ट।
मीन	साढ़ेसाती	तांबा	पैर	उतरती	सुख सम्पत्ति, व्यापार अच्छा, शारीरिक सुख, सन्तान सुख।

"गुरु के संचार का फल"

गुरु इस वर्ष २५ मई १९९९ ई. तक मीन राशि में संचार करेगा। और यह २६ मई को मेष में प्रविष्ट होकर वर्षान्त तक मेष में ही रहेगा। मीन और मेष राशि के गुरु का फल भिन्न-भिन्न राशि वालों के लिए अलग-अलग दो कोष्ठकों में नीचे दिया गया है ।

मीन राशि के गुरु का शुभाशुभ फल

(वर्षारम्भ से २५ मई' ९९ तक के लिए)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	आधि व्याधि	प्रगति	धनहानि	धन लाभ	धननाश	सम्मान	रोग	सुख	धनहानि	शरीरकष्ट	धनलाभ	भय

मेष राशि के गुरु का शुभाशुभ फल

(२६ मई '९९ से वर्षान्त तक के लिए)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	भय	आधि व्याधि	प्रगति	धनहानि	धनलाभ	धननाश	सम्मान	रोग	सुख	धनहानि	शरीर कष्ट	धन लाभ

राहु के संचार का फल

राहु इस वर्ष प्रारम्भ से अन्त तक कर्क राशि में ही संचार करेगा, जिसका भिन्न-भिन्न राशि वालों के लिए शुभाशुभ फल नीचे कोष्ठक में दिया गया है।

कर्क राशि के राहु का शुभाशुभ फल

(पूरे संव. २०५६ वि. के लिए)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	अपमान	सौभाग्य	कलह	भय	विनाश	धन लाभ	कलह	दुःख	धननाश	राजभय	महासुख	धनक्षय

अथनवग्रह स्तोत्रम्

जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरि सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसंभवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्॥
धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च मंगलं प्रणमाम्यहम्॥
प्रियङ्गु कलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥
देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्॥
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्॥
नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्त्तण्डसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्॥
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्॥
इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत्सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशांतिर्भविष्यति॥
नर नारी नृपाणां च भवेत् दुःस्वप्ननाशनम्।

सिक्ख पर्व

('शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी, अमृतसर' की ओर से जारी किए गए 'नानकशाही कैलेण्डर' के अनुसार)

नाम गुरु साहेबान	अवतार दिन	गुरुयाई मिली	जोती जोत समाए
श्री गुरुनानक देव जी	कार्त्ति. पूर्णिमा	—	२२ सितं.
श्री गुरु अंगद देव जी	१८ अप्रै.	१८ सितं.	१६ अप्रै.
श्री गुरु अमरदास जी	२३ मई	१६ अप्रै.	१६ सितं.
श्री गुरु राम दास जी	९ अक्तू.	१६ सितं.	१६ सितं.
श्री गुरु अर्जुन देव जी	२ मई	१६ सितं.	१६ जून
श्री गुरु हरगोबिन्द जी	५ जुला.	११ जून	१९ मार्च
श्री गुरु हरराय जी	३१ जन.	१४ मार्च	२० अक्तू.
श्री गुरु हरकिशन जी	२३ जुला.	२० अक्तू.	१६ अप्रै.
श्री गुरु तेगबहादुर जी	१८ अप्रै.	१६ अप्रै.	२४ नवं.
श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी	५ जन.	२४ नवं.	२१ अक्तू.
श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी	१ सितं.	२० अक्तू.	—

नोट :-नानकशाही कैलेण्डर के अनुसार गुरुपर्वों की ये ऊपर दी गईं अंग्रेजी तारीखें हर साल यही रहेंगी।

हम हृदय से इनके आभारी हैं

हमारे परममित्र ज्ञानी श्री करतार सिंह जी, मालिक "कंवल वीडियो एण्ड फोटोस्टेट,कुराली" पिछले ७ वर्षों से हमारी 'श्रीमार्त्तण्ड आलम जन्त्री' (उर्दू) और 'शिरोमणि तिथ पत्रिका' (पंजाबी)के अनुवाद, प्रूफ रीडिंग आदि का पूरा कार्य गहन आत्मीय भाव एवं तन्मयता से करते आ रहे हैं, जिसके लिए उनके प्रति हम हार्दिक आभार प्रकट किए बिना नहीं रह सकते। अपने व्यस्त जीवन के क्षणों में से वे हमारे लिए प्रचुर पर्याप्त समय सहर्ष निकाल लेते हैं इसके लिए हम अपने आपको उनका सचमुच ऋणी मानते हैं।

अपिच "श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय, कुराली" के प्रबन्धक हमारे अनुजस्वरूप चि. प्रेमचन्द शर्मा तथा इनके सहकर्मचारी चि. श्रीकृष्ण शर्मा, शास्त्री, वेदाचार्य और चि.दिलबाग शर्मा 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' (हिन्दी) की प्रूफरीडिंग, पाण्डुलिपिलेखन आदि का कार्य बड़ी तत्परता, सावधानी, अपनापन और आदरभाव से करते हैं। इनके निरंतर प्रगतिमय उज्ज्वल

आकाशीय कौंसिल का विचार (सं. २०५६ वि.)

संसार की सामाजिक आर्थिक एवं राजनैतिक स्थिति का ग्रहगोचर के अनुसार सर्वेक्षण

१. संवत्सर-स्वामी गुरु की गोचर स्थिति के अनुसार संवत् २०५६ वि. में भविष्यद्रष्टा नास्ट्रेडाम आदि द्वारा संकेतित भयंकर अणुयुद्ध की संभावना नगण्य बन जाती है। लेकिन संवत् के प्रतिरक्षा मंत्री मंगल की स्थिति कुछ मुस्लिम राष्ट्रों में भयावह स्थिति को जन्म देगी ।

२. 'नन्दन' वर्ष में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ेगी, नई प्रगतिप्रद योजनाएं बनेंगी, विश्वशान्ति वार्ता में भारत का प्रयास प्रशस्य रहेगा।

३. अप्रैल १९९९ से २२ अगस्त, १९९९ ई. तक विश्व में अघटित घटनाचक्र चलेगा । किसी बड़े समृद्ध राष्ट्र के नेतृत्व में परिवर्तन , कुछ देशों में आंतरिक अशांति, विश्व के कुछ देशों में आर्थिक संकट विकट रूप धारण करे। कहीं भयंकर युद्ध का वातावरण एवं कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि के समाचार मिलें।

४. भारत में अगस्त १९९९ ई. तक विपक्ष की राजनैतिक गतिविधि से सत्तारूढ़ दल प्रभावित होगा, सत्ता परीक्षण के कारण बनें।

५. भारत के प्रधान नेता के लिए यह वर्ष काफी उलझनपूर्ण रहे, राजनैतिक परिस्थितियां बदलें, वर्षान्त में नए समीकरण बनें, राजनैतिक दल फिर निर्वाचन संग्राम में उतरने के लिए विवश ।

६. संवत् के अंत में १४ मार्च २००० ई. के बाद राजनैतिक उलझने अधिक, धार्मिक-जातीय उपद्रव चिन्ताजनक, राजनीति में विशेष उलटफेर।

७. उत्तरी भूभाग, बंगाल, बिहार, आसाम में कुछ स्थानों पर स्थिति केन्द्र के लिए सिरदर्द। उ.प्र. में भी स्थिति सत्तारूढ़ दल के लिए चुनौतीपूर्ण रहे ।

८. उत्तरी-दक्षिणी प्रान्तों में कहीं भूकम्प, समुद्री तूफान, जलप्लाव आदि से हानि के समाचार ।

९. भारत के आर्थिक सुधारों में प्रगति, निजीकरण से कुछ क्षेत्रों में विशेष लाभ, विदेशों से व्यापारिक सम्बन्ध बढ़ें।

१०. भारत के प्रधान नेता एवं अग्रणी-राजनैतिक दलों की ग्रहस्थिति पर विशेष विचार एवं इनका भविष्य, -पढ़ें प्रस्तुत लेख में ।

"संसार का प्रत्येक परमाणु एक निर्धारित नियम से विलग नहीं हो सकता। एक सूक्ष्मतम परमाणु में यदि तनिक भी अव्यवस्था किंवा अनुशासन-हीनता आ जाए, तो विराट् ब्रह्माण्ड एक क्षण के लिए भी न टिक सके । एक क्षणिक-विस्फोट से अनन्त प्रकृति अग्निज्वालाओं से अतिरिक्त कुछ न रहे," - यह नियामक विधान किसी अदृश्य सत्ता के अस्तित्व को प्रमाणित करता है । इसी प्रकार यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड प्रभु के एक निश्चित विधान के अनुसार ही चल रहा है । इस विधान का साक्षात् कृतधर्मा ऋषियों ने जो अध्ययन व चिन्तन किया है, उसका परिणम ही 'ज्योतिष' है। ज्योतिष के अनुसार ब्रह्माण्ड के सभी क्रिया-कलाप ग्रहों द्वारा नियंत्रित हैं। आकाश में जो भी ग्रह-नक्षत्र हैं, उनसे यह पृथ्वी किंवा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड अप्रभावित नहीं रहते- यह ज्योतिष का एक मूलभूत सिद्धांत है। इस सिद्धांत की प्रमाणिकता में सन्देह करना तो दुराग्रह ही है। विज्ञान, कार्य-करण के सिद्धांत पर ही आधारित है। परन्तु आज भी असंख्य घटनाएं ऐसी हैं, जिनका कारण समझने एवं समझाने में चोटी के वैज्ञानिक अपने आपको सर्वथा असमर्थ पा रहे हैं । सिद्धांतों के व्यभिचार मात्र से शास्त्र की वैज्ञानिकता का प्रतिवाद नहीं किया जा सकता। ज्योतिष चिरन्तन सत्य-सिद्धांतों पर आधारित एक विज्ञान है, जिसमें अभी अत्यधिक अनुसंधान की आवश्यकता है ।

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार कालात्मा सूर्य को सब ग्रहों का प्रधान माना गया है। शुक्ल यजुर्वेद की इस ऋचा पर ध्यान दें-

"आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च॥
हिरण्येन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्॥"

अर्थात्-सूर्यनारायण सम्पूर्ण भुवनों को देखते हुए परिभ्रमण करते हैं। सभी ग्रहों में एकमात्र सूर्यदेव ही तो हैं, जो प्रत्यक्षरूप से दृष्टिगोचर होते रहते हैं। सम्पूर्ण दिशाओं को प्रकाश देने वाला कालात्मा-सूर्य स्थावर जंगम जगत्, ग्रह, पृथ्वी, जल, वायु आकाश किंवा समस्त भूचक्र का भेद जानता है। सूर्य की प्राकृतिक व्यवस्था में तनिक भी रूपान्तर होने से दिग्दाह, उल्कापात, भूकम्प, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, युद्ध, महामारी, अराजकता आदि उपद्रवों से संसार त्रस्त हो जाता है । अत: स्पष्ट है, कि आकाशीय पिण्डों (ग्रहों)का विश्वजनीन घटनाचक्र से कुछ सम्बन्ध अवश्य है। इस तथ्य को वैज्ञानिक विचारक एवं बुद्धिजीवियों का एक बड़ा वर्ग स्पष्ट स्वीकार करता है ।

ऋग्वेद में पचानवें हजारवर्ष पूर्व ग्रहनक्षत्रों का वर्णन उपलब्ध है । महर्षियों द्वारा प्रस्फुरित इस शास्त्र पर गुरु शिष्य परम्परा चिंतन व संशोधन संवर्धन होते रहे हैं। प्रत्येक ग्रह जब अपनी गतिस्थिति में अंतर लाता है, ी विश्व का घटनाचक्र प्रभावित होता देखा गया है । इस पृथ्वी पर जो कुछ भी घटित होता अनु र करते हैं वह सब ग्रहों के वक्र-मार्ग आदि के ही परिणाम हैं। इस ग्रहगति जन्य-संकेत के अ र पर ही अपनी मति के अनुसार विश्व में जो भी प्रतिवर्ष घटित होता है, **"श्रीमार्त्तण्ड पंचांग"** के माध्यम से प्रिय पाठकों के समकक्ष उपस्थित

करते हैं और यह इस प्रकाशन का ७२वां गौरवपूर्ण वर्ष प्रारम्भ हो रहा है ।

आपके इस लोकप्रिय पंचांग में प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाली आश्चर्यजनक अव्यभिचरित भविष्यवाणियों में साधारण वर्ग के व्यक्ति से लेकर **भारतरत्न श्री जवाहरलाल नेहरु, श्रीमती इन्दिरा गांधी, प्रथम राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र प्रसाद एवं अन्य गण्यमान्य प्रतिष्ठित ऐतिहासिक महापुरुषों की अभिरुचि रही है। आज भी यह पंचांग अपनी सफल आश्चर्यचकित कर देने वाली भविष्यवाणियों के कारण तथा ग्रहण आदि पंचांग गणित की सूक्ष्मता एवं शुद्धि के कारण भारत में ही नहीं विदेशों में भी लोकप्रिय है और भारत में अग्रणी स्थान प्राप्त कर चुका है ।**

इससे पहिले कि हम सं. २०५६ की ग्रहस्थिति का परिशीलन करें, गतवर्षों की कुछ आश्चर्जनक भविष्यवाणियों की चर्चा करना प्रासंगिक मानते हैं, ताकि फलित ज्योतिष की सत्यता को प्रमाणित किया जा सके ।

(१) सं. २०५३ वि. के पंचांग में पृ. १०१ पर पाक्षिक फलादेश 'लोकभविष्य' में सितम्बर १३ से २७ के मध्य स्पष्ट घोषणा की गई थी कि -

"(इस पक्ष में) सूर्य-राहु एवं शनि का समसप्तक (योग) कहीं राजनीतिज्ञ के अपदस्थ होने का संकेत भी देता है ।"

पाठकों! **२२ सितम्बर को भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री नरसिंह राव जी को कांग्रेस के प्रधान पद से पृथक् होना पड़ा, - इस भविष्यवाणी की सफलता के बारे में पाठकों ने हमें दूरभाष पर सूचित करते हुए फलितशास्त्र की प्रतिष्ठा को स्वीकारा है ।**

(२) सं. २०५३ वि. के पंचांग में पृ. २० पर कालम १ में लिखी गई इन पंक्तियों पर ध्यान दें-

"इस वर्ष यहां की शासन सत्ता एवं राजनीतिक दलों के लिए अप्रत्याशित विस्मयकारी घटनाचक्र चलाने वाला है । सत्तासीन पार्टी के सामने ऐसी परिस्थितियां आएंगी, जिससे शासनतंत्र डगमगाएगा, प्रधान नेता ऐसे राजनीतिक चक्रव्यूह में फंस जाएंगे जहां से निकलना कठिन ही प्रतीत होता है ।"

किञ्च "इस लग्न गत ग्रहस्थिति के अनुसार इस संवत् में प्रमुख नेताओं एवं प्रमुख राजनैतिक दलों को गंभीर राजनैतिक चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए। भारतीय राजनीति में विशेष उथल एवं परिवर्तन के संकेत गोचर ग्रहस्थिति से स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं ।"

भारतीय राजनीति के बारे में उपरोक्त भविष्यवाणी की सफलता ने पाठकों को अवाक् भंग हुआ। प्रधान नेता श्री नरसिंह राव जी लक्खूभाई, धोखाधड़ी के केस में ऐसे उलझे, कि कांग्रेस का प्रधान पद छोड़ने को मजबूर होना पड़ा, फिर भी उस चक्रव्यूह से निकल पाना कठिन प्रतीत होता है।

इसवर्ष के प्रमुख नेता एवं राजनैतिक दल हवाला काण्ड से प्रभावित हुए । **पशुचारा काण्ड एवं दूरभाष विभाग** के मंत्री श्री सुखराम जी को भी अप्रत्याशित धन रखने के कारण परेशानी का सामना करना पड़ा है, **जिससे कांग्रेस, भाजपा एवं लोकदल आदि प्रतिष्ठित पार्टियां स्पष्टतः-प्रभावित हुई हैं ।**

(३) सं. २०५३ वि. के पंचांग में पृ. २० पर गोचर ग्रहस्थिति शीर्षक के अन्तर्गत कालम २ में मोटे अक्षरों में स्पष्ट घोषणा की गई थी,

"वर्ष के मंत्रिपद पर आसीन शनि की दृष्टि उत्तर की तरफ ही रहेगी। इस ग्रहस्थिति का प्रभाव कहीं राजनीति में नए तालमेल एवं नए समीकरण बनाकर भारतीय शासनतंत्र में काफी उलटफेर वाला रहेगा।"

पाठक भली भांति जानते हैं, कि सन् १९९६ ई. में **लोकसभा निर्वाचनों के बाद बिल्कुल विरोधी-सिद्धातों वाले विभिन्न दलों ने मिलकर केवल सत्ता हथियाने के लिए एक नया समीकरण बना लिया, जिसे- " 'संयुक्त मोर्चा'** नाम दे दिया गया ।

(४) **केन्द्रीय शासनतंत्र में परिवर्तन की भविष्यवाणी** पढ़ें पृष्ट २०, कालम २ की अन्तिम मोटे अक्षरों में छपी ये पंक्तियां-

"पाठक ध्यान दें कि - गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार २० नवम्बर १९९५ से अप्रैल १९९६ तक की ग्रहस्थिति के परिणामस्वरूप शासनतंत्र एवं केन्द्रीय प्रमुख पार्टियों को एवं प्रधान पदासीन नेताओं को भारी राजनैतिक उलझन का सामना करना होगा। परिणाम स्वरूप केन्द्रीय शासनतंत्र में परिवर्तन के प्रबल योग बनते हैं। "

(५) **संवत् २०५३ के निर्वाचन संग्राम के बारे में की गई भविष्यवाणी,** जिसके बारे में भारत के गण्यमान्य नेता भी हमें फलितशास्त्र की सत्यता के बारे में लिखने के लिए विवश हो उठे-

सं. २०५३ वि. के पंचांग में पृ. २१ पर कालम २ में स्पष्ट रूप से **'त्रिशंकु संसद'** बनने की घोषणा की गई थी, संदर्भ उद्धृत है-

"भारत स्वतंत्रता कुण्डली में सप्तम भावस्थ स्वस्थ शनि संकेत देता है, कि इस वर्ष लोकसभा निर्वाचन में कांग्रेस पार्टी का टकराव सशक्त प्रतिद्वन्द्वी *भाजपा से होगा।*

इस लोकसभा निर्वाचन के परिणाम अप्रत्याशित होंगे और पूर्ण बहुमत किसी भी पार्टी को प्राप्त न होगा । केन्द्रीय वर्तमान मंत्रिमण्डल में १९९६ ई. के मध्य से पूर्व विशेष परिवर्तन संभावित है ।

कांग्रेस (तिवारी) नगण्य रहेगी। वामपंथी मोर्चा व राष्ट्रीय मोर्चा में शामिल विभिन्न घटकों में सैद्धांतिक विरोधाभास व टकराव की स्थिति बनी रहेगी सत्ता प्राप्ति के लिए कुछ घटक प्रमुख पार्टी का बल देंगे ।

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार आगामी निर्वाचन संग्राम में किसी भी पार्टी को बहुमत न मिल सकेगा परिणामस्वरूप केन्द्र में "त्रिशंकु संसद" बनेगी। जो भी बड़ी पार्टी नई सरकार बनाएगी वह कोलीशन या गठबन्धन वाली ही होगी। ऐसा ग्रहस्थिति के आधार पर विचार है, सर्वज्ञ तो प्रभु ही हैं।

इस भविष्यवाणी की सफलता पर पंचांग प्रेमी जनता ने हमें पत्रों द्वारा जो उत्साहवर्धन किया है, उसके लिए हम आभारी हैं ।

सं. २०५४ वि. के पंचांग मे जो भविष्यवाणियां आश्चर्यचकित कर देने वाली थीं, सभी की चर्चा करना तो यहां संभव नहीं, लेकिन कुछ प्रमुख भविष्यवाणियों की चर्चा कर देना युक्तिसंगत समझते हैं -

(१) धमाकेदार 'स्कैण्डलों' के उजागर होने की भविष्यवाणी निम्नांकित शब्दों में की गई थी- देखें सं. २०५४ वि. के पंचांग में पृष्ठ १८ कालम २ से उद्धृत पंक्तियां—

"सं.२०५४ विक्रमी में सत्तारूढ़ दल को विशेष संकट का सामना करना पड़ेगा, लेकिन देश की प्रभुसत्ता एवं मान सम्मान बना रहेगा। पुराने बोफोर्स आदि मसले पुनः उजागर होंगे, परिणामस्वरूप कई प्रतिष्ठित पुरातन नेताओं की संलिप्तता सिद्ध होगी। इन घोटालों में संलिप्तता महानायकों के नाम भी प्रकाश में आएंगे, जिससे कुछ अन्य धमाकेदार स्कैण्डल भी सामने आने के योग हैं ।"

स्पष्ट है, कि सत्तारूढ़ प्रमुख दल (जनता दल) के वरिष्ठ श्री लालू प्रसाद जी चारा घोटाले में, कुछ हवाला केस, कुछ यूरिया घोटाले में संलिप्त होने से जेल भोग रहे हैं।

(२) सत्तारूढ़ मोर्चा की स्थिति के बारे में जो लिखा था, वह अक्षरशः ठीक घटित हुआ है। पृ. १९,कालम १ पर सं. २०५४ में प्रकाशित पंक्तियां पढ़ें;

"वर्षलग्न में गुरु, शनि अस्त हैं, मुंथेश-बुध, राहु, सूर्य के बीच कर्त्तरी योग से ग्रस्त हैं, संयुक्तमोर्चा किंवा सामयिक-सत्तारूढ़ दल के घटक पार्टियों के प्रधान नेताओं एवं राजनैतिक दलों को इस संवत के पूर्वार्ध में ही भारी चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए, क्योंकि संवत् का राजा स्वयं मंगल (जो कि वर्ष प्रवेश का लग्नेश भी है)" अपनी नीच राशि की तरफ जा रहा है। भारतीय-राजनैतिक दलों एवं भारत की राजनीति में विशेष उथल-पुथल एवं परिवर्तन के संकेत लगभग सं. २०५४ के आरंभ में ही ग्रहस्थिति के अनुसार स्पष्ट दृष्टिगोचार हो रहे हैं। सं. २०५४ के आरंभ से पूर्व किंवा प्रारंभिक मासों में ही शासनसत्ता में नाटकीय परिवर्तन दिखाई दे रहे हैं ।"

(३) प्रधानमंत्री देवगौड़ा जी के अपदस्थ होने की भविष्यवाणी सं. २०५४ वि. के पंचांग के पृ. १९ कालम २ पर प्रकाशित पंक्तियां पढें,-

ध्यान दें- कि ५ फरवरी सन् १९९७ ई. को मंगल वक्री भी हो जाता है और १३ मार्च को शनि अस्त हो रहा है। यह ग्रहस्थिति सत्तारूढ़ मोर्चा सरकार के लिए पेचीदा है, इस अवधि में प्रधान नेता को विषम चक्रव्यूह से निकलना कठिन होगा, वैसे तो संवत् २०५४ को प्रारम्भ के लगभग केन्द्र सरकार में विशेष परिवर्तन के योग हैं।

पाठक जानते हैं, कि ११ अप्रैल को देवगौड़ा सरकार भंग हो गई थी। २१ अप्रैल को श्री इन्द्रकुमार गुजराल जी नए प्रधान मंत्री बने।

(४) कांग्रेस पार्टी में श्रीमती सोनिया गांधी के प्रवेश का संकेत पंचांग में सं. २०५४ पृ. २० कालम २ पर कांग्रेस शीर्ष के अन्तर्गत स्पष्ट रूप से निम्नांकित शब्दों में किया गया था पढ़ें,-

"कर्मक्षेत्र (कन्या राशि) का स्वामी बुध होने से मीन के गुरु में किसी पुराने कांग्रेसी नेतृत्व-परिवार की मदद मिलने से पार्टी को पुनः चेतना मिलने का योग है।"

पाठक जानते हैं, कि ८ मई को श्रीमती सोनिया गांधी कांग्रेस में सम्मिलित हो गई ।

(५) ६ मई को दिल्ली में बम ब्लास्ट, १८ मई को तुर्की में १००० कुर्दो को कत्ल कर दिया गया । १०/१२ मई १९९७ को ईरान में भूकम्प से हजारों व्यक्ति मरे। १४ मई को बंगलादेश में साइक्लोन से भारी विनाश हुआ। २५ मई को अफगानिस्तान के नेता 'दोस्तम' देश छोड़ कर टर्की भाग जाने को विवश हो गए। इस बारे में पढ़े सं. २०५४ के पंचांग में पृ. १७ पर कालम १ का अन्तिम स्टैंजा-

"२४ मार्च से २ जून तक शनि-मंगल का षडष्टक एवं ३ जून तक राहु मंगल का शनि केतु के साथ समसप्तक विश्व के कुछ देशों में अघटित घटनाक्रम को उजागर करेगा। कहीं राजनीति से प्रेरित हत्याकांड होंगे। किसी विशिष्ट व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त होगा। किसी जगह अग्निकाण्ड, बम विस्फोट या विमान-यान दुर्घटना में जनधन हानि का समाचार मिलेगा। कुछ राष्ट्र परस्पर सैन्य संघर्ष की स्थिति में आ खड़े होंगे- परिणामस्वरूप स्थिति गंभीर होगी। अफगानिस्तान, पाकिस्तान किंवा खाड़ी के कुछ देश विशेष संकटापन्न स्थिति में अनुभव करेंगे।"

(६) **'अणुशक्ति' के बारे में भारत ने किसी देश के आगे घुटने नहीं टेके,** श्री गुजराल ने स्पष्ट कर दिया है कि,- **'निरस्त्रीरकरण सन्धि '** में विषमता स्वीकार्य नहीं, इस बारे में पहले ही भविष्यवाणी की गई थी-पढ़ें सं. २०५४, पृ. १७ कालम १ पर-

''अमेरिका, रूस, चीन, जापान, ब्रिटेन आदि देश अपने प्रभुत्व एवं दबदबे की नीति के तहत कुछ उदीयमान देशों को परमाणु 'निरस्त्रीकरण-संधि' का आश्रय लेकर दबाने की प्रवृत्ति अपनाएंगे। भारत की नीति इस बारे में स्वतंत्र विचारधारा वाली रहेगी, जिसे कुछ समय बाद कुछ अन्य देशों का सहयोग भी उपलब्ध हो सकेगा''

स्पष्ट है, कि अब कुछ मुस्लिम राष्ट्र भी भारत की इस नीति को मान्यता देने लगे हैं ।

हम सं. २०५६ के बारे में कुछ लिखने से पहले सं. २०५५ वि. में आश्चर्यजनक रूप से सत्य सिद्ध हुई भविष्यवाणियों को संक्षिप्त वेरवा देना प्रासंगिक समझते हैं-

(१) 'विश्व के घटनाचक्र' के बारे में लिखते हुए सं. २०५५ वि. के पंचांग में पृ. नं. २३ कालम १ पर नीचे की पांच लाईनों में लिखा था, कि-

''इस वर्ष अफगानिस्तान, ईरान आदि किसी मुस्लिम राष्ट्र में भयंकर भूकम्प से जनधन हानि होगी।''

४ फर. १९९८ ई. को अफगानिस्तान की उत्तरी सीमा पर भयंकर भूकम्प से ४००० से भी अधिक लोग मारे गए ।

(२) 'मार्तण्ड पंचांग ' सं. २०५५ वि. के पृष्ठ २४ पर पढ़ें-

संवत् २०५५ का राजा शनि है संवत् के आरम्भ में ही शनि मंगल राहु के साथ षडष्टक योग ४ अप्रैल तक चलेगा। लेकिन शनि-राहु का षडष्टक योग तो १६ अप्रैल तक लगातार बना रहेगा परिणामस्वरूप **अमेरिका की सैन्यशक्ति फारस की खाड़ी पर अपना दबदबा बढ़ाएगी और ईरान आदि किसी मुस्लिम देश के लिए विशेष चेतावनी पूर्ण सिद्ध होगी। ग्रह गोचर के अनुसार ईराक, इजराइल, फिलस्तीन, अफगानिस्तान आदि में संवत् २०५५ में संघर्षपूर्ण वातावरण रहेगा।** जिससे सीमास्थ-देशों की शान्ति भंग होगी। शान्ति के लिए सुरक्षा परिषद् किंवा बड़े राष्ट्रों को हस्तक्षेप करना पड़ेगा। वैसे भी चैत्रमास में पांच शनिवार होने से पश्चिम-**दक्षिण गोलार्ध के देशों में कहीं प्राकृतिक प्रकोप, भूकम्प से भारी हानि, कहीं अग्निकाण्ड या दुर्घटना से जनधन हानि के समाचार मिलेंगे।**

(i) इस भविष्यवाणी के अनुसार, अफगानिस्तान में तालिबान की समस्या पैदा करके अमेरिका ने अशान्ति का वातावरण बना दिया। अमेरिका खाड़ी देशों पर सैन्य बल द्वारा अभी दबदबा बनाए हुए है।

(ii) ईरान-अफगानिस्तान में परस्पर युद्ध की संभावना भी इस भविष्यवाणी की सत्यता का स्पष्ट संकेत है।

(iii) पश्चिमी- दक्षिणी गोलार्ध के देशों में प्राकृतिक -प्रकोप एवं यान दुर्घटना की भविष्यवाणी को निम्नांकित घटनाएं सत्य सिद्ध कर चुकी हैं-

मार्च १९९८ में पाक में बाढ़ से २५० लोग मरे एवं चीन में हवाई हादसों में २०० से भी अधिक व्यक्ति मृत्यु को प्राप्त हुए ।

(३) सं. २०५५ वि. के पंचांग में पृ. २४ पर कालम १ में स्पष्ट लिखा है-

''पूर्वोत्तर क्षेत्र में अमेरीका की नीति कहीं वातावरण को क्षुब्ध करे। हथियारों की बिक्री से कहीं सम्बन्धों में कटुता बढ़े। अफगानिस्तान किंवा किसी अन्य मुस्लिम राष्ट्र में स्थिति बड़े देशों की कुनीति से बिगड़ेगी। कहीं गृह युद्ध जैसे हालात बनेंगे। ऐसी स्थिति में अन्तर्राष्ट्रीय किंवा क्षेत्रीय हस्तक्षेप से खून की होली पर अंकुश लगाना अपरिहार्य बन जाएगा।''

इस आश्चर्यजनक भविष्यवाणी की सत्यता आज पूर्णरूपेण स्पष्ट है। अफगानिस्तान में अमेरिका की कुनीति से वातावरण क्षुब्ध हो चुका है। ईरान के साथ युद्ध विभीषिका से रूस आदि देश भी चिन्तित हैं। अफगानिस्तान में गृहयुद्ध जैसी स्थिति तालिबान की वजह से बन चुकी है। अन्तर्राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय हस्तक्षेप का प्रश्न उभर चुका है। आगे (सं. २०५५ वि. के कालम १ में पृष्ठ २४ पर नीचे से ८ पंक्तियां भी इसी भविष्यवाणी को अक्षरशः और स्पष्ट कर रही हैं-

''१५ से २४ मई तक शनि-शुक्र एवं बुध की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार इस वर्ष अमेरीका, ब्रिटेन आदि कुछ देश तालिबान को प्रोत्साहित करके अफगानिस्तान के वातावरण को और खराब कर देंगे। ईरान के साथ भी सम्बन्ध ठीक न रहेंगे ।''

गतवर्ष लिखी ये पंक्तियां आज अक्षरशः सत्य सिद्ध हो चुकी हैं ,

(४) मुस्लिम -देशों के बारे में की गई भविष्यवाणी- पढ़ें पृ. २५ (सं. २०५५ वि.)

''मुस्लिम राष्ट्रों की कुण्डली में गुरु-शुक्र-केतु धन स्थान में हैं तथा चतुर्थ भाव में नीच शनि का मंगल एवं सूर्य के साथ मेल हो रहा है। स्पष्ट है कि यावन राष्ट्रों में ही परस्पर उलझनें बढ़ेंगी। विशेषतः इराक, ईरान एवं पाकिस्तान, अफगानिस्तान आदि में आन्तरिक सम्बन्ध मधुर न रहेंगे । इन देशों में कहीं आन्तरिक क्रान्ति, रक्तपात को दृष्टि में रखते हुए सुरक्षा परिषद् को दखल देना पड़े। पाकिस्तान में आन्तरिक फूट से स्थिति उलझेगी और नेतृत्व परिवर्तन के स्पष्ट संकेत मिलेंगे। किसी बड़े नेता को विषम परिस्थिति का सामना करना पड़ेगा।''

ठीक इस भविष्यवाणी के अनुसार ईरान एवं अफगानिस्तान में स्थिति भयंकर हो गई है, युद्ध का वातावरण बन गया है। पाकिस्तान के प्रधान श्री नवाज शरीफ को आन्तरिक फूट से विषम परिस्थिति का सामना करना पड़ रहा है- यह स्पष्ट हो चुका है ।

(५) केन्द्रीय-सरकार' से कांग्रेस ने समर्थन वापिस लिया' परिणमस्वरूप शक्तिपरीक्षण असफल एवं पुनः देश राजनैतिक-असंतुलन की ओर। पढ़ें सं. २०५५ वि. के पंचांग में पृ. २५ कालम २ स्टैंजा १ की अन्तिम चार पंक्तियां-

''कांग्रेस आदि कुछ रानीतिक दलों के अग्रणी नेता अपने महत्वाकांक्षा किंवा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण केन्द्रीय -शासन सत्ता से कभी भी अलगाव की स्थिति पैदा करके देश में राजनैतिक संतुलन को बिगाड़ सकते हैं।''

इस भविष्यवाणी को और स्पष्ट करते हुए आगे लिखा था (पृ. २६ कालम १ स्टैंजा ४)-

''सत्ता से अलग प्रभावी पार्टी अपना हाथ खींच लेगी, परिणामस्वरूप प्रधानशासक ऐसे चक्रव्यूह में फंस जायेंगे, जहां से निकलना संभव न होगा और भारत का केन्द्रीय मंत्रिमण्डल शक्ति परीक्षण में असफल सिद्ध होगा।''और पढ़े पृ. २६, कालम २, पंक्ति ७ से -''१५ मई १९९८ से पूर्व ही कोई प्रभावी पार्टी जनहित के नाम पर कांग्रेस 'संयुक्त मोर्चा' से समर्थन वापिस ले लेगी।''- ठीक इसी प्रकार घटित हुआ और 'संयुक्त मोर्चा सरकार' गिर गई।

(६) आसाम, गुजरात, महाराष्ट्र में भयंकर बाढ़ की भविष्यवाणी- पढ़ें सं. २०५५ वि. में पृ. २६ कालम २ अंतिम स्टैंजा-

''इसी मध्य २७ जून से १० अगस्त तक मिथुन राशि के मंगल पर नीच शनि की विशेष दृष्टि है। इस अवधि में गुजरात, आसाम आदि प्रान्तों में कहीं प्राकृतिक- प्रकोप से जनधन हानि, कहीं बाढ़, उत्तरी भारत में कहीं भयंकर अग्निकाण्ड व तूफान, भयंकर बाढ़ से हानि का योग है। आसाम-गुजरात-महाराष्ट्र में भी भयंकर बाढ़ से हानि होगी। ''

(७) सं. २०५५ में महामहिम राष्ट्रपति के आर. नारायणन ने अपना दायित्व पूर्णरूपेण निभाया, जोकि भारत की स्वतंत्रता के बाद प्रथम ऐतिहासिक-घटना मानी गई। पढ़ें, — सं. २०५५ वि. के मार्त्तण्ड पंचांग में पृ. २६ पर कालम १ पर अन्तिम स्टैंजा-

''भारत के ४९ वें वर्ष की गणतंत्र कुण्डलीगत ग्रहस्थिति पर विहंगम दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है, कि - इस वर्ष राष्ट्रपति का राजनीतिक दायित्व बढ़ेगा। शनि का गुरु के क्षेत्र में एवं गुरु का शनि के क्षेत्र में होना विशेष राजनीतिक चिन्तन का भार देश के वरिष्ठ नेता पर निर्भर करता है, वैसे मंगल राहु का समसप्तक योग देश में आर्थिक, औद्योगिक एवं राजनीतिक परिप्रेक्ष्य के लिए अच्छा नहीं ।''

ठीक इस भविष्यवाणी के अनुसार केन्द्र द्वारा उत्तर प्रदेश सरकार गिराने की सिफारिश एवं बिहार की सरकार बहुमत वाली राबड़ी-सरकार गिराने की सिफारिश को राष्ट्रपति ने नामंजूर कर दिया, एवं अपने दायित्व को पूर्णतया निभाया।

सं. २०५५ वि. के मार्त्तण्ड पंचांग पृ. २७ कालम २ पर निम्नांकित पंक्तियाँ पढ़ें-

(८) ''गुजराल सरकार के गिर जाने की भविष्यवाणी''-

संयुक्त मोर्चा की कुण्डली के अनुसार इस वर्ष सत्तारूढ दल (संयुक्त मोर्चा) में संवत् के पूर्वार्ध में ही विशेष परिवर्तन आने के योग हैं। नवम्बर' ९७ से संयुक्त मोर्चा पर अन्य प्रभावी दलों के प्रहार प्रारम्भ होंगे। घटक-दलों में एकता कमजोर होगी और कांग्रेस द्वारा समर्थन छलावा सिद्ध होगा। संवत् २०५५ के प्रारम्भिक -मास गुजराल सरकार के लिए ऐतिहासिक घटना वाले सिद्ध होंगे ।

श्री गुजराल जी की शपथ ग्रहणकालीन कुण्डली में शनि-मंगल का षडष्टक योग एवं कर्मेश- गुरु की नीच राशि में स्थिति ७ जनवरी १९९८ ई. से पूर्व इनके लिए विषम परिस्थितियों को जन्म देने वाली है। इस अवधि में संयुक्त मोर्चा सरकार की गतिविधि पर विशेष आक्षेप होंगे। कुछ पार्टियां अपनी अस्मिता को बनाए रखने के लिए स्वतंत्र सिद्धांतों के कारण विमुख होने लगेंगी। कांग्रेस अपनी कई शर्तें समक्ष रखेंगी और इस प्रकार संवत् के पूर्वार्ध से भी पहिले ही गुजराल सरकार संकट को पार करने में असमर्थ अनुभव करेगी। कदाचित् शनि के मीन में आने पर (७ जनवरी के बाद) यह सरकार चलती है तो ४ अप्रैल से १४ मई तक तथा १६ नवम्बर से संवत् के अंत तक का समय सत्तारूढ़ पार्टी के लिए तथा प्रधान नेताओं के लिए विशेष घटनापूर्ण किंवा सत्ता से विलग होने वाला सिद्ध होगा ।

इस भविष्यवाणी की सत्यता पर हमें देश विदेश से अनेकों पत्र प्राप्त हुए हैं, एवं फलित ज्योतिष पर आस्था न रखने वाले व्यक्ति भी ज्योतिषशास्त्र की प्रामाणिकता को स्वीकार करने लगे; यह मार्त्तण्ड पंचांग के लिए गौरव की ही बात है ।

(९) पृ. २८ पर कालम २ में कांग्रेस के बारे में की गई भविष्यवाणी कम आश्चर्यजनक नहीं।

''कांग्रे''- कांग्रेस की स्थापना कालीन ग्रहस्थिति एवं सं. २०५५ की ग्रहस्थिति के अनुसार श्री सीताराम केसरी कांग्रेस को अधिक देर तक प्रातिनिध्य प्रदान न कर सकेंगे । **आगे कांग्रेस अकेले ही सत्ता में न आ सकेगी।**

यह स्पष्ट है कि सं. २०५५ की ग्रहस्थिति गठजोड़ सरकारों का ही संकेत देती है। कांग्रेस के समर्थन व सक्रिय सहयोग की स्थिति में संयुक्त मोर्चा के घटकदल विखण्डित हो

सकते हैं सभी प्रमुख पार्टियों की ग्रहगति के अनुसार सभी राजनीतिक-पार्टियों की कर्मपत्रियां किसी स्थायी, प्रगतिशील भविष्य का संकेत नहीं देती।

ठीक इस भविष्यवाणी के अनुसार श्री सीताराम केसरी को कांग्रेस-प्रधान के पद से अलग होना पड़ा। संयुक्त मोर्चा के प्रधान श्री चन्द्रबाबु नायडु कांग्रेस का साथ न देकर अलग हो गए एवं अन्य पार्टियां भी अलग दल बनाकर संयुक्त मोर्चा को विखण्डित कर चुकी हैं।

आर्थिक दृष्टि से अमेरिका द्वारा लगाए गए प्रतिबंध से देश का औद्योगिक क्षेत्र भी प्रभावित हुआ है एवं राजनैतिक दृष्टि से भी परमाणु परीक्षण चर्चा का विषय बना रहा ।

(१०) इस समय सत्तारूढ़ पार्टी 'भाजपा' के बारे में स्पष्ट लिखा था- पढ़ें—

सं. २०५५ वि. के पृ. २७ पर कालम की अंतिम पंक्तियां—

"राजनैतिक क्षितिज पर भाजपा का विस्तार होता नजर आएगा। आगामी निर्वाचनों में भजपा पुनः एक सशक्त प्रबल पार्टी के रूप में उभरेगी, लेकिन सत्ता प्राप्त करना एक प्रबल चुनौती होगा ।"

भारत की राजनीतिक पार्टियों के प्रबल विरोध के बावजूद चुनौती पूर्ण स्थिति में भाजपा सत्ता में आई एवं सशक्त प्रबल पार्टी के रूप में भाजपा निर्वाचन में उभरी है;-यह सर्वविदित ही है।

इस प्रकार अनेकों आश्चर्यचकित कर देने वाली भविष्यवाणियों की सफलता का श्रेय गत ७१ वर्षों से आपके इस मार्त्तण्ड पंचांग को प्राप्त होता आ रहा है। सभी सफल भविष्यवाणियों की चर्चा यहां कर सकना स्थानाभाव के कारण संभव नहीं है ।

पाठकों, श्री मार्त्तण्ड पंचांग के माध्यम से की गई या की जा रही भविष्यवाणियों की सफलता का श्रेय जो आप हमें दे रहे हैं, वह सब पूर्वाचार्यों एवं ज्योतिषशास्त्र के मर्मज्ञ गुरुचरणों की कृपा ही है या जनता जनार्दन के सौहार्द का परिणाम। हम उन पाठकों के भी आभारी हैं,जो विभिन्न प्रान्तों से पत्राचार द्वारा भविष्यवाणियों की सफलता पर बधाई भेजकर हमें भावी वर्षों में **ग्रहगतिजन्य संकेतों** के आधार पर कुछ न कुछ लिखने के लिए प्रेरित करते रहते हैं ।

सं. २०५६ वि. की ग्रह परिषद् के आधार पर विश्व का घटनाचक्र

जिस तरह पृथ्वी पर लोकतांत्रिक-राज्य की स्थापना के लिए प्रधानमंत्री आदि के चुनाव होते हैं और उन निर्वाचित व्यक्तियों के गुण-कर्म, स्वभाव-योग्यता का प्रभाव उनके अधिकृत क्षेत्रों पर पड़ता है, इसी प्रकार अखिलेश्वर प्रभु की इच्छा से निर्मित आकशीय शिशुंमार चक्रस्थ ग्रहों की परिषद् में संसार चक्र को चलाने के लिए प्रतिवर्ष दिव्य एवं अद्भुत शक्तिमती आकाशी-कौंसल का निर्माण होता है। इस आकाशीय कौंसिल में ग्रहों की शुभाशुभ प्रकृति के अनुकूल संसार में जो उलटफेर एवं अघटित घटनाएं होती हैं, उन्हें अपनी तुच्छमति के अनुसार त्रिकालज्ञ दैवज्ञों द्वारा लिखित ग्रन्थों के आधार पर वि. सं. २०५६ के घटनाचक्र के बारे में कुछ लिखने की चेष्टा कर रहे हैं ।

सं. २०५६ वि. में ग्रहपरिषद् के दशाधिकारियों में ४ पद क्रूर ग्रहों को प्राप्त हुए हैं, और ६ पद शुभ ग्रहों को प्राप्त हुए हैं। संवत् का राजा देवगुरु **'बृहस्पति'** है, जो कि विश्व में चल रहे भयंकर युद्ध की संभावना को क्षीण करेगा एवं सर्वत्र अमनचैन का वातावरण बनाने का प्रयत्न करेगा । **संकेत मिलता है कि**- इस वर्ष दुर्गेश अथात् रक्षा-प्रतिरक्षा एवं सेनाओं की कमांड मंगल के पास होने से कुछ मुस्लिम -राष्ट्रों में भयंकर युद्ध की स्थिति बनेगी, कहीं सिविलवार एवं कहीं सेना के द्वारा सत्ता का हथियाना संभव है। पाकिस्तान, ईरान, अफगानिस्तान आदि देश इन घटनाओं से प्रभावित होंगे,लेकिन कुछ बड़े भारत आदि देश शान्ति-स्थापना के लिए सक्रिय रहेंगे। **क्योंकि दैत्यगुरु शुक्र को इस वर्ष कृषि, व्यापार एवं कोषाध्यक्ष के तीन महत्वपूर्ण पद प्राप्त हुए हैं, इसलिए विश्व के समृद्ध -देश, प्रगतिशील छोटे देशों पर अनुचित रूप से आर्थिक एवं व्यापारिक अंकुश लगाकर अपना दबदबा बनाए रखेंगे, जिससे संयुक्त राष्ट्र में बड़े राष्ट्रों की प्रभुसत्ता को कुछ राष्ट्र नकार देंगे; विरोध रूप में संयुक्त राष्ट्र के नवीकरण का प्रश्न पैदा होगा, कुछ राष्ट्र अपनी सदस्यता वापिस लेने तक आ सकते हैं।** परिणामस्वरूप संयुक्त राष्ट्र पर किसी एक देश का दबदबा व वर्चस्व समाप्त करने का प्रश्न आएगा, जिससे कुछ उदीयमान देशों को बल मिलेगा एवं कुछ नए राष्ट्रों को संयुक्त राष्ट्र में प्रातिनिध्य भी प्राप्त होगा ।

इस वर्ष सारी ग्रह परिषद के सारे पद केवल पांच ग्रहों (सूर्य, मंगल, बुध-गुरु-शुक्र) तक ही सीमित हैं, जिनमें से महत्वपूर्ण पद गुरु, शुक्र एवं मंगल को प्राप्स हुए हैं। ध्यान दें— , गुरु-शुक्र ये दोनों शत्रु हैं। मंगल-गुरु मित्र हैं, मंगल-शुक्र समभाव के हैं। इस स्थिति में गुरु ग्रह का शुक्र के साथ तालमेल न होने से विश्व के कुछ राष्ट्रों की नीति आपस में टकराव वाली बनेगी। व्यापारिक-नीति में विशेष परिवर्तन होंगे । कुछ बड़े राष्ट्रों को विशेष आर्थिकसंकट का सामना करना पड़ेगा।

ग्रह परिषद् में मेघेश-फलेश एवं दुर्गेश - ये तीन पद मंगल को प्राप्त हैं। मंगल युद्धप्रिय एवं मजदूरवर्ग का प्रतिनिधि ग्रह है। अतः कहीं बाढ़ वर्षा से खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी, कहीं अकाल की स्थिति बनेगी। फलेश-मंगल का फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है -

"फलपतिर्यदि भूसुतो भवेन्नबहुपुष्प-फलान्वित पादपाः ।
गदभयान्वित-देशजनास्तदा नृपतयो बहु विग्रहकारकाः ॥"

स्पष्ट है कि- फल-फूल कम हों, खाने-पीने की चीजें मंहगी हों । जनता में एड्स, कैंसर आदि भयंकर रोगों से भारी कष्टमय स्थिति बने। कुछ राष्ट्रों में युद्धभय व्याप्त होगा, जिससे **पड़ौसी देश अनिवार्यतः उलझन में आ सकेंगे । लेकिन गुरु के राजा होने के कारण अन्तर्राष्ट्रीय किंवा क्षेत्रीय-हस्तक्षेप से स्थिति नियंत्रण में आ सकेगी।**

इस वर्ष के **चार स्तम्भों के विचार से** जलस्तम्भ का अभाव है, तृणस्तम्भ केवल ६ प्रतिशत है, अन्न एवं वायुस्तम्भ पर्याप्त प्रतिशतता में है । स्पष्ट है, किसी देश में भयंकर अकाल की स्थिति बने, कहीं गैस रिसने व किसी प्रकार के वायु प्रदूषण व तूफान आदि से जनधनहानि होगी। कहीं भूकम्प आदि व अग्निकाण्ड से भयंकर जनधन हानि हो ।

आर्षमान विचार से- अक्षय तृतीया को रोहिणी नक्षत्र केवल ३ प्रतिशत है। द्वितीय आर्ष २३ प्रतिशत, तृतीय आर्ष का अभाव है। केवल चतुर्थ आर्ष ७७ प्रतिशत है। स्पष्ट है, कि वर्ष रक्षा के लिए चार दुर्गों (आर्षों) के विचार से यह संवत् बहुत ही कमजोर मालूम देता है। विश्व के कुछ राष्ट्रों का वातावरण भयंकर युद्ध का बनेगा। कुछ पड़ोसी देश उस युद्ध में कूदकर स्थिति को और विषम बना देंगे। राष्ट्रमण्डल एवं अन्य संस्थाओं व देशों की मध्यस्थता से स्थिति नियंत्रण में आए। इस वर्ष लंका, कम्बोड़िया, इजराइल, फिलस्तीन, अफगानिस्तान, ईरान, पाकिस्तान, रूस आदि में आन्तरिक स्थिति विषम होगी । कहीं आन्तरिक, अशान्ति, क्रान्ति का रूप धारण करे, कहीं देश में सत्ता परिवर्तन व सेना द्वारा सत्ता संभालने की घटना से प्रधान नेता परेशानी में पड़ेंगे। किन्हीं दो देशों में तनाव से अमेरीका आदि देश राजनीतिक लाभ लेंगे। टर्की, लंका, जापान, अमेरीका, व किसी मुस्लिम राष्ट्र में तूफान, चक्रवात, ज्वालामुखी, विस्फोट, किंवा कहीं भयंकर प्राकृतिक-विनाशलीला का दृश्य उपस्थित होगा। इस वर्ष किसी बड़े धार्मिक व राजनैतिक नेता के निधन से किसी राष्ट्र में राष्ट्रीय शोक व्याप्त होगा ।

जगत्-लग्न कुण्डली से विश्व का घटनाचक्र

जगत् लग्न कुण्डली

सं. २०५६ वि. में वैशाख-कृष्ण -त्रयोदशी -बुधवार, तदनुसार १४ अप्रैल सन् १९९९ ई. को ११ घं. १६ मि. (१३ घटी १० पल) पर उ.भा. नक्षत्र, ऐन्द्र योग एवं मीनस्थ चन्द्र के समय मिथुन लग्न में सूर्यदेव मेष राशि में प्रविष्ट होंगे ।

(कुण्डली: ३ लग्न; ४ रा.; २ शु.; १ सू. श.; ५; ६; १२ बु. गु. चं.; ७ मं.; ८; ९; १० के.; ११)

जगत् लग्नकुण्डली में लग्नेश-बुध, गुरु एवं चन्द्र के साथ मीन राशि में हैं। स्पष्ट हैं, बड़े देश प्रगतिशील देशों को अपने प्रभावक्षेत्र में ही रखना चाहेंगे। एतदर्थ अमेरीका आदि राष्ट्र अपनी कूट नीति से कहीं युद्ध का सूत्रपात भी करा सकते हैं। अमेरीका, बर्तानिया, आयरलैण्ड, पाकिस्तान-अफगानिस्तान, ईरान, आदि में कहीं आन्तरिक अशान्ति रहे सीमा प्रान्तों पर युद्धमय वातावरण बने। यह वर्ष कुछ मुस्लिम -राष्ट्रों के लिए विशेष उलझनपूर्ण एवं ऐतिहासिक अर्घटात घटनाचक्र को जन्म देगा ।

लगभग ज्येष्ठ में कहीं बड़े व्यक्ति का निधन होगा, पूर्व में धान का निर्यात हो, कुछ देश युद्ध ज्वाला से सन्तप्त रहें। पश्चिम में कहीं सत्ता परिवर्तन व प्रधान नेता को भारी परेशानी उठानी पड़ेगी। शास्त्रानुसार जगत् लग्न मिथुन होने का फल इस प्रकार लिखा है-

''मिथुने बहुलं युद्धं पूर्वस्यां धान्य विक्रयः।
पश्चिमायां स्वल्पमेवश्छत्रभंगश्च विग्रहः ॥''

सं. २०५६ वि. की ग्रहस्थिति के अनुसार घटनाओं का संक्षिप्त विवेचन

संवत् का राजा गुरु संवत् के आरम्भ में अपनी राशि मीन में प्रबल है। लेकिन संवत् के शुरु में ही इस वर्ष का रक्षामंत्री मंगल वक्र हो जाता है। इस समय मंगल-बुध-वेंकटेश (प्लूटो) ये ग्रह उल्टीगति से चल रहे हैं। ध्यान देने योग्य बात यह है कि, संवत् के आरम्भ में ही गुरु अतिचारी-पोजीशन में भी है, मंगल वक्र हो रहा है ;-

''यदाक्रूर ग्रहो वक्री शुभश्चैवातिचारगः।
तदा भवति दुर्भिक्षं राज्ञां युद्धं परस्परम् ॥''

स्पष्ट है कि मध्य एशिया के देश तथा भारत के बन्धु राष्ट्र ईरान को पाकिस्तान की कुनीति से अफगानिस्तान के साथ उलझना पड़ेगा। अफगानिस्तान एवं ईरान के मध्य युद्ध का वातावरण उपस्थित होने पर पाक को भी तालिबान का साथ देने के लिए विवश होना पड़ेगा, परिणामस्वरूप रूस एवं मध्य एशिया देश पाक के विरुद्ध हो जाएंगे । यदि इस संवत् में कोई युद्ध होता है, तो उसके पीछे किसी बड़े राष्ट्र अमेरीका आदि का हाथ होगा, इस कुनीति का परिणाम यू.एस.ए. को भी भोगना पड़ेगा। अमेरीका की दोगली नीति के तहत यह देश पाक व अफगानिस्तान के रास्ते जिन प्राकृतिक गैस भंडारों के तथा खनिज बहुतल क्षेत्रों तक पहुंचने की योजना बनाएगा वह साकार न होगी। मंगल की वार्षिक मन्दगति को दृष्टि में रखते हुए ज्ञात होता है, कि किसी प्रकार के युद्ध का सूत्रपात होने पर रूस एवं चीन दोनों देश ईरान की मदद करने को विवश हो जाएंगे, और यह एक भयंकर युद्ध का निमन्त्रण समझना होगा। **ध्यान दें**- नास्त्रेडाम की भविष्यवाणी से

भयभीत जनता नोट करले कि अभी अणुयुद्ध से विश्व के नष्ट होने का योग नहीं बनता, परन्तु इसवर्ष किसी मुस्लिम राष्ट्र में सुलग रही युद्धाग्नि भविष्य में किसी बड़े युद्ध को निमंत्रण दे सकती है जिसके परिणाम दूरगामी होंगे ।

गुरु का अतिचार लगभग १६ अप्रैल तक ही चलता है। उसके बाद मंगल (मन्दगति से) २२अगस्त तक तुलाराशि में ही बना रहता है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि- तुलाराशि के मंगल की मेष राशि में नीच स्थित शनि पर पूर्ण दृष्टि रहती है। जब भी मंगल मंदगति से मन्दगामी-शनि के साथ दृष्टि सम्बन्ध बनाता है तो विश्व में अघटित-घटनाएं होती हैं। इस अवधि में इंग्लैण्ड, लंका, अमेरीका, चीन, रूस, जापान, भारत में एवं अफगानिस्तान, ईरान, पाकिस्तान में कहीं शासन सत्ता में परिवर्तन आएगा। विश्व के कुछ देशों में अर्थव्यवस्था बहुत ही चिन्तनीय स्थिति में आ जाएगी। ज्योतिष दृष्ट्या विश्व की अर्थव्यवस्था की दृष्टि से विकासशील देशों में वित्तीय-उदारीकरण धीरे-धीरे बड़ी सूझ-बूझ से लागू करने की जरुरत है। ग्रहगति के अनुसार अमेरीका की विकास की गति कमजोर होने लगेगी । पूर्व एशिया एवं जापान में लम्बी मन्दी और प्रमुख औद्यौगिक देशों में व्यापार असंतुलन बढ़ेगा जिससे विश्व की अर्थ व्यवस्था चरमरा जाएगी। इण्डोनेशिया, कोरिया, थाईलैण्ड की मुद्रा का अवमूल्यन होगा, परिणामस्वरूप एशियायी देशों को भी यह संकट अनुभव करना होगा। मंगल-शनि के दृष्टि सम्बन्ध में २५ मई को नीच-शनि के साथ गुरु का सम्बन्ध हो जाता है, - स्पष्ट है, कि यूरोपीय देश विकासशील देशों का आर्थिक-शोषण करने के उद्देश्य से अपनी सुविधा के अनुसार कानून बनाएंगे। जिसका कुछ देशों द्वारा विरोध भी होगा।

लगभग १५ मई से ८ जून तक मंगल मन्दगति है एवं बुध अतिचारी है। कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बने। राज्य परिवर्तन हो किंवा किसी बड़े महत्वशाली गण्यमान्य व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त हो। - **"यदा शुभग्रहः कश्चिदतिचारं करोति च। तदा नृपाः क्षयं यान्ति दुर्भिक्षं तत्र दारुणम् ॥"**

१२ जून को बुध वक्री हो रहा है और १३ जून को भौमवती अमावस भी है; कहीं भूकम्प किंवा किसी प्राकृतिक-प्रकोप से हानि संभव है। किसी यान दुर्घटना से हानि भी हो ।

१६ जुलाई को सूर्य कर्क राशि में आकर बुध और राहु के साथ मेल करेगा। बुध अस्त एवं वक्री है। कहीं भारी वर्षा किंवा भूस्खलन आदि से हानि हो। **३० जुलाई को शुक्र वक्री होकर ८ अगस्त को अस्त हो जाता है, सिंह राशिस्थ शुक्र यद्यपि वर्षा में कुछ प्रान्तों में भारी रुकावट करेगा, जिससे किसान चिन्तित होंगे, लेकिन शुक्र के वक्री होने से एवं इसी बीच ४ अग. को बुध पूर्व में उदित हो जाएगा "नोत्पात परित्यक्तः चन्द्रजो व्रजत्युदयम्"** इस प्रमाण के अनुसार दक्षिणी भारत के कुछ क्षेत्रों में भारी बाढ़ से तबाही मचाएगा ।

११ अगस्त को खग्रास सूर्यग्रहण मकर राशि में लग रहा है। अतः पश्चिमी एशिया के कुछ देशों की राजनीति में व्यापक परिवर्तन आने की संभावना बनेगी, तेहरान एवं सऊदी अरब के मध्य सम्बन्धों में अपेक्षाकृत सुधार होने से नए नए सन्धि समीकरण बनेंगे ।

१७ अगस्त को मंगलवारी सूर्य संक्रान्ति है । १८ अगस्त को प्लूटो मार्गी हो रहा है । २३ अगस्त को मंगल वृश्चिक राशि में आकर शनि-गुरु के साथ षडष्टक योग बनाएगा। और शुक्र वक्रगति से चलता हुआ २५ अगस्त को पुनः कर्क राशि में दाखिल होकर राहु-शुक्र-बुध के साथ मेल करेगा इसी दिन शुक्र वक्री भी हो रहा है । ३० अगस्त को शनि भी वक्री हो रहा है। - यह ग्रहस्थिति विश्व के देशों के लिए नेष्ट है ।

इस अवधि में कहीं व्यापार क्षेत्र में भारी उथलपुथल के कारण बनेंगे, शेयरों के व्यापारी विश्व देश मुद्रा में विशेष उठक-पठक के कारण हानि में रहेंगे । कहीं युद्धमय वातावरण से अशान्ति बनेगी। प्रगतिप्रद योजनाएं ठप्प होंगी। भूतपूर्व औपनिवेशिक देशों में विकास चिन्ता का विषय बनेगा । शक्तिशाली विकसित देशों का गुट, मानवाधिकारों के संरक्षण, पर्यावरण प्रदूषण के निवारण और उदार पूंजीवाद की आड़ में विकासशील देशो में अपना दखल देते रहने की प्रक्रिया जारी रखेगा और विकासशील देशों की संप्रभुता को सीमित करने तथा उसे दलित बनाने की प्रछन्न कुटनीतिक चाल से बड़े देश अपना वर्चस्व बनाए रखेंगे । इस प्रकार धनवान् एवं निर्धन देशों के मध्य बढ़ रही विषमता से विश्व के कुछ देशों में अस्थिरता का वातावरण बनेगा । इसवर्ष में शनि -मंगल का षडष्टक अफगानिस्तान, फ्रांस, बंगलादेश, अरब राष्ट्र, अफ्रीकन देशों एवं पाकिस्तान की शासनसत्ता एवं देशों के प्रधान पद में तथा राजनैतिक दृष्टि से काफी परिवर्तन का संकेत देता है। कहीं युद्ध ज्वाला भड़केगी, कहीं राजनैतिक हत्याकाण्ड होंगे, कहीं धार्मिक-उन्माद से शिया-सुन्नी आदि जातीय दंगों से स्थिति गंभीर बनेगी। परिणामस्वरूप कहीं सत्ता में परिवर्तन, कहीं देशों के विभाजन का खतरा पैदा होगा ।

सितम्बर-अक्तूबर की ग्रहस्थिति के अनुसार मंगल-राहु का षडष्टक, शनि-मंगल का नव-पंचम योग जापान, टर्की, इण्डोनेशिया, बंगलादेश एवं अमेरिका में कहीं भयंकर भूकम्प, चक्रवात, समुद्री तूफान आदि से हानि का संकेत देता है । किसी देश में वायु यान दुर्घटना से भी जनधन हानि होगी। किसी बड़े नेता का पद भी रिक्त होगा ।

नवम्बर में बुध-गुरु-शनि, राहु, केतु ये पांचग्रह वक्री हैं। १८ नवम्बर को मंगल मकर राशि में आकर केतु के साथ मेल करेगा और शनि को विशेष नजर से देखेगा एवं शनि , मंगल ग्रह को विशेष नजर से देखना शुरु कर देगा। यह समय विश्व के राष्ट्रों के लिए

पुनः भयावह परिस्थितियों को जन्म देगा। किसी देश में अमेरीका आदि देशों की प्रछन्ननीति से युद्ध का सूत्रपात होगा। सीमा प्रान्तों पर वातावरण अशांत रहेगा। चान्द्रमास कार्तिक में पांच मंगलवारों के होने से कहीं शासनसत्ता में परिवर्तन होगा, किसी व्यक्ति विशेष की हत्या व निधन से शोक व्याप्त होगा-

''यत्रमासे महीसूनोर्जायन्ते पंचवासरा:।
रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्॥''

मुस्लिम देशों में आन्तरिक -अशान्ति व युद्धमय वातावरण से विश्व की शान्ति स्थापक वरिष्ठ संस्थाओं को सावधान रहना होगा। चीन, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, रूस एवं यूरोपीय देशों के लिए समय शुभ नहीं । कहीं भूकम्प से हानि, किसी बड़े राजनीतिज्ञ को कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़े ।

मार्गशीर्ष-शुक्ल पक्ष में (८ से २२ दिसम्बर के मध्य) तिथिक्षय भी कहीं राज्य विप्लव, राज्य परिवर्तन, आन्तरिक क्रान्ति से किंवा किसी घटना विशेष से सत्ता में परिवर्तन का संकेत देता है । - **''मार्गशीर्षादि मासेषु शुक्ल पक्षे तिथिक्षय:।छत्रभंगं प्रजापीडा दुर्भिक्षं च समादिशेत्॥''**

२७ दिसम्बर को मंगल मकर राशि से निकल कर शनि की नजर से ओझल हो जाएगा- इस सभय विश्व के घटनाचक्र में परिवर्तन आएगा। सन्धि वार्ताएं होंगी। विश्व शान्ति के नए प्रयास होंगे ।

१२ जनवरी (सन् २००० ई.) को शनि मार्गी होकर विश्व में शान्ति का वातावरण बनाएगा। लेकिन १४ जनवरी मकर राशि के सूर्य पर शनि की विशेष दृष्टि होने से विश्व के किसी देश में प्राकृतिक प्रकोप से हानि होगी। २१ जनवरी (सन् २०००ई.) को खग्रास चन्द्रग्रहण(जो कि भारत में दिखाई नहीं देगा), यूरोप, रूस, अफ्रीका खाड़ी देशों तथा उत्तरी-दक्षिणी अमेरीका में कहीं चक्रवात, भूचाल, तूफान व भूम्प आदि से कहीं हानि का संकेत देता है।

३ फरवरी को मंगल मीन राशि में आएगा। ५ फरवरी को शनैश्चरी अमावस एवं इस दिन खण्डग्रास सूर्यग्रहण (जो कि भारत में नहीं दीखेगा) दक्षिणी ध्रुव प्रदेशों में व दक्षिणी गोलार्ध के देशों में कहीं प्राकृतिक आपदा का संकेत देता है । कई प्रकार के भयंकर रोगों से जनता परेशान होगी।

१४ मार्च (सन् २०००ई.) को मंगल मेष राशि में आकर शनि के साथ राशि-सम्बन्ध बनाएगा, जो कि संवत् के अन्त व कुछ आगे तक चलेगा, इस समय विश्व के देशों में नए समीकरण बनेंगे एवं ध्रुवीकरण प्रवृत्ति व बड़े देशों की कुनीति से कुछ देशों की आन्तरिक स्थिति विस्फोटक होगी और सीमाओं पर युद्धमय वातावरण बनेगा।

यूरोप के देश

यूरोपीय देश वर्ष कुण्डली

७ | ५ रा. | ४ | ८ | ६ मं. | ३ | बु.९ सू. | शु. | १२ | चं. २ | १० | ११ गु. के. | १श.

३१ दिसं.,१९९८ई.(रात्रि १२ बजे)

यूरोप के देशों की वर्ष कुण्डली

८ | ७ चं. | ५ | ४ | शु. | ६ | रा. | ३ | बु.सू.९ | के. | १२ | २ | १० | ११ मं. | श.१गु.

३१ दिसं.,१९९९ ई.(रात्रि १२ बजे)

यूरोपीय देशों की ग्रहस्थिति के अनुसार यह वर्ष भयंकर राजनैतिक-विषमता वाला मालूम देता है। ब्रिटेन, स्काटलैण्ड, आयरलैण्ड, फिन्लैंड, रूस, आदि में कहीं आन्तरिक - संघर्ष से सिविलवार जैसी स्थिति बनेगी। अमेरीका की दोगली नीति से विश्व शान्ति भंग होने के योग हैं, कुछ मुस्लिम देशों में आपसी युद्ध को प्रज्वलित करने में बड़े यूरोपीय राष्ट्र का हाथ स्पष्ट अनुभव करेंगे। जापान, जर्मनी, रूस आदि में आर्थिक-संकट उभरेंगे, यूरोप के देशों में यह सर्वत्र अनुभव होगा। पश्चिमी-यूरोप में व्यापारिक-वस्तुओं के निर्यात से तेजी से विकास अवश्य होगा, ब्रिटेन में व्यापारिक-विकास में कमी आएगी। ३१ दिसम्बर १९९८ की वर्ष कुण्डली के अनुसार ब्रिटेन में आन्तरिक समस्याएं जटिल होंगी, कुछ भाग में क्रान्ति का वातावरण बने । स्काटलैण्ड की स्वायत्तता का प्रश्न सामने आएगा। अमेरीका के प्रधान श्री क्लिंटन का समय अनुकूल नहीं, सं. २०५६ के प्रारम्भ के लगभग किंवा जून १९९९ से पूर्व ही श्री क्लिंटन को पदत्याग के लिए मजबूर होना पड़ेगा। वर्ष कुण्डली में शनि-मंगल का षडष्टक यूरोप में कहीं राजनैतिक-हत्याकाण्ड का संकेत देता है। देशों में मुद्रास्फीति बढ़ेगी। समुद्र-तटवर्ती देशों में कहीं भयंकर प्राकृतिक-आपदा-भूचाल-तूफान आदि से जनधन हानि का भी योग है ।

मुस्लिम - देश

यावन राष्ट्र लग्न कुण्डली

८ | ६ | ५ | ९ | ७ | ४ | रा. | १० | ११ गु. | सू. श. | ३ | के. | १ मं. | १२ शु.बु. | २ चं.

२८अप्रै. '१९९८ई. (सूर्यास्त समय, मंगलवार)

यावन राष्ट्र वर्ष कुण्डली

८ | ६ | ५ | ९ | ७ मं. | ४ रा. | के. १० | सू. १ | ११ | ३ | श. | १२ बु.गु. | चं. २ शु.

१८ अप्रै. '१९९९ ई. (सूर्यास्त समय)

२८ अप्रैल १९९८ ई. से १७ अप्रैल १९९९ ई. तक की ग्रहस्थिति के अनुसार सप्तम भाव में शनि , मंगल,सूर्य की स्थिति मेष नाम राशि-प्रधान अफगानिस्तान किंवा अन्य किसी अरब राष्ट्र में भयंकर राजनैतिक-स्थिति को जन्म देगी। छोटे राष्ट्र में भयंकर युद्ध की स्थिति से पड़ौसी देश भी ध्रुवीकरण करने को विवश होंगे। यूरोप के किसी राष्ट्र विशेष की कुटनीति मुस्लिम-राष्ट्रों में विनाश का कारण बनेगी। मंगलवारी गुर्रा युद्धाग्नि से कहीं भयंकर विनाश का संकेत देती है। पाकिस्तान की आर्थिक -स्थिति उत्तरोत्तर विषम होती जाएगी, आतंकवाद बढ़ेगा। शासनसत्ता में परिवर्तन किंवा यहां लोकतांत्रिक-सरकार के ख़तरे में पड़ जाने के योग हैं। पाकिस्तान के लिए यह संवत् भयंकर समस्याओं को लेकर आ रहा है । सिंध प्रान्त में गृह युद्ध जैसी स्थिति बनेगी- यह पुन: एक और विभाजन की तरफ बढ़ने लगेगा और पाक में सैनिक शासन की संभावनाएं ग्रहगति के अनुसार प्रबल हो रही मालूम देती हैं।

वर्ष कुण्डली में शनि-मंगल दोनों की एक दूसरे पर दृष्टि २२ अगस्त '९९ तक बनी रहती है , १६ अप्रै. '९९ तक गुरु भी अतिचारी रहता है, - इस समयाब्धि में ही अफगानिस्तान-ईरान एवं पाकिस्तान में अघटित घटनाएं देखी जाएंगी। राजनैतिक उथल-पुथल आन्तरिक अशान्ति से ऐतिहासिक घटनाक्रम बनेंगे । यूरोप की महाशक्तियों की प्रछन्न-नीति से उलझे हुए मुस्लिम राष्ट्र विश्वशान्ति को भंग कर सकते हैं। बंगलादेश से प्राकृतिक-प्रकोप एवं राजनैतिक हत्याओं के अप्रिय समाचार मिलेंगे ।

संवत् के आरंभ से २२ अगस्त तक कहीं अकाल की स्थिति बने। कहीं युद्धाग्नि से अशान्ति, कहीं सत्ता परिवर्तन, कहीं प्राकृतिक-प्रकोप से जन-धन हानि भी होगी ।

सं. २०५६ वि. की ग्रहस्थिति के अनुसार भारत एवं भारत-सरकार में घटित होने वाले घटनाचक्र का सर्वेक्षण

नव वर्ष प्रवेश कुण्डली

९ | ७ मं. | ६ | के. १० | ८ | ५ | ११ | चं.१२ गु. बु. सू. | २ शु. | ४ रा. | १ श. | ३

(१७ मार्च, '१९९९ ई.)

स्वतंत्र भारत का ५२ वां वर्ष

सू.भ.४ बु.शु. | २ चं. | १ | रा.मुं. | ३ | श. | ५ | १२ गु. | ६ | ७ | ९ | ११के. | ८ | १०

१५अग. '१९९८ ई.

भारत का ५० वां गणतंत्र वर्ष

वें. ८ | ६ | ५ | ९ | ७ मं. | सू. १० के. बु.यू. ने. | ४ रा. | ११ | श. १ | शु. | ३ | १२ गु. | चं. मुं. | २

(२६ जन. '१९९९ ई.)

संवत् २०५५ वि. के अन्तिम चरण की ग्रहस्थिति पर विहंगम दृष्टि डालने से ज्ञात होता है, कि- विद्यमान भाजपा सरकार को सं. २०५६ के प्रारम्भ से पूर्व किंवा सं. २०५६ वि. के पूर्वार्ध में भयंकर चक्रव्यूहों को भेदना कठिन होगा। वरिष्ठ नेता अपनी सूझबूझ एवं कुशल-नीति से स्थिति को संभालने में कुछ हद तक सफल रहेंगे, लेकिन अन्ततः यह भाजपा सरकार अपना कार्यकाल पूरा करने में असफल रहेगी ।

भारत की प्रभाव राशि मकर है, संवत् आरम्भ होने से पूर्व ही ११ जनवरी '९९ को मकर राशि में केतु का सम्पर्क सूर्य-शुक्र के साथ होता है, इस समय नीच शनि की मकर राशि पर विशेष दृष्टि भी है। - सत्तारूढ़ दल के लिए कठिन समय प्रारंभ हो जाता है ।

भारत की आर्थिक स्थिति पर ध्यान देने से ज्ञात होता है कि, एशियायी क्षेत्रों वाले देशों में वित्तीय संकट का प्रभाव अधिक होगा। दक्षिण पूर्व एवं पूर्व एशियायी क्षेत्रों पर वित्तीय संकट [illegible] की शासनसत्ता डगमगा जाएगी।

नववर्ष प्रवेश कुण्डली में द्वितीयेश-गुरु-पंचमभाव में स्वस्थ हैं, अतः भारत का कुशल-

नेतृत्व नई-नई योजनाओं से इस संकट को पार कर जाएगा। व्यापारिक उदारीकरण एवं निजीकरण की नीति से ही आगे आर्थिक स्थिति में सुधारात्मक प्रक्रिया बनेगी ।

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार संवत् के आरम्भ में ही संवत् का रक्षामंत्री (क्रूरग्रह) मंगल वक्र हो रहा है और गुरु (शुभ ग्रह) संवत् के शुरु में ही अतिचारी हो रहा है। संवत् के प्रारम्भ से ही शनि-मंगल का समसप्तक योग २२ अगस्त तक चलेगा;- यह समय केन्द्रीय-शासन सत्ता के सामने विशेष समस्याओं को लाकर खड़ा कर देगा और सरकार को १६ अप्रैल १९९९ तक इन समस्याओं को सुलझाना कठिन हो जाएगा, भारत की राजनीति में अचिन्तित -घटनाचक्र चलेगा। राजनीतक-पार्टियों में नए समीकरण बनेंगे। तोड़-फोड-जोड़ की नीति प्रबल होगी और सत्तारूढ़ दल के घटक (सहायक) दल छिटकने लगेंगे, कोई आश्चर्य नहीं यदि इस अवधि में कोई विशेष राजनीतिक परिवर्तन हो जाए।

"यदा क्रूर ग्रहो वक्री शुभश्चैवातिचारगः।
तदा नृपाः क्षयं यान्ति दुर्भिक्षं तत्र दारुणम्॥"

१५ मई से ८ जून तक मंगल मन्दगति से चल रहा है और बुध अतिचारी है। पूर्वोत्तर में आन्तरिक -सुरक्षा व्यवस्था में कुछ कमी अनुभव होगी, आतंकवाद का जोर अनुभव होगा। दिल्ली में विस्फोट की घटनाओं से चिन्ता व्याप्त होगी, बिहार में अपराध बढ़ेंगे और आर्थिक-अनियमितताएं देखी जाएंगी । उत्तर प्रदेश में राजनीतिक अपराधीकरण बढ़ेगा। महाराष्ट्र एवं तामिलनाडू में भी कोई सौम्य स्थिति होने के कारण नहीं मालूम देते ।

२५ मई को नीच-शनि के साथ गुरु का एक राशि-सम्बन्ध भी राजनीतिज्ञों में परस्पर मतभेद सूचक है । दक्षिण एवं उत्तर में आगे वर्षा की कमी अनुभव हो, दक्षिण-उत्तरी प्रान्तों में व देशों में कहीं सत्ता हस्तान्तरण हो, आश्विन से फाल्गुन तक किसी भाग में दुभिर्क्ष की स्थिति बने। आगे वैशाख में गुजरात में सत्ता परिवर्तन हो, आषाढ़ -श्रावण में किसी विशिष्ट व्यक्ति का पद रिक्त होगा। मेघ महोदय में लिखा है;-

सुभिक्षं विग्रहो राज्ञां समर्घं वस्त्रकर्पटम्।
दक्षिणस्यामुत्तरस्यां खण्डवृष्टिश्च जायते॥
दक्षिणोत्तरयोर्देशे छत्रभंगोऽपि कुत्रचित्।
छत्रभंगस्तथाषाढ़े श्रावणे वा भयं पथि॥
नवीनो जायते राजा क्वचिन्मेघोऽपि कार्तिके॥

उल्लिखित प्रमाण से स्पष्ट है कि, आषाढ़ और श्रावण मास विशेष घटनापूर्ण होंगे। कहीं प्रान्तीय व केन्द्रीय शासन सत्ता में परिवर्तन के संकेत भी मिलते हैं ।

२८ जुलाई का चन्द्रग्रहण शिलांग, अरुणाचल, नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा एवं आसाम के कुछ भागों में शत्रु देश कृत गतिविधियों से अशान्ति का संकेत देता है, क्योंकि ग्रहण मकर राशि वाले देश भारत पर विशेष प्रभाव करेगा, मंत्रिमण्डल में कहीं उलटफेर होंगे। आगे ११ अगस्त का खग्रास सूर्यग्रहण कर्कराशि एवं सर्पनक्षत्र (आश्लेषा) में घटित होगा। अतः काश्मीर, पंजाब, म.प्र., उ.प्र., दिल्ली, आसाम, महाराष्ट्र , गुजरात आदि में उपद्रव व हिंसक घटनाएं कराएं, शासन को सीमा प्रान्तों पर सावधान रहना चाहिए।

२३ अगस्त को मंगल वृश्चिक राशि में आकर शनि-गुरु के साथ षडष्टक योग बनाएगा। अगस्त से अक्तूबर तक की ग्रहस्थिति के अनुसार केन्द्रीय शासन पुनः शक्ति परीक्षण की ओर बढ़ने लगेगा, राजनैतिक अस्थिरता अनुभव होगी और विभिन्न-राजनैतिक-दल निर्वाचन संग्राम में कूदने का मन बना लेंगे। कुछ प्रान्तों में भारी बाढ़ या भूकम्प, चक्रवात, यान दुर्घटना आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि भी होगी। अगस्त से अक्तूबर तक किसी विशिष्ट व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त होगा। कहीं सत्ता में परिवर्तन के योग भी हैं। भारत सी.टी.बी.टी.पर हस्ताक्षर अपनी शर्तों के अनुसार आत्म सम्मान के साथ ही करेगा, अमेरीका की प्रभुसत्ता के आगे झुकेगा नहीं।

नवम्बर में बु.,गु.,श.,रा.,के. इन पांच ग्रहों का वक्रत्व एवं १८ नवम्बर को मंगल का मकर राशि में केतु के साथ मेल एवं शनि-मंगल का परस्पर दृष्टि-सम्बन्ध अघटित राजनैतिक-चक्र को जन्म देगा। विभिन्न पार्टियों में स्वार्थपरक -समीकरण बनेंगे, निर्वाचन क्षेत्र में उतरने के आसार सामने आएंगे। कदाचित् इस समय निर्वाचन होते हैं तो भी मिलीजुली ही सरकार बनेगी जोकि पुनः राजनीतिक स्थायीत्व प्रदान न कर सकेगी। इस समय अन्तर्राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय परिस्थितियों के कारण नई दिल्ली सरकार के समक्ष संवेदनशील परिस्थितियां पैदा होंगी। जिनका समाधान केवल सत्तारूढ़ दल ही नहीं, समूचा सदन मिलकर ही कर सकेगा। इस सन् के अन्तिम चरण में सीमा प्रान्तों पर सैन्य बल को सन्नद्ध रखना होगा, विरोधी देश पाक की कुनीति किंवा सीमा प्रान्तों पर विरोधी देश द्वारा अघोषित-युद्ध का मुंहतोड़ जवाब देना पड़ेगा।

आगे चान्द्रमास माघ (जन.,फर.) में पांच-शनिवार, फाल्गुन में पांच मंगलवार होने में कहीं यान दुर्घटना ,कहीं भयंकर भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप, अग्निकाण्ड, राजनैतिक अप्रिय घटना, किंवा किसी विशिष्ट व्यक्ति के निधन का संकेत मिलेग।

१४ मार्च सन् २००० ई. को मंगल मेष राशि में आकर शनि के साथ राशि सम्बन्ध

बनाएगा- "युद्धदौ शनि माहेयौ" प्रमाणानुसार सीमा प्रान्तों पर व विश्व के किसी देश में भयंकर युद्ध का वातावरण बनेगा। इस समय भारतीय राजनीति में भी विशेष घटनाएं घटित होंगी। कहीं हत्याकाण्ड व विस्फोट आदि से किसी विशिष्ट व्य क्ति का पद रिक्त हो ।

स्वतंत्र भारत के ५२ वें वर्ष लग्न-गत ग्रहस्थिति के अनुसार लग्नेश-बुध, धन स्थान में अस्त है एवं नीच मंगल के साथ धनस्थान में सूर्य भी है। ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है कि ,- गतवर्ष परमाणु परीक्षणों के दृष्टिगत भारत पर लगाए गए आर्थिक-प्रतिबन्ध और अधिक कड़े हो सकेंगे, जिससे विकास की गति धीमी पड़ेगी। लेकिन तृतीय भाव में राहु भारत को अपनी अस्मिता बनाए रखने पर दृढ़ रखेगा और हरेक स्थिति मे आगे बढ़ने के कार्यक्रम बनेंगे ।

स्वतंत्र भारत की वर्ष कुण्डली में कर्मेश-गुरु, कर्मस्थान में ही है, लेकिन भाग्येश-शनि आयस्थान में नीच है, अतः भारत का व्यापार क्षेत्र बढ़ेगा, विदेशों से व्यापारिक -सम्बन्ध बढ़ेंगे, नए उद्यमों की स्थापना होगी। भारत द्वारा दक्षिणी एशियायी देशों के आर्थिक एकीकरण की प्रक्रिया का कार्यान्वित करने के लिए एवं दक्षिण एशिया मुक्त व्यापार क्षेत्र बनाने के लिए द्विपक्षीय मुक्त व्यापार समझौते का प्रस्ताव रखा जाएगा जो कि एशियायी क्षेत्र के लिए एक प्रगतिप्रद पग होगा। विद्युत के क्षेत्र में अमेरीकी व यूरोपीय कम्पनियां निवेश करेंगी, जिससे देश में प्रगति होगी। **ध्यान दें,**-गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार भारत के सामने आर्थिक एवं राजनीतिक अनेक समस्याओं के बावजूद भारत आगामी नई सदी में विशेष प्रगति की ओर उन्मुख रहेगा और भारत विश्व में महाशक्ति के रूप में उभरेगा जबकि अमेरीका आदि शक्ति सम्पन्न देश अपनी गरिमा की सन्ध्यावेला देख रहे होंगे ।

भारत के ५० वें गणतन्त्र वर्षलग्न के अनुसार लग्नेश-शुक्र पंचमभाव में मित्र क्षेत्र में है, मुंथेश-मंगल का शनि के साथ सम-सप्तक योग बन रहा है स्पष्ट है कि, इस वर्ष लग्न में भारत वर्ष को पुनः सत्ता परीक्षण के लिए तैयार रहना चाहिए। विरोधी पार्टियों में भी ध्रुवीकरण की प्रवृत्ति दिखाई देगी। वर्तमान राजनीतिक स्थिति में राजनीति की गतिमत्ता को ध्यान में रखते हुए विभिन्न सिद्धांतों वाली पार्टियों की व्यक्तिगत अवसरवादिता के घिनौने खेल से राजनीतिज्ञ देशहित को तिलांजलि देते मालूम देंगे। केन्द्र (दिल्ली) में भाजपा की साख कमजोर होती नजर आएगी। परिणामस्वरूप आगामी दिल्ली, राजस्थान, मिजोरम एवं मध्यप्रदेश के निर्वाचनों में भाजपा का प्रभाव क्षीण होगा और कांग्रेस फिर से गतिशील होती मालूम देगी- इसके प्रभाव दूरगामी होंगे। गणतंत्र वर्ष कुण्डली के अनुसार देश के सामाजिक किंवा राजनीतिक जीवन में जातिवाद का विष घोलकर अपना उल्लू सीधा करने वाली पार्टियां आगे सफल न हो सकेंगी।

भारत के प्रमुख राजनैतिक दल एवं प्रमुख नेता

भाजपा जन्म कुण्डली

श. गु. ५ मं. रा. ४
२शु.
३
१
६
१२सू.
७
९
११बु. के.
ने.८ यू. चं.
१०

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार शनि का नीच एवं इस वर्ष में शनि -मंगल का समसप्तक भाजपा के लिए भयावह वातावरण बनाए, क्योंकि भाजपा के जन्मांग में शनि भाग्येश है। इस वर्ष संवत के आंरभ में ही गुरु का अतिचारी एवं शनि मंगल का समसप्तक योग इस पार्टी को काफी विरोधी पार्टियों का सामना करना पड़ेगा। जिससे इस पार्टी की प्रतिष्ठा को आघात पहुंचेगा। कुछ प्रान्तों में इस पार्टी को पराजय का मुंह देखना पड़ेगा। मई मध्य से लगभग जून मध्य तक ज्येष्ठ अधिक मास होने से सत्तारूढ़ दल को भारी उलझनों में से गुजरना होगा। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार भाजपा को अगस्त तक विपक्षीदल के चक्रव्यूह से निकलना कठिन प्रतीत होता है ।

जन्म कुण्डली श्री अटल बिहारी बाजपेयी

८ शु.चं.
६
९सू.गु. बु.
७ श.
५
१० के.
४ रा.
११
१
३
१२ मं.
२

प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी जी की शपथ ग्रहण कालीन कुण्डली

३
१
१२ सू.श. बु.मं.
४
२
५ रा.
११ गु.
के.
६
८ चं.
१०शु.
७
९

श्री वाजपेयी जी की यथालब्ध ग्रहस्थिति के अनुसार राहु की महादशा में शुक्र का अन्तर १ जन. १९९९ ई. तक चलेगा। जन्माङ्ग में शुक्र का नीच चन्द्र के साथ द्वितीय भाव में मेल है, शुक्र लग्नेश एवं अष्टमेश है । इस समय के लगभग सहयोगी पार्टियों की स्वार्थपरकता से श्री [illegible] उसके बाद आयेश सूर्य की अन्तर्दशा एवं चन्द्र की अन्तर्दशाएं राजनीति से संन्यास की तरफ ले जाने वाली हैं। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार २६ मई १९९९ ई. से पूर्व राजनीतिक परिस्थितियां कुछ इस प्रकार पेचीदा हो जाएंगी, कि सहयोगी दल साथ न देंगे।

तब विपक्ष के प्रधान नेताओं की सत्ता लिप्सा विभिन्न सिद्धांतों वाली पार्टियों से भी तालमेल करके सत्ता हथियाने को आतुर रहेंगी, जिसमें कांग्रेस प्रमुख होगी। यह खेल २८ अगस्त १९९९ ई. तक चल सकता है। कदाचित् अटल जी राजनीति-रणक्षेत्र में डटे रहते हैं तो सन् २००० ई. के लगभग मार्च तक देश इनके सुदीर्घकालीन राजनैतिक अनुभवों से लाभ प्राप्त करता रहेगा। तत्पश्चात् कोई और पार्टियां सत्ता हथियाने की चेष्टा न करके निर्वाचन-संग्राम में ही उतरना चाहेंगी। आगामी निर्वाचन सन् २००० ई. के पूर्वार्ध में ही होने का योग है।

प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी जी की शपथ ग्रहण कालीन कुण्डली के अनुसार १९ मार्च १९९८ ई. को दिल्ली में दिन में ९ बजकर ३७ मिनट पर वृष लग्न में प्रधानमंत्रिपद की शपथ ग्रहण की गई। इस समय अनुराधा नक्षत्र, वज्रयोग एवं नीचस्थ चन्द्र है ।

शनि -नवमेश एवं दशमेश है, जोकि आजकल गोचर में नीच एवं वक्री है। २९ दिसम्बर १९९८ तक सहयोगी दल प्रधाननेता को पूर्ण सहयोग न देने से उनकी कार्यक्षमता में बाधक रहेंगे। १२ जनवरी १९९९ ई. के बाद मीन राशि का गुरु इन्हें कुछ अधिक सामर्थ्य प्रदान कर सकता है। लेकिन बजट विपक्षी दल कुटिल नीति से भाजपा की सरकार को पदच्युत करने के लिए जोडतोड़ की नीति, पार्टियों में विचित्र -ध्रुवीकरण की नीति जारी रखेगा। मई/जून तक विशेष कुटिल नीति का सामना करना पड़ेगा। अन्यथा सत्ता हस्तान्तरण हो जाना, कोई आश्चर्यजनक न होगा।

''कांग्रेस''- कांग्रेस की उदयकालीन कुण्डली के अनुसार शनि नीच है, जोकि गोचर में भी नीच ही चल रहा है, । कांग्रेस की नीतियों में कोई बड़ी कमी रहने से पूर्णतया पूर्वरूप व पुरातन गरिमा को यह पार्टी पाप्त न कर सकेगी। आगामी निर्वाचनों में अकेले ही सत्ता में आना बड़ी पार्टी होने पर भी संभव न होगा। लेकिन गुरु का नीच-शनि के साथ मेल होने पर (लगभग मई १९९९ के बाद) इस पार्टी को पुनः लोगों का समर्थन प्राप्त होने लगेगा। लेकिन कुछ विशेष मुद्दों को लेकर कुछ नेता विरोधी विचारधारा रखेंगे जिससे पार्टी में कुछ विभाजन के भी आसार बन सकते हैं।

श्रीमती सोनिया गांधी

जन्म कुण्डली श्रीमती सोनिया गाँधी जी

५ | ३ चं. | ६ ने. | श. ४ | रा. २ ह. | प्लू. १ | ७ शु. गु. | के. सू. ८ बु. | १० | १२ | ९ मं. | ११

श्रीमती सोनिया जी की यथालब्ध जन्मकुण्डली में भाग्येश गुरु-शत्रु क्षेत्री है एवं कर्मेश-मंगल छठे हैं। गोचर में कर्मस्थान में विद्यमान नीच-शनि इन्हें पार्टी में बड़ा आर्श्चयजनक प्राणपण फूंक देने का सामर्थ्य प्रदान नहीं करता । लग्नेश,चन्द्र, द्वादशस्थ होने से इनके मनोबल को कमजोर करेगा, लेकिन फिर भी पार्टी की प्रतिष्ठा गत वर्षों से बेहतर होती नजर आयेगी।

शनि-गुरु एवं राहु की गोचर स्थिति के अनुसार यह स्पष्ट मालूम देता है, कि अब खैरात बांटने की राजनीति के दिन निकल चुके हैं। अब भीख नहीं, सत्ता में भागीदारी ही का सिद्धांत अपनाना पड़ेगा अन्यथा कोई भी पार्टी अपने सामाजिक आधार को राष्ट्रीय स्तर तक प्राप्त न कर सकेगी ।

भारत के कुछ प्रान्त

पंजाब- प्रभाव राशि मीन एवं नाम राशि कन्या है । ११ जनवरी १९९९ ई. से मई तक इस प्रान्त में विशेष प्रगतिप्रद योजनाएं बनेंगी। अप्रैल १९९९ के लगभग विशेष धार्मिक एवं सामाजिक आयोजनों से यहां खालसापन्थ की शुद्ध एवं प्रगतिप्रद भावनाएं उजागर होंगी, अनुभव होने लगा है कि पंजाब से उभरता हुआ खालसा पन्थ विश्वव्यापी सौहार्द एवं प्रेरणा का श्रोत बन रहा है। ऐसे आयोजन प्रधान नेता को यश प्रदान करेंगे। मेष राशि का शनि, इस प्रान्त में नई योजनाओं को कार्यान्वित करने में बाधक प्रतीत होता है। इस वर्ष विशेष व्यय होने का योग है। अकाली-भाजपा गठबन्धन के जून १९९९ ई. तक शिथिल होने के योग हैं। सरकार की उपेक्षापूर्ण नीति कृषक वर्ग में असंतोष पैदा करे। उग्रवाद प्रछन्नरूप से कहीं कहीं अनुभव होगा। लेकिन शासन इसे दमन कर देगा। संवत् का उत्तरार्ध प्रधान नेता के लिए कठिन परिस्थितियों वाला है ।

हरियाणा- नामराशि मिथुन है। नीच-शनि की मिथुन राशि पर दृष्टि है । प्रधान नेता को अपनी ही पार्टी के लोगों से विरोध का सामना करना पड़ेगा। यहां अपराध एवं आतंकवाद के असर दिखाई देगें, जिन्हें दबाना आवश्यक है अन्यथा शासन की प्रतिष्ठा को आघात पहुंचेगा और विरोधी पक्ष प्रबल होगा। अगस्त १९९९ तक का समय यहां के लिए कठिन है । अनेक समस्याओं एवं अन्तर्विरोधों के बावजूद मध्यस्तर की सन्नत को तरक्की मिलेगी। यहां का किसान शासन से विशेष सन्तुष्ट न रहेगा, परिणाम दूरगामी होंगे। महंगाई, विद्युत संकट, सिंचाई के लिए जल समस्या के हल न होने से जनता का रोष बढ़ेगा।

दिल्ली- प्रभाव क्षेत्र मकर है। गणतंत्र कुण्डली गत एवं गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार इस क्षेत्र में भाजपा की साख कमजोर होती अनुभव होगी। विधान सभाई निर्वाचनों में वर्तमान शासनतंत्र को भारी कठिनाई का सामना करना पड़ेगा। जनजीवनोपयोगी वस्तुओं में अप्रत्याशित मंहगाई से जनमानस रूष्ट होगा। कानून व्यवस्था में अकर्मण्यता, विस्फोट आदि से हनि होगी। संवत् २०५६ का अगस्त तक एवं मार्च २००० ई. से अंत तक का समय सत्तारूढ़ राज्यशासन सत्ता के लिए अग्निपरीक्षा का ही है ।

हिमाचल प्रदेश- प्रभाव राशि मीन है। गुरु सवत् के आरम्भ में मीन राशि में है। वर्तमान शासन सत्ता के लिए यह वर्ष विशेष उपलब्धियों वाला रहेगा । जनमानस पर भाजपा सरकार का प्रभाव श्रेष्ठ होगा। लेकिन मई १९९९ के बाद राजनीति के क्षेत्र में नया मन्थन अनुभव होगा, गठबन्धन की मजबूरियों से सरकारी क्षमता प्रभावित होगी। सरकारी कर्मचारियों में रोष पनपे, जिसके परिणाम दूरगामी होंगे। विद्युत उत्पादन शुल्क लगेगा। संवत् २०५६ के अन्तिम दो तीन मासों में सत्तारूढ़ गठबन्धन और विपक्ष को लेकर नए समीकरण बनने के संकेत मिलेंगे । मई से २८ अगस्त तक की ग्रहस्थिति के अनुसार कहीं भूस्खलन, बादल फटना, भयंकर वर्षा पानी आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि के आसार बनेंगे।

उत्तर प्रदेश - प्रभाव राशि धनु है। यहां की शासनसत्ता में अघटित घटनाओं का सामना करना पड़ेगा । अपराधिक-पृष्ठभूमि में छिपे मंत्रियों से प्रधान नेता को मुक्ति पाने के लिए निर्वाचनका ही आश्रय लेना होगा। संवत् २०५५ वि. के अन्तिम चरण विशेषत: २० सितम्बर १९९८ ई. से जून १९९९ई. तक यहां की राजनीति में धमाका होगा और शासन हिल जाएगा । दलबदल यहां के प्रधान नेता के लिए सरदर्द बनेगा। शनि-राहु की गोचर स्थिति के अनुसार संवत् २०५६ प्रारम्भ होने से पूर्व (सितम्बर १९९८ से ११ जनवरी १९९९ ई. के मध्य) कोई कानूनन पासा उल्टा पड़ने से यहां की सरकार गिर जाने के योग हैं। उत्तरांचल का विरोध होने पर भी यह सन् १९९९ में सत्ता में आ जाएंगे । महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, एवं राजनैतिक शिथिलता से भाजपा सरकार से जनता का मोहभंग होता नजर आएगा, परिणाम दूरगामी होंगे।

जम्मू-काश्मीर- प्रभाव राशि तुला पर शनि की नीच दृष्टि काश्मीर समस्या को कुछ कठिन परिस्थित में डालेगी। उग्रवाद पर अपेक्षाकृत काफी कंट्रोल होगा। लेकिन पाक कुनीति से शान्ति भंग के प्रयास रहें। भीषण तूफान, हिमपात आदि प्राकृतिक प्रकोप से कहीं हानि हो। सीमा प्रान्तों पर गोलाबारी से आशंति बनेगी

पाठको! अतर्क्य-भविष्य देखने की क्षमता तो इस कलियुग में कठिन ही है। पुनरपि ज्योतिष-विज्ञान-दृष्ट्या एवं श्री प्रभुकृपावशात् राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय जो शुभाशुभ घटनाएं मेरी अल्पविषया मति में प्रस्फुरित हुई हैं, आपके समक्ष उपस्थित कर दी हैं ।आगे कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुम् समर्थ भविष्य के निर्धारक स्वयं प्रभु ही हैं। उनकी प्रबल मायाशक्ति के सम्मुख मुझ जैसे अल्पज्ञ की भविष्य-लेखन में प्रवृत्ति बालचापल ही तो है :-

"तत्त्वं चात्रेश्वरो वेत्ति नाहं वेद्मि कदाचन"

शुभ चिन्तक-
इन्दुशेखर शर्मा,
श्री मार्त्तण्ड भवन,
मु.पो. कुराली (रोपड़) पंजाब

लेख पूर्ण होने की तिथि ०५ सितम्बर १९९८ ई .

(अनन्त-चतुर्दशी)

कौन व्यक्ति किस चीज के व्यापार से धनी होगा

जन्मकुण्डली की ग्रहस्थिति के आधार पर यहाँ अनुभवसिद्ध कुछ योग दे रहे हैं। इनके अनुसार आप यह निर्णय सरलता से कर सकते हैं, कि- इस व्यक्ति को किस चीज के व्यापार से अथवा कैसे धन प्राप्त होगा। नीचे बतलाए गए इन योगों वाली कुण्डलियों में नवमेश और धनेश यदि पर्याप्त बली (नीचांश आदि में न होकर अपनी उच्चादि राशियों में) हों तो जातक महाधनी होता है ।

(१) जन्मलग्न और चन्द्रमा दोनों से तीसरे, छठे, दसवें, ग्यारहवें भाव में सब शुभ ग्रह पड़े हों तो शेअर, लाटरी , सट्टा और अन्य सभी प्रकार के व्यापार से जातक धनी होता है।

(२) दूसरे भाव में वृष या मीन का नीचांश-रहित शुक्र हो तो रुई, सूत, कलई, चांदी के व्यापार एवं कारखानों से धनी होगा।

(३) चतुर्थ-भाव में वृष, कर्क, तुला के बुध-शुक्र-शनि हों तो विदेशी-व्यापार वा रुई-फीचर से व्यक्ति एकाएक धनी बन जाएगा ।

(४) पञ्चम-भाव में मेष, कर्क, सिंह या धनु-राशि में सूर्य-गुरु का सम्बन्ध हो तो भूमिगत (गड़े हुए)धन व लाटरी आदि से व्यक्ति अकस्मात् धनी होगा ।

(५) आठवें भाव में वृष-कन्या-मीन-राशि के पाप-रहित गुरु-शुक्र-बुध वा पूर्णचन्द्र हो तो सट्टे आदि से एकाएक धनी होगा। यहां गुरु-शुक्र-बुध अस्त नहीं होने चाहिएं।

(६) नवम-भाव में कर्क, कन्या वा मीन-राशि के बुध-शुक्र-गुरु हों तो सूत-वस्त्र-व्यापार व मशीनरी से धनाढ्य होगा ।

(७) दशम-भाव में तुला या मकर का बली शनि हो तो अलसी, तोरिया, सरसों, एरण्डा के व्यापार से व्यक्ति को महाधन लाभ होगा।

(८) ग्यारहवें-भाव में तुला या कुम्भ का बलवान् शनि हो तो लाटरी, सट्टा, शेयरों के द्वारा बिना श्रम के उत्तम धनी होगा। यदि यहां ११वें वृष, कन्या, तुला के पूर्ण चन्द्र-बुध-शनि हों तो मशीनरी या आढ़त से धनी होगा ।

(९) दूसरे या ग्यारहवें भाव में कर्क या मीन के गुरु-शुक्र हों तो धातु, वस्त्र या ठेकेदारी से धनी होता है ।,

(१०) कर्क-राशि का पूर्ण चन्द्रमा लग्न में गुरु-मंगल से युत हो तो सट्टा लाटरी या रत्नों के व्यापार से धनी हो।

(११) शुभ-ग्रह लग्नेश धन-स्थान में स्थित हो और धनेश व चतुर्थेश बली हों तो कृषि

व्यापार - विमर्श

[संवत् २०५६ वि. की ग्रहस्थिति के आधार पर व्यापारिक-वस्तुओं में आने वाली तेजी एवं मंदी का मासिक-विवरण]

संसार के सभी पदार्थों पर ग्रहों का नियंत्रण है, सभी पदार्थों का समावेश बारह राशियों में है । जब ग्रह भ्रमण करता हुआ राशि भोग करता है , तो उस राशि में समाहित सभी व्यापारिक-वस्तुएं, ग्रह की प्रकृति के अनुसार प्रभावित होती रहती हैं। प्रभावित वस्तु में परिवर्तन आते हैं, और इन्हीं परिवर्तनों से बाजारों में घटा-बढ़ी होती है, जिसे हम 'तेजी मंदी' कहते हैं । व्यापारी 'तेजी-मन्दी' इन दो शब्दों से अपने भाग्य को आजमाता है । परन्तु मनुष्य का भाग्य कर्मफल किंवा ग्रहचाल के मुताबिक मनुष्य की स्थिति को कभी बिगाड़ता है,कभी सुधारता है । रथ के पहिए में लगे आरों की भांति मनुष्य कभी ऊपर उठता है कभी नीचे गिरता है- ''चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्ति:!'' कहने का तात्पर्य यह है कि जो व्यक्ति आज व्यापार में घाटा खा चुका है, वह सदा के लिए डूबा ही रहेगा - यह धारणा भ्रामक है । व्यापार में बहुत ही आश्चर्यजनक उतार-चढ़ाव आते हैं, न जाने आपको शीघ्र उत्तम लाभ हो जाए, जो व्यक्ति धनाढ्य होकर सट्टे का काम विचारपूर्वक नहीं करते वे शीघ्र ही डूब सकते हैं । व्यापार तो किस्मत के सिकन्दर का ही प्रत्यक्ष साथ देता है । अत: किसी भी तरह का व्यापार **करने से पहिले आप पत्राचार द्वारा या प्रत्यक्ष मिलकर ग्रहस्थिति पर विचार करा लें, विश्वास रखें, ग्रहस्थित के आधार पर किए गए व्यापार में आप हानि में न रहेंगे । आप भारी हानि से भी बच सकते हैं ।**

जीवन में ग्रह स्थिति के प्रभाव का अध्यन करने से यह निस्सन्देह सत्य सिद्ध हो चुका है, जितना लाभ आपको होना है, उतना ही होगा, अधिक नहीं **'यदस्मदीयं नहि तत्परेषाम्'** अर्थात् जो मेरा है वह मिलेगा ही उसे और कोई नहीं ले सकता । अत: जीवन पर ग्रहों का संकेत समझकर ही व्यापार करना बुद्धिमता है ।

खुलकर व्यापार करने से पहिले अप्रत्याशित हानि से बचने के लिए अपनी व्यक्तिगत ग्रहचाल को ध्यान में रखना सतर्कता है । हानिप्रद ग्रह से संबंधित वस्तु का व्यापार न करें । वर्ष में जो ग्रह लाभप्रद हैं, उन ग्रहों के अधिकार-क्षेत्र में आने वाली वस्तुओं का ही व्यापार करें, तभी आप लाभ ले सकेंगे ।

हाजरा एवं वायदा व्यापारी जो अपने व्यापारिक-जीवन से निराश हो चुके हैं, उनके लिए हम यहां व्यापार-विमर्श में ग्रहों का पूर्ण अध्ययन करके तेजी, मन्दी का मशवरा देते हैं, व्यापारियो, निराश न हों। हमसे प्रत्यक्ष मिलें, आपकी उलझी हुई व्यापारिक समस्या का समाधान हम करेंगे ।

संवत् २०५६ में गुरु, शनि, राहु, मंगल, यूरेनस, नेपच्यून और प्लूटो आदि के चार एवं युति-प्रतियुति के आधार पर यह स्पष्ट घोषणा की जाती है कि इस साल व्यापार जगत् में विशेष लम्बे तेजी एवं मन्दे के रिएक्शन आऐंगे। इस वर्ष गुड़, खाण्ड, घी, तेल, तिलहन, एवं रुई में विशेष लाभ के चांस हैं, तुरन्त फीस भेजकर टैलीफोन से सम्पर्क स्थापित करें। विदेशी व्यापारी पत्र द्वारा सम्पर्क स्थापित करें, उत्तर मिलेगा। कहने का तात्पर्य यह है कि इस वर्ष व्यापारिक क्षेत्र में रंक से राजा एवं राजा से रंक बना देने वाले विशेष योग हैं । अत: प्रत्यक्ष मिलकर या वर्षभर की फीस भेजकर टैलीफोन के जरिये समय-समय पर ताजा परामर्श प्राप्त करके उत्तम लाभ प्राप्त करें। जिस व्यापार के लेख में जिस जगह व्यापार के लेख में हम ताजा मशवरा हासिल करने की बात लिखते हैं, वहां व्यापारी अगर प्रत्यक्ष मिलकर मशवरा लें, तो अच्छा रहे ।

'व्यापार विमर्श ' लेख में हम ग्रहचाल के मुताबिक सभी व्यापारियों को प्रतिवर्ष बाजारों के उतार-चढ़ाव से सावधान करते रहे हैं ।

सं. २०४६ वि. में चना के व्यापारी हमारे परामर्श से भारी लाभ उठा चुके हैं । सरसों, तेल, तिलहन में तेजी से सं. २०४८ वि. में तो जो व्यापारी हमारे संपर्क में रहे, लाखों का लाभ उठा गए हैं । हमने तेल, सरसों बिनौला, अलसी, सूरजमुखी, मूंगफली,एवं रुई में अपने व्यापारियों को भंयकर तेजी बताई थी, सौ छ: गुणित लाभ उस साल के व्यापारियों को हमारे परामर्श से प्राप्त हुआ है । सं. २०४९ में तेल, घी, एवं शेयरों के बाजार में जो उथल-पुथल हुई है उसका खुलासा हम निजी व्यापारियों को देते रहे हैं । सं. २०५२-५३ में रुई एवं दालवाना के व्यापारी हमारे साथ मशवरा करके लाखों रूपये का लाभ प्राप्त कर चुके हैं।

सं० २०५४ में सरसों के व्यापारी हमारे ताजा मशबरे से भारी हानि से बचे एवं गुड़ के व्यापारी लाखों कमा गए। सं. २०५५ में तेल के व्यापारी 24 अगस्त तक ५४५०/-तेल के भाव में सौदा सैटल करके पूरा लाभ ले गए। **व्यापारियों से अनुरोध है कि व्यक्तिगत रूप से आकर व्यापारिक जानकारी लेने में भारी लाभ ले सकेंगे। दूर-दराज से आने वाले व्यापारी टेलीफोन से समय निश्चित करके आएं। या एक मास की फीस ५०० रू० भेजकर,टेलीफोन से तेजी,मन्दी जान सकेंगे।**

सं. २०५६ में ग्रहों के वक्रमार्ग, यूति, गति के अनुसार हम इसवर्ष तेजी मन्दी की विशेष लाईनों का संकेत नीचे लेख में देंगे साथ ही सामयिक तेजीमंदी का विवेचन भी करेंगे । फिर भी व्यापारियों से निवेदन है कि वे निम्नांकित हिदायतों को ध्यान में रखकर, अपनी ग्रहचाल के अनुकूल होने पर ही व्यापार करें ।

नोट:- वायदा व्यापार या हाजर सौदों के व्यापार की लाईन अगर हमारे लिखे या बताए गए विचार के विपरीत चले तो तुरंत सौदा काटकर नुकसान से बचें तुरन्त प्रत्यक्ष मिलकर ताजा मशवरा हासिल करें । ऐसी स्थिति में किसी प्रकार के नुक्सान (हानि) की जिम्मेदारी हम नहीं लेते । अर्थात् - व्यापार में हानि होने पर हम जिम्मेदार न होंगे, यह नोट कर लें, लाभ होने पर जो व्यापारी लाभांश नहीं भेजते, उनसे आगे पत्र व्यवहार नहीं किया जाता, यह भी नोट कर लें ।

वायदा- व्यापारियों कि लिए हिदायतें

(१)सदैव उतने ही लाभ की आशा करके व्यापार करें, जितनी साधारणतया हानि उठाने की सामर्थ्य हो । (२)सदैव याद रक्खो, कि वायदा व्यापार में नुक्सान की लिमिट बांध कर काम करें, ज्यादा नुक्सान व घबराहट से बच जाओगे, कम नुक्सान में सौदा काट देना अक्लमन्दी है। (३)व्यापार करते समय ध्यान रहे,- कि सबसे पहले अपने मन में व्यापारिक आधार के साथ-साथ ग्रह- गति के आधार पर निर्णय कर लें, कि यह समय इस वस्तु में मोटी तेजी का है या मोटी मन्दी का ? मन में यह धारणा बांध कर बाजार का रुख देखें ! यदि व्यापार की लहर तेजी की चल रही हो तो हमारे परामर्श से तेजी का व्यापार करके लाभ उठावे । (४) यदि यह योग भी मन्दे का हो और बाजार में मन्दे के मोटे कारण भी दिखाई देने लगे और व्यापार के वक्त भी बाजार का रुख मन्दे का हो तो एसी स्थिती में हर बढ़े भाव में बचाव करते रहिए थोड़ा - थोड़ा सौदा काट कर नफा से सुलटते रहिए । (५)व्यापार की लहर तेजी की है या मन्दी की - यह जानने के लिए खास वस्तु के भावों को देखना चाहिए । यदि उस वस्तु में हर तीसरे चौथे आठवें दिन मन्दी के या तेजी के नए-नए भाव आते चले जाएं, जैसे तीसरे दिन नया भाव मन्दी का आवे तो जान लो, कि वस्तु में अब मन्दे की लहर चल रही हैं, उछाल में बेच दें। (६) यदि मन्दी के भाव छूटते चले जाएं और तेजी के भाव तीसरे या चौथे दिन नए-नए बनते जाएं तो समझ लें कि तेजी की लहर चल रही है, ऐसे समय जब ग्रहचाल से भी तेजी नजर आए तो तेजी का व्यापार करके प्रायः लाभ उठाया जा सकता है । (७) बाजार के खिलाफ कभी काम न करें । मान लो, आपने तेजी का काम किया । उधर सौदा करते ही मन्दे की लहर चल रही है तो किसी भी समय तेजी का उछाल आते ही सौदा खत्म कर दो, बड़े नुक्सान से बच जाओगे ।

हमेशा ग्रहयोग को आधार मान कर और बाजार के रुख को ध्यान में रखते हुए अपनी पाराशरी शुभदशा में व्यापार से अच्छा लाभ उठाया जा सकता है । इसके विरूद्ध खोटी ग्रहस्थिति वाले व्यापारियों को वायदे का व्यापार भूलकर भी नहीं करना चाहिए भारी हानि हो सकती है, सट्टा तो सितारे का साथी है । अतः समयानुसार पत्र द्वारा अपनी दशा के अनुसार हमारे सुझावों द्वारा लाभ उठा सकते हैं ।

इसवर्ष के सार्वजनिक व्यापार में तेजी मन्दी पर विचार करने से पूर्व हमें इसवर्ष के नाम

शास्त्रों के अनुसार इस (सं० २०५६ वि०) संवत्सर का नाम "नन्दन" है । शास्त्रों में इसका फल इस प्रकार लिखा है;-

"सुभिक्षं सुखिनो लोकाः व्याधि शोक विवर्जिताः ।
नन्दनं च धनैर्धान्यैर्नन्दने वत्सरे भवेत् ॥"

तात्पर्य यह है; धन-धान्य समृद्धि एवं सुभिक्ष (वर्ष पर्याप्त) रहे । रोग-शोकादि से मुक्त जनता में आनन्द मंगल रहे ।

इस वर्ष का राजा 'गुरु' होने से वर्षा आशानुरूप पर्याप्त होगी। धर्मकर्म अधिक हों। नए नए उत्सवों का आयोजन भी हो। इस सवंत् की **चौमासी फसलों का स्वामी (सस्येश) शुक्र है,** गेहूं, चावल, ईख, आदि की फसलें उत्तम हों। समय के अनुकूल वर्षा हो। फल-फूल भी काफी तादाद मे हों। इस संवत् में वर्षा पानी के स्वामी मंगल होने से कहीं बाढ़ की स्थिति कहीं सूखा अनुभव हो, जिससे व्यापार क्षेत्र प्रभावित होगा।

इस वर्ष शरत्सस्य जातक कुण्डली के अनुसार शीतकालीन फसलों के स्वामी (धान्येश) गुरु होने से गेहूं, चावल आदि की फसल उत्तम होगी। शरद् ऋतु के अनाजों में किसी बीमारी फैलने से या किसी अन्य कारण से फसल खराब होने से मूंग-मोठ बाजरा आदि में बाजार तेज हो सकते हैं । सरदी के अनाजों के लिए ग्रहस्थिति विशेष अनुकूल नहीं है। ग्रीष्मसस्यजातक कुण्डली की ग्रहचाल के अनुसार गेहूं जौ, चना आदि की फसल उत्तम होगी, लेकिन फसलों की कटाई के समय अनुकूल जलवायु न रहने से किंवा समय पर शासकीय किसी घोषणा के कारण जौ, चना, सरसों, गेहूं आदि में काफी तेजी आ सकती है;परिणाम स्वरूप सरकार विशेष अनाजों के स्टाक पर प्रतिबन्ध भी लगा सकती है, व्यापारी लोग समय पर प्रत्यक्ष मिलें, लाभ में रहेंगे ।

-शनि, राहु, केतु, गुरु, मंगल आदि ग्रहों के वक्र मार्ग, युति प्रतियुति उदयास्त के अनुसार यह वर्ष जौ, चना, रुई, गुड़, खाण्ड घी एवं दालवाना में भयंकर तेजी एवं मन्दे का है। समयानुसार फीस जमा कराके प्रत्यक्ष, पत्रव्यवहार द्वारा या टेलीफोन से पूर्ण लाभ उठा सकते हैं ।

पूर्वावलोकन- मार्च सन् १९९९ ई. में शनि-मंगल का दृष्टि सम्बन्ध तेल, बिनौला, सोयाबीन, सूरजमुखी, सरसों आदि में एवं घी में तेजी का संकेत देता है। मार्च १०,१२,१३,१८,२५,२९ एवं ३१ मार्च को वायदा बाजारों में जोरदार उथल पुथल होगी, बाजार का रुख देखकर काम करें। लाभ होगा ।

[ध्यान दें; कि- १८ मार्च १९९९ ई० को मंगल के वक्री होने पर रुई सोना चांदी अलसी, तेल, तिलहन, गुड़, सोना में जोरदार तेजी संभावित है, इस समय तेजी आने पर सौदा सैटल करके लाभ ले लेना चाहिए। वायदा व्यापारी इस दिन के लगभग तेजी लगाकर अच्छा लाभ कमा सकेंगे।

अप्रैल

मास के आरम्भ में ही २ अप्रैल के लगभग **बुध मार्गी हो रहा है, इसी दिन सूर्य-गुरु की अंशात्मक युति भी हो रही है, गुरु अतिचारी है।** इस समय चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी हो। गेहूं, जौ, चना, अनाज, गुड़ खाण्ड, घी, रेशम, तेल, तिलहन, कपूर, चन्दन अगर आदि सुगन्धित चीजों, सोना में तेजी रहेगी । कलौंजी, सौंफ, मेथे, धनिया में इस समय बाजार कुछ नर्म रहेंगे। इन चीजों में मन्दा आने पर स्टाक कर सकते हैं।

४ अप्रैल को शनि अश्विनी नक्षत्र के चतुर्थ-चरण में आएगा **इस समय शनि नीच राशि (मेष) में है, और मंगल के साथ पूर्ण प्रतियुति बना रहा है।** व्यापारिक-वस्तुओं में बड़ी उथल-पुथल की संभावना है। पीतल, तिल, तेल, अलसी, सरसों, घी, चावल, ज्वार, मिर्च, सूत व गेहूं आदि में तेजी बनेगी। इस समय मेथी, काली मिर्च, जीरा, जायपत्ती, सौंफ, हल्दी में अच्छी तेजी बनेगी। इस समय वायदा व शेयर बाजार भी तेज रहेंगे ।

ध्यान दें- ४ अप्रैल को कृतिका नक्षत्र का शुक्र जौ, हींग, रुई, सूत, वस्त्र, चांदी, सोना हीरा, मणि, मोती आदि जवाहरात में मन्दा करेगा, सोच विचारपूर्वक काम करें । विशेषत: तिलहन एवं तेल के व्यापारी सावधानी से काम करें।

७ अप्रैल को वृषराशि के शुक्र पर मंगल की विशेष दृष्टि है इसलिए रुई, कपास, दालवाना, खल, बिनौला, गुड़, पाट, बारदाना, चांदी, सोना में अच्छी घटाबढ़ी चले। सट्टे का बाजार जोर पकड़ेगा। इस समय सोना, चांदी, तेल, तिलहन के व्यापारी एवं जीरा, लाल मिर्च, हल्दी के व्यापारी तथा चावलों के व्यापारी अच्छा लाभ लेंगे। **इस समय सरकार द्वारा आयात-निर्यात की घोषणा से व्यापार में तीव्रता आएगी।**

९ अप्रैल को शनि अस्त हो जाएगा। शनि खड़ी फसलों को नष्ट करने में सबसे अधिक प्रभावी ग्रह माना जाता है तथा बाजारों में जोरदार तेजी मन्दी के रिएक्शन भी लाता है, इसलिए **शनि के नीच राशि में अस्त होने पर कपास, रुई, शेयर बाजार** एवं सोना में जोरदार मन्दा बनाता है, लेकिन यह मन्दी ठहरेगी नहीं क्योंकि मंगल की पूरी नजर शनि पर है। अत: जल्दी ही सौदा निपटाकर तेजी की तरफ बढ़ना शुरु करें, वरना नुकसान में रहेंगे ।

१० अप्रैल को बुध मीन राशि में आकर अतिचारी गुरु के साथ राशि-सम्बन्ध बनाएगा। बृहस्पति की राशि में बुध तेजीकारक है। बुध बाजारों में जोरदार घटाबढ़ी करने वाला ग्रह है। अफवाहों से बाजारों में जोरदार तेजी मन्दी आती है। १० अप्रैल के लगभग मन्दे [illegible] बढ़ें, कदाचित् बाजार मन्दे होने लगे तो,मन्दा ही समझ कर काम करें। हमारे विचार से तो रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर आदि में मन्दा, सोना, चांदी में घटाबढ़ी के साथ पहले तेजी बाद में उतना ही मन्दा रहे, बिनौला तेज रहेगा। १२ अप्रैल को रुई में काफी घटाबढ़ी चले। चांदी में पहले मन्दी फिर तेजी, अनाजों में मन्दी बने। **९ अप्रैल से १३ अप्रैल तक व्यापारी मन्दे का ध्यान रखकर काम करें।**

१४ अप्रैल को सूर्य मेष राशि में आकर नीच शनि (जो कि अतिचारी पोजीशन में आने को है) के साथ मेल करेगा। वायदा बाजार पर इस ग्रहस्थिति का विशेष प्रभाव पड़ेगा। अलसी,एरण्ड, मूंगफली, तिल , सोयाबीन, सूरजमुखी आदि तिलहन, सोना, चांदी, लोहा, तांबा, नारियल , सुपारी, हींग, सूत, कपड़ा, मेथी, लौंग, इलायची एवं अनाजों में अच्छी तेजी बने । रुई, घी, नारियल, बादाम, सौंफ , मेथी, धनिया में भी तेजी रहे ।

(१४ अप्रैल को एक दिन की तेजी लगाकर लाभ ले सकते हैं।)

१५ अप्रैल को उ.भा. का बुध एवं रोहिणी का शुक्र चांदी-सोना आदि धातु अलसी, एरण्ड, सरसों, घी, तेल, गुड़ खाण्ड, दाख, छुहारा, सुपारी, नारियल एवं ऊन में मन्दा करेंगे। [१५,१६ को बाजार मन्दे रहें]

१७ अप्रैल को शनिवारी चन्द्रदर्शन एवं शुक्र शनि की अंशात्मकयुति भी है। इसलिए रुई, सूत, सोना, चांदी, सरसों, तेल, मूंगफली आदि में अच्छी तेजी बने । इस समय मजीठ, नमक एवं कुसुम्भ में भी तेजी रहे ।

२१अप्रैल को **गुरु के उदय होने पर बाजार का रुख अचानक बदल सकता है, सावधानी से काम करें। लेकिन गुरु अतिचारी है, अत: हमारे विचार से चांदी, अनाज, दालवाना, कपास, रुई, सूत शेयर बाजार, एवं मसालों में अच्छे तेजी के रिएक्शन देगा।**

२६ अप्रैल को रेवती १ में बुध एवं रेवती ३ में गुरु प्रत्येक बाजार में जोरदार मन्दे बन बनाएंगे। केसर मजीठ, कुसुम्भ, लालचन्दन, गेरु, लाल मिर्च, गुड़, खाण्ड, तिल, तेल, सरसों, घी, एवं चांदी में अच्छा मन्दा आकर सामान्य तेजी बने। २७ अप्रैल को भरणी नक्षत्र में सूर्य प्रविष्ट होगा, इसी दिन शुक्र मृगशिर नक्षत्र में प्रवेश करेगा और इसी दिन सूर्य -शनि की अंशात्मक युति भी होगी। सोना, चांदी, तांबा, मूंग, पीतल के बर्तन , जौ, चावल, मोठ, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी में तेजी रहे। ३० अप्रैल को शनि भरणी नक्षत्र के प्रथम चरण में आ रहा है, कपास ,गुड़, खाण्ड, घी एवं तेलों में तेजी का वातावरण बनेगा ।

मई

मई २ से ४ तक गुरु एवं राहु के अंशों में समानता व्यापारिक क्षेत्र में (विशेषत:) वायदा व्यापारियों के लिए लाभप्रद चांस बनाएगी। इस समय तिलहन-बाजार, चांदी, सोना, गुड़, खाण्ड एवं शेयर बाजार में विशेष उथल-पुथल करेंगे। जोरदार मन्दा आते ही खरीदें और तेजी आते ही बेचकर लाभ लेते रहें।

३ मई को मिथुन राशि के शुक्र पर शनि की बिशेष दृष्टि है, अत: रुई, कपास, सूत, वस्त्र, जूट, बारदाना, एरण्ड, तिल, तेल, सरसों, अरहर, गुवार आदि में काफी मन्दा आने की उम्मीद बने लेनिक यह मन्दा ठहरेगा नहीं, तुरन्त तेजी की तरफ बढ़ें, आगे तेजी बनेगी। अलसी गुड़ घी, में अच्छी तेजी बनेगी । गेहूं, चना, चावल में भी तेजी का ही संचार रहेगा ।

४ मई को मंगल वक्री पोजीशन में चित्रा नक्षत्र में दाखिल होगा, गेहूं, चना, सोना, चांदी, तांबा एवं पीतल में तेजी बनेगी।

५मई को बालग्रह बुध अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में प्रवेश करेगा। इस समय मेष राशि में सूर्य-शनि पहले से ही है। इस प्रकार मेष राशि में स्थित सूर्य-शनि-बुध पर मंल की पूरी नजर है। व्यापारी ध्यान दें, इस समय जोरदार तेजी के चांस हैं, वायदा या हाजर के व्यापारी तेजी का ध्यान रखकर काम करें , अन्यथा हानि में रहेंगे। संभव है, आज से तेजी की लम्बी लाईन बने। इस समय ताजा मशबरा हासिल करने की सलाह है। बुध बाल ग्रह है, सूर्य शनि मंगल से प्रभावित होने से इसकी प्रकृति क्रूर हो गई है। झूठी-सच्ची अफवाहों से बाजारों में उठापटक होती है। हमारे विचार से मेष राशि का बुध यद्यपि बाजारों में मन्दा करता है, परन्तु फिर भी यहां मूंगा, मोती आदि जवाहरात सोना, चांदी आदि धातु,गेहूं, जौ, चना चावल एवं दालवाना आदि अनाज, घी, गुड़, खाण्ड में तेजी का ही प्रभाव रहेगा। इस समय चांदी के व्यापारी विशेष सावधानी से काम करें, जोरदार मन्दी एवं तेजी बनेगी।

[६ से ८ मई तक वायदा व्यापारी तेजी के व्यापार से लाभ ले]

९मई को आर्द्रा नक्षत्र का शुक्र गेहूं आदि अनाजों के व्यापार में अचानक मन्दे का वातावरण बना देगा। ११ मई को गुरु रेवती के चतुर्थ चरण में ए में बहुत घटाबढ़ी करेंगे। चांदी में पहले मन्दी फिर तेजी आएगी। लेकिन घी, सोना, अलसी, एरण्ड आदि तिलहन, गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोठ, चावल आदि में तेजी ही रहेगी। ११ मई को सू.-बु. की

अतिचारी बुध का विंशेष प्रभाव तिलहन बाजारों पर अनुभव किया गया है। बुध का मेश राशि में शनि के साथ सम्बन्ध है, बुध-शनि पर मंगल की दृष्टि है। अत: व्यापारिक -वस्तुओं में भारी तेजी बनेगी। इस समय चांदी एवं अफीम में जोरदार घटाबढ़ी के बाद मन्दा बनेगा सोने में घटबढ़ी के बाद तेजी बने । १३मई को बुध, शनि की अंशयुति भी तेजी करेंगी । घी, अनाज, तेल, तिलहन में जोरदार तेजी मन्दी के झटके आएंगे।

१५ मई को सूर्य वृष राशि में आता है एवं इसी दिन शनि भी उदय हो जाता है। वृषराशि के सूर्य पर मंगल की दृष्टि है। चांदी, सोना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, रुई, सूत, बादाम, सुपारी, नारियल, तिल, तेल, सरसों आदि में तेज़ी का वातावरण रहेगा। जौ,चना, गेहूं, मटर, अरहर, मूंग, चावल, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली में मन्दा बने । धातुओं के व्यापारी ध्यान दें कि- लोहा, जस्ता, सीसा, रंग आदि काले पदार्थ, लकड़ील लहसुन, चावल, चाय पत्ती में भी इस समय जोरदार तेजी बनेगी ।

१६ मई को रविवारी चन्द्रदर्शन एवं ४५ मुहूर्ती का होना मुंग, मोठ, उड़द, तिल, आदि में तेजी का संकेत देता है। १७ मई को राहु का आश्लेषा के दूसरे चरण में आना भी अनाजों एवं तेल, तिलहन में तेजी की सूचना देता है । १९ मई को कृत्तिका नक्षत्र का बुध चांदी में खास घटाबढ़ी के बाद मन्दी करे, अनाजों एवं रुई में तेजी ही रहे ।

२१ मई को बुध वृष राशि में आता है, इस समय बुध अतिचारी भी है, इसी दिन यूरनेस वक्री भी हो रहा है। इस समय तेल, तिलहन, गेहूं, जौ, चना, चावल, मटर, कपास, सूत, एवं अफीम के भाव में जोरदार तेजी संभावित है। यह तेजी लम्बी बने।

२५ मई को सूर्य एवं बुध रोहिणी नक्षत्र में आएंगे। इस दिन सूर्य-बुध की अंशात्मक युति भी हो रही है । इस समय सभी प्रकार के अनाजों, तिल, तेल, अलसी, एरण्ड, सूरजमुखी मूंगफली, सरसों, गुड, खाण्ड, घी, गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, ऊन, सूत, वस्त्र, सण , सुपी एवं मिर्च में तेजी बने, चांदी में भी तेजी का ही वातावरण रहे। राई, तूअर, सण, ऊनी व रेशमी वस्त्रों में मन्दी बने, रुई में पहले तेजी होकर फिर मन्दी हो ।

२६ मई का दिन व्यापारियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इस दिन बृहस्पति लगभग ... शि में प्रवेश करेगा, इस समय गुरु मेष-राशि में स्थित-शनि के साथ 'एकराशि-सम्बन्ध' बनाएगा। शनि-गुरु पर इस समय मंगल की पूर्ण दृष्टि भी है। इस समय वायदा बाजारों में जोरदार घटाबढ़ी होगी, बहुत सावधानी से काम करें।

समय यदि शनि -राहु आदि तेजी सूचक ग्रह तेजीकारक राशि नक्षत्र में संचार नहीं करते तो उस समय बाजारों में गरु ग्रह के कारण तेजी न बन कर मन्दी ही बनती है, क्रूर ग्रह यदि तेजीकारक नक्षत्र-राशि से सम्बन्ध बनाए तो तेजी का प्रभाव कम ही अनुभव किया गया है- इस समय शनि-मंगल का दृष्टि सम्बन्ध तेल-तिलहन, अनाज एवं गुड़, खाण्ड, चीनी में तेजी का सूचक है । अतः तेजी बनेगी, लेकिन बहुत बड़ी तेजी की उम्मीद रखकर लम्बी तेजी में न पड़ें। रुई में ६०/७० रूपये की घटाबढ़ी का चांस है। मजीठ, श्रीफल, मूंगा, सोना, चांदी, तांबा, गुड़ एवं रशमी कपड़ों में कुछ मन्दे के बाद तेजी आएगी। २७ मई को भरणी नक्षत्र का शनि कपास, गुड़,खाण्ड, घी में तेजी करेगा।

३० मई को शुक्र कर्क रशि में आकर राहु के साथ मेल करेगा। इस समय सट्टे का व्यापार जोर पकड़ेग । लोगों की खरीदने की प्रवृत्ति प्रबल होगी। वायदा एवं सट्टा बाजार ऊपर उठेगा । विदेश को निर्यात की पालिसी व बाजारों में अफवाहों से जोरदार तेजी बनेगी। सोना, चांदी, रुई, अलसी, एरण्ड, घी, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, चीनी, में जोरदार तेजी के रिएक्शन आएंगे। इस समय यदि बाजार मन्दे के बने तो मन्दे से ही लाभ मिलेगा, लेकि हमारा विचार तेजी का ही है। ३१ मई को मृगशिर नक्षत्र का बुध रुई में तेजी, चांदी में घटाबढ़ी के बाद मन्दा, गेहूं, तिल, सरसों, उड़द में बाजार दोतरफा चले।

जून

मासारम्भ में बाजार तेजी की तरफ रहेंगे । ३ जून को बुध मिथुन राशि में एवं शुक्र पुष्य नक्षत्र में दाखिल होगा। **इस समय मिथुन राशिस्थ-बुध पर शनि की विशेष नजर होगी।** इस समय बाजारों में मन्दे की अफवाहों से मन्दे व तेजी के झटके आएंगे । रुई, सोना-चांदी में मन्दा, सण, रेशम, ऊन व धान्य में तेजी, लाख, कपड़ा, कपूर, पारा, शिंगरफ, हींग, गुड़ ,खाण्ड, शक्कर में मन्दे का वातावरण रहे । थोड़ा ध्यान दें, कि इस समय बुध अतिचारी है, अतः बाजारों में तेजी भी बन सकती है- इसलिए बाजार के रुख को देखकर ही काम करें।

४ जून को मंगल मार्गी हो रहा है शनि की मंगल पर पूरी नजर है। इस समय वायदा बाजार का रुख बदल जाने की संभावना है। जिन वस्तुओं के वायदा बाजार तेज थे वे मन्दे हो जाएंगे, जिन वस्तुओं में मन्दी थी, वे तेज हो जाएंगे। इन दिनों तीन दिनों के बाद रुई में जोरदार मन्दे का रिएक्शन आ सकता है, तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, चीनी एवं चानी में तेजी संभव है।

७ जून का बुध पश्चिम में उदय होगा। गेहूं, तिल, उड़द, जों, चना, मंग, मोठ, कपास, रुई, एवं शेयर बाजारों में १५ दिन में अच्छा मन्दा बनने के योग हैं। ८ जून को मृगशिर नक्षत्र का सूर्य रुई, सूत, रेशम, सण, कपूर, कस्तूरी, चन्दन, सोना, चांदी उड़द, मूंग, मोठ, चना ,बाजरा, अलसी आदि में तेजी बनेगी। १५ जून को गुरु अश्विनी २ में आकर रुई में तेजी, सोना, चांदी में घटाबढ़ी के बाद मन्दा तथा अनाजों में भी मन्दा बनेगा। १४ जून को पुनर्वसु नक्षत्र का बुध ८ दिन में चांदी रुई, कपास, सूत एवं सण में काफी मन्दी करेगा।

१५ जून को मंगलवारी चन्द्रोदय एवं इसी दिन सूर्य का मिथुन राशि में प्रवेश होना व्यापारियों के लिए विशेष महत्वपूर्ण है। क्योंकि इस समय सूर्य-बुध के साथ राशि सम्बन्ध बनाएगा एवं इन पर शनि की विशेष नजर भी है। - यह योग वायदा एवं हाजर व्यापार में अच्छी तेजी से लाभ देगा। फल, पाट, बारदाना, रेशम, सूत, कपास, रुई, सरसों, लोहा, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, घी, मूंग, उड़द, गेहूं चना, चावल आदि, प्रत्येक जाति के अनाजों में तेजी हो तथा सोना चांदी में भी तेजी का ही रुझान रहेगा ।

१६जून को आश्लेषा नक्षत्र का शुक्र १२ दिन में रुई में कुछ मन्दी एवं तूअर, चावल में भी अच्छी मन्दी का सूचक है **लेकिन यहां लाईन उल्टी चल सकती है क्योंकि शुक्र-राहु दोनों एक साथ होकर दोनों ही आश्लेषा नक्षत्र में हैं।** इसलिए यदि यहां मन्दा आता भी है तो शीघ्र ही बाजार तेजी में चलेंगे, इसलिए तेजी का ध्यान रखकर व्यापार करें।

२१ जून को बुध कर्क में आकर शुक्र एवं राहु के साथ मेल करेगा। ध्यान दे; शुक्र अकेला मन्दीकारक होता है, परन्तु जब शुक्र का मेल सूर्य के साथ हो जाता है तो शुक्र क्रूर होकर तेजी करता है, जब शुक्र-सूर्य के साथ बुध का मेल होता है तो तेजी या मन्दी जो भी बाजारों में चल रही हो, उसका तूफान आ जाता है ।- इस समय बड़ी सावधानी से काम करें। तेजी मन्दी ग्रन्थों के मुताबिक रुई में झटके की तेजी या मन्दी बने, चांदी में अच्छी तेजी रहे। गुड़, खाण्ड, चीनी, तेल,मूंगफली -सरसों आदि तिलहन एवं सोने में पहले कुछ तेजी, बाद में मन्दा रहे । **लेकिन इन दिनों बुध के कर्क में आते ही नेपच्यून उ.षा. में आ रहा है और २१ जून को सूर्य-राहु की अंशात्मक युति भी हो रही है, इसलिए हमारे विचार से तेल, तिलहन एवं दालवाना में अच्छी तेजी ही बनेगी ।**

२२ जून को आर्द्रा नक्षत्र में सूर्य के आने पर जलवायु के विचार से बाजारों में परिवर्तन आएगा। रुई, सूत, कपास, खल, अलसी, एरण्ड, मोनी, गेहूं, चावल, चना, जौ, एवं चांदी में तेजी आए। २४ जून को बुध पुष्य में आकर १० दिन में सोना, चांदी में मन्दा, रुई में घटाबढ़ी से १०/ १२ रुपये मन्दी आ सकती है ।

२७ जून को शनि भरणी ३ में आकर कपास, गुड़, खाण्ड, घी एवं तेल में तेजी करेगा। व्यापारी ध्यान दें- इस समय रोजाना की तेजी मन्दी खेलने वाले व्यापारी २७,२८ को तेजी से लाभ ले सकते हैं । क्योंकि शनि के साथ गुरु होने से यदि तेजी थोड़ी आती है तो तुरन्त मन्दा आ जाएगा, यह तेजी ठहरेगी नहीं, जब भी तेजी आए तुरन्त लाभ लेकर सौदा पूरा कर दें।

इस मास में जून ४,१५,१६-२१ एवं २७ जून को बाजार के रुख को देखकर तेजी मन्दी लगाकर अच्छा लाभ ले सकते हैं ।

जुलाई

मास के प्रारम्भ में ही गुरु अश्विनी के तीसरे चरण में प्रवेश करेगा। गुरु मेष राशि में शनि के साथ मेल कर रहा है। इन पर मंगल की नज़र भी है । पीतल, तिल, तेल. अलसी, सरसों, घी, चावल, ज्वार, मिर्च, सूत व गेहूं आदि में तेजी आए। यह तेजी एक मास में अच्छी बनेगी और बाद में मन्दा आएगा।

२ जुलाई को शुक्र मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में आकर वर्षा की कमी अनुभव कराएगा, जिसका असर बाजारों पर होगा। सिंह राशि में स्थित शुक्र पर गुरु की विशेष दृष्टि है, लेकिन ये दोनों ग्रह शत्रु हैं सिंहराशि के स्वामी- सूर्य पर शनि की इस समय विशेष नजर है। सोना, तांबा, जौ, चना, गेहूं, लाल चन्दन, मजीठ, लाल मिर्च, लाल रंग की चीजें घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी में तेजी रहेगी। चांदी में पहिले ४ दिन में झटके की मन्दी आ सकती है। रुई में ८/१०दिन में मन्दा आकर बाद में तेजी बने।

ध्यान दें:-सिंह राशि में शुक्र का फलादेश पुराने ग्रन्थों के आधार पर लिखा है। **हमारे नए अनुभव के अनुसार** सिंह राशि का शुक्र बाजारों में मन्दा लाता है। शुक्र का विशेष प्रभाव गुड़, खाण्ड, चाँदी, सोना, चावल एवं रुई पर अनुभव किया गया है। इस समय व्यापारिक वस्तुओं के विदेश के लिए आयात-निर्यात (Import - Export)की खबरों से चीजों में तेजी मन्दी के झटके आएंगे- सावधानी से काम करें। अकेला शुक्र कभी कभी जोरदार मन्दे की लाईन बनाता है,- इसलिए बाजार के रुख पर नजर रखकर लाभ लें। हाँ, चांदी, सोना, चावल, रुई में तेजी मालूम देती है। यह लाईन ३ दिन चले।

६ जुलाई को सूर्य पुनर्वसु में एवं मंगल स्वाती में आकर रुई, गेहूँ, गुड़, खाण्ड, कपास, बिनौला, एरण्ड, अलसी, सरसों, लाख, देवदारु, तिल, तेल, ज्वार, मोठ, बाजरा, उड़द, चावल, नमक, सूजी, हरड़, सुपारी, नारियल, केसर, मजीठ, नील, सोंठ, गुग्गल आदि सुगन्धित पदार्थ एवं करवाणे में तेजी का वातावरण बनाएं। चांदी में घटावढ़ी एवं सोना तेज रहे।

[मास के आरम्भ से ११ जुलाई तक वायदा व्यापार में पहले ५ दिन में मन्दे के झटके आएंगे। आगे ६ जुलाई से ११ तक तेजी से लाभ लें।]

१२ जुलाई को बुध वक्री होगा। इस समय बुध का मेल राहु के साथ है। घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, में तेजी से लाभ मिले। रुई में झटके के साथ तेजी आकर जल्दी ही मन्दा आए। इस समय गेहूं, जौ, चना आदि अनाजों में मन्दे का रुख रहे। इस समय तेल, तिलहन, पाट, बारदाना में भी तेजी रहे। **[वायदा व्यापारी इस समय घी, रसकस, रुई, अनाज एवं तिलहन में तेजी का काम करके लाभ लें।]**

१६ जुलाई को सूर्य, कर्क राशि में बुध एवं राहु के साथ मेल करेगा। जब बुध का संयोग सूर्य के साथ होता है तो तेजीकारक बन जाता है। सूर्य का प्रभाव प्रत्येक वायदा एवं हाजर बाजारों पर अनुभव किया गया है । आमतौर पर सूर्य का प्रभाव रुई, एरण्ड, अलसी, मूंगफली, सूरजमुखी, सरसो, सोयाबीन, तेल, सोना, चांदी, हल्दी, काली मिर्च तथा शेयर बाजारों पर होता है । इस समय तेजी जोरदार बन सकती है- सावधानी से काम करके लाभ लें। रुई, सूत, बादाम, सुपारी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, नारियल, सरसों, चान्दी एवं सोना में भी तेजी बनेगी। इस समय अनाजों में कुछ मन्दापन अनुभव हो सकता है ।

१८ जुलाई को बुध पश्चिम में अस्त होगा। इस समय बुध वक्री पोजीशन में चल रहा है। अत: रुई में झटके की मन्दी जल्दी ही आ सकती है। बहुत सावधानी से काम करें। चांदी तेज, बारदाना एवं शेयर बाजारों में अचानक मन्दा आए ।

१९ जुलाई को राहु का आश्लेषा नक्षत्र में पदार्पण रुई, तिल एवं तेलों में मन्दे का वातावरण बनाएगा। २० जुलाई को पुष्य नक्षत्र में सूर्य के आने पर तिल, तेल, सरसों, मद्य, गुड़, खाण्ड, चावल, गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, सुपारी, सोंठ, गुग्गल, मोम, हींग, हल्दी, लाख, चायपत्ती, सण, ऊनी वस्त्र, सिक्का, सोना, चांदी में तेजी का रुख रहे। रुई में पहले तेजी बाद में मन्दा रहे।

२६ जुलाई को मंगल-शुक्र की अंशात्मकयुति रुई, कपास, बारदाना, पाट, तेलवाना, गुड़, खाण्ड, चीनी, चांदी, सोना आदि एवं शेयर बाजारों में तेजी का वातावरण रहेगा । २९ जुलाई को गुरु अश्विनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में आएगा। रुई में तेजी, सोना-चांदी में घटा-बढ़ी चलकर मन्दी आए।

३० जुलाई को सिंह राशि में शुक्र वक्र हो रहा है। शुक्र पर गुरु की दृष्टि है। घी, तेल, गुड़

खाण्ड, शक्कर, गेहूं, जौ, चना आदि में तेजी बने । रुई में पहले तेजी होकर बाद में मन्दी आयेगी।

[२६ जुलाई से मासान्त तक तेजी से लाभ लें]

अगस्त

३ अगस्त को सूर्य के आश्लेषा नक्षत्र में आने पर बाजार तेज रहें क्योंकि इस समय सूर्य के साथ बैठा राहु भी आश्लेषा नक्षत्र में ही चल रहा है। १४ दिन में सोना, चांदी, रुई, बिनौला, गेहूं, चावल, उड़द, चना, गुड़, शक्कर, घी, तिल, तेल, सरसों, एरण्ड, अलसी, मिर्च, मजीठ एवं नील के भाव मेंअच्छी तेजी बनेगी। इस समय लाल-काली मिर्च, मसाले एवं चाय पत्ती में भी तेजी बनेगी।

४ अगस्त को को बुध पूर्व में उदय होगा, इस समय बुध पुष्य नक्षत्र में है एवं सूर्य-राहु के साथ राशि-सम्बन्ध भी बना रहा है। रुई, वस्त्र एवं शेयर बाजारों में अच्छा मन्दा आकर तुरन्त तेजी की तरफ बाजार बढ़ेंगे, सावधानी से काम करें। यहां ध्यान दें, कि यदि ४ अगस्त को बाजार शुरु में ही तेज रहते हैं तो बाद में जल्दी ही मन्दे हो जाएंगे- इस समय एक लाईन में काम करने वाले व्यापारी हानि में रहेंगे। अनाज, तेल, तिलहन में भी तेजी मन्दी लगा कर लाभ ले सकेंगे।

५ अगस्त को विशाखा नक्षत्र का मंगल, रुई, कपास, ऊनी वस्त्र, गेहूं आदि अनाज, दालवाना एवं तेल, तिलहन, पाट, वारदाना, गुड़, खाण्ड, चांदी, सोना, में जोरदार तेजी की संभावना बनाता है। **व्यापारी ध्यान दें कि इस समय सूर्य-राहु की अंशात्मक युति हो रही है तथा शनि की मंगल पर पूर्ण दृष्टि है साथ ही गुरु भी पूरी नजर से मंगल को देख रहा है; इसलिए अच्छी तेजी आने पर सौदा सैटल करके लाभ लें, दूरगामी व्यापार न करें।**

६ अगस्त को बुध मार्गी हो रहा है, इस समय बुध-शनि-गुरु मन्दगात में है। बुध, सूर्य-राहु के साथ है। रुईमें पहले मन्दी, बाद में तेजी बने। चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी, गेहूं, जौ, चना आदि अनाज तेज हों। रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूंगफली, कपूर, चन्दन, अगर आदि सुगन्धित चीजों में मन्दा बने, रसकस मन्दे एवं सोना में तेजी बने। **इस समय व्यापारी ध्यान दें,-जब बुध मार्गी होता है, उस समय वायदा एवं हाजर बाजारों में उलटफेर हो जाते हैं, पुरानी लाईन तेजी मन्दी की अचानक बदल जाती है, इसलिए ५ अगस्त को तेजी से लाभ लेकर तुरन्त निकल जाना चाहिए, अन्यथा बुध के मार्गी होने पर अचानक बाजार का रुख बदल जाने पर हानि संभव है।**

[अगस्त के प्रारम्भ से ११ अगस्त तक जब भी मन्दा आए खरीदो तथा जब तेजी बने तब माल बेचकर लाभ लेते रहें।]

११ अगस्त को सूर्य ग्रहण है। रुई, सूत वस्त्र, तेल, घी एवं अनाज का भाव तेज हो।

१२ अगस्त को सिंहस्थ चन्द्र के समय मघा नक्षत्र श्रावण मास में गुरुवार को चन्द्रदर्शन होगा, रुई, सूत, ऊनी वस्त्र, सरसों,तेल, घी, अनाज तेज हों, सोना, चांदी, खाण्ड एवं गुड़ में कुछ मन्दा रहे।

१७ अगस्त को सूर्य मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा, इस समय शुक्र-सूर्य पर गुरु की विशेष दृष्टि होगी। सिंह राशि का स्वामी स्वयं सूर्य है। सिंह राशि, अग्नितत्व की राशि है, इस राशि के अन्तर्गत सोना, काली मिर्च, लौंग, जीरा, तेजपत्ती एवं अलसी आदि तिलहन के व्यापार आते हैं। सूर्य ग्रह का असर प्रत्येक प्रकार के वायदा एवं हाजर व्यापार पर देखा गया है। रुई, एरण्ड, मूंगफली, सरसों, बिनौला, सोयाबीन,सूरजमुखी, सोना, चांदी हल्दी, काली मिर्च-मसाले आदि में तेजी का वातावरण रहे। इस समय शेयर बाजार मन्दे रहें। १८ अगस्त को वेंकटेश (प्लूटो) मार्गी होगा, जिससे राजनीतिक गतिविधि प्रभावित होगी, परिणामस्वरूप व्यापार में हिलडुल संभव है। -सावधानी से काम करें।

२० अगस्त को बुध आश्लेषा नक्षत्र में आएगा एवं इसी दिन सूर्य-शुक्र की अंशात्मक-युति भी होगी। तिल, तेल, सरसों, गुड़ खाण्ड, उड़द, मूंग एवं मूंगफली में तेजी आएगी। **व्यापारी** ध्यान दें, कि आश्लेषा नक्षत्र को सर्प (सांप) की संज्ञा दी गई है, जिस प्रकार सांप की चाल एवं स्वभाव का पता नहीं लगता, उसी प्रकार बालग्रह बुध के आश्लेषा नक्षत्र में आने पर वायदा व्यापार में धोखा हो जाना स्वाभाविक है, इसलिए जब भी अच्छा लाभ मिले ले लें, कभी भी मन्दा आने पर हानि हो सकती है। इस समय हमारा विचार अच्छी तेजी का है। **२१ अगस्त को बुध-राहु की अंशात्मक-युति भी हो रही है। कर्क राशि में यह युति तिलहन बाजारों में एवं तेलों में, दालवाना एवं सोना चांदी में जोरदार तेजी का संकेत देती है ।**

२३ अगस्त को मंगल वृश्चिक-राशि में आकर शनि एवं गुरु की नजर से ओझल हो जाता है। तेलवाना, जूट, बारदाना, रुई, कपास, चांदी, सोना एवं शेयर बाजारों पर मंगल ग्रह का विशेष प्रभाव होता है। बरसात, जलवायु के कारण व्यापार प्रभावित होगा। गुड़, रुई, सोना, चांदी तिलहन, जूट, बारदाना एवं शेयर बाजार तेज रहेंगे ।

२५ अगस्त को गुरु मेष राशि में वक्री हो रहा है, इस समय शुक्र भी वक्री पोजीशन में रहते हुए आश्लेषा नक्षत्र एवं कर्क राशि में दुबारा आ जाता है। नोट करें, कि- इस समय कर्क राशि में बुध अतिचारी होने जा रहा है गुरु-शुक्र-राहु ये वक्र हैं - घी, तेल, गुड़, खाण्ड शक्कर, गेहूं, जौ,

चना, चावल, धान्य, अलसी में तेजी बने, रुई में पहले मन्दी, बाद में तेजी बने। चांदी में भी मन्दा ही रहे।

२६ अगस्त को बुध पूर्व में अस्त होगा। अनाज, घी आदि में मन्दा चले। रुई में घटाबढ़ी, पहले तेज, बीच में मन्दी, अन्त में फिर तेज, सोने में घटाबढ़ी के बाद तेजी। २६ अगस्त को **बुध-शुक्र युति होगी और राहु के साथ ये एक राशि में चल रहे हैं।** इस समय रुई, तेल, तिलहन, सोना-चांदी में तेजी से लाभ मिलेगा।

२८ अगस्त को बुध मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में जाकर सूर्य के साथ मेल करेगा, उस समय सूर्य -बुध पर गुरु की दृष्टि भी है। चांदी, सोना, सूत, रुई व ऊनी वस्त्र, देवदारु, व खट्टी चीजों में तेजी बनेगी। कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, घी में कुछ मन्दा बने। पहले यदि बाजार मन्दे हैं, तो जोरदार मन्दा, यदि तेज हैं, तो जोरदार तेजी बन सकती है;इसलिए बाजार के रुख को देखकर काम करें।

२९ अगस्त को अनुराधा नक्षत्र का मंगल रुई, कपास, गेहूं, लाल मिर्च, लाल चन्दन, आदि लाल रंग की चीजों में तेजी बनेगी।

मासान्त में ३० अगस्त को सू.पू.फा. में आता है, एवं शनि वक्री हो रहा है। इस समय तीन बड़े ग्रह (गुरु-शुक्र-शनि) वक्री चलते हैं। सिक्का, कली, गेहूं, पीतल, ज्वार, बाजरा, चावल, घी, तेल, अलसी, सरसों, तमाखू, सीमेन्ट, एवं वस्त्र में तेजी, एरण्ड में घटाबढ़ी चले। जीरा, सोना, गुड़, खाण्ड, तिल, गेहूं, ज्वार, चावल, रुई, सूत में तेजी का वातावरण रहे।

सितम्बर

सितम्बर के प्रथम सप्ताह में बुध अतिचारी है, इस समय बुध-सूर्य एक जगह हैं। गुरु-शुक्र -शनि वक्र स्थिति में हैं। २ सितम्बर को यूरेनस वक्री होकर श्रवण नक्षत्र में आएगा-ग्रहस्थिति अच्छी तेजी का संकेत देती है। रुई, कपास, तेलवाना में विशेष घटाबढ़ी का संकेत मिलता है। हमें तेल एवं तिलहन के व्यापार में जोरदार तेजी मालूम देती है।

४ सितम्बर को बुध पू.फा. नक्षत्र में नक्षत्र आ रहा है, इस समय सूर्य भी पू.फा. नक्षत्र में चल रहा है। १० दिन में गुड़, खाण्ड, गेहूं आदि अनाज, जीरा, सोना, सरसों, तिल, तेल, घी, ज्वार, चावल, ऊनी कपड़ा व रुई, सूत में तेजी का झटका आएगा।

[सितम्बर के प्रारम्भ से १० सितम्बर तक तिलहन, दालवाना एवं सोना चांदी में तेजी का वातावरण रहेगा।]

११ सितम्बर को शुक्र मार्गी होगा एवं सूर्य उ.फा. में दाखिल होगा। जीरा, सोना, गुड़, खाण्ड, सरसों, तिल, तेल, घी, गेहूं,ज्वार, चावल, ऊनी-कपड़ा, रुई और सूत में तेजी बनेगी। **ध्यान दें;-** इस समय धान, गुड़ घी, एवं तिलहन में यदि मन्दा आए तो स्टाक करें, आगे उत्तम लाभ होगा। शुक्र के मार्गी होने पर बाजारों की लाईन बदल सकती हैं, अत: इस समय बाजार के रुख को देखकर ही काम करें।

१३ सितम्बर को सूर्य उ.फा. में आएगा, बुध पहले ही इस नक्षत्र में आ चुका है। ठीक १३ सितम्बर को बुध कन्या राशि में आ जाता है। रुई, कपास, रेशम, सूत, सोना, लोहा, घी, तेल, अलसी, सरसों, एरण्ड, चावल, उड़द, ज्वार, सुपारी, नारियल में तेजी बने। गेहूं, जौ, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड, एवं हल्दी में भी तेजी बनेगी। **ध्यान दें,** कि कन्या राशि बुध की अपनी राशि है, इसे रुई, कपास, तेलवाना, एवं दालवाना की पैदावार एवं उपज से इस राशि का विशेष सम्बन्ध है। अ अत: फसलों की पैदावार के बारे में अफवाहों से बाजारों में उथल-पुथल संभव है।

१७ सितं. को सूर्य कन्या राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा इस समय और अधिक तेजी बाजारों में आ सकती है। रुई, नारियल, सुपारी, तिलहन, तेल, मजीठ एवं लाल मिर्च व गुड़ में तेजी से लाभ मिलेगा। इस वक्त चांदी व शेयर बाजार मन्दे हो सकते हैं। १८ सितम्बर को बुध हस्त में आकर गेहूं आदि अनाजों में मन्दा करे। १९ सितं को मंगल ज्येष्ठा नक्षत्र में आकर १२ दिन में चांदी में मन्दी और रुई में घटाबढ़ी, नशीले, पदार्थ तेज होंगे। २०सितम्बर को गुरु अश्विनी ३ में एवं राहु पुष्य ४ में दाखिल होगा। रुई में तेजी, सोना, चांदी में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बने। अनाज में भी मन्दा रहे। वैसे पुष्य नक्षत्र का राहु घी, शक्कर, तेल, एवं तिलहनों में जोरदार तेजी होने का संकेत देता है, सावधानी से बाजार का रुख देकर तेजी की तरफ बढ़े।

२७ सितम्बर को हस्त नक्षत्र का सूर्य १५ दिन में गेहूं, जौ, ज्वार, गुड़, खाण्ड, कपास, रुई, सूत, जूट, कपास, लकड़ी, नमक, हरड़, हींग, धनिया, हल्दी, सण, एवं खारे पदार्थ तेज होंगे।

२८ सितम्बर को शुक्र मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में इस साल में दूसरी बार आएगा। इस समय सिंहस्थ-शुक्र पर गुरु की विशेष दृष्टि है। **ध्यान दें;-** शुक्र अकेला होने पर कई बार जोरदार मन्दा बनाता है। विशेषत: गुड़, खाण्ड, रुई, कपास, पाट, बारदाना, तिलहन, चांदी, सोना, तांबा, जौ, चना, गेहूं, लाल चन्दन, लाल मिर्च, लाल रंग की वस्तुएं, घी, व पशुओं के व्यापार में जोरदार तेजी या मन्दे की प्रतिक्रिया आएगी, बाजार के रुख को देखकर काम करें। हमारे विचार से इस

अक्तूबर

मासारम्भ में १ अक्तूबर को बुध तुला राशि में आकर शनि एवं गुरु की नजर में आ जाएगा। झूठी सच्ची अफवाहों से बाजार तेज एवं मन्दे होंगे। तुला राशि के बुध को आधुनिक विद्वान मन्दा लाने वाला मानते हैं। हमारे विचार से रुई, गुड़, खाण्ड, सोना, एवं मादक वस्तुओं में तेजी,चांदी, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला एवं मूंगफली आदि में मन्दा बने।

५ अक्तूबर को स्वाती नक्षत्र का बुध ८ दिन में रुई में मन्दा बनाता है। ८ अक्तूबर को **मंगल मूल नक्षत्र एवं धनु राशि में प्रवेश करेगा। - इस समय मंगल पर गुरु की दृष्टि भी होगी।** रुई में घटाबढ़ी होकर तेजी रहे, चांदी आदि धातु लकड़ी, सूत, सण, बिनौला, सरसों, घी तथा सभी प्रकार के अनाज तेज हों। ध्यान दें;- मंगल को 'भौम' यानी भूमि का पुत्र मानते हैं। जमीन से पैदावार का सम्बन्ध इससे रहता है, जब यह शुभ ग्रह से दृष्टि-सम्बन्ध बनाता है तो **मन्दा अन्यथा तेजी करता है। इस समय गुरु की दृष्टि होने से कदाचित् तेजी की जगह मन्दा भी बना सकता है।** तेलवाना, रुई, कपास, जूट, चांदी, सोना एवं शेयर बाजारों में अच्छी तेजी मन्दी की लाईन बनेगी। बाजार का रुख देखकर काम करें।

१० अक्तूबर को सूर्य चित्रा नक्षत्र में आएगा। इसी दिन (रविवार को) चन्द्रदर्शन भी होगा। सोना, चांदी, रुई, कपास एवं सूत में तेजी रहे। गुड़, खाण्ड, अरहर, गेहूं, चना, तिल, नारियल, सण, केसर, एवं कपूर में तेजी आए।

१४ अक्तूबर को नेपच्यून के मार्गी होने पर राजनीतिक गतिविधि के अनुसार व्यापार प्रभावित होगा। इस समय बाजार के रुख को देख कर काम करें।

१५ अक्तूबर को विशाखा नक्षत्र का बुध रुई में जोरदार मन्दा लाएगा। १६ अक्तूबर को पू.फा. नक्षत्र का शुक्र १४ दिन में गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, उड़द, मूंग, एवं चना में कुछ मन्दे का वातावरण बने। **[१४,१५ अक्तूबर को मन्दे का काम करके लाभ ले सकेंगे।]**

१७ अक्तूबर को सूर्य अपनी नीच राशि तुला में आ जाता है, इस समय नीच शनि एवं गुरु की सूर्य पर दृष्टि भी है। जबसूर्य किसी क्रूर ग्रह से मेल करता है या दृष्टि सम्बन्ध बनाता है तो जोरदार तेजी करता है। सूर्य का विशेष प्रभाव रुई, एरण्ड, अलसी, मूंगफली, सोयाबीन, सूरजमुखी, बिनौला, सब प्रकार के अनाज, हल्दी, सोना, चांदी, एवं शेर बाजारों पर विशेष रूप से होता है। **वायदा एवं हाजर दोनों प्रकार के बाजार प्रभावित होंगे। हमारे विचार से रुई एवं चांदी में मन्दा बने। गेहूं, जौ, चना, अलसी, सोना, तांबा, लाल चन्दन, सुपारी में तेजी बनेगी, तिलहन** एवं शेयर बाजारों में जोरदार उठापटक होगी।

१९ अक्तूबर को वक्री गुरु अश्विनी २ में आएगा। रुई में तेजी, सोना चांदी में घटाबढ़ी, चलकर मन्दी तथा अनाजों में भी मन्दा बने। [१९ से २२ अक्तूबर तक बाजार नर्म रहेंगे।]

२३ अक्तूबर को बुध वृश्चिक राशि में आएगा। घी,तेल, सरसों, रुई एवं चांदी तेज रहे। अनाजों में सामान्यतया मन्दे का वातावरण बने। ध्यान दें- मंगल की राशि में बुध तेजीकारक ही माना गया है। इस समय बाजारों में मन्दे का व्यापार करने वाले हानि में रहेंगे। २६ अक्तूबर को पू.ग. नक्षत्र का मंगल सोना, चांदी, चावल, उड़द, घी, दूध, तिल,तेल, सरसों, मूंगफली एवं अन्य तिलहनों में तेजी करेगा। गेहूं आदि अनाज मन्दे रहेंगे।

२७ अक्तूबर को अनुराधा नक्षत्र का [illegible] सूत, सण, रुई, सोना, चांदी में मन्दा करे, अनाज का भाव एक सा रहे। ३० अक्तूबर को शुक्र उ.फा. नक्षत्र में आएगा। १२ दिन में गेहूं आदि मोटे अनाज, दालवाना एवं रुई में तेजी आए। सोना चाँदी में घटाबढ़ी चले।

नवम्बर

३ नवम्बर को कन्या राशि में शुक्र का प्रवेश होगा। कन्या राशि में शुक्र नीच माना गया है। शुक्र व्यापारियों की विशेष खरीदो फरोखत की भावना को बनाता है। सफेद चीजों से शुक्र का सम्बन्ध अधिक माना गया है। रुई, चांदी, सूत, कपास, चावल आदि पर एवं खुशबूदार चीजों पर इसका प्रभाव अधिक देखा गया है इस समय तेजो या मन्दी की अच्छी लाईन बन सकती है। इस समय व्यापारी प्रत्यक्ष मिलकर ताजा मशबरा हासिल करें तो ठीक रहेगा। नोट करें;- शुक्र अकेला ही कभी कभी जोरदार मन्दे की लाईन बना देता है। अतः बाजार के रुख को देखकर काम करें। साधारण तौर से चांदी में घटाबढ़ी होकर तेजी, गेहूं आदि सारे अनाज, गुड़, खाण्ड, घास व ऊनी-रेशमी वस्त्रों में तेजी हो। इस समय चावलों में विशेष तेजी का झटका आ सकता है।

४ नवम्बर को वक्री शनि भरणी नक्षत्र के दूसरे चरण में दाखिल होगा। कपास, गुड़, खाण्ड, घी, तेल में तेजी का ही रुख रहे। **५ नवम्बर को बुध वक्री होगा। ध्यान दें;- इस समय शनि एवं गुऊ पहिले से ही वक्री चल रहे हैं- बहुत सूझबूझ से काम करें।** २४ दिन में घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी करे। क्योंकि मंगल की राशि का बुध तेजीकारक ही माना गया है अतः इस समय तेल, गुड़ खाण्ड, घी, तिल, सरसों, तारामीरा, सूरजमुखी, मूंगफली, सोयाबीन एवं चांदी-

सोना एवं दालवाना के व्यापारी अच्छी तेजी से लाभ प्राप्त करें।

६नवम्बर को विशाखा नक्षत्र का सूर्य जो, चावल, गेहूं, मसूर, गुड़, खाण्ड, रुई, सूत, सरसों, तिल, एरण्ड, अफीम, में तेजी का संकेत देता है। इस समय अलसी- चांदी, में घटाबढ़ी होकर तेजी बने। **७ नवम्बर को बुध पश्चिम में अस्त हो रहा है, ध्यान दें- इस समय बुध वक्र भी है। रुई में झटके के साथ अच्छी मन्दी बने। चांदी तेज रहे, पाट, हैसियन एवं शेयर मन्दे रहें। क्योंकि बुध वक्री है अतः अनाज, दालवाना में तेजी का रुख रहेगा ।**

१२ नवम्बर को वक्री बुध विशाखा में आएगा। इसी दिन शुक्र हस्त में दाखिल होगा। इस वक्त सूर्य भी हस्त नक्षत्र में ही चल रहा है। रुई में विशेष मन्दे का झटका आए, अनाजों में तेजी मन्दें के रिएक्शन आएं । विशेषतः चावल मन्दे रहें। सोना-चांदी कुछ तेज रहें। खाण्ड, गुड़, शक्कर में घटाबढ़ी चले। **नोट**-यदि इस समय अनाजों में अच्छा मन्दा हो तो स्टाक करें, आगे लाभ मिलेगा।

१३ नवम्बर को उ.षा. नक्षत्र का मंगल, **रुई में विशेष तेजी** का संकेत देता है, धान, घी, सरसों आदि तिलहन एवं उड़द, गुड़ खाण्ड में भी तेजी ही रहेगी ।

१४ नवम्बर को वक्री गुरु अश्विनी के प्रथम चरण में आएगा, इस समय गुरु के साथ नीच-शनि का सम्बन्ध है। रुई में तेजी, सोना-चांदी में घटाबढ़ी के बाद मन्दी तथा अनाज में भी मन्दा रहे।

१५ नवम्बर को बुध वक्री पोजीशन से फिर तुला राशि में आ जाता है और इस दिन सूर्य बुध की अंशात्मक-युति भी हो रही है। नोट करें कि तुला राशि में बुध वक्री हैं, इस समय शनि गुरु की पूरी नजर बुध पर है और शनि-गुरु भी वक्र ही हैं। लाभ का उत्तम चांस है। रुई, गुड़, खाण्ड, सोना, में अच्छी तेजी बने। चांदी, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली आदि में यदि मन्दा होगा तो बहुत अधिक मन्दा होगा, अगर तेजी का रुख बना तो जोरदार तेजी बनेगी। हमारे विचार से यह समय तेजी का ही है। आगे बाजार के रुख को देखकर काम करें।

१६ नवम्बर को वृश्चिक राशि का सूर्य रुई, तांबा, चांदी, सोना, ऊन में तेजी करें। लाल रंग की चीजों में कुछ मन्दे का प्रभाव बने। **१८ नवम्बर को मकर राशि में मंगल आकर नीच शनि को देखेगा एवं शनि भी विशेष नजर से मंगल को देखेगा। मकर राशि में केतु पहिले से ही स्थित है। मकर राशि में मंगल उच्च माना जाता है। मंगल-राहु का समसप्तक योग भी है । यह योग जबरदस्त तेजी का है। आगे तेजी की लम्बी लाईन बनेगी, -नोट कर लें।** रुई, कपास , गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी, पाट, बारदाना के बाजारों में जोरदार तेजी चलने लगेगी। इस समय घी, तेल, अलसी, सरसों, बिनौला, सूरजमुखी, एरण्ड, सोयाबीन मूंगफली आदि तिलहन एवं ऊन में तेजी। अनाजों व दालवाना में सामान्यतः तेजी मन्दी के रिएक्शन आएं।

१९ नवम्बर को अनुराधा नक्षत्र का सूर्य १४ दिन में जौ, चना आदि धान्यों, ऊन तथा सोना चांदी आदि धातुओं में तेजी करेगा। गेहूं, अलसी, मिर्च में तेजी होकर मन्दी हो। २१ नवम्बर को पुष्य नक्षत्र का राहु लोहा, एवं तिलहन में तेजी कर सकता है ।

२४ नवम्बर को शुक्र चित्रा नक्षत्र में एवं बुध पूर्व में उदय होगा। रुई में पहिले मन्दा आकर २५दिन के अन्दर बाद में झटके के साथ तेजी आएगी। गेहूं, जौ, चना, तिल, घी, पाट, बारदाना एवं लाल मिर्च में तेजी बनेगी ।

२५ नवम्बर को बुध मार्गी होकर वायदा एवं हाजर बाजारों की लाईन को बदल सकता है। रुई में पहले मन्दी, बाद में तेजी, चांदी में घटाबढ़ी, गेहूं, जौ, चना, अनाज तेज रहें। रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूंगफली, कपूर, चन्दन एवं अगर आदि सुगन्धित चीजों में मन्दा ।

३० नवम्बर को शुक्र तुला राशि में आकर (आगे ५ दिसं. तक) बुध के साथ मेल रखेगा। इस समय बुध-शुक्र पर शनि- गुरु की दृष्टि है। जब शुक्र बुध के साथ मेल करता है तो पहिले चली आ रही तेजी-मन्दी की लाईन को और जोरदार बनाता है, इसलिए व्यापारी बाजार के रुख को देखकर ही काम करें। तुला राशि फोरने ऐक्सचेंज की राशि है, सरकार द्वारा किसी चीज के निर्यात की घोषणा से तेजी बनेगी। इस समय सरकार की नीति व घोषणा को ध्यान में रखना जरुरी है। हमारे विचार से रुई, चांदी और अफीम में पहले तेजी, पीछे मन्दी आती है। सोना में तेजी, चांदी में २/३ रुपये की घटाबढ़ी तथा गुड़खाण्ड में तेजी का वातावरण रहे- इस समय रुई, चावल चांदी, कपास व ऊनी वस्त्रों के व्यापारी तेजी से लाभ ले सकेंगे- ऐसा विचार है फिर भी बाजार के रुख को नजरंदाज न करें।

दिसम्बर

मासारम्भ में मंगल श्रवण नक्षत्र के प्रथम चरण में आयेगा, केतु भी इस समय मंगल के साथ बैठा है और श्रवण के प्रथम चरण में ही है। मंगल केतु पर शनि- गुरु की दृष्टि है।- इस समय गेहूं में भारी तेजी आवेगी, जौ, चना, तिल, अफीम, धातु सोना चांदी भी तेज रहेंगे। रुई में घटाबढ़ी चलेगी।

३ दिसम्बर को सूर्य ज्येष्ठा में आएगा। इस समय सोना-चांदी, चावल, गेहूं, जौ, चना,

अलसी, सरसों, एरण्ड, हींग, गुग्गल, पारा, गुड़, खाण्ड में तेजी करे। रुई में पहले मन्दी, बाद में तेजी। ४ दिसम्बर को मंगल केतु की अंशात्मक युति होगी- यह युति वायदा बाजार में तेजी रहने का संकेत देती है ।

६दिसम्बर को बुध वृश्चिक में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। बुध-सूर्य, दोनों का एक साथ होना तेजी का इशारा करता है। घी, तेल, सरसों, रुई, चांदी, तेज, सोने का भाव सामान्य रहे।

विशेष नोट— बुध के वृश्चिक राशि में आने पर यहां मंगल अतिचारी हो रहा है;मंगल लगभग तीन वर्ष बाद अतिचारी होता है। मंगल का अतिचारी होना जरनवरी (२०००ई०) के मध्य तक जोरदार तेजी के बाजार बन जाने का संकेत देता है। व्यापारी सावधानी से काम करें। तिलवाना, रुई, कपास, जूट, चांदी, सोना एवं शेयर बाजारों में जोरदार तेजी बन सकती है । इस समय ताजा मशबरा प्राप्त करें।

८ दिसम्बर को बुध अनुराधा में आकर सूत सण, रुई, सोना, चांदी में मन्दा करे। ९ दिसम्बर को गुरुवारी चन्द्रदर्शन होने से रुई, सूत तथा सूती-रेशमी वस्त्र, सरसों, तेल, घी तेज हों। सोना चांदी खाण्ड, गुड़ में भी कुछ तेजी रहे। ११ दिसम्बर को यूरेनस श्रवण ४ में तेजी के व्यापार को बढ़ावा देगा।

१६ दिसम्बर को सूर्य धनु राशि में आने पर रुई, कपास, सूत, तिल, तेल, सोना चांदी आदि में तेजी आए। १७ दिसम्बर को विशाखा नक्षत्र का शुक्र १५ दिनों में रुई व अनाजों में मन्दा करें। १८ दिसम्बर को मंगल धनिष्ठा एवं बुध ज्येष्ठा नक्षत्र में प्रवेश करेगा। राई जौ, सोना, चांदी, तांबा, पीतल, जस्ता, लोहा, तेज हों । घी, गुड़, खाण्ड, चावल में भी तेजी का ही माहौल रहे।

२० दिसम्बर को गुरु के मार्गी हो जाने पर बाजारों का रुख अचानक बदल सकता है, सावधान रहें। रुई मन्दी होकर फिर तेज हो, चांदी मन्दी, ८ दिन में चावल, अलसी, सरसों, गुड़ में तेजी बने। **ध्यान दें:-** तेल, तिलहन के बाजारों में अचानक मन्दा आ सकता है । २१ दिसम्बर को बुध पूर्व में अस्त होगा। अनाज, घी, आदि मन्दे, रुई में घटाबढ़ी, पहले तेज, बीच में मन्दी अन्त में फिर तेज हो। सोना में घटाबढ़ी रहे।

२६ दिसम्बर को शुक्र वृश्चिक राशि में आकर रुई, चांदी, शेयरों में पहले मन्दा आकर बाद में तेजी हो। गुड़ में घटाबढी हो। गेहूं, जौ, उड़द, मंग, मोठ, बाजरा आदि अनाजों में तेजी हो।

२७ दिसम्बर को मंगल कुम्भ राशि में आएगा। इस समय मंगल अतिचारी भी है । ठीक इसी दिन बुध मूल नक्षत्र एवं धनु राशि में आएगा और वक्री शनि भरणी के प्रथम चरण में दाखिल होगा। रूई-चांदी में काफी घटाबढ़ी होगी। गेहूं आदि अनाज, दालवाना, घी, गुड़, खाण्ड, सोना में तेजी बनेगी। नोट करें- यहाँ धनु राशि का बुध सूर्य के साथ है, लेकिन इन पर गुरु की नजर होने से रुई-कपास-सूत और चांदी में अच्छा मंदा आ सकता है ।

२८ दिसम्बर को अनुराधा नक्षत्र का शुक्र एवं २९ को पू.षा. नक्षत्र का सूर्य है तिल,तेल, सरसों, बिनौला, गुड़, खाण्ड, हल्दी, चांदी में तेजी रहे। चावल-नमक में कुछ मन्दे का रुख रहे।

जनवरी (सन् 2000 ई०)

[इससे पहले कि हम तेजी मन्दी लिखें, तमाम व्यापारी वर्ग को नव वर्ष में व्यापारिक तरक्की की शुभकामनाएं दे देना चाहेंगे । नववर्ष आपके लिए खुशहाली लेकर आए—यही भगवान् से प्रार्थना है ।]

४ जनवरी को मंगल शतभिषा में एवं बुध पू.षा. में आएगा । मंगल जनवरी के तीसरे सप्ताह तक अतिचारी चलेगा । अनाज एवं दालवाना में मन्दा आए, रुई, सोना, चांदी में पहले काफी मन्दा आकर तेजी आए। बिनौला में तेजी रहे।

८ जनवरी को मकर में चन्द्र के समय शनिवार के दिन चन्द्रदर्शन होगा।— अनाज एवं, तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, घी, में जोरदार तेजी बनने का योग है। ११ जनवरी को उ.षा. नक्षत्र का सूर्य उड़द, मूंग, चावल, चना, गेहूं, गुड़ खाण्ड, शक्कर, कपास, सरसों मूंग, पाट, बारदाना में तेजी करे।

१२ जनवरी को शनि के मार्गी होने पर बाजारों का रुख अचानक बदल सकता है। रुई में मन्दी होकर तेज हो, दो महीने के अन्दर तिल, तेल, सरसों, हींग,मिर्च तेज हों। १३ जनवरी को उ.षा. नक्षत्र का बुध अनाजों में मंदा करे।

१४ जनवरी को मकर राशि में सूर्य एवं १५ जनवरी को बुध भी मकर राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। इस समय सूर्य बुध केतु पर शनि-राहु की दृष्टि है । इस समय वायदा और हाजर बाजारों में जोरदार तेजी से लाभ मिलेगा। घी, तेल, अलसी, सरसों-विनौला, सूरजमुखी, मूंगफली आदि तिलहन, गुड़ , शक्कर, खाण्ड, घी, रुई एवं सोना चांदी में अच्छी तेजी की संभावना है।

१६ जनवरी को सूर्य-बुध की अंशात्मक युति का प्रभाव भी तेजी कारक ही रहेगा। **[वायदा व्यापारी या दैनिक तेजी मन्दी लगाने वाले व्यापारी १४/१५/१६ को तेजी लगाकर लाभ ले सकेंगे ।]** २९ जनवरी को शुक्र मूल नक्षत्र एवं धनु राशि में दाखिल होगा। गेहूं जौ, चना

आदि अनाज, चांदी, सोना, तांबा, आदि धातु एवं शेयर बाजारों में तेजी आएगी। रुई, सूत-कपास में पहले मन्दी होकर पीछे तेजी आए ।

२१जनवरी को मंगल पू.भा. में बुध एवं नेपच्यून श्रवण में दाखिल होंगे । इस समय मंगल अतिचारी है। तिल, तेल, मूंगफली, एरण्ड, अलसी, नारियल, सुपारी, रुई, सूत, कपास, सोना चांदी, गुड़ घी, खाण्ड, चना चावल में जोरदार तेजी से लाभ मिलेगा । २३ जनवरी को पुष्य नक्षत्र का राहु तेल, तिलहन एवं लौह निर्मित -मशीनरी आदि में तेजी करेगा ।

२४ जनवरी को श्रवण नक्षत्र का सूर्य एवं प्लूटो की युति का प्रभाव तेजीकारक ही रहेगा । गेहूं, जौ, चावल, रुई, सूत, सण, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, अलसी, सुपारी, एवं लौंग तेजी हो। २५ जनवरी को गुरु अश्विनी २ में एवं २७ जनवरी को शनि भरणी २ में प्रवेश करेगा। कपास-गुड़, खाण्ड, घी, तेल एवं रुई में तेजी बनेगी। सोना-चांदी में घटाबढ़ी के बाद मन्दा ही रहेगा। इस समय दालवाना आदि अनाज भी मन्दे रहें ।

२८ जनवरी को धनिष्ठा नक्षत्र में बुध के आने पर चावल, स्वांक, में तेजी, सोना-चांदी में मन्दा, रुई में घटाबढ़ी आए। ३०जनवरी को पू.षा. नक्षत्र का शुक्र १३ दिन में मूंग, मोठ, उड़द , तिल, तेल, सरसों व नमक आदि खारे पदार्थों में मंदी करेगा ।

[२१ एवं २४ जनवरी को दैनिक तेजी लगाकर लाभ लें।]

फरवरी (सन् २०००ई०)

१फरवरी को बुध कुम्भ राशि में आकर अलसी, रुई, चांदी में मन्दी होकर कुछ तेजी बने। घी, तेल, रस गुड़-खाण्ड में भी तेजी ही रहे ।

३ फरवरी को मंगल मीन राशि में आकर सोना, रुई, फर्नीचर, में अच्छी तेजी आएगी। चांदी मे पहले मन्दो फिर तेजी बने। मीन राशि में मंगल को मूल रूप से मन्दे का ही मानते हैं। ध्यान दें:- मंगल के अतिचारी रहते (२१जनवरी के लगभग तक) जिन चीजों में तेजी आई थी, उनमें इस समय मन्दा आ सकता है। — सावधानी से काम करें।

५फरवरी को शतभिषा नक्षत्र का बुध चांदी सोना में मन्दा एवं अनाजों में तेजी का वातावरण-बनायेगा। ६ फरवरी को धनिष्ठा नक्षत्र का सूर्य [illegible] सोना, चांदी, मोती-मणि आदि जवाहरात मूंग-मसूर गेहूं आदि अनाजों व अलसी रुई में तेजी करेगा रुई व शेयरोंमें १५ दिन में अच्छा मन्दा आए ।

७ फरवरी को सोमवारी चन्द्र दर्शन से रुई. जूट शेयर बाजारों में पहले मन्दी फिर तेजी बने। चन्द्र दर्शन कुम्भ राशि में होने से दाल वाले अनाज, राजमाष, मूंग, मोठ, उड़द, चना, अरहर, मसूर में तेजी रहेगी।

८ फरवरी को मंगल उ.भा. में आएगा। एक मास में देवदारु, चन्दन, कपूर आदि सुगन्धित पदार्थ, सोना, चांदी, रुई, गेहूं, जौ, चना में तेजी हो।

१० फरवरी को उ.षा. नक्षत्र का शुक्र गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी, अलसी, एवं एरण्ड में मन्द्र का संकेत देता है । अनाज तेज हों, रुई में घटाबढी होकर तेजी हो ।

१०फरवरी को उ.षा. नक्षत्र का शुक्र गुड़ खाण्ड,सोना , चांदी, अलसी एवं एरण्ड में मन्दे का संकेत देता है। अनाज तेज हों, रुई में घटाबढ़ी होकर तेजी हो।

१२ फरव...को यूरेनस धनिष्ठा नक्षत्र में आकर राजनीतिक-घोषणा से व्यापार में अचानक उलट फेर करे, या जलवायु के परिवर्तन से बाजारों का रुख बदले। राई, जौ, गेहूं , मोठ, चना, चावल, मूंग , उड़द, मसूर , बाजरा, ज्वारा में तेजी का वातावरण रहे।

१३ फरवरी को सूर्य कुम्भ राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा, इसी दिन शुक्र मकर राशि में आकर केतु के साथ मेल करेगा। इस समय शनि की शुक्र एवं केतु पर विशेष दृष्टि है । यह चांस वायदा एवं हाजर व्यापार में तेजी का है। घी, तेल, नमक, सरसों, मूंगफली, सोयाबीन , सूरजमुखी, बिनौला, गुड़, खाण्ड, घी, एवं अनाजों में अच्छी तेजी संभावित है। रुई और चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी । लाल मिर्च में अच्छी तेजी बने।

१५ फरवरी को पू.भा. नक्षत्र में बुध का संचार होने से सोना, चांदी , तांबा, लोहा, तथा अनाजों में मन्दा, रुई में घटाबढ़ी रहे। १७ फरवरी को गुरु के अश्विनी नक्षत्र के तीसरे चरण में आने पर रुई में तेजी, सोना, चांदी में घटाबढ़ी चलकर मन्दी तथा अनाजों में भ मन्दा बने। १९ फरवरी को सूर्य शतभिषा नक्षत्र में दाखिल होगा। १४ दिन के अन्दर सोना, चांदी, सूत, सण, कपड़ा, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों आदि तिलहन, हींग, जायफल, दाख, छुहारा, सोंठ हल्दी, गेहूं एवं गुड़ का भाव तेज हो। २० फरवरी को शुक्र केतु की अंशयुति भी तेजी का संकेत देती है ।

२१फरवरी को बुध वक्री होगा, इसीदिन शुक्र श्रवण में जाएगा एवं बुध पश्चिम मेंअस्त होगा। घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, में कुछ तेजी रहे, गेहूं, जौ, चना, मूंगा, मोठ, उड़द आदि अनाज मन्दे हों। रुई में झटके के साथ अच्छा मन्दा जल्दी ही आने का योग है । इस समय पाट, बारदाना एवं शेयर बाजार मन्दे रहेंगे। फिर भी बाजार का रुख देख कर काम करें।

२५ फरवरी को मंगल के रेवती नक्षत्र में आने से गेहूं, चना, मूंग, मोठ, जौ, ज्वार, बाजरा,

मन्दा रहे। इस समय चांदी में खास तेजी आए, ऐसा विचार है। सोना कुछ मन्दा, रुई में घटाबढ़ी होकर बाद में तेजी हो। मासांत में बुध, वक्री-पोजीशन में शतभिषा नक्षत्र में दाखिल होगा। इस समय चांदी सोने में मन्दा अनाजों में कुछ तेजी का ही वातावरण रहे।

मार्च (सन् २०००ई.)

१मार्च को सूर्य-बुध की अंशात्मक युति हो रही है। सूर्य-बुध दोनों एक साथ कुम्भ राशि में चल रहे हैं। बुध वक्री एवं अस्त है। इस समय वायदा और हाजर बाजारों में जोरदार उथल पुथल होगी- बाजार के रुख को ध्यान में रखते हुए काम करें। रुई, कपास, एरण्ड, अलसी, मूंगफली, तेल, अनाज, सोना, चांदी, हल्दी, लाल मिर्च, कौफी, चायपत्ती, एवं शेयर बाजारों में झटके के साथ तेजी आने की उम्मीद है। हमारा यह अनुभव है कि जब बुध **वक्री होकर सूर्य के साथ अंशात्मक युति करता है, तो तिलहन बाजारों में विशेषरूप से घटाबढ़ी हुआ करती है । अफवाहों से बाजारों में जोरदार तेजी -मन्दी के झटके आया करते हैं। इसलिए सावधानी से काम करके उत्तम लाभ प्राप्त किया जा सकेगा।**

३ मार्च को शुक्र धनिष्ठा नक्षत्र में आकर चावल, मूंग, मोठ, उड़द, ज्वार, बाजरा, चांदी, सोना, रुई, कपास में तेजी और गेहूं में मन्दा करे। ४ मार्च को पू.भा. नक्षत्र का सूर्य भी व्यापारिक वस्तुओं में तेजी का ही संकेत देता है। १४ दिन के अन्दर रेशम, सोना, चांदी, गेहूं, चना, उड़द, चावल, ज्वार, बाजरा, घी, सरसों, तिल, तेल, गुड़ खाण्ड, गुग्गल एवं रुई में तेजी रहे।

७ मार्च को मंगलवारी चन्द्रदर्शन होने से अनाजों में व अन्य वायदा व्यापारिक चीजों में तेजी का रुख रहे। रुई पहले मन्दी बाद में तेज, सोना चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी हो। गुड़, सरसों एवं मूंगफली में तेजी रहे। ७ मार्च को गुरु अश्विनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में प्रवेश करेगा। रुई में मन्दी के बाद तेजी बने।

८ मार्च को शुक्र कुम्भ राशि में आकर बुध-सूर्य के साथ मेल करेगा। इस प्रकार कुम्भ राशि में इन तीन ग्रहों की उपस्थिति वायदा एवं हाजर बाजारों में जोरदार तेजी करेगी- ऐसा विचार है। ध्यान दें:- इस दिन बुध पूर्व में उदय भी हो रहा है। चांदी, गुड़, खाण्ड, गेहूं, चना, जौ, मूंग, ज्वार, बाजरा, रुई, तथा सफदे चीजों में मन्दा बने। ध्यान दें- रुई में मन्दा आने के बाद जोरदार तेजी भी आ सकती है। १३ मार्च का शुक्र शतभिषा में आकर गेहूं, गुड़, खाण्ड, चावल, घी, सरसों, रुई, सोना चांदी में तेजी बने।

१४ मार्च को सूर्य मीन में दाखिल होगा। इसी दिन मंगल अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में आ रहा है और बुध मार्गी हो रहा है। ध्यान दें, शनि मंगल गुरु ये तीनों मेष राशि में इकट्ठे हो गए हैं- अच्छा लाभ का चांस है। खाण्ड, गुड़ शक्कर, सोना में तेजी बने । प्रत्येक अनाजों में पहले कुछ तेजी, बाद में मन्दी, की तरफ झुकाव रहे। चांदी में झटके के साथ मन्दा आए। इस समय रुई, कपास , बारदाना, में भी तेजी रहे। तिल, तेल , अलसी, सरसों बिनौला, मूंगफली में तेजी मन्दे के झटके आएं, बाजार के रुख को देख कर काम करें।

१५ मार्च को बुध-शुक्र की अंशात्पक युति होगी एवं प्लूटो वक्री भी हो रहा है। तेल, तिलहन, खल-बिनौला, खल-सरसों, रुई, कपास में जोरदार तेजी या मन्दा बनेगा, वायदा व्यापारी उत्तम लाभ ले सकेंगे । हमारे विचार से तेजी संभव है। १६ मार्च को शनि भरणी नक्षत्र के तीसरे चरण मेंऔर १७ मार्च को सूर्य उ.भा. में दाखल होगा। १५ दिन में चावल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं एवं तेल तेज हों। इस समय कपास, घी, में भी तेजी बनेगी ।

२३ मार्च को गुरु भरणी के प्रथम चरण में आकर चांदी सोना आदि धातु, हीरा-मणि आदि जवाहरात अलसी, चावल, जौ, गेहूं ,तिल, उड़द, मूंग, तूअर, मोठ, चना, लाख, ऊन व चमड़े में मन्दा करे । २४ मार्च को पू.भा. में शुक्र आएगा । रुई में तेजी एवं अनाजों में मन्दी बने। २६ मार्च को राहु पुष्य के प्रथम चरण में आकर लोहा एवं तिलहनों में तेजी करे।

३० मार्च को रेवती नक्षत्र का सूर्य एवं ३१ मार्च को पू.भा. नक्षत्र का बुध अलसी, सरसो, एरण्ड, मूंगफली, लहसुन, मोती, लाख, सज्जी, रुई, गेहूं, जौ, चना एवं चावल में तेजी का संकेत देता है। सोना चांदी, तांबा लोहा आदि धातुओं में कुछ मन्दा रहे।

सज्जनो ! हमने ग्रहचाल को पूरी तरह जाँच कर तेजी-मन्दी के रुख का बेरवा दिया है, फिर भी ग्रहचालवश यदि किसी प्रकार से आपको व्यापार में हानि होती है, तो हम उसके लिए उत्तरदायी न होंगे। वैसे हमारी प्रभु से प्रार्थनाहै, कि आपको व्यापार में उत्तम लाभ हो।

पं० इन्दु शेखर शर्मा शास्त्री, ज्यौतिषाचार्य, एम. ए.,
मार्त्तण्ड भवन, मु०पो०कुराली (रोपड़) पंजाब,
पिन-140 103 फोन: 01888-33277

यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र साधना के लिए महत्त्वपूर्ण काल

(१ जनवरी सन् १९९९ ई. से ४ अप्रैल सन् २००० ई. तक)

जप एवं यन्त्र-मन्त्र आदि की साधना के लिए शास्त्रों द्वारा बारह सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल तथा सूर्य-चन्द्र के क्रान्तिसाम्य (महापात) के काल को ठीक सूर्य-चन्द्र ग्रहण के समान ही महत्त्वपूर्ण माना गया है। संहिता और ज्योतिष ग्रन्थों में इस विषय में अनेक वचन उपलब्ध हैं। क्रान्तिसाम्य को तन्त्रादि की सिद्धि के लिए ऋषियों ने स्पष्ट रूप से फलप्रद माना है। आचार्य भास्कर ने भी **'सिद्धान्तशिरोमणि'** में कहा है कि-यदि क्रान्तिसाम्य के समय जप, अनुष्ठानादि किया जाए तो उसकी वृद्धि होती है-**''पातस्थितिकालान्तर्गतमंगलकृत्यं न शस्यते तज्ज्ञैः। स्नान-जप-होमदानादिकमत्रोपैति खलु वृद्धिम्।''** यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रों की साधना में विशेष रूचि रखने वाले पाठकों के लिए हम नीचे १ जनवरी १९९९ ई.से ४ अप्रैल सन् २००० ई.तक की सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल तथा क्रान्तिसाम्य के प्रारंभ और समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.) दे रहे हैं। इन कालों में यंत्र-तंत्रों के निर्माण से एवं मंत्रजाप से वे अभीष्ट सिद्धि प्राप्त कर सकेंगे।

इस वर्ष ११ अग. '९९ को सूर्यग्रहण भी होगा, जिसका विवरण अन्यत्र दिया गया है। इस ग्रहण के पर्वकाल को भी साधकों को उपयोग में लाना चाहिए। सायन संक्रान्तिपुण्यकाल, क्रान्तिसाम्य और सूर्य-ग्रहण के अलावा मन्त्रादि साधना के लिए अर्धोदय, महोदय, महामहावारुणी पर्व, महावारुणी पर्व, वारुणी पर्व और षडशीतिमुख पुण्यकाल भी महत्त्वपूर्ण माने गये हैं। षडशीतिमुख पुण्यकाल प्रतिवर्ष चार बार घटित होता है, जबकि शेष अर्धोदय आदि योग कभी-कभी आते हैं। इस वर्ष इन योगों में से महोदय एवं वारुणी पर्व ही घटित हुए हैं।

सावधान- यंत्र-मंत्र- तंत्रों के प्रयोग को प्रभावशाली रूप में सद्यः फलप्रद बनाने के लिए शास्त्रविहित काल में साधना कीजिए,अन्यथा आगमशास्त्र पर साधक की निराधार अनास्था होने की पूर्ण आशंका है।

सायन संक्रान्ति पुण्यकाल (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
तारीख	घं.	मि.	तारीख	घं.	मि.
(सन् १९९९ ई०)					
२० जन.	१२	०७	२१ जन.	००	०७
१९ फर.	०२	१७	१९ फर.	१४	१७
२१ मार्च	१	१६	२१ मार्च	१३	१६
२० अप्रैल	१२	१७	२१ अप्रैल	०	१७
२१ मई	११	२२	२१ मई	२३	२२
२१ जून	१९	१९	२२ जून	७	१९
२३ जुला.	६	१४	२३ जुला.	१८	१४
२३ अग.	१३	२१	२४ अग.	१	२१
२३ सित.	११	०१	२३ सित.	२३	०१
२३ अक्टू.	२०	२२	२४ अक्टू.	८	२२
२२ नव.	१७	५५	२३ नव.	५	५५
२२ दिस.	७	२१	२२ दिस.	१९	२१
सन् २००० ई०					
२० जन.	१७	५३	२१ जन.	५	५३
१९ फर.	८	०३	१९ फर.	२०	०३
२० मार्च	७	०५	२० मार्च	२०	०५

निरयण संक्रान्ति पुण्यकाल

सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल की भान्ति निरयण संक्रान्ति के पुण्यकाल में भी यंत्र-मंत्रादि की साधना की जा सकती है, लेकिन सायन संक्रान्तियों का पुण्यकाल इसके लिए विशेष महत्त्व रखता है।

क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ और समाप्ति काल (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
तारीख	घं.	मि.	तारीख	घं.	मि.
(सन् १९९९ ई०)					
२७ जन.	२२	५२	२८ जन.	१४	३८
०९ फर.	०८	४८	०९ फर.	१७	२३
२१ फर.	१६	४९	२१ फर.	२२	४१
०६ मार्च	०१	४२	०६ मार्च	०७	४९
१८ मार्च	२२	१२	१९ मार्च	०३	००
३० मार्च	२३	१६	३१ मार्च	०४	५८
१३ अप्रैल	०६	५४	१३ अप्रैल	१२	२६
२४ अप्रैल	२०	२१	२५ अप्रैल	०३	१५
०८ मई	०४	५९	०८ मई	१४	४४
१८ मई	२०	१२	१९ मई	२१	१०
२५ जुला.	०७	२२	२६ जुला.	०७	११
(सन् १९९९ ई०)					
६ अग.	१३	३२	०६ अग.	२१	४६
१८ अग.	१९	१७	१९ अग.	०२	३४
३१ अग.	१६	१०	३१ अग.	२१	३०
१२ सित.	१९	०७	१३ सित.	००	३९
०७ अक्टू.	२१	३३	०८ अक्टू.	०२	५६
२१ अक्टू.	०७	१६	२१ अक्टू.	१३	०४
०१ नवं.	२१	३२	०२ नवं.	०४	२२
१५ नवं.	०२	५३	१५ नवं.	१३	४७
२५ नवं.	०३	४०	२६ नवं.	२३	१६
(सन् २००० ई.)					
१९ जनवरी	०१	२३	१९ जन.	२२	३३
३१ जनवरी	००	२४	३१ जन.	१०	११
१३ फर.	००	४३	१३ फर.	०६	५०
२४ फर.	२१	१८	२५ फर.	०३	०७
०९ मार्च	०३	५२	०९ मार्च	०८	४९
०३ अप्रै.	१०	४५	०३अप्रै.	१५	४८

सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य- सूर्य-चन्द्र की राशियों के अनुसार निर्धारित किया जाने वाला क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ समाप्तिकाल नितान्त स्थूल होता है। यहां दिया गया क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ - समाप्तिकाल महापात गणित द्वारा स्पष्ट किया गया है। विवाहादि मुहूर्तों में इसी सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य के काल को वर्जित किया गया है।

षडशीतिमुख संक्रान्ति पुण्यकाल (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
तारीख	घं.	मि.	तारीख	घं.	मि.
सन् १९९९ ई०					
१० जन.	१२	४०	११ जन.	०	४०
६ अप्रैल	०१	४७	६ अप्रैल	१३	४७
४ जुला.	०५	४०	४ जुला.	१७	४०
१ अक्टू.	१०	५८	१ अक्टू.	२२	५८
सन् २००० ई०					
१० जन.	१८	४९	११ जन.	०६	४९

महोदय पर्व (सन् २००० ई.)

५ फर.	सूर्योदय	५ फर.	१८ ३४

वारुणी पर्व (सन् २००० ई.)

२ अप्रै.	सूर्योदय	२अप्रैल	१५ ३७

यन्त्र मन्त्र तन्त्रों का चमत्कार

इस स्तम्भ के अन्तर्गत अनुभूत 'यन्त्र मन्त्र तन्त्र' गतवर्षों से देते आ रहे हैं। इस स्तम्भ के अन्तर्गत दिए गए मन्त्रों को शुभ मुहूर्त्त में गुरुमुख से प्राप्त करके ग्रहणवेला, क्रान्तिसाम्य या सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल में दृढ़निश्चय पूर्वक अनुष्ठान करके सिद्ध कर लेना चाहिए। **ध्यान रहे**-दीपमाला के समय एवं महाशिवरात्रि की महत्त्वपूर्ण रात्रियों में किंवा उल्लिखित समयावधियों में इन यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रों को सिद्ध करके इनका चमत्कार आप अविलम्ब देख सकेंगे। यन्त्र मन्त्रों के बल पर ही दैवज्ञ अपने वैदुष्य से अक्षुण्ण यश प्राप्त कर सकता है:-**''सिद्धिर्भूषयते विद्याम्।''**

मन्त्र ऐसे दिव्य शब्दों का समूह है, जिससे दृढ़ इच्छाशक्ति पूर्वक उच्चारण एवं मनन से ही हम अलौकिक काम कर सकते हैं। चुने हुए गुप्त शब्द ही मन्त्र हैं। इसमें शब्दों को ऐसा क्रम दिया जाता है कि उनके मौन या अमौन अवस्था में उच्चारण मात्र से शून्य महाकाश में एक विचित्र कम्पन उत्पन्न होता है, जिससे अभीप्सित कार्यसिद्धि एवं रचनात्मक प्रवल प्रच्छन-शक्ति प्राप्त होती है। -**''मननात् त्रायते यस्मात्तस्मात् मन्त्रः प्रकीर्तितः। जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्न संशयः।।''**

मन्त्रशास्त्र के अनुसार वेदमन्त्रों को ब्रह्मा ने शक्ति प्रदान की थी। तान्त्रिक प्रयोगों को भगवान् शिव ने शक्ति सम्पन्न किया। इसी प्रकार कलियुग में शिवावतार श्री शाबरनाथ जी ने शाबरमन्त्रों को अद्भुत शक्ति प्रदान की। शाबरमन्त्र अनमिल बेजोड़ शब्दों का एक समूह होता है, जोकि अर्थहीन मालूम देते हैं, परन्तु भगवान् शंकर जी के प्रताप से ये मन्त्र अवन्ध्य प्रभाव वाले हैं- **''अनमिल आखर अर्थ न जापू। प्रकट प्रभाव महेश प्रतापू॥''** अतः शाबर मन्त्रों को यथावत् उच्चारण करें, किसी प्रकार से इनमें न्यूनाधिकता न करें। **नोट**-मन्त्र का पुरश्चरण गुप्त रूप से करें। प्रकट होने पर पुरश्चरण अर्थहीन हो जाता है यह तन्त्रशास्त्रों का निर्देश है— **''गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः॥''**

विषहर गारुड़ मंत्र प्रयोग

नवरात्रों में १००० (एक हजार बार) मन्त्र जाप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है, सांप, बिच्छु आदि के विष का प्रभाव समाप्त करने में यह रामबाण है।

मन्त्रः '' ॐ क्षिप ॐ कृशानुभार्या स्वाहा। ऊं गरुड़ प्रभंजनय प्रभंजय, प्रमेदय प्रमेदय, वित्रासय वित्रासय, विमर्दय विमर्दय स्वाहा हुं। उग्ररूपधर सर्वविषहर भीषय भीषय, सर्वं दह दह भस्मीकुरु-कुरु स्वाहा। ''

खूनी बादी बवासीर से मुक्ति पाने का मंत्र

मन्त्रः- ''उमती उमती चल चल स्वाहा''

प्रयोग विधि-उल्लिखित मंत्र को २१ बार पढ़कर लाल सूत के धागे में एक गांठ बांध दें। पुनः २१ बार मंत्र जाप करके एक और गांठ लगा दें, तीसरी बार भी २१ बार मन्त्रजाप करके उसी तरह लाल सूत के धागे में एक गांठ लगा दें। इस प्रकार तीन गांठे लग जाने पर उस त्रिग्रथित सूत्र को पैर के अंगूठे में बांधने से बबासीर शीघ्र ही समाप्त हो जाएगी।

तीव्र ज्वर (बुखार) नाशक मन्त्र

यदि तेज ज्वर हो तो पानी से भरे एक गिलास या किटोरी को सामने रखकर निम्नांकित मंत्र को १०८बार या २१ बार पढ़कर रोगी को पिला दें, ज्वर शांत हो जाएगा।

मंत्र- ''ॐ मुं मुकुटेश्वरीभ्यां नमः।''

कर्ण-रोग दूर करने के लिए मंत्र

निम्नांकित मंत्र का प्रतिदिन नियम से६ मास तक जाप करते रहने से कर्ण-रोग दूर हो जाते हैं-

''ॐ द्वां द्वार वासिनीभ्यां नमः।''

. ब्लड़ प्रैशर से मुक्ति

निम्नांकित मन्त्र की प्रातः दो माला करके जल को पी लेना चाहिए यही, मंत्र प्रयोग वायुरोग दूर करने के लिए भी प्रयुक्त किया जाता है;

''ॐ वं वज्रहस्ताभ्यां नमः।''

पीलिया रोग शान्त्यर्थ शाबर मन्त्र

मन्त्र - ''ॐ नमो वीर वेताल इसराल नार कहे तू देव खादी तू बादी, पीलिया कूं मिटाती कारैं, झारै पीलिया रहै न एक निशान जो कहीं रह जाए तो हनुमन्त की आन। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।''

प्रयोग विधि- एक कांसे की कटोरी में तिलों का तेल लेकर रोगी के सिर पर रखें या रोगी अपना मुंह उस तेल में देखता रहे,और कुशा के तिनके से उस तेल को चलाते हुए इस मन्त्र को ११ बार पढ़ें। यही विधान लगातार तीन रोज करें, तेल पीला पड़ जाएगा और रोगी का पीलिया दूर हो जाएगा।

चिन्ताहरण सिद्ध मन्त्र

साधक पूर्णरूप से ब्रह्मचारी रहे, एक समय भोजन करे, भूमि पर शयन करे । इस मंत्र का तन्त्रोक्त विधिपूर्वक नवरात्रों में २१हजार बार जाप करने से सिद्ध हो जाता है। तत्पशचात् प्रतिदिन १०८ बार (एकमाला) इस मंत्र का जाप करते रहने से मनुष्य के सभी मनोरथ पूर्ण होते रहते हैं। इस मंत्र को सर्वकार्यसिद्धिकर चिन्तामणि मंत्र भी कहते हैं।

मन्त्र- ''ऊँ ह्रीं श्रीं भगवति चिन्तामणि सर्वार्थ सिद्धिं देहि देहि स्वाहा ।''

स्वप्नवती मन्त्र

यह महान् चमत्कारी और पूर्ण सिद्ध मन्त्र है। इस मन्त्र का जाप प्रतिदिन एक माला करें, चार वर्षों में मन्त्र सिद्ध होता है। स्वप्न में सर्वकार्यों का ज्ञान होने लग जाता है-

मन्त्र-''ऊँ ह्रीं स्व पुरावाहित कालि स्वप्ने कथयामुकस्यामुकं देहि क्रीं स्वाहा ।''

श्रुतदेवी मन्त्र

नवरात्रों में नौ माला प्रतिदिन करने से सिद्धि प्राप्त होती है। भगवती आपके कान में स्वयं प्रत्येक प्रश्न का उत्तर देने लगती है-

मन्त्र- ''''ऊँ नमो भगवती श्रुतदेवी हंसवाहिनी त्रिकाल-निमित्त प्रकाशिनी, सर्वकार्य प्रकाशिनी सत् भावे, सत् भाषे, असत् का प्रहार करे, ऊँ नमो श्रुत देवी स्वाहा।''''

शीतला मन्त्र

बच्चों पर शीतला माता का प्रकोप होने पर निम्नांकित मंत्र का जाप नौ दिनों तक करें। प्रतिदिन ५ माला करें, बाद में जल का छींटा घर में दें एवं थोड़ा जल बच्चे को पिला दें, शीतला का प्रकोप शान्त हो जाएगा।

मन्त्र -''ऊ ह्रीं श्रीं शीतलायै नमः।''

वशीकरण के लिए शाबर मन्त्र

यह मन्त्र चमत्कारी है, परन्तु पति अपनी पत्नी के लिए, पत्नी अपने पति के लिए प्रयोग में लावें । अनुचित कार्यार्थ या पर स्त्री किंवा पर पुरुष के वशीकरण के लिए इस मन्त्र का प्रयोग हानिकारक रहेगा- यह ध्यान रहे।

मन्त्रः-'' ऊँ मोहिनी माता भूत पिता भूतसिर बेताल उड़ ए काली नागिन.... न लेटे सुख, न सोते सुख। सिन्दूर चढ़ाऊं मंगलवार, कभी न छोड़े हमारा ख्याल, जब तक देखें हमारा मुख, काया तड़प तड़प मर जाए, चलो मंत्र फुरो वाचा दिखाओ रे शब्द अपने गुरु के इलम का तमाशा।''

इस मन्त्र में ....इस प्रकार बिन्दुओं से युक्त खाली छोड़े स्थानों पर उस स्त्री या पुरुषके नाम का उच्चारण करे जिसे वश में करना चाहते हैं।

विधिः-शुक्ल पक्ष की अष्टमी से पूर्णमासी तक एकान्त शान्त कमरे में रात को दस बजे के बाद ऊनी आसन पर बैठकर जल का पात्र अपने पास रखें । धूप दीप जलाकर उल्लिखित मंत्र का जाप प्रारम्भ करें। अपनी प्रेमिका, पत्नी या प्रिय (जिसे अनुकूल बनाना हो, का चित्र सामने रख लें। दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ प्रतिदिन दो घण्टे मंत्र जाप करें। नौ दिन में ही अभीष्ट कार्यसिद्धि होगी।

गृह क्लेश दूर करने के लिए मन्त्र

आजकल ''गृह क्लेश'' एक सर्वव्यापी समस्या है। इस समस्या को हल करने के लिए घर में आपसी प्रेम सद्भाव स्थापित करने के लिए निम्नांकित मन्त्र परमाश्चर्यजनक परिणाम देने वाला है-

''ऊँ दमयन्ती नलाभ्यां तु नमस्कारं करोम्यहम् ।
अभिवादो भवेदत्र कलिदोष-प्रशांतिदः ॥
ऐकमत्यं भवेदेषां ब्राह्मणानां पृथक्-धियाम्।
निर्वैरता च जायेत संवादाग्रे प्रसीद मे ।''

विधि- उत्तराभिमुख होकर रात के ९ बजे के बाद (११-१/२ बजे से पहिले ही) इस मंत्र का अनुष्ठान प्रारम्भ करें। धूप दीप करके प्रतिदिन पांच माला इस मंत्र की ३३ दिन नियमित रूप से करें, तर्पण करें, ब्राह्मण भोजन करवायें, ३३ दिन बाद मंत्र जाप पूर्ण कर प्रातः हवन करें। घर में शान्ति आने लगेगी।

गरीबी से मुक्ति पाने के लिए अनुभूत मन्त्र

''ऊँ क्लीं नन्दादि गोकुल त्राता दाता दारिद्र्यभंजनः।
सर्व मंगल दाता च सर्वकाम प्रदायकः ॥ ''श्री कृष्णाय नमः

विधि- शुभ मुहूर्त में मन्त्रजाप प्रारम्भ करें। प्रतिदिन नियमपूर्वक पांच माला श्री कृष्ण भगवान् का ध्यान करके करें। परिवार की दरिद्रता दूर होगी, ऐश्वर्य एवं वैभव बढ़ेगा- यह अनुभूत है।

चोरभय दूर हो

नीचे लिखे मन्त्र को रात्रि में तीन बार उच्चारण के बाद तीन बार करतल ध्वनि करके सो जाने पर चोर से हानि नहीं होती-

मन्त्र- ''तिस्त्रो भार्याः कफल्लस्य दाहिनी मोहिनी सती।
तासां स्मरणमात्रेण चौरो गच्छति निष्फलः ॥''

जिस घर में रात को इस मंत्र का पाठ होता है , उस घर में यदि चोर आ भी जाए तो चोर को निष्फल ही जाना पड़ता है।

नोट- पण्डित लोग अपने यजमान के लिए गुग्गल-लौंग एवं लोवान को मिलाकर बनाई गई धूप को उल्लिखित मंत्र से अभिमन्त्रित करके चोरादि से रक्षार्थ दे सकते हैं।

गाय या भैंस खूब दूध दे

गाय या भैंस दूध न दे तो निम्नांकित मंत्र को २१ बार मीठे पेड़े परें अभिमंत्रित करके गाय, भैंस को एक सप्ताह खिला दें, वह दूध देने लगेगी।

मन्त्र- ''''ऊं ह्रीं करालिनी पुरुष सुखं मुखं ठः ठः।''''

व्यापार वर्धक यंत्र

बड़ी मेहनत करने पर भी व्यापारी व्यापार में हानि उठाते हैं, ऐसी स्थिति में इस यंत्र को दीपावली की रात्रि में सिद्ध करें और चमत्कार अनुभव करें।

१६	९	४	५
३	६	१५	१०
१३	१२	१	८
२	७	१४	११

इस यन्त्र को रविपुष्य योग में केसर की स्याही से २१०० बार लिखें। बाद में धूप देकर नदी में प्रवाहित कर दें। यन्त्र लेखन के समय पोले वस्त्र धारण करे, घी की ज्योति का प्रकाश करें। यन्त्र लिखते समय ''ॐऐं ह्रीं क्लीं सौं जगत्प्रसूत्यै नमः'' इस मन्त्र का जाप सवा लाख करें। तत्पश्चात् घी, खीर, एवं कमलगट्टा से दशांश हवन, तर्पणादि करें। अनुष्ठान पूर्ण होने तक एक समय भोजन करें एवं भूमि पर शयन करें। निश्चय ही व्यापार में आश्चर्यजनक वृद्धि होगी।

पुत्रदाता यन्त्र

इस यन्त्र को शुभदिन शुभमुहूर्त में गोरोचन, कपूर, केसर एवं कस्तूरी से अनार की कलम से भोजपत्र पर लिखें। यन्त्र की विधिवत् पूजा किंवा प्राणप्रतिष्ठा करके निस्सन्तान स्त्री एवं पुरुष के गले, कमर या बाई भुजा में बांधने से सद्यः सन्तान का सुख प्राप्त होता है ।

यन्त्र

हूं		स्वाहा
	ॐ ह्रींॐ	
वषट्		फट्

मृतवत्सा-दोष शान्ति के लिए अनुभूत प्रयोग

बच्चों का उत्पन्न होकर मर जाना मृतवत्सा दोष या अठारहादि कहलाता है। इसकी शान्ति के लिए अनुभूत विधान लिखते हैं- गर्भवती स्त्री किसी भी कृष्ण पक्ष की रात्रिव्यापिनी अमावस्या को सात स्थानों (कूप, नदी तालाब या नलों) का जल लेकर उसमें सात वृक्षों के हरे पत्ते डाल दें। तदनन्तर श्वेत सरसों को-

''ॐ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके,घन्टा स्वनेन नः पाहि चापज्या निःस्वनेनच। ॐप्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे। भ्रामणेनात्म शूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ॥ सौम्यानि यानिरूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते। यानि चात्यर्थ घोराणि तैरक्षास्मान् तथा भुवम्।''

इस मन्त्र से २१ बार अभिमन्त्रित करके उस जल में छोड़ दें। फिर १ पग रात व्यतीत होने पर ग्राम के बाहर एकान्त स्थान में पति के साथ बदरी वृक्ष (बेरी)के नीचे जायें। उस बेरी को लाल मंगल-सूत्र(मौली परांदा) बांधे और फूल, चावल, रोली, गुड़ चढ़ावे। फिर केवल एक वस्त्र पहनकर उसके नीचे जड़ पर बैठकर वह, अभिमन्त्रित सरसों वाला जल सिर में डालकर स्नान करें। फिर वह स्नान वाला वस्त्र वहीं छोड़ सूखे वस्त्र धारण करके बेरी को चिपट कर कहे कि ''हे बहिन मेरे कष्ट तुम ले लो अपने फल मुझे दे दो। ऐसा कह कर तीन बार बेरी से चिपटे और तीन बार ही बेरी से अलग हो जावें। प्रत्येक बार इस तरह चिपटकर वही उपरोक्त शब्द कहें।

जब स्त्री बेरी को चिपट रही हो तब वहां उपस्थित पति को चाहिए कि उसके शरीर पर टार्च आदि से ऐसे प्रकाश डाले कि जिससे बेरी पर उसकी पत्नी की छाया पड़ जाये पर बेरी की छाया उसके शरीर पर न पड़े ।''

नव ग्रह शान्ति यन्त्र

जिस व्यक्ति को सूर्य अशुभ हो उसे यह यन्त्र १से लिखना प्रारम्भ करना चाहिए । फिर २,३,४,५,६,७,८,९, अंकों को क्रमशः यन्त्र में जो अंक जिस खाने में दर्शाया है तदनुसार लिखें।

चन्द्र नेष्ट होने पर यन्त्र २से प्रारम्भ करें। इसी प्रकार मंगल नेष्ट होने पर ३ से, बुध के लिए ४, गुरु के लिए ५, शुक्र के लिए ६, शनि के लिए ७, राहु के लिए ८ एवं केतु के लिए यन्त्र ९अंक से लिखना शुरु करें। परन्तु जिस खाने में जो अंक दर्शाया गया है, उसी खाने में वो अंक लिखें। यन्त्र में १ अंक वाले कोष्ठक में '' ह्रीरवये नमः''-यह जरुर लिखें। इस यन्त्र को पीपल के ७ पत्तों पर अष्टगन्ध या रक्त -चन्दन से लिखें। तत्पश्चात् यन्त्रों की विधिवत् (जो ग्रह नेष्ट हो उस मन्त्र)से पूजा करके धूप-दीप करके पीपल की जड़ में रख दें। यही विधि लगातार २८ दिन करें, ग्रह-शान्ति अनुभव करेंगे ।

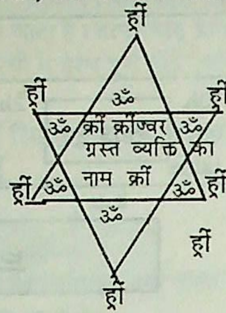
८	१ ह्रींरवये नमः	६
३	५	७
४	९	२
६	१	८
७	५	३
२	९	४

मनोकामना सिद्धयर्थ यन्त्र

सफेद कागज पर केसर, चन्दन, कपूर गंगाजल व खस की स्याही बनाकर अनार की कलम से शुक्ल पक्षे द्वितीया से लिखना प्रारम्भ करें। प्रतिदिन कम से कम २४ बार यन्त्र को

लिखें। आटे की गोलियों में यन्त्र को बन्द करके, एक एक करके नदी में प्रवाहित करें। मुकद्दमे मे विजय, परीक्षा में सफलता, नौकरी मिलना सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं- यह अनुभूत है । ध्यान रहे, जिस उद्देश्य को लेकर यह लिख रहे हैं वह उद्देश्य (मनोकामना)यन्त्र के नीचे जरुर लिखें।

ज्वर शमनार्थ यन्त्र



इस यन्त्र को पान के पत्ते पर लिखकर पूजा करके ज्वरग्रस्त व्यक्ति को खिला दें। शीघ्र ही ज्वर नष्ट हो जाएगा। यह यन्त्र केसर की स्याही या लाल चन्दन से बबूल के कांटे से या अनार की कलम से लिखें।

प्रेत शान्ति यंत्र

ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

इस यन्त्र को खड़िया मिट्टी से नारियल पर लिख कर पुष्पों से यन्त्र की पूजा करें। फिर यन्त्र को ढाक (खदिर) की समिध से अग्नि प्रज्वलित करके जला दें। जलाने से पहले प्रेत -ग्रस्त व्यक्ति के ऊपर से इस यन्त्र को घुमा लेना चाहिए ।

कुछ तान्त्रिक प्रयोग

नागफनी की जड़ को बच्चे के गले में पहिना दें, तो जिगर व तिल्ली का रोग समाप्त हो जाता है ।

विरोधी व्यक्ति आपके पक्ष में हो जाएं-

अपामार्ग (पुठकण्डा) के बीज रविपुष्य योग के समय किसी मीठी चीज़ या पान में डालकर जिस व्यक्ति को खिला दिया जाए वह व्यक्ति आपकी खिलाफत करना छोड़ देगा और आपके पक्ष में हो जाएगा। पति-पत्नी भी आपसी मतभेद दूर करने के लिए इस यन्त्र का प्रयोग कर सकते हैं ।

रविवार में पुष्यनक्षत्र हो तो रवि पुष्य योग होता है।

बिच्छू का विष दूर करने के लिए कुछ टोटके

१. देसी खाण्ड या बूरा पानी में मिलाकर डंक वाली जगह लगाने पर ७-८ मिनट में जहर दूर हो जाएगा।

२. नौसादर को घिस कर डंक पर लगाने से भी आराम मिलता है ।

सर्ववशीकरण तन्त्र

i. "अपामार्गस्य मूलं तु गोरोचनेन पेषयेत् ।
ललाटे तिलकं कृत्वा वशी कुर्याज्जगत्रम्॥"

अपामार्ग (पुठकण्डा) की जड़ को रगड़ कर गोरोचन मिलाकर मस्तक पर तिलक करने से निश्चय ही सबको वश में किया जा सकता है ।

ii. विल्व पत्र को कपिला गाय के दूध में रगड़ को तलक करके कचहरी आदि में जाने पर पूर्ण सफलता मिलती है ।

पानीपत के नगर-प्रशासक श्री सत्यवीर सक्सेना जी के सौजन्य से कुछ औषध प्रयोग दे रहे हैं। प्रयोग से पूर्व अपने चिकित्सक से परामर्श लेना आवश्यक है। यहां तक कि औषध तैय्यार करणार्थ भी चिकित्सक की सलाह लें।

दमा निरोधक बटी

यह औषध बद्रीनाथ के आगे नरनारायण पर्वत पर रहने वाले संन्यासी श्री त्रिगुणानन्द जी से उपलब्ध है-

थूहर की गीली लकड़ी को लेकर उसको बीच में से थोथी कर लें और फिर उसमें २५ लौंग भर दें, ऊपर से चिकनी मिट्टी या आटा से बन्द कर के अंगारों पर सेक कर लौंग बाहर निकाल लें फिर इसमें अढ़ाई तोला जखवार एवं दो तोला हल्दी डालकर महीन करें, पीलू के रस में घोटकर चने के आकार की गोलियां बना लें। नित्य एक गोली प्रातः पानी से लें, दमा पूर्णतया समाप्त हो जाएगा।

आधा सीसी(आधा सिरदर्द शान्त्यर्थ) बटी

सिका हुआ मोर थोथा और सेंधा नमक बराबर मात्रा में लेकर खरल करें, फिर अदरक के रस में घोट कर चने के आकार की गोलियां बना लें। नित्य एक गोली लेने से पुराना सिरदर्द हमेशा के लिए शांत हो जाएगा।

अतिसार से मुक्ति पाएं—

काली मिर्च एक तोला, पीपर एक तोला, जखवार आधा तोला तथा दाड़िम (अनार) की सूखी छाल दो तोला लेकर सबको चूर्ण कर आठ तोला गुड़ में एकरस करके चने के आकार की गोलियां बना कर रख लें, एक दो गोली सेवन करने पर ही अतिसार से मक्ति मिल जाती है । १०/१२ दिन का कोर्स पूर्ण है।

मूर्च्छा निरोधक बटी-

कुछ व्यक्ति अचानक बेहोश हो जाते हैं, उस समय शरीर निर्जीव सा हो जाता है। एतदर्थ ये गोलिया रामबाण हैं। इसके इलावा ये गोलियां बुखार, श्वास रोग, हिचकीं एवं पसलियों का दर्द आदि के लिए भी विशेष प्रभावी हैं।

इलायची दाना, तमालपत्र, तज दाख और छोटी पीपर-प्रत्येक दो दो तोला, शक्कर खारक-चार चार तोला, और आठ तोला शहद में कूट पीस कर घोट कर चने के आकार की गोलियां बनाकर दूध एवं पानी के साथ एक एक गोली प्रातः सायं सेवन करें। कुछ ही दिनों में सब

यात्रा का मुहूर्त्त स्वयं निकालिए

प्रियव्रत शर्मा

आगे इसी पंचांग में दिए गए सर्वार्थसिद्धि योग, रवियोग और सिद्धियोगों के समय प्रारम्भ की गई यात्रा, सुखद, निर्विघ्न एवं सिद्धिदायक होती है। अतः इन योगों में यात्रा प्रारम्भ करनी चाहिए। शनिवार वाले अमृतसिद्धि (जो कि सर्वार्थसिद्धि का ही एक विशेष भेद है) में यात्रा प्रारम्भ करना निषिद्ध है। यमघण्ट, मृत्यु, दग्ध, हुताशन, क्रकच, विष- इन छः अशुभ योगों को यात्रा में वर्जित कहा गया है, लेकिन सर्वार्थसिद्धि आदि शुभ योगों में यदि किसी समय यमघण्ट आदि अशुभ योगों में से कोई आ पड़े तो भी उस समय प्रस्थान किया जा सकता है, क्योंकि वहां सर्वार्थसिद्धि आदि शुभ योगों के कारण इन अशुभ योगों का कुफल लगभग समाप्त हो जाता है । यात्रा के प्रारम्भ के समय दिशाशूल और चन्द्रवास (सम्मुखस्थ, दक्षिणस्थ, पृष्ठस्थ एवं वामस्थ चन्द)का विचार भी कर लेना चाहिए। दिशाशूल के दिन और वामस्थ, पृष्ठस्थ चन्द्र के समय में प्रारम्भ की गई यात्रा कष्टकारक, फलहीन एवं सम्मुखस्थ तथा दक्षिणस्थ चन्द्र के समय में यात्रा सुखद, निर्विघ्न और कार्यसाधक होती है । यदि चन्द्रमा सम्मुखस्थ हो तो दिशाशूल आदि सभी दोष समाप्त हो जाते हैं। (' हरति सकल - दोषं चन्द्रमाः सम्मुखस्थः') यहां नीचे दिशाशूल और चन्द्रवास के निर्णय के लिए कोष्ठक दिया गया है ।

दिशाशूल एवं चन्द्रवास कोष्ठक

दिशा	दिशाशूल	सम्मुखचन्द्र	दक्षिण चन्द्र	पृष्ठ चन्द्र	वाम चन्द्र
पूर्व	श.चं.	मेष,सिंह,धनु	वृष,कन्या,मकर	मिथु.,तुला,कुम्भ	कर्क,वृश्चि.,मीन
आग्नेय	चं.गु.	,, ,, ,,	,, ,, ,,,	,, ,, ,,	,, ,, ,,
दक्षिण	गु.	वृष,कन्या,मकर	मिथु; तुला,कुम्भ	कर्क,वृश्चि.,मीन	मेष,सिंह,धनु
नैर्ऋत्य	शु.सू.	,, ,, ,,	,, ,, ,,	,, ,, ,,	,, ,, ,,
पश्चिम	शु.सू.	मिथु.,तुला,कुम्भ	कर्क, वृश्चिक,मीन	मेष, सिंह, धनु	वृष, कन्या, मकर
वायव्य	मं	,, ,, ,,	,, ,, ,,	,, ,, ,,	,, ,, ,,
उत्तर	मं.बु.	कर्क,वृश्चि.,मीन	मेष,सिंह,धनु	वृष,कन्या,मकर	मिथुन,तुला,कुम्भ
ऐशान	बु.श.	,,	,,	,,	,,

भारतीय ज्योतिष में वार का प्रारम्भ स्थानीय सूर्योदय से ही माना जाता है,अतः दिशाशूल आदि का निर्णय करने के लिए स्थानीय सूर्योदय के समय से ही वार की प्रवृत्ति माननी चाहिए ,अर्धरात्रि से नहीं ।

यात्रा आरम्भ करते समय यात्रा करने वाले व्यक्ति को अपनी जन्मराशि के अनुसार घात चन्द्रमा का विचार भी करना चाहिए । यदि उसकी राशि को घात चन्द्रमा है तो उसे उस समय यात्रा प्रारम्भ नहीं करनी चाहिए, घात चन्द्र जानने के लिए नीचे कोष्ठक दिया जा रहा है:-

घात चन्द्र कोष्ठक

जन्म राशि	मेष	वृष	मिथु.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
घात चन्द्रराशि	मे.	कन्या	कुं.	सिंह	म.	मि.	ध.	वृष	मी.	सिंह	ध.	कुं.

वैसे तो यात्रा के मुहूर्त में भद्रा,व्यतीपात, वैधृति, वेध, युति, योगिनीवास, नक्षत्र शूल आदि अनेक दोषों का विचार करने के लिए मूहूर्त्त ग्रन्थों में निर्देश है, लेकिन जब हम सर्वार्थसिद्धि आदि शक्तिशाली शुभ योगों में यात्रा प्रारम्भ कर रहे हैं, तब इतनी बातों का विचार करने की आवश्यकता नहीं। हां, फिर भी हमें नीचे लिखे इन विशेष दोषपूर्ण दिनों एवं कालों को यात्रारम्भ के समय अवश्य छोड़ देना चाहिए :-

(१) मासान्त (संक्रान्ति से पहला दिन)।
(२) संक्रान्ति दिन।
(३) ग्रहण दिन।
(४) तिथिक्षय।
(५) अमावस ।

यात्रा मुहूर्त्त निकालने का उदाहरण:- दिल्ली के प्रणव कुमार ३१ अगस्त, १९९९ ई. के आसपास किसी दिन बनारस जाना चाहते हैं! बतलाइए- उनके लिए ये दिन यात्रा

प्रारम्भ करने के लिए क्या उपयुक्त है?

हम प्रणव कुमार जी की इस यात्रा के लिए ३१ अगस्त (१९९९ई.) के दिन ही शुभ काल (मुहूर्त)का विचार करेंगे। ३१ अगस्त को प्रात: सूर्योदय से लेकर रात्रि के ८ बज कर २१ मिनट तक अमृतसिद्धि नाम वाला सर्वार्थसिद्धि योग है। यह अमृतसिद्धियोग मंगलवार को है, अत: यह यात्रा के लिए अच्छा है, (जैसा कि पीछे लिख चुके हैं कि- केवल शनिवार वाले अमृतसिद्धियोग के समय यात्रा निषिद्ध है।

अत: शुभ योगों की दृष्टि से यह काल (३१ अगस्त को सूर्योदय से रात के ८ घं. २१ मिनट तक) यात्रा प्रारम्भ करने के लिए निर्दुष्ट है। क्योंकि प्रणव कुमार जी दिल्ली से बनारस (पूर्व दिशा में) जा रहे हैं। दिशाशूल वाले कोष्ठक में पूर्व दिशा के आगे दिशाशूल के स्तंभ में मंगलवार नहीं है, अत: इस दिन पूर्व में दिशाशूल नहीं है।

इस दिन चन्द्रमा मेष में है। चन्द्रवास कोष्ठक में पूर्व दिशा के आगे मेष राशि 'सम्मुखस्थ चन्द्र' वाले स्तंभ में लिखी है। अत: ज्ञात हुआ कि इस समय चन्द्रमा सम्मुखस्थ है। अत: यात्रार्थ यह काल सर्वथा शुद्ध है। अब प्रणव कुमार जी की राशि (कन्या) द्वारा 'घात चन्द्र कोष्ठक' में देखा तो कन्याराशि वाले के लिए मिथुन राशि का चन्द्र घात-चन्द्र मिला। लेकिन ३१ अगस्त को चन्द्रमा मेष में है। अत: घातचन्द्र-दोष नहीं हुआ। इस समय पूर्वोक्त 'मासान्त' आदि कोई दोष भी नहीं है। इस प्रकार ३१ अगस्त को सूर्योदय से लेकर रात्रि के ८ बज कर २१ मिनट तक प्रणव कुमार जी को दिल्ली से बनारस के लिए प्रस्थान करना शुभफलप्रद होगा।

स्पष्टीकरण

सं. २०५५ वि. के 'श्री मार्त्तण्डपंचांग' में पृष्ठ 138 पर 'अखिल भारतीय ज्योतिष परिषद् (पंजी.)' का विज्ञापन छपा है, जिसमें मुझे राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में दर्शाया गया है। इस विषय में मैं श्रीमार्त्तण्डपंचांग के पाठकों तथा अन्य सर्वसाधारण को यह स्पष्ट कर देना आवश्यक समझता हूं कि इस संस्था से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है। यह विज्ञापन मेरी अनुमति के बिना प्रकाशित किया गया है। इस संस्था द्वारा किए गए किसी भी प्रकाशन या अन्य किसी प्रकार की गतिविधियों के बारे में मैं किसी भी तरह से उत्तरदायी नहीं हूँ।

— प्रो.प्रियव्रत शर्मा

प्रश्नफल जानने की सरल पद्धति

लग्न, सूर्य तथा चन्द्र की राशियों के अनुसार किसी भी प्रश्न का उत्तर देना काफी सरल है। प्रश्न के समय लग्न, सूर्य, और चन्द्रमा किस-किस राशि में है, यह ज्ञात करो और उन राशियों की चर, स्थिर और द्वि-स्वभाव संज्ञाओं के अनुसार नीचे दिए गए कोष्ठक से प्रश्न का शुभ या अशुभ फल जान लो।

—फल जानने के लिए कोष्ठक—

लग्नराशि	सूर्यराशि	चन्द्रराशि	शुभ या अशुभ फल	लग्नराशि	सूर्य राशि	चन्द्रराशि	शुभ या अशुभ फल
चर	चर	चर	शुभ	स्थिर	द्वि स्व.	स्थिर	शुभ
चर	चर	स्थिर	शुभ	स्थिर	चर	चर	अशुभ
चर	चर	द्विस्व.	अशुभ	स्थिर	चर	स्थिर	अशुभ
चर	स्थिर	स्थिर	अशुभ	स्थिर	चर	द्विस्व.	शुभ
चर	स्थिर	द्विस्व.	साधारण	द्विस्व.	द्विस्व.	द्विस्व.	साधारण
चर	स्थिर	चर	शुभ	द्विस्व.	द्विस्व.	चर	शुभ
चर	द्विस्व.	द्विस्व.	शुभ	द्विस्व.	द्विस्व.	स्थिर	शुभ
चर	द्विस्व.	चर	अशुभ	द्विस्व.	चर	चर	शुभ
चर	द्विस्व.	स्थिर	अशुभ	द्विस्व.	चर	स्थिर	शुभ
स्थिर	स्थिर	स्थिर	शुभ	द्विस्व.	चर	द्विस्व.	शुभ
स्थिर	स्थिर	द्विस्व.	अशुभ	द्विस्व.	स्थिर	स्थिर	शुभ
स्थिर	स्थिर	चर	शुभ	द्विस्व.	स्थिर	चर	शुभ
स्थिर	द्विस्व.	द्विस्व.	शुभ	द्विस्व.	स्थिर	द्विस्व.	अशुभ
स्थिर	द्विस्व.	चर	अशुभ				

(यहां साधारण फल का अभिप्राय शुभ एवं अशुभ दोनों प्रकार के मिश्रितफल से है।)

उदाहरण-मान लीजिए, कि—मुकदमे के प्रश्न के समय लग्न की राशि मेष (चर) सूर्य की राशि कन्या (द्विस्वभाव) और चन्द्रमा की राशि वृश्चिक (स्थिर) है। ऊपर कोष्ठक में इसका फल अशुभ लिखा है। अतः प्रश्नकर्ता की मुकद्दमे में पराजय होगी ।

यह तो सभी ज्योतिषी जानते हैं, कि — मेष, कर्क, तुला और मकर राशियां चर, वृष, सिंह, वृश्चिक और कुम्भ राशियां स्थिर एवं मिथुन, कन्या, धनु और मीन राशियां द्विस्वभाव

शोककाल की अवधि कितनी हो ?

लेखक :- प्रियव्रत शर्मा

["परिवार के किस संबंधी की मृत्यु हो जाने पर कितने दिनों तक मंगल कार्य नहीं करने चाहिएं"-इसका धर्मशास्त्रीय विवेचन और इसकी कुछ समीक्षा।]

जो व्यक्ति किए जाने वाले किसी मंगलकृत्य से साक्षात् सम्बद्ध है, उसे धर्मशास्त्र और मुहूर्तशास्त्र में "**मंगलाभिलाषी**" कहा जाता है। जैसे - जिस व्यक्ति का विवाह होने जा रहा है, जो गृह की आधारशिला रखने वाला है या जिस बच्चे का मुण्डन अथवा उपनयन संस्कार करना है - ये सब व्यक्ति "**मंगलाभिलाषी**" कहलाएंगे ।

मंगलाभिलाषी के निम्नलिखित इन संबंधियों को "**सगोत्रत्रिपुरुषी**" (मंगलाभिलाषी के अपने गोत्र वाली तीन पीढ़ियों के संबंधियों का वर्ग) कहा जाता है, जिनकी मृत्यु पर मंगलाभिलाषी के मंगलकृत्य कुछ समय के लिए रोक देने होते हैं :-

दादा, दादी, माता, पिता, पत्नी, भाई, भाई की पत्नी, भतीजा, अविवाहित भतीजी, अविवाहित बहिन,अविवाहित पुत्री, पुत्र, पुत्रवधू,अविवाहित पुत्री , पौत्र-वधू, अविवाहित पौत्री,अविवाहित भुआ, चाचा, चाची, ताया, ताई, चाचा और ताया का पुत्र एवं अविवाहित पुत्री, चाचा -ताया की पुत्रवधू ।

(ध्यान रहे- "सगोत्र त्रिपुरुषी" की इस सूची में सभी संबंधी सगे लिए गए हैं ।)

मंगलाभिलाषी का कोई सगोत्रत्रिपुरुषी वाला संबंधी गुजर जाए तो **प्रतिकूल दोष** होता है, जिसे '**अशौच**'या '**मृताशौच**' भी कहा जाता है प्रतिकूल दोष की अवधि जिसे व्यावहारिक भाषा में "शोककाल" कहना चाहिए, निवृत्त हो जाने पर ही मंगलाभिलाषी से संबंद्ध मंगलकार्य किया जा सकता है, उससे पूर्व नहीं । धर्मशास्त्रकारों ने प्रतिकूलदोष की अवधि भिन्न-भिन्न संबंधियों के बारे में भिन्न भिन्न बतलाई है ।'स्मृतिरत्नावली' में ये अवधियां इस प्रकार लिखी हैं-

पितुरब्दमशौचं स्यात्तदर्धं मातुरेव च ।
मासत्रयं तु भार्यायाः तदर्धं भ्रातृ -पुत्रयोः॥
अन्येषां तु सपिण्डानामशौचं मासमीरितम् ।
तदन्ते शान्तिकं कृत्वा ततो लग्नं विधीयते ॥

(इसका अर्थ है - पिता की मृत्यु पर एक वर्ष तक, माता की मृत्यु पर छः मास ,पत्नी की मृत्यु पर तीन मास,भाई की मृत्यु पर डेढ़ मास एवं शेष 'सगोत्रत्रिपुरुषी' वाले सभी संबंधियों की मृत्यु पर केवल एक मास तक ही अशौच रहता है । अशौच समाप्त होने पर विनायकशान्ति आदि करके विवाह आदि शुभकृत्य किए जा सकते हैं ।)

प्रतिकूल दोष की अवधि बतलाने वाला यह सामान्य नियम है, लेकिन आपात(संकट) स्थिति में तो माता, पिता आदि प्रत्येक संबंधी की मृत्यु के एकमास बाद ही विनायक शांति ,दान आदि करके मंगलकृत्य कर लेने की शास्त्र अनुमति देते हैं । "दैवज्ञ मनोहर" का वाक्य है -

प्रतिकूले सपिण्डस्य मासमेकं विवर्जयेत् ।

केवल एक मास बाद ही प्रतिकूल दोष की निवृत्ति बतलाने वाला यह नियम संकट (आवश्यकता) की स्थिति के लिए ही है । इससे पहिले विनयाक-शांति करवाना नितांत आवश्यक है । इसी विषय में मेधातिथि का यह वचन है -

संकटे समनुप्राप्ते याज्ञवल्क्येन योगिना ।
शान्तिरुक्ता गणेशस्य कृत्वा तां शुभमाचरेत् ॥
अकृत्वा शान्तिकं यस्तु निषेधे सति दारुणे।
यः करोति शुभं तावद् विघ्नस्तस्य पदे पदे ॥

यदि अत्यंत संकट की स्थिति हो (जैसे विवाहयोग्य कन्या की माता या पिता मरणासन्न हो) तो दशाह या द्वादशाह के बाद भी विनायकशंति, गोदान आदि करके विवाह आदि कृत्य कर लेने की अनुमति धर्मशास्त्रकारों ने दी है । "**ज्योतिः प्रकाश**" का यह वाक्य है —

प्रतिकूलेऽपि कर्तव्यो विवाहो मासमन्तरा
शांतिं विधाय गां दत्त्वा वाग्दानादि चरेत्पुनः॥

[अर्थात् -(अत्यन्त संकट की स्थिति में) एक मास के भीतर भी विवाह किया जा सकता है । परन्तु इसके लिए शांति, गोदान करके दुबारा वाग्दानादि करना चाहिए ।*

'ज्योतिः प्रकाश' का यह वाक्य यद्यपि विवाह के बारे में मास से पहिले ही प्रतिकूलदोष की निवृत्ति की बात करता है, लेकिन 'समान न्याय ' से दूसरे सभी मंगलकार्यों के बारे में भी यही निर्णय समझना चाहिए । ऐसी विशेष संकट की स्थिति में भी मंगलकार्य प्रेतकर्म कर लेने के अनन्तर (एकादशाह या द्वादशाह के अनन्तर) ही किए जा सकते हैं, इससे पूर्व किसी भी स्थिति में इनके विधान की अनुमति शास्त्र नहीं देते । इस बारे मेधातिथि का यह वाक्य है -

---

* "यदि वाग्दानादि हो चुकने पर विवाह से पूर्व ही प्रतिकूल दोष आ पड़े और संकट स्थिति हो तो गणेश शांति, गोदान करके पुनः वाग्दानादि करना चाहिए । तदनन्तर विवाह करें"- यह अभिप्राय है।

प्रेतकार्याण्यनिर्वर्त्य चरेन्नाभ्युदयक्रियाम् ।

[(अर्थात् - प्रेतकार्य (मृत्यु से द्वादशाह तक किए जाने वाले अनुष्ठानों) को किए बिना मंगलकार्य नहीं करने चाहिए ।]

इस उपरोक्त विवेचन का सारांश यह है -

(i)'' पिता का अशौच एक वर्ष, माता का छ: मास, पत्नी का तीन मास, भाई और बेटे का डेढ़ मास और शेष 'सगोत्रत्रिपुरुषी ' के संबंधियों का एक मास रहता है । इस अशौच की निवृत्ति के बाद विनायकशांति करके मंगल कार्य किया जा सकता है '' -प्रतिकूल दोष की अवधि के बारे में यह मूल निर्णय है । सामान्य स्थिति में इसका पालन करना चाहिए ।

(ii) यदि कोई संकट स्थिति आ पड़े तब प्रत्येक '' सगोत्रत्रिपुरुषी'' वाले संबंधी के अशौच की निवृत्ति एक मास बाद ही मान कर विनायकशांति, दानादि करके मंगल कार्य किया जा सकता है ।

(iii) यदि कोई अत्यंत संकट की स्थिति आ पड़े (एक मास तक मंगलकृत्य रोकना संभव न हो)तो मृत व्यक्ति का प्रेतकर्म पूरा हो जाने पर एकादशाह या द्वादशाह के अनन्तर विनायकशांति और गोदान आदि करके मंगलकृत्य किया जा सकता है ।

अब कुछ धर्मशास्त्र से हटकर-

भले ही प्रतिकूल दोष का धार्मिक पहलू कुछ भी हो, लेकिन यह तो पूरी तरह स्पष्ट है कि घनिष्ठ संबंधी की मृत्यु से उत्पन्न शोक ही इसका मूल है । विवाहादि सभी मंगलकृत्य उल्लास से साक्षात् जुड़े हैं, शोक के कारण विषण्ण मन:स्थिति में इनका अनुष्ठान संभव भी नहीं है । अत: दिवंगत संबंधी से मंगलाभिलाषी के संबंध की घनिष्ठता और पारिवारिक प्रवरता के अनुपात से भिन्न-भिन्न संबंधियों के लिए भिन्न-भिन्न शोकावधियां शास्त्रकारों ने निर्धारित की हैं।

धर्मशास्त्रकारों ने सगोत्रता को संबंध की घनिष्ठता का मापदण्ड माना है, और असगोत्र ऐसे संबंधियों की भी मृत्यु पर, शोक को नगण्य मान कर शुभ कर्म करने का वे परामर्श देते हैं, जो संबंध की निकटता, स्नेह और आत्मीयता की दृष्टि से सगोत्र संबंधियों से किसी भी तरह यत्किञ्चत् भी निम्नकोटि में नहीं आते । नीचे दी जा रही असगोत्र संबंधियों की यह सूची देखिए। क्या, कोई भी संबंधी यहां ऐसा प्रतीत होता है जिसकी मृत्यु के शोक की उग्रता सगोत्र त्रिपुरुषी वाले संबंधी की मृत्यु से उत्पन्न शोक की उग्रता से शिथिल हो ?

असगोत्र संबंधियों की सूची यह है -

नाना,नानी,मामा,मामी विवाहित भुआ, फूफूड़,विवाहित बहिन, जीजा, भानजा, भानजी, विवाहित बेटी, दामाद, दौहित्र, दौहित्री,विवाहित पौत्री, आदि । मिलने व उन्हें दिए जाने वाले स्नेह की है । दौहित्र , दौहित्री के प्रति हृदय में रहने वाला वात्सल्य भी पौत्र, पौत्री के प्रति हमारे हृदय में रहने वाले वात्सल्य से कम नहीं है । भतीजा-भतीजी और भानजा-भानजी- ये दोनों वर्ग भी हमारे परिवारों में समान रूप से स्नेह के पात्र हैं । बहिन, जो अपने भाई और भाभी की दीर्घ आयु और सुखसमृद्धि की नि:स्वार्थ भावना के लिए सर्वविदित है,विवाहित हो जाने पर भाई के हृदय से तो नहीं निकल जाती । जीजा जी तो प्रिय बहन का सौभाग्य हैं । विवाहित बेटी और उसके सौभाग्य के प्रतिरूप दामाद के प्रति स्नेह की मात्रा भला कोई कम होती है ? मामा, जिसके नाम से जुड़ा चन्दा हमें बचपन में विशेष रूप से अपना ही लगता रहा,हृदय के अन्तराल को स्नेहातिरेक से आत्मसात् कर लेने वाले किसी भी अन्य संबंधी से कम निकट का नहीं माना जा सकता। क्योंकि ये सभी संबंधी असगोत्र हैं, इसलिए हमारे धर्म- शास्त्र इनकी मृत्यु होने पर मंगलकृत्य के स्थगन का परामर्श नहीं देते - यह एक वस्तुत: आश्चर्य की बात है । भले ही हमारे ये धर्मशास्त्र घनिष्ठतापूर्वक हृदय से बंधे इन प्रिय असगोत्र संबंधियों की मृत्यु पर बुरी तरह छा जाने वाले असह्य शोक को उपेक्ष्य मानकर स्वेच्छया जब कभी (मृत्यु के एक-दो दिन बाद भी) मंगल कृत्य कर लेने केलिए उन्मुक्त करते हैं , लेकिन फिर भी संबंध की गरिमा का सम्मान करने वाले, शोकाकुल शिष्ट स्नेहमय संबंधी लोग बिना शास्त्रीय निर्देश के अपने उपरोक्त असगोत्र निकट संबंधियों के निधन के बाद संकटस्थिति में भी कम से कम द्वादशाह तक तो शुभ कृत्य करने की बात सोचते तक नहीं है - यह एक पारिवारिक एवं सामाजिक शिष्टाचार भी है

प्रत्येक विधि -निषेध का निर्धारण हमारे शास्त्रों के ही अधिकार का विषय नहीं है । समाज के अनेक सभ्य, शिष्ट मनोवैज्ञानिक वृद्ध लोग भी ऐसी विधि-निषेध-संहिताएं प्रतिष्ठापित करने की प्रकृति रखते हैं, जिन्हें हमारे प्राचीन शास्त्र किसी विशेष दृष्टिकोण के कारण निर्दिष्ट नहीं कर पाए, या उनका निर्देश करने से वे किसी तरह चूक गए । ध्यान रहे- शिष्ट समाज द्वारा बनाई ऐसी आचारसंहिताओं का माहात्म्य शास्त्रीय निर्णयों से तनिक भी कम नहीं है ।

इन स्थितियों में प्रतिकूलदोष नहीं माना जाता -

(i) भ्राता, बहिन, पुत्र -पुत्री, पौत्र, पौत्री आदि की मृत्यु तीन वर्ष से कम आयु में होने पर ।

(ii) लम्बे रोग से पीड़ित संबंधी की मृत्यु होने पर ।

(iii) सुदूर देशवासी संबंधी की मृत्यु होने पर।

(iv) संन्यासी संबंधी की मृत्यु होने पर।

(v) दुर्भिक्ष, राष्ट्रभंग और माता पिता के प्राण संकट की स्थिति में तथा

द्वार चक्र

सूर्य नक्षत्र	चन्द्र नक्षत्र															
अश्वि.	अश्वि.	भ.	कृ.	रो.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	श.	पू.भा.	उ.भा.	रे.
भ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	चि.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	अश्वि.
कृ.	कृ.	रो.	मृ.	आर्द्रा	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	श्र.	उ.भा.	रे.	अश्वि.	भ.
रो.	रो.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	श्र.	ध.	रे.	अश्वि.	भ.	कृ.
मृ.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	श्र.	ध.	श.	अश्वि.	भ.	कृ.	रो.
आर्द्रा	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	श्र.	ध.	श.	पू.भा.	भ.	कृ.	रो.	मृ.
पुन.	पुन.	पुष्य	आश्ले.	म.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	श्र	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.	कृ.	रो.	मृ.	आर्द्रा
पुष्य	पुष्य	आश्ले.	म.	पू.फा.	पू.षा.	उ.षा.	श्र.	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	रो.	मृ.	आर्द्रा	पुन.
आश्ले.	आश्ले.	म.	पू.फा.	उ.फा.	उ.षा.	श्र.	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	अश्वि.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य
म.	म.	पू.फा.	उ.फा.	ह.	श्र.	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	अश्वि.	भ.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.
पू.फा.	पू.फा.	उ.फा.	ह.	चि.	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	अश्वि.	भ.	कृ.	पुन.	पुष्य	आश्ले.	म.
उ.फा.	उ.फा.	ह.	चि.	स्वा.	श.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	अश्वि.	भ.	कृ.	रो.	पुष्य	आश्ले.	म.	पू.फा.
ह.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	अश्वि.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आश्ले.	म.	पू.फा.	उ.फा.
चि.	चि.	स्वा.	वि.	अनु	उ.भा.	रे.	अश्वि.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आर्द्रा	म.	पू.फा.	उ.फा.	ह.
स्वा.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	रे.	अश्वि.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पू.फा.	उ.फा.	ह.	चि.
वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	अश्वि.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	उ.फा.	ह.	चि.	स्वा
अनु.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	ह.	चि.	स्वा.	वि.
ज्ये.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	कृ.	रो.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	म.	चि.	स्वा.	वि.	अनु.
मू.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	श्र.	रो.	मृ.	आर्द्रा.	पुन.	पुष्य	आश्ले.	म.	पू.फा.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.
पू.षा.	पू.षा.	उ.षा.	श्र.	ध.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	म.	पू.फा.	उ.फा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.
उ.षा.	उ.षा.	श्र.	ध.	श.	आर्द्रा.	पुन.	पुष्य	आश्ले.	म.	पू.फा.	उ.फा.	ह.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.
श्र.	श्र.	ध.	श.	पू.भा.	पुन.	पुष्य	आश्ले.	म.	पू.फा.	उ.फा.	ह.	चि.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.
ध.	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.	पुष्य	आश्ले.	म.	पू.फा.	उ.फा.	ह.	चि.	स्वा	मू.	पू.षा.	उ.षा.	श्र.
श.	श.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	आश्ले.	म.	पू.फा.	उ.फा.	ह.	चि.	स्वा	वि.	पू.षा.	उ.षा.	श्र.	ध.
पू.भा.	पू.भा.	उ.भा	रे.	अश्वि.	म.	पू.फा.	उ.फा.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	अनु.	उ.षा.	श्र.	ध.	शत
उ.भा.	उ.भा.	रे.	अश्वि.	भ.	पू.फा.	उ.फा.	ह.	चि.	स्वा	वि.	अनु.	ज्ये.	श्रव.	ध.	श.	पू.भा.
रे.	रे.	अश्वि.	भ.	कृ.	उ.फा.	ह.	चि.	स्वा	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.

सूर्यनक्षत्रों के आगे लिखे नक्षत्रों में ही 'द्वारचक्र-शुद्धि' है। जैसे- जब सूर्य अश्विनी में होगा तब अश्विनी, भरणी आदि नक्षत्र, जो इस कोष्ठक में सूर्यनक्षत्र अश्विनी के आगे लिखे हैं, द्वारचक्र-शुद्ध होंगे। गृह के मुख्य (प्रवेश) द्वार की चौकाठ (Frame) द्वारचक्र-शुद्ध नक्षत्रों में ही लगाई जाती है।

भूशयन

सूर्य नक्षत्र	भूशयन वाले चन्द्र नक्षत्र					
अश्वि.	मृ.	पुन.	आश्ले.	उ.फा.	मू.	उ.भा.
भर.	आर्द्रा	पुष्य	म.	ह.	पू.षा.	रे.
कृ.	पुन.	आश्ले.	पू.फा.	चि.	उ.षा.	अश्वि.
रो.	पुष्य	म.	उ.फा.	स्वा.	श्र.	भ.
मृ.	आश्ले.	पू.फा.	ह.	वि.	ध.	कृ.
आर्द्रा.	म.	उ.फा.	चि.	अनु.	श.	रो.
पुन.	पू.फा.	ह.	स्वा.	ज्ये.	पू.भा	मृ
पुष्य	उ.फा.	चि.	वि.	मू.	उ.भा.	आर्द्रा
आश्ले.	ह.	स्वा.	अनु.	पू.षा.	रे.	पुन.
म.	चि.	वि.	ज्ये.	उ.षा.	अश्वि.	पुष्य
पू.फा.	स्वा.	अनु.	मू.	श्र.	भ.	आश्ले.
उ.फा.	वि.	ज्ये.	पू.षा.	ध.	कृ.	म.
ह.	अनु.	मू.	उ.षा.	श.	रो.	पू.फा.
चि.	ज्ये.	पू.षा.	श्रव.	पू.भा.	मृ.	उ.फा
स्वा.	मू.	उ.षा.	ध.	उ.भा.	आर्द्रा	ह.
वि.	पू.षा.	श्र.	श.	रे.	पुन.	चि.
अनु.	उ.षा.	ध.	पू.भा.	अश्वि.	पुष्य	स्वा.
ज्ये.	श्रव.	श.	उ.भा.	भ.	आश्ले	वि.
मू.	ध.	पू.भा.	रे.	कृ.	म.	अनु.
पू.षा.	श.	उ.भा.	अश्वि.	रो.	पू.फा.	ज्ये.
उ.षा.	पू.भा.	रे.	भ..	मृ.	उ.फा.	मू.
श्रव.	उ.भा.	अश्वि.	कृ.	आर्द्रा	ह.	पू.षा.
ध.	रे.	भ.	रो.	पुन.	चि.	उ.षा.
श.	अश्वि.	कृ.	मृ.	पुष्य	स्वा.	श्रव.
पू.भा.	भ.	रो.	आर्द्रा	आश्ले..	वि.	ध.
उ.भा.	कृ.	मृ.	पुन.	म.	अनु.	श.
रेव.	रो.	आर्द्रा	पुष्य	पू.फा.	ज्ये.	पू.भा.

सूर्यनक्षत्रों के आगे लिखे चन्द्रनक्षत्रों में भूशयन होता है। जैसे- यदि सूर्य अश्विनी नक्षत्र में हो तो मृ., पुन., आश्ले., उ.फा., मू., एवं उ.भा. नक्षत्रों में भूशयन होगा,

वृष वास्तु चक्र

सूर्य नक्षत्र	'वृष वास्तु चक्र' से शुद्ध चन्द्र नक्षत्र										
अश्वि.	पुष्य	आश्ले.	म.	पू.फा.	उ.फा.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.
भ.	आश्ले.	म.	पू.फा.	उ.फा.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.
कृ.	म.	पू.फा.	उ.फा.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.
रो.	पू.फा.	उ.फा.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.
मृ.	उ.फा.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	अभि.
आर्द्रा	ह.	चि.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	अभि.	श्र.
पुन.	चि.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	अभि.	श्र .	ध.
पुष्य	स्वा.	वि.	अनु	ज्ये	मू.	पू.षा.	उ.षा.	अभि.	श्र.	ध.	श.
आश्ले.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	अभि.	श्र.	ध.	श.	पू.भा.
म.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	अभि.	श्र.	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.
पू.फा.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	अभि.	श्र.	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.	रे.
उ.फा.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	अभि.	श्र.	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	अश्वि.
ह.	पू.षा.	उ.षा.	अभि.	श्र.	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	अश्वि.	भ.
चि.	उ.षा.	अभि.	श्रव.	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	अश्वि.	भ.	कृ.
स्वा.	अभि.	श्र.	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	अश्वि.	भ.	कृ.	रो.
वि.	श्र.	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	अश्वि.	भ.	कृ.	रो.	मृ.
अनु.	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	अश्वि.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आर्द्रा
ज्ये.	श.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	अश्वि.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आर्द्रा	पुन.
मू.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	अश्वि.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य
पू.षा.	उ.भा.	रे.	अश्वि.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.
उ.षा.	रे.	अश्वि.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	म.
अभि.	अश्वि.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	म.	पू.फा.
श्रव.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	म.	पू.फा.	उ.फा.
ध.	कृ.	रो.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	म.	पू.फा	उ.फा.	ह.
श.	रो.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	म.	पू.फा.	उ.फा.	ह.	चि.
पू.भा.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	म.	पू.फा.	उ.फा.	ह.	चि.	स्वा.
उ.भा.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	म.	पू.फा.	उ.फा.	ह.	चि.	स्वा.	वि.
रेव.	पुन.	पुष्य	आश्ले.	म.	पू.फा.	उ.फा.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	अनु.

सूर्य नक्षत्रों के आगे लिखे चन्द्र नक्षत्र 'वृष वास्तुचक्र' द्वारा शुद्ध हैं। जैसे- जब सूर्य अश्विनी में होगा, तब पुष्य से ज्येष्ठा तक के

सायन और निरयण पद्धतियां तथा फलादेश

लेखक— प्रियव्रत शर्मा -59/6, पंचकूला-134109

[सायन और निरयण पद्धतियों से बनाई गई एक ही जातक की दो जन्मपत्रियों में ९ में से लगभग ७ ग्रहों की राशियां एक दूसरे से भिन्न होती हैं। लग्नादि बारह भावों में भी ८० प्रतिशत स्थलों पर एकरूपता नहीं होती । इन जन्मपत्रियों के ग्रह/भावों के नवाशांदि भी एक दूसरे से बिल्कुल मेल नहीं खाते । लेकिन फिर भी इन दोनों पद्धतियों के अनुयायी ज्योतिषियों का दावा रहता है कि इनकी पद्धति के अनुसार की गईं भविष्यवाणियां ही सत्य सिद्ध होती हैं। इसका रहस्य क्या है- इस लेख में पढ़िए]

सायन और निरयण गणना वाले ग्रह-भावों के भोगांशों में आजकल लगभग २४ अंशों का अन्तर चल रहाहै , जो अयनचलन के कारण उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है। इन दोनों पद्धतियों से बनाई गई जातक की जन्मपत्रियों में ९ ग्रहों में से लगभग ७ ग्रहों की राशियां भिन्न-भिन्न आती हैं। लग्नादि भावों में भी ८० प्रतिशत स्थलों पर भिन्नता आती है । नवांशादि तो इन दो प्रणालियों से कभी मेल खाते ही नहीं हैं। स्पष्ट है- ऐसी स्थिति में इन दोनों प्रणालियों पर आधारित एक ही जातक की दो जन्मपत्रियों का फलादेश एकरूप कदापि नहीं हो सकता। लेकिन परम आश्चर्य है - फलित जगत् में इन दोनों प्रणालियों के अनुसार भविष्य बतलाने वाले सायन व निरयण-पक्ष के अनुयायी दैवज्ञ अपने-अपने पक्ष को प्रामाणिक मानते चले आ रहे हैं और दोनों पक्षधरों का दावा है कि उनका पक्ष ही यथार्थ भविष्य - कथन में सक्षम है। यह जान लेना चाहिए कि **निरयण पद्धति का अनुगमन केवल भारत, नेपाल लंका आदि तीन चार देशों के भविष्यवक्ता ही करते हैं। विश्व के शेष समस्त विशाल भाग में फलित का आधार सायनपद्धति को ही माना जाता है ।**

कुछ निरयण जन्मपत्रियों से निर्णीत फल तत्सम्बद्ध जातक के जीवन की घटनाओं से मेल खाता है , अत: निरयण पद्धति ही विश्वसनीय, प्रामाणिक है- ऐसा निर्णय सहसा नहीं कर लेना चाहिए । कुछ जातकों से सम्बद्ध फलादेश की सत्यता -असत्यता के आधार पर इन दो पद्धतियों में से किसी एक पद्धति को ही स्वीकार्य और तदितर को तिरस्कार्य नहीं किया जा सकता। क्योंकि फलित के योगायोग असंख्य हैं। दोनों पद्धतियों के पक्षधर दैवज्ञ अपनी-अपनी पद्धतियों से प्रस्तुत जन्मपत्रियों में जातक के जीवन की ज्ञात घटनाओं के अनुकूल परिणाम देने वाले ग्रहयोगों को उनमें से जैसे तैसे निकाल ही लेते हैं । **निष्पक्ष भाव से दोनों पद्धतियों की जन्मपत्रियों का परिशीलन स्पष्ट कर देता है कि - दोनों पद्धतियों पर आधारित भविष्यवाणियों में व्यभिचार की मात्रा समान है ।**

जातकों की वर्तमान एवं अतीत घटनाओं का उनकी जन्मपत्रियों में दी गई ग्रहस्थिति आदि(वह वास्तव हो या अवास्तव)के फलितयोगों से समन्वय कर डालने की प्रवृत्ति या कुशलता दैवज्ञों में अक्सर पाई जाती है । श्री गुरुनानक, श्रीआद्य शंकराचार्य, सम्राट् विक्रमादित्य, हर्षवर्धन, जैन महावीर आदि महापुरुषों की पुरातन साहित्य में उपलब्ध्य अनेक जन्मकुण्डलियों का मूल गणित द्वारा पश्रिम से परीक्षण मैंने अपने अप्रकाशित महानिबन्ध **'हमारे अवतार एवं महापुरुषों की कृत्रिम जन्मकुण्डलियां'** में किया है । आश्चर्य की बात है- ये सभी कुण्डलियां कृत्रिम सिद्ध हुई हैं। इनमें ग्रहों की स्थितियां जातकग्रन्थों में निर्दिष्ट महापुरुषयोगों को दृष्टि में रखकर किन्हीं चतुर ज्योतिषियों ने बनाई हैं। इन सभी कुण्डलियों में तीन या चार ग्रहों को उच्चस्थ दिखलाया गया है, जबकि गणित-परीक्षण से स्पष्ट हुआ है कि इन

महापुरुषों के जन्म के समय इस प्रकार ग्रह उच्चस्थ नहीं थे । इससे और भी आश्चर्य की बात यह है कि अनेक लब्धप्रतिष्ठ दैवज्ञों ने, जिन्हें यह ज्ञात नहीं था कि ये जन्म-कुण्डलियां (इन जन्मकुण्डलियों में दर्साई गईं ग्रहस्थितियां) वास्तविक नहीं है, इन महापुरुषों के जीवन की प्रमुख-प्रमुख घटनाओं एवं इनकी प्रकृति, योग्यता, सम्पत्ति, विपत्ति आदि सभी का सम्बन्ध इन कृत्रिम जन्मकुण्डलियों में प्रदर्शित कृत्रिम ग्रहयोगायोगों से सिद्ध कर डाला, जो प्राचीन और आधुनिक ग्रन्थों में प्रकाशित भी है। उज्जैन के सुविख्यात दैवज्ञ **पद्मभूषण श्री सूर्यनारायण व्यास** द्वारा सम्पादित 'कुण्डलीसंग्रह' नामक पुस्तक में इन महापुरुषों की ऐसी बीसों कृत्रिम जन्मकुण्डलियां ऐसे ही फलादेश सहित प्रकाशित हैं । क्योंकि ये सभी कुण्डलियां शताब्दियों पूर्व लिखे गए प्रामाणिक ग्रन्थों में प्रकाशित मिलती हैं अतः श्री सूर्यनारायण व्यास जी ने इन जन्मकुण्डलियों की गणित द्वारा परीक्षा करना आवश्यक नहीं समझा। इन्हें उन्होंने वास्तविक समझकर ही इन पर फलादेश लिख डाला। इन कृत्रिम जन्मकुण्डलियों में दिखाए गए ग्रहयोगों का इन महापुरुषों के जीवन की घटनाओं से समन्वय दिखलाने वाले ऐसे फलितीय विवरण हमें अनेक अन्य प्रामाणिक ग्रन्थों में भी प्रकाशित मिलते हैं। दैवज्ञों द्वारा इन महापुरुषों की बनावटी जन्मकुण्डलियों में निर्दिष्ट बनावटी ग्रहस्थितियों को आधार मान कर लिखा गया, इन महापुरुषों की जीवन घटनाओं और उनके गुणावगुण आदि पर पूरी तरह घटित होने वाला यह फलादेश स्पष्ट करता है कि फलितीय योगायोगों की जातक के जीवनकी घटना आदि के अनुरूप व्याख्या कर सकना संभव है, क्योंकि प्रत्येक फलितीय योग की उपलभ्यमान बीसों फलितीय पद्धतियों के अनुसार अनन्त विधाएं बनती हैं। किसी जातक के वर्तमान या अतीत जीवन घटना आदि के साथ उन विधाओं में से किसी अभीष्ट विधा का समन्वय कर डालने की क्षमता प्रत्येक प्रवीण दैवज्ञ में रहती है । एक ही ग्रहयोग की सम्भावित अनन्त, अगण्य विधाओं के बारे में यवनेश्वर ने भी अपने जातक ग्रन्थ में निर्देश किया [illegible]

अन्योन्य- राश्यंशक- सम्प्रयोगैः
अन्योन्य - सन्दर्शन-संगमैश्च।
अन्योन्य-संयोग-विकल्पनाभिः
इदं समुद्राम्बुवदप्रमेयम्॥

ग्रहयोगों की इन अनन्त विधाओं के कारण सायन एवं निरयण पक्षों के समर्थक भविष्यवक्ता एक ही जातक की सायन एवं निरयण-दोनों पक्षों की दो भिन्न-भिन्न ग्रहस्थितियां दर्साने वाली जन्मपत्रियों से उसके ज्ञात जीवन घटना चक्र (व्यक्तित्व, स्वास्थ्य, सन्तान, उत्थान, पतन आदि) का सामंजस्य बैठाने में पूरी तरह समर्थ पाए जाते हैं। यदि यह बात न होती तो परस्पर सर्वथा असमान ग्रहयोगों को प्रदर्शित करने वाले इन दो (सायन और निरयण) पक्षों का 'भविष्यदर्शी' प्रणालियों के रूप में शताब्दियों से समानान्तर चलते आना असंभव होता । सायन और निरयण जैसी दोनों सर्वथा परस्पर विरोधी प्रणालियों को यथार्थ भविष्यदर्शन में सक्षम बतलाने वाले इन दोनों प्रणालियों के अनुसर्त्ता दैवज्ञों को कोई युक्त चिन्तक कैसे विश्वसनीय मान सकता है? सायन और निरयण गणना के अनुसार ग्रहस्थिति और द्वादश भावों के इन दो-दो रूपों के कारण फलितशास्त्र पर तार्किक जनमानस की आस्था बुरी तरह डगमगाई हुई है ।

इस विषय को स्पष्टता से समझने के लिए सं. २०४८ वि. और सं. २०५३ वि. के "श्री मार्त्तण्ड पंचांग" में छपे मेरे "**अशुद्ध वर्षमान के प्रयोग से भारतीय राशिचक्र का विचलन**" और "**तेरहवीं राशि क्यों नहीं?**" लेख अवश्य पढ़ना चाहिएं।

इसके लिए मेरा अप्रकाशित महानिबन्ध "**हमारे अवतार एवं महापुरुषों की कृत्रिम जन्मकुण्डिलियां,**" जिसमें मूल गणित का प्रदर्शन करते हुए इन कुण्डलियों की प्रमाणिकता को पूरी तरह परखा गया है, जिज्ञासुओं के लिए पढ़ने योग्य है। इसे शीघ्र ही प्रकाशित किया जाएगा।

मध्य प्रदेश के नगरों के अक्षांश, रेखांश एवं स्टैण्डर्ड अन्तर

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.
अगर	२३ ४४	७६ ४	—२५ ४४	केरार	२३ २	८१ ३७	—३ ३२	चापई	१९ ४२	८१ ३१	—३ ५६	धर्मजयगढ़	२२ २८	८३ १३	+२ ५२
अजयगढ़	२४ ५३	८० १४	—९ ०	कोईलारी	२३ ५७	८१ ४५	—३ ०	चापरा	२२ ४३	७६ २०	—२४ ४०	धर्मावरम्	१८ १४	८० ५५	—६ २२
अंजद	२२ ३	७५ ३	—२९ ४८	कोंगुर	१९ ५३	८१ २७	—४ १२	चाम्पा	२२ २	८२ ४३	+0 ५२	धवलपुर कलां	२० २३	८२ १६	—० ५६
अंजहेढ़ा	२२ ३२	७५ ७	—२९ ३२	कोठी	२४ ४५	८० ४५	—७ ०	छतरपुर	२४ ५४	७९ ३८	—११ ५२	धार	२२ ३५	७५ २०	—२८ ४०
अदेगांव	२२ ३६	७९ ३०	—१२ ०	कोण्डागांव	१९ ३७	८१ ४१	—३ १६	छिनारी	१९ ३४	८१ २६	—४ १६	नगर	२३ १८	८२ २८	—० ८
अमर कण्टक	२२ ४०	८१ ४५	—३ ०	कोरबा	२२ २२	८२ ४२	+ ० ४८	छिन्दवाड़ा	२२ ३	७८ ५८	—१४ ८	नया गाँव	२५ ५३	७७ १०	—२१ २०
अमला	२१ ५५	७८ ७	—१७ ३२	कोरवई	२४ ७	७८ ३	—१७ ४८	छुई खदान	२१ ३१	८१ २	—५ ५२	नरसिंहगढ़	२३ ४४	७७ ८	—२१ २८
अम्बाह	२६ ४३	७८ १४	—१७ ४	क्षिप्रा	२२ ५४	७६ ०	—२६ ००	जगदलपुर	१९ ५	८२ ४	—१ ४४	नरसिंहपुर	२२ ५७	७९ १५	—१३ ०
अम्बिकापुर	२३ ७	८३ १२	+२ ४८	खजुराहो	२४ ५२	७९ ५२	—१० ३२	जनकपुर	२३ ४३	८१ ४७	—२ ५२	नवापाड़ा	२० ५७	८१ ५३	—२ २८
अरंग	२१ १२	८१ ५८	—२ ८	खण्डवा	२१ ५०	७६ २३	—२४ २८	जयसिंहनगर	२३ ४२	८१ २३	—४ २८	नबाव बसौदा	२३ ३७	७८ १२	—१७ १२
अलीराजपुर	२२ १९	७४ २१	—३२ ३६	खनियाधान	२५ २	७८ ७	—१७ ३२	जबलपुर	२३ १०	७९ ५९	—१० ४	नसरूल्लागंज	२२ ४२	७७ १७	-२० ५२
अशोक नगर	२४ ३३	७७ ४३	—१९ ८	खमरिया	२३ ३६	८० ३२	—७ ५२	जशपुरनगर	२२ ५३	८४ १२	+६ ४८	नागदा	२३ २७	७५ २५	—२८ २०
इच्छापुर	२१ १०	७६ ९	—२५ २४	खरगोन	२१ ५२	७५ ३६	—२७ ३६	जाओरा	२३ ३८	७५ ८	—२९ २८	नागोद	२४ ३३	८० ३७	—७ ३२
इच्छावर	२३ १	७७ १	—२१ ५६	ख्रोरारा	२६ २२	७७ ३९	—१९ २४	जावद	२४ ३७	७४ ५२	—३० ३२	नालखेड़ा	२३ ५१	७६ १५	—२५ ०
इटारसी	२२ ३७	७७ ४५	—१९ ०	खचरोद	२३ २५	७५ १७	—२८ ५२	जोबट	२२ २४	७४ ३४	—३१ ४४	निमेड़	१८ ५४	८० ५१	—६ ३६
इटावा	२४ १०	७८ १२	—१७ १२	खिलचीपुर	२४ ३	७६ ३३	—२३ ४८	झलवाड़ा	२३ ४७	८० ४३	—७ ८	नीमच	२४ २७	७४ ५२	—३० ३२
इन्दौर	२२ ४४	७५ ५०	—२६ ४०	खुरई	२४ ३	७८ २०	—१६ ४०	झाबुआ	२२ ४५	७४ ३८	—३१ २८	नीलवाड़	१९ ३४	८१ ३४	—३ ४४
इन्द्रगढ़	२५ ५५	७८ ३४	—१५ ४४	खेतिया	२१ ४१	७४ ४१	—३१ १६	टीकमगढ़	२४ ४५	७८ ५३	—१४ २८	नेमावर	२२ ३१	७६ ५९	—२२ ४
उज्जैन	२३ ९	७५ ४३	—२७ ८	खैरागढ़	२१ २५	८० ५९	—६ ४	डिंडोरी	२२ ५७	८१ ६	—५ ३६	नेवाली	२१ ४३	७४ ५५	—३० २०
उमरिया	२३ ३२	८० ४३	—६ २८	गरनावर	२४ ३८	८१ २	—५ ५२	डुंगरगढ़	२१ १२	८० ५०	—६ ४०	नैनपुर	२२ २६	८० ८	—९ २८
उमरी	२६ ३१	७८ ५७	—१४ १२	गरौली	२५ ५	७९ २४	—१२ २४	तक्खतपुर	२२ ८	८१ ५३	—२ २८	पचमढ़ी	२२ २८	७८ २६	—१६ १६
ओबदुल्लागंज	२२ ५९	७७ ३६	—१९ ३६	गादरवाड़ा	२२ ५६	७८ ५०	—१४ ४०	तिरोदी	२१ ४०	७९ ४३	—११ ८	पठारिया	२३ ५२	७९ १०	—१३ २०
ओरछा	२५ २१	७८ ३८	—१५ २८	गुना	२४ ४०	७७ २०	—२० ४०	तेंदु खेड़ा	२३ १०	७८ ५२	—१४ ३२	पण्डरिया	२२ १४	८१ २६	—४ १६
कटंगी	२१ ४७	७९ ४८	—१० ४८	गोल्लपल्ली	१७ ५५	८१ ०५	—५ ४०	थाड़ला	२३ १	७४ ३४	—३१ ४४	पन्ना	२४ ४४	८० १४	—९ ४
कटनी	२३ ४७	८० २७	—८ १२	गोहद	२६ २५	७८ २९	—१६ ८	दतरौदा	२४ ०	७६ १७	—२४ ५२	परताबपुर	१९ ५९	८० ४५	—७ ०
करकनार	१९ १७	८१ ३६	—३ ३६	गोहरगंज	२३ १	७७ ४०	—१९ २०	दतिया	२५ ३९	७८ २७	—१६ १२	परलकोट	१९ ४७	८० ४२	—७ १२
कांकेर	२० १७	८१ ३२	—३ ५२	ग्वालियार	२६ १४	७८ १०	—१७ २०	दन्तेबाड़ा	१८ ५२	८१ २२	—४ ३२	पाटन	२३ १८	७९ ४२	—११ १२
काठघोड़ा	२२ ३०	८२ ३३	+० १२	घुघरी	२२ ४०	८० ४१	—७ १६	दमोह	२३ ५०	७९ २९	—१२ ४	पांधुरना	२१ ३६	७८ ३२	—१५ ५२
किडंदुल	१८ ४०	८१ १५	—५ ०	चन्दला	२५ ५	८० १२	—९ १२	दिगऊकलां	२४ ३	७५ ९	—२९ २४	पिचोर	२५ ११	७८ ११	—१७ १६
कुकशी	२२ १२	७४ ४५	—३१ ०	चन्दाओरा	२३ ३७	८१ ३७	—३ ३२	दुर्ग	२१ ११	८१ १७	—४ ५२	पिछोर	२५ ५८	७८ २४	—१६ २४
कुतरू	१९ ५	८० ४८	—६ ४८	चंदिया	२३ ३८	८० ४२	—७ १२	देवरी	२३ २३	७९ २	—१३ ५२	पिपरिया	२२ ४७	७८ २०	—१६ ४०
कुरसेकोढ़ी	२० १३	८० ४८	—६ ४८	चन्देरी	२४ ४३	७८ ७	—१७ ३२	देवास	२२ ५८	७६ ६	—२५ ३६	पिरथीपुर	२५ १३	७८ ४५	—१५ ०
कृष्णनगर	२३ ४७	८३ २५	+३ ४०	चाचोरा	२४ ११	७६ ५९	—२२ ०४	धमतरी	२० ४२	८१ ३४	—३ ४४	पुसवरा	२० १६	८१ ३७	—३ ३२

मध्य प्रदेश के नगरों के अक्षांश, रेखांश एवं स्टैण्डर्ड अन्तर

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.
फुलझर	२१ १४	८२ ५४	+१ ३६	भरतपुर	२३ ४५	८१ ४५	—३ ०	मोहगाँवकलां	२१ ४३	७९ ५५	—१० २०	शिवपुर	२५ ३९	७६ ४१	—२३ १६
फूप कलां	२६ ३८	७८ ५२	-१४ ३२	भरेण्डा	१९ ४८	८१ १३	—५ ८	रघुगढ़	२४ २७	७७ १२	—२१ १२	शिवपुरी	२५ २६	७७ ४०	—१९ २०
फोपनार कलां	२१ १३	७६ १८	-२४ ४८	भातापाड़ा	२१ ४४	८१ ५५	—२ २०	रतलाम	२३ २१	७५ ७	—२९ ३२	श्योपुर	२५ ४०	७६ ४०	—२३ २०
बगीवा	२२ ५७	८३ ३८	+४ ३२	भानपुरा	२४ ३२	७५ ४३	—२७ ८	रम्भापुर	२२ ५५	७४ ३५	—३१ ४०	सक्ति	२२ १	८२ ५८	+ १ ५२
बनवारा कलां	२३ ४६	८० ३३	—७ ४८	भानपुरी	१९ २२	८१ ५०	—२ ४०	राजगढ़	२४ ०१	७६ ४५	—२३ ०	सतना	२४ ३४	८० ५५	—६ २०
बन्दा	२४ ३	७८ ५७	-१४ १२	भाभगढ़	२१ ५०	७६ ३०	—२४ ०	राजनन्द गाँव	२१ ५	८१ ५	—५ ४०	सनाबद	२२ ११	७६ ४	—२५ ४
बन्दारस	१८ ५७	८१ ५२	—२ ३२	भिण्ड	२६ ३५	७८ ४६	—१४ ५६	राजपुर	२३ १९	८३ २६	+३ ४४	सबलगढ	२६ १५	७७ २४	—२० २४
बरखेड़ा कलां	२३ ५३	७५ २५	—२८ २०	भिलई	२१ १३	८१ २६	—४ १६	राजिम	२० ५८	८१ ५५	—२ २०	सरदारपुर	२२ ३९	७४ ५९	—३० ४४
बरगवा	२४ २३	८२ २७	—० १२	भैंसदेही	२१ ३८	७७ ३७	—१९ ३२	रामनगर (मण्डला)	२२ ३६	८० ३१	—७ ५६	सागर	२३ ५०	७८ ५०	—१४ ४०
बरदी	२४ ३२	८२ २३	—० २८	भोपाल	२३ १६	७७ २४	—२० २४	रामनगर (रीवां)	२४ १२	८१ ९	—५ २४	सांची	२३ २९	७७ ४४	—१९ ४
बरनगर	२३ ३	७५ २३	—२८ २८	भोपाल पत्तनम्	१८ ५१	८० २४	—८ २४	रामपुरा	२४ २८	७५ २७	—२८ १२	सारंगपुर	२३ ३५	७६ २८	—२४ ८
बरवानी	२२ २	७४ ५४	-३० २४	मऊगंज	२४ ४१	८१ ५३	—२ २८	रामाकोना	२१ ४३	७८ ५२	—१४ ३२	सारनगढ़	२१ ३६	८३ ७	+२ २८
बरवाह	२२ १६	७६ ४	-२५ ४४	मकराई	२२ ४	७७ ६	—२१ ३६	रामनुजगंज	२३ ४८	८३ ४२	+४ ४८	सिरोज	२४ ७	७७ ४२	—१९ १२
बलोदा बाजार	२१ ३८	८२ १६	—० ५६	मझगवां	२४ ५५	८० ४७	—६ ५२	रायगढ़	२१ ५४	८३ २६	+३ ४४	सिहोरा	२३ २९	८० ७	—९ ३२
बस्तर	१९ १२	८१ ५७	—२ १२	मण्डला	२२ ३७	८० २२	—८ ३२	रायपुर	२१ १५	८१ ४१	—३ १६	सीतामउ	२४ १	७५ २३	—२८ २८
बाम्ही	१९ ३२	८१ ३८	—३ २८	मनावर	२२ १८	७५ ६	—२९ ३६	रायसेन	२३ १८	७७ ४७	—१८ ५२	सीधी	२४ २३	८१ ५४	—२ २४
बारासेओनी	२१ ४६	८० ३	—९ ४८	मन्दसौर	२४ ५	७५ ६	—२९ ३६	राहतगढ़	२३ ४७	७८ २२	—१६ ३२	सीहोर	२३ १२	७७ ६	—२१ ३६
बालाघाट	२१ ४८	८० १५	—९ ०	महाराजपुर	२५ १	७९ ४३	—११ ८	रीवां	२४ ३१	८१ १९	—४ ४४	सुबसरा	२४ ३	७५ ३८	—२७ २८
बासोदा	२३ ५२	७७ ५५	-१८ २०	महाराजपुर डीह	२१ ५८	८१ ४	—५ ४४	रेहली	२३ ३८	७९ ५	—१३ ४०	सूरजपुर	२३ १३	८२ ५३	+१ ३२
बिच्छिया	२२ २७	८० ४२	—७ १२	महासमुन्द	२१ ६	८२ ६	—१ ३६	लक्ष्मणपुर	२२ ५८	८३ ३	+२ १२	सेओनी	२२ ६	७९ ३५	—११ ४०
बिजयपुर	२६ ४	७७ ४	—२० ३२	महिदपुर	२३ ३०	७५ ३८	—२७ २८	लाखनादाने	२२ ३६	७९ ३५	—११ ४०	सेआनी मालवा	२२ २८	७७ २९	—२० ४
बिजावर	२४ ३८	७९ ३२	—११ ५२	महू	२२ ३३	७५ ४५	—२७ ००	लश्कर	२६ १२	७८ १२	—१७ १२	सेओन्धा	२६ १३	७८ ४७	—१४ ५२
बिलासपुर	२२ ५	८२ ९	—१ २४	महेन्द्रगढ़	२३ १२	८२ १२	—१ १२	लामटा	२२ ८	८० ७	—९ ३२	सेओरी नारायण	२१ ४४	८२ ३५	+० २०
बीजापुर	१८ ४८	८० ४९	—६ ४४	महेश्वर	२२ ११	७५ ३५	—२७ ४०	लालबाग	२१ २०	७६ १२	—२५ १२	सेंधवा	२१ ४२	७५ ६	—२९ ३६
बीना	२४ १०	७८ १२	-१७ १२	माकरी	१९ ४५	८१ ५५	—२ २०	लुगासी	२५ ५	७९ ३४	—११ ४४	सोनहाट	२३ २९	८२ ३०	० ०
बीरसिंहपुर	२४ ४८	८० ५९	—६ ४	मानपुर	२२ २६	७५ ३७	—२७ ३२	वारासिओनी	२१ ४६	८० ३	—९ ४८	सोनावल	२४ ०	८३ २३	+३ ३२
बुरहानपुर	२१ १८	७६ १४	—२५ ४	मुरवाड़ा	२३ ५१	८० २२	—८ ३२	विदिशा	२३ ३२	७७ ५०	—१८ ४०	सोहागपुर	२२ ४२	७८ १३	—१७ ८
बेरनूर	१९ ४१	८१ २७	—४ १२	मुरैना	२६ २३	७८ ४	—१७ ४४	वेटेंहिया	१९ ५२	८० ४०	—७ २०	सोहावल	२४ ३५	८० ४७	—६ ५२
बैकुण्ठपुर	२३ १५	८२ ३३	+० १२	मुलताई	२१ ४७	७८ १५	—१७ ०	शहडोल	२३ २०	८१ २२	—४ ३२	सौसर	२१ ३८	७८ ४८	—१४ ४८
बैतूल	२१ ५५	७७ ५४	-१८ २४	मोहम्मदगढ़	२३ ३९	७८ १०	—१७ २०	शाजापुर	२३ २६	७६ १८	—२४ ४८	हट्टा	२४ ७	७९ ३६	—११ ३६
बैरागढ़	२३ १५	७७ २०	-२० ४०	मैनपुर खुर्द	२० १८	८२ १५	—१ ०	शाहपुर	२१ १३	७६ १३	—२५ ८	हरदाखास	२२ २१	७७ ६	—२१ ३६
बोरिया टिब्बा	२० २८	८० ५३	—६ २८	मैहर	२४ १६	८० ४९	—६ ४४	शाहपुरा	२३ १०	८० ४३	—७ ८	होशंगाबाद	२२ ४६	७७ ४५	—१९ ०

मध्य प्रदेश के नगरों में लग्नों का समाप्ति काल

चण्डीगढ़ की दैनिक लग्न सारणी से अभीष्ट लग्न का समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.)लेकर उसमें नीचे सारणी से अभीष्ट नगर के आगे लिखे उस लग्न के मिनटों को चिह्नानुसार जोड़ने या घटाने से अभीष्ट नगर में उस लग्न का समाप्ति काल (भा.स्टैं.टा.) ज्ञात हो जाएगा। जैसे- दैनिक लग्न सारणी में १जनवरी को कुम्भ का समाप्ति काल (भा.स्टैं.टा.)११ घं. २२ मि. है, इसमें से सागर के आगे कुम्भ के नीचे इस सारणी में लिखे- ९ मि. चिह्नानुसार घटाने पर १ जन. को सागर में कुम्भ का समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.)११ घं. १३ मि.मिला।

लग्न / नगर	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुम्भ मि.	मीन मि.
अम्बिकापुर	-१२	-९	-११	-१७	-२४	-३१	-३८	-४३	-४१	-३४	-२७	-१९
इटारसी	+११	+१५	+१३	+७	-२	-१०	-१७	-२२	-२०	-१३	-४	+३
इन्दौर	+१८	+२२	+२०	+१४	+५	-३	-१०	-१५	-१३	-६	+३	+१०
उज्जैन	+१२	+२१	+१९	+१३	+६	-१	-८	-१३	-११	-४	+३	+११
ओरछा	+२	+४	+३	-१	-७	-१२	-१७	-२०	-१९	-१४	-८	-३
कटनी	-२	+१	-१	-६	-१३	-१९	-२६	-३०	-२८	-२२	-१५	-९
खजुराहो	-१	+१	०	-५	-११	-१७	-२३	-२७	-२५	-२०	-१३	-७
खण्डवा	+१७	+२१	+१९	+१२	+४	-५	-१३	-१८	-१६	-८	०	+९
खरगोन	+२०	+२४	+२२	+१५	+७	-२	-१०	-१५	-१३	-५	+३	+१२
गुना	+९	+११	+१०	+५	-१	-७	-१३	-१७	-१५	-१०	-३	+३
ग्वालियर	+३	+५	+४	०	-४	-९	-१३	-१६	-१५	-११	-६	-२
छतरपुर	-१	+१	०	-४	-१०	-१५	-२०	-२३	-२२	-१७	-११	-६
छिन्दवाड़ा	+७	+११	+९	+२	-६	-१५	-२३	-२८	-२६	-१८	-१०	-१
जबलपुर	+१	+४	+२	-४	-११	-१८	-२५	-३०	-२८	-२१	-१४	-६
झाबुआ	+२३	+२७	+२५	+१९	+१०	+२	-५	-१०	-८	-१	+८	+१५
टीकमगढ़	+३	+५	+४	-१	-७	-१३	-१९	-२३	-२१	-१६	-९	-३
तिरोदी	+४	+८	-६	-१	-९	-१८	-२६	-३१	-२९	-२१	-१३	-४
दतिया	+३	+५	+४	०	-५	-११	-१५	-१८	-१७	-१२	-७	-२
दमोह	+१	+४	+२	-३	-१०	-१६	-२३	-२७	-२५	-१९	-१२	-६
दुर्ग	-१	+२	+१	-७	-१६	-२६	-३५	-४०	-३८	-२९	-२०	-११
देवास	+१६	+१९	+१७	+११	+४	-३	-१०	-१५	-१३	-६	+१	+९
धमतरी	-२	+१	०	-८	-१७	-२७	-३६	-४१	-३९	-३०	-२१	-१२
धार	+२०	+२४	+२२	+१६	+७	-१	-८	-१३	+११	-४	+५	+१२
नरसिंहपुर	+४	+७	+५	-१	-८	-१५	-२२	-२७	-२५	-१८	-११	-३
नागदा	+१९	+२२	+२०	+१४	-७	०	-७	-१२	-१०	-३	+४	+१२
नीमच	+१९	+२१	+२०	+१५	+९	+३	-३	-७	-५	०	+७	+१३
पंचमढ़ी	+८	+१२	+१०	+४	-५	-१३	-२०	-२५	-२३	-१६	-७	०
पन्ना	-२	०	-१	-६	-१२	-१८	-२४	-२८	-२६	-२१	-१४	-८
बस्तर	०	+५	+२	-७	-१८	-२९	-४०	-४६	-४३	-३३	-२२	-११
बालाघाट	+४	+७	+६	-२१	-१	-२१	-३०	-३५	-३३	-२४	-१५	-६
बिलासपुर	-६	-२	-४	-११	-१९	-२८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

लग्न / नगर	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुम्भ मि.	मीन मि.
बुरहानपुर	+२०	+२३	+२२	+१४	+५	-५	-१४	-१९	-१७	-८	+१	+१०
बेतुल	+११	+१५	+१३	+६	-२	-११	-१९	-२४	-२२	-१४	-६	+३
भिण्ड	+१	+२	+१	-२	-६	-१०	-१५	-१७	-१६	-१२	-८	-४
भिलाई	-१	+२	+१	-७	-१६	-२६	-३५	-४०	-३८	-२९	-२०	-११
भोपाल	+११	+१४	+१२	+६	-१	-८	-१५	-२०	-१८	-११	-४	+४
भोपालपत्तनम	+६	+११	+८	-१	-१२	-२३	-३४	-४०	-३८	-२७	-१६	-५
मण्डला	०	+४	+२	-४	-१३	-२१	-२८	-३३	-३१	-२४	-१५	-८
मन्दसौर	+१९	+२२	+२०	+१५	+८	+२	-५	-९	-७	-१	+६	+१२
महू	+१९	+२३	+२१	+१५	+६	-२	-९	-१४	-१२	-५	+४	+११
मुरैनाँ	+३	+४	+३	०	-४	-८	-१३	-१५	-१४	-१०	-६	-२
मोरार	+३	+४	+३	०	-४	-८	-३	-१५	-१४	-१०	-६	-२
रतलाम	+२०	+२३	+२१	+१५	+८	+१	-६	-११	-९	-२	+५	+१३
राजगढ़	+१२	+१५	+१३	+८	+१	-५	-१२	-१६	-१४	-८	-१	+५
राजनन्दगाँव	०	+३	+२	-६	-१५	-२५	-३४	-३९	-३७	-२८	-१९	-१०
रायगढ़	-११	-७	-९	-१६	-२४	-३३	-४१	-४६	-४४	-३६	-२८	-१९
रायपुर	-२	+१	०	-८	-१७	-२७	-३६	-४१	-२८	-३०	-२१	-१२
रायसेन	+९	+१२	+१०	+४	-३	-१०	-१७	-२२	-२०	-१३	-६	+२
रीवां	-६	-४	-५	-१०	-१६	-२२	-२८	-३२	-३०	-२५	-१८	-१२
विदिशा	+९	+१२	+१०	+४	-३	-१०	-१७	-२२	-२०	-१३	-६	+२
शहडोल	-५	-२	-४	-१०	-१७	-२४	-३१	-३६	-३४	-२७	-२०	-१२
शाजापुर	+१५	+१८	+१६	+१०	+३	-४	-११	-१६	-१४	-७	-०	+८
शिवपुरी	+६	+८	+७	+३	-३	-८	-१३	-१६	-१५	-१०	-४	+१
श्योपुर	+१०	+१२	+११	+७	+२	-४	-८	-११	-१०	-५	०	+५
सतना	-५	-३	-४	-९	-१५	-२१	-२७	-३१	-२९	-२४	-१७	-११
सागर	+४	+७	+५	०	-७	-१३	-२०	-२४	-२२	-१६	-९	-३
सारनगढ़	-१०	-६	-८	-१५	-२३	-३२	-४०	-४५	-४३	-३५	-२७	-१८
सीतामऊ	+१८	+२१	+१९	+१४	+७	+१	-६	-१०	-८	-२	+५	+११
सीधी	-९	-७	-८	-१३	-१९	-२५	-३१	-३५	-३३	-२८	-२१	-१५
सीहोर	+१२	+१५	+१३	+७	०	-७	-१४	-१९	-१७	-१०	-३	+५
सेन्धवा	+२२	+२६	+२४	+१७	+९	०	-८	-१३	-११	-३	+५	+१४
होशंगाबाद	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	-३	-११	-१८	-२३	-२१	-१४	-५	+२

जैविक लय-वक्र-पद्धति (Bio-rhythmic Curve Method)

(एक नया रोचक सिद्धान्त, जो यह स्पष्ट करता है कि हमारे कुछ दिन समान रूप से अच्छे और कुछ बुरे क्यों होते हैं ।)

लेखक-प्रियव्रत शर्मा

हम सब अनेक बार ऐसे दिनों में से गुजरते हैं जबकि हमारे सभी काम न जाने क्यों गलत होते जाते हैं, मन चिड़चिड़ा रहता है, सर्वत्र निराशा नजर आती है, शरीर टूटा-टूटा लगता है, हम अपने आपको अस्वस्थ सा अनुभव करते हैं। दूसरी ओर इसके विपरीत ऐसे दिन भी अक्सर आते हैं जबकि हर काम स्वयं ठीक होता जाता है, शरीर में शक्ति और स्फूर्ति रहती है, मन प्रफुल्लित एवं सोत्साह होता है। इन बुरे और अच्छे दिनों का रहस्य स्पष्ट करने वाली एक अद्भुत पद्धति के बारे में हम अपने पाठकों को बतलाएंगे । इस पद्धति को 'जैविक लय-वक्र -पद्धति' (Bio-rhythmic Curve Method) के नाम से पुकारा जाता है। इस पद्धति का विस्तृत विवेचन इस प्रकार है-

वक्र (Curves) तीन तरह के होते हैं—

(१) शारीरिक वक्र (Physical Curve)
(२) भावना वक्र (Emotional Curve)
(३) बौद्धिक वक्र (Intellectual Curve)

(शेष पृष्ठ ६६ पर)

कोष्ठक (१)

आयु के गत वर्ष (लगभग)	शारीरिक	भावना	बौद्धिक	आयु के गत वर्ष (लगभग)	शारीरिक	भावना	बौद्धिक	आयु के गत वर्ष (लगभग)	शारीरिक	भावना	बौद्धिक	आयु के गत वर्ष (लगभग)	शारीरिक	भावना	बौद्धिक
०	२३	२८	३३	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
१	४३	२९	३५	२५	२३	३१	५६	४९	२६	३३	४४	७३	२९	३५	६५
२	४०	३०	३७	२६	४३	३२	५८	५०	२३	३४	४६	७४	२६	३६	३४
३	३७	३१	३९	२७	४०	३३	६०	५१	४३	३५	४८	७५	२३	३७	३६
४	३५	३३	४२	२८	३८	३५	६३	५२	४१	३७	५१	७६	४४	३९	३९
५	३२	३४	४४	२९	३५	३६	६५	५३	३८	३८	५३	७७	४१	४०	४१
६	२९	३५	४६	३०	३२	३७	३४	५४	३५	३९	५५	७८	३८	४१	४३
७	२६	३६	४८	३१	२९	३८	३६	५५	३२	४०	५७	७९	३५	४२	४५
८	२४	३८	५१	३२	२७	४०	३९	५६	३०	४२	६०	८०	३३	४४	४८
९	४४	३९	५३	३३	२४	४१	४१	५७	२७	४३	६२	८१	३०	४५	५०
१०	४१	४०	५५	३४	४४	४२	४३	५८	२४	४४	६४	८२	२७	४६	५२
११	३८	४१	५७	३५	४१	४३	४५	५९	४४	४५	३३	८३	२४	४७	५४
१२	३६	४३	६०	३६	३९	४५	४८	६०	४२	४७	३६	८४	४५	४९	५७
१३	३३	४४	६२	३७	३६	४६	५०	६१	३९	४८	३८	८५	४२	५०	५९
१४	३०	४५	६४	३८	३३	४७	५२	६२	३६	४९	४०	८६	३९	५१	६१
१५	२७	४६	३३	३९	३०	४८	५४	६३	३३	५०	४२	८७	३६	५२	६३
१६	२५	४८	३६	४०	२८	५०	५७	६४	३१	५२	४५	८८	३४	५४	३३
१७	४५	४९	३८	४१	२५	५१	५९	६५	२८	५३	४७	८९	३१	५५	३५
१८	४२	५०	४०	४२	४५	५२	६१	६६	२५	५४	४९	९०	२८	२८	३७
१९	३९	५१	४२	४३	४२	५३	६३	६७	४५	५५	५१	९१	२५	२९	३९
२०	३७	५३	४५	४४	[illegible]	[illegible]	३३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५४	९२	४५	३१	४२
२१	३४	५४	४७	४५	३७	२८	३५	६९	४०	३०	५६	९३	४३	३२	४४
२२	३१	५५	४९	४६	३४	२९	३७	७०	३७	३१	५८	९४	४०	३३	४६
२३	२८	२८	५२	४७	३१	३०	३९	७१	३४	३२	६०	९५	३७	३४	४८

कोष्ठक (२)

तारीख	जनवरी			फरवरी			मार्च			अप्रैल			मई			जून		
	शारीरिक	भावना	बौद्धिक	शारीरिक	भावना	बौद्धिक	शारीरिक	भावना	बौद्धिक	शारीरिक	भावना	बौद्धिक	शारीरिक	भावना	बौद्धिक	शारीरिक	भावना	बौद्धिक
१	१	१	१	९	४	३२	१४	४	२७	२२	७	२५	६	९	२२	१४	१२	२०
२	२	२	२	१०	५	३३	१५	५	२८	२३	८	२६	७	१०	२३	१५	१३	२१
३	३	३	३	११	६	१	१६	६	२९	१	९	२७	८	११	२४	१६	१४	२२
४	४	४	४	१२	७	२	१७	७	३०	२	१०	२८	९	१२	२५	१७	१५	२३
५	५	५	५	१३	८	३	१८	८	३१	३	११	२९	१०	१३	२६	१८	१६	२४
६	६	६	६	१४	९	४	१९	९	३२	४	१२	३०	११	१४	२७	१९	१७	२५
७	७	७	७	१५	१०	५	२०	१०	३३	५	१३	३१	१२	१५	२८	२०	१८	२६
८	८	८	८	१६	११	६	२१	११	१	६	१४	३२	१३	१६	२९	२१	१९	२७
९	९	९	९	१७	१२	७	२२	१२	२	७	१५	३३	१४	१७	३०	२२	२०	२८
१०	१०	१०	१०	१८	१३	८	२३	१३	३	८	१६	१	१५	१८	३१	२३	२१	२९
११	११	११	११	१९	१४	९	१	१४	४	९	१७	२	१६	१९	३२	१	२२	३०
१२	१२	१२	१२	२०	१५	१०	२	१५	५	१०	१८	३	१७	२०	३३	२	२३	३१
१३	१३	१३	१३	२१	१६	११	३	१६	६	११	१९	४	१८	२१	१	३	२४	३२
१४	१४	१४	१४	२२	१७	१२	४	१७	७	१२	२०	५	१९	२२	२	४	२५	३३
१५	१५	१५	१५	२३	१८	१३	५	१८	८	१३	२१	६	२०	२३	३	५	२६	१
१६	१६	१६	१६	१	१९	१४	६	१९	९	१४	२२	७	२१	२४	४	६	२७	२
१७	१७	१७	१७	२	२०	१५	७	२०	१०	१५	२३	८	२२	२५	५	७	२८	३
१८	१८	१८	१८	३	२१	१६	८	२१	११	१६	२४	९	२३	२६	६	८	१	४
१९	१९	१९	१९	४	२२	१७	९	२२	१२	१७	२५	१०	१	२७	७	९	२	५
२०	२०	२०	२०	५	२३	१८	१०	२३	१३	१८	२६	११	२	२८	८	१०	३	६
२१	२१	२१	२१	६	२४	१९	११	२४	१४	१९	२७	१२	३	१	९	११	४	७
२२	२२	२२	२२	७	२५	२०	१२	२५	१५	२०	२८	१३	४	२	१०	१२	५	८
२३	२३	२३	२३	८	२६	२१	१३	२६	१६	२१	१	१४	५	३	११	१३	६	९
२४	१	२४	२४	९	२७	२२	१४	२७	१७	२२	२	१५	६	४	१२	१४	७	१०
२५	२	२५	२५	१०	२८	२३	१५	२८	१८	२३	३	१६	७	५	१३	१५	८	११
२६	३	२६	२६	११	१	२४	१६	१	१९	१	४	१७	८	६	१४	१६	९	१२
२७	४	२७	२७	१२	२	२५	१७	२	२०	२	५	१८	९	७	१५	१७	१०	१३
२८	५	२८	२८	१३	३	२६	१८	३	२१	३	६	१९	१०	८	१६	१८	११	१४
२९	६	१	२९	१४	४	२७	१९	४	२२	४	७	२०	११	९	१७	१९	१२	१५
३०	७	२	३०				२०	५	२३	५	८	२१	१२	१०	१८	२०	१३	१६
३१	८	३	३१				२१	६	२४				१३	११	१९			

तारीख	जुलाई			अगस्त			सितम्बर			अक्तूबर			नवम्बर			दिसम्बर		
	शारीरिक	भावना	बौद्धिक	शारीरिक	भावना	बौद्धिक	शारीरिक	भावना	बौद्धिक	शारीरिक	भावना	बौद्धिक	शारीरिक	भावना	बौद्धिक	शारीरिक	भावना	बौद्धिक
१	२१	१४	१७	६	१७	१५	१४	२०	१३	२१	२२	१०	६	२५	८	१३	२७	५
२	२२	१५	१८	७	१८	१६	१५	२१	१४	२२	२३	११	७	२६	९	१४	२८	६
३	२३	१६	१९	८	१९	१७	१६	२२	१५	२३	२४	१२	८	२७	१०	१५	१	७
४	१	१७	२०	९	२०	१८	१७	२३	१६	१	२५	१३	९	२८	११	१६	२	८
५	२	१८	२१	१०	२१	१९	१८	२४	१७	२	२६	१४	१०	१	१२	१७	३	९
६	३	१९	२२	११	२२	२०	१९	२५	१८	३	२७	१५	११	२	१३	१८	४	१०
७	४	२०	२३	१२	२३	२१	२०	२६	१९	४	२८	१६	१२	३	१४	१९	५	११
८	५	२१	२४	१३	२४	२२	२१	२७	२०	५	१	१७	१३	४	१५	२०	६	१२
९	६	२२	२५	१४	२५	२३	२२	२८	२१	६	२	१८	१४	५	१६	२१	७	१३
१०	७	२३	२६	१५	२६	२४	२३	१	२२	७	३	१९	१५	६	१७	२२	८	१४
११	८	२४	२७	१६	२७	२५	१	२	२३	८	४	२०	१६	७	१८	२३	९	१५
१२	९	२५	२८	१७	२८	२६	२	३	२४	९	५	२१	१७	८	१९	१	१०	१६
१३	१०	२६	२९	१८	१	२७	३	४	२५	१०	६	२२	१८	९	२०	२	११	१७
१४	११	२७	३०	१९	२	२८	४	५	२६	११	७	२३	१९	१०	२१	३	१२	१८
१५	१२	२८	३१	२०	३	२९	५	६	२७	१२	८	२४	२०	११	२२	४	१३	१९
१६	१३	१	३२	२१	४	३०	६	७	२८	१३	९	२५	२१	१२	२३	५	१४	२०
१७	१४	२	३३	२२	५	३१	७	८	२९	१४	१०	२६	२२	१३	२४	६	१५	२१
१८	१५	३	१	२३	६	३२	८	९	३०	१५	११	२७	२३	१४	२५	७	१६	२२
१९	१६	४	२	१	७	३३	९	१०	३१	१६	१२	२८	१	१५	२६	८	१७	२३
२०	१७	५	३	२	८	१	१०	११	३२	१७	१३	२९	२	१६	२७	९	१८	२४
२१	१८	६	४	३	९	२	११	१२	३३	१८	१४	३०	३	१७	२८	१०	१९	२५
२२	१९	७	५	४	१०	३	१२	१३	१	१९	१५	३१	४	१८	२९	११	२०	२६
२३	२०	८	६	५	११	४	१३	१४	२	२०	१६	३२	५	१९	३०	१२	२१	२७
२४	२१	९	७	६	१२	५	१४	१५	३	२१	१७	३३	६	२०	३१	१३	२२	२८
२५	२२	१०	८	७	१३	६	१५	१६	४	२२	१८	१	७	२१	३२	१४	२३	२९
२६	२३	११	९	८	१४	७	१६	१७	५	२३	१९	२	८	२२	३३	१५	२४	३०
२७	१	१२	१०	९	१५	८	१७	१८	६	१	२०	३	९	२३	१	१६	२५	३१
२८	२	१३	११	१०	१६	९	१८	१९	७	२	२१	४	१०	२४	२	१७	२६	३२
२९	३	१४	१२	११	१७	१०	१९	२०	८	३	२२	५	११	२५	३	१८	२७	३३
३०	४	१५	१३	१२	१८	११	२०	२१	९	४	२३	६	१२	२६	४	१९	२८	१
३१	५	१६	१४	१३	१९	१२				५	२४	७				२०	१	२

(पृष्ठ64 का शेष)

शारीरिक वक्र का चक्र (Cycle) २३ दिन, भावना वक्र का २८ दिन और बौद्धिक वक्र का ३३ दिन होता है। ये सभी वक्र-चक्र मानव के जन्मदिन से ही एक साथ प्रारम्भ होते हैं। चक्र के पूर्वार्द्ध में ये सभी वक्र 'उन्नत' और उत्तरार्द्ध में 'अवनत' कहलाते हैं। 'उन्नत-वक्र' को **'धनवक्र'** और 'अवनत वक्र' को **'ऋण वक्र'** भी कहा जाता है ।

जब शारीरिक वक्र धन चल रहा हो तब मनुष्य शरीर में शक्ति, स्फूर्ति एवं उत्साह का अनुभव करता है । जब भावना वक्र धन चल रहा हो तब वह प्रसन्न, कला-प्रेमी, विनोद प्रिय होता है। इसी प्रकार जब बौद्धिक वक्र धन हो तब मनुष्य तर्क- प्रवण तथा गंभीर समस्याओं को अनायास ही सुलझाने में समर्थ होता है ।

जब शारीरिक-वक्र ऋण हो उन दिनों में व्यक्ति शारीरिक दृष्टि से अपने आपको बिना कारण ही श्रान्त अनुभव करता है, थोड़े से काम से ही वह थक जाता है, सर्दी-गर्मी आदि से जल्दी ही प्रभावित होने लगता है। जिन दिनों किसी व्यक्ति का भावना-वक्र ऋण चल रहा हो उन दिनों में उसकी मन:स्थिति अकारण ही खिन्न सी रहती है, थोड़ी-थोड़ी बात पर वह चिड़ने लगता है, निराशा से वह आक्रान्त हो उठता है। जिन दिनों में व्यक्ति का बौद्धिक-वक्र ऋण होता है उन दिनों में वह वाद-विवाद में दूसरे को प्रभावित नहीं कर पाता, समस्याओं के समाधान में वह किसी ठीक निर्णय पर नहीं पहुंच सकता । उसका विवेक उन दिनों शिथिल रहता है ।

प्रत्येक वक्र (शारीरिक, भावना एवं बौद्धिक वक्र) अपने अपने प्रत्येक चक्र में दो दो बार न उन्नत और न ही अवनत होता है। जिस दिन कोई वक्र इस स्थिति में होता है उस दिन को **'संकट दिन'** (critical day) कहा जाता है । किसी भी वक्र के संकट-दिन में व्यक्ति रोगाक्रान्त हो सकता है, मानसिक दृष्टि से वह स्वस्थ नहीं रहता, जिससे वह दुर्घटना का शिकार हो सकता है। इसलिए अपने संकट दिन में उसे कार, मोटर साइकिल आदि नहीं चलाना चाहिए । विदेश की अनेकों एयरलाइन्स कम्पनियां अपने पायलटों के जैविक-लय-वक्रों के चार्ट तैयार करवाती हैं । किसी भी पायलट को उसके संकट-दिन में उड़ान की अनुमति वे नहीं देतीं। उनका अनुभव है कि इससे विमान दुर्घटनाएं पर्याप्त मात्रा में कम हुई हैं। डाक्टरों को भी परामर्श दिया जाता है कि वे अपने एवं रोगी के संकट-दिन में कोई गंभीर आपरेशन न करें। विदेश के अनेक विवाह-परामर्शदाता मनोवैज्ञानिक दम्पतियों को अपने अपने संकट के दिनों में विशेष नियंत्रण से काम लेने का परामर्श देते हैं, अन्यथा उनमें परस्पर भयंकर तनाव हो सकता है ।

ध्यान रहे, संकट के दिनों से एक दिन पहले और एक दिन बाद का दिन भी संकट-दिन के लगभग समान ही माना जाता है। इन दिनों को **'अर्धसंकट'** दिन कहा जाता है । इन अर्धसंकट दिनों में भी वही सावधानी बरतनी आवश्यक है, जो संकट-दिनों में बरती जाती है।

जिस दिन दो या तीनों वक्रों के संकट-दिन एक साथ आ पड़ें, उस दिन व्यक्ति को विशेष रूप से सावधान रहना बहुत आवश्यक है। यही बात अर्धसंकटदिन के बारे में भी समझनी चाहिए।

जिन दिनों में दो या तीनों वक्र एक साथ ऋण चल रहे हों, वे दिन भी संकट-दिन की भांति व्यक्ति के लिए अशुभ माने गए हैं, इस स्थिति में भी व्यक्ति दुर्घटना आदि का शिकार हो सकता है ।

धन, ऋण वक्र एवं संकट-दिन का ज्ञान- कौन सा वक्र किस दिन धन, किस दिन ऋण होगा, संकट-दिन और अर्धसंकटदिन कब पड़ेंगे - इसकी गणित के लिए विदेशों में calculators मिलते हैं , जो व्यक्ति की जन्मतारीख के अनुसार यह तुरन्त निर्णय कर देते हैं। क्योंकि इस प्रकार के calculators सभी लोग खरीद नहीं सकते, भारत में वे अभी सुलभ भी नहीं हैं, अत: अपने पाठकों की सुविधा के लिए हम यहां तीन कोष्ठक (सारणियां) दे रहे हैं, जिनकी सहायता से किसी प्रकार की गणित के बिना ही शारीरिक, भावना, बौद्धिक-तीनों वक्रों को स्थिति(धन, ऋण, संकट-दिन, अर्धसंकट दिन) सरलता से जानी जा सकती है। ध्यान रहे, इन तीन कोष्ठकों द्वारा वक्रों की स्थिति निकालने में उतना ही टाईम लगता है, जितना calculator लगाता है। ये कोष्ठक मैंने स्वयं तैयार किए हैं । इन कोष्ठकों से वक्रों की स्थिति का निर्णय इस प्रकार कीजिए -

अपने जन्म के ईस्वी सन् को अभीष्ट ई. सन् में से घटाने पर आपकी आयु के लगभग गतवर्ष प्राप्त होंगे । इन वर्षों के आगे कोष्ठक (१) के शारीरिक, भावना, बौद्धिक वाले स्तम्भों में लिखी संख्याएं उठाकर इन्हें अलग-अलग नोट कर लें। फिर कोष्ठक (२) में अपनी जन्म तारीख के आगे शारीरिक, भावना, बौद्धिक वाले स्तम्भों में लिखी संख्याएं लेकर इन्हें कोष्ठक

वाली संख्या, भावना वाली संख्या में से भावना वाली और बौद्धिक वाली में से बौद्धिक वाली संख्या घटा दें)। ये तीनों संख्याएं आपके अभीष्ट ई. सन् की १ जन. को शारीरिक, भावना और बौद्धिक वक्रों के '**चक्रशेष**' हैं। आप जिस तारीख को इन वक्रों की स्थिति जानना चाहते हैं उस तारीख के आगे कोष्ठक (२)में ही लिखी तीन (शारीरिक, भावना, बौद्धिक स्तम्भों वाली) संख्याएं लेकर उन्हें अभीष्ट ई. सन् की १ जनवरी के तीनों (शारीरिक, भावना, बौद्धिक)वक्रों के चक्रशेषों में जोड़ दें। इस प्रकार आपकी अभीष्ट तारीख को शारीरिक, भावना, बौद्धिक वक्रों के चक्रशेष मिल जाएंगे। इन चक्रशेषों द्वारा कोष्ठक (३) से तीनों वक्रों के फल धन (+) या ऋण (-) जान लीजिए । इस कोष्ठक में फल वाले स्तम्भ में यदि फल शून्य (०)मिले तो 'संकट-दिन' समझना चाहिए। यहां १ संख्या 'अर्धसंकट दिन' बतलाती है ।

उदाहरण- देवेन्द्र शर्मा का जन्म ई. सन् १९४५ की ५ मार्च को हुआ था । सन् १९८१ की १५ अप्रैल को इसके शारीरिक, भावना और बौद्धिक वक्रों की स्थिति ज्ञात कीजिए —

जन्म सन् १९४५ को अभीष्ट सन् १९८१ में से घटाने पर ३६ वर्ष (आयु के लगभग गत वर्ष) मिले। कोष्ठक (१) में ३६ वर्ष के आगे शारीरिक ३९, भावना ४५, बौद्धिक ४८ मिले। कोष्ठक (२) में जन्म तारीख ५ मार्च के आगे शारीरिक १८ भावना ८, बौद्धिक ३१ प्राप्त हुए । इन्हें कोष्ठक (१) से मिली संख्याओं में से क्रमशः घटाने पर शारीरिक २१, भावना ३७, बौद्धिक १७ हुए । ये १ जनवरी १९८१ को वक्रों के चक्रशेष हैं। हमारी अभीष्ट तारीख १५ अप्रैल के आगे कोष्ठक (२) में ही शारीरिक १३, भावना २१, बौद्धिक ६ मिले। इन्हें १ जनवरी १९८१ के चक्रशेषों (शारीरिक २१, भावना ३७, बौद्धिक १७) में क्रमशः जोड़ने पर १५ अप्रैल १९८१ई. को शारीरिक के वक्र का चक्रशेष ३४, भावना वक्र का चक्रशेष ५८ और बौद्धिक-वक्र का चक्रशेष २३ हुआ । अब कोष्ठक (३) में शारीरिक वक्र के चक्रशेष ३४ से शारीरिक वक्र ० (अर्थात् संकट दिन), भावना वक्र के चक्रशेष ५८ से भावना वक्र + धन, और बौद्धिक वक्र के चक्रशेष २३ से बौद्धिक वक्र - (ऋण) मिला। इस प्रकार स्पष्ट हो गया कि देवेन्द्र शर्मा के लिए १५ अप्रैल १९८१ ई. बिल्कुल ठीक नहीं है, क्योंकि शारीरिक वक्र की दृष्टि से यह संकट दिन है, और साथ ही बोद्धिक-वक्र भी ऋण चल रहा है, भावना वक्र यद्यपि यहां धन है, तथापि यह दिन 'संकट-दिन' ही है। अतः इस दिन देवेन्द्र जी को सतर्क रहना होगा। कोष्ठक (३) से पता चलता है कि १५ अप्रैल से आगे पीछे वाले दिन भी देवेन्द्र के लिए संकट-दिन एवं अर्ध-संकट दिन हैं। अतः १४,१६,१७ अप्रैल को भी उसे सावधान रहना होगा । ध्यान रहे, तीनों वक्रों में से किसी एक वक्र द्वारा भी यदि 'संकट दिन' या 'अर्धसंकट दिन' सिद्ध हो जाए तो अन्य धन-वक्रों का शुभ प्रभाव लगभग समाप्त हो जाता है ।

(० = संकट दिन) **कोष्ठक (३)** (१= अर्ध-संकट दिन)

शारीरिक				भावना				बौद्धिक			
चक्रशेष			फल	चक्रशेष			फल	चक्रशेष			फल
०	२३	४६	०	०	२८	५६	०	०	३३	६६	०
१	२४	४७	१	१	२९	५७	१	१	३४	६७	१
२	२५	४८	+	२	३०	५८	+	२	३५	६८	+
३	२६	४९	+	३	३१	५९	+	३	३६	६९	+
४	२७	५०	+	४	३२	६०	+	४	३७	७०	+
५	२८	५१	+	५	३३	६१	+	५	३८	७१	+
६	२९	५२	+	६	३४	६२	+	६	३९	७२	+
७	३०	५३	+	७	३५	६३	+	७	४०	७३	+
८	३१	५४	+	८	३६	६४	+	८	४१	७४	+
९	३२	५५	+	९	३७	६५	+	९	४२	७५	+
१०	३३	५६	१	१०	३८	६६	+	१०	४३	७६	+
११	३४	५७	०	११	३९	६७	+	११	४४	७७	+
१२	३५	५८	०	१२	४०	६८	+	१२	४५	७८	+
१३	३६	५९	१	१३	४१	६९	१	१३	४६	७९	+
१४	३७	६०	–	१४	४२	७०	०	१४	४७	८०	+
१५	३८	६१	–	१५	४३	७१	१	१५	४८	८१	१
१६	३९	६२	–	१६	४४	७२	–	१६	४९	८२	०
१७	४०	६३	–	१७	४५	७३	–	१७	५०	८३	०
१८	४१	६४	–	१८	४६	७४	–	१८	५१	८४	१
१९	४२	६५	–	१९	४७	७५	–	१९	५२	८५	–
२०	४३	६६	–	२०	४८	७६	–	२०	५३	८६	–
२१	४४	६७	–	२१	४९	७७	–	२१	५४	८७	–
२२	४५	६८	१	२२	५०	७८	–	२२	५५	८८	–
२३	४६	६९	०	२३	५१	७९	–	२३	५६	८९	–
				२४	५२	८०	–	२४	५७	९०	–
				२५	५३	८१	–	२५	५८	९१	–
				२६	५४	८२	–	२६	५९	९२	–
				२७	५५	८३	१	२७	६०	९३	–
				२८	५६	८४	०	२८	६१	९४	–
								२९	६२	९५	–
								३०	६३	९६	–
								३१	६४	९७	–
								३२	६५	९८	१
								३३	६६	९९	०

समस्याएं और समाधान

लेखक :- प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित्), पंचकूला-134109

[यद्यपि कुछ प्रश्नों के उत्तर 'हां' या 'ना' में भी दिए जा सकते हैं; लेकिन प्रश्न से सम्बद्ध विषय को तर्क, वितर्क, शास्त्रीय प्रमाण आदि द्वारा सुस्पष्ट कर पाठक को यथासम्भव पूरी तरह संतुष्ट करना ही इस स्तम्भ का उद्देश्य है। प्रश्न से सम्बद्ध किसी अन्य ज्ञातव्य विषय को भी प्रसंगवश पाठक को बतलाना ज्ञानवर्धन की दृष्टि से आवश्यक समझकर मैं कभी-कभी कुछ विषयान्तर में जाना भी दोष नहीं समझता । फलित एवं गणित (सिद्धान्त) ज्योतिष से सम्बद्ध अपनी समस्याएं भेजिए। आवश्यक समझने पर डाक से भी उत्तर देने का मेरा पूरा प्रयास रहता है। लेकिन इसके लिए कृपया जवाबी पत्र न डालिए। यदि मुझे आपकी समस्याका उत्तर पत्र द्वारा देना होगा, मैं अपने व्यय पर ही दे दूंगा। मुझे प्रतिदिन अनेक पाठकों की समस्याएं पत्रों द्वारा प्राप्त होती हैं । सीमित समय आदि के कारण मैं प्रत्येक पाठक को पत्र द्वारा समस्याओं का समाधान भेजने के लिए किसी भी तरह बाधित नहीं होना चाहता ।

ध्यान रहे — मैं ज्योतिष का व्यवसाय नहीं करता हूँ, अतः अपनी ज्योतिषसम्बन्धी व्यक्तिगत समस्याओं के लिए मुझे कृपया पत्र न लिखें और न ही इसके लिए मुझे कोई फीस वगैरह ही भेजिए । इस सम्बन्ध में मैं किसी से मिलता भी नहीं हूँ:—प्रियव्रत शर्मा]

यहां इन समस्याओं के समाधान पढ़िए

(i) अयनांश की वार्षिक गति के बारे में इतने मत क्यों हैं?

(ii) अभिजित् का प्रारम्भ व समाप्तिकाल कैसे जानें?

(iii) नींव खोदने व शिलान्यास की दिशा का निर्णय कैसे करें?

(iv) वधूप्रवेश क्या दिन में हो सकता है ?

(v) किसी स्थल का अक्षांश ज्ञात हो तो उसकी पलभा कैसे जानें?

(vi) क्या जातक के जन्म का इष्टकाल ६० घटी से अधिक भी हो सकता है?

(vii) क्या दैनिक लग्नसारणी से सूक्ष्म लग्नसमाप्ति काल जानने के लिए उसमें वार्षिक संस्कार के अलावा अयनांश संस्कार भी करना चाहिए ?

(viii) क्या मुद्दा दशा के जन्मकालिक भुक्त-भोग्य दिनादि का साधन विंशोत्तरी दशा के समान करना चाहिए ?

(ix) त्रिक में क्रूर ग्रह क्या शुभ फल देते हैं?

(x) ग्रहों की दृष्टि का सूक्ष्म साधन प्रकार क्या है?

(xi) सायन एवं निरयण पद्धतियों के अनुसार फलादेश में अन्तर?

(xii) विषम विभाग वाले भाव प्रामाणिक हैं या समान विभाग वाले?

(xiii) मृता नामक तिथियों में पंचांगकार विवाहादि वर्जित क्यों नहीं करते?

(xiv) स्वनवांशस्थ होने से परम नीचांश में स्थित चन्द्र का नीचफल क्या समाप्त नहीं हो जाता ?

समस्या (i) — अयनांश की वार्षिक गति ६०", ५४," ५०".२३, ५०." २६, ५०." २७ एवं ५०." ३ भी लिखी मिलती है। इसकी वास्तविक वार्षिक गति है कितनी?

(ii) — शून्य अयनांशवर्ष कौन सा है?

— श्री राजेन्द्र कुमार रत्न, (एडवोकेट),
शाही समाधां, पटियाला

समाधान (i) अयनांश (या अयन बिन्दु) की वार्षिक गति प्रतिवर्ष बहुत थोड़ी थोड़ी बढ़ती जा रही है, एक शताब्दी में यह ०''.०२२२ बढ़ती है। सन् १९९८ में इसकी वार्षिक गति ५०''.२८ है। ध्यान रहे- यह गति मध्यम है। अयन की स्पष्ट गति में राहु की स्थिति के अनुसार कुछ विकलाओं की वृद्धि और न्यूनता प्रतिवर्ष होती रहती है। अयनांश की ६०'' और ५४'' विकला वार्षिक गति हमारे प्राचीन ज्योतिष ग्रन्थों में दी गई है, जो स्थूल है।

(ii) शून्य अयनांश वर्ष का निर्णय संभव नहीं है, क्योंकि हमारे प्राचीन भिन्न-भिन्न सिद्धांत एवं करण ग्रन्थों द्वारा यह वर्ष भिन्न-भिन्न आता है। इन ग्रन्थकारों ने मेषारम्भ बिन्दु की स्थिति अलग अलग मानी है, जिससे इनके शून्य अयनांशवर्ष अलग अलग सिद्ध होते हैं।

समस्या— नक्षत्र २७ ही माने गए हैं, लेकिन अनेकत्र २८ नक्षत्रों की भी चर्चा है, जिसमें 'अभिजित्' नामक नक्षत्र को समाविष्ट किया गया है। पंचांग में अश्विनी आदि २७ नक्षत्रों के प्रारंभ और समाप्ति काल तो दिए रहते हैं; लेकिन अभिजित् के नहीं। अभिजित् नक्षत्र के प्रारम्भ - समाप्तिकाल कैसे ज्ञात करें ?

—प्रो. निर्मल कुमार गोयनका, बिहार विश्वविद्यालय,
सीतामढ़ी (बिहार)।

समाधान— सामान्यत: नक्षत्र २७ ही माने जाते हैं। लेकिन कुछ स्थलों पर (अबकडा चक्र, सप्त-पंचशलाकावेध आदि में) अभिजित् को मिलाकर २८ नक्षत्र मानकर कुछ फलित-ज्योतिषसम्बन्धी निर्णय किए जाते हैं। अभिजित् नक्षत्र उषा के चतुर्थ चरण और श्रवण के पूर्ववर्त्ती १५ वें भाग से बनाया गया है। जहां २८ नक्षत्र मानकर कोई निर्णय किया जाता है वहाँ उ.षा. नक्षत्र के चतुर्थ चरण और श्रवण नक्षत्र के प्रारम्भिक १५ वें भाग को लेकर उसे अभिजित् नक्षत्र का मान (पूर्ण भोग) माना जाता है। स्पष्ट है- जहां २८ नक्षत्रों के आधार पर (यानी-साभिजित् गणना के अनुसार) निर्णय करने का प्रसंग आता है, वहां उ.षा. नक्षत्र ८ रा. २६ अं. ४० क. से ९ रा. ६ अं. ४० तक, अभिजित् ९ रा..६ अं.४० क. से ९ रा.१० अं.५३ क.२० वि. तक और श्रवण ९ रा .१० अं.५३ क.२० वि. से ९ रा. २३ अं. २० क. तक होगा। इससे स्पष्ट है कि अभिजित् गणना वाले प्रसंगों में उ.षा. और श्रवण नक्षत्र का मान १३ अं. २० क. से कम माना गया है।

दैनिक (चन्द्र) नक्षत्रों में उ.षा. के चतुर्थ चरण का प्रारम्भ और श्रवण के पूर्ववर्त्ती १५वें भाग का समाप्तिकाल ही अभिजित् का क्रमश: प्रारम्भ और समाप्तिकाल हैं।

आकाश में उ.षा. और श्रवण के तारामण्डलों के बीच क्रान्तिवृत्त से लगभग ६१ अंश उत्तर की ओर अभिजित् (Vega) नामक तारा देखा जा सकता है, जो काफी चमकदार है।

समस्या— किस दिशा से नींव (खात) खोदना प्रारम्भ करना चाहिए— इस बारे में कृपया स्पष्ट सुबोध्य निर्णय दें?

— श्री भगवतप्रसाद शर्मा, पो. बहावड़ी
(मु.नगर)(उ.प्र.)

समाधान— खात (नींव) खोदते समय सूर्य की राशि क्या है, यह जानकर नींव को किस दिशा से खोदना प्रारम्भ किया जाए— यह नीचे दिए गए कोष्ठक से आप सरलतापूर्वक जान सकते हैं। ध्यान रहे- नींव खोदना पूर्व आदि दिशाओं से नहीं, अपितु आग्नेयी आदि उप-दिशाओं से ही प्रारम्भ किया जाता है,। देवालय, गृह, और तालाब की नींव खोदने की दिशाएं भिन्न भिन्न होती हैं- यह भी ध्यान रहे।

खात प्रारम्भ करने की दिशा

सूर्य की राशि	देवालय के लिए खात के प्रारम्भ की दिशा	गृह के लिए खात के प्रारम्भ की दिशा	तालाब के लिए खात के प्रारम्भ की दिशा
मेष	आग्नेयी	वायवी	ऐशानी
वृष	आग्नेयी	नैर्ऋती	ऐशानी
मिथुन	ऐशानी	नैर्ऋती	ऐशानी
कर्क	ऐशानी	नैर्ऋती	वायवी
सिंह	ऐशानी	आग्नेयी	वायवी
कन्या	वायवी	आग्नेयी	वायवी
तुला	वायवी	आग्नेयी	नैर्ऋती
वृश्चिक	वायवी	ऐशानी	नैर्ऋती
धनु	नैर्ऋती	ऐशानी	नैर्ऋती
मकर	नैर्ऋती	ऐशानी	आग्नेयी
कुम्भ	नैर्ऋती	वायवी	आग्नेयी
मीन	आग्नेयी	वायवी	आग्नेयी

यह भी जान लेना चाहिए कि शल्यशोधन के निमित्त भूखनन प्रारम्भ करने के लिए भी इस नियम का पालन करना जरूरी है ।

समस्या— क्या वधूप्रवेश रात्रि में ही होना चाहिए?

-श्री रामभद्र मिश्र, मुंगेर (बिहार)

समाधान— 'मुहूर्त मार्त्तण्ड' और 'धर्मसिन्धु' आदि में वधूप्रवेश का काल स्पष्टतः रात्रि में लिखा है —

विवाहात् षोडशदिनान्तः समदिनेषु पञ्चम-सप्तम-नवमदिनेषु च रात्रौ स्थिरलग्ने नूतन-भिन्न गृहे वधूप्रवेशः शुभः। (धर्मसिन्धु)

'मुहूर्त्तमार्त्तण्ड' का वचन है —

अनवमन्दिरे निशि वधूसंवेशमंगे स्थिरे ।

लेकिन 'मुहूर्त्त चिन्तामणि,' 'ज्योतिर्विदाभरण' तथा अधिकतर संहिताकार इस बारे में मूक है कि 'वधूप्रवेश रात्रि में किया जाए या दिन में । इससे यही परिणाम निकलता है कि स्थानीय परम्परानुसार वधूप्रवेश दिन एवं रात्रि-दोनों समय शुभ है ।

समस्या (i) — हि.प्र. के प्रत्येक अक्षांश की पलभा लिखने की कृपा करें। मैं इससे अपने अभीष्ट हिमाचल-प्रदेशीय नगरों की सूक्ष्म लग्नसारणियां बनाना चाहता हूं।

(ii) —यह सभी ज्योतिषी जानते हैं कि अहोरात्र का मान (duration) ६० घड़ी होता है। ज्योतिषशास्त्र भी अहोरात्र को षष्टिघट्यात्मक ही बतलाता है। लेकिन पंचांग को देखने से ज्ञात होता है कि एक सूर्योदय से दूसरे अनन्तरवर्त्ती सूर्योदय तक का काल (अहोरात्र) कभी २४ घं. (६०घ.) से अधिक और कभी कम भी होता है,जिससे सूर्योदय से यत्किञ्चित् पहले पैदा होने वाले जातक का जन्मेष्ट कई बार ६० घड़ी से कुछ पल अधिक भी हो जाता है। लेकिन दैवज्ञ लोग परम्परया यही मानते आए हैं कि जन्मेष्ट ६० घड़ी से कम ही रहा करता है। इस बारे में आपसे स्पष्टीकरण चाहता हूं।'

—पं. श्रीपूरण दत्त शर्मा, आयुर्वेदाचार्य,

अक्षांश	पलभा	अक्षांश	पलभा
	अं. व्यं.		अं.व्यं.
२९	६/३६	३२	७/२६
३०	६/५२	३३	७/४४
३१	७/०९	३४	८/०२

यदि किसी स्थल का अक्षांश ज्ञात हो तो उसकी अंगुलात्मक पलभा इस सूत्र से जानी जा सकती है —

अंगुलात्मक पलभा = १२ × स्पर्शरेखा (अक्षांश)

अर्थात् यदि अभीष्टनगरीय अक्षांश की स्पर्शरेखा (स्पर्शज्या) को १२ से गुणा कर दें, तो उस नगर की अंगुलात्मक पलभा ज्ञात हो जाएगी। यदिscientific calcutiator का प्रयोग किया जाए तो इस सूत्र से किसी भी स्थल (अक्षांश) की पलभा दो सेकण्ड में जानी जा सकती है ।

(ii) एक सूर्योदय से अनन्तरवर्त्ती दूसरे सूर्योदय तक के काल को सावन दिन कहा जाता है। क्योंकि सूर्य की गति प्रतिदिन बदलती रहती है, अतः पूर्वी क्षितिज पर उसके पहुंचने (उदय होने) का काल प्रतिदिन समान नहीं रहता । इसलिए नक्षत्रविदों ने मध्यममान से सावनदिन की अवधि (duration) निश्चित करके उसे बराबर-बराबर २४ या ६० भागों में बांट दिया। इन २४ भागों को २४ मध्यम सावन (म.सा.) घण्टे और ६० भागों को ६० म.सा.घड़ियां माना गया । इस प्रकार म.सा. दि.(मध्यममान वाला सावनदिन) २४ घंटों या ६० घड़ियों का निश्चित हो गया । हमारी आजकल की घड़ियां जिन २४ घण्टों को बतलाती हैं, वे घण्टे इस म.सा.दि. के ही हैं। जो सावनदिन सूर्योदय से सूर्यादय तक के काल से बनता है वह स्पष्ट सावन दिन (स्प.सा.दि.) कहलाता है। स्प.सा. दि. म.सा.दि. से कभी कुछ मिनट/सेकण्ड छोटा और कभी बड़ा होता है। वर्ष में केवल दो -तीन ही दिन ऐसे होते हैं जबकि मध्यम और स्पष्ट सावन दिनों के मान में कोई अन्तर नहीं होता (या अन्तर लगभग शून्य होता है)। स्प.सा.दि. को भी नक्षत्रविदों ने बराबर-बराबर २४ घंटों या ६० घड़ियों में विभाजित किया है। इस स्प.सा.दि. की घड़ी का मान मध्यम सावन दिन की घड़ी से कभी छोटा और कभी बड़ा होता

प्रकार के काल को बतलाने वाली आजकल की ये प्रचलित घड़ियां (watches) म.सा.दि. के काल के अनुसार ही चलती हैं। ये घड़ियां प्रत्येक दिन को समानमान वाले २४-२४ घण्टों में विभाजित करती हैं। पूर्वापरवर्त्ती दो दिनों के सूर्योदयों के बीच का अन्तर यदि हमारी इन घड़ियो के अनुसार २४ घण्टों से अधिक है तो समझना चाहिए कि उस दिन स्प.सा.दि. म.सा.दि की समाप्ति के बाद समाप्त होगा। यदि सूर्योदयों के बीच का अन्तर २४ घण्टों से कम है तो समझें कि वहाँ म.सा.दि. स्प.सा.दि. के बाद समाप्त होगा।

ध्यान रहे- हम व्यवहार में आजकल स्पष्ट सावनकाल (अर्थात् स्प.सा.का. के घं.मि. या घड़ी-पलों) को प्रयोग में बिल्कुल नहीं लाते, अपितु हम म.सा. काल के घं. मि. या घड़ी-पलों को ही प्रयोग में लाते हैं, क्योंकि हमारी घड़ियां म.सा.का.(मध्यमसावन काल) को ही बतलाती हैं। स्प.सा.का. बतलाने वाली घड़ी बनाई नहीं जा सकती, क्योंकि स्प.सा.का. के घं.मि. या घ.प. के मान प्रतिदिन बदलते रहते हैं।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि यदि पूर्वदिन के सूर्योदय से परदिन का सूर्योदय हमारी घड़ियों के अनुसार (म.सा. का. के अनुसार) १ मिनट बाद में होता है तब परदिन के सूर्योदय से $\frac{१}{२}$ मि. पहिले पैदा होने वाले जातक का जन्मेष्ट ६० घ. १$\frac{१}{४}$ प.हो जाएगा। यह इष्ट म.सा.का. के अनुसार होगा। स्प.सा.का. के अनुसार इसका जन्मेष्ट ५९ घ. ५८$\frac{३}{४}$ प.माना जाएगा, क्योंकि यहाँ स्प.सा.दि. की समाप्ति (यानी स्प.सा. का. के अनुसार ६० घ. की पूर्त्ति) तो परदिन के सूर्योदय पर ही होगी।

यह ध्यातव्य है- आज के युग में जहाँ यंत्र घड़ियां (modern watches) ही कालमापन का साधन हैं, जातक का जन्मेष्ट, पंचांग में तिथ्यादि का समाप्तिकाल तथा दिनमान आदि म.सा.का. के अनुसार ही बनाए जाते हैं। स्प.सा.का. का प्रयोग अब विश्व में कहीं भी नहीं किया जाता, क्योंकि वह व्यवहार में सुविधा-जनक नहीं है।

क्योंकि अब सर्वत्र पंचांगों में म.सा. का. का ही प्रयोग किया जाता है, अत: इसके प्रयोग से उत्पन्न महत्त्वपूर्ण ज्ञातव्य कुछ बातें, जिन्हें ज्योतिषी अक्सर नहीं जानते, नीचे दी जा रही हैं—

(नीचे जिन घं.मि. या घड़ी -पलों की चर्चा है, वे सभी, जहां विशेष निर्देश नहीं है, म.सा.का. के हैं-यह ध्यान रखें)

(१) जातक का जन्मेष्ट कई बार ६० घड़ी से अधिक भी हो सकता है।

(२) अहोरात्र का मान ६० घड़ी से कभी कम और कभी ज्यादा होता है। ६० घड़ी का अहोरात्र वर्ष में दो-तीन बार ही घटित होता है। इसलिए दिनमान को ६० घ. में से घटा कर बनाए गए रात्रिमान में कुछ पलों की अशुद्धि अक्सर रहती है। पूर्वापर दिन के सूर्योदय कालों का अन्तर करने पर सूक्ष्म अहोरात्रमान मिलता है, इसमें से दिनमान को घटाने पर सूक्ष्म रात्रिमान प्राप्त होगा।

(३) तिथि, नक्षत्र, योग की वृद्धि होने पर पूर्व सूर्योदय से पर सूर्योदय तक (पूरे अहोरात्र में) व्याप्त तिथि, नक्षत्र, योग के आगे पंचांग में परम्परानुसार ६० घ. ०० प. लिखा रहता है जो, स्प.सा.का. के अनुसार होता है। जबकि म.सा.का. के अनुसार यह कभी ६० घ. से ज्यादा और कभी कम भी होता है। जिस तिथि, नक्षत्र, योग की वृद्धि हो उसका पूर्ण भोग निकालते समय इन ६० घ. ०० को म.सा.का. में बदलकर प्रयोग में लाना चाहिए, अन्यथा पूर्ण भोग काल में कुछ पलों (भारत में अधिकतम ३$\frac{१}{४}$ पलों) की अशुद्धि हो सकती है। जिस दिन के आगे पंचांग में तिथि, नक्षत्र, योग के घड़ी पल ६०/०० लिखे हैं, उस दिन और उससे परवर्ती दिन के सूर्योदयों का अन्तर करने पर जो घं.मि. मिलें उनके घ.प. बनाइए। ये घ.प. पंचांग में दिए गए ६० घ. ०० प. का म.सा. का. होगा। यह काल कभी ६० घड़ी से ज्यादा और कभी कम होगा। वृद्धि वाली तिथि, नक्षत्र या योग का पूर्ण भोग बनाने के लिए ६० घ. ०० प. के स्थान पर इसी म.सा.का. को प्रयोग में लाना चाहिए। उदाहरणार्थ देखिए- इसवर्ष (सं. २०५६वि. में) ६ अप्रै. '९९ को ज्येष्ठा की वृद्धि है (ज्येष्ठा के आगे ६० घ. ०० प. लिखा है।) यहाँ ६ और ७ अप्रैल के सूर्योदयकालों का अन्तर २३ घं.५९ मि. (५९ घ. ५७$\frac{१}{२}$ प.)है। अत: यहाँ ज्येष्ठा का पूर्ण भोग (भभोग)बनाते समय ६० घ.०० प. के स्थान पर ५९ घ.५७$\frac{१}{२}$ प. को प्रयोग में लाना चाहिए।

ध्यान रहे- यंत्रघड़ियों का आविष्कार होने से पहिले (ब्रिटिश साम्राज्य से पहिले) भारतीय पंचांगों में तथा अन्यत्र भी सर्वत्र स्प.सा.का. का ही प्रयोग होता था, जिसके अनुसार अहोरात्र (सूर्योदय से सूर्योदय तक की अवधि) को हमेशा ६० घ. ही माना जाता था। इसीलिए तब जातक का जन्मेष्ट कभी ६० घड़ी से अधिक नहीं होता था। तब सूर्योदय से सूर्यास्त तक का घटी-पलात्मक दिनमान भी स्प.सा.का. के अनुसार ही होता था और उस दिनमान को हमेशा ६० घड़ी में से ही घटाने पर रात्रिमान के घट्यादि प्राप्त होते थे, जो स्प.सा.का. के हुआ करते थे। लेकिन अब तो म.सा.का. का प्रयोग होने लगा है, जिसके घण्टा-मिनटों के अनुसार सूर्योदय से सूर्यास्त तक की अवधि (अहोरात्र) का मान छोटा-बड़ा होता रहता है।

समस्या (i) — 'मार्त्तण्ड पंचांग' में दी गई 'दैनिक लग्नसारणी' से अभीष्ट नगर का लग्नसमाप्तिकाल जानने के लिए वार्षिक संस्कार के साथ ''भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल ''कोष्ठक में दिया गया संस्कार दिया जाता है। क्या यहां अयनांश संस्कार देने की भी आवश्यकता है ?

(ii) — क्या मुद्दादशा के जन्मकालिक भुक्त-भोग्य दिनादि का साधन विंशोत्तरी दशा के समान करना चाहिए ?

(iii) — गुरु एक राशि का भोग १ वर्ष में करता है। लेकिन कई बार यह इससे कहीं कम समय में एक राशि भोग लेता है-ऐसा क्यों ?

— श्री कृष्णकुमार, नंगल टाउनशिप (पं.)

समाधान (i)— अयनांश संस्कार की यहां जरूरत नहीं रहती, क्योंकि यह संस्कार वार्षिक संस्कार में समाविष्ट है।

(ii) — इसके लिए सं. २०५१ वि. के ''श्री मार्त्तण्ड पंचांग'' के पृष्ठ ६१-६२ देखें।

(iii)— मध्यममान से गुरु का राशि भोग काल १ वर्ष है, लेकिन स्पष्ट मान से यह न्यूनाधिक होता रहता है ।

समस्या (i) — यदि कोई ग्रह भावकुण्डली में राशि कुण्डली के सापेक्ष अगले या पिछले भाव में चला जाता है तब क्या उस ग्रह के दृश्य भाव भी आगे-पीछे हो जाएंगे ?

(ii) — 'त्रिक स्थानों में पापीग्रह की स्थिति से त्रिक-भावों के विषय (शत्रु, रोग, व्यय) नष्ट या शिथिल हो जाते हैं- ऐसा मैंने कहीं पढ़ा है। लेकिन जातकग्रन्थों में पापी ग्रहों की त्रिक में स्थिति का फल अशुभ लिखा मिलता है । किस मत को प्रामाणिक माना जाए ?

— श्रीकृष्णकान्त भारद्वाज, १४८०/५, ज्योतिनगर, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

समाधान (i)— इसके लिए जातकपद्धतियों में दिया गया दृग्बल साधन देखिए ।

(ii) 'दुष्टप्रकृति के लोग विध्वंसकारी होते हैं, जहां वे जाते हैं, विध्वंस ही करते है'- इस सादृश्य पर यह मत आश्रित है। इसके अनुसार शत्रु, रोग या व्यय भाव में स्थित पापी ग्रह इन भावों के तत्त्वों का विनाश करेगा- यह इस मत के प्रवर्त्तक की कल्पना है। लेकिन यह कल्पना पूर्णतः तर्कसंगत नहीं है। क्योंकि दुष्ट प्रकृति के व्यक्ति गुणों (सद्भावों) का विनाशक होता है, अवगुणों (कुभावों) का तो उसे अधिकतर वर्धक ही पाया जाता है। अतः इस [illegible]

एवं व्यय के पोषक होते हैं। जातकग्रन्थों से भी इसी मत की पुष्टि होती है। जैसे -दैवज्ञाभरण के इस वाक्य में छठे भाव में पापी ग्रहों की स्थिति से शत्रुओं से पीड़ा लिखी है-

षष्ठे वा पापबाहुल्ये शत्रुपीड़ां विनिर्दिशेत्।

दैवज्ञाभरण में ही अष्टम में पापी ग्रह के अभाव तथा शुभग्रह की स्थिति का फल शुभ लिखा है -

स्वोच्चराशिगते रन्ध्रे तस्मिंश्च शुभसंयुते।
पापग्रहविहीने तु जीवनं सुकरं भवेत्॥

इसी तरह द्वादश भाव में भी क्रूर ग्रहों की स्थिति का फल अच्छा नहीं लिखा है—

रव्यारफणि- संयुक्ते व्यये तद्भवनाधिपे।
दुर्बले पापसंदृष्टे देहवैकल्यमादिशेत्॥

इसी प्रकार बृहज्जातक, मानसागरी, फलदीपिका आदि ग्रन्थों में अनेक ऐसे वाक्य मिलते हैं, जो त्रिक में क्रूर ग्रह की स्थिति को अशुभ तथा शुभ ग्रह की स्थिति को शुभ फल देने वाली बतलाते हैं।

किंच यदि लग्न (स्वास्थ्य), चतुर्थ (सुख), पंचम (सन्तान), नवम (भाग्य) आदि भावों के स्वामी क्रूर ग्रह त्रिक में चले जाएं तो स्वास्थ्य आदि का विनाश ही होगा। इस बारे में जातक ग्रन्थ पूर्णतः सहमत हैं। स्पष्ट है- त्रिक में पापी ग्रहों के फल को शुभ बतलाने वाला यह सिद्धांत फलित के सभी आचार्यों के मत के विपरीत होने के कारण तिरस्कार्य है ।

हां, 'उत्तरकालामृत' में निर्दिष्ट त्रिकभाव सम्बन्धी यह योग (सिद्धांत) तो अवश्य कुछ तर्कसंगत लगता है कि कोई त्रिकेश यदि अपने भावके अतिरिक्त किसी अन्य त्रिकभाव में स्थित हो, त्रिकेश से उसका स्थानविनिमय हो या वह त्रिकेशों से दृष्ट, युत हो, किन्त्व अन्य किसी दूसरे भावेश से वह अयुत एवं अदृष्ट रहे तो जातक को वह पर्याप्त शुभ फल देता है। स्पष्ट है- यह योग उस दुर्वृत्त व्यक्ति के विनाश के सादृश्य पर आधारित है जो अन्य स्वतुल्य दुर्वृत्त व्यक्तियों के चंगुल में फंसा हो, जिसे अन्य किसी सुवृत्त या सामान्यवृत्त वाले व्यक्ति की सहायता उपलब्ध न हो। ध्यान रहे- फलित के लगभग सभी योग इसी भान्ति किसी न किसी सादृश्य को दृष्टि में रखकर ही बनाए गए हैं।

समस्या (i)— ' किसी भाव में स्थित कोई ग्रह तृतीयादि भाव में स्थित अन्यग्रह एवं भाव को एकचरण आदि दृष्टि से देखता है'— दृष्टि का यह सिद्धान्त

अत्यंत स्थूल जान पड़ता है। द्रष्टा ग्रह की दृश्य ग्रह/भाव पर दृष्टि की मात्रा का सूक्ष्मतापूर्वक निर्णय कैसे किया जाए?

(ii)— विवाह लग्न में जन्मराशि शुभ नहीं होती- यह 'मुहूर्त्त - चिन्तामणि'कार का मत है। पीयूषधाराकार ने भी इस मत की पुष्टि में कश्यप और नारद के वाक्य उद्धृत किए हैं। लेकिन काशी से प्रकाशित 'नारद संहिता' में इस बारे जो वाक्य मुद्रित मिलता है वह इस प्रकार है :- ''जन्मराश्यद्गमे चैव जन्मलग्नोदये शुभा''। इसका पीयूषधाराकार द्वारा उद्धृत पाठ ''जन्मराश्युद्गमो नैव जन्मलग्नोदयः शुभः'' से विरोध है। किसे प्रामाणिक माना जाए ?

(iii) — सायन एवं निरयण पद्धतियों के आधार पर आदिष्ट फल एकरूप नहीं होता । लेकिन कुछ कुण्डलियों के विश्लेषण से मेरा अनुभव है कि निरयण पद्धति पर आधारित फलादेश यथार्थ होता है। आपका इस विषय में क्या मत है?

(iv) — विषमविभागात्मक और समानमानात्मक भावों में से किसे मान्यता दी जाए?

— श्री मोहनलाल शास्त्री,

पो. तत्तापानी (मण्डी) हि.प्र.

समाधान (i) — इसके लिए जातकपद्धतियों में निर्दिष्ट बलसाधन देखिए, जहाँ द्रष्टा ग्रह और दृश्य ग्रह/भावों के अंशात्मक अन्तर के आधार पर दृष्टि की प्रतिशतता निकालने की प्रक्रिया बताई गई है ।

(ii)—यहां काशी संस्करण वाली 'नारद संहिता' का पाठ भ्रष्ट है। ध्यान दें- 'जन्मराश्युद्गमे चैव जन्मलग्नोदये शुभा।'- काशी संस्करण वाले इस पाठ का कोई अर्थ नहीं निकलता । 'पीयूषधाराकार द्वारा उद्धृत 'जन्मराश्युद्गमो नैव जन्मलग्नोदयः शुभः।' पाठ ही सार्थक है, जिसका अर्थ है ''जन्मराशि वाला उद्गम (लग्न) शुभ नहीं है, जन्मलग्न वाला उदय (लग्न) शुभ है। '' स्पष्ट है- काशी संस्करण वाले पाठ का कोई अर्थ निकाल पाना संभव नहीं है । व्याकरण की दृष्टि से भी यह पाठ अशुद्ध है । ध्यान रहे- काशी संस्करण वाली 'नारद संहिता' में मुद्रण की असंख्य अशुद्धियां हैं। मेरे पास भी इसका यह संस्करण है । मैंने इसमें अनेक अक्षम्य अशुद्धियां पाई हैं।

(iii) —इस समस्या के समाधान के रूप में पृथक् लेख ''सायन और निरयण पद्धतियां तथा फलादेश'' पृष्ठ 59 पर दिया गया है, उसे पढ़ें ।

(iv) — जब हम स्थानीय याम्योत्तर वृत्त और क्रान्तिवृत के सम्पात को दशमभाव मानकर द्वादश भाव स्पष्ट करते हैं, तब भाव विषमविभागात्मक होते हैं । जब लग्न के राश्यादि में १,२,३ आदि राशियां जोड़ कर क्रमशः द्वितीयादि भाव स्पष्ट किए जाते हैं, तब भाव समानमानात्मक (अर्थात् ३०-३० अंश के) होते हैं । आजकल विषमविभागात्मक भावों के आधार पर ही अधिकतर दैवज्ञ लोग फलादेश का निर्णय करते हैं, लेकिन हमारे संहिता एवं जातकग्रन्थों में समानमानात्मक भावों का समर्थन करने वाले वाक्य उपलब्ध होते हैं। 'सिद्धांत तत्त्व विवेक' के रचयिता आचार्य कमलाकर ने समानमानात्मक भावों को ही ऋषिसमर्थित कहा है। उनका कहना है कि विषमविभागात्मक भाव यावनपरम्परा से भारत में प्रचलित हुए हैं। ४५-५० तथा इससे अधिक अक्षांशों वाले स्थलों पर विषमविभागात्मक भावों के आधार पर बनी भावकुण्डलियों के भावों के स्वामियों का निर्धारण बहुत अप्राकृतिक होता है और भावों के मान भी यहाँ परस्पर अत्यन्त विषम होते हैं, जिससे फलादेश निर्धारण में समस्या उत्पन्न होती है। इस दृष्टि से अनेक प्रबुद्ध आधुनिक दैवज्ञ भी समानमानात्मक भावों के समर्थन में लिखने लगे हैं। हमारे प्राचीन भारतीय फलितग्रन्थ भी इसी के पक्ष में हैं । यद्यपि जातकपद्धतियों द्वारा साधित द्वादश भाव विषमविभागात्मक ही होते हैं, पुनरपि सभी जातक-पद्धतिकार द्रष्टा ग्रह की तृतीयादि भावों पर एकचरणादि दृष्टियों का निर्णय करते समय तो भाव को सर्वत्र ३० अंशों का ही मानते हैं ।

कुछ दैवज्ञों का मत है कि **लग्नगत पूरी राशि को लग्न एवं तदुत्तरवर्ती शेष द्वितीयादि पूरी-पूरी राशियों को क्रमशः द्वितीयादि भाव मान कर ही फलादेश कहना चाहिए और अधिकतर दैवज्ञ इसी मतानुसार भावफल कहने की परम्परा भी लिए हुए हैं। अष्टकवर्ग में भी रेखाओं और शून्य बिन्दुओं के अंकन के लिए इसी मत का अनुसरण किया जाता है ।**

समस्या - क्या '' *आदित्य-भौमयोर्नन्दा भद्रा शुक्रशशांकयोः। जया सौम्ये गुरौ रिक्ता शनौ पूर्णा मृतिप्रदा ॥*'' नारद के इस वाक्य द्वारा निर्दिष्ट मृत्युतिथियों में विवाहादि मंगल कृत्य वर्जित नहीं करने चाहिए?

— पं. कैलाशचन्द शर्मा, ऐन-२१, सी.आर. पार्क,

नई दिल्ली-१९

समाधान- जिन तिथियों को 'मुहूर्त चिन्तामणि' कार ने नारद के "आदित्य-भौमयोर्भद्रा ....." के अनुसार मृतातिथि (या मृत्युतिथि) लिखा है उन्हींको वसिष्ठ और कश्यप ने अमृततिथि (शुभतिथि) लिखा है । जैसे —

नन्दा भौमार्कयोः भद्रा शुक्रेन्द्वोश्च जया बुधे।
शुभयोगा गुरौ रिक्ता शनौ पूर्णाऽमृताह्वया॥

(वसिष्ठ)

और—

आदित्यभौमयोर्नन्दा भद्रा शुक्र-शशांकयोः।
जया सौम्ये गुरौ रिक्ता पूर्णाऽऽर्कावमृता शुभा।।

(कश्यप)

पीयूषधाराकार का कहना है कि नारदसंहिता की प्राचीन पुस्तक में तो 'आदित्य-भौमयोर्नन्दा.....' वाक्य के अन्त में 'शनौ पूर्णा मृतिप्रदा' के स्थान पर 'शनौ पूर्णाऽमृताह्वया' पाठ मिलता है। इस प्रकार सभी संहिताएं इन मृत्युतिथियों को अमृततिथियां ही बतला रही हैं, जिससे मंगलकृत्यों में इनका शुभ फल ही सिद्ध होता है । पुनरपि यदि 'नारदसंहिता' के आधुनिक संस्करणों में उपलब्ध 'शनौ पूर्णा मृतिप्रदा' पाठ को ही ठीक माना जाए तो भी मृत्युतिथियों को विवाहादि मंगलकृत्यों में वर्जित नहीं किया जा सकता, क्योंकि लल्ल का कहना है कि तिथि,नक्षत्र और वारों के योग से उत्पन्न अशुभ योगों को गर्गादि ऋषियों ने केवल यात्रा में ही वर्जित माना है-

वारर्क्षतिथियोगेषु यात्रामेव विवर्जयेत्।
विवाहादीनि कुर्वीत गर्गादीनामिदं वचः॥

(लल्ल)

किञ्च नारद का मत है कि तिथि-वारों एवं नक्षत्र-वारों के योग से बने सभी कुयोग केवल हूण (काबुल, अफगानिस्तान आदि) वंग (बंगाल) और खश (चीन, नेपाल आदि) देश-प्रदेशों में ही वर्जित हैं, अन्यत्र नहीं -

तिथिवारोद्भवा नेष्टा योगा वारर्क्षसम्भवाः।
हूण-वंग-खशेभ्योऽन्यदेशेष्वेते शुभप्रदाः॥

(नारद)

लग्नशुद्धि होने पर तो ये कुयोग प्रभावहीन हो जाते हैं, दीपिकाकार ने यह स्पष्ट लिखा है -

यत्र लग्नं विनाकर्म क्रियते शुभसंज्ञकम्।
तत्रैतेषामयोगानां प्रभावाज्जायते फलम् ॥

(दीपिका)

समस्या (i) एक पाश्चात्य ज्योतिषी ने लिखा है कि दशम भाव स्पष्ट करके उसमे ९० अंश जोड़ने पर जो राश्यादि मिले उसे स्पष्ट लग्न मानना चाहिए । इससे सभी भाव समान मान के (यानी ३०-३० अंशों के)हो जाएंगे । इस विषय में आपका क्या मत है ?

(ii) नीचांश में (वृश्चिक के ३ अंश पर) स्थित चन्द्र अपने ही नवांश में होता है । क्या स्वनवांशस्थ होने से इसका नीचफल खण्डित नहीं होता ?

(iii) नवांश कुण्डली और भावकुण्डली (या राशिकुण्डली) से प्राप्त भावफलों में विरोध होने पर नवांश कुण्डली से प्राप्त भावफल को ही मान्यता देनी चाहिए-ऐसा कुछ दैवज्ञों का मत है । क्या इसे आप युक्त समझते हैं ?

—श्री जसवन्त सिंह,११ इमली मोहल्ला,
कनखल (हरिद्वार)

समाधान (i) - स्पष्ट है इस प्रकार की बात करने वाले इस ज्योतिषी का खगोलशास्त्रीय ज्ञान शून्य है । क्रान्तिवृत्त के वे दो बिन्दु जो पूर्वी और पश्चिमी क्षितिज को स्पर्श करते हैं, खगोलशास्त्र में उन्हें क्रमशः लग्न (प्रथम भाव)व सप्तम भाव माना गया है । लग्न को दशम भाव (स्थानीय याम्योत्तरवृत्त और क्रान्तिवृत्त के सम्पात) से सर्वदा ९० अंश की दूरी पर बतलाने वाला यह 'सिद्धांत' हास्यास्पद है, क्योंकि इसे मानने से लग्न और सप्तम भाव पूर्वी और पश्चिमी क्षितिज से कभी नीचे और कभी ऊपर हो जाएंगे । दशम और लग्न का अन्तर भारत में ७० से ११० अंश और ६० अक्षांशीय स्थलों पर ३९ से १४१ अंश तक होता है । अतः इस ज्योतिषी के मतानुसार तो लग्न और सप्तम लग्न के बिन्दु अनेक बार भारत में २० अंश तक और ६० अक्षांशीय स्थलों पर ५१ अंश तक क्षितिज से कभी ऊपर और कभी नीचे स्थित होंगे।

भावों को समान-मानात्मक बनाने के लिए दशमभाव स्पष्ट नहीं किया जाता । इसके लिए तो स्पष्ट लग्न के राश्यादि में केवल १,२,३ आदि राशियां जोड़ दी जाती हैं । इससे क्रमशः द्वितीय

(ii) - षड्बल-साधन के प्रसंग में परस्पर विरोधी बल उपस्थित होते ही हैं । उनके समुदित (एकत्रित) बल को ही देखकर ग्रह या भाव के शुभाशुभ फल की मात्रा का निर्णय करना होता है । किञ्च नवांश के बल से उच्च बल कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है — यह षड्बल-साधन-प्रक्रिया से स्पष्ट है । ***अनेकदा सप्तवर्ग ,ओजयुग्म, केन्द्र, द्रेक्काण, दिक्, काल, चेष्टा व दृक् आदि के प्रतिकूल बलों के कारण उच्चस्थ या परमोच्चस्थ ग्रह भी नितान्त निर्बल (अशुभ-फलप्रद) और इन (सप्तवर्ग आदि) के अनुकूल बलों के कारण नीचस्थ या परमनीचस्थ ग्रह भी नितांत सबल (शुभ -फलप्रद) बन जाता है । अतः किसी ग्रह को केवल उच्चस्थ देखकर उसको बली और केवल नीचस्थ देखकर उसे निर्बल मानकर उसके द्वारा दिए जाने वाले फल की शुभाशुभता का निर्णय करने की प्रवृत्ति, जो अक्सर सभी दैवज्ञों में पाई जाती है, जातकपद्धतियों के षड्बल सिद्धांत के सर्वथा प्रतिकूल है । इस प्रवृत्ति के कारण लगभग ५० प्रतिशत स्थलों पर इन दैवज्ञों के फलनिर्णय जातकसिद्धांतानुसार यथार्थ नहीं होते ।***

(iii)— नवांश कुण्डली से उत्पन्न भावफल को भावकुण्डली (या राशि-कुण्डली) से उत्पन्न भावफल की अपेक्षा प्रामाणिक मानना संगत नहीं है, अन्यथा भाव या राशि- कुण्डली अर्थहीन हो जायेगी । ध्यान रहे- **नवांशकुण्डली वस्तुतः कुण्डली ही नहीं होती** । लग्न एवं ग्रह किस-किस राशि के नवांश में स्थित हैं— यही बतलाना नवांशकुण्डली का उद्देश्य है । इस कुण्डली में प्रदर्शित १२ गृहों (खानों) को देह, द्रव्य आदि (लग्न, द्वितीय आदि) भाव मानकर उनमें स्थित ग्रहों के अनुसार तत्तद्भावों का फल उससे कहना तर्कसंगत नहीं है । 'बृहज्जातक' आदि मूल जातकग्रन्थों, संहिताओं एवं मुहूर्त्त ग्रन्थों में नवांश कुण्डली को द्वादशभावात्मक कुण्डली मान कर भाव फल का विचार बिल्कुल नहीं किया गया है । सभी जातकपद्धतियां भी नवांश कुण्डली के इन तथाकथित भावों को भावों के रूप में स्वीकार नहीं करती हैं । ग्रह मित्र के नवांश में है या शत्रु के, उच्च के नवांश में है या नीच के, वर्गोत्तम नवांश में है या स्वनवांश में, शुभ ग्रह के नवांश में है या अशुभ ग्रह के नवांश में — यह देखकर नवांश के अनुसार ग्रह के केवल बलाबल का निर्धारण ही जातकपद्धतिकारों तथा अन्य फलिताचार्यों ने किया है । उन्होंने नवांशकुण्डलीगत इन तथाकथित भावों को भावों के रूप में मानकर इनसे भावफल का चिन्तन बिल्कुल नहीं किया । कुछेक आचार्यों ने नवांशकुण्डली के भावों को भाव मानकर इनसे भावफल का विश्लेषण किया है लेकिन उसे अधिकतर आचार्यों ने मान्य नहीं किया है और फलितीयसिद्धांत के वह प्रतिकूल भी है ।

किञ्च प्रचलित इस नवांशकुण्डली में केवल लग्न को ही उसकी नवांश राशि में लिखा जाता है । शेष द्वितीय आदि भावों को उनकी अपनी-अपनी नवांश राशियों में ये दैवज्ञ नहीं लिखते, जबकि लग्न की भांति इन भावों को भी इनके अपने अपने नवांश की राशि में इन्हें लिखना चाहिए । नवांशकुण्डली के भावों में यह बहुत बड़ी असंगति है । यदि लग्न की भांति सभी भावों को उनके अपने-अपने नवांश की राशि में लिखा जाए तब तो इस नवांशकुण्डली का प्रत्येक भाव अपने पूर्ववर्ती भाव की राशि से अक्सर दशम राशि में पड़ेगा । जैसे— यदि लग्न मेष राशि के नवांश में हो तो नवांशकुण्डली के द्वितीय भाव में मकर, तृतीय भाव में तुला, चतुर्थ भाव में कर्क — और इसी प्रकार शेष भावों की राशियां भी होंगी, और ईमानदारी से बनाई गई इस नवांश-कुण्डली का रूप ऐसा होगा—

वास्तव नवांशकुण्डली

द्वितीय भाव १०
द्वादशभाव ४
तृतीय भाव ७
१ लग्न
एकादश भाव ७
चतुर्थ भाव ४
दशम भाव १०
पंचम भाव १
सप्तम भाव ७
नवम भाव १
षष्ठ भाव १०
अष्टम भाव ४

यदि नवांशकुण्डली में भावों का विन्यास सिद्धांतानुसार किया जाये तो सभी नवांशकुण्डलियों की संरचना उपरोक्त नवांशकुण्डली के समान ही विलक्षण एवं हास्यास्पद होगी ।

स्पष्ट है-इन प्रचलित नवांशकुण्डलियों के द्वितीय आदि भावों में लिखी राशियाँ भावों के नवांशों की नहीं, अपितु ग्रहों के नवांशों की ही होती हैं ।

इस प्रचलित नवांशकुण्डली में स्थित ग्रहों की दृष्टि का विचार भी दैवज्ञ लोग भाव/राशि कुण्डली में स्थित ग्रहों की दृष्टि के सादृश्य से ही करते हैं । जबकि ये (नवांशकुण्डली में लगाए गए) ग्रह वस्तुतः एक-दूसरे से १,२,३ आदि भावों के अन्तर पर अक्सर नहीं होते ।

कहने का अभिप्राय यह है कि नवांशकुण्डली वास्तविक कुण्डली नहीं, बल्कि 'कौन सा ग्रह किस राशि के नवांश में स्थित है'- यह जानने के लिए कुण्डली के रूप में बनाया गया यह एक नवांशचक्र (table)मात्र है । इसे द्वादश-भावात्मक कुण्डली मानकर इससे भावकुण्डली की भांति भावफल का निर्धारण करना कदापि संगत नहीं है ।

प्रसूति-लग्न विचार

मेष- जन्म समय मेष लग्न हो, तो माता का पूर्व या पश्चिम में सिर,उपसूतिका दो या तीन, प्रसव में माता को कष्ट अधिक, पाद से प्रसव, भूमि में घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ, बालक जन्मोपरान्त दीर्घ शब्द से रोया। माता ने लाल एवं मीठा भोजन किया था। वस्त्र लाल मलिन थे। ४।११।१६।४४।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप कराना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे, तो १०० वर्ष जीवे।

वृष-माता का दक्षिण में सिर, उपसूतिका ३ या ४ जन्मोपरान्त दो और आईं, जन्मते ही बालक दीर्घ शब्द से रोया,गौरवर्ण, अधोमुख, पाद से प्रसव, घर से पूर्व में सूतिका स्थान, श्वेत स्वच्छ वस्त्र, जन्म से पहले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया। १।२८।३३।४४।६१ वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन वर्षों के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय का जाप और ब्राह्मणभोजन करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मिथुन-माता का सिर पश्चिम में, उपसूतिका ३या ५ ,माता का हरा या जीर्ण वस्त्र, शिर से प्रसव,मुख ऊपर को , जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाल छूटा था , घर के आग्नेय भाग में जन्म, माता ने पहले लवणयुक्त विचित्राल्प भोजन किया , दूध कम उतरे । ४।१०।१४।३८।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन और मृत्युञ्जय का जप करवायें । यदि इन वर्षों से बचे तो ८६ वर्ष जीवे ।

कर्क- माता का उत्तर में सिर, उपसूतिका ५ या ४ , बालक जन्मते ही छींका , नाल छुटा, भूमि पर जन्म , घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान , माता के वस्त्र श्वेत व लाल , माता ने प्रसव के पहले मधुर व शीतल भोजन किया था, दीपक उठाया गया , बालक के वामांग में लहसन आदि का चिह्न , देर से रोया, ५।२५।४०।५८।६२ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे । इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवे । कष्टकारक वर्षो कें प्रवेश के समय तुलादान ,छायादान और मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जाप करवाना कल्याणप्रद है ।

सिंह- माता का पश्चिम या पूर्व में सिर , मलिन या लाल वस्त्र, शुष्क कसैला या खट्टा भोजन किया था, जन्म समय स्त्री ३, पीछे से १ आई, दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते ही तुरन्त रोया , घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान , ५।१३।२८।३६।४८ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे । इनसे बचे तो ६७वर्ष जीवे । कष्टकारक वर्षो के प्रवेश होते ही श्री सूर्यनारायण के मन्त्र का जाप या आदित्यहृदय का पाठ और मीठा भोजन करावे तो कल्याण रहेगा ।

कन्या- माता का दक्षिण में सिर , रक्त जीर्ण वस्त्र, मिष्टान्न बासी-चीज या बड़े आदि का भोजन,जन्म समय स्त्री ३या ५, दीपक हाथ में उठाया गया ,बालक ने जन्मते ही अर्द्ध शब्द किया,घर के नैर्ऋत्य कोण में सूतिका-स्थान , ४।१६।२३।३६।५५ वर्ष कष्टकारक है । यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे ।

तुला -माता का सिर पश्चिम या पूर्व को , श्वेत जीर्ण वस्त्र , भुना हुआ अन्न , ठंडा जल , या कोइ मामूली चीज क्रोधपूर्वक खाई थी। जन्म समय स्त्री ३या ६, वहां १कन्या भी हो , दीपक उठाया गया,बालक जन्म समय कुछ देर बाद अर्धशब्द करके रोया , घर के पश्चिम भाग में सूतिका स्थान , ८।१५।३१।३५।६२।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में नवग्रह का दान , हवन, जप करवाना श्रेष्ठ है । यदि इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीवे ।

वृश्चिक-माता का दक्षिण या उत्तर में सिर , रक्त या दग्ध वस्त्र , कष्ट अधिक,अमधुर मामूली क्रोधपूर्वक भोजन , जन्म समय स्त्री २ या ३, पीछे से भी दो आई , दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया। छींक भी किया, दीर्घकेश, घर के पश्चिम भाग में प्रसवस्थान, ११।२८।३८।५२।६२ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में मृत्युञ्जय जप और तुलादान कराना श्रेष्ठ है । यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे ।

धनु-माता का सिर पश्चिम या पूर्व को , पीत या रक्त वस्त्र, पक्वान्नादि भोजन, जन्म समय स्त्री १या ५,दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के वायव्य कोण में सूतिका स्थान २,१०,१८,३१,३८,४२,६७, इन वर्षो के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युञ्जय जप , ब्राह्मण भोजन श्रेष्ठ है , यदि इन वर्षो से बचे तो ८१ वर्ष जीवे।

मकर-माता का सिर दक्षिण में ऊपर काला वा जीर्ण कमजोर वस्त्र, गुड़, दुग्ध, कसैला भोजन, ठण्डा जलपान किया था। जन्म समय स्त्रियाँ २, पीछे से एक आई । दीपक हाथ में उठाया गया। बालक जन्मोत्तर अर्धशब्द से रोया और छींक भी किया, घर के उत्तर भाग में पुराना सूतिकास्थान, ५।१३।२७।३६।५७।६३।८७ इन कष्ट कारक वर्षो से बचे, तो ९५ वर्ष जीवे।

कुम्भ-माता का सिर पश्चिम को, जीर्ण, धूम्रवर्ण वा कुरूप वस्त्र, मधुर शीत शाकादि कुभोजन, कष्ट अधिक, जन्म समय पास स्त्रियां ४, दो स्त्री पीछे से आई। उनमें एक स्त्री गर्भिणी भी हो। दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया, वामांग में कोई चिह्न भी हो, घर के उत्तर भाग में सूतिका-गृह, २।२८।३३।४८।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप हितकारक है, इन वर्षो से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मीन-माता को सिर उत्तर में, पीत या मलीन वस्त्र, विचित्र अल्प भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ में उठाया व जलाया गया था, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशान में सूतिका-स्थान, १।८।१३।३६।४८ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में ग्रह-शान्ति हवन मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जप कराना श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८३ वर्ष जीवे। स्मरण रहे, अधिकांश जिस लग्न के लक्षण मिले-वहीं बालक का जन्मलग्न जानना, क्योंकि यह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।

पितृपरोक्ष ज्ञान- (१) जन्म लग्न को चन्द्रमा न देखे,(२) बुध-शुक्र के मध्य में चन्द्रमा हो,(३)लग्न में शनैश्चर चन्द्रमा से अदृष्ट हो,(४)भौम सप्तम, चन्द्रमा लग्न को न देखता हो -इन चारों योगों में से एक भी योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के परोक्ष में जन्म कहना।

जन्म कुण्डली में दिशा ज्ञान- प्रथम भाव पूर्व, द्वितीय,तृतीय- ईशान। चतुर्थ-उत्तर। पञ्चम-षष्ठ-वायव्य। सप्तम-पश्चिम। अष्टम, नवम-नैर्ऋत्य। दशम-दक्षिण। एकादश तथा द्वादश भाव को आग्नेय समझना।

प्रसूति स्थान से पाकशालादि विचार

जन्म कुण्डली में सूर्य मंगल जिस दिशा में हो, वहाँ अग्नि स्थान(पाकगृह)जानना, इसी तरह चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से भण्डार, गुरु से धनस्थान, शुक्र से देवस्थान और शनि से अशुभ मैला स्थान जानना चाहिए। दोहा- लग्ननाथ जो केन्द्र में तीन दिशा को द्वार। वा लग्न दिशि जानिए कहत बुद्धि आगार॥ केन्द्र(१।४।७।१०)स्थान में एक से अधिक ग्रह हो तो उनमें जो बली(स्वराशिमित्रोच्च व मूल त्रिकोण राशि का)केन्द्र स्थान में स्वमित्र शुभ के नवांश में स्थित ग्रह हो उसकी दिशा में वा-लग्न पति की दिशा में सूतिकागृह का द्वार होता है । **ग्रहों की दिशा-सूर्य की पूर्व, चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण, बुध की उत्तर, गुरु की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनैश्चर की पश्चिम, राहु केतु की नैर्ऋत्य।**

चन्द्रात्तैल-ज्ञानम्-चन्द्रमा से दीप के तैल को ज्ञान होता है, जैसे रात्रि का जन्म है और जन्मकाल पर चन्द्रमा के कम अंश व्यतीत हुए हैं, तो दीपक में तैल ज्यादा कहना। यदि चन्द्रमा आधी राशि भोग कर चुका हो, तो दीपक में आधा तैल कहना। यदि चन्द्रमा शीघ्र ही दूसरी राशि पर बदलने वाला हो तो बहुत ही कम तैल कहना। सो० तनुस्थान शशि जाई, वा शशि षष्ठे भवन में, शिशु जन्म तब आई, तब कही दीपक तैल नहीं। सित-शनि दशमें धाम, पंचम तनुपै चन्द्रमा, शिशु जन्म में तव वाम, दीपक तैल सौं युक्त कहि।

लग्नाद्दीपवर्ति-ज्ञानम्-जन्म लग्न के कम अंश हो तो बड़ी बत्ती कहना, अधिक अंश हो तो छोटी कहें।

चन्द्रलग्नांतर्गतैर्ग्रहैः स्युरुपसूतिकाः- यदि लग्न की निर्बलता के कारण लग्न फलानुसार उपसूतिका का पूरा पता न लगे तो जन्म काल में लग्न से चन्द्र पर्यन्त जितने ग्रह हों उतनी ही उपसूतिका कहना। परन्तु जब कोई ग्रह चन्द्रमा के साथ हो तो उसके अंश देखें। यदि उसके अंश चन्द्रमा से कम हो तो उसकी गणना करे अन्यथा उसे नहीं जोड़ें। इस प्रकार जो ग्रह लग्न में हो और उसके अंश लग्न से अधिक हों तब ही उसकी संख्या जोड़े अन्यथा नहीं जोड़ें। लग्नचन्द्रांतर्गत कोई ग्रह वक्र या उच्च का हो तो तीन गुणा करना और स्वराशि, स्वनवमांश, स्वद्रेष्काण में हो तो द्विगुण करना, इसी प्रकार जितने ग्रह नीचे राशि के अस्त होवें उनका आधा करके उपसूतिकाओं में जोड़ने से ठीक उपसूतिका स्त्रियों की संख्या का ज्ञान होगा। इसमें भी विशेष यह ध्यान में रखने योग्य है, कि वह लग्न चन्द्रांतर्गत ग्रह लग्न के भोगांश से सप्तम भाव पर्यन्त होवे तो सूतिकागृह से बाहर समीप में, और सप्तम भाव से लग्न के भुग्तांश पर्यन्त हों तो सूतिका के समीप में अन्दर जानना। उन ग्रहों में जो शुभ ग्रह वहाँ, धर्मशील सौभाग्यवती स्त्रियां कहना, अशुभ ग्रहों से विधवा दुश्चरित्रा कहें।

शय्या-शिर व पाद विचार

"लग्नदिशि शय्या शिरस्त्विषट्क्रान्त्येषु पादाः।" लग्न की दिशा की तरफ़ पलंग का सिरहना कहना, अर्थात् १।२ लग्न में पूर्व, ३ में अग्निकोण, ४।५ में दक्षिण,६में नैर्ऋत्य,७।८ में पश्चिम, ९ में वायव्यकोण,१०।११ में उत्तर और १२ लग्न में ईशान कोण की तरफ जानना। तीसरा, छठा, नौवां, बारहवां, स्थान पाये जानना। इन स्थानों में से जिन स्थानों में पाप ग्रह हों वहाँ सूतिका के पलंग का पावा फटा टूटा समझना।

दो०-मीन-मिथुन-सिंह-तुला,मेष होय तत्काल। अन्तरिक्ष भयो बालक,शेषे भूमि विशाल।।

अथ चिह्नज्ञानम्-दोहा-षट्त्रिकोण वा लग्न रवि बुध भावे धरि ध्यान। वामें कुछ लहसन अहै गर्गवचन परमाण॥ भानू तथा सौरी तनधन कुंज कण्टक चन्द। बालक के षट् अंगुली भाषत कविकुलवृन्द। तनु स्थान में शुक्र हो अष्टम जावे राह। वाम कर्ण वा मस्तके अवश चिह्न दरशाह॥ सुहृद भाव में कवि तव भौम वा सौरी लग्न। वाम पाद के चिह्न को भाषत ज्योतिषमग्न॥ नौमें पांचे भृगु बसे तनु वा चौथे मन्द। मृत्यु जावे बुध गुरु उदरे चिह्न भणंद।''

प्रसवकष्ट दूर--प्रसव काल से पहले शुक्लपक्ष के चतुर्दशी को प्रातः सूर्योदय से पहले सहदेवी या अपामार्ग (पुठकंडा) की जड़ें लाकर घृतयुक्त गुग्गुल की धूनी देकर कटि में बांधे और साथ ही ''ओंमुक्ताः आशा विपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः सर्वभयाद् गर्भेहि माचिर-माचिर-स्वाहा॥'' इस मंत्र से सात बार शुद्ध जल अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलावे तो सुख से ही शीघ्र प्रसव होगा। अगर तीस का यंत्र भी अनार की कलम से कांसे की थाली में लिख धोकर पिला देवें तो गर्भिणी को कोई भय न होवे, बच्चा बिना कष्ट पैदा होवे। स्मरण रहे कि पहले उपरोक्त मंत्र तथा तन्त्र ग्रहण के समय या दीपमाला की रात्रि को मन्त्र का जाप करके तथा यन्त्र को लिखकर सिद्ध कर लेवें, तब कष्ट को मिटाता है।

बालक के लिए अरिष्ट

दो०:- चूनाष्टमतनु पाप खग, बरहै शशि जो खीन। कण्टक शुभ खगना बसै, वेगि ताहि यमलीन। बसै चन्द्रा द्वादसे अष्ट भवन दो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप॥ लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्म समय जो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप। लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्म समय जो पाव। बालक दशवासर जिये कहत बुद्धि गुण भाव॥''

अथ काणयोग--तनु धन व्ययपतियुक्त भृगु आई बसे त्रिकधाम। वा शशि धन कवि पाप युत, ताहि नेत्र बेकाम। सार्कशुक्र तनुनाथयुक्त भवन बसै त्रिक जाय। जन्म अन्ध वह योग है भाषत बुध समुदाय॥ तात मात भ्राता तनय मातुल त्रियघर नाथ॥ चन्द्र भौम जो द्वादशे वाम नैन की हान॥ भानु राहु दहनो नयन, बुधजन कहत बखान॥''

मूकयोग-''पञ्चमेश गुरु युक्त त्रिक मूक बाल तब होय। जौन भौमपतियुक्त गुरु त्रिकहि मूक कहि सोय॥ शुक्र त्रिके गुरु सिंह अज दशम भानु कुज वास। मूक होय संशय नहीं बुधजन करत प्रकाश।''

दुःखदयोग -रिपु मृत्यु द्वादश गेह में पाप युक्त लग्नेश । जन्म समय जाके परे ताको अंग कलेश ॥ पाप युक्त तनु भवन में रिपु मृत्युप के ईश । यथा जोग जाके परे तनु मुख विश्वाबीस॥ पापग्रहयुत लग्न पति परै लग्न में आय । वीर्यहीन नर होय तो अधिक व्याधि रुजताय॥

बन्धनयोग- क्रूर रहै धन नवम व्यय, और पञ्चम आगार। सो नर सूर कसूर करि निवसै कारागार॥

सर्पवेष्टितयोग- यदि अष्टमेश लग्न में राहु सहित हो तो बालक सर्पवेष्टित अर्थात् सर्प जैसे नाल से वेष्टित होता है ।

यमल जन्मयोग- चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह,मकर का पूर्वार्द्ध और धन के उत्तरार्द्ध)का सूर्य होवे , शेष ग्रह बलवान् होकर द्विस्वभावराशि के लग्न में स्थित हों तो यमल अर्थात् दो

बच्चों का इकट्ठा जन्म कहना। अथवा आधान लग्न (गर्भ वाले दिन का लग्न)का स्वामी लग्न में हो तो यमल का जन्म होता है।

माता बच्चे को त्याग दे-शनि मंगल से ५।७।९ स्थान में चन्द्रमा हो तो माता बालक को त्याग दे, यदि गुरु देखता हो तो त्याग देने पर भी दीर्घायु हो।

मृत्यु-समय-विचार-- जिन अरिष्ट योगों में मरण काल नहीं कहा गया, उन अरिष्ट योगकारक ग्रहों में जो ग्रह बली हो,वह जन्मकाल में जिस राशि में स्थित हो उस राशि में जब चन्द्रमा आता है तब मृत्यु कहना। अथवा-जन्मकाल में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो जब फिर उसी राशि में चन्द्रमा आता है, तब मरण कहना। **अथवा** चन्द्रमा जब लग्न राशि में आता है,तब मरण कहना। **अथवा** वर्ष के भीतर जब जिस योगयुक्त स्थान में जाकर चन्द्रमा बली हो और पापग्रहों द्वारा देखा जाता हो, तब मरण कहना चाहिए। किन्तु जब तक आयु का विचार न हो सके तब तक अन्य विचार करना निरर्थक है, इसलिए आयु का प्रथम विचार करे, फिर मृत्यु कहें।

सुखदयोगाः-अंगधीश निज लग्न में बुध गुरु कवि के संग। या केन्द्र गृह दो परे तो जानो सुख संग॥ जन्म लग्न में उच्च ग्रह जो काहु के होय। मित्र दृष्टि ता पर परे सर्वसुखी नर होय॥

क्लीब (नपुंसक)**योगाः**-- दशम भवन भृगु मन्द दोउ क्लीब योग तब जान। शुक्र भवन से रिष्फ षट मन्द बसे क्लि भानु॥

कुष्ठयोगाः--लग्नप बुध कुज शशि युते राहुयुक्त या केतु। श्वेतकुष्ठ को योग यह वरणत गुणी सचेतु॥ भौम भास्कर मन्दयुक्त रक्तकृष्ण कह कुष्ठ। लग्नाधिप रविसाथ त्रिक तापगण्ड अति रुष्ट॥ जलजगंडयुत चन्द जो ग्रन्थिगंड कुज साथ। पित्त रोग तब जानियो बुध त्रिकयुत तनु नाथ॥ आमरोग गुरुयक्त त्रिक क्षयी रोग भगसून। यमतम शिखि वा युक्त त्रिक, दिन प्रति रुजि कहि दून॥

केमद्रुमः-आगे पीछे चन्द्र के जो ना परै ग्रह कोय। केमद्रुम यह योग है सब धन डारे खोय॥ उच्च चन्द्र शुभयुक्त दृग केन्द्रधाम में होय। तब केमद्रुम शुभ कहे दोष न मानो कोय॥

स्त्रीजातक

क्रूरलग्नयुक्त क्रूर जो, स्वामी दृष्टि नहीं होय। सो कन्या कुल गरल है, भूलि न व्याहेउ कोय॥ जाके कुज दशमे बसै ऋणी होय पति तासु। लग्न राहु शनि सातवें पति जीवे नहीं जासु। क्रूर युक्त लग्नेश जो पापग्रहों के बीच सो कन्या व्यभिचारिणी बुधवर कहै कुज नीच। राहु शुक्र जो लग्न में कन्या को पति और। पाप दृष्टि शनि सातवें कन्या वास कुठौर। लग्न बीच शनि कुज तमसि निर्धन स्वेच्छाचारि। सप्तम कुज राण्ड कहै पति को तजि तमारि। छटे आठवें चन्द्र जो क्रूर पर निज अङ्ग। भौम आठवे भवन में सो पति करै है भंग॥ राहु सातवें लग्न कुज कंटक शुभ सो हीन। ताको पति जीवित रहे वर्ष दो या तीन॥ द्वादशाष्ट कुज क्रूरयुत राहु बसै त्रिकधाम। राण्ड होय कुछ दिवस में कहत गणक गुणग्राम॥ पापग्रहों के बीच में लग्न होय वा चन्द। सो त्रिय नासे कुलो दुबो भाषत कविकुल वृन्द॥ सप्तम भृगु जाके बसै सो कुल दोषी नारि। रूपवती तनु भृग बसै बुधजन कहत विचारि॥

वैधव्य-विषकन्यायोगाः-चौ.- रविवार द्वितीया जो होय [illegible] ताहि दिन में जोय॥ १॥ कृत्तिका होय शनिश्चर वार साते तिथि को करो विचार॥२॥ होय शतभिषा मंगलवार कहो द्वादशी तिथि निर्धार॥ ३॥ इन योगन में कन्या होय निश्चय विधवा जाने सोय॥ ४॥ जन्मलग्न द्वै शुभग्रह होय एक पाप ग्रह नभ १० में जोय॥५॥ शत्रु क्षेत्र में द्वै गह मानो ता कन्या को विधवा जानो॥ ६॥ अश्लेषा द्वितीया को होय मंदवार युत लीजो जोय॥ ७॥ परे शतभिषा मंगलवार साते तिथि लीजो निर्धार॥ ८॥ रविवार द्वादशी जो होय नक्षत्र विसाखा जानो होय॥ ९॥ ऐसो योग लखो जो परै तो कन्या को विधवा करै॥ १०॥ दो० धर्म सदन में भूमिसुत जन्म सदन शनि जान। सूर्य होत सुत सदन में कन्या विधवा मान॥ ११॥

वैधव्य- विषकन्याभंगयोगः-जन्मलग्न या चन्द्र ते शुभग्रह सप्तम होय। अथवा सप्तम लग्नपति सुभगा कन्या होय॥

काकवन्ध्यादियोगः-- ज्ञे अष्टमे काकबन्ध्या। मन्दार्कावष्टमे बन्ध्या अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा वा मृतापत्या॥

स्त्रीणां राजयोगः--**चौपाई**- केन्द्रधाम नभगा शुभ होई नरतनु पाय कलत्र समोई। रानी होय बहुत धन ताके मन प्रसन्न होई है सुत वाके-चन्द्रज तुग बसे तनु जाई लाभ धन गुरु आवे धाई। सो तिय होय नृपति की नारी जन विख्यात होय सुकुमारी। जो षडवर्ग शुद्ध गुरु होई शशि दृग केन्द्र भवन में होई॥ ऐसे योग जन्म सुकुमारी रानी होय सदन धनभारी॥ दोहा.... कर्क चन्द्रमा सातवें जीव दृष्टि परिपूर। पुत्र पौत्र धन भूरि युत ताको पति नृप शूर॥ लाभ भवन सित चन्द्र जो सोमज सप्तम भौम। सुरगुर परिपूर्ण लखे रानी होई है तौन॥

स्त्रीणां पुत्रभावविचारः--पञ्चमें शुभदृष्टे च पञ्चमाधिपतावपि। केन्द्रकोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत्''॥

अशुभ प्रसव मासः-कार्तिक में स्त्री, भाद्रपद में गौ, मार्गशीर्ष में हथनी, श्रावण में गधी व घोड़ी, माघ में भैंस, ज्येष्ठ में बिल्ली, बैसाख में ऊँटनी, पौष में बकरी, चैत में कुतिया के बच्चे जन्में तो ६ मास में पिता व घरवाले की मृत्यु अथवा महाभय होता है। माघ में बुधवार को भैंस, श्रावण में दिन में घोड़ी प्रसूति हो तो महाभय शीघ्र होवे। स्मरण रहे कि यहां सर्वत्र सौरमास ग्रहण है, प्रसूता गौ आदि का तत्क्षण दानकर व्याहृति मन्त्रों से घृतयुक्त श्वेत सरसों का हवन करें, बच्चा जन्में तो कार्तिक शान्ति करने से शुभ है।

त्रिखलजन्म फलः-यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति हो अथंवा तीन पुत्रों के पश्चात् कन्या का जन्म हो तो त्रिखल नामक दोष के कारण कन्या माता को, लड़का पिता को भय, धनहानि आदि कष्टप्रद होते हैं, कृपणता छोड़कर त्रिखल शांति करें तो शुभ होता है। तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु(सोना, चांदी, तांबा) दान करें।

बालक की दन्तोत्पत्ति का फल

बालक के जन्मते ही दांत निकले हो तो माता-पिता को अरिष्ट, ऊपर की पक्ति में दांत से युक्त जन्म ले तो अधिक अरिष्ट, प्रथम ऊपर की पंक्ति में दांत निकले तो मातृपक्ष को भय हो, मामा शान्ति करे। पहले मास में दांत निकले तो शरीर नष्ट, द्वितीय में छोटा भ्राता नष्ट, तृतीय में भगिनी नष्ट, चुतुर्थ में भाई नष्ट, पांचवे में ज्येष्ठबन्धु नष्ट, छठे में बहुभोग, सातवें में पितृ सुख, आठवें में पुष्टि, ९वें में धनी, १०वें में सुख, ११वें में सुख, १२वे में धनी।

[illegible] फल :--वृद्ध गर्ग कहते हैं, कि- यदि भ्राताओं वा पिता - पुत्र, माता वा कन्या का एक नक्षत्र हो तो दोनों की अथवा एक की अवश्य मृत्यु होती है। स्वर्णदान से कल्याण होता है।

जन्म-कुण्डली से विशेष विचार

लघु-भ्राता का जन्म समय जानना-(१) जन्म लग्न स्पष्ट में दशम भाव का स्पष्ट जोड़ें, जो राशि हो उस पर जब गोचर में गुरु ग्रह आवे तो भाई या बहन का जन्म होता है।
(२) तृतीयेश, तृतीयस्थग्रह की दशा में छोटे भ्राता का जन्म होता है, यदि भ्रातृ-प्रतिबन्धक योग न हो तो।

भ्राता के कष्ट (खतरे) का समय जानना-(१)जन्म लग्न के स्पष्ट में से तृतीयेश के स्पष्ट को घटावें, शेष राश्यादि का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर जब गोचर में शनि आता है तब भाई या बहन को कष्ट होता है।
(२)लग्रेश स्पष्ट में से तृतीयेश स्पष्ट घटावें, शेष में दशमेश स्पष्ट और मंगल-स्पष्ट घटावें - शेष राशि में जब गोचर का शनि आता है तब भ्रातृकष्ट होता है।
(४)लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश, भौम, इन चारों स्पष्टों को जोड़कर जो राश्यादि हो उसके नवांश राशि में जब गोचर का शनि होता है उस काल में भ्रातृ-कष्ट होता है।
(५)लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश ओर भौम को जोड़कर जो राश्यादि हो उसके द्रेष्काण राशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब भ्रातृकष्ट जानिये।

माता की मृत्यु का समय जानना-(१)जन्म के सूर्य में से चन्द्रस्पष्ट को घटावे शेष की राशि में या त्रिकोण राशि में या उस शेष राशि के नवांश राशि में जब गोचर का शनि वा गुरु होगा तब माता की मृत्यु का समय जानना।

अथ कन्याजन्मनि मूलचक्रम्

शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाह्वो	हस्ते	गुह्ये	जंघा	जान्वो	पादे	स्थानम्
४	६	५	५	५	४	९	४	४	१०	घटी
पशुना.	धनना.	धनला.	कुटिला	धनला.	दयावती	कामिनी	मातृना.	भ्रातृना	वैधव्य	फलम्

कन्याजन्मनि नक्षत्रफलम्

जन्म नक्षत्र	मूल (१।२।३ च.)	आश्लेषा (२।३।४ च.)	ज्येष्ठा	विशाखा (४च.)
फलम्	ससुरहानि	सास नाश	ज्येष्ठनाश	देवरनाश

सुतः सुता वा नियतं श्वशुरं हन्ति मूलजः। तदन्त्यपादजो नैव तथाश्लेषाद्यपादजः।

तिथिगण्डान्त-पूर्णा तिथियों के अन्त को ७ घड़ी, नन्दा तिथियों की शुरू की दो-दो घड़ी तिथि गण्डान्त होता है। यह गण्डान्त जन्म, यात्रा, विवाह में भयप्रद होता है।

अथ गण्डमूलनक्षत्राणि

अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती

उपरोक्त ये ६ नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं, इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक, माता, पिता, कुल और अपने शरीर का नाश करने वाला होता है। यदि अपना शरीर नष्ट होने से बच जाए, तो धन तथा घोड़ों का स्वामी होता है।

चाहिए, तत्पश्चात शान्ति करके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद है।

मूल और आश्लेषा नक्षत्र के चरण जन्मफल

मूल पाद	फल	आश्लेषा पाद	फल
१	पितृनाश	४	पितृनाश
२	मातृनाश	३	मातृनाश
३	धननाश	२	धननाश
४	शान्ति से सुख	१	शान्ति से सुख

मूलजनने वृक्षविभाग फलम्

मूल	स्तम्भ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्प	फल	शिखा	विभाग
७	८	१०	११	१२	५	४	३	घटी
मूल नाश	वंश नाश	मातृ क्लेश	मातुल नाश	मन्त्री पद	मन्त्री पद	विपुल लाभ	अल्प जीवन	फल

अथ मूल पुरुष चक्रम्

मूर्ध्नि	मुख	स्कन्धे	बाह्वोः	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्ये	जान्वोः	पाद	स्थान
५	७	४	८	४	९	२	१०	६	६	घटी
राजा	पि.मृ.	बली	बली	ज्ञानी	मन्त्री	ज्ञानी	कामी	मतिमा.	मतिमा.	फलम.

अथ मूलनिवासचक्रम्

जन्ममासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. फा.	चैत्र, श्रा. का. पौ.	आषा. आ. माघ. भा.
जन्मलग्नानुसारेण	२।५।८।११	३।६।९।१२	१।४।७।१०
मूलनिवासस्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

मूल का निवास मास व लग्नानुसार दोनों प्रकार से भूमि पर आवे तो महाभयप्रद होता है, एक प्रकार से स्वल्पभय होता है। तृतीया, दशमी, षष्ठी शनिभौमसमन्विता। शुक्ला चतुर्दशी मूले जातः संहरते कुलम्॥ यत्र गण्डे क्रूरयुते महादोषकरो भवेत्। शुभग्रहसमायोगे ईषच्छुभकरंभवेत्॥ दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ। शूले गंडातिगडे च परिघे यमघण्टके॥ ब्रह्मदण्डे मृत्युयोगे प्राप्ते गंडदिने शिशुः। जातो हन्ति कुलं सर्वं तस्मात् कुर्वीत शान्तिकम्।।यथा सर्पविषंचैव मन्त्रश्रवणाद्विलीयते। तथैव गंडदोषोऽपि विधानेन विलीयते॥ रत्नैः शतौषधीमूलैः सप्तमृद्भिः प्रपूर्यते। शतच्छिद्रं घटं तस्मान्निःसुतेन जलेन हि।।बालकस्यापि तत्स्नाने विप्रैः सम्पादिते सति। जपहोमप्रदानेन कृते स्यान्मंगलं ध्रुवम्।।विरुद्धावयवे मूले विधिरेव स्मृतो बुधैः। मुनीनां वचनं सत्यं मन्तव्यं क्षेममीप्सुभिः॥

अथाभुक्तमूलविचार :- ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम चार घटी, किसी के मत से एक घटी एवं मूल नक्षत्र की आदि की चार घटी विशेष आधी, अभुक्तमूल कहलाता है। इस

समय में जो बच्चा जन्म ले उसका परित्याग कर दें या आठ वर्ष, असमर्थ हों तो ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता मुख न देखे। धनगंडे दरिद्रोऽपि शांतिं कुर्यात्स्वशक्तितः। अन्यथा नाशमाप्नोति चाभुक्तर्क्षे विशेषतः॥

गण्डमूलोत्पन्न बालक का जन्मकाल फल

दिन में	रात्रि में	सन्ध्या	प्रातः	समय
मू. ज्ये. पिता को भय	म. मू. माता को भय	रे. अश्वि. शरीर को भय	पशु- हानि	फल

अथ पुरुष जन्मकुण्डल्यां भावस्थ-ग्रह फलानि

भाव	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु १	अंगपीड़ा	कान्तिसुख	रक्तकोप	सुखी	विद्वान्	सुखी	दुखी	रोगी	सकाम
धन २	धननाश	सम्पत्तिवान्	ऋणी	धनी, गुणी	धनागम	धनी	धनहानि	निर्धन	खल
सहज ३	नीरोगी	कीर्तिमान्	विक्रमी	अरिमर्दन	पापी	पापी	पराक्रमी	विक्रमी	शूर
सुहृत् ४	दुखी	सुखभोगी	दुःखी	सुखी	सुखी	सुखी	दुखी	मातृहा	दुःखी
सुत ५	सुतहानि	धनी, पुत्रवान्	पुत्रहीन	अल्पपुत्र	प्रतापी	धीमान्	पुत्रहीन	कुमति	मूर्ख
शत्रु ६	शत्रुनाश	अल्पआयु	शत्रुनाश	रोगी	कामी	रोगी	शत्रुजित्	सबल	सबल
स्त्री ७	स्त्रीदुष्टा	सुभार्यावान्	स्त्रीनाश	धर्मज्ञ	सुभार्या	कामी	स्त्रीकुलटा	स्त्रीरोगी	स्त्रीहा
मृत्यु ८	अल्पायु	योगी	शरीरपी.	गुणी	नीचस्व.	नीच	नेत्ररोगी	रोगी	क्लेशयुक्त
धर्म ९	दुष्टमति	धर्मात्मा	पापरत	सुखी	धार्मिक	तपस्वी	दुष्टबुद्धि	दैन्ययुक्त	पापी
कर्म १०	शूर	तेजयुक्त	तेजस्वी	कीर्तिमान्	सम्पत्तिमान्	संपत्ति	पराक्रमी	मानी	पितृहीन
लाभ ११	धनी	धनी	धनी	धनी	सुलाभ	सुमति	धनवान्	सुख्यात	धनी
व्यय १२	दुष्टस्वभाव	कामी	पतितदार	दरिद्र	खल	रोगी	दुःखी	पतित	दुर्जन

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां भावस्थग्रहफलानि

भाव	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु १	क्रोधिनी	गतायुः	विधवा	सौभाग्य	सती	ससुखा	बन्ध्या	पुत्रहीना	दुखिनी
धन २	दरिद्रा	बहुधन	वन्ध्या	धनाढ्य	धनाढ्या	सुभगा	दुःखिनी	दरिद्रा	दुःखार्ता
सहज ३	सुसुता	सुखिनी	विसहजा	पुत्रवती	सुसहजा	धनाढ्या	सुदक्षा	सवित्ता	रोगिणी
सुहृत् ४	सपीड़ा	दुर्भगा	दुःखार्ता	सुगृहा	सुखिनी	सुखिनी	हृद्रोगा	रोगार्त्ता	मातृहा
सुत ५	विपुत्रा	ससुखा	विपुत्रा	धीकांतियुत्ता	सगुणा	पुत्रवती	विपुत्रा	विपुत्रा	अपुत्रा
शत्रु ६	सुखिनी	सरोगा	अरोगा	सकोपा	सापदा	दरिद्रा	गुणज्ञा	सधना	धनयुता
पति ७	दुःखार्ता	पतिप्रिया	विधवा	पतिव्रता	कीर्तियुता	पतिप्रिया	विधवा	दुःखिता	विधवा
मृत्यु ८	विधवा	रोगिणी	विधर्मा	कृतघ्ना	सरोगा	विसुखा	दुःखिनी	विधवा	दुःखिनी
धर्म ९	धर्मज्ञा	सुखिनी	दुःखिनी	सुभोगा	पुत्राढ्या	धर्मरता	वन्ध्या	वन्ध्या	शोकयुक्ता
कर्म १०	सुकर्मा	धर्मज्ञा	कुपुत्रा	सत्कर्मा	साध्वी	सधना	पापिनी	दुष्कर्मा	पापिनी
लाभ ११	सधना	गुणज्ञा	सुलाभा	पतिव्रता	सुपुत्रा	सुपुत्रा	सुलाभा	नीरोगा	सुभगा

अश्विनीजातस्य फलम्– अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता को भय, द्वितीय में सुखेश्वर्य, तृतीय में मंत्री तुल्य, चतुर्थ में नृपति समान होता है।

मघाफलम्-मघा के प्रथम चरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष को हानि, दूसरे में पिता को भय, तीसरे में सुख, चतुर्थ चरण में धन विद्या लाभ होंगे।

ज्येष्ठापाद फलम्– प्रथम चरण में बड़े भाई को नेष्ट, द्वितीय में छोटे का नाश, तृतीय में माता का नाश, चतुर्थ में अपने बाप का नाश होता है। ज्येष्ठाद्यपादजी ज्येष्ठं हन्ति बालो न बालिका। न बालिका तु मूलर्क्षे मातरं पितरं तथा।

रेवतीपाद फलम्–रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृप समान, दूसरे में मंत्री या मुख्तार, तीसरे में सुख सम्पत्तियुक्त, चतुर्थ चरण में अनेक कष्ट हों।

अथ मातृसुखनाश योगा :-(१)पापग्रह युक्त चन्द्रमा सातवें भाव में होवे,(२) चन्द्रमा से सातवें पायुक्त शुक्र हों, (३)पाप ग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे सातवें पापग्रह हो,(४)तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य और लग्न में, मंगल होवे,(५)चौथे भाव में शनि पापग्रहों से ही दृष्ट हो - इन पाचों में से एक भी योग मिले तो माता को भय हो, जप दान करना चाहिए ।

पितृनाश योगा - (१) सूर्य मंगल दसवें वा नवम में गये हो(२) दशमेश रवि मंगल से युक्त हो,(३) शत्रु राशि का मंगल १०वें हो, (४)पापग्रह से युक्त सूर्य सातवें हो,इन चार योगों में से एक भी योग हो तो पिता को भय हो ।

भ्रातृनाश योगा:- भ्रातृ गृह को ईश जो भौम संगत्रिक होय। जाके ऐसे योग है भ्रातृहीन नर होय॥

सन्तानसुख नाशयोगा:- गुरु ते पञ्चम गेह पति, जाय परे त्रिक भाव। ऐसा योग जो लखि परे ताकि पुत्र अभाव । पुत्र धर्म अरु लग्नपति जाय परे, त्रिक धाम। जन्म समय या योग ते सदा पुत्र की हान।

रोगिणी स्त्रीयोग- शुक्र और सूर्य सप्तम, पंचम और नवम में हो तो उसकी स्त्री प्रायः रोगयुक्त रहती है ।

नीचयोगा:-सहज सप्तम धन सदन में क्रूर बसे खग आई। भवन पांचवें गुरु बसै नीच जाति मनसाई॥ सिंह लग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विकराल। म्लेच्छ होय कुछ दिवस में यदपि ब्रह्म को बाल। जिनके बुध भग राह सग सप्तम भाव विराज। लहे सर्वदा [illegible] होवे वेश्यावाज।

जारज योगा : -भानुचन्द्रतनु ना लखै लग्नप लखै न लग्न। सो शिशुहै पर पुरुष को भाषत ज्योतिषमग्र॥ रवि कुज गुरु तिथि

ग्रहाणां द्वादशभाव-फल बोध-चक्रम्

गृह	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	स्थानना:	भय	श्री:	मानभंग	दैन्य	विजय:	यात्रा	पीड़ा	सुकृ. ना.	सिद्धि:	धनलाभ	द्रव्यनाश
चन्द्रः	अन्नलाभ,	धननाश	सुख	रोग	कार्यनाश	धनलाभ	स्त्रीलाभ	रोग:	धर्मलाभ	सौख्यं	धनलाभ	धननाश
भौमः	शत्रुभीति,	धननाश	धनलाभ	शत्रुभय	धननाश	धनलाभ	द्रव्यनाश	शत्रुभीति	शत्रुभय	शोक:	धनलाभ	धननाश
बुधः	बन्धनं	धनलाभ	शत्रुभय	पशुलाभ	सुखं	स्थानलाभ	पीड़ा	धनला.	पीड़ा	सौख्यं	धनलाभ	धननाश
गुरु.	भयं	धनलाभ	क्लेश	धननाश	सुखं	शोक	राजमान	पीड़ा	सौख्य	दैन्यं	धनलाभ	पीड़ा
शुक्रः	शत्रुनाश,	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभय	शोक:	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दु:ख	धनलाभ	धनलाभ
शनिः	भय	धननाश	ऐश्वर्य	शत्रुभय	पुत्रनाश:	धनलाभ	दोष	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मनस्य	धनलाभ	धननाश
राहुः	हानि	धननाश	धनलाभ	वैर	शोक :	श्री:	कलह:	मृत्यु	दु:ख	वैर	सुखं	शोक
केतुः	रोग	वैर	सुख	भय	सुखं	धनलाभ	कलह:	रोग	पाप	शोक:	कीर्ति:	शत्रुभीति

अथग्रहाणामेक भोगफल-समयादि ज्ञानम्

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा. के	ग्रहा:
मा.१	दि. २।	मा१॥	मा. १	मा.१२	मा.१	मा.३०	मा.१८	एकार्थभोग
आदौ	अन्ते	आदौ	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्ते	अन्ते	फलसमय:
भय.५	घ.३	दि.८	दि.७	मा.२	दि.७	मा.६	मा.३	गतव्यराशे:
								प्राक्फलम

अथ ग्रहतुष्ट्यर्थं धारणाय मणय:

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
माणिक्यम्	मुक्ताफलम्	प्रवाल	पन्ना	पुष्पराग	हीरा	नीलम्	गोमेदम्	वैदूर्यम्
विद्रुमम्	रौप्यम्	विद्रुमम्	सुवर्णम्	मुक्ताफलम्	लोहम्	वैदूर्यम्	ताम्रजर्तः	ताम्रजर्तः

पूतना-ग्रसित लक्षण एवं शांति

बहुत मैले बिछौने पर अकेली जगह में छोटे बच्चे को सुला देने से पूतना नाम राक्षसी का उसमें प्रवेश होने से बच्चा बीमार हो जाता है । तब पूतना की बली निकालने से अच्छा होता है । जब कभी बच्चा बैठे बैठे गिर पड़े, या यों मालूम हो कि किसी के पीटने से गिरा है और मूर्छा आ गई है अथवा एकाएक कोई रोग हो गया है तब जानो, कि उसे महापूतना ने ग्रसा है । यदि कोई लाभादि के वश में आकर वनदेवता या नाकदेवता का तिरस्कार कर दे तो उसके बालक में ऊर्ध्वपूतना प्रवेश कर लेती है । यदि कोई मनुष्य अपनी ऋतुस्नाता स्त्री का गमन करने के पश्चात् स्नान न करे या बिना ऋतु के संगम करके हाथ मुंह न धोवे और माता अपवित्र अवस्था में ही बालक के साथ सो जावे तो बालक्रांता नाम की राक्षसी का दोष होगा । बच्चे को इतर फुलेन और फूल माला पहिना कर बाहर जाने से रेवती ग्रही का दोष होता है । सिर खुले जूठे बाल को संध्या के समय सोने से भी रेवती का आवेश हो जाता है । संध्या के समय जमीन पर सोने से अथवा खेलने से बालक को पुष्प रेवती का दोष होता है । कदाचित् बालक खेलता खेलता गिर जाये अथवा उसे उल्टी हो या हाथ पांव नहीं धुले हों तब उसे शुष्क रेवती का आवेश होता है । जूठा खाने और देवता के स्थान पर मल मूत्र करने से शकुनी ग्रही बालक को पकड़ लेती है । जो नित्य कर्म संध्या बंदनादि नहीं करते या जो लोग पक्षियों को पालते हैं जन्मान्तर में उनके बालकों पर शिशुमुण्डिका राक्षसी का दोष हो जाता है । फिर उसका पूजन और बलि धूपादि दान करने से शांति होती है ।

चेष्टा:- जिस बालक के नखों और दांतों में विकार हो, नींद नहीं आवे, डर लगे, मन में उद्वेग रहे, शरीर में दुर्गन्ध उठे, अनेक प्रकार की चेष्टा करे, बल अधिक हो जावे, उसे ग्रहाविष्ट जानना।

उद्वर्तनम् - दूर्वा, कुटकी, नीम के पत्ते, तज, इनका उबटना बालक के शरीर में मलकर पीछे पीपल के पत्ते मुलट्ठी, लसूडे के पत्ते इनका काढ़ा बनाकर स्नान करावे यह रोग दूर होगा ।

सर्वबालग्रहशान्त्यर्थं देवालये ज्योतिदर्शन निवासश्च तत्र रात्रौ- "ॐ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत् । सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो न: सुतानिव ॥" इत्यस्य जप:, ततोऽनेनैव मन्त्रेण सदीप दधिमाषान्नबलिदाने घण्टाबन्धने च सर्वबालग्रहशान्ति: ॥

अथ बाल रक्षा विधि (प्रयोगसारे)

यदि दुष्टदृष्टि (नजरादिदोषों) के कारण बालक के शरीर में कोई रोग कष्ट हो जाये तो- ॐवासुदेवो जगन्नाथ: पूतनातर्जनो हरि: । रक्षति त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ॥ १ ॥ कृष्ण, रक्ष शिशुं शंख-मधुकैटभ-मर्दन! प्रात:-सङ्गव मध्याह सायाहेषु च सन्ध्ययो: ॥ २ ॥ महानिशि सदा रक्ष कंसाराति निषूदन! यद्गोरज: पिशाचांश्च ग्रहान् मातृग्रहानपि ॥ ३ ॥ बालग्रहान्विशेषेण छिन्धि छिन्धि महाभयान् । त्राहि त्राहि हरे नित्यं त्वद्रक्षाभूषितं शिशुम् ॥ ४ ॥

इन चारों मंत्रों से अभिमंत्रित हुई गौ के गोबर की शुद्ध भस्म को बालक के मस्तक, कण्ठ, हृदयादि अंगों में लगाने से बालक का कष्ट दूर होगा।

पूतना विधान- यहां लिखे बाल कष्टावली चक्रोक्त हर एक बलिदान के पीछे मार्जन शिखास्थान-स्पर्श निम्नलिखित मंत्रों द्वारा एक होता है, बलिदान विधि तीन दिन निरंतर करें। चौथे दिन पलाश, अश्वत्थ, बिल्व, गूलर, मिल सके तो कपित्थ, इनके पत्रों को बालक को मंत्र पाठपूर्वक स्नान कराना। तदन्तर कल्याणार्थ यथा शक्ति भिक्षुकों को तथा कुत्ते आदि जीवों को मिष्ठान्न भोजन कराना ओं द्यौः शांतिरन्तरिक्षं" इत्यादि शांतिमंत्रों व मार्जनमंत्रों से कुशा से छींटे देने के अनन्तर बालक की शिखा व शिखा-स्थान स्पर्श मंत्र पढ़ें- " ओं रक्ष रक्ष महादेव नीलग्रीव जटाधर। ग्रहैस्तु सहितो रक्ष मुञ्च मुञ्च कुमारकम्॥ ओं सर्वमातर इमं ग्रहं संहरन्तु [illegible] स्कन्दाय स्वाहा। गर्ज २ सः गृहाण गृहाण आनन्दय २ हीम् हीम्, हन हन एवं सिद्धि रक्षो [illegible] स्वाहा॥ इति रक्षामंत्रः॥

बाल कष्टावली चक्रम्

किस समय कौन पूतना ग्रस्त करती है ?	मूर्ति निर्माणार्थ द्रव्य	पूजन द्रव्य	बलि विधान व समय	स्नान पूजा मार्जन मंत्र	धूप
प्रथम दिन मास वर्ष में योगिनी	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेत चन्दन, तिलक, श्वेतपुष्प ५ रंग की झंडी ५,५दीपक, ५आटे के सतिये,कपूर,लोहवान	श्वेत भात,५पूर्ण पोली(सुहाली) १प्रहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखना।	ॐ ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै श्रवणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।	राई, खस, आक के फूल, बिल्ली और मनुष्य के बाल, निम्ब पत्र, गोघृत
द्वितीय दिन मास वर्ष में सुनन्दना	एक सेर चावलों का आटा	१०दीपक,१०झण्डी,पुष्प, चावलों के आटे के सतिये १०	भात एक सेर, आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस, संध्या समय पश्चिम दिशा में चौरास्ते पर रखना	ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चे ह्रां ह्रां ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्थानाद्राज्ञया स्वाहा	
तृतीय दिन मास वर्ष में पूतना	एक सेर चावलों का आटा	रक्त चन्दन,रक्त पुष्प,श्वेत ध्वजा, दीपक१०,गेहूं केआटे केसतिये१०	एक सेर लाल भात,आधा सेर पूर्ण पोली, पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे	सुनन्दना विधानोक्त	लहसुन,गोमूत्र,सांप की कांचली नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल गोघृत
चतुर्थदिन मास वर्ष में मुख मंडिका	तिल -चूर्ण एक सेर	श्वेत पुष्प, श्वेत ध्वजा ५,दीपक, मिल सके तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प	भात , सेर आटे के पूड़े आध सेर पूर्ण पोली , सांय ,पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे	सुनन्दना विधानोक्त	
पंचम दिन मास वर्ष में बिडालिका	एक सेर चावलों का आटा	श्वेत चन्दन , श्वेत पुष्प , दीपक ५,श्वेत ध्वजा ५,गेंहु के आटे के सतिये	श्वेत भात, ७ पुड़ियाँ , सांयकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे ।	ओंभगवती ह्रीं ह्रीं ह्रीं हुं हूं मुञ्च रक्षां कुरु कुरु बलिं गृहाण अस्त्र ठ:ठ: चामुडे सर्वारि चण्डिके ठ:ठ:स्वाहा।	
षष्ठ दिन मास वर्ष में, षट्कारिका	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेत चन्दन , श्वेत पुष्प , दीपक ५,श्वेत ध्वजा ५,	भात,५ मिठाई ,५सुहाली ,७पूड़ियां,१ प्रहर दिन चढ़े पूर्व में चौरास्ते पर	योगिनी विधानोक्त	कुठ, गुग्गल, राई, हाथीदांत, घृत।
सप्तमदिन मास वर्ष में कालिका	चावल का आटा एक सेर	श्वेत चन्दन , श्वेत पुष्प , दीपक ५,श्वेत ध्वजा ५,	भात, ७ पूड़ियाँ , सांयकाल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर	बिडालिका विधानोक्त	
अष्टम दिन मास वर्ष में में कामिनी	जल के दोनों किनारों की मिट्टी	रक्त चन्दन, ५रंग की झण्डी ५, दीपक ५,	गेहूँ की रोटी,मसूर की दाल,हरा साग, छाग मांस संध्या में चौरास्ते पर	बिडालिका विधानोक्त	
नवम दिन मास वर्ष में, मदना	एक सेर गेहूं का आटा	चन्दन, पुष्प,५दीपक,५ रंग की झण्डी ५ ।	भात, मत्स्य मांस, पापड़ी, सुहाली उत्तर में प्रात: चौरास्ते पर	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडल बलिमादाय हन २हुं फट् स्वाहा	लहसुन, सांप की कांचली, मनुष्य और बिल्ली के बाल, राई, गोघृत ।
दशमदिन मास वर्ष में रेवती	एक सेर गेहूं का आटा	रक्त पुष्प २५, झंडी,२५ दीपक,२५ सतिये।	गुड़ के घी भुने चावल,गौ घृत, सांय,दक्षिण में चौरास्ते पर	ॐ नमो भगवते वैश्वदेवाय हन हुं फट् स्वाहा	
एकादश दिन मास वर्ष में, सुदर्शना	काले उड़दों का आटा एक सेर	[illegible] झण्डी,२५ आटे के सतिये।	[illegible] व प्रात: दक्षिण में चौरास्ते पर	ॐ नमो भगवते रावणाय चन्द्रहास वज्रहस्ताय ज्वल २ दुष्ट ग्रहादीन् ॐ ह्रीं फट् स्वाहा	

अथ नक्षत्र -कष्टावली

रोग नक्षत्र	रोगशान्त्यर्थ दान	नक्षत्रपादवशाद् रोग दिन संख्या				रोगशांत्यर्थ जपनीयमन्त्र	रोगनिवृत्त्यर्थ बलि
अश्विनी	भोजनदान	९	११	१	२०	मृत्युञ्जयमंत्र:	घोड़ी के मुख में सात व्रीही धान्य देवे।
भरणी	गो-अन्नादिदान	०	८०	४०	११	यमायतवेति मंत्र	हाथी के मुख में तिल चावल
कृत्तिका	स्वर्णदान	९	११	१६	२८	अग्निर्मर्धेति	कछुए के मुख में घी दे
रोहिणी	घृतदान	३	९	१८	३०	ब्रह्मायेति	सर्प को दूध-दही खिलावे
मृगशिरा	तिलदान	९	५	७	१०	इमंदेवेति मन्त्र:	खरगोश को दूध पिलावे
आर्द्रा	गोदान	०	१८	०	०	नमस्ते रुद्र इति मन्त्र	बकरे के मुख में रक्त डालें
पुनर्वसु	पीतलदान	७	१४	२	२१	अदितिद्यौ रितिमन्त्र:	सूअर को धान्य खिलावे
पुष्य	तैलान्नदान	६	७	१०	२१	बृहस्पतेति मन्त्र:	बकरे के मुख में दही डाले
आश्लेषा	गो-अजादिदान	०	०	४१	०	नमोस्तुसर्पेति मन्त्र:	बिलाव को दूध पिलावे
मघा	वस्त्राभ्यदान	१५	७	१७	२०	पितृभ्य इति मन्त्र:	बन्दर को तिल उड़द खिलावे
पू. फा.	भोजनदान	०	१५	०	३०	भगम्प्रणेति मन्त्र:	ऊंट के मुख में शहद दें
उ. फा.	अन्नदान	७	१४	७	६०	दध्यावद्धेति मन्त्र:	गाय को शाक खिलावे
हस्त	तैलदान	१५	१७	१५	०	उदत्यंजातवेदैति मन्त्र:	भैंसे को कमल के फूल खिलायें
चित्रा	दुग्ध दान	११	९	९	१६	त्वष्टा तुरिगति मन्त्र:	बाघ के लिए तगर धतूरे के फूल वन में रखें
स्वाती	गौघृत दान	६०	१७	३०	०	वायोरग्रेति मन्त्र:	भैंसे को गुड़ चावल खिलावें
विशाखा	गौ-स्वर्णदान	१५	०	४	१३	इंद्राग्नी इति मन्त्र:	बाघ के मुख में गुड़ भात की बलि दें
अनुराधा	गौघृत दान	६०	१२	३६	३०	नमोमित्रेति मन्त्र:	बकरे को कुलथी सहित भात गुड़ दें
ज्येष्ठा	तिलदान	६९	९	६	४	त्रातारमिन्द्रमिति मन्त्र:	बंदरों को गुड़ तिल डालें
मूल	रौप्यपात्रदान	०	९	१५	६	माता पुत्रेति मन्त्र:	बिलाव को दूध पिलावें
पू. षा.	गोमुक्तादान	०	१५	२४	१०	आपो धर्मेति मन्त्र:	कछुए के मुख में नागर मोथे की बलि दें
उ.षा.	भोजनदान	३०	२४	२६	१६	विश्वेदेवेति मन्त्र:	गौ को धान्य डालें
श्रवण	श्रीफलदान	६०	२४	६	९	विष्णोररा. मन्त्र	भैंसे के मुख में रक्त, मीठा की बलि दें
धनिष्ठा	अश्वान्नादान	१५	४	२०	२१	वसो: पवित्रेति मन्त्र	मनुष्य के मुख में दही अन्न की बलि दें
शतभिषा	भोजनान्नदान	४	४५	३	२२	वरुणस्तम्भेति मन्त्र	गौ को चावल खिलावें
पू. भा.	भोजनदान	०	१२	२१	१९	अहिर्बुध्न्येति मन्त्र	कौए के मुख में फल की बलि दें
उ.भा.	अन्नदान	१०	३	९	१५	अहिर्बुध्न्येति मन्त्र	गाय को चावल खिलावें
रेवती	फल दा.कन्यापूजन	१८	१०	९	२०	पूषन्नयेति मन्त्र	हाथी के मुख में पूरी-पूओं की बलि दें

जिस नक्षत्र में रोग पैदा हुआ है उसे यहां कष्टवली में रोग नक्षत्र का नाम दिया गया है।

रोग नक्षत्र को जानकर इन कोष्ठों में लिखा उपाय एवं यथाशक्ति दान करने से रोग शान्त होगा। 'रोग निवृत्त्यर्थ बलिदान'-वाले कालम में घोड़ी हाथी आदि के मुख में बलि देने के लिए लिखा है, वह गेहूं के आटे की वैसी ही आकृति बनाकर (मन में हाथी आदि की धारणा करके) उसके मुख में बलीद्रव्य देकर धूप-दीपादि करके आटे की आकृति को जल में प्रवाहित कर दें-ऐसा तीन दिन करें। साथ ही दान और जप भी करें।

ज्वालामुखी योग

तिथि	१	५	६	९	१०
नक्षत्र	मूल	भर.	कृत्ति.	रोहि.	आश्लेषा

जन्मे सो जीवे नहीं बसै जो उजड़ जाय। चूड़ा पहिरे कामिनी चटपट विधवा होय। गये गए ना बुहरे कूए नीर सुकाय।

पुत्रोत्पत्ति का समय जानना - (१) जन्मलग्नेश व पुत्रेश के स्पष्ट को जोड़े। योगफल के राश्यादि और नवांश की राशि में या इन दोनों के त्रिकोण राशि में जय गोचर का गुरु होता है तब संतान उत्पन्न होती हैं।

(२) चं. ल. गु. इन तीनों से पंचम स्थानेश या नवमस्थानेश की दशान्तर्दशा में संतानोत्पत्ति होती है।

विवाह (स्त्रीसुख)होने का समय जानना-(१)जन्म लग्नेश सप्तमेश को जोड़कर जो राशि हो उस राशि में जब गोचर का गुरु हो तब विवाह होता है॥

(२) चन्द्र राशीश और अष्टमेश को जोड़े, उस राशि में जब गोचर का गुरु आवे तब विवाह होता है।

(३) लग्नेश का नवांशेश जिस राशि में हो उस राशि से द्वितीय भाव में जब गोचर में गुरु चन्द्र होते हैं, तब विवाह होता है।

(४) शनि-चन्द्र व सप्तमेश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है।

पिता के खतरे का समय जानना-(१) गुलिक स्पष्ट से सूर्य-स्पष्ट घटावें, शेष राशि के त्रिकोण में जब गोचर का शनि हो तब पिता की मृत्यु होती है।

(२) सूर्य से १।२।७।१२ भाव में जो पापग्रह हो उस की दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है।

नोट -

इस कष्टावली में प्रत्येक नक्षत्र का जपनीय मंत्र पृथक् पृथक् लिखा है वह न कर सके तो महामृत्युञ्जय ही करे। जिस नक्षत्र के जिस चरण में पहले रोग उत्पन्न हुआ है उस चरणानुसार कष्ट व दिन जाने, शून्य से विशेष भय जाने, दान, जप करे।

रोगोत्पत्तौ कुयोगाः

(१)रोग के शुरु दिन में जन्मराशि नक्षत्र लग्न में या राशि व लग्न से आठवें चन्द्र या यमघंट कुयोग हो।

(२)सूर्यवार को मघा, द्वादशी या भरणी अनुराधा नक्षत्र हो।

(३)सोमवार को आर्द्रा या उत्तराषाढा नक्षत्र हो।

(४) मंगलवार को कृ. मघा व शतभिषा या नन्दा (१।६।११)हो।

(५)बुधवार को अश्विनी व विशाखा या भद्रा(२।७।१२) आश्लेषा हो।

(६)गुरुवार छठ व शतभिषा या ज्येष्ठा व मृग. या जया (३।८।१३)व मघा, हस्त हो।

(७)शुक्रवार अष्टमी व अश्विनी या आश्लेषा श्रवण या रिक्ता(४।९।१४) आर्द्रा या धनिष्ठा हो।

(८) शनिवार को नवमी व पू. षा. या हस्त व पू. भा. या पूर्णा(५।१०।१५)व भरणी हो।

(९)सूर्य मंगल शनिवारों को ४।६।९।१२।१४।३० तिथि, भरणी, कृत्ति, आर्द्रा, आश्लेषा, पूर्वा ३, विशा, ज्ये, धनि, शत, नक्षत्र हो तो मृत्युतुल्य कष्ट होता है।

परञ्च जन्मपत्र में मारकेश का और भी विचार कर लेना। क्योंकि बिना मारकेश आये मृत्यु तो होती ही नहीं। हाँ, ऐसे योग में कष्ट [illegible] मृत्युतुल्य होता है। उपरोक्त योगों में से किसी भी एक योग में रोगारम्भ होते ही तुला दान, गोदान तथा मृत्युञ्जय जप करना कल्याणप्रद है।

अथ रोगत्रिनाड़ी चक्रम्

आर्द्रा	पू.फा	उ.फा.	उ.फा.	ज्ये.	धनि.	शत.	भर.	कृ.	प्रथमा
पुन.	मघा	हस्त	विशा.	मूल	श्रवण	पू. भा.	अश्वि	रो.	मध्या
पुष्य	आश्ले	चित्रा	स्वा.	पू.षा.	उ.षा.	उ. भा.	रेव.	मृ.	अन्त्या

सूर्य नक्षत्र, दिन नक्षत्र और जन्म नक्षत्र व नाम नक्षत्र रोगत्रिनाडीचक्र में एक ही नाडी पर हों तो असाध्य रोगी का मरण होता है। मरने को हो तो प्रतिदिन देखने से जिस दिन यह योग मिले उसी दिन निःसदेह रोगी की मृत्यु कहे। यह रोगत्रिनाडीचक्र यात्रा तथा रण के समय वर्जित करना।

कालस्य मुखदंष्ट्रा ज्ञानम्

दिन नक्षत्र से नाम नक्षत्र ५।१३।२३संख्या का हो तो काल का मुख होता है और उसी प्रकार १०।१८ वां, नक्षत्र दंष्ट्रा (दाढ़ा) होती है। काल के मुख में दाढ़ में जिस दिन गोचर में नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यन्त रोगग्रस्त पुरूष की मृत्युपर्यन्त हालत होती है। रोग पर सर्पादि दर्शन पर,विग्रह - युद्ध में जाने पर काल के मुख दंष्ट्रा में नक्षत्र हो तो अशुभ होता है

कालांग चक्र से शुभाशुभ फलज्ञान

यदि किसी व्यक्ति के अंङ्ग विशेष में पीड़ा, कष्ट, घाव, फोड़ा आदि चर्म विकार किंवा वायु-विकारादिजन्य कोई कष्ट हो तो तात्कालिक प्रश्नकुण्डली लगा कर निम्नलिखित कालांग चक्र में दिए भावों के अनुसार उस पीड़ित भाव को देखें। यदि उस भाव में कोई अशुभ ग्रह हो, किंवा वह भाव खलदृष्ट, अस्त, नीच तथा शुभग्रह की दृष्टि से रहित हो तो समझें, कि उस अवयव में और विशेष कष्ट की संभावना है। शांति के लिए उस ग्रह की शांति करावें। यदि प्रश्नकुण्डली में पीड़ित-भाव शुभग्रह से युक्त किंवा शुभ ग्रह दृष्ट हो तो रोग (कष्ट)शीघ्र निवृत्त हो जाएगा।

तिथि कष्टावली यन्त्रम्

ति.	तिथीश	कष्टदिन	बलि	दान
१	अग्नि	१२	शर्कराज्यबलि	धृतदान
२	ब्रह्मा	५	पायसबलि	भोजनदान
३	काम	७	घृतान्नबलि	रक्तवस्त्रद.न
४	गणेश	१६	मोदकान्नबलि	मूंगादान
५	सर्प	२१	पायसबलि	दुग्धदान
६	स्कन्द	१२	मोदकान्नबलि	चित्रवस्त्र दान
७	सूर्य	८	पायसबलि	ताम्रपात्रदान
८	ईश्वर	१३	नानाभक्ष्यबलि	पीतवस्त्रदान
९	दुर्गा	१८	मिष्टान्न बलि	रक्तवस्त्रदान
१०	यम	२५	कृशरान्नबलि	नीलवस्त्रदान
११	विश्वेदेव	७	मोदकान्नबलि	पीतवस्त्रदान
१२	विष्णु	७	मोदकान्नबलि	श्वेत वस्त्रदान
१३	काम	१०	दधिशर्करावलि	सुवर्णदान
१४	शिव	६०	मिष्टान्नबलि	क्षौद्रशाक भो.
१५	चन्द्र	३	दध्योदनबलि	रौप्यदान
३०	पितर	१८	अपूपकान्न बलि	उत्तमान्नभोजन

वारकष्टावली यंत्रम्

वा.	वारेश	क.दि.	बलि व दान
सू.	रुद्र	५	पायसबलि, सूर्यदान
च.	गौरी	८	नानाभक्ष्यबलि, चन्द्रदान
मं.	स्कन्द	५	दुग्धबलि, भौमदान
बु.	विष्णु	७	मुद्गान्नबलि, बुधदान
वृ.	ब्रह्मा	५	घृतपक्कबलि,गुरुदान
शु.	इन्द्र	७	तिलयवाज्यमधुबलि, शुक्रदान
श.	यम	१५	माषान्नबलि, शनिदान

कालांग चक्र

भाव	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अंङ्ग	सिर	मुख	भुजाएं	हृदय	उदर	कटिभाग	बस्ति (मूत्राशय)	लिङ्ग	गुदा	जंघाएं	घुटने	पिण्डलियां	पाद-युगल

बाल-रक्षार्थ धूप

राई, लाख,नीम के पत्ते, बांस का छिलका, लहसुन, शिवजी पर चढ़े हुए फूल, अगर, गाय का घी, इन सब को मिलाकर धूप देने से सब पूतना तथा अन्य बालग्रह दूर हो जाते हैं। धूप देते समय "खुं खुर्दनं [illegible]" इस मंत्र का उच्चारण करें।

ग्रहगोचराद्यैर्दशा क्रमाद्यैर्ग्रह कृतानिष्ट-फल-शमनार्थ प्रत्येक-ग्रहाणां-दान-पदार्थाः												जप संख्या	जपनीय-मंत्राः	दान समय	हवन-समिधः
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केशर	मूंग, रक्तगाय	रक्तचन्दन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	उदय	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	शंख	कपूंर, श्वेतबैल	श्वेतचन्दन	११०००	ॐ श्रा श्रीं सः चन्द्राय नमः	सन्ध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तकनेर	केशर	कस्तूरी, रक्तबैल	रक्तचन्दन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भोमाय नमः	घ. २ शेष दिन	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	सर्वपुष्प	हाथीदांत	कपूंर, शस्त्र	फल	१९०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घ. ५ शेष दिन	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक, घोड़ा	पीतफल	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	सुगंध	दधि, श्वेतघोड़ा	श्वेतचन्दन	६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सूर्य उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उदड़	कुलथी	तेल	कृष्णवस्त्र	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्णांग, भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौ सः शनये नमः	मध्याह्ने	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तिल	नीलवस्त्र	कृष्णपुष्प	खड्ग	कंबल, घोड़ा	शूर्प	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौ सः राहवे नमः	रात्री	दूर्वा
केतु	लसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तेल	धूम्रवस्त्र	धूम्रपुष्प	नारियल	कंबल, बकरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः	रात्री	कुशा
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	कपूर	मसरी, श्वेतचन्दन	हाथीदांत	मुन्येशवत्	ॐ मुन्थेशमन्त्रः	मुन्थेशकाले	

नवग्रहों के व्रत की विधि

यदि किसी व्यक्ति का कोई ग्रह गोचर से या दशा-अन्तर्दशा से खराब चल रहा हो तो निम्नलिखित प्रकार के उस ग्रह का शास्त्रोक्त व्रत-विधान ब्रह्मचर्य पूर्वक करने से अशुभ फल निवृत्ति होती है।

रविवार के व्रत की विधि-सूर्य का व्रत रविवार को करें। यह व्रत शुक्लपक्ष के पहले (जेठे) रविवार से आरम्भ करके वर्ष पर्यन्त तीस या कम से कम १२ व्रत करें। उस रोज़ केवल गेहूं की रोटी घी लाल खण्ड के साथ या गेहूं का गुड़ से बना दलिया या हलवा इलायची डाल कर दान करके शेष का दिन में ही सूर्यास्त से पहले भोजन करें। नमक बिल्कुल न खायें। भोजन से पूर्व हो सके तो लाल वस्त्र पहनकर ऊपर चक्रोकत बीज-मन्त्र की माला जप करें। तदनन्तर सूर्य को गन्धाक्षत रक्त पुष्पदूर्वायुक्त अर्घ्य प्रदान करे। अपने मस्तक में लाल चन्दन का तिलक करें। जब व्रत का अन्तिम रविवार हो तो हवन पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण को भोजन करावें। ऐसा करने से सूर्य का अशुभ फल शुभ फल में परणित हो जावेगा। तेजस्विता बढ़ेगी। नेत्र रोग, चर्म रोग एव अन्य शारीरिक रोग भी शान्त होंगे।

सूर्य शान्ति का सरल उपचार :- लाल वस्तुओं का विशेष उपयोग जैसे चादर, परना तथा तांबे की अंगूठी का पहनना।

सोमवार के व्रत की विधि-चन्द्रमा का व्रत शुक्ल-पक्ष के प्रथम (जेठे) सोमवार से प्रारम्भ करके ५४ या १० व्रत करें। व्रत के दिन श्वेत वस्त्र धारण करके चक्रलिखित बीज-मन्त्र को ११ माला या ३ माला जप करें। सफेद फूलों से पूजन करके सफेद चन्दन का तिलक करें। मध्यान्ह के समय नमक के बिना दहीं - चावल, घी, खण्ड का यथाशक्ति दान करके स्वयं भोजन करें। जब व्रत का अन्तिम सोमवार हो उस दिन हवन पूर्णाहुति करके खीर-खण्ड से ब्राह्मण व बटुकों को भोजन करावें। इस व्रत के करने से व्यापार में लाभ, मानसिक कष्टों की शान्ति होती है, विशेष कार्य सिद्धयर्थ भी पूर्ण फलदायक होता है।

चन्द्र शान्ति का सरल उपचार:-सफेद जुराब, रुमाल, सफेद वस्त्र, दूध, दहीं का उपयोग, चांदी की अंगूठी पहनना।

मंगलवार के व्रत की विधि-यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) मंगलवार से प्रारम्भ करके २१ या ४५ व्रत करने चाहिएं। हो सके तो यह व्रत आजीवन रखें। बिना सिला हुआ लाल वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की १, ५ या ७ माला जप करें। नमक सेवन न करे, यह जरूरी है। उस दिन गुड़ से बने हलवे का या लड्डुओं का दान करें। और स्वयं भी खावें। गुड़ से बना कुछ हलवा आदि बैल को भी खिलावें। मंगलवार का व्रत ऋण-हर्ता तथा सन्तति-सुखप्रद है। जब व्रत का अन्तिम मंगलवार हो उस दिन हवन-पूर्णाहुति करके लाल वस्त्र, तांबा, मसूर, गुड़, गेहूं तथा नारियल का दान करें। ब्राह्मणों तथा बच्चों को मीठा भोजन करावें।

मंगल शान्ति का सरल उपचार:- लाल रंग की वस्तुओं का उपयोग रात को लाल वस्त्र पहनें. तांबे के वर्तन, तांबे की अंगूठी पहनना।

बुधवार का व्रत- यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम बुधवार (जेठे) से प्रारम्भ करें। २१ या ४५ व्रत करें। हरा वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की १७ या तीन माला जप करना चाहिए। उस दिन भोजन में नमक-रहित खण्ड, घी से बने पदार्थ जैसे मूंगी का बना हुआ हलवा, मूंगी की बनी मीठी पंजीरी या मूंगी के लड्डूओं का दान करे। फिर तीन तुलसीपत्र, गंगाजल या चरणामृत के साथ लेकर स्वयं भी उपरोक्त पदार्थ खावें। व्रत के अन्तिम बुधवार को हवन पूर्णाहुति करके अङ्गहीन भिक्षुक को मूंगीयुक्त भोजन कराकर हरा वस्त्र, मूंगी आदि का दान भी करें। इस व्रत से विद्या, धन-लाभ, व्यापार में तरक्की तथा स्वास्थ्य लाभ होता है। अमावस का व्रत करने से भी बुध ग्रह जन्य नेष्ट फल से मुक्ति मिलती है।

बुध शान्ति का सरल उपचारः- हरा रंग, हरे वस्त्र तथा श्रृंगार की अन्य वस्तुएं हरा रूमाल आदि रखना, कांसी के बर्तन में भोजन, बुधाष्टमी व्रत।

बृहस्पति के व्रत की विधि-यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) गुरुवार से आरम्भ करें, तीन वर्ष पर्यन्त या १६ गुरुवार व्रत करें, उस दिन पीत वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की ११ या तीन माला जप करें। पीत पुष्पों से पूजन-अर्घ्य दानादि के बाद भोजन में चने के बेसन की बनी घी-खण्ड से बनी मिठाई लड्डू या हल्दी से पीले या केसरी चावल आदि ही खावें और यही दान करें। जब व्रत का अन्तिम गुरुवार हो तो हवन पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण व बटुकों को लड्डू भोजन करावे। स्वर्ण, पीत-वस्त्र चने की दाल आदि का दान करें। यह व्रत-विद्यार्थियों के लिए बुद्धि तथा विद्या-प्रद है, धन की स्थिरता तथा यश-वृद्धि करता है। अविवाहितों के लिए स्त्री प्राप्तिप्रद सिद्ध होता है।

बृहस्पति शान्ति का सरल उपचार- पीले वस्त्र, रूमाल आदि पीले फूल धारण करना, सोने की अंगूठी पहनना।

शुक्र के व्रत की विधि- यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शुक्रवार से प्रारम्भ होता है। ३१ या २१ व्रत करे। श्वेत वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की ३ या २१ माला जपें। भोजन में चावल, खण्ड या दूध से बने पदार्थ ही सेवन करें। यही पदार्थ यथा-शक्ति सम्भव हो तो एकाक्षी (एक आंख वाले) भिक्षुक को या श्वेत गाय को दें। जब व्रत का अन्तिम शुक्रवार हो, हवन पूर्णाहुति के बाद खीर-खण्ड से बने पदार्थ ब्राह्मण बटुकों को खिलावें। चांदी, श्वेतवस्त्र, खाण्ड, चावल का दान करें। इस व्रत से स्त्री सुख एवं ऐश्वर्य की वृद्धि होती है।

शुक्र शान्ति का सरल उपचारः- सफेद वस्त्र, सफेद रूमाल , सफेद फूल धारण करना आदि गाय को हरा घास या पेड़ा देना, शिव पूजन।

शनि के व्रत की विधि-यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से आरम्भ करे, व्रत ५१ या ३१ करने चाहिएं। व्रत के दिन काला वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की १९ या तीन माला का जप करें। फिर एक बर्तन में शुद्ध जल, काले तिल, काले फूल या लवंग (लौंग), गङ्गाजल तथा शक्कर, थोड़ा दूध डालकर पश्चिम की ओर मुंह करके पीपल-वृक्ष की जड़ में डाल दें। भोजन में उड़द के आटे का बना पदार्थ, पंजीरी, कुछ तेल से पका हुआ पदार्थ कुत्ते व गरीब को दें तथा तत्पश्चात् वस्तु के साथ केला व अन्य फल स्वयं प्रयोग में लाना चाहिए। यही पदार्थ दान भी करें। व्रत के अन्तिम शनिवार को हवन पूर्णाहुति के बाद तेल में पकी हुई वस्तुओं को देने के बाद काला वस्त्र, केवल उड़द तथा देसी जूता, तेल लगाकर दान करें। इस व्रत से सब प्रकार की सांसारिक परेशानी दूर हो जाती है। झगड़े में विजय होती है। लोह-मशीनरी कारखाने वालों के व्यापार में उन्नति होती है।

शनि शान्ति का सरल उपचारः- घर के परदे, जूते, जुराब, घड़ी का पट्टा, रूमाल आदि काले रंग के धारण करें।

राहू केतु के व्रत की विधि- शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से यह व्रत शुरू करना चाहिए। यह व्रत १८ करें। काला वस्त्र धारण करके १८ या ३ बीज-मन्त्र की माला जपें। तदनन्तर एक बर्तन

रेवड़ी, मुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करें और यही दान में भी दें। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दें। इस व्रत से शत्रुभय दूर तथा राजपक्ष से विजय मिलती है।

राहू, केतु शान्ति का सरल उपचारः- नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी पहनें।

ग्रहों के अरिष्ट-निवृत्त्यर्थ स्नान-विधि

यथा सिद्धौषधैः रोगाः नश्येयुर्मन्त्रतो भयम्॥
तथा स्नान-विधानेन ग्रह-दोषः प्रणश्यति॥

रवि ग्रह के दोष की शान्ति के लिए कभी-कभी व्रत के दिन बिल्ववृक्ष की जड़, देवदारू, मुलेठी, लाल फूल, केसर, पानी में उबाल कर स्नान करे। सोमवार के व्रत के दिन खिरनी की जड़, श्वेत, चन्दन, सिप्पी, पञ्चगव्य उबाल कर स्नान करें। ऐसे ही मंगल के दिन अनन्त मूल, रक्त चन्दन, मौलश्री, लाल फूल ये सब उबाल कर, बुध के दिन गोबर, मधु, चावल, विधारा उबाल कर, गुरु के दिन भारंगी, मुलैठी श्वेत सरसों, मालती पुष्प उबाल कर, शुक्र के दिन इलायची, मजीठ तथा शनि के दिन काले तिल, सौंफ, सुरमा, अमलवेत, सफेद बिनौला उबाल कर स्नान करें। ऐसे ही राहु केतु की शान्ति के लिए शनिवार के दिन देवदारू, सरसों तथा लोहवान उबाल कर स्नान करें, तो ग्रह शान्ति होती है।

नोट- स्नानोक्त कोई वस्तु उपलब्ध न हो तो जो वस्तु मिले उससे ही स्नान करें।

सर्वग्रह किंवा सर्वविध शन्ति के लिए सामान्य औषध स्नान

लाजवन्ती (छुई-मुई), कूट, खिला, कांगनी, जौं, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि लोध इन औषधियों के जल एवं से सप्ततीर्थादिक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ा नष्ट होती है तथा पूर्व ही जो दान कह चुके हैं उनके करने से शान्ति होती है। गुरू, वचन, देवता ब्राह्मणों की वंदना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता, जप, दान, होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह पीड़ा नहीं करते (श्रीपतिः)॥

शनि विचार-अथ लघु कल्याणी (ढैया) फलम्-कल्याणी प्रददाति वा रविसुते राशेश्चतुर्थाष्टमं व्याधिः बन्धु विरोध देशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्। मृत्युं चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि वह्निभयं लोह शस्त्रभयं सदैव-असुखं कुर्यादिग्गं सर्वदा॥ १॥ बृहत्कल्याणी फलम् . . . . राशौ द्वादश (१२) मूर्ध्नि जन्म (१) हृदये गार्हो द्वितीये (२) शनिः। नानाक्लेशकरोऽति दुर्जनभयं पुत्रान्पशून्पीडयेत्॥ हानिः स्यान्मरणं विदेशगमनं सौख्यं च साधारणम्, रामाऽऽक्रद्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाऽथवा॥ २॥

सप्तधान्य- उड़द १. मूंगी २. गेहूं ३. चने ४. जौं ५. धान्य (तंदुल) ६. कंगनी ७.
अष्टगंध-अगर, कस्तूरी, कुंकुम कर्पूर, चन्दन, टोपीदार लौंग, गोरोचन देवदारु।
अष्टगंध धूप- अगर, छरीला, जटामासी, कर्पूर-कचरी, गुग्गुल, देवदारु गोमृत सफेद चन्दन।

नक्षत्र-राशि ज्ञान चक्र

राशिज्ञाने विशेष :-

नक्षत्र वा राशि में श और स में, व और ब में कोई भेद नहीं होता। जिसके नाम का पहला अक्षर संयुक्त हो, वहां प्रथमाक्षर ग्रहण करें। (संयोगजाक्षरं नाम्नि ग्राह्य तत्रादिमाक्षरम्)

राशयः	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
नक्षत्राणि	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू. फा.	उ. फा.	उ. फा.	हस्त	चित्रा
प्रथमचरण	चू	ला	अ	०	आ	व	०	कु	क	०	हु	डी	मा	मो	टे	०	पू	प
द्वितीय च.	चे	लू	०	ई	वा	वो	०	घ	को	०	हे	डू	मी	टा	०	टो	ष	पो
तृतीय च.	चो	ले	०	उ	वी	०	क	ङ	ह	०	हो	डे	मू	टी	०	पा	ण	०
चतुर्थ च.	ला	लो	०	ए	वू	०	की	छ	०	हि	डा	डो	मे	टू	०	पी	ठ	०

राशयः	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर				कुम्भ			मीन		
नक्षत्राणि	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू. षा.	उ. षा.	उ. षा.	अभिजित्	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू. भा.	पू. भा.	उ. भा.	रेवती
प्रथमचरण	०	रू	ती	०	ना	नो	ये	भू	भे	०	जू	खी	गा	०	गो	से	०	दू	दे
द्वितीय च.	०	रे	तू	०	नी	या	यो	धा	०	भो	जे	खू	गी	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीय च.	रा	रो	ते	०	नू	यी	भा	फ	०	जा	जो	खे	०	गू	सी	दा	०	झ	चा
चतुर्थ च.	री	ता	०	तो	ने	यू	भी	ढ	०	जी	खा	खो	०	गे	सू	०	दी	ञ	चि

ध्यान दें— नामों का प्रारम्भ ङ, ञ, ण इन अक्षरों से नहीं होता। यदि नक्षत्र के आधार पर इन अक्षरों से नाम प्रारम्भ हो रहा हो तो ङ की जगह ग, ञ की जगह द तथा ण की जगह पू से प्रारम्भ करें। ऐसा करने से भेद नहीं होता।

॥ १ ॥ **बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युः कथञ्च। ततः पश्चाद्भवं नाम ग्राह्यं स्वर-विशारदैः ॥ २ ॥ प्रसुप्तो भाषते येन येनागच्छति शब्दितः। तस्य नामादिवर्णो या मात्रा स स्वर एव हि ॥ ३ ॥ अथ जन्मराशि नामराश्योः प्रधानता निर्णीयते - विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे ॥ जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत् ॥ ४ ॥ देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके ॥ नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत् ॥ ५ ॥ काकिण्यां वर्ग शुद्धौ च दाने द्यूते स्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे च नामराशेः प्रधानता ॥ ६ ॥ कुर्यात्षोडश कर्माणि जन्मराशौ बलान्विते। सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते ॥ ७ ॥ विवाह घटनं चैवं लग्नजं ग्रहजं बलम्। कामभाकृचिन्तयेत् सर्व जन्म न ज्ञायते यदा ॥ ८ ॥**

अभिजित्-निर्णय-वैश्यप्रान्त्याघिः श्रुति-तिथि-भागतोऽभिजित्स्यात् ॥

उत्तराषाढ़ा का चौथा चरण श्रवण का पहला १५वां भाग जोड़कर उसके चार भाग करो। उसको अभिजित का एक चरण मानकर नाम रखने आदि के विचार में उपयोग करो। उत्तराषाढ़ा के तीन चरणों के ही चार भाग करके उत्तराषाढ़ा का एक-एक चरण मानो। श्रवण का १५वां भाग छोड़कर जो शेष रहे उसके चार भाग करो, उसको श्रवण के १-१ चरण मानो। इस प्रकार को प्रायः सामान्य गणक नहीं जानते, एतदर्थ यहां लिखा गया है।

राशि ज्ञानम्- चू. ल. अ मेषः, इ वो वृषः, क घ ङ छ ह मिथुनम् ॥
हीडी कर्कः, माटे सिंहः, टो प ण ठ पो कन्या ॥
रातें तुला तो ना यू वृश्चिक ये धफढभे धनुः ॥
भोजा खागी मकरः गुशद: कुम्भः दीथझञदो चा मीनः ॥

उपरोक्त राशि- ज्ञान में प्रत्येक राशि के आदि और अन्त का अक्षर है और जहां जो अक्षर बदलता है, वहां वह भी ले लिया गया है। जैसे-मेष में पहला अक्षर 'चू' लेने से अश्विनी के तीन चरण (चू चे चो) का ग्रहण होता है और 'ल' से (ला ली लू ले लो) पांचों का ग्रहण हुआ अर्थात् एक चरण (चौथा चरण) अश्विनी का और चतुर्थ चरण भरणी का ग्रहण हुआ और उसे कृतिका के प्रथम चरण इन नौ चरणों की एक राशि मेष हुई। इसी तरह अन्य राशियों का ज्ञान करें।

विशेष- जहां 'ज' का उच्चारण 'ज्व' होता है वहां ज्ञान चन्द्र का नक्षत्र उ. षा. और जहां इसका उच्चारण 'ग्य' होता है, वहां ज्ञान चन्द्र का नक्षत्र धनिष्ठा माना जाएगा क्योंकि 'ज' और 'ग' वर्ण क्रमशः उ. षा. और धनिष्टा नक्षत्र में पड़ते हैं।

नोट- चन्द्रमा की राशि एवं नक्षत्र के अनुसार जातक का नाम रखने से फलितज्ञ को काफी सुभीता रहता है। नाम जानने से ही ज्योतिषी जातक के जन्म समय चन्द्रमा की राशि एवं नक्षत्र ज्ञात लेता है तथा फलित-शास्त्र में काफी महत्वपूर्ण फलादेश चन्द्रमा की स्थिति पर ही निर्भर है। इसका एक वैज्ञानिक रहस्य भी है। निकटतम होने से चन्द्रमा का प्रभाव भू-स्थित-वनपति एवं प्राणियों पर अन्य सभी ग्रहों की अपेक्षा अधिक होता है। ज्वारभाटा लाने में भी चन्द्रमा की देन सूर्य की देन से दुगुनी है। चन्द्रमा का ज्वार-भाटांक सूर्य के ज्वार-भाटांक से दुगुना है। चन्द्रमा के भगणकाल का स्त्री के मासिक-धर्म से साक्षात् सम्बन्ध है। आजकल वैज्ञानिकों ने कुछ प्रयोग भी किए हैं, जिससे अचर-जगत् (वनस्पति आदि) पर चन्द्रमा का प्रभाव स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है। अतः जन्म-पत्र आदि के अभाव में चन्द्रमा की स्थिति से ही फलादेश करने की पारिपाटी फलितज्ञों में है।

नवीन- फलितवेत्ता जन्म-पत्र की अंग्रेज़ी तारीखों के हिसाब से भी फलादेश करने लग गए हैं। **इस पद्धति में सायन सूर्य की राशि के आधार पर ही फलादेश होता है। चन्द्रमा की राशि के आधार पर फलादेश करना अधिक उपयुक्त है। अतः प्राचीन फलित-शास्त्रियों ने जन्म-कालीन चन्द्रमा की स्थिति को जन्म राशि के नाम से कहा है। हमारे ज्योतिष के अनुसार इसी का महत्त्व है।**

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् २०५६ वि.)

राशि	वैशाख (१४ अप्रैल से १४ मई तक)	राशि	ज्येष्ठ (१५ मई से १४ जून तक)	राशि	आषाढ़ (१५ जून से १५ जुलाई तक)
मेष	सेहत ठीक, अर्थ लाभ, जायदाद सम्बन्धी विवाद से हानि, निजी लोगों से अनबन, घरेलू झंझट, स्त्री कष्ट। अप्रै. २१,२२, मई २,३,४,११,१२,१३ अशुभ।	मेष	अर्थ लाभ, पराक्रम बढ़े, सन्तति चिन्ता, स्त्री कष्ट, कार्यान्तर से लाभ, मासान्त में कष्ट व खर्च हो। मई २०,२१, २९,३१, जून ८,९ अशुभ।	मेष	सेहत ठीक, धन लाभ, नई योजना व सन्तान पक्ष से हानि, स्त्री सुख, मासान्त में लाभ, शत्रु सिर उठावें। जून १६,१७,२५,२६,२७, जुला. ५,६,१३,१४,१५ अशुभ।
वृष	सेहत ठीक, उत्साह बढ़े, शत्रु प्रबल, आमदन से खर्च ज्यादा, मासान्त में अर्थ लाभ होकर हाथ से निकले, नई योजना, अप्रै.२४,२५,२६, मई ४,५,६,१४ अशुभ।	वृष	कफ-वायु विकार, हाथ तंग रहे, चोटभय सन्तान पक्ष से चिन्ता, स्त्री सुख, कारोबार ठीक, चोरी, ठगी का डर। मई १५,२२,२३, जून १,२,१०,११ अशुभ।	वृष	अर्थ हानि, निजी लोगों से मदद, मित्र व बन्धु कष्ट, स्त्री से अनबन, कारोबार में रुकावट। जून १८,१९,२०,२८,२९,३०,जुला. ७,८,९ अशुभ।
मिथुन	कफ विकार, अर्थ हानि, निजीजन कष्ट, स्त्री सुख, कारोबार ठीक, वृथा विवाद से बचें। अप्रै. २७,२८,२९,मई ७,८ अशुभ।	मिथुन	उदर विकार, धन लाभ, निज लोगों से मदद, निजीजन कष्ट, गुप्त चिन्ता, कारोबार में रुकावट, राहु का दान करें। मई १६,१७,२४,२५,२६ जून ३,४,५,१२,१३अशुभ।	मिथुन	सेहत ठीक, धन लाभ, हिम्मत बढ़े, शत्रु प्रवल, स्त्री कष्ट, कारोबार पहले से ठीक पर हाथ तंग रहे। जून २१,२२,३०, जुला. १,२,९,१०,११ अशुभ।
कर्क	उदर विकार, लाभ होकर हानि हो, मित्रों से अनबन, स्थिर सम्पत्ति विवाद, गुप्त चिन्ता, कारोबार में रुकावट। अप्रै.२९,३०, मई १,९,१०,११ अशुभ।	कर्क	सेहत ठीक, अर्थ लाभ, भ्रातृ कष्ट, शुभ समाचार मिले, शत्रु प्रबल, कार्यान्तर से लाभ। मई १८,१९,२७,२८,जून ६,७,१४ अशुभ।	कर्क	सेहत ठीक, धन हानि, निजीजन कष्ट, असफल योजना, कारोबार में लाभ परन्तु कर्जा चढ़े। जून १५,२३,२४,२५, जुला.३,४,११,१२,१३ अशुभ।
सिंह	शिर व नेत्र पीड़ा, निजी लोगों से अनबन, घरेलू झंझट बढ़ें, स्त्री कष्ट, कारोबार अपेक्षाकृत ठीक। अप्रै. २१,२२, मई २,३,४,११,१२,१३ अशुभ।	सिंह	सेहत ठीक, शुभ समाचार मिले,हाथ तंग रहे, सम्पत्ति सुख, असफल योजना, स्त्री पक्ष शुभ, कारोबार ठीक। मई२०,२१,२९,३१, जून ८,९ अशुभ।	सिंह	क्रोध बढ़े, यात्रा में कष्ट, स्त्री कष्ट, कारोबार में रुकावट, आय से व्यय अधिक, कष्टप्रद समाचार। जून १६, १७, २५, २६, २७, जुला.५,६,१३,१४,१५ अशुभ।
कन्या	सेहत ठीक,हाथ तंग रहे, नई योजना से हानि, स्त्री सुख, कारोबार ठीक, हिस्सेदारी से हानि। अप्रै. २४,२५,२६, मई ४,५,६,१४अशुभ।	कन्या	क्रोध बढ़े, यात्रा में कष्ट, घरेलू झंझट, गुप्त शत्रु से भय, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार, मासांत शुभ। मई १५,२२,२३, जून १,२,१०,११ अशुभ।	कन्या	क्रोध बढ़े, निजी लोगों से अनबन, शत्रु प्रबल, कारोबार कमजोर, आय से व्यय अधिक, रोग भय। जून १८,१९,२०,२८,२९,३०, जुला. ७,८,९अशुभ।
तुला	क्रोध बढ़े, लड़ाई झगड़े से बचें, अर्थहानि, सरकार से भय, कार्यान्तर व स्थानान्तर से लाभ। अप्रै. २७,२८,२९, मई ७,८ अशुभ।	तुला	पित्त विकार, शत्रु कमजोर,निजी लोगों से अनबन,नई योजना से लाभ, स्त्री से अनबन, किस्मत साथ न दे। मई १६,१७,२४,२५,२६,जून३,४,५,१२,१३ अशुभ।	तुला	अर्थ हानि, असफल योजना, स्त्री सुख, शत्रु प्रबल, राजभय, मंगल, राहु का दान करें। जून २०,२१,२२,३०,जुला. १,२,९,१०,११ अशुभ।
वृश्चिक	पित्त विकार, धनलाभ हो, सन्तान पक्ष से खुशी, स्त्री सुख, यात्रा में कष्ट, गुप्त शत्रु से भय। अप्रै. २९,३०, मई १,९,१०,११ अशुभ।	वृश्चिक	सेहत ठीक। कर्जा बढ़े, निजजन सहयोग, सन्तान पक्ष से चिन्ता, स्त्री सुख, कारोबार में रुकावट, खर्च विशेष । मई १८,१९,२७,२८, जून ६,७,१४ अशुभ।	वृश्चिक	उदर विकार, निजीजन सहयोग, शत्रु हतप्रभ, स्त्री कष्ट, कारोवार में कुछ रुकावट, मासान्त में हानि भय, जून १५,२३,२४,२५,जुला.३,४,११,१२,१३ अशुभ।
धनु	सेहत ठीक, नेत्र कष्ट, अच्छे लोगों से मेल हो, असफल योजना, शत्रु कमजोर, नीच से अपमान भय। अप्रै. २१,२२, मई २,३,४,११,१२,१३ अशुभ।	धनु	उदर विकार, निजीजन सहयोग, बन्धुओं से अनबन, नीच से अपमान भय, कारोबार गड़बड़, रोग, शोक, भय। मई २०,२१,२९,३१, जून ८,९ अशुभ।	धनु	निजीजन असहयोग, सन्तान पक्ष शुभ, स्त्री सुख, शत्रु प्रवल, राजभय,करोवार कमजोर। जून १६,१७,२५,२६,२७, जुला. ५,६,१३,१४,१५ अशुभ।
मकर	उदर विकार, धनहानि, निजीजन सहयोग, गुप्तशत्रु भय, नई योजना, मानसिक अशान्ति, कारोबार में रुकावट। अप्रै. २४,२५,२६,मई ४,५,६,१४ अशुभ।	मकर	अर्थ लाभ होकर हानि हो, बन्धुओं से अनबन, सन्तान पक्ष से चिन्ता, शत्रु दबें, स्त्री सुख, धर्म कर्म में मन न लगे। मई १५,२२,२३, जून १,२,१०,११ अशुभ।	मकर	सेहत खराब, धन लाभ होकर हानि, असफल योजना, स्त्री सुख, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार। जून १८,१९,२०,२८,२९,३०, जुला. ७,८,९अशुभ।
कुम्भ	कफ-वायु विकार, अर्थ लाभ हो, निजीजनों से विरोध मित्रोंसे मदद, शत्रु हतप्रभ, कारोबार में रुकावट। अप्रै. २७,२८,२९, मई ७,८ अशुभ।	कुम्भ	सेहत ठीक, कार्यान्तर से अर्थ लाभ, यात्रा सुख, स्त्री पक्ष शुभ, मास मध्य में अचानक कष्ट, धनहानि भय। मई १६,१७,२४,२५,२६, जून ३,४,५,१२,१३ अशुभ।	कुम्भ	क्रोध बढ़े, धन हानि, भाई से सुख, सम्पत्ति विवाद, गुप्त चिन्ता, कारोबार कमजोर, आय से व्यय ज्यादा। जून २०,२१,२२,३०, जुला.१,२,९,१०,११ अशुभ।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् २०५६ वि.)

राशि	श्रावण (१६ जुलाई से १६ अगस्त तक)	राशि	भाद्रपद (१७ अग. से १६ सितं. तक)	राशि	आश्विन (१७ सितं. से १६ अक्तू. तक)
मेष	उदर विकार, अर्थ लाभ, निजीजन सहयोग, घरेलू झंझट बढ़े, मन अशान्त, कारोबार में उन्नति। जुला.२३,२४, अग. १,२,३,१०,११ अशुभ।	मेष	सेहत ठीक, आय से व्यय अधिक, मन चिन्तित, सम्पत्ति विवाद, शत्रु कमजोर, सत्री सुख। अग. १९,२०,२१,२९,३०,सित. ६,७,१५,१६ अशुभ।	मेष	सेहत ठीक, धन लाभ, निजीजन सहयोग , मन अशांत, अच्छे लोगों से मेल, सन्तति चिन्ता। सितं. १७,२५,२६, अक्तू. ३,४,५,१३,१४ अशुभ।
वृष	सेहत ठीक, धन लाभ होकर हाथ से निकले,निजी लोगों से अनबन, शत्रु प्रबल, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार। जुला. १६,१७,२५,२६,२७ अग. ३,४,५,१२,१३ अशुभ।	वृष	सेहत खराब, धन हानि, निजी जनों से अनबन, अच्छेलोगों से मेल, स्थानान्तर व कार्यान्तर से हानि । अग. २१,२२,२३,३१, सितं. १,८,९,१०अशुभ।	वृष	उदर विकार, धन लाभ, गुप्त चिन्ता, बंधु सुख, सरकारी झंझट, स्त्री पक्ष से चिन्ता, कार्यान्तर से लाभ। सितं.१८,१९,२०,२७,२८ , अक्तू. ५,६,७,१५,१६ अशुभ।
मिथुन	उदर विकार, हाथ तंग रहे, यात्रा में कष्ट, असफल योजना, स्त्री कष्ट, आय से व्यय अधिक। जुला. १८,१९,२८,२९, अग. ६,७,१४,१५,१६ अशुभ।	मिथुन	क्रोध बढ़े, मन अशान्त, भाई से मेल, सन्तति चिन्ता, कारोबार ठीक, मासान्त में खर्च अधिक। अग. २४,२५,२६, सितं. १,३,१०,११,१२ अशुभ।	मिथुन	क्रोध बढ़े, उत्साह वृद्धि, शत्रु कमजोर, कारोबार की चिन्ता, आय से व्यय अधिक। सितं. २०,२१,२२,२९,३०, अक्तू. ८,९ अशुभ।
कर्क	क्रोध बढ़े, अर्थहानि, असफल योजना, स्त्री पक्ष से लाभ, कारोबार बेहतर। जुला. २०,२१,२२,३०,३१ अग. ८,९ अशुभ।	कर्क	मन परेशान, हिम्मत बढ़े, शत्रु प्रबल, स्त्री सुख, आय से व्यय ज्यादा। अग. १७,१८,२६,२७,२८, सितं. ४,५,१३,१४,१५ अशुभ।	कर्क	सेहत ठीक , अर्थ हानि, सन्तान कष्ट, स्त्री सुख,नीच से अपमान भय, कारोबार ठीक। सितं. २३,२४ , अक्तू. १,२,३,१०,११,१२ अशुभ।
सिंह	रक्त-पित्त विकार, निजी लोगों से मनमुटाव, चोट भय, गुप्त चिन्ता, कारोबार कुछ ठीक। जुला.२३,२४, अग. १,२,३,१०,११ अशुभ।	सिंह	सेहत ठीक, नेत्र कष्ट, नई योजना, स्त्री सुख,करोबार कुछ ठीक, फिजूल खर्च ज्यादा। अग. १९,२०,२१,२९,३०, सितं. ६,७,१५,१६ अशुभ।	सिंह	उदर विकार, धनहानि, मित्रों से मेल, स्त्री कष्ट, कारोबार ठीक, मासान्त में फिजूल खर्च विशेष। सितं. १७,२५,२६, अक्तू. ३,४,५,१३,१४ अशुभ।
कन्या	सेहत खराब, कर्जा चढ़े,कार्यान्तर से हानि, मास मध्य में अचनाक खर्च, लड़ाई झगड़े से बचे। जुला. १६, १७, २५, २६, २७ अग. ३,४,५,१२,१३अशुभ।	कन्या	उदर विकार, अपमान भय, कारोबार में रुकावट, मासान्त में अचानक लाभ। अग. २१,२२,२३,३१, सितं. १,८,९,१० अशुभ।	कन्या	वायु विकार, हिम्मत बढ़े, शत्रु हतप्रभ, कारोबार ठीक परन्तु हानिभय। सितं. १८,१९,२०,२७,२८, अक्तू. ५,६,७,१५,१६ अशुभ।
तुला	उदर विकार नई योजना से लाभ, सम्पत्ति विवाद, स्त्री से अनबन, करोबार में रुकावट। जुला. १८,१९,२८,२९, अग.६,७,१४,१५,१६ अशुभ।	तुला	वायु विकार,निजी लोगों से अनबन, स्त्री सुख, कार्यान्तर से लाभ, क्रोध बढ़े, शनि दान से कल्याण। अग. २४,२५२६, सितं. २,३,१०,११,१२,अशुभ।	तुला	वायु विकार, धनहानि, सन्तति चिन्ता, स्त्री सुख, कार्यान्तर व स्थानान्तर से लाभ। सितं. २०,२१,२२,२९,३०, अक्तू. ८.९ अशुभ।
वृश्चिक	वायु विकार, हिम्मत बढ़े, रोग भय, शत्रु कमजोर, स्त्री सुख, मासान्त में विशेष खर्च। जुला. २०,२१,२२,३०,३१, अग. ८,९ अशुभ।	वृश्चिक	वायु विकार अर्थ लाभ, निजीजन सुख, सन्तान पक्ष से चिन्ता, स्त्री कष्ट, कारोबार कुछ ठीक। अग. १७,१८,२६,२७,२८, सितं. ४,५,१३,१४,१५ अशुभ	वृश्चिक	क्रोध बढे, धनहानि, घरेलू झंझट बढ़े, स्त्री कष्ट, मन परेशान, कारोबार में रुकावट। सितं. २३,२४,अक्तू. १,२,३,१०,११,१२ अशुभ।
धनु	सेहत खराब, अर्थ लाभ होकर हानि, सन्तान पक्ष से चिन्ता, शत्रु प्रबल, बुरे कामों में मन लगे। जुला. २३,२४, अग. १,२,३,१०,११ अशुभ।	धनु	उदर विकार, धन लाभ, यात्रामें कष्ट, स्त्री से अनबन, कार्यान्तर का विचार, घरेलू झंझट बढ़े। अग. १९,२०,२१,२९,३० सितं. ६,७,१५,१६ अशुभ।	धनु	उदर विकार, निजी लोगों से अनबन, शुभ समाचार, स्त्री सुख, गुप्त चिन्ता। सितं. १७,२५,२६, अक्तू. ३,४,५,१३,१४ अशुभ।
मकर	क्रोध बढ़े, धन लाभ, निजी लोगों से अनबन, सन्तान सुख, स्त्री पक्ष से चिन्ता, कार्यान्तर का विचार जुला. १६,१७,२५,२६,२७, अग. ३,४,५,१२,१३ अशुभ।	मकर	सेहत ठीक, हौसला बढ़े। निजीजन वैमनस्य, सम्पत्ति लाभ, स्त्री कष्ट, साझेदारी में नुकसान। अग. २१, २२, २३, ३१, सितं. १,८,९,१० अशुभ।	मकर	सेहत ठीक, धन हानि, कर्जा बढ़े। अच्छे लोगों से मेल, स्त्री पक्ष शुभ। सितं. १८,१९,२०,२७,२८ अक्तू. ५,६,७,१५,१६ अशुभ।
कुम्भ	सेहत ठीक, शत्रु कमजोर, अच्छे लोगों से मेल, सुख अर्थलाभ, अशुभ समाचार, आय से खर्च ज्यादा। जुला. १८,१९,२८,२९, अग. ६,७,१४,१५,१६ अशुभ।	कुम्भ	शिर व नेत्र पीड़ा, भ्रातृ सुख, नई योजना असफल स्त्री सुख, आय से व्यय अधिक। अग. २४,२५,२६, सितं. २,३,१०,११,१२ अशुभ।	कुम्भ	उदर विकार, ऐश्वर्य में मन लगे, निजीजन सहयोग, सन्तान पक्ष से चिन्ता, नई योजना। सितं. २०,२१,२२,२९,३०, अक्तू. ८,९ अशुभ।
मीन	सेहत खराब, अर्थहानि, बन्धु सुख, असफल योजना, रोगभय, आय से खर्च ज्यादा।जुला. २०,२१,२२,३०,३१, अग. ८,९ अशुभ	मीन	शरीर कष्ट, धन लाभ, निजी लोगों से [illegible] चिन्ता, कारोबार कुछ ठीक। अग. १७,१८,२६,२७,२८,सितं. ४,५,१३,१४,१५ अशुभ।	मीन	अर्थ लाभ, भ्रातृ सुख, सम्पत्ति लाभ, शत्रु कमजोर, कारोबार कुछ ठीक। सितं. २३,२४, अक्तू.१,२,३,१०,११,१२ अशुभ।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् २०५६ वि.)

राशि	कार्तिक (१७ अक्तू. से १५ नवं. तक)	राशि	मार्गशीर्ष (१६ नवं. से १५ दिसं. तक)	राशि	पौष (१६ दिसं. से १३ जन. सन् २००० इ. तक)
मेष	सेहत खराब, धन लाभ होकर हानि, निजी लोगों से अनबन, घरेलू झंझट, स्त्री कष्ट, कारोबार कमजोर। अक्तू. २२,२३,२४,३१,नवं. १,९,१०,११ अशुभ।	मेष	कर्जा सिर चढ़े, वायु विकार, हिम्मत बढ़े, शत्रु परास्त, कारोबार ठीक, मासान्त में लाभ। नवं. १९,२०,२७,२८, दिसं. ६,७,८ अशुभ।	मेष	सेहत ठीक, अर्थ लाभ, अच्छे लोगों से मेल, सन्तति सुख, मासान्त में विशेष व्यय। दिसं. १६,१७,१८,२४,२५,२६ जन. (२०००ई.)२,३,४,१२,१३ अशुभ।
वृष	क्रोध बढ़े, अर्थ लाभ, शत्रु कमजोर, सन्तान सुख, शत्रु परास्त, स्त्री सुख, नए कार्य का विचार। अक्तू. १७,२४,२५,२६, नवं.२,३,११,१२,१३ अशुभ।	वृष	क्रोध बढ़े, अर्थ हानि, मन परेशान, सन्तति पक्ष शुभ, कारोबार ठीक, मासान्त में कष्ट भय। नवं. २१,२२,२९,३०, दिसं. १,९,१० अशुभ।	वृष	सेहत ठीक, धन हानि भय, निजीजन सहयोग, स्त्री कष्ट, कारोबार की नई रूप रेखा बने। दिसं. १८,१९,२०,२६,२७,२८,जन. (२०००ई.)५,६,७ अशुभ।
मिथुन	क्रोध बढ़े, करजा चढ़े, यात्रा में सुख, अचानक कष्ट, कारोबार में हानि, आय से व्यय अधिक। अक्तू. १८,१९,२६,२७,२८, नवं.४,५,६,१४,१५ अशुभ।	मिथुन	उदर विकार, कर्जा चढ़े, निजी लोगों से मदद, अच्छे लोगों से मेल, स्त्री को रोगभय, कारोबार ठीक। नवं. १६,२३,२४ , दिसं.१,२,३,११,१२,१३ अशुभ।	मिथुन	वायु विकार, अर्थ लाभ हो, निजीजन विरोध, नई योजना, गुप्त चिन्ता, आय से व्यय अधिक। दिसं. २०,२१,२२,२९,३०,जन.(२०००ई.)८,९ अशुभ।
कर्क	मन अशान्त, रोग भय, निजीजनों से अनबन, सम्पत्ति विवाद, गुप्त चिन्ता, कारोबार में लाभ। अक्तू. २०,२१,२२,२८,२९,३०, नवं.६,७,८ अशुभ।	कर्क	मन परेशानी, अर्थ लाभ होकर हाथ से निकले, निजीजन विरोध, असफल योजना। नवं. १७,१८,२५,२६, दिसं. ४,५,१४,१५ अशुभ :	कर्क	सेहत ठीक, अर्थ चिन्ता, नई योजना, स्त्री सुख, कारोबार मध्यम, आय से व्यय अधिक। दिसं. २२,२३,२४,३१, जन.(२०००ई.)१,२,१०,११,१२ अशुभ।
सिंह	मन शान्त, निजी लोगों से मदद, शत्रु दबे, स्त्री सुख, कारोबार कमजोर। अक्तू. २२,२३,२४,३१ ,नवं. १,९,१०,११ अशुभ।	सिंह	अर्थ हानि, सेहत खराब, यात्रा में चोट भय, स्त्री सुख, कारोबार कुछ ठीक। नवं. १९,२०,२७,२८, दिसं. ६,७,८ अशुभ	सिंह	क्रोध बढ़े, सम्पत्ति विवाद, घरेलू झंझट, स्त्री सुख, कार्यान्तर सेलाभ, मासान्त में खर्च ज्यादा। दिसं. १६, १७, १८, २४, २५, २६जन. (२०००ई.)२,३,४,१२,१३ अशुभ।
कन्या	अर्थ हानि, सन्तान व नई योजना से परेशानी स्थानान्तर व कार्यान्तर से लाभ। अक्तू. १७,२४,२५,२६, नवं. २,३,११,१२,१३ अशुभ।	कन्या	वायु विकार, अर्थपक्ष कमजोर, बन्धुकष्ट, स्त्री सुख, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार नवं. २१,२२,२९,३०,दिसं. १,९,१० अशुभ।	कन्या	सेहत ठीक, उत्साह बढ़े, निजीजनों से वैमनस्य, लड़ाई, झगड़ो से बचे, कर्जा चढ़े। दिसं. १८,१९,२०,२६,२७,२८,जन.(२०००ई.)५,६,७ अशुभ।
तुला	अचानक नुकसान, यात्रा में कष्ट, स्त्री से अनबन कारोबार में अड़चन से मन अशान्त। अक्तू. १८,१९,२६,२७,२८,नवं. ४,५,६,१४,१५अशुभ।	तुला	सेहत ठीक, हिम्मत बढ़े, नई योजना, स्त्री से अनबन, कारोबार कमजोर, मासांत में अचानक कष्ट। नवं. १६,२३,२४, दिसं. १,२,३,११,१२,१३ अशुभ।	तुला	सेहत खराब, आर्थिक संकट, स्त्री से अनबन, रोगभय, कारोबार ठीक, परन्तु खर्च ज्यादा। दिसं.२०,२१,२२,२९,३०, जन.(२०००ई.)८,९ अशुभ।
वृश्चिक	सेहत ठीक, अर्थ लाभ, हिम्मत बढे, नई योजना से हानि, स्त्री कष्ट, कारोबार कमजोर। अक्तू. २०,२१,२२,२८,२९,३० नवं. ६,७,८ अशुभ।	वृश्चिक	वायु विकार, अर्थ हानि, मित्रों से मदद, सन्तति चिन्ता, क्रोध बढ़े, कारोबार ठप्प। नवं. १७,१८,२५,२६, दिसं. ४,५,१४,१५ अशुभ।	वृश्चिक	उदर विकार, क्रोध बढ़े, मित्रों से मेल, कारोबार पहले से अच्छा, शनि एवं बुध का दान करें। दिसं. २२,२३,२४,३१, जन.(२०००ई.)१,२,१०,११,१२ अशुभ।
धनु	वायु विकार, धनहानि, निजीजन विरोध , सन्तान पर व्यय अधिक, क्रोध बढ़े, कारोबार ठीक। अक्तू. २२,२३,२४,३१, नवं. १,९,१०,११ अशुभ।	धनु	उदर विकार, बन्धु सुख, असफल योजना, स्त्रो कष्ट, कारोबार से लाभ। नवं. १९,२०,२७,२८,दिसं. ६,७,८ अशुभ।	धनु	सेहत मध्यम, निजीजनों से मेल मिलाप, धन लाभ, सन्तति पक्ष से चिन्ता, कारोबार खराब। दिसं. १६,१७,१८, २४,२५, २६,जन.(२०००ई.)२,३,४,१२,१३अशुभ।
मकर	उदर विकार, धन हानि, मित्रों से अनबन, स्त्री पक्ष से चिन्ता, कारोबार बेहतर। अक्तू. १७,२४,२५,२६, नवं. २,३,११,१२,१३ अशुभ।	मकर	रक्त-पित्त विकार, नेत्र कष्ट, सम्पत्ति विवाद बन्धुओं से अनबन, सन्तति कष्ट, शत्रु कमजोर, स्त्री चिन्ता, नवं. २१,२२,२९,३०, दिसं. १,९,१० अशुभ।	मकर	सुख धन लाभ, गुप्त शत्रु से भय, निजी जन सहयोग, लड़ाई-झगड़े से बचें। दिसं. १८,१९,२०, २६,२७, २८,जन. (२०००ई.)५,६,७ अशुभ।
कुम्भ	सेहत खराब, अर्थ लाभ होकर हानि हो, नई योजना से नुकसान, शत्रु प्रबल। अक्तू. १८,१९,२६,२७,२८ नवं. ४,५,६,१४,१५ अशुभ।	कुम्भ	कफ-वायु विकार, धन-लाभ, भ्रातृ कष्ट, यात्रा में चोट भय, सन्तान पक्ष से चिन्ता, स्त्रीं सुख। नवं. १६,२३,२४, दिसं. १,२,३,११,१२,१३ अशुभ।	कुम्भ	सेहत ठीक, शत्रु भय, बन्धुसुख लाभ, अचानक कष्टभय, स्त्री से अनबन, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार। दिसं. २०,२१,२२,२९,३०, जन.(२०००ई.)८,९ अशुभ।
मीन	अर्थ हानि, व्यापार में विशेष हानि भय, बुरी खबर मिले, आय से व्यय अधिक। अक्तू. २०,२१,२२,२८,२९,३०, नवं.	मीन	उदर विकार, व्यापार में हानि, हिम्मत बढ़े, मित्रों से अनबन, गुप्त चिन्ता, कार्यान्तर क्रा विचार, नवं. १७,१८,२५,२६, दिसं ४,५,१४,१५ अशुभ।	मीन	राजपक्ष से भय, व्यापार में हानि, हिम्मत बढ़े। निजीजन सहयोग, बनते कार्य में रुकावट। दिसं. २२,२३,२४,३१जन. (२०००ई.)१,२,१०,११,१२ अशुभ।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् २०५६ वि.)

राशि	माघ (१४ जन.(२०००ई.) से १२ फर. तक)	राशि	फाल्गुन (१३ फर. से १३ मार्च तक)	राशि	चैत्र (१४ मार्च से १२ अप्रैल तक)
मेष	रोग भय, स्थान हानि, नेत्र कष्ट, शत्रु बढ़े, धनहानि भय, गृहकलह, मासान्त में आय से व्यय अधिक। जन. १४,२१,२२,३०,३१,फर.९,१० अशुभ।	मेष	स्थान हानि, बन्धन भय, नेत्र कष्ट, हिम्मत बढ़े, शत्रु कमजोर, अच्छे लोगों से मेल, शत्रु हतप्रभ। फर. १७, १८, १९, २६,२७,२८ मार्च, ७,८ अशुभ।	मेष	स्थानान्तर व कार्यान्तर का विचार, नेत्र कष्ट व चोट भय, शत्रु बढ़े, असफल योजना, कारोबार में हानि। मार्च १६,१७,२४,२५,२६ अप्रै. ३,४,१२ अशुभ।
वृष	भय, पीड़ा, सुख, अर्थलाभ, अचानक हानि भय, व्यापार में नुकसान, वायुपीड़ा। जन. १५,१६,२३,२४, फर. १,२,३,११,१२अशुभ।	वृष	क्रोध बढ़े, शरीर में पीड़ा धन लाभ होकर हानि, निजी लोगों से मदद, सन्तान पक्ष से चिन्ता। फर. १९,२०,२१,२९,मार्च १,९,१०,११ अशुभ	वृष	दुर्घटना भय, अर्थ संकट, लड़ाई-झगड़े से बचें। यात्रा में कष्ट, स्त्री पक्ष से अशान्ति, कारोबार कमजोर। मार्च १८,१९,२७,२८,२९, अप्रै. ५,६,७ अशुभ।
मिथुन	धन लाभ होकर हानि हो, असफल योजना, स्त्री सुख, कारोबार कमजोर, कर्जा चढ़े। जन. १७,१८,२५,२६,२७,फर. ४,५अशुभ।	मिथुन	भय, कष्ट, अर्थ-लाभ हो, स्थानान्तर व कार्यान्तर का विचार, यात्रा में कष्ट, मासान्त में व्यय अधिक। फर. १३,१४,२१,२२,२३,मार्च२,३,४,११,१२,१३ अशुभ।	मिथुन	क्रोध बढ़े, उत्साह कम न हो, कारोबार ठप्प, राजभय, चोरी, ठगी की घटना से सावधान , नेत्र व शिर पीड़ा। मार्च २०,२१,२९,३०,३१ , अप्रै. ८,९ अशुभ।
कर्क	पीड़ा, कष्ट, शत्रु बढ़े, यात्रा में कष्ट, कारोबार कमजोर, मन अशान्त, शनि, राहु का दान करे। जन. १९,२०,२७,२८,२९, फर. ६,७,८ अशुभ।	कर्क	सेहत ठीक,हिम्मत बढ़े, मास मध्य में अचानक हानि,कारोबार कमजोर, कारोबार सम्बन्धी झगड़े। फर. १५,१६,२४,२५, मार्च ५,६,१३ अशुभ।	कर्क	सुख लाभ , धन हानि हो, निजी लोगों से अनबन, कारोबार कमजोर, स्त्री सुख- व्यापार में कुछ लाभ संभव। मार्च १४,१५,२२,२३,२४ , अप्रै. १,२,१०,११ अशुभ।
सिंह	सेहत ठीक, धन लाभ, हिम्मत बढ़े, स्त्री सुख मासांत में हानि भय, कारोबार कमजोर। जन. १४,२१,२२,३०,३१, फर. ९,१० अशुभ।	सिंह	वायु विकार नेत्र व शिरपीड़ा , स्त्री सुख, व्यर्थ का व्यय, कारोबार गड़बड़, कर्जा चढ़े। फर. १७,१८,१९,२६,२७,२८ मार्च, ७,८ अशुभ।	सिंह	उदर विकार, धन लाभ, निजी लोगों से कुछ मन मुटाव, मित्र बन्धु कष्ट, स्त्री कष्ट, कारोबार कमजोर। मार्च १६,१७,२४,२५,२६ अप्रै. ३,४,१२ अशुभ।
कन्या	सेहत ठीक, कर्जा चढ़े, शत्रु बढ़े, घरेलू झगड़े, रोग भय, कारोबार कुछ ठीक। जन.१५,१६,२३,२४, फर.१,२,३,११,१२ अशुभ।	कन्या	उदर विकार, हानि भय, शत्रु बढ़ें, पाप कार्य में मन लगे, धन हानि, कर्जा सिर चढ़े, गुप्त चिन्ता। फर. १९,२०,२१,२९, मार्च १,९,१०,११अशुभ।	कन्या	सेहत ठीक, धन लाभ, निजीजन सहयोग, स्त्री सुख, शत्रुपक्ष कमजोर, भाग्य साथ न दे। मार्च १८,१९,२७,२८,२९, अप्रै. ५,६,७ अशुभ।
तुला	उदर विकार, स्त्री से अनबन, अर्थ संकट, सन्तान सुख, कारोबार पहले से ठीक। जन. १७,१८,२५,२६,२७, फर. ४,५ अशुभ।	तुला	सेहत ठीक, धन हानि, सन्तान पक्ष शुभ, स्त्री से अनबन, क्रोध बढ़े, वृथा व्यय। फर. १३,१४,२१,२२,२३, मार्च २,३,४,११,१२,१३ अशुभ।	तुला	वायु विकार, वृथा व्यय, राजपक्ष से चिन्ता, नई योजना से हानि लड़ाई झगड़े से बचें, कर्जा चढ़े। मार्च २०,२१, २९, ३०, ३१,, अप्रै. ७,८ अशुभ।
वृश्चिक	धन लाभ, शत्रु कमजोर, अचानक धन लाभ मास मध्य में, पाप कार्य में मन लगे। जन. १९,२०,२७,२८,२९, फर ६,७,८ अशुभ।	वृश्चिक	धन लाभ, निजी लोगों से मदद,असफल योजना, यात्रा का प्रोग्राम बने, शत्रु कमजोर, अचानक धन हानि भय। फर. १५,१६,२४,२५, मार्च ५,६,१३ अशुभ।	वृश्चिक	शत्रु पक्ष से चिन्ता, अच्छे लोगों से मदद मिले, गुप्त चिन्ता, व्यापार में हानि, स्त्री कष्ट व अपमान भय, मार्च १४, १५, २२,२३,२४, अप्रै. १,२,१०,११ अशुभ।
धनु	सुख-अर्थ लाभ, बुरा समाचार, कारोबार ठीक, नए कार्य का विचार, मासान्त में विशेष व्यय । जन. १४,२१,२२,३०,३१, फर. ९,१० अशुभ।	धनु	सुख, अर्थ लाभ, शरीर में वायु विकार, सन्तान पक्ष से चिन्ता, शत्रु कमजोर, स्त्री सुख, मासांत में कष्ट भय । फर. १७,१८,१९,२६,२७,२८, मार्च ७,८ अशुभ।	धनु	वायु विकार, धन लाभ की उम्मीद होने पर भी हानि हो, हिम्मत बढ़े, मित्रों से मदद, शत्रु प्रबल, परन्तु दबे रहें। मार्च १६,१७,२४,२५,२६, अप्रै. ३,४,१२ अशुभ।
मकर	धन सुख लाभ, गुप्त शत्रु से भय, अपमान भय, अचानक खर्चा आ पड़े, स्त्री सुख। जन. १५,१६,२३,२४ फर. १,२,३,११,१२ अशुभ।	मकर	सुख धन लाभ, मान हानि भय, वृथा व्यय, शत्रु बढ़े, स्त्री सुख, कार्यान्तर से हानि। फर. १९,२०,२१,२९, मार्च १,९,१०,११ अशुभ।	मकर	धन हानि , बन्धु सुख, अपमानभय, रोगभय ,धन नाश, सन्तान पक्ष से चिन्ता, कारोबार में हानि। मार्च १८,१९,२७,२८,२९, अप्रै. ५,६,७ अशुभ।
कुम्भ	शत्रु नाश, धन लाभ होकर हानि हो, रोग भय, पाप कार्य में मन लगे, शनि, राहु का दान करें। जन. १७,१८,२५,२६,२७, फर. ४,५ अशुभ।	कुम्भ	शत्रु नाश, धन हानि भय, शत्रु कमजोर, निजी लोगों से अनबन, सन्तान कष्ट, रोगभय, कारोबार ठीक। फर. १३,१४,२१,२२,२३, मार्च. २,३,४,११,१२,१३ अशुभ।	कुम्भ	उदर विकार, धन लाभ, शत्रु बढ़ें, सम्पत्ति विवाद, स्त्री कष्ट, कारोबार कुछ ठीक रहे। मार्च २०,२१,२९,३०,३१, अप्रै. ८,९ अशुभ।
मीन	बन्धनभय, व्यापार में हानि, हिम्मत बढ़े, सन्तान पक्ष से चिन्ता, रोगभय, कारोबार कुछ ठीक। जन. १९,२०,२७,२८,२९, फर. ६,७,८अशुभ।	मीन	रोगभय, धन हानि, उत्साह बढ़े, वृथा व्यय, नई योजना से लाभ वृथा कलह से बचें।फर. १५,१६,२४,२५ मार्च ५,६,१३ अशुभ।	मीन	बन्धन भय, अर्थहानि, शत्रु कमजोर हो, परन्तु निजी लोगों से अनबन,सन्तान सुख, कारोबार में लाभ होकर नुकसान हो । मार्च१४,१५,२२,२३,२४,अप्रै. १,२,१०,११अशुभ

अथ वर्षराजादि फल विचार(सं. २०५६वि.)

(सन् १९९९-२००० ई. की ग्रहपरिषद् का विवेचन)

कल्पादि से गतवर्ष १९७२९४९१००, सृष्टि संवत् १९५९८८५१००, श्री विक्रम संवत् २०५६,शक संवत् १९२१, श्रीकृष्ण जन्म संवत् ५२३५, कलिसंवत् ५१००, श्री जैन महावीर निर्वाण संवत् २५२४-२५, श्री बुद्ध संवत् २६२२-२३, हिजरी सन् १४१९-१४२०, फसली सन् १४०६-१४०७, ईस्वी सन् १९९९ एवं सन् २००० ई.

वर्षारम्भ से गुरुमान से विष्णु विंशति का 'नन्दन' नामक संवत्सर है; इसका फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है ;-

''सुभिक्षं सुखिनो लोकाः व्याधि-शोक विवर्जिताः।
नन्दनं च धनैर्धान्यैर्नन्दने वत्सरे भवेत्॥''

अर्थात्- प्रजा में आनन्द मंगल रहे, प्रजा रोगभय से मुक्त रहे। धन-धान्य समृद्धि हो।

किञ्च- ''नन्दने भौमः स्वामी, प्रजासुखं सर्वधान्य समता, चैत्र मध्ये करकाः पतन्ति। वैशाखे धान्यं महर्घं, प्रचण्डो वायुवेगः, ज्येष्ठेऽपि तथैव महर्घम्। आषाढे महामेघः। श्रावणेऽल्पवर्षा, भाद्रपदे महावृष्टिः, आश्विने सुभिक्षम्, राजा राज्यसुस्थः, प्रजा सुखम्। कार्तिके सुभिक्षमत्र समता, मार्गशीर्षदि मास चतुष्टये महर्घता। मंजिष्ठा लवंग- मरिचादिषु महर्घता॥''

इस वर्ष राजा (ग्रहपरिषद के प्रधान) गुरु, मंत्री, **बुध**, सस्येश (चौमासी फसलों के स्वामी)**शुक्र**, धान्येश (शीतकालीन फसलों के स्वामी)**गुरु**, मेघेश (मौसम वर्षा पानी के स्वामी) **मंगल**, रसेश(गुड़, खाण्ड, रसकस आदि के स्वामी) **सूर्य**, नीरसेश (सर्वविध धातु आदि व्यापार के स्वामी) **शुक्र**, फलेश (फल-फूल आदि के स्वामी) **मंगल**, धनेश (धन-दौलत एवं खजाना आदि के स्वामी)**शुक्र एवं दुर्गेश** (सुरक्षा किंवा प्रतिरक्षा के स्वामी)**मंगल** हैं।

इस वर्ष प्रत्येक पदाधिकारी का फल निम्नलिखित है :-

(१) राजा गुरु का फल—

''गुरौ नृपे वर्षति कामदं जलं महीतले कामदुघाश्च धेनवः।

अर्थात् —वर्षा आशानुरूप पर्याप्त हो, रस-दूध आदि काफी हो, धर्म-कर्म में जन-मन लगे, अनेकत्र यज्ञादि सम्पन्न हो। जनता द्वारा अन्य प्रकार के अनेक उत्सवों का आयोजन हो।

(२) मन्त्री बुध का फल-

''शशि सुते शुभ मन्त्रिपदं गते स्वपतिना रमते मदनक्रियाम्।
बहुधनं बहुवारि समन्वितं यव-मसूर- चणान्न महर्घताम्॥''

अर्थात्- जनता में ऐशो इशरत की भावना प्रबल रहे,वर्षा काफी हो, जनता का स्तर ऊँचा उठे, जौ, मसरी, चना आदि अनाज महंगे हों।

(३) सस्येश-शुक्र का फल-

''शुक्रो यदा धान्यपतिर्धरायां मेघो जलं वर्षति शोभनं प्रियम्।
गोधूम-शालीक्षुधनं प्रियंगु वृक्षेषु पुष्पाणि सुखप्रदानि॥''

अर्थात्— उचित समय पर पर्याप्त वर्षा हो, गेहूं, चावल, ईख आदि की फसलें उत्तम हों, फल फूल बहुत हों, फूलदार वृक्ष पौधे सुखप्रद वातावरण बनाएं।

(४) धान्येश गुरु का फल-

''गुरौ धान्यपतौ याते यव गोधूमशालयः।
पच्यन्ते सर्वदेशेषु यज्वानो ब्राह्मणादयः॥''

अर्थात्— गेहूं चावल आदि की फसल उत्तम हो, ब्राह्मण लोग यजन याजन करने में तत्पर रहें।

(५) मेघेश मंगल का फल-

''अवनिजे जलदस्य पतौ भुवि श्रुतिविचार विहीन धरामराः।
क्वचिदपि प्रचुरं जलमल्पकं क्वचिदपि प्रशमं बहुतापदम्॥''

अर्थात् — मेघेश-मंगल हो तो उत्तम वर्ण के लोग धर्म कर्म एवं अपने कर्त्तव्य से विहीन हो जाए। कहीं बाढ़ की स्थिति बने, कहीं वर्षा की कमी अनुभव हो।

(६) रसेश सूर्य का फल-

"रसपतौ तरणौ धरणी तदा विरस भागरताल्प-पयोधराः।
वसन तैल घृतप्रिय मानवाः सुखरसं न भुनक्ति महीपतिः॥"

अर्थात्- सूर्य के रसेश होने पर दूध, रस,गुड़ आदि कम हों, वर्षा कम (अपर्याप्त) हो, घी, तेल, वस्त्र आदि की कमी रहे, शासकों को अनेक विध- चिन्ताओं से ग्रस्त रहना पड़े।

(७) नीरसेश शुक्र का फल

"कर्पूरागरगन्धानां हेम-मौक्तिक वाससाम्।
अर्घवृद्धिः प्रजायेत नीरसेशो भृगुर्यदि॥"

अर्थात् — शुक्र नीरसेश हो तो कपूर-अगर आदि सुगन्धित वस्तुएं, सोना, मोती वस्त्र, ये सब महंगे हों।

(८) फलेश मंगल का फल-

"फलपतिर्यदि भूतनयोभवेन्नबहुपुष्प फलान्वित पादपाः।
गदभयान्वित देश जनास्तदा नृपतयो बहु विग्रहकारकाः॥"

अर्थात् — मंगल फलेश हो तो वृक्षों में फल-फूल कम लगें। जनता में नानाविध भयंकर रोग हों, शासकों में परस्पर वैमत्य एवं देशों में युद्धभय व्याप्त हो।

(९) धनेशशुक्र का फल —

" द्रविणपो भृगुजो द्रविणैर्युताः समधना सकला ननु मानवाः।
समसुखा क्रय-विक्रय जीविनो नृपतयो जनपालन तत्पराः॥"

अर्थात् — शुक्र धनेश हो तो गरीबी उन्मूलन पर सरकार का विशेष ध्यान रहे, कुछ समाजवादी वर्ग प्रभावी हों, व्यापारी वर्ग क्रय विक्रय से समानरूप से सुखभागी हों, शासक वर्ग जन-सेवा, जन हितार्थ तत्पर रहें।

(१०) दुर्गेश 'मंगल का फल'-

"अवनिजो गढ़ नायकतां गतो विविध दुःख वियोग समन्विताः।
जनपदेषु जनाः क्रय विक्रये भय विशेषतया न फलं क्वचित्॥"

अर्थात् — दुर्गेश-मंगल होने पर (रोग, महर्घता, शासन सत्ता के व्यवहार से किंवा राष्ट्र पर किसी प्रकार की आपत्ति आने से) जनता में दुःख का वातावरण बने। व्यापारी वर्ग को क्रय-विक्रय में (विशेष सरकारी नीति से) भयव्याप्त रहे, व्यापारी वर्ग विशेष रूप से लाभान्वित न हो।

सूचना-यद्यपि वर्ष के इन दशाधिकारियों का फल सर्वत्र होता है। किन्तु विशेषतः राजा का फल काश्मीर, अफगानिस्तान एवं बराड़ देश में, मंत्री का फल आन्ध्र, वाल्हीक, उज्जैन एवं मालवा में, सस्येश का पौण्ड्र, विदर्भ में, धान्येश का गुजरात, नर्मदा के तटवर्ती प्रदेश एवं मध्यप्रदेश में मेघेश का मगध एवं बंगाल में, रसेश का कोंकण एवं गोआ में नीरसेश का मालवा व बिहार में, धनेश का राजस्थान एवं बाड़मेर मे, फलेश-दुर्गेश एवं राजा का फल सब जगह विशेष होता है।

वर्षा आदि के विश्वामान-

वर्षाविश्वा ९, धान्य १५, तृण १७, शीत १५, तेज ९, वायु ११, वृद्धि १३, क्षय १५, विग्रह १५ क्षुधा १३, तृषा १५, निद्रा १३, आलस्य ३, उद्यम ११ शान्ति ७, क्रोध १३, दम्भ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रस ९, फल १३, उत्साह ११, उग्रता ११, पाप ७, पुण्य ९, व्याधि ५, व्याधिनाश १७, आचार १५, अनाचार १, मृत्यु १३, जन्म ३, देशोपद्रव ७, देश-स्वास्थ्य ११, चौर १७, चौरनाश ९, अग्नि ५, अग्नि शान्ति ७, उद्भिज्ज ५, जरायुज ३, अण्डज १५,स्वेदज १३, टिड्डी ५, तोता ३, मूषक १७, सोना ९, तांबा ३, स्वचक्र ९५, परचक्र १७,वृष्टि १९, वृष्टिनाश ९ एवं संवत् विश्वा १८ है।

आवर्तकादि चतुर्मेघ- चतुर्मेघो में 'आवर्तक' नामक मेघ का फलः- जौ, चना, तेल आदि की फसल को हानि पहुंचे। घी, तेल कपास एवं अनाज तेज रहें, वर्षा भी कम हो।

नवमेघ विचार- नौ मेघों में 'पुष्कर' नामक मेघ है। उसका फल चित्र विचित्र रूप से वर्षा हो। कहीं बाढ़, कहीं सूखा रहे। पाप कर्म अधिक हों, रोगों से परेशानी रहे।

अनन्तादि अष्टनाग- 'अनन्तादि अष्ट नागों में 'सुतक्षक' नामक नाग है।

फल- हस्त-शिल्पी एवं मकैनिक आदि कारीगरों को विशेष सुविधाएं उपलब्धहों, जनता में विष एवं नशे आदि का प्रचलन अधिक हो। वर्षा पर्याप्त न हो।

सुबुध्रादि बारहनाग- सुवुध्रादि द्वादशनागों में 'ककेटिक' नाग है।

फल- वर्षा की बहुत कमी रहे। राजा व कुछ प्रतिष्ठित व्यक्तियों की मृत्यु से शोक व्याप्त हो।

इस वर्ष के चार स्तम्भ

(१) जलस्तम्भ-(चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र) का अभाव है।
(२) वायुस्तम्भ- (ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृग.-नक्षत्र)६३ प्रतिशत है।
(३) तृणस्तम्भ- (वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र) ६ प्रतिशत है।

(४) अन्नस्तम्भ- (आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुन. नक्षत्र) ५३ प्रतिशत है।

इन चार स्तम्भों का अपना विशेष महत्त्व है, क्योंकि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड जल, वायु ,अन्न एवं तृण (जड़ी बूटियों) आदि पर ही निर्भर है। अत: संवत् का शुभाशुभ भी इन्हीं स्तम्भों के आधार पर विचारा जाता है। जनता एवं देश की खुशहाली के मूल ये स्तम्भ ही हैं। उल्लिखित **चार स्तम्भों का फल प्रतिशतता के आधार पर इस प्रकार है : —**

इस वर्ष **जलस्तम्भ** एवं **अन्नस्तम्भ** के अधिमान के अनुसार वर्षा पर्याप्त होगी, कुछ स्थानों पर खड़ी फसलों को हानि भी होगी। अनाज भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो सकेगा। **वायुस्तम्भ एवं तृणस्तम्भ** विचार से इस वर्ष में कहीं वायु प्रकोप से भयंकर हानि, कहीं वायु प्रदूषण से जनहानि भी हो। चारा की कमी से पशुधन को परेशानी हो। कृषक वर्ग चिन्तित रहे। इस वर्ष जल स्तम्भ के अनुसार कुछ क्षेत्रों में बाढ़-वर्षा से हानि भी होगी, कुछ दक्षिणी क्षेत्रों में वर्षा की भारी कमी अनुभव होगी। कुछ क्षेत्रों में अन्न समस्या भी पैदा हो ।

आर्षमान विचार (वर्ष रक्षा के लिए चार दुर्ग)

(१) प्रथम आर्ष- अक्षय तृतीया को रोहिणी नक्षत्र केवल ३ प्रतिशत है।

(२) द्वितीय आर्ष- सं. २०५५ वि. में पौष अमा को मूल नक्षत्र २३ प्रतिशत है।

(३) तृतीय आर्ष- श्रवण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र का अभाव है।

(४) चतुर्थ आर्ष- कार्तिक पूर्णिमा को कृत्तिका नक्षत्र ७७ प्रतिशत है।

फल— आर्षमान विचार से यह वर्ष विशेष शुभ प्रतीत नहीं होता। क्योंकि अक्षय तृतीया को रोहिणी नक्षत्र केवल ३ प्रतिशत है, श्रावण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र का अभाव ही है। द्वितीय आर्ष भी २३ प्रतिशत (क्षीण) ही है। केवल चतुर्थ आर्ष प्रबल है। अत: यह वर्ष केवल एक ही प्रबल आर्ष पर स्थित है। भारत को अनेक कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। धार्मिक-राजनैतिक एवं आर्थिक विषम समस्याओं से घिरा हुआ भारतवर्ष २० वीं सदी की पूर्णता को प्राप्त करेगा, लेकिन आगे पूर्ण आत्मनिर्भरता की ओर उन्मुख रहेगा। राजनीतिक -अस्थिरता से स्थिति डांवाडोल होगी। कहीं युद्ध की बिगुल बजेगी, जिससे एकता की भावना बढ़ेगी।

दोहा- ''अखैतीज रोहिणी न होई, पौष अमावस मूल न जोई।
राखी श्रवणो हीन विचारो, कार्तिक पुण्या कृत्तिका टारो।
महीमाह खलबली प्रकाशै कहै भड्डुली साख विनाशै॥

रोहिणी का वास- इस वर्ष रोहिणी का वास 'तट' पर है। **फल - 'तटे वृष्टि : सुशोभना'** वर्षा पर्याप्त है। इस वर्ष बहुजलीय अन्न चावल आदि की फसल अधिक होगी। न्यून वर्षा वाले बागड़ादि प्रान्तों में भी आगे पीछे वर्षा होने से कृषक लोगों को सहारा मिलेगा।

समय का वास- इस वर्ष समय का वास धोबी के घर है। तालाब, नदी नाले एवं बावड़ियां सब जल से परिपूर्ण रहें।

अधिक मास फल— इस वर्ष **ज्येष्ठ अधिक मास** है। **फल- ''ज्येष्ठ द्वये नृपध्वंसो धान्यनिष्पत्तिरुत्तमा।-''** किसी विशिष्ट -राजनीतिज्ञ व गणयमान्य व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त हो। अनाजों की फसल अच्छी हो।

शनि की दृष्टि- सं. २०५६ में (सारा संवत्) **शनि मेष राशि में** ही रहेगा । मेष-राशिस्थ शनि की दृष्टि पूर्व की तरफ ही रहती है।

फल- पूर्वी गोलार्ध स्थित देशों एवं प्रान्तों में कहीं राजनैतिक -अस्थिरता,समुद्री तूफान, सत्ता परिवर्तन, कहीं दो देशों में युद्ध-ज्वाला से बड़े देश चिन्तित हो, आन्दोलन, हत्याकाण्ड, भयंकर रोग से मृत्युदर बढ़े, कहीं भूकम्प, तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोप से भारी जनधन हानि हो। मेष राशि का शनि मेष, मिथुन, वृष, मकर, कन्या, तुला नाम राशि वाले देशों में विशेषत: मुस्लिम देशों में अघटित घटनाचक्र को जन्म देगा ।

शरत्सस्य जातक

इस वर्ष प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष अमावस शनिवार तदनुसार १५ मई १९९९ ई. को प्रात: ८ घं. ४ मि. (६घड़ी २०पल) पर सूर्य देव वृष राशि में प्रविष्ट होंगे।

फल— यहां वृष राशि को लग्न मानकर चलें तो चन्द्र से चतुर्थ राहु, खड़ी फसलों में रोग फैलने से हानि का संकेत देता है। लग्न से छठे (शुक्र की राशि का) मंगल शनि से दृष्ट होकर अनेकत्र अकाल की स्थिति से मूंग, मोठ, बाजरा आदि शारद् धान्यों में हानि का कारण बन सकता है। कहीं बाढ़ से भी भयंकर हानि से शासन चिन्तित रहे। वृषस्थ-सूर्य से द्वादशस्थ-मीन-शनि एवं शनियुत बुध चन्द्र भी शुभ नहीं। शरद् ऋतु के अनाजों के लिए ग्रहस्थिति खराब ही है, सर्वज्ञ प्रभु हैं ।

शरत्सस्य जातक कुण्डली

रा.४
२ सू.
३ शु.
चं१ श. बु
५
१२
६
गु
७ मं
९
११
८
१०के.

ग्रीष्म सस्य जातक

ग्रीष्म सस्य जातक कुण्डली

५ | ४ रा. | ३ | शु. ६ | २ | श. १ गु | ७ बु | सू. ८ | १० के. | १२ | ९ मं. | ११ चं.

इस वर्ष कार्तिक शुक्ल अष्टमी मंगलवार तदनुसार १६ नवम्बर १९९९ ई. को भा.स्टैं.टा. के अनुसार २१घं. ३७ मिनट पर (३६घड़ी ५० पल) पर सूर्य देव वृश्चिक -राशि में प्रविष्ट होंगे।

फल— ग्रीष्म सस्य कुण्डली में वृश्चिकस्थ-सूर्य से दूसरे मंगल पर गरु की दृष्टि है, सूर्य से बारहवें बुध भी गुरु दृष्ट है अतः गेहूं, जौ आदि अनाजों की फसल अच्छी होगी। लेकिन सूर्य से छठे शनि-गुरु कहीं कटाई के समय फसलों का नुकसान करेंगे। ग्रीष्मसस्य कालीन कुण्डली में राहु-शनि-मंगल की स्थिति से संकेत मिलता है कि -फसलों के अच्छा होने पर भी किसी प्राकृतिक प्रकोप व शासकीय नीति विशेष से जौ, चना, सरसों, गेहूं आदि अनाजों में काफी तेजी आ सकती है, जिससे जनता में अशान्ति पनपेगी एवं शासन को स्टाक पर अंकुश लगाने पर विवश होना पड़ेगा ।

नव वर्ष प्रवेश

नव वर्ष प्रवेश कुण्डली

९ | ७ मं. | ६ | १० के. | ८ | ११ | ५ | चं. १२गु सूबु | २ शु | ४ रा. | १श. | ३

गत वर्ष सं. २०५५ वि. में चैत्र -कृष्ण अमावस बुधवार तद्नुसार १७ मार्च सन् १९९९ ई. को अर्धरात्रि के बाद १८ मार्च को २४ घं. ४८ मिनट पर पू.भा. नक्षत्र, शुभयोग एवं मीनस्थ चन्द्र के समय वृश्चिक लग्न में नए संवत् २०५६ का शुभारम्भ हुआ है

फल— संवत् २०५६ विक्रमी का उदय वृश्चिक लग्न में हुआ है। पश्चिमी गोलार्ध के देशों व प्रान्तों में नौ मास तक (या प्रारम्भिक नौ महीनों में) कहीं भयंकर अकाल की स्थिति बने। उत्तर दिशा के प्रान्तों में भी कहीं फसलों को हानि पहुंचे। पूर्वी देश व प्रान्तों में सत्ता हस्तान्तरण व युद्धमय वातावरण बने। जनता में रोगभय व अन्य प्राकृतिक प्रकोप से कष्ट बने, दक्षिण दिशा में देश भंग भय रहे।

"वृश्चिके पश्चिमे देशे दुर्भिक्षं नवमासिकम्।
उदीच्यामर्द्ध निष्पत्तिः महर्घा धातवस्तथा ।।
पूर्वस्यां विग्रहो राज्ञां दुःखं मासत्रयं जने।
दक्षिणस्यां देशभंगो भावि वर्षे प्रजायते ।।"

नव वर्ष प्रवेश कालीन ग्रह स्थिति के अनुसार लग्नेश-मंगल व्यय स्थान में होने से केन्द्रीय शासन सत्ता में परिवर्तन हो, यान दुर्घटना व अग्निकाण्ड, भूकम्प आदि से कहीं जन धन हानि भी हो । लेकिन भारतवर्ष में नए कार्यक्रम,नए आयाम, नई योजनाएं शीघ्र ही कार्यान्वित होंगी;क्योंकि वर्ष लग्न में पंचम भाव बलवान है ।

वर्षेश (जगत्) लग्न

वर्षेश (जगत्) लग्न कुण्डली

४ रा. | २ शु. | ३ | सू. १ श. | ५ | ६ | बु गु. १२ चं. | मं. ७ | ९ | ८ | ११ | १०के.

संवत् २०५६ वि. में वैशाख कृष्ण त्रयोदशी बुधवार तदनुसार १४ अप्रैल सन् १९९९ ई. को ११ घं. १६ मिनट (१३ घड़ी १० पल) पर उ.भा. नक्षत्र ऐन्द्र योग एवं मीनस्थ चन्द्र के समय मिथुन लग्न में सूर्यदेव मेष राशि में प्रविष्ट होंगे ।

फल- जगत् लग्न कुण्डली का लग्न मिथुन है। लग्नेश बुध, गुरु चन्द्र के सन्निकर्ष में है, लेकिन लग्न पर नीच शनि की दृष्टि है, जो कि कुछ समृद्ध एवं यावन राष्ट्रों के लिए कई तरह की समस्याओं को उपस्थित करे ।

" मिथुने बहुलं युद्धं पूर्वस्यां धान्य विक्रयः ।
पश्चिमायां स्वल्पमेघाः छत्रभंगश्च विग्रहः ।।"

पूर्व-पश्चिमी गोलार्ध के देश विशेष रूप से संकट ग्रस्त होंगे । कहीं नाटकीय ढंग से सत्ता परिवर्तन होगा । अमेरिका, ब्रिटेन, आयरलैण्ड, पाकिस्तान, अफगानिस्तान इराक-ईरान में कहीं आन्तरिक अशान्ति व कहीं भयंकर युद्ध का सूत्रपात होगा। ज्येष्ठ, भाद्रपद, मार्गशीर्ष एवं फाल्गुन मास विशेष घटनापूर्ण होंगे ।

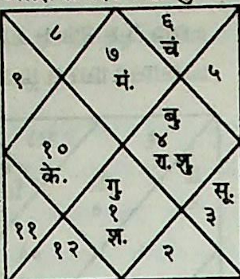
जगत् लग्न से व्यक्तिगत फल विचार

जन्म कुण्डली में लग्न बलवान हो तो जन्म राशि से जगत् लग्न जिस राशि पर आए वह भाव शुभग्रह या भावेश से दृष्ट या युक्त हो तो उस वर्ष में उस भाव की वृद्धि कहनी चाहिए। यदि पापी ग्रह की दृष्टि या योग हो तो उस भाव की हानि कहें। जन्म लग्न, जन्म राशि एवं अपने वर्षलग्न से वर्षेश (जगत) लग्न आठवें या बारहवें हों तो वर्ष उस व्यक्ति के लिए शुभ नहीं होगा। इसी प्रकार देश एवं ग्राम के शुभाशुभ विचार के लिए भी समझना चाहिए।

आर्द्रा प्रवेश लग्न

संवत् २०५६ वि. में द्वितीय (शुद्ध) ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष नवमी मंगलवार तदनुसार २२ जून सन् १९९९ ई० को चित्रा नक्षत्र, परिघ योग एवं कन्यास्थ चन्द्र के समय १४ घं. १३ मिनट (२२ घडी २ पल पर) सूर्यदेव आर्द्रा नक्षत्र में प्रविष्ट होंगे।

आर्द्रा प्रवेश लग्न कुण्डली



फल– नवमी तिथि मंगलवार एवं चित्रा नक्षत्र में सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश कष्टप्रद कहा है। शस्त्र व विस्फोट से किसी नेता की मृत्यु हो। अनेकत्र वर्षा की कमी अनुभव हो, कहीं ऋतु विपर्यय अनुभव हो, क्योंकि आर्द्रा प्रवेश दिन में हुआ है अत: अनेकत्र वर्षा के अभाव से कृषक वर्ग चिन्तित रहेगा,'दिवार्द्रा याति चेद्भानुर्जल भक्षण-कारक:।' खेती का नाश, धान्य महंगा तथा चोर की कमी अनुभव हो।

गुर्रा फल

गत संवत् २०५५ वि. में २८ अप्रैल १९९८ ई. को मंगलवार से हिजरी सन् १४१९ प्रारम्भ हुआ है।

फल— विश्व के पूर्वी एवं उत्तरी भूभाग पर कहीं भंयकर अकाल की स्थिति बने। खाद्य वस्तुओं में भारी तेजी से जनता परेशान हो। कहीं भयंकर युद्ध का सूत्रपात हो। पशु एवं जनता में रोग बढ़े। गुड़, खाण्ड, घी एवं गेहूं आदि में मंहगाई रहे। कहीं भयंकर अग्निकाण्ड से हानि हो। खड़ी फसल को प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो ।

वर्तमान संवत् २०५६ वि. में वैशाख शुक्ल तृतीया रविवार को हिज़री सन् १४२० प्रारम्भ होगा।

फल— बादल वर्षा अधिक हो, धान सस्ते रहें। राजा प्रजा में अमन चैन रहे। स्त्री-वर्ग को बहुधा कुच (स्तन) रोगों से कष्ट रहे। गेहूं आदि की फसल बहुत हो। लेकिन किन्हीं दो तीन मुस्लिम राष्ट्रों में युद्ध हो, और कहीं सत्ता हस्तान्तरण हो।

लाभ-व्यय चक्र (विंशेत्तरी मतानुसार)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
लाभ	१४	८	१४	८	११	१४	८	१४	११	५	५	११
व्यय	२	११	८	५	२	८	११	२	८	११	११	८

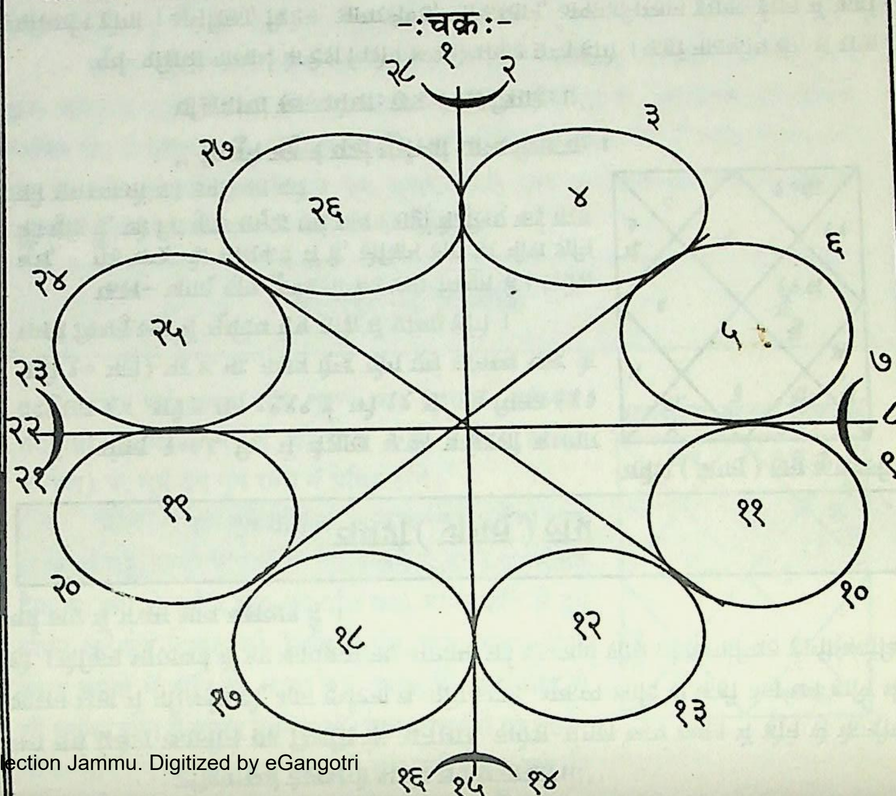
लाभ व्यय देखने की रीति- अपनी राशि के लाभ व्यय अंकों को जोड़कर उस में से१ घटाकर शेष को ८ से भाग देने पर यदि १, २ ,६ ,७ बचे तो वर्ष में उत्तम लाभ होगा, ३,४,५,० बचे तो लाभ बहुत कम हो, चिन्ता भी रहे।

"इतीदं वत्सर फलं वत्सरादि - तिथौ शुभम् ।
य: भृणोति नरो भक्त्या स सुखी वत्सरं भवेत्॥"

आज का दिन कैसे बीतेगा

प्रात: उठकर पंचांग से ज्ञात करो कि उस समय कौन-सा नक्षत्र है। फिर नीचे दिए गये चक्र के समान एक चक्र बनाओ । इस चक्र में जहाँ १ लिखा है, वहां उस दिन के प्रात:कालीन नक्षत्र को लिखकर उससे आगे के नक्षत्रों को २-३-४ आदि अंकों के स्थान पर लिखते हुए अभिजित् सहित २८ नक्षत्रों को चक्र में लिख डालो । अब देखो कि आपके नाम का नक्षत्र कहां पड़ा है । यदि वह चक्र के भीतर है तो वह दिन सुख-शान्ति से व्यतीत होगा, उस दिन कोई शुभ समाचार मिलेगा। यदि नाम-नक्षत्र चक्र के बाहर पड़े तो दिन का आधा भाग प्रसन्नता से बीते और शेष भाग में चिन्ता, दु:ख-शोक से चित्त खिन्न हो। यदि नाम नक्षत्र पर पड़े तो वह पूरा दिन विवाद, हानि, दुर्घटना आदि से चित्त की अशान्ति का कारण बने ।

-:चक्र:-



सन्दिग्ध व्रत-पर्व व्यवस्था (सं. २०५६ वि.)

लेखकः प्रियव्रत शर्मा, ५९/६ (अभिजित्),P.O. पंचकूला-१३४१०९

(यदि इस स्तम्भ में चर्चित या किसी अन्य व्रत-पर्व की तिथि के बारे में किसी को सन्देह हो तो,उसे पत्र देकर मुझ से स्पष्टीकरण मांग लेना चाहिए- प्रियव्रत शर्मा)

श्री लक्ष्मीव्रत [श्री (लक्ष्मी) पञ्चमी]

नागव्रत और स्कन्दव्रत में पंचमी तिथि पर (षष्ठी) विद्धा ली जाती है -

''नागव्रते स्कन्दव्रते च परविद्धैव '' (तिथि निर्णयः)

'पुरुषार्थ चिन्तामणि' कार भी कहते हैं कि स्कन्द व्रत के अतिरिक्त स्थलों पर पंचमी पूर्व (चतुर्थी) विद्धा ही लेनी चाहिए ।

'सा च स्कन्दोपवासातिरिक्तोपवासे पूर्व (चतुर्थी) विद्धा ग्राह्या'

इस वर्ष चैत्र शुक्ल पंचमी जो लक्ष्मी, व्रत की तिथि है, २२ मार्च'९९ को षष्ठी विद्धा है। अतः इस दिन यह व्रत नहीं किया जाएगा। इस व्रत का अनुष्ठान २१ मार्च'९९ को ही होगा क्योंकि इस दिन यह पूर्व (चतुर्थी) विद्धा है।

रम्भाव्रत (रम्भा तृतीया)

रम्भा व्रत पूर्व (द्वितीया) विद्धा ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया को किया जाता है इसके लिए यह आवश्यक है कि तृतीया पहले दिन सूर्यास्त से पूर्व कम से कम दो मुहूर्त्त तक विद्यमान हो। यदि पहिले दिन तृतीया सूर्यास्त से पूर्व दो मुहूर्त्त से अल्पकाल को ही व्याप्त करे तो रम्भाव्रत दूसरे दिन उसी स्थिति में किया जाता है, जबकि उस दिन तृतीया सूर्यास्त से पहिले समाप्त हो रही हो। 'धर्मसिन्धु' कार ने यही बात इस प्रकार कही है-

''ज्येष्ठशुक्ल तृतीयायां रम्भाव्रतम्, सा पूर्व विद्धा ग्राह्या। यत्र पूर्वविद्धा ग्राह्यत्वेनोच्यते तत्रास्तात्प्राक् द्वि- मुहूर्त्ताधिकाया ग्राह्यत्वं ज्ञेयं न न्यूनायाः।.... यदा तु ग्राह्यायाः पूर्वविद्धायाः पूर्वेद्युः मुहूर्त द्वयान्न्यूनत्वं परेद्युश्च अस्तमयात् प्राक् समाप्तत्वं तदा परैव ग्राह्या।''(धर्मसिन्धुः)

इसवर्ष द्वि. (शुद्ध)ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया पहिले दिन १५ जून'९९ को सूर्योदय से पूर्व दो मुहूर्त्त से कम है और यह दूसरे दिन (१६ जून'९९ को) सूर्यास्त से पहिले समाप्त हो जाती है। अतः उपरोक्त निर्णय के अनुसार इस वर्ष रम्भा तृतीया दूसरे दिन (१६जून'९९को)ही मनाई जाएगी।

दूर्वाष्टमी (दूर्वाव्रत)

रौहिण (दिन के नौवें) मुहूर्त्त को व्याप्त करने वाली भाद्रशुक्ल अष्टमी के दिन स्त्रियां दूर्वाव्रत करती हैं। यह व्रत सिंहस्थ सूर्य में शुभ माना जाता है, लेकिन अगस्त्य उदित होने पर इस व्रत को करने का निषेध है। 'सिंहस्थे सोत्तमा सूर्येऽनुदिते मुनिसत्तमे'-(स्कन्द :)। यदि भाद्र शुक्ल अष्टमी को अगस्त्य उदित (दृश्य)हो तो भाद्रकृष्णाष्टमी के दिन इसे मनाने का विधान है-

''भाद्रशुक्लाष्टम्याम् अगस्त्योदये भाविनि सति पूर्व कृष्णाष्टम्यामेव कुर्यात्'' (हेमाद्रिः)

इसवर्ष भाद्रकृष्णाष्टमी के दिन भी पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., दिल्ली आदि प्रान्तों में अगस्त्य उदित(दृश्य) रहेगा । अतः इस दिन भी दूर्वाव्रत सम्भव नहीं होगा। ऐसी स्थिति में निबन्धकारों का निर्णय है, कि दूर्वाव्रत और भी पहिले 'श्रावणशुक्ल अष्टमी' के दिन करना चाहिए। इस निर्णय के अनुसार इसवर्ष १९ अगस्त'९९ को ही दूर्वाव्रत होगा । क्योंकि इसी दिन श्रावणशुक्ल अष्टमी रौहिण व्यापिनी श्रवण है और इसी दिन अगस्त्य अदृश्य और सूर्य सिंहस्थ भी है।

सरस्वती आवाहन-पूजन-बलिदान-विसर्जन

सरस्वती का आवाहन पूजन बलिदान और विसर्जन आश्विन शुक्ल पक्ष में क्रमशः मूल, पू.षा., उ.षा. और श्रवण नक्षत्रों में किया जाता है। आवाहन मूल के प्रथम पाद में दिन के समय ही किया जाता है। रात्रि में आवाहन नहीं होता । यदि मूल नक्षत्र सूर्यास्त से पूर्व तीन मुहूर्त्त से कम हो या उसका प्रथम पाद रात्रि के समय हो तो आवाहन दूसरे दिन मूल के द्वितीय आदि किसी भी चरण में (दिन के समय ही) करना चाहिए-

''तत्र मूलस्य प्रथमे पादे सूर्यास्तात् प्राक् त्रिमुहूर्त्तव्यापिनि सरस्वत्यावाहनम्। त्रिमुहूर्त्तन्यूनत्वे, रात्रौ वा प्रथमपादसत्त्वे तस्य विशेष-वचनं बिना ग्राह्यत्वाभावाद् द्वितीयादिपादे परदिन एवावाहनम् ।'' (धर्मसिन्धुः)

इसवर्ष मूल का प्रथम पाद १५ अक्तू '९९ को पड़ता है । मूल नक्षत्र यहाँ सूर्यास्त से पूर्व तीन मुहूर्त्तों से कहीं अधिक काल को व्याप्त कर रहा है। अतः सरस्वती आवाहन इसी दिन किया जाएगा।

सरस्वती पूजन और बलिदान भी क्रमशः पू.षा. और उ.षा. नक्षत्रों में दिन के समय ही किए जाते हैं। इसवर्ष ये दोनों नक्षत्र क्रमशः १६ व १७ अक्तू. '९९ को दिन में विद्यमान हैं, अतः पूजन और बलिदान इस वर्ष क्रमशः १६ व १७ अक्तू. '९९ को ही होंगे ।

सरस्वती विसर्जन श्रवण के प्रथम चरण में ही किया जाता है। विसर्जन के लिए श्रवण का प्रथम चरण रात्रि के प्रथम प्रहर तक ही ग्राह्य माना गया है। रात्रि के प्रथम प्रहर के बाद श्रवण का प्रथम चरण आए तो दूसरे दिन इसके किसी भी चरण में विसर्जन करना चाहिए-

"विसर्जनं तु श्रवण-प्रथम-पादे रात्रिभाग-गतेऽपि कार्यम्। विशेष-वचनात्तच्च रात्रेः प्रथम प्रहर-पर्यन्तमेव।"(धर्मसिन्धुः)

इस वर्ष श्रवण का प्रथम पाद १८ अक्तू. '९९ को १६घं.२० मि.(भा.स्टैं.टा.)पर दिन में ही प्रारम्भ हो जाता है। अतः इसवर्ष सरस्वती विसर्जन १८ अक्तू. '९९ को ही करना होगा ।

विजयादशमी (दशहरा)

अपराह्ण व्यापिनी आश्विन शुक्ल दशमी के दिन विजयादशमी मनाई जाती है। धर्मशास्त्र का निर्णय है कि यदि पहिले ही दिन दशमी अपराह्ण को व्याप्त करती है और दूसरे दिन श्रवण का सर्वथा अभाव है तब विजयादशमी पहिले ही दिन होगी। किञ्च यदि दशमी पहिले ही दिन अपराह्ण व्यापिनी हो और वह दूसरे दिन तीन मुहूर्त्तों से अधिक काल को व्याप्त कर रही हो लेकिन वहां वह अपराह्ण से पहिले ही समाप्त हो जाए तो इस स्थिति में दूसरे दिन विजयादशमी तभी होगी जबकि केवल उसी दिन दशमी का श्रवण से योग हो, अन्यथा नहीं; - यह बात धर्मसिन्धुकार के निम्नांकित वाक्य से स्पष्ट है -

"यदा पूर्व दिन एवाऽपराह्णव्याप्ता पर दिने च श्रवणयोगाभावः तदापि पूर्वैव। यदा तु पूर्वदिन एवापराह्णव्यापिनी परदिने च मुहूर्त्तत्रयादि व्यापिनी अपराह्णात्पूर्वं समाप्ता, परत्रैव च श्रवण-योगवती, तदा परैव।"(धर्मसिन्धुः)

इसवर्ष दशमी केवल पहिले ही दिन (१९ अक्तू. '९९ को ही)अपराह्ण व्यापिनी है, और वह इसी दिन अपराह्ण में श्रवण युक्ता भी है। दूसरे दिन (२० अक्तू. '९९ को)दशमी न तो अपराह्ण का ही स्पर्श करती है, और न ही वहाँ श्रवण नक्षत्र ही है। **अतः सभी प्रकार से इस वर्ष विजयादशमी १९अक्तू. '९९को ही सिद्ध होती है।**

१९-२० अक्तू. को अपराह्णकाल लगभग १३घं.१६मि. से १५ घं. ३१ मि.(भा.स्टैं.टा.) तक रहेगा।

यम (भ्रातृ) द्वितीया

अपराह्ण व्यापिनी कार्तिक शुक्ल द्वितीया वाले दिन भ्रातृद्वितीया या यमद्वितीया मनाई जाती दूसरे ही दिन परविद्धा द्वितीया को यह पर्व मनाया जाता है।

"इयं (यम द्वितीया) पूर्वेद्युरेवापराह्णव्याप्तौ पूर्वा। उभयत्र व्याप्त्यव्याप्त्यादि-पक्षान्तरेषु परैव"(धर्मसिन्धुः)

इस वर्ष कार्तिक शुक्ल द्वितीया ९ और १० नवम्बर'९९-दोनों दिन अपराह्ण-व्यापिनी है। अतः उपरोक्त नियमानुसार यह पर्व इसवर्ष १० नवं. '९९को ही मनाना होगा ।

९-१० नवम्बर को अपराह्ण काल भा.स्टैं.टा. के अनुसार लगभग १३ घं. १० मि. से १५घं. १७ मि. तक रहेगा ।

प्रदोषव्रत (पौष शुक्ल)

सूर्यास्त के बाद तीन मुहूर्त्त का काल 'प्रदोष' कहलाता है। प्रदोष काल व्यापिनी त्रयोदशी के दिन प्रदोषव्रत किया जाता है। इसवर्ष पौष शुक्ल त्रयोदशी यद्यपि पहिले दिन (१८ जन.२०००ई. को)केवल कुछ ही (३-४) मिनटों के लिए प्रदोष को व्याप्त कर रही है। पुनरपि शास्त्र-निर्णयानुसार प्रदोषव्रत इसी दिन किया जाएगा, क्योंकि दूसरे दिन तो यह प्रदोष को यत्किञ्चित् भी स्पर्श नहीं करती ।

१८ जन. को प्रदोष काल लगभग १७ घं. ४१ मि. से २० घं.२६ मि. (भा. स्टैं. टा.) तक होगा।

होलिका दहन

प्रदोष व्यापिनी फाल्गुन पूर्णिमा के दिन होलिका दहन किया जाता है। भद्रा में होलिका दहन वर्जित है। यदि प्रदोष में भद्रा हो तो दूसरे दिन प्रदोष व्यापिनी पूर्णिमा में होलिका दहन करना चाहिए। यदि दूसरे दिन पूर्णिमा प्रदोष व्यापिनी न हो तो पहिले दिन भद्रा समाप्ति पर होली जलाएं। यदि भद्रा निशीथ (अर्धरात्रि) के बाद या निशीथ में समाप्त हो रही हो तो भद्रा के मुख को छोड़कर भद्राकाल में ही निशीथ से पहले होली जला लेनी चाहिए, क्योंकि निशीथ के अनन्तर होलिका दहन निषिद्ध है-

"पर दिने प्रदोष-स्पर्शाभावे पूर्वदिने यदि निशीथात्प्राग् भद्रा-समाप्तिस्तदा भद्रावसानोत्तरमेव होलिका-दीपनम्। निशीथोत्तरं भद्रा-समाप्तौ भद्रामुखं त्यक्त्वा भद्रायामेव।"(धर्मसिन्धुः)

इसवर्ष फाल्गुन पूर्णिमा केवल १९ मार्च २००० ई. के दिन ही प्रदोषव्यापिनी है और इस दिन भद्रा अर्धरात्रि से पहिले २२ घं. ५३ मि. (भा.स्टैं.टा.)पर समाप्त हो रही है। अतः होलिका

श्री वि.सं.२०५६, शाके १९२१, **चैत्र-शुक्ल पक्ष १** (१८ से ३१ मार्च तक, सन् १९९९ ई.)
उत्तरायण, दक्षिण उत्तर गोल, वसन्त ऋतु।

ग्रह दर्शन - बुध २६ मार्च को पूर्व में दीखने लगेगा। २२ मार्च को गुरु अदृश्य हो जाएगा। प्रातः शुक्र एवं शनि पश्चिम में होंगे। प्रातः मंगल पश्चिम की ओर जा रहा होगा।

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	तारीखें प्र. चैत्र	अं. मार्च	श. फाल्गु.	मु. ज़िल्का.	चन्द्र राशि प्रवेश काल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा.स्टैं.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२९	४८	१	गु.	३७	४५	उ.भा	३९	१८	शु.	३९	१०	किं.	११	३१	५	१८	२७	२९	मीन			६	३३	६	२८	११	३	८	३६	सूर्य उ.भा.में ११/२५, मंगल वक्री ३१/३२,वासन्त (A)
२९	५२	२	शु.	२९	४५	रे.	३५	१८	ब्र.	३०	२	बा.	३	४५	६	१९	२८	३०	मे.	३५	१८	६	३२	६	२९	११	४	८	१८	पञ्चक समाप्त ३५/१८, चन्द्र दर्शन मु.३० वक्री वेंक्टेश (B)
२९	५८	३	श.	११	५५	अ.	२९	२२	ऐ.	२०	४०	ग.	२१	५५	७	२०	२९	ज़ि.१	मेष			६	३१	६	३०	११	५	७	५६	भ.४८/७ बाद,श्री मत्स्य जयन्ती, गौरी तृतीया (गण गौर), (C)
३०	०	४	र.	१४	२०	भ.	२३	४५	वै.	११	३०	वि.	१४	१०	८	२१	३०	२	वृ.	३५	५९	६	३०	६	३०	११	६	७	३०	भ.१४/२० तक, वक्री बुध पू.भा. में २७/८, सूर्य सायन मेष में (D)
३०	७	५	चं.	७	१५	कृ.	१८	३५	वि. प्री.	२ ५४	४५ ४०	बा.	७	१५	९	२२	चै.१	३	वृष			६	२८	६	३१	११	७	७	१	शक चैत्र प्रारम्भ, नागपञ्चमी, स्कन्दषष्ठी,
३०	१२	६	मं.	०	५५	रो.	१४	२८	आ.	४७	२५	तै.	०	५५	१०	२३	२	४	मि.	४२	५०	६	२७	६	३२	११	८	६	३१	भ.५५/३५ बाद,नेपच्यून श्रव. १ में४६/१०,
अवम		७	मं.	५५	३५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	सप्तमी तिथिक्षय,
३०	१५	८	बु.	५१	३०	मृ.	११	१५	सौ.	४१	२	वि.	२३	३२	११	२४	३	५	मिथुन			६	२६	६	३२	११	९	५	५९	भ.२३/३२ तक, शुक्र भरणी में १९/२५,श्री दुर्गाष्टमी,अशोकाष्टमी,
३०	२०	९	गु.	४८	३५	आ.	९	१५	शो.	३५	४०	बा.	२०	२	१२	२५	४	६	क.	५३	४१	६	२५	६	३३	११	१०	५	२७	व. बुध कुम्भ में २५/२०,श्री राम नवमी (पुनर्वसु युता) (E)
३०	२८	१०	शु.	४७	०	पुन.	८	३०	अ.	३१	२०	तै.	१७	४८	१३	२६	५	७	कर्क			६	२३	६	३४	११	११	४	५०	बुध पूर्व में उदित १४/१८,
३०	३०	११	श.	४६	१४	पु.	८	५८	सु.	२७	५२	व.	१६	३७	१४	२७	६	८	कर्क			६	२२	६	३४	११	१२	४	१३	भ. १६/३७ से ४६/१४तक, कामदा एकादशी (स-),
३०	३५	१२	र.	४७	१०	आश्ले.	१०	३०	धृ.	२५	२२	ब.	१६	४२	१५	२८	७	९	सिं.	१०	३०	६	२१	६	३५	११	१३	३	३३	
३०	४०	१३	चं.	४८	५५	म.	१३	१२	शू.	२३	४५	कौ.	१८	२	१६	२९	८	१०	सिंह			६	१९	६	३५	११	१४	२	५०	गुरु रेव.१ में ५३/१२,अनंग त्रयोदशी, श्री महावीर जयन्ती (F)
३०	४५	१४	मं.	५१	३२	पू.फा.	१६	४५	गं.	२२	४८	ग.	२०	१३	१७	३०	९	११	क.	३२	५३	६	१८	६	३६	११	१५	२	५	भ.५१/३२ बाद, दमनक चतुर्दशी,
३०	४८	१५	बु.	५५	५	उ.फा.	२१	१५	वृ.	२३	०	वि.	२३	१९	१८	३१	१०	१२	कन्या			६	१७	६	३६	११	१६	१	१८	भ. २३/१९ तक, सूर्य रेवती में ३९/७,ओली समाप्त (जैन) (G)

गुरु अस्त (२१ मार्च)

(A) नवरात्र प्रारम्भ, चान्द्र संवत्सर प्रारम्भ, गुरु वार्द्धक्य प्रारम्भ ५४/५३, कलशस्थापन, वर्षफल श्रवण, तैलाभ्यंग, प्रपादान, (B)(प्लूटो)अनु.४ में, (C)आन्दोलन तृतीया, जिल्हिज मु.प्रा., (D) १/५५, उत्तर गोल प्रारम्भ, महाविषुव दिन, गुरुअस्त ५५/००,श्री (लक्ष्मी) पञ्चमी, (देखें पृष्ठ 97), हयव्रत, (E) नवरात्र समाप्त, (F) (जैन),सोम प्रदोष व्रत, (G)चैत्रीपूर्णिमा, श्री सत्यनारायण व्रत, वैशाख स्नान प्रारम्भ

चैत्र शु. ८ बुध, इष्ट ५७/४२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	२	६	११	११	०	०	३	९
१०	१७	१८	०	१५	१४	८	२६	२६
३	२१	६	२०	२८	५	४४	९	९
१२	२७	९	३६	३२	५३	४६	३३	३३
५९	८१४	५	४३	१४	७२	७	३	३
२७	७	१३	२४	३०	५	४	११	११
-	-	व.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.भा.	आर्द्रा	स्वा.	पू.भा.	उ.भा.	भर.	अश्वि.	आर्द्रा	धनि.

कुण्डली सूर्योदये

श.१ शु.
सू.१२ बु. गु.
११
२
१० के.
३चं.
९
रा.४
६
८
५
मं. ७

लोक भविष्य-इस संवत् का राजा गुरु है। २१ मार्च को गुरु अस्त होकर शुभ एवं शासकीय गतिविधि में बाधा का संकेत देता है। यह समय राजनैतिक गतिरोध का होने पर भी जन सामान्य के लिए ठीक ही प्रतीत होता है। विश्व के कुछ देश शनि-मंगल के समसप्तक योग के कारण युद्ध-भय का कारण बनेंगे। मंगल का वक्री होना खाद्य वस्तुओं में भयंकर तेजी से जनता में अशान्ति पैदा करे।

ग्रहचाल और बाजार का रुख- पक्षारम्भ में ही मंगल वक्री होकर रुई, सोना, चांदी, अलसी, गेहूं एवं लाल रंग की चीजों में आगे तूफानी तेजी करेगा। राजनैतिक उथल-पुथल की खबरों से भी बाजारों में अफरा तफरी मचेगी। २१ मार्च के लगभग रुई एवं शेयर बाजारों में जोरदार तेजी बनेगी, २६ मार्च के लगभग रुई में मन्दे के बाद तेजी, गेहूं, चना आदि अनाजों, तिल,घी,एवं लाल मिर्च, गुड़ में तेजी का प्रभाव रहे।

कुण्डली सूर्योदये

शु.१ श.
गु. १२ सू.
बु. ११
२
१० के.
३
९
रा.४
चं. ६
८
५
७ मं.

चैत्र शुक्ल १५ बुध, इष्ट ५८/०५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	५	६	१०	११	०	०	३	९
१६	१७	१७	२७	१७	२२	९	२५	२५
५८	३१	१३	७	१०	२८	३४	४७	५७
३७	२८	३६	९	८	४६	५८	१८	१८
५९	७३०	१०	५	१४	७१	७	३	३
११	३७	३३	२	३१	३०	१८	११	११
-	-	व.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रेवती	हस्त	स्वा.	पू.भा.	रेवती	भर.	अश्वि.	आश्ले.	धनि.

आकाश लक्षण- मार्च १८,१९,२१,२३,२५,२६ एवं २९ को पूर्वी आसाम, पूर्वी बिहार, बंगाल, बर्मा, हि.प्र. एवं मध्यप्रदेश के कुछ भागों में बादलचाल एवं खण्डवृष्टि के योग हैं। उत्तरी भारत में मौसाम साफ रहे एवं तापमान बढ़ने लगे।

शुकुन विचार- यदि चैत्र शुक्ल पंचमी को वर्षा सहित दक्षिण-पूर्व की वायु चले तो उस वर्ष अनाजों में भयंकर तेजी बनती है,-'चैत्रस्य शुक्ल पञ्चम्यां वायुर्दक्षिण-पूर्वयोः। वृष्ट्या सह तदा वर्षे धान्ये त्रिगुणता भवेत् ॥'

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१,						वैशाख कृष्ण पक्ष २									तारीखें				चन्द्र राशि			चण्डीगढ़				उदय-कालिक				(१ से १६अप्रैल तक, सन् १९९९ ई.) उत्तरायण, उत्तर गोल, वसन्त ऋतु।
दि. मा.		तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		करण	समाप्ति काल		प्र.	अं.	श	मु	प्रवेश काल			भा.स्टैं.टा.				स्पष्ट सूर्य				ग्रह दर्शन - १६ अप्रैल को बुध प्रातः परम अन्तर (२७°) पर होगा। गुरु अस्त है। मंगल सूर्यास्त समय पूर्व में उदित होकर सारी रात दीखेगा । ९ अप्रैल को शनि पश्चिम में अस्त होगा। सायं शुक्र को पश्चिम में देखें।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	चैत्र	अप्र.	चैत्र.	ज़िल्हि.		घं.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सर्यास्त घ.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३०	५०	१	गु.	५९	२५	ह.	२६	३२	धु.	२३	०	बा.	२७	१५	१९	१	११	१३	तु.	५९	३६	६	१६	६	३६	११	१६	०	३०	अप्रैल प्रारम्भ,
३०	५५	२	शु.	६०	००	चि.	३२	४०	व्या.	२४	५	तै.	३२	०	२०	२	१२	१४	तुला			६	१५	६	३७	११	१७	५९	३९	बुध मार्गी २१/४०,
३१	०	२	श.	४	३५	स्वा.	३९	२५	ह.	२५	४२	ग.	४	३५	२१	३	१३	१५	तुला			६	१४	६	३८	११	१८	५८	४५	भ. ३७/३० बाद,
३१	५	३	र.	१०	२५	वि.	४६	४५	व.	२७	४८	वि.	१०	२५	२२	४	१४	१६	वृ.	२९	५५	६	१२	६	३८	११	१९	५७	५०	भ. १०/२५ तक, शुक्र कृत्तिका में २९/२०, शनि अश्वि. (A)
३१	१०	४	चं.	१६	३५	अनु.	५४	१५	सि.	३०	५	बा.	१६	३५	२३	५	१५	१७	वृश्चिक			६	११	६	३९	११	२०	५६	५३	
३१	१५	५	मं.	२२	४८	ज्ये.	६०	००	व्य.	३२	२०	तै.	२२	४८	२४	६	१६	१८	वृश्चिक			६	१०	६	४०	११	२१	५५	५४	
३१	२०	६	बु.	२८	३५	ज्ये.	१	३५	व.	३४	१८	व.	२८	३५	२५	७	१७	१९	ध.	१	३५	६	९	६	४१	११	२२	५४	५४	भ. २८/३५बाद, शुक्र वृष में १८/१२,
३१	२८	७	गु.	३३	३५	मू.	८	१८	प.	३५	३२	वि.	१	५	२६	८	१८	२०	धनु			६	७	६	४२	११	२३	५३	५२	भ. १/५ तक,
३१	३०	८	शु.	३७	८	पू.षा.	१३	४८	शि.	३५	४२	बा.	५	२१	२७	९	१९	२१	म.	२९	४७	६	६	६	४२	११	२४	५२	४८	शनि अस्त ९/२,
३१	३५	९	श.	३८	५२	उ.षा.	१७	४५	सि.	३४	३२	तै.	८	०	२८	१०	२०	२२	मकर			६	५	६	४३	११	२५	५१	४२	बुध मीन में ४७/०५,
३१	४०	१०	र.	३८	३८	श्र.	१९	४८	सा.	३१	४८	व.	८	४५	२९	११	२१	२३	कुं.	४९	४८	६	४	६	४४	११	२६	५०	३४	भ. ८/४५ से ३८ /३८ तक, पञ्चक प्रारम्भ ४९/४८,
३१	४५	११	चं.	३६	१८	ध.	१९	४८	शु.	२७	२५	ब.	७	२४	३०	१२	२२	२४	कुम्भ			६	३	६	४४	११	२७	४९	२५	गुरु रेवती २ में ४१/५२,श्री वल्लभाचार्य जयन्ती, (B)
३१	५०	१२	मं.	३१	५५	श.	१७	४५	शु.	२१	२२	कौ.	४	७	३१	१३	२३	२५	मी.	५९	५४	६	२	६	४५	११	२८	४८	१५	भौम प्रदोष व्रत,
३१	५२	१३	बु.	२५	५०	पू.भा.	१३	५८	ब्रं.	१३	५५	व.	२५	५०	वै.१	१४	२४	२६	मीन			६	०	६	४६	११	२९	४७	३	भ.२५/५० से ५२/८ तक,सं. सूर्य अश्विनी मेष (C)
३१	५८	१४	गु.	१८	१८	उ.भा.	८	३५	ऐं. वै.	५ ५५	११ २७	श.	१८	१८	२	१५	२५	२७	मीन			५	५९	६	४६	०	०	४५	४८	बुध उ.भा. में ०/४२, शुक्र रोहि. में ४८/४५ , विशु (केरल),
३२	३	३०	शु.	९	४२	रे. अ.	२ ५५	८ ०	वि.	४५	१०	ना.	९	४२	३	१६	२६	२८	मे.	२	८	५	५८	६	४७	०	१	४४	३२	पञ्चक समाप्त २/८, मेला पिञ्जौर (हरि.),

(A) ४ में २३/०, श्री गणेश चतुर्थी व्रत, (B) वरुथिनी एकादशी व्रत (स.), (C) में १३/१०, मु३०, पुण्यकाल सारा दिन, वैशाखी (पंजाब), डा. अम्बेदकर जयन्ती,

वैशाख कृष्ण ८ शुक्र, इष्ट ५८/३०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	९	६	१०	११	१	०	३	९
२५	५	१५	२९	१९	३	१०	२५	२५
५०	५६	१२	२९	२०	९	४१	१८	१८
१७	६	३१	२	३९	२	३३	४२	४२
५८	७६६	१६	३८	१४	७०	७	३	३
५५	१२	५३	३७	२८	४१	३१	११	११
-	-	व.	मा.	मा	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.	अ.

कुण्डली सूर्योदये

१ श.
१२ सू.गु.
११बु.
१० के.
शु. २
९चं.
३
रा. ४
६
८
५
मं. ७

लोक भविष्य- इस चान्द्रमास में पांच गुरुवार एवं पांच शुक्रवारों का होना पश्चिमी देशों में कहीं युद्धाग्नि को प्रज्वलित करेगा। भारत में सुख-समृद्धि रहे,- **'यत्र मासे पंचवाराः जायन्ते च बृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमे देशे खड्गयुद्धं च जायते॥'** पक्ष मध्य में वृष राशि का शुक्र सुभिक्ष, प्रजा में सुख का संकेत देता है, लेकिन शनि-मंगल का समसप्तक कहीं राजनैतिक-स्थिति को पेचीदा बनाए एवं कहीं राजनैतिक अशान्ति किंवा राजनैतिक हत्याकाण्ड से वातावरण क्षुब्ध हो।

ग्रहचाल और बाजार का रुख- रुई में पहले मन्दी, बाद में तेजी बने, चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी, गेहूं, जौ, चना आदि अनाज एवं अलसी एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूंगफली आदि तिलहन, तेलों एवं सम्बन्धित चीजों में तेजी बनेगी। [illegible] से १२ अप्रैल तक रुई,कपास, एवं शेयर बाजार मन्दे हों, तेल तिलहन एवं अनाज तेज रहें। १४ अप्रैल के लगभग तेल, तिलहन, सुपारी हींग, मेथी, [illegible] तेज रहे, चावल एवं [illegible] में कुछ मन्दा बने।

कुण्डली सूर्योदये

२शु.
१ सू.चं. श.
१२ बु. गु.
११
३
४ रा.
१० के.
९
५
७ मं.
६
८

वैशाख कृष्ण ३० शुक्र, इष्ट ५८/५३

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	०	६	११	११	१	०	३	९
२	१४	१३	५	२१	११	११	२४	२४
४२	१६	२	१२	१	२१	३४	५६	५६
८	५६	२२	३९	३६	४२	२९	२६	२६
५८	९१०	२०	६१	१४	६९	७	३	३
४२	६	३४	३१	२१	५७	३८	११	११
-	-	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.	अ.

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१,						वैशाख शुक्ल पक्ष ३									तारीखें				चन्द्र राशि			चण्डीगढ़				उदय-कालिक				(१७ से ३० अप्रैल तक, सन् १९९९ ई.) उत्तरायण, उत्तर गोल, वसन्त ग्रीष्म ऋतु।
दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	प्र. वैशा.	अं. अप्रैल	श. चैत्र	मु. जिल्हि.	प्रवेश काल	घ.	प.	भा.स्टैं.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन -२१ अप्रैल को गुरु सूर्योदय से पहिले पूर्व में दृश्य हो जाएगा। सायं मंगल पश्चिम में होगा। इस समय शुक्र को पश्चिम में और सूर्योदय से पहिले बुध को पूर्व में देखें। शनि अस्त है।
३२	८	१	श.	०	३५	भ.	४७	४८	प्री.	३५	४५	ब.	०	३५	४	१७	२७	२९	मेष			५	५७	६	४८	०	२	४३	१४	चन्द्र दर्शन मु. १५, श्री शिवाजी जयन्ती,
अवम		२	श.	५१	१८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वितीया तिथिक्षय,
३२	१३	३	र.	४२	२५	कृ.	४०	५२	आ.	२४	३०	तै.	१६	५२	५	१८	२८	१मु	वृ.	१	४	५	५६	६	४८	०	३	४१	५३	श्री परशुराम जयंती, अक्षय तृतीया, केदार बद्रीनाथ (A)
३२	१५	४	चं.	३३	५५	रो.	३४	४२	सौ.	१४	४५	व.	८	१०	६	१९	२९	२	वृष			५	५५	६	४९	०	४	४०	३१	भ.८/१०से ३३/५५तक,अगस्त्य अस्त,
३२	१७	५	मं.	२७	२२	मृ.	२९	४२	शो. अ.	५ ५८	५० २	ब.	०	३९	७	२०	३०	३	मि.	२	१२	५	५४	६	४९	०	५	३९	७	सूर्य सायन वृष में ३०/५५,ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ, (B)
३२	२२	६	बु.	२१	५०	आ.	२६	१०	सु.	५१	३०	तै.	२१	५०	८	२१	वै.१	४	मिथुन			५	५३	६	५०	०	६	३७	४१	शक वैशाख प्रारम्भ,गुरु उदित २५/०३,(C)
३२	२८	७	गु.	१७	५८	पुन.	२४	१८	धृ.	४६	२२	व.	१७	५८	९	२२	२	५	क.	९	४६	५	५२	६	५१	०	७	३६	१४	भ.१७/५८से ४६/५२ तक,श्री गंगा जन्म,
३२	३०	८	शु.	१५	४५	पु.	२४	२	शू.	४२	३५	ब.	१५	४५	१०	२३	३	६	कर्क			५	५१	६	५१	०	८	३४	४३	
३२	३५	९	श.	१५	१५	आश्ले.	२५	२८	गं.	४०	५	कौ.	१५	१५	११	२४	४	७	सिं.	२५	२८	५	५०	६	५२	०	९	३३	१०	गुरु बाल्य-समाप्त २५/०७, श्री जानकी जयन्ती, (गुरु उदित २१ अप्रैल)
३२	४०	१०	र.	१६	१५	म.	२८	२०	वृ.	३८	४२	ग.	१६	१५	१२	२५	५	८	सिंह			५	४९	६	५३	०	१०	३१	३५	भ.४७/२४ बाद,
३२	४५	११	चं.	१८	३२	पू.फा.	३२	२५	ध्रु.	३८	१८	वि.	१८	३२	१३	२६	६	९	क.	४८	४१	५	४८	६	५३	०	११	२९	५७	भ.१८/३२ तक,बुध रेव. में ३१/५०,गुरु रेव. ३ में (D)
३२	४७	१२	मं.	२१	५८	उ.फा.	३७	३०	व्या	३८	४०	बा.	२१	५८	१४	२७	७	१०	कन्या			५	४७	६	५४	०	१२	२८	१७	सूर्य भर. में ५३/८, शुक्र मृग. में २०/१८, भौम प्रदोष व्रत,
३२	५२	१३	बु.	२६	१५	ह.	४३	२५	ह.	३९	४२	तै.	२६	१५	१५	२८	८	११	कन्या			५	४६	६	५५	०	१३	२६	३६	श्री नृसिंह जयन्ती(प्रदोष व्यापिनी चतुर्दशी),
३२	५५	१४	गु.	३१	१२	चि.	४९	५५	व	४२	१	व.	३१	१२	१६	२९	९	१२	तु.	१६	४०	५	४५	६	५५	०	१४	२४	५३	भ. ३१/१२ बाद
३३	०	१५	शु.	३६	४०	स्वा.	५६	५२	सि.	४३	२	वि.	३	५६	१७	३०	१०	१३	तुला			५	४४	६	५६	०	१५	२३	८	भ. ३/५६ तक, शनि भर. में ४६/२०(E)

(A) यात्रा प्रारम्भ, मुहर्रम (हिजरी सन् १४२०) प्रारम्भ,(B), आद्य जगद्गुरु श्री शंकराचार्य जयंती,(C)श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती (उत्तर भारत),(D)४२/१२, मोहिनी एकादशी व्रत (स.),(E) वैशाखी पूर्णिमा, बुद्ध पूर्णिमा, श्री सत्यनारायण व्रत, श्री कूर्मजयन्ती, वैशाख स्नान समाप्त,

वैशा. शु. ८ शुक्र, इष्ट ५८।१०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	६	११	११	१	०	३	९
९	२४	१०	१३	२२	१९	१२	२४	२४
३२	१८	३१	१६	४१	२८	२७	३४	३४
२०	३९	४५	२१	३२	५७	५९	११	११
५८	७७१	२२	७८	१४	६९	७	३	३
२८	४४	२२	२३	१०	६	४०	११	११
-	-	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
३	३	२	३	२	३	४	३	२
अश्वि.	आर्द्रा	स्वा.	उ.भा.	रेवती	रो.	अश्वि.	आर्द्रा	धनि.

कुण्डली सूर्योदये

२ शु., गु.१२ बु, ३, सू. १ श., ११, ४ रा. चं., १० के., ५, ७ मं., ९, ६, ८

लोक भविष्य- मीन राशि में गुरु का उदय एवं शनि-मंगल का परस्पर दृष्टि सम्बन्ध कहीं युद्ध,भय, सत्तासंघर्ष एवं राजनैतिक-अस्थिरता का संकेत देता है। -'मीनेऽल्पवृष्टिरवनीश्वर-युद्ध योगः पीड़ा जनस्य मकरान्नरकानुरूपा॥' पक्षान्त में भरणी नक्षत्र का शनि जलयात्रा करने वाले व्यक्तियों के लिए कष्टप्रद है। कहीं अकस्मात् समुद्री तूफान से हानि हो।

ग्रहचाल और बाजार का रुख- पक्षारम्भ में रुई, सूत, सोना-चांदी, सरसों, मूंगफली आदि में अच्छी तेजी बने। २१ अप्रैल के लगभग व्यापारिक-वस्तुओं में तेजी बने। २६ अप्रैल के लगभग रुई में विशेष घटाबढ़ी हो। लाल चन्दन, कुसुम्भ, गेरु, लाल मिर्च में तेजी बने। पक्षान्त में गुड़, खाण्ड, शकर तेज रहें।

कुण्डली सूर्योदये

२ शु., बु.१२ गु., ३, १ सू. श., ११, ४ रा., १० के., ५, ७ चं.मं., ९, ६, ८

वैशा. शु. १५ शुक्र, इष्ट ५९/२५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	६	६	११	११	१	०	३	९
१६	२०	७	२३	२४	२७	१३	२४	२४
२०	२९	५४	८	२०	२९	२१	११	११
४९	२२	५३	७	३	४७	३९	५६	५६
५८	७१३	२२	९२	१३	६८	७	३	३
१४	४९	३	२६	५६	७	३९	११	११
-	-	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
२	२	२	२	३	२	२	३	२
भर.	विशा.	स्वा.	रेवती	रेवती	मृग.	भर.	आर्द्रा	धनि.

आकाश लक्षण- अप्रैल २६,२७ एवं ३० को राजस्थान, उत्तर प्रदेश, आसाम, महाराष्ट्र के किसी भाग एवं हि.प्र. में कहीं बादलचाल व वर्षा के योग हैं।

शुकन विचार- बैशाख शुक्ल पंचमी को यदि दिनभर बादल रहे, एवं मेघ गरजें तो भाद्रपद में धान्य महंगा हो। तुरन्त लाभ लें।

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१, **प्र. ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ४**

(१ से १५ मई तक, सन् १९९९ ई.)
उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु।

ग्रह दर्शन - १४ मई को बुध पूर्व में दीखना बन्द हो जाएगा। १५ मई को शनि पूर्व में दीखने लगेगा। सायं मंगल पूर्व में होगा। सायं शुक्र पश्चिम कपाल में देदीप्यमान, प्रातः शनि एवं गुरु पूर्व में होंगे ।

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति घ.	काल प.	नक्षत्र	समाप्ति घ.	काल प.	योग	समाप्ति घ.	काल प.	करण	समाप्ति घ.	काल प.	तारीखें प्र. वैशा.	अं. मई	श. वैशा.	मु. मुहर्रम	चन्द्र राशि प्रवेश काल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा.स्टैं.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सर्यास्त घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३३	५	१	श.	४२	३०	वि.	६०	००	व्य.	४५	३७	बा.	९	३५	१८	१	११	१४	वृ.	४७	२२	५	४३	६	५७	०	१६	२१	२१	मई दिवस, मई प्रारम्भ,
३३	७	२	र.	४८	३५	वि.	४	१२	व.	४७	३२	तै.	१५	३२	१९	२	१२	१५	वृश्चिक			५	४२	६	५७	०	१७	१९	३३	
३३	१२	३	चं.	५४	४०	अनु.	११	४०	प.	४९	५२	व.	२१	३७	२०	३	१३	१६	वृश्चिक			५	४१	६	५८	०	१८	१७	४१	भ.२१/३८ से ५४/४० तक, शुक्र मिथुन में ११/५८,
३३	१५	४	मं.	६०	००	ज्ये.	१९	२	शि.	५२	५	ब.	२७	३६	२१	४	१४	१७	ध.	१९	२	५	४०	६	५९	०	१९	१५	४८	वक्री मंगल चित्रा में २६/८, श्री गणेश चतुर्थी व्रत,
३३	२०	४	बु.	०	३२	मू.	२६	५	सि.	५३	५०	बा.	०	३२	२२	५	१५	१८	धनु			५	३९	६	५९	०	२०	१३	५५	बुध अश्वि. मेष में १८/०५,
३३	२२	५	गु.	३	१५	पू.षा.	३२	१८	सा.	५४	४८	तै.	३	१५	२३	६	१६	१९	म.	४८	३४	५	३९	७	०	०	२१	१२	०	नेपच्यून वक्री ५६/२८,
३३	२८	६	शु.	९	५५	उ.षा.	३७	२५	शु.	५४	४८	ब.	९	५५	२४	७	१७	२०	मकर			५	३८	७	१	०	२२	१०	४	भ.९/५५ से ४१/१८ तक,
३३	३०	७	श.	१२	४०	श्र.	४१	०	शु.	५३	२८	व.	१२	४०	२५	८	१८	२१	मकर			५	३७	७	१	०	२३	८	६	
३३	३५	८	र.	१३	३५	ध.	४२	४२	ब्र.	५०	३८	कौ.	१३	३५	२६	९	१९	२२	कुं.	११	५१	५	३६	७	२	०	२४	६	७	पञ्चक प्रारम्भ ११/५१, शुक्र आर्द्रा में ८/२५, जन्मदिन (A)
३३	३७	९	चं.	१२	३२	श.	४२	२२	ऐ.	४६	८	ग.	१२	३२	२७	१०	२०	२३	कुम्भ			५	३५	७	३	०	२५	४	८	भ.४०/५६ बाद,
३३	४२	१०	मं.	९	२२	पू.भा.	४०	०	वै.	३९	५८	वि.	९	२२	२८	११	२१	२४	मीं.	२५	३६	५	३५	७	३	०	२६	२	७	भ ९/२२ तक, सूर्य कृत्तिका में ३९/८, गुरु रेवती ४ में (B)
३३	४५	११	बु.	४	१५	उ.भा.	३५	५०	वि.	३२	१८	बा.	४	१५	२९	१२	२२	२५	मीन			५	३४	७	४	०	२७	०	५	बुध भरणी में ४७/४०, अपरा एकादशी व्रत (वै.) (C)
अवम		१२	बु.	५७	२२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वादशी तिथिक्षय
३३	४८	१३	गु.	४९	८	रे.	३०	५	प्री.	२३	२०	ग.	२३	१५	३०	१३	२३	२६	मे.	३०	५	५	३३	७	५	०	२७	५८	०	भ. ४९/८ बाद, पञ्चक समाप्त ३०/५, प्रदोष व्रत,
३३	५३	१४	शु.	३९	५०	अ.	२३	८	आ.	१३	१८	वि.	१४	२९	३१	१४	२४	२७	मेष			५	३३	७	५	०	२८	५५	५५	भ. १४/२९ तक, बुध पूर्व में अस्त १०/२०,
३३	५५	३०	श.	३०	५	भ.	१५	३२	सौ. शो.	२ ५१	४२ ५०	च.	४	५७	ज्ये.१	१५	२५	२८	वृ.	२८	३३	५	३२	७	६	०	२९	५३	४९	सूर्य वृष में ६/२०, मु. १५, पुण्यकाल २२/२०तक, (D)

(A) श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर, (B) १०/२५, अपरा एकादशी व्रत (स्मा.), भद्रकाली एकादशी (पंजाब), (C) त्रिस्पृशा महाद्वादशी, (D) शनि उदित ३८/४०, वट सावित्री व्रत (अमा पक्ष), भावुका अमावस, शनैश्चरी अमा,

प्र.ज्येष्ठ कृष्ण ८ रवि, इष्ट ५९/४५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	१०	६	०	११	२	०	३	९
२५	१०	४	८	२६	७	१४	२३	२३
३	२४	४७	८	२४	३७	३०	४३	४३
५६	४४	४१	३५	०	५	११	२०	२०
५८	८१२	१८	१०९	१३	६६	७	३	३
१	५१	३९	३५	३४	३८	३४	११	११
-	-	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.

कुण्डली सूर्योदये

२
१२गु.
३ शु.
बु.१ सू.श.
११
४ रा.
१०चं. के.
५
७ मं.
९
६
८

लोक भविष्य- इस पक्ष में मिथुन राशि का शुक्र खाद्य एवं अन्य दैनिक जनजीवनोपयोगी वस्तुओं में मंहगाई से जनता में रोष करे। चित्रा नक्षत्र का मंगल जनता में विशेष प्रकार के रोगों से कष्ट का संकेत देता है। इस मास में ५ शनिवार होने से कहीं भूकम्प से भारी हानि, कहीं भयंकर अग्निकाण्ड से जनधन हानि का संकेत मिलता है- **'शनेश्च पंचकं दृष्ट्वा पाताले कम्पते फणी। ईशानदेश-भंगश्च वह्निदाहो महर्घता ॥'**

ग्रहचाल और बाजार का रुख- पक्षारम्भ में रुई, कपास, सूत, वारदाना, एरण्ड, तिल, तेल, सरसों, अरहर गुआर आदि में काफी मन्दा बने। अनाज तेज रहें। ४ मई के लगभग चांदी, तांबा, पीतल, सोना तेज हों। ९ मई के लगभग अनाजों में अचानक मन्दा आ सकता है। वायदा व्यापारी १४ मई को सावधानी से काम करें अन्यथा हानि रहे।

कुण्डली सूर्योदये

३शु.
१बु.श. चं.
४ रा.
सू. २
१२ गु.
५
११
६
८
१० के.
मं.७
९

प्र. ज्येष्ठ कृष्ण ३० शनि, इष्ट ५९/५५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	६	०	११	२	०	३	९
०	७	३	१९	२७	१४	१५	२३	२३
५१	५८	४	३४	४४	१४	१५	२४	२४
३८	५७	४४	२८	३४	८	३५	१५	१५
५७	११४	१४	१२०	१३	६५	७	३	३
५२	३९	५२	४९	१४	३०	२८	११	११
-	-	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

आकाश लक्षण- मई ३.४.५.९.११.१५ को बम्बई, भूटान, बंगाल, बिहार में वर्षा के योग हैं, उत्तरी भारत में तापमान ऊंचा रहे। १४ मई

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१,	प्र.(अधि.) ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ५	तारीखें	चन्द्र राशि	चण्डीगढ़	उदय-कालिक	(१६से ३० मई तक, सन् १९९९ ई.) उत्तरायण,उत्तर गोल,ग्रीष्म ऋतु।

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	प्र. ज्येष्ठ	अं. मई	श. ज्येष्ठ शा.	मु. मुहर्रम	चन्द्र राशि प्रवेश काल	घ.	प.	भा.स्टैं.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन - बुध अस्त है। सायं मंगल पूर्व में होगा। प्रातः शनि एवं गुरु पूर्व में होंगे। शुक्र को सायं पश्चिम में देखें।
३३	५८	१	र.	२०	१८	कृ.	७	४८	अ.	४१	८	ब.	२०	१८	२	१६	२६	२९	वृष			५	३१	७	७	१	०	५१	४१	चन्द्र दर्शन मु.४५,पुरुषोत्तम(मल,अधिक)मासारम्भ,
३४	०	२	चं.	१०	५५	रो. मृ.	० ५३	१८ ३८	सु.	३०	५२	कौ.	१०	५५	३	१७	२७	स.१	मि.	२६	५८	५	३१	७	७	१	१	४९	३३	राहु आश्ले २,केतु श्रव.४में २०/२५, सफर मु.प्रारम्भ,
३४	५	३	मं.	२	२५	आ.	४८	१५	धृ.	२१	३५	ग.	२	२५	४	१८	२८	२	मिथुन			५	३०	७	८	१	२	४७	२२	भ.२८/४८ से ५५/१२ तक,
अवम		४	मं.	५५	१२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी तिथिक्षय,
३४	७	५	बु.	४९	३५	पुन.	४४	२२	शू.	१३	२५	ब.	२२	२४	५	१९	२९	३	क.	३०	२०	५	३०	७	८	१	३	४५	१०	बुध कृति. में २७/४२,
३४	१०	६	गु.	४५	५२	पु.	४२	२५	गं.	६	४२	कौ.	१७	४३	६	२०	३०	४	कर्क			५	२९	७	९	१	४	४२	५५	
३४	१२	७	शु.	४४	५	आश्ले.	४२	२०	वृ. ध्रु.	१ ५७	३० ५२	ग.	१४	५८	७	२१	३१	५	सिं.	४२	२०	५	२९	७	१०	१	५	४०	३९	भ.४४/५बाद, बुध वृष में २/२०,यूरेनस वक्री ५४/३०, (A)
३४	१५	८	श.	४४	१५	म.	४४	१०	व्या	५५	४८	वि.	१४	१०	८	२२	ज्ये.१	६	सिंह			५	२८	७	१०	१	६	३८	२२	भ. १४/१० तक, शक ज्येष्ठ प्रारम्भ,
३४	१८	९	र.	४६	८	पू.फा.	४७	४०	ह.	५५	०	बा.	१५	१२	९	२३	२	७	सिंह			५	२८	७	११	१	७	३६	३	
३४	२०	१०	चं.	४९	२८	उ.फा.	५२	३८	व.	५५	२०	तै.	१७	४८	१०	२४	३	८	क.	३	५४	५	२७	७	१२	१	८	३३	४३	श्री गंगादशहरा,
३४	२२	११	मं.	५३	५५	ह.	५८	३८	सि.	५६	३०	व.	२१	४१	११	२५	४	९	कन्या			५	२७	७	१२	१	९	३१	२१	भ. २१/४२से ५३/५५ तक, सूर्य रोहि. में २९/४५,बुध (B)
३४	२५	१२	बु.	५९	१२	चि.	६०	००	व्य.	५८	१८	ब.	२६	२८	१२	२६	५	१०	तु.	३२	२	५	२६	७	१३	१	१०	२८	५७	गुरु अश्विनी १ मेष में २७/३०,
३४	२८	१३	गु.	६०	००	चि.	५	२५	व.	६०	००	कौ.	३२	०१	१३	२७	६	११	तुला			५	२६	७	१३	१	११	२६	३२	शनि भर. २ में २९/२, प्रदोष व्रत,
३४	३०	१३	शु.	५	२	स्वा.	१२	३५	व.	०	२५	तै.	५	२	१४	२८	७	१२	तुला			५	२६	७	१४	१	१२	२४	६	
३४	३२	१४	श.	१०	५२	वि.	१९	५८	प.	२	४५	व.	१०	५२	१५	२९	८	१३	वृ.	३	१०	५	२५	७	१५	१	१३	२१	३९	भ.१०/५२ से ४३/५१ तक,श्री सत्यनारायण व्रत,
३४	३५	१५	र.	१६	५०	अनु.	२७	१८	शि.	५	५	ब.	१६	५०	१६	३०	९	१४	वृश्चिक			५	२५	७	१५	१	१४	१९	११	शुक्र कर्क में ४९/१५,

(A) सूर्य सायन मिथुन में २९/४२,शुक्र पुन. में १९/५, **(B)** रोहि. में ३८/५५,पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत (स.),

प्र.(अधि.)ज्येष्ठ शुक्र.८ शनि,इष्ट०/६

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	६	१	११	२	०	३	९
६	३	१	२	२९	२०	१६	२३	२३
३८	३०	४६	३	३	४३	०	५	५
२६	३८	४६	२६	७	४९	७	११	११
५७	७९०	१०	१२१	१२	६४	७	३	३
४२	३०	१७	३८	५२	७	२०	११	११
-	-	व.	मा.	मा	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३ कृ.	२ मघा	३ चित्रा	२ कृ.	४ रेवती	१ पुन.	१ भर.	२ आश्ले.	४ श्रव.

कुण्डली सूर्योदये

३शु.
२ सू. बु.
१श.
४ रा.
१२ गु.
११
५ चं.
६
८
१० के.
७ मं.
९

लोक भविष्य-ज्येष्ठ अधिक मास होने से कहीं विशिष्ट राजनीतिज्ञ के अपदस्थ होने व मृत्यु से शोक व्याप्त हो-
'ज्येष्ठ द्वये नृपध्वंसो धान्यनिष्पत्तिरुत्तमा।' धान की उत्पत्ति अच्छी हो। पक्षान्त में मेष राशि का गुरु प्रजा में सुभिक्ष, क्षेम आरोग्य करता है-
'यदा सुरगुरुर्मेषे सुखं सर्वजनेषु च। सुभिक्षं क्षेममारोग्यं सुखिनी मेदिनी भवेत्॥' परन्तु शनि के साथ मंगल का दृष्टि संबंध होने से रोग, एवं महंगाई विशेष मालूम देती है।
ग्रहचाल और बाजार का रुख- पक्षमध्य में (२१ मई के लगभग) प्रायः सभी वस्तुओं में घटाबढ़ी चले। गेहूं, जौ, चना, चावल, कपास, सूत, तिलहन एवं तेलों में तेजी रहे। २६ मई के लगभग गुरु के मेष राशि में आने पर ६०/७० रूपये की घटाबढ़ी रई में बनेगी। सोना-चांदी,तांबा, गुड़ आदि में भी मन्दे के आसार बन कर बाजार ऊपर नीचे रहे। मन्दे में खरीदें, तेजी में बेचें।

कुण्डली सूर्योदये

३ शु.
२सू. बु.
गु.१ श.
४ रा.
१२
५
११
६
८ चं.
१० के.
मं.७
९

आकाश लक्षण- मई १७,१९,२१,२६,२७,३० को महाराष्ट्र(बम्बई),बंगाल, आसाम, आदि में कहीं भारी वर्षा हो। कहीं भारी वायुवेग से हांनि भी संभव है।
शकुन विचार- यदि टटीहरी पक्षी सूखे गोबर, सूखा घास या हड्डियों के ढेर, में अण्डे दे तो पशुओं का नाश हो, अकाल, महामारी से जनता कष्ट पाए।

प्र.(अधि.)ज्येष्ठ शुक्ल१५ रवि, इष्ट ०/१२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	७	६	१	०	२	०	३	९
१४	११	०	१९	०	२९	१६	२२	२२
१९	१६	४७	३२	४४	९	५७	३९	३९
२२	५५	९	१६	१२	२०	५९	४४	४४
५७	७१३	३	१२१	१२	६१	७	३	३
३२	२४	४८	५२	१९	५३	६	११	११
-	-	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२ रो.	३ अनु.	३ चित्रा	३ रो.	१ अश्वि.	३ पुन.	२ भर.	२ आश्ले.	४ श्रव.

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१,							द्वि.(अधि.)ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ६								तारीखें				चन्द्र राशि			चण्डीगढ़				उदय-कालिक				(३१मई से १३ जून तक, सन् १९९९ ई.) उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु।
दि. मा.		तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		करण	समाप्ति काल		प्र.	अं.	श.	मु.	प्रवेश काल			भा.स्टैं.टा.				स्पष्ट सूर्य				ग्रह दर्शन - ७ जून को बुध सायंकाल पश्चिम में दीखने लगेगा। २१ जून के लगभग सायं शुक्र सूर्य से परमाधिक अन्तर (लगभग ४६°)पर होगा। सायं मंगल खमध्य की ओर आता दीखेगा। प्रातः गुरु एवं शनि पूर्व में होंगे ।
															ज्येष्ठ	मई	ज्येष्ठ	सफर				सूर्योदय		सर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३४	३५	१	चं.	२२	४०	ज्ये.	३४	३०	सि.	७	२२	कौ.	२२	२८	१७	३१	१०	१५	ध.	३४	३०	५	२५	७	१५	१	१५	१६	४२	बुध मृग. में ४५/४२,
३४	३८	२	मं.	२८	८	मू.	४१	२०	सा.	९	२५	ग.	२८	८	१८	जून१	११	१६	धनु			५	२५	७	१६	१	१६	१४	११	जून प्रारम्भ,
३४	३८	३	बु.	३३	२	पू.षा.	४७	३५	शु.	११	२	व.	०	३५	१९	२	१२	१७	धनु			५	२५	७	१६	१	१७	११	३९	भ.०/३५ से ३३/२ तक,
३४	४२	४	गु.	३७	१०	उ.षा.	५३	२	शु.	१२	१०	ब.	५	६	२०	३	१३	१८	म.	३	५७	५	२४	७	१७	१	१८	९	७	बुध मिथुन में ५६/१८, शुक्र पुष्य में ५/१० (A)
३४	४२	५	शु.	४०	१०	श्र.	५७	१८	ब्र.	१२	३२	कौ.	८	४०	२१	४	१४	१९	मकर			५	२४	७	१७	१	१९	६	३४	मंगल मार्गी १६/०,
३४	४५	६	श.	४१	४५	ध.	६०	००	ऐं.	११	५५	ग.	१०	५७	२२	५	१५	२०	कुं.	२८	४२	५	२४	७	१८	१	२०	४	०	भ. ४१/४५ बाद, पञ्चक प्रारम्भ २८/४२,
३४	४५	७	र	४१	४५	ध.	०	८	वै.	१०	५	वि.	११	४५	२३	६	१६	२१	कुम्भ			५	२४	७	१८	१	२१	१	२५	भ.११/४५ तक,
३४	४८	८	चं.	३९	५५	श.	१	२०	वि.	६	५५	बा.	१०	५०	२४	७	१७	२२	मी.	४५	५३	५	२४	७	१९	१	२१	५८	५०	बुध आर्द्रा में १६/५२, बुध पश्चिम में उदित ५२/१५,
३४	४८	९	मं.	३६	१८	पू.भा. उ.भा.	० ५८	४५ २०	प्री. आ.	२ ५६	१८ १०	तै.	८	७	२५	८	१८	२३	मीन			५	२४	७	१९	१	२२	५६	१५	सूर्य मृग. में २४/४५,
३४	५२	१०	बु.	३०	५५	रे.	५४	१८	सौ.	४८	४२	व.	३	३६	२६	९	१९	२४	मे.	५४	१८	५	२३	७	२०	१	२३	५३	३९	भ. ३/३६ से ३०/५५ तक, पञ्चक समाप्त ५४/१८,
३४	५२	११	गु.	२४	०	अ.	४८	४५	शो.	४०	२	बा.	२४	०	२७	१०	२०	२५	मेष			५	२३	७	२०	१	२४	५१	२	पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत (स॰),
३४	५५	१२	शु.	१५	५०	भ.	४२	१२	अ.	३०	२५	तै.	१५	५०	२८	११	२१	२६	वृ.	५५	२३	५	२३	७	२१	१	२५	४८	२५	प्रदोषव्रत,
३४	५५	१३	श.	६	४८	कृ.	३४	५८	सु.	२०	१०	व	६	४८	२९	१२	२२	२७	वृष			५	२३	७	२१	१	२६	४५	४७	भ.६/४८से ३२ / ४ तक, गुरु अश्वि.२ में १०/१८,
अवम		१४	श.	५७	२०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय,
३४	५५	३०	र.	४७	५२	रो.	२७	३२	धृ. शू.	९ ५९	३८ १२	च.	२२	३६	३०	१३	२३	२८	मि.	५३	५९	५	२३	७	२१	१	२७	४३	९	पुरुषोत्तम (मल) मास समाप्त,

(A) श्री गणेश चतुर्थी व्रत,

द्वि.(अधि.) ज्येष्ठ कृ.८चन्द्र,इष्ट०/१५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१०	६	२	०	३	०	३	९
२१	१९	०	६	२	७	१७	२२	२२
५९	४४	३९	७	२०	१५	५३	४	४
६	५६	४	४१	३३	९	४१	१८	१८
५७	८०७	२	११५	११	५९	६	३	३
२५	४८	३१	२७	४१	७	४७	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

कुण्डली सूर्योदये

बु. ३
१ गु. श.
शु.४ रा.
सू.२
१२
११ चं.
५
६
८
१० के.
७ मं.
९

लोक भविष्य-मंगल मार्गी होकर वर्षा से कहीं भारी हानि करे लेकिन बहुत से क्षेत्र वर्षा के अभाव से आगे सूखाग्रस्त भी घोपित हो सकते हैं। पक्षमध्य में बुध का मिथुन में उदय अनावृष्टि का संकेत देता है। फिर भी इस मास में पांच चन्द्रवार होने से जनता में विशेष निराशाजनक स्थिति न बने, शासन समुचित प्रवन्ध करे।- 'सोमस्य पंचवारास्तु यत्र मासे भवन्ति हि। धनधान्य समृद्धिःस्यात्सुखं भवति सर्वदा॥'

ग्रहचाल और बाजार का रुख- ४जून के लगभग (तीन दिन के बाद) रुई में बहुत मन्दा संभावित है, तेल, चांदी में तेजी बने। वायदा बाजार का रुख बदले, यदि पहले मन्दा है तो तेजी, यदि बाजार तेज हैं तो मन्दा आएगा। ७ जून के लगभग रुई व शेयर बाजार में १५ दिन में भारी मन्दा संभावित है। पक्षान्त में रुई में तेजी, सोना चांदी में घटाबढी के बाद मन्दा बने।

कुण्डली सूर्योदये

३ बु.
१ गु. श.
शु.४ रा.
सू. २ चं.
१२
५
११
६
८
१० के.
७ मं.
९

द्वि.(अधि.)ज्येष्ठ कृ.३०रवि, इष्ट०/१७

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	६	२	०	३	०	३	९
२७	१६	१	१७	३	१३	१८	२१	२१
४३	२४	५	४	२९	३	३३	५५	५५
२६	३३	२५	१०	१८	४५	४३	१३	१३
५७	९१९	६	१००	११	५६	६	३	३
२१	१३	५८	४०	८	३५	३०	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

आकाश लक्षण- जून ४,५,७,८,११ को सिक्किम, भूटान, शिलांग, आसाम, एवं महाराष्ट्र में ... की स्थिति बने, उत्तरी भारत में कहीं बूंदाबांदी व बादलचाल से तापमान गिरे।

शकुन विचार- टटीहरी पक्षी यदि अपने अण्डे ऊंची भूमि पर धरे तो वर्षा बहुत हो, नीचे धरे तो वर्षा बहुत कम हो, यदि अण्डे नदी, तालाब

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१, द्वि- (शुद्ध) ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ७															तारीखें				चन्द्र राशि			चण्डीगढ़				उदय-कालिक				(१४ से २८ जून तक, सन् १९९९ ई.) उत्तर-दक्षिणायन ,उत्तर गोल, ग्रीष्म-वर्षा ऋतु।
दि. मा.		तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		करण	समाप्ति काल		प्र.	अं.	श.	मु.	प्रवेश काल			भा.स्टैं.टा.				स्पष्ट सूर्य				ग्रह दर्शन - सायं मंगल खमध्यासन्न होगा, प्रातः शनि एवं गुरु पूर्व में होंगे । सायं बुध एवं शुक्र को पश्चिम में देखें ।
															ज्येष्ठ	जून	ज्येष्ठ	सफर				सूर्योदय		सर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३४	५८	१	चं.	३८	५५	मृ.	२०	२५	गं.	४९	१५	किं.	१३	२४	३१	१४	२४	२९	मिथुन			५	२३	७	२२	१	२८	४०	३१	बुध पुन. में ४६/०२,
३४	५८	२	मं.	३०	४८	आ.	१४	०	वृ.	४०	८	बा.	४	४६	आषा१	१५	२५	३०	क.	५५	३	५	२३	७	२२	१	२९	३७	५२	चन्द्र दर्शन मु.४५ ,सं.सूर्य मिथुन में २३/८,मु.४५, पुण्यकाल ७/७बाद,
३४	५८	३	बु.	२३	५८	पुन.	८	४५	ध्रु.	३२	५	ग.	२३	५८	२	१६	२६	र.उ. अ१	कर्क			५	२४	७	२२	२	०	३५	११	भ. ५१/२२ बाद, शुक्र आश्ले. में ५२/२०,रम्भाव्रत (A)
३४	५८	४	गु.	१८	४५	पु.	५	५	व्या.	२५	२८	वि.	१८	४५	३	१७	२७	२	कर्क			५	२४	७	२३	२	१	३२	३०	भ. १८/ ४५ तक, बलिदान दिन गुरु श्री अर्जुन देव जी,
३४	५८	५	शु.	१५	२८	आश्ले.	३	१५	ह.	२०	२२	बा.	१५	२८	४	१८	२८	३	सिं.	३	१५	५	२४	७	२३	२	२	२९	४९	
३४	५८	६	श.	१४	८	म.	३	२०	व.	१६	५२	तै.	१४	८	५	१९	२९	४	सिंह			५	२४	७	२३	२	३	२७	७	भ. १४/८ से ४४/२६ तक, अरण्यषष्ठी, विन्ध्यवासिनी पूजा,
३५	०	७	र.	१४	४५	पू.फा.	५	२५	सि.	१४	५८	व.	१४	४५	६	२०	३०	५	क.	२१	२३	५	२४	७	२४	२	४	२४	२४	
३५	०	८	चं.	१७	१२	उ.फा.	९	१५	व्य.	१४	२८	ब.	१७	१२	७	२१	३१	६	कन्या			५	२४	७	२४	२	५	२१	४०	सूर्य सायन कर्क में ४९/४८, (B)
३५	०	९	मं.	२१	८	ह.	१४	३५	व.	१५	८	कौ.	२१	८	८	२२	आ.१	७	तु.	४७	४७	५	२४	७	२४	२	६	१८	५५	सूर्य आर्द्रा में २२/२,शक आषाढ़ प्रारम्भ,
३४	५८	१०	बु.	२६	८	चि.	२१	००	प.	१६	४०	ग.	२६	८	९	२३	२	८	तुला			५	२५	७	२४	२	७	१६	१०	भ. ५८/५९ बाद,
३४	५८	११	गु.	३१	५०	स्वा.	२८	८	शि.	१८	४५	वि.	३१	५०	१०	२४	३	९	तुला			५	२५	७	२४	२	८	१३	२५	भ.३१/५० तक, बुध पुष्य में १०/५०,निर्जला एकादशी व्रत (स.),
३४	५८	१२	शु.	३७	४८	वि.	३५	३२	सि.	२१	८	ब.	४	४९	११	२५	४	१०	वृ.	१८	४१	५	२५	७	२४	२	९	१०	३९	चम्पक द्वादशी,
३४	५८	१३	श.	४३	३८	अनु.	४२	५५	सा.	२३	५	कौ.	२०	४३	१२	२६	५	११	वृश्चिक			५	२५	७	२५	२	१०	७	५२	शनि प्रदोष व्रत,
३४	५८	१४	र.	४९	१२	ज्ये.	४९	५२	शु.	२५	४०	ग.	१६	२५	१३	२७	६	१२	ध.	४९	५२	५	२६	७	२५	२	११	५	५	भ. ४९/१२ बाद,शनि भर.३ में ०/५५,
३४	५८	१५	चं.	५४	१२	मू.	५६	२२	शु.	२७	२८	वि.	२१	४२	१४	२८	७	१३	धनु			५	२६	७	२५	२	१२	२	१८	भ.२१/४२तक,श्री सत्यनारायण व्रत, वटसावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष),

(A) (देखें पृ.97) , प्रताप जयंती (राजस्थान),रवी उल अब्वल मु.प्रा.,(B),दक्षिणायन, वर्षा ऋतु प्रारम्भ,बुध कर्क में ३२/३०, नेपच्यून उ.षा. ४ में ४३/८,

द्वि.(शुद्ध) ज्येष्ठ शुक्ल ८ चन्द्र, इष्ट ०/१५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	६	२	०	३	०	३	९
५	८	२	२९	४	२०	१९	२१	२१
२१	७	२०	१६	५५	२२	२४	१६	१६
५४	४०	३३	४८	३४	४	१९	४७	४७
५७	७३७	१२	७९	१०	५२	६	३	३
१५	१४	२२	३५	१९	१४	५	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४	४	३	३	२	२	२	२	४
मृग.	उ.फा.	चित्रा	पुन.	आश्ले.	आश्ले.	भर.	आश्ले.	श्रव.

कुण्डली सूर्योदये

४ रा. शु.
सू. ३ बु.
२
५
गु.१ श.
६ चं.
१२
७ मं.
९
११
८
१० के.

लोक भविष्य- मिथुन राशि के सूर्य पर शनि की विशेष दृष्टि है। किसी राजनीतिज्ञ को विशेष कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़े। कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बने, कहीं बाढ़ आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि भी हो । ध्यान दें- शनि मंगल का दृष्टि-सम्बन्ध मेष, मिथुन, तुला एवं मकर प्रभाव राशि वाले राष्ट्रों में विशेष कठिन सामाजिक, धार्मिक एवं राजनैतिक परिस्थितियों को जन्म देगा।

ग्रहचाल और बाजार का रुख- पक्षारम्भ में वारदाना, रेशम, सूत, कपास, रुई, सरसों, लोहा, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, घी, मूंग, उड़द, चना, गेहूं, चावल आदि प्रत्येक जाति के अनाज तेज हों । सोना चांदी में भी तेजी का रुख रहे। पक्षमध्य में रुई में मन्दे का झटका आए। गुड़, तेल, मूंगफली एवं सरसों में कुछ तेजी के बाद मन्दा आए। पक्षान्त में कपास, गुड़ , खाण्ड, घी एवं तेल तेज होंगे ।

कुण्डली सूर्योदये

बु.४शु. रा.
सू. ३
२
५
गु.१ श.
६
१२
७ मं.
९ चं.
११
८
१० के.

द्वि. (शुद्ध)ज्येष्ठ शुक्ल १५चन्द्र, इष्ट ०/१०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	८	६	३	०	३	०	३	९
१२	२	३	७	६	२६	२०	२१	२१
२	२	५९	३३	५	१३	५	७	७
२७	३६	४४	२९	२६	३०	३८	३१	३१
५७	७२२	१६	५८	८	४७	५	३	३
१२	४३	२७	४९	५१	१५	३९	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२	२	४	२	२	३	३	२	४
आर्द्रा	मूल	चित्रा	पुष्य	आश्ले.	आश्ले.	भर.	आश्ले.	श्रव.

आकाश लक्षण- जून १४,१५,२१,२२,२७ को भूटान, शिलांग एवं बंबई के कुछ भागों में जोरदार वर्षा हो। उत्तरी भारत पंजाब, हरियाणा एवं हि.प्र. में भी अनेकत्र बादल चाल व वायु वर्षा के योग हैं।

शकुन विचार- ज्ये[illegible] में लाभ हो ।

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१, आषाढ़ कृष्ण पक्ष ८ | **तारीखें** | **चन्द्र राशि** | **चण्डीगढ़** | **उदय-कालिक**

(२१जून से १३ जुलाई तक, सन् १९९९ ई.)
दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु।

ग्रह दर्शन - २ जुलाई को बुध का सायं पश्चिम में सूर्य से परम अन्तर होगा। सायं शुक्र पश्चिम में चमकता दीखेगा। इस समय मंगल पूर्व में होगा। सूर्योदय से पहिले शनि एवं गुरु पूर्व में देखे जा सकेंगे ।

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति घ.	काल प.	नक्षत्र	समाप्ति घ.	काल प.	योग	समाप्ति घ.	काल प.	करण	समाप्ति घ.	काल प.	प्र. आषा.	अं. जून	श. आषा.	मु. उ.जु.	चन्द्र राशि प्रवेश काल	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३४	५८	१	मं.	५८	३०	पू.षा.	६०	००	ब्र.	२८	४८	बा.	२६	२१	१५	२९	८	१४	धनु			५	२६	७	२५	२	१२	५९	३१	
३४	५५	२	बु.	६०	००	पू.षा.	२	८	ऐं.	३०	११	तै.	२९	१५	१६	३०	९	१५	म.	१८	२२	५	२७	७	२५	२	१३	५६	४३	
३४	५५	२	गु.	१	५२	उ.षा.	७	५	वै.	२९	२५	ग.	१	५२	१७	जु.१	१०	१६	मकर			५	२७	७	२५	२	१४	५३	५४	भ.३३/६बाद, गुरु अश्विनी ३ में ४१/१८,जुलाई प्रारम्भ,
३४	५५	३	शु.	४	२०	श्र.	११	२	वि.	२८	३५	वि.	४	२०	१८	२	११	१७	कुं.	४२	२९	५	२७	७	२५	२	१५	५१	५	भ.४/२० तक, पञ्चक प्रारम्भ ४२/२९, शुक्र मघा सिंह (A)
३४	५२	४	श.	५	३८	ध.	१३	५५	प्री.	२६	४८	बा.	५	३८	१९	३	१२	१८	कुम्भ			५	२८	७	२५	२	१६	४८	१७	
३४	५२	५	र.	५	४२	श.	१५	३०	आ.	२४	२	तै.	५	४२	२०	४	१३	१९	कुम्भ			५	२८	७	२५	२	१७	४५	२९	
३४	५०	६	चं.	४	२५	पू.भा.	१५	५०	सौ.	२०	१०	व.	४	२५	२१	५	१४	२०	मी.	०	४५	५	२९	७	२५	२	१८	४२	४१	भ. ४/२५ से ३३/५ तक
३४	५०	७	मं.	१	४५	उ.भा.	१४	४८	शो.	१५	१०	ब.	१	४५	२२	६	१५	२१	मीन			५	२९	७	२५	२	१९	३९	५४	सूर्य पुनर्वसु में २१/०, मंगल स्वाती में ४०/५५,
अवम		८	मं.	५७	४२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०			०	०	०	०	०	०	०	०	अष्टमी तिथिक्षय,
३४	४८	९	बु.	५२	१८	रे.	१२	१५	अ.	९	०	तै.	२५	०	२३	७	१६	२२	मे.	१२	१५	५	३०	७	२५	२	२०	३७	७	पञ्चक समाप्त १२/१५
३४	४५	१०	गु.	४५	४८	अ.	८	३२	सु. धृ.	१ ५३	५० ४५	व	११	३	२४	८	१७	२३	मेष			५	३०	७	२४	२	२१	३४	२०	भ. १९/३ से ४५/४८ तक,
३४	४२	११	शु.	३८	१८	भ. कृ.	३ ५८	४२ २	शू.	४४	५५	ब.	१२	३	२५	९	१८	२४	वृ.	१७	१७	५	३१	७	२४	२	२२	३१	३४	योगिनी एकादशी व्रत (स.),
३४	४२	१२	श.	३०	१५	रो.	५१	५५	गं.	३५	३५	कौ.	४	१७	२६	१०	१९	२५	वृष			५	३१	७	२४	२	२३	२८	४८	शनि प्रदोष व्रत,
३४	४०	१३	र.	२१	५२	मृ.	४५	३८	वृ.	२६	२	व.	२१	५२	२७	११	२०	२६	मि.	१८	४६	५	३२	७	२४	२	२४	२६	३	भ., २१/५२ से ४७/४६ तक,
३४	४०	१४	चं.	१३	४०	आ.	३९	३८	ध्रु.	१६	४०	श.	१३	४०	२८	१२	२१	२७	मिथुन			५	३२	७	२४	२	२५	२३	१८	बुध वक्री ५८/३५,
३४	३५	३०	मं.	५	५२	पुन.	३४	१५	व्या. ह.	७ ५९	३८ २०	ना.	५	५२	२९	१३	२२	२८	क.	२०	३६	५	३३	७	२३	२	२६	२०	३३	भौमवती अमावस,

(A) में ५८/२०, श्री गणेश चतुर्थी व्रत

आषा.कृ. ७ मंगल, इष्ट ०/२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	११	६	३	०	४	०	३	९
१९	१३	६	१३	७	२	२०	२०	२०
३९	७	२५	४५	१८	६	४९	४२	४२
५८	३१	५४	५९	१२	४७	०	६	६
५७	८३९	२०	२९	८	३९	५	३	३
१२	२९	३०	२३	३१	४६	७	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

कुण्डली सूर्योदये

४ बु. रा.
२
५ शु.
सू.३
गु.१ श.
६
१२ चं.
७ मं.
९
११
८
१० के.

लोक भविष्य– इस मास में पांच मंगलवार हैं;–कहीं युद्धाग्नि से अशान्त वातावारण बने, किसी देश विशेष की सरकार में विशेष परिवर्तन आएं। कहीं राजनीतिज्ञ की हत्या वा कहीं विशिष्ट व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त हो, – **‘यत्रमासे महीसूनोर्जायन्ते पञ्चवासराः। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्र भंगस्तदा-भवेत्॥’** गुरु-शनि का मंगल के साथ समसप्तक योग अयोध्या, लंका किंवा मध्य प्रदेश में कहीं अशांति का संकेत देता है ।

ग्रहचार और बाजार का रुख– २ जुलाई को सोना, ताँबा, जौ, चना, गेहूं, लाल चन्दन, मजीठ, लाल मिर्च व लाल रंग की चीजों में तेजी बने। घी में भी तेजी बने। ६ जुलाई के लगभग रुई, सोना, चांदी, गुड़, खांड, कपास, बिनौला, एरण्ड, अलसी, सरसों, तिल, ज्वार, बाजरा, उड़द, चावल, नमक में तेजी बनेगी। पक्षान्त में बुध के वक्री होने पर घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी, अनाजों में मन्दी एवं रुई में झटके के साथ तेजी आकर मन्दी बने।

कुण्डली सूर्योदये

४ रा. बु.
२
५ शु.
सू.चं. ३
श.१ गु.
६
१२
७ मं.
९
११
८
१० के.

आषा. कृ. ३० मंगल,इष्ट ५९/५३

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	३	६	३	०	४	०	३	९
२७	९	९	१५	८	६	२१	२०	२०
१७	९	२२	३६	२२	५२	२७	१६	१६
४४	२३	३०	७	३२	०	४९	४०	४०
५७	८७१	२४	७	७	३९	४	३	३
१५	३२	१	१५	२४	४५	३०	११	११
-	-	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

आकाश लक्षण– इस पक्ष में पंजाब, हि.प्र., हरियाणा, भूटान, शिलांग ,आसाम, में अनेकत्र बादल चाल व वर्षा के योग हैं। लेकिन शुक्र भी वर्षा में रुकावट का संकेत देता है ।

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१,						**आषाढ़ शुक्ल पक्ष ९**										तारीखें				चन्द्र राशि			चण्डीगढ़				उदय-कालिक				(१४ से २८ जुलाई तक, सन् १९९९ई.) दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु ।
दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	प्र. आषा.	अं. जुला.	श. आषा.	मु. र.उ.अ.	प्रवेश काल	घ.	प.	भा.स्टैं.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	**ग्रह दर्शन** १८ जुलाई को बुध पश्चिम में दीखना बन्द हो जाएगा। सायं मंगल पूर्व में होगा, प्रातः गुरु और शनि को पूर्व में देखें। सायं शुक्र पश्चिम में चमकता दीखेगा ।
अवम		१	मं.	५८	५८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथिक्षय,
३४	३५	२	बु.	५३	१५	पु.	२९	५८	व.	५२	५	बा.	२६	६	३०	१४	२३	२९	कर्क			५	३३	७	२३	२	२७	१७	४९	चन्द्र दर्शन मु.१५, रथ यात्रा (पुरी) (पुष्य योग),
३४	३२	३	गु.	४९	०	आश्ले.	२७	२	सि.	४६	०	तै.	२१	३७	३१	१५	२४	र.उ.१	सिं.	२७	२	५	३४	७	२३	२	२८	१५	६	रबी उस्सानी मु. प्रा.,
३४	३०	४	शु.	४६	३२	म.	२५	४८	व्य.	४१	२२	व.	१७	४६	श्रा.१	१६	२५	२	सिंह			५	३४	७	२२	२	२९	१२	२२	भ.१७/४६ से ४६/३२ तक, सं० सूर्य कर्क में ४९/५०,मु.३०(A)
३४	२८	५	श.	४५	५५	पू.फा.	२६	२०	व.	३८	१२	ब.	१६	१३	२	१७	२६	३	क.	४१	५७	५	३५	७	२२	३	०	९	४०	
३४	२८	६	र.	४७	१२	उ.फा.	२८	४८	प.	३६	३५	कौ.	१६	३४	३	१८	२७	४	कन्या			५	३५	७	२२	३	१	६	५७	बुध पश्चिम में अस्त ६/४५, कुमार षष्ठी,
३४	२३	७	चं.	५०	१०	ह.	३२	५५	शि.	३६	१५	ग.	१८	४१	४	१९	२८	५	कन्या			५	३६	७	२१	३	२	४	१३	भ. ५०/१० बाद, विवस्वत् सप्तमी,राहु आश्ले.१, केतु (B)
३४	२३	८	मं.	५४	४०	चि.	३८	३२	सि.	३७	८	वि.	२२	२५	५	२०	२९	६	तु.	५	४४	५	३६	७	२१	३	३	१	३०	भ. २२/२५ तक, सूर्य पुष्य में १९/२०,
३४	१८	९	बु.	५९	५८	स्वा.	४५	१०	सा.	३८	५०	बा.	३२	५३	६	२१	३०	७	तुला			५	३७	७	२०	३	३	५८	४९	
३४	१५	१०	गु.	६०	००	वि.	५२	२५	शु.	४१	०	तै.	२९	५९	७	२२	३१	८	वृ.	३५	३७	५	३८	७	२०	३	४	५६	६	
३४	१२	१०	शु.	५	४८	अनु.	५९	४०	शु.	४३	२२	ग.	५	४८	८	२३	श्रा.१	९	वृश्चिक			५	३८	७	१९	३	५	५३	२४	शक श्रावण प्रारम्भ,भ.३८/४३ बाद,सूर्य सायन सिंह में १६/२८,
३४	१०	११	श.	११	३८	ज्ये.	६०	०	ब्र.	४५	३०	वि.	१०	५२	९	२४	२	१०	वृश्चिक			५	३९	७	१९	३	६	५०	४१	भ. ११/३८तक,हरिशयनी एकादशी व्रत(स.),
३४	८	१२	र.	१७	८	ज्ये.	६	४५	ऐं.	४७	१२	बा.	१७	८	१०	२५	३	११	ध.	६	४५	५	३९	७	१८	३	७	४७	५९	प्रदोष व्रत,
३४	५	१३	चं.	२१	४५	मू.	१३	२	वै.	४८	१२	तै.	२१	४५	११	२६	४	१२	धनु			५	४०	७	१८	३	८	४५	१८	
३४	०	१४	मं.	२५	२८	पू.षा.	१८	२५	वि.	४८	२२	व.	२५	२८	१२	२७	५	१३	म.	३४	३०	५	४१	७	१७	३	९	४२	३६	भ. २५/२८ से ५६/४५ तक, श्री सत्यनारायण व्रत,
३४	०	१५	बु.	२८	२	उ.षा.	२२	४५	प्री.	४७	४२	ब.	२८	२	१३	२८	६	१४	मकर			५	४१	७	१७	३	१०	३९	५६	गुरु पूर्णिमा(व्यासपूजा),आषाढ़ी पूर्णिमा,चातुर्मास्य व्रत (C)

(A)पुष्यकाल १९/५० बाद,(B) श्रवण ३ में १४/१७, (C) नियमादि प्रारम्भ, कोकिला व्रत, चन्द्र ग्रहण,

आषाढ़ शुक्ल ८ मंगल, इष्ट ५९/४५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	६	३	०	४	०	३	९
३	१०	१२	१३	९	९	२१	१९	१९
५८	५४	१८	११	११	४७	५७	५४	५४
३०	५२	५२	२३	११	१०	३६	२४	२४
५७	७१७	२६	३६	६	१८	३	३	३
१६	३५	४२	७	२०	७	५६	११	११
-	-	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुष्य	स्वा.	स्वा.	पुष्य	आश्ले.	मघा	भर.	आर्द्रा	श्रव.

कुण्डली सूर्योदये

शु.५ · सू.बु. ४ रा. · ३ · ६ चं. · २ · ७ मं. · १ श. गु. · के. १० · १२ · ८ · ९ · ११

लोक भविष्य- इस पक्ष में तिथि वृद्धि एवं तिथि क्षय होने से जन जीवनोपयोगी वस्तुओं में मन्दा आने से जनता में संतोष रहे, 'जेहि पखवारे तिथि बढ़े, वाही में घट जाए। सभी वस्तु मन्दी बिके मंहगाई हट जाए।' लेकिन आषाढ़ शुदी पंचमी को शनिवार होने से खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी, जिससे बाजार तेजी की ओर बढ़ेंगे।

ग्रहचाल और बाजार का रुख- १५ जुलाई के लगभग अनाज, दालवाना, घी, गुड़ खाण्ड में तेजी रहे,१८ जुलाई के लगभग बुध वक्री पोजीशन में अस्त होगा, रुई में झटके के साथ मन्दी, पाट, हैसियन एवं शेयरों में भी मन्दा बने। अनाज तेज रहें। २० जुलाई के लगभग अनाज, करयाणा में तेजी हो।

आकाश लक्षण- जुलाई १५,१६,१८,२० को उत्तरी भारत में वर्षा के योग हैं। लेकिन सिंहस्थ शुक्र कुछ भागों में वर्षा का अवरोधक है, हवा का जोर रहे।

शकुन विचार- आषाढ़ शुक्ल पञ्चमी को यदि पश्चिम से हवा चले, बादल वर्षा हो और इन्द्रधनुष दीखे तो अनाजों का स्टाक करने से कार्तिक में लाभ मिले ।

कुण्डली सूर्योदये

५ शु. · सू. ४ बु.रा. · ३ · ६ · २ · ७ मं. · गु.१श. · चं.१० के. · १२ · ८ · ९ · ११

आषाढ शुक्ल १५बुध, इष्ट ५९/३२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	९	६	३	०	४	०	३	९
११	१७	१६	७	९	११	२२	१९	१९
३६	४३	१	४६	५७	१५	२६	२८	२८
४८	१५	४७	८	१९	३७	३०	५७	५७
५७	७६७	२९	३७	५	१	३	३	३
२०	३	१८	४९	१	१८	१३	११	११
-	-	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुष्य	श्रव.	स्वा.	पुष्य	आश्ले.	मघा	भर.	आर्द्रा	श्रव.

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१, श्रावण कृष्ण पक्ष १०

(२९ जुलाई से ११अगस्त तक, सन् १९९९ई.)
दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु।

ग्रह दर्शन - ४ अगस्त को बुध प्रातः पूर्व में दीखने लगेगा। शुक्र ८ अगस्त को सायं पश्चिम में दीखना बन्द हो जायेगा। सायं मंगल और प्रातः गुरु एवं शनि खमध्यासन्न होंगे ।

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	तारीखें प्र. श्राव.	अं. जुला.	श. श्राव.	मु. र.ज.	चन्द्र राशि प्रवेश काल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा.स्टैं.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सर्यास्त घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३३	५५	१	गु.	२९	२८	श्र.	२५	५५	आ.	४६	५	कौ.	२९	२८	१४	२९	७	१५	कुं.	५६	५७	५	४२	७	१६	३	११	३७	१७	पञ्चक प्रा. ५६/५७, गुरु अश्विनी. ४ में ३०/२८,
३३	५०	२	शु.	२९	४१	ध.	२७	५८	सौ.	४३	३५	ग.	२९	४२	१५	३०	८	१६	कुम्भ			५	४३	७	१५	३	१२	३४	३८	भ. ५९/१८ बाद, शुक्र वक्री ३/२५,
३३	५०	३	श.	२८	५५	श.	२८	५५	शो.	४०	१२	वि.	२८	५५	१६	३१	९	१७	कुम्भ			५	४३	७	१५	३	१३	३२	००	भ.२८/५५ तक, श्री गणेश चतुर्थी व्रत,
३३	४५	४	र.	२६	५८	पू.भा.	२८	४८	अ.	३५	५८	बा.	२६	५८	१७	अ.१	१०	१८	मी.	१३	४९	५	४४	७	१४	३	१४	२९	२३	अगस्त प्रारम्भ,
३३	४३	५	चं.	२४	५	उ.भा.	२७	४५	सु.	३०	५५	तै.	२४	५	१८	२	११	१९	मीन			५	४४	७	१३	३	१५	२६	४७	
३३	३८	६	मं.	२०	१२	रे.	२५	४२	धृ.	२५	८	व.	२०	१२	१९	३	१२	२०	मे.	२५	४२	५	४५	७	१२	३	१६	२४	१३	भ. २०/१२ से ४७/५२ तक,पंचक समाप्त २५/४२,(A)
३३	३५	७	बु.	१५	३२	अ.	२२	५२	शू.	१८	४०	ब.	१५	३२	२०	४	१३	२१	मेष			५	४६	७	१२	३	१७	२१	३९	बुध पूर्व में उदित २७/४८
३३	३२	८	गु.	१०	१०	भ.	१९	२२	गं.	११	३५	कौ.	१०	१०	२१	५	१४	२२	वृ.	३३	२३	५	४६	७	११	३	१८	१९	७	मंगल विशा. में ५०/५०,शुक्र वार्धक्य (B)
३३	२८	९	शु.	४	८	कृ.	१५	१५	वृ. ध्रु.	४ ५६	२ १०	ग.	४	८	२२	६	१५	२३	वृष			५	४७	७	१०	३	१९	१६	३६	भ.३० /५६ से ५७/४५ तक,बुध मार्गी ७/४०,
अवम		१०	शु.	५७	४५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०				०	०	०	०	०	०	०	०	०	दशमी तिथिक्षय,
३३	२३	११	श.	५१	२	रो.	१०	४२	व्या.	४८	२	ब.	२४	२४	२३	७	१६	२४	मि.	३८	२२	५	४८	७	९	३	२०	१४	७	कामिका एकादशी व्रत (स्मा.),
३३	२२	१२	र.	४४	२५	मृ.	६	२	ह.	३९	५८	कौ.	१७	४४	२४	८	१७	२५	मिथुन			५	४८	७	९	३	२१	११	३८	शुक्र पश्चिम में अस्त १२/३०,कामिका एकादशी व्रत(वै.),
३३	१८	१३	चं.	३८	०	आ. पुन.	१ ५७	२५ १०	व.	३२	२	ग.	६	१२	२५	९	१८	२६	क.	४३	२०	५	४९	७	८	३	२२	९	१०	भ.३८/०बाद, सोमप्रदोष व्रत,
३३	१५	१४	म.	३२	८	पु.	५३	३०	सि.	२४	३०	वि.	५	४	२६	१०	१९	२७	कर्क			५	४९	७	७	३	२३	६	४४	भ.५/४ तक, ग्रहणशूल,
३३	१०	३०	बु.	२७	०	आश्ले.	५०	४५	व्य.	१७	३५	ना.	२७	०	२७	११	२०	२८	सिं.	५०	४५	५	५०	७	६	३	२४	४	२०	हरियाली अमावस, खग्रास सूर्य ग्रहण (देखें पृष्ठ 9-18),

शुक्र अस्त
८अगस्त

(A) सूर्य आश्ले. में १६/२८,(B) प्रारम्भ,१२/३५

श्रावण कृष्ण८गुरु,इष्ट ५९/२०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	१	६	३	०	४	०	३	९
१९	६	२०	४	१०	१०	२२	१९	१९
१५	१०	४	४४	३२	२०	४९	३	३
५५	१६	१५	१४	३४	२३	३२	३१	३१
५७	८६३	३१	२	३	१७	२	३	३
२९	१८	३४	१८	३६	२८	२७	११	११
-	-	मा.	व.	मा.	व.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
१	३	१	१	४	४	३	१	३
आश्ले.	कृ.	विशा.	पुष्य	अश्वि.	मघा	भर.	आश्ले.	श्रव.

कुण्डली सूर्योदये

५ शु.
३
६
सू. ४ बु.रा.
२
७ मं.
चं.१गु. श.
८
१० के.
१२
९
११

लोक भविष्य- इस मास में ५ गुरुवार हैं, अतः पश्चिमी देशों में कहीं भयंकर राजनैतिक उलझनें बनें, युद्धभय बने, कहीं राजनैतिक हत्याकाण्ड भी हों- 'यत्र मासे पञ्च वाराः जायन्ते च बृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमे देशे खड्गयुद्धं च जायते।' जन जीवनोपयोगी खाद्य वस्तुओं में तेजी बनेगी। भरणी नक्षत्र में शुक्र का अस्त होना पंजाब, दिल्ली, राजस्थान एवं बिहार, उ. प्र. में कहीं राजनैतिक सत्ता संघर्ष, कहीं धार्मिक एवं सामाजिक उलझनों से अशांति का संकेत देता है ।

ग्रहचाल और बाजार का रुख- पक्षारम्भ में घी, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, जौ, चना आदि अनाज तेज हों, रुई में पहले तेजी आकर बाद में मन्दी बने। पक्ष मध्य में रुई में मन्दे के बाद अच्छी तेजी की संभावना है, गेहूं, जो, चना, लाल मिर्च, घी, तेल में अच्छी तेजी बने। ५/६ अगस्त के लगभग घी, खाण्ड में मन्दा सोना, चांदी, तिल ,चावल में तेजी बने।

कुण्डली सूर्योदये

शु. ५
चं. ४ सू. बु. रा.
३
६
२
७ मं.
१ श.गु.
८
१० के.
१२
९
११

श्रावण कृष्ण ३० बुध, इष्ट५९/१०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	४	६	३	०	४	०	३	९
२५	१	२३	६	१०	८	२३	१८	१८
१	५५	१७	३९	५१	३	२	४४	४४
६	३८	३५	५	२३	११	४२	२६	२६
५७	८१८	३३	४२	२	२९	१	३	३
३६	९	७	५६	२८	४५	५१	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
३	१	१	१	४	३	३	१	३
आश्ले.	मघा	विशा.	पुनं.	अश्वि.	मघा	भर.	आश्ले.	श्रव.

आकाश लक्षण- जुलाई २९, अगस्त ४/६ तक एवं ८ से ११ अगस्त के लगभग हि.प्र. हरियाणा, पंजाब दिल्ली, चण्डीगढ़ एवं उत्तर प्रदेश आदि में सर्वत्र बादल वर्षा के योग हैं।

शकुन विचार- श्रावण में यदि बिजली चमके, बादल गरजें, तो आगे सुभिक्ष की सूचना मिलती है। यदि श्रावण में कृतिका नक्षत्र में वर्षा हों तो आगे चौमासे में अच्छी वर्षा हों।

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१, श्रावण शुक्ल पक्ष ११																		तारीखें				चन्द्र राशि			चण्डीगढ़				उदय-कालिक				(१२ से २६अगस्त तक, सन् १९९९ ई.) दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा शरद ऋतु।
दि. मा.		तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		करण	समाप्ति काल					प्र.	अं.	श.	मु.	प्रवेश काल			भा.स्टैं.टा.				स्पष्ट सूर्य				ग्रह दर्शन -१५ अगस्त को बुध प्रातः पूर्व में सूर्य से परम अन्तर पर होगा और वह २६ अगस्त को पूर्व में अस्त हो जाएगा। शुक्र २५ अग. से पूर्व में दीखने लगेगा। सायं मंगल और प्रातः गुरु एवं शनि खमध्यासन्न होंगे।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.				श्राव.	अग.	श्राव.	र.उ.		घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सर्यास्त घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३३	५	१	गु.	२३	०	म.	४९	१०	व.	११	३०	ब.	२३	०				२८	१२	२१	२९	सिंह.			५	५१	७	५	३	२५	१	५६	चन्द्र दर्शन मु.३०, ग्रहणशूल,
३३	३	२	शु.	२०	२०	पू.फा.	४९	२	प.	६	३२	कौ.	२०	२०				२९	१३	२२	ज१	सिंह			५	५१	७	४	३	२५	५९	३४	ग्रहणशूल, जमद-उल अब्वल मु. प्रारम्भ,
३२	५८	३	श.	१९	१२	उ.फा.	५०	२८	शि.	२	४२	ग.	१९	१२				३०	१४	२३	२	क.	४	२४	५	५२	७	३	३	२६	५७	१२	भ. ४९/२७ बाद, मधुश्रवातृतीया (सन्धारा तीज),ग्रहणशूल,
३२	५२	४	र.	१९	४२	ह.	५३	३२	सि. सा.	० ५९	१० ०	वि.	१९	४२				३१	१५	२४	३	कन्या			५	५३	७	२	३	२७	५४	५२	भ. १९/४२ तक, भारत स्वतंत्रता दिवस,
३२	५०	५	चं.	२१	५८	चि.	५८	१२	शु.	५९	५	बा.	२१	४८				३२	१६	२५	४	तु.	२५	५२	५	५३	७	१	३	२८	५२	३३	नागपंचमी,
३२	४५	६	मं.	२५	४०	स्वा.	६०	००	शु.	६०	००	तै.	२५	४०				भा१	१७	२६	५	तुला.			५	५४	७	०	३	२९	५०	१५	सं सूर्य मघा सिंह में १०/८,मु.१५, पुण्य-काल २६/८ तक,
३२	४२	७	बु.	३०	३८	स्वा.	४	१०	शु.	०	१०	व.	३०	३८				२	१८	२७	६	वृ.	५४	१९	५	५४	६	५९	४	०	४७	५७	भ.३०/३८ बाद,वेंकटेश (प्लूटो)मार्गी,गो.स्वा.तुलसीदास जयंती,
३२	३७	८	गु.	३६	२०	वि.	११	२	ब्र.	२	०	वि.	३	२९				३	१९	२८	७	वृश्चिक			५	५५	६	५८	४	१	४५	४०	भ. ३/२९ तक,श्री दुर्गाष्टमी, कल्कि जयंती, दूर्वाष्टमी व्रत(A)
३२	३२	९	शु.	४२	१५	अनु.	१८	२०	ऐं.	४	१२	बा.	९	१८				४	२०	२९	८	वृश्चिक			५	५६	६	५७	४	२	४३	२५	बुध आश्ले.में ५२/५५,
३२	३०	१०	श.	४७	५२	ज्ये.	२५	३२	वै.	६	२८	तै.	१५	३				५	२१	३०	९	ध.	२५	३२	५	५६	६	५६	४	३	४१	१२	शुक्र उदित २५ अगस्त
३२	२५	११	र.	५२	४०	मू.	३२	५	वि.	८	१८	व.	२०	१६				६	२२	३१	१०	धनु			५	५७	६	५५	४	४	३८	५९	भ. २०/१६ से ५२/४० तक,पवित्रा एकादशी व्रत (स.),
३२	२२	१२	चं.	५६	१८	पू.षा.	३७	३५	प्री.	९	२५	ब.	२४	२९				७	२३	भाद्र१	११	धनु			५	५७	६	५४	४	५	३६	४७	शक भाद्रपद प्रारम्भ, सूर्य सायन कन्या में ३३/३०, (B)
३२	१८	१३	मं.	५८	२५	उ.षा.	४१	४५	आ.	९	३०	कौ.	२७	२२				८	२४	२	१२	म.	५३	३७	५	५८	६	५३	४	६	३४	३६	भौम प्रदोष व्रत,
३२	१२	१४	बु.	५९	२	श्र.	४४	२५	सौ.	८	२८	ग.	२८	४४				९	२५	३	१३	मकर			५	५९	६	५२	४	७	३२	२६	भ.५९/२ बाद, गुरु वक्री ५/०,वक्री शुक्र आश्ले.कर्क में ४३/५४,(C
३२	१०	१५	गु.	५८	१५	ध.	४५	४०	शो.	६	१८	वि.	२८	३८				१०	२६	४	१४	कुं.	१५	१	५	५९	६	५१	४	८	३०	१८	भ.२८/३८ तक, पञ्चक, प्रारम्भ १५/१,बुध पूर्व में (D)

(A) (देखें पृष्ठ97) ,(B)शरदर्तु प्रारम्भ,मंगल वृश्चिक में ४१/३५,(C)शुक्र पूर्व में उदित २५/००, ऋक् उपाकर्म,
(D)अस्त ४०/३५, रक्षा बन्धन (राखी) शुक्ल-कृष्ण यजु उपाकर्म, श्रावणी पूर्णिमा,श्री सत्यनारायण व्रत ,

श्रावण शुक्ल,८गुरु,इष्ट ५८/५८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	७	६	३	०	४	०	३	९
२	१२	२७	१५	११	३	२३	१८	१८
४२	४८	४९	१८	५	२९	१४	१९	१९
२३	४३	५	४३	४३	५२	३३	०	०
५७	७१२	३४	९०	०	३७	१	३	३
४५	५९	५६	२६	५४	१९	०	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
		उ.	उ	उ.	अ.	उ.	अ.	अ
मघा	अनु.	विशा.	पुष्य	आश्ले.	मघा	भर.	आर्द्रा	श्रव.

कुण्डली सूर्योदये

६
बु.४ रा.
सू. ५ शु.
७ मं.
३
८ चं.
२
११
९
शु. १ गु.
१०के.
१२

लोक भविष्य- इस मास के अन्त में गुरु वक्री हो रहा है। शुक्र वक्र स्थिति में पुनः कर्क में आकर आश्लेपा नक्षत्र में उदय होता है- कहीं अत्यधिक वर्षा से भयंकर जनधन हानि होगी, कहीं सूखा रहने से शासन चिन्तित रहे। उपभोग्य वस्तुओं में भारी मंहगाई से जनता में असन्तोष रहे, 'दैत्यगुरुर्यदा कर्के रसानां वै महर्घता। सर्वधान्य समर्घत्वं मेघाश्च प्रबला भुवि।' लेकिन इस पक्ष में मंगल वृश्चिक राशि में भी आ रहा है- देश में आर्थिक विकास हो, ग्रामीण क्षेत्रों में रोगों का प्रकोप, नेताओं में संगठन की भावना, विदेशों से व्यापारिक संबंध बढे। कहीं राजनैतिक उथल पुथल हो।

ग्रहचार और बाजार का रु ख- इस पक्ष में गेहूं, जौ, चना, चावल, अलसी, घी, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी रहे। रुई में विशेष तेजी मन्दी के झटके आएंगे ।

कुण्डली सूर्योदये

६
सू. ५
शु.४ रा. बु.
७
३
८ मं.
२
११
९
१गु. श.
चं. १० के.
१२

श्रावण शुक्ल १५ गुरु,इष्ट ५८/४७

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श	रा.	के.
४	१०	७	३	०	३	०	३	९
९	९	१	२७	११	२९	२३	१७	१७
२७	३२	५७	१२	७	१८	१९	५६	५६
१	४३	५६	४३	५६	१८	२४	४५	४५
५७	८६४	३६	११३	०	३१	०	३	३
५३	४२	२०	२४	२९	५९	१६	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मघा	शत.	विशा.	आर्द्रा	आश्ले.	आर्द्रा	भर.	आर्द्रा	श्रव.

आकाश लक्षण- १७ से २६ अगस्त तक शिलांग, गोवा, लंका, आसाम, भूटान, बंगाल एवं उत्तरी भारत में बादल चाल रहे, वायुवेग के साथ कहीं वर्षा हो, तापमान गिरे।

शकुन विचार- यदि श्रावण शुक्ल सप्तमी को वर्षा हो तो सभी प्रकार के धान्य उत्तम हों।

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१, भाद्रपद कृष्ण पक्ष १२																तारीखें				चन्द्र राशि			चण्डीगढ़				उदय-कालिक			
दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	प्र. भाद्र	अं. अग.	श. भाद्र	मु. स.उ.अ.	प्रवेश काल	घ.	प.	भा.स्टैं.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
३२	५	१	शु.	५६	५	श.	४५	३२	अ. सु.	२ ५८	५५ ३२	बा.	२७	१०	११	२७	५	१५	कुम्भ			६	०	६	५०	४	९	२८	१२
३२	०	२	श.	५२	५०	पू.भा.	४४	२०	धृ.	५३	१२	तै.	२४	२७	१२	२८	६	१६	मी.	२९	३८	६	०	६	४८	४	१०	२६	८
३१	५५	३	र.	४८	३८	उ.भा.	४२	५	शू.	४७	१०	व.	२०	४४	१३	२९	७	१७	मीन			६	१	६	४७	४	११	२४	५
३१	५०	४	चं.	४३	४५	रे.	३९	१०	गं.	४०	३०	ब.	१६	१२	१४	३०	८	१८	मे.	३९	१०	६	२	६	४६	४	१२	२२	४
३१	४८	५	मं.	३८	२५	अ.	३५	४८	वृ.	३२	४०	कौ.	११	५	१५	३१	९	१९	मेष			६	२	६	४५	४	१३	२०	५
३१	४२	६	बु.	३२	५०	भ.	३२	८	ध्रु.	२६	१५	ग.	५	३८	१६	१सि	१०	२०	वृ.	४६	१२	६	३	६	४४	४	१४	१८	६
३१	४०	७	गु.	२७	१२	कृ.	२८	२२	व्या	१८	५५	वि.	०	१	१७	२	११	२१	वृष.			६	३	६	४३	४	१५	१६	९
३१	३३	८	शु.	२१	३०	रो.	२४	४०	ह.	११	३५	कौ.	२१	३०	१८	३	१२	२२	मि.	५२	५४	६	४	६	४१	४	१६	१४	१५
३१	२८	९	श.	१६	०	मृ.	२१	८	व. सि	४ ५७	२२ २५	ग.	१६	०	१९	४	१३	२३	मिथुन			६	५	६	४०	४	१७	१२	२३
३१	२५	१०	र.	१०	५२	आ.	१७	५२	व्य.	५०	४५	वि.	१०	५२	२०	५	१४	२४	मिथुन			६	५	६	३९	४	१८	१०	३३
३१	२०	११	चं.	६.	२	पुन.	१५	२	व.	४४	२५	बा.	६	२	२१	६	१५	२५	क.	०	४५	६	६	६	३८	४	१९	८	४५
३१	१७	१२	मं.	१	४५	पु.	१२	४५	प.	३८	३५	तै.	१	४५	२२	७	१६	२६	कर्क			६	६	६	३७	४	२०	६	५९
अवम		१३	मं.	५८	१०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०			०	०	०	०	०	०	०	०
३१	१०	१४	बु.	५५	१८	आश्ले.	११	५	शि.	३३	२२	वि.	२६	४४	२३	८	१७	२७	सिं.	११	५	६	७	६	३५	४	२१	५	१५
३१	८	३०	गु.	५३	२८	म.	१०	२०	सि.	२८	५२	च.	२४	२३	२४	९	१८	२८	सिंह			६	७	६	३४	४	२२	३	३३

(२७ अगस्त से ९सितम्बर तक, सन् १९९९ ई.)
दक्षिणायन, उत्तर गोल, शरद ऋतु।

ग्रह दर्शन - बुध अस्त है। पक्ष के आरम्भ में ही शुक्र प्रातः पूर्व में दीखने लग जाएगा। प्रातः गुरु शनि पश्चिम कपाल में होंगे। सायं मंगल खमध्यासन्न होगा।

शुक्र बाल्य समाप्त २४/५८, बुध मघा सिंह में २६/५२,
भ.२०/४४ से, ४८/३८ तक, मंगल अनु. में १३/३२,
पञ्चक समाप्त ३९/१०, सूर्य पू.फा. में ५९/५२, शनि वक्री (A)
भ. ३२/५० बाद, सितम्बर प्रारम्भ,
भ.० /१ तक, वक्री यूरेनस श्रव. ३ में, ४/५५ श्री कृष्ण (B)
अगस्त्य उदित, श्री कृष्ण जन्माष्टमी(वैष्णवों)संन्यासियों के लिए,
भ. ४३/२६ बाद, बुध पू.फा. में १६/३०, श्री गुग्गा नवमी,
भ. १०/५२ तक,
अजा एकादशी व्रत(स.),
भ. ५८/१० बाद, भौम प्रदोष व्रत,
त्रयोदशी तिथिक्षय,
भ. २६/४४ तक,
कुशोत्पाटिनी अमा, पिठौरी अमा,

(A) १/५८ बहुला चतुर्थी, संकष्ट चतुर्थी(चन्द्रोदय रात्रि ९ घं.११मि.), श्री गणेश चतुर्थी व्रत, (B)जन्माष्टमी व्रत, (अर्धरात्रि में अष्टमी तिथि एवं रोहिणी नक्षत्र), (स्मार्तों गृहस्थियों के लिए जन्माष्टमी व्रत)(चन्द्रोदय रात्रि ११ घं.१९ मिं.),

भाद्र. कृ. ८ शुक्र, इष्ट ५८।३५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	२	७	४	०	३	०	३	९
१७	१	६	१२	१०	२५	२३	१७	१७
१०	१९	५३	४४	५८	५५	१८	३१	३१
५९	५७	४०	४३	३१	१२	३६	१९	१९
५८	८४७	३७	११७	१	१५	०	३	३
८	६	४६	३	५३	३७	३५	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.फा.	मृग.	अनु.	मघा	आश्ले.	आश्ले.	भर.	आश्ले.	श्रव.

कुण्डली सूर्योदये

६ | सू. ५ बु. | ४शु.रा. | ७ | ३ | ८ मं. | चं.२ | ९ | ११ | १ गु.श. | १०के. | १२

लोक भविष्य- सिंह राशि में बुध-सूर्य का सम्बन्ध अनाजों एवं दैनिक उपयोग में आने वाली चीजों में तेजी करेगा। यहां बुध-गुरु शनि वक्र चल रहे हैं, अतः किसी प्राकृतिक प्रकोप से जनधन हानि हो। किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त हो।'सिंह राशौ बुधः स्याच्चेत् सर्वधान्य महर्घता। मघा बुधेऽल्पवृष्टिश्च धान्यनाशः प्रजाभयम्॥' कहीं खड़ी फसलों को हानि पहुंचे।

ग्रहचाल और बाजार का रुख- पक्षारम्भ में सोना चाँदी, सूत, रुई, ऊनी वस्त्र, सिक्का, कली, गेहूं, पीपल, ज्वार, चावल, घी, तेल, अलसी, सरसों, तमाखू, सिमेंट में तेजी आए।

आकाश लक्षण- अगस्त २८,२९,३० सितम्बर १,२ को बंगाल, भूटान एवं उत्तरी भारत में कहीं वर्षा, बादल चाल व खण्ड दृष्टि हो। उत्तरी भारत का तापमान गिरे।

कुण्डली सूर्योदये

६ | सु. चं.५ बु. | ४ शु. रा. | ७ | ३ | ८ मं. | २ | ९ | ११ | १श. गु. | १०के. | १२

भाद्र. कृ. ३० गुरु, इष्ट ५८।२८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	७	४	०	३	०	३	९
२३	२३	१०	२४	१०	२४	२३	१७	१७
०	५९	४२	१५	४३	५७	१३	१२	१२
११	५२	४१	५२	७	३४	३१	१५	१५
५८	७८४	३८	११२	३	१	१	३	३
११	५५	४७	३	१५	१३	१३	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.फा.	पू.फा.	अनु.	पू.फा.	आश्ले.	आश्ले.	भर.	आश्ले.	श्रव.

शकुन विचार- यदि भाद्रपद कृष्ण तृतीया को बादल हों तो अनाज के स्टाक से छठे मास में लाभ हो।'भादों कारी तीज में उत्तरदिशा प्रदोष। बादल तब सुख मानिए मिटे मिटाया दोष॥'-संग्रह कर लो अन्न को रुका रहे षट्मास। लाभ होय उस माल में कर लेना विश्वास॥

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१,						भाद्रपद शुक्ल पक्ष १३										तारीखें				चन्द्र राशि			चण्डीगढ़				उदय-कालिक				(१० से २५सितम्बर तक, सन् १९९९ई.) दक्षिणायन, उत्तर-दक्षिण गोल, शरद् ऋतु।
दि. मा.		तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		करण	समाप्ति काल		प्र.	अं.	श.	मु	प्रवेश काल			भा.स्टैं.टा.				स्पष्ट सूर्य				ग्रह दर्शन - प्रातः शुक्र पूर्व में, गुरु एवं शनि पश्चिम कपाल में होंगे। सायं मंगल पूर्व कपाल में तथा बुध प्रातः पूर्व में होगा।
															भाद्र	सितं.	भाद्र	अ.उ.				सूर्योदय		सर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३१	२	१	शु.	५२	५०	पू.फा.	१०	३०	सा.	२५	१५	किं	२३	९	२५	१०	१९	२९	क.	२५	५१	६	८	६	३३	४	२३	१	५२	
३०	५८	२	श.	५३	२८	उ.फा.	११	५२	शु.	२२	३५	बा.	२३	९	२६	११	२०	३०	कन्या			६	९	६	३२	४	२४	०	१४	चन्द्र दर्शन मु.३०, बुध उ.फा में १५/३५,शुक्र मार्गी ५९/२९(A)
३०	५३	३	र.	५५	३२	ह.	१४	३५	शु.	२१	२	तै.	२४	३०	२७	१२	२१	ज. उ१	तु.	४६	३७	६	९	६	३०	४	२४	५८	३७	भ.२७/१५बाद,जमद उस्सानी मु. प्रारम्भ, श्री वराह जयन्ती,(B)
३०	४८	४	च.	५८	५८	चि.	१८	४०	ब्र.	२०	३२	व.	२७	१५	२८	१३	२२	२	तुला			६	१०	६	२९	४	२५	५७	१	भ.५८/५८ तक, सूर्य उ.फा. में ४४/५, बुध कन्या में ४/२२,(C)
३०	४५	५	मं.	६०	००	स्वा.	२४	५	ऐं.	२१	८	ब.	३१	१८	२९	१४	२३	३	तुला			६	१०	६	२८	४	२६	५५	२७	
३०	४०	५	बु.	३	३८	वि.	३०	३२	वै.	२२	३२	बा.	३	३८	३०	१५	२४	४	वृ.	१३	५५	६	११	६	२७	४	२७	५३	५५	
३०	३५	६	गु.	९	१८	अनु.	३७	४८	वि.	२४	३८	तै.	९	१८	३१	१६	२५	५	वृश्चिक			६	११	६	२५	४	२८	५२	२५	सूर्य षष्ठी,
३०	३०	७	शु.	१५	२५	ज्ये.	४५	१५	प्री.	२६	५५	व.	१५	२५	आश्वि. १	१७	२६	६	ध.	४५	१५	६	१२	६	२४	४	२९	५०	५६	भ.१५/२५ से ४८/२५तक, सं.सूर्य कन्या में९/१२,मु.,१५,(D)
३०	२५	८	श.	२१	२५	मू.	५२	२०	आ.	२९	५	ब.	२१	२५	२	१८	२७	७	धनु			६	१३	६	२३	५	०	४९	२९	बुध हस्त में ४३/०८, श्री राधाष्टमी,
३०	२०	९	र.	२६	४५	पू.षा.	५८	३२	सौ.	३०	४२	कौ.	२६	४५	३	१९	२८	८	धनु			६	१३	६	२१	५	१	४८	५	मंगल ज्येष्ठा में २/५,श्री चन्दनवमी(उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव)
३०	१५	१०	चं.	३०	५०	उ.षा.	६०	००	शो.	३१	१८	ग.	३०	५०	४	२०	२९	९	म.	१४	४२	६	१४	६	२०	५	२	४६	४२	वक्री गुरु अश्वि.३में२७/३०,राहु पुष्य४, केतु श्रवण २ में ६/४०,
३०	१२	११	मं.	३३	१८	उ.षा.	३	१२	अ.	३०	४२	वि.	०३	०४	५	२१	३०	१०	मकर			६	१४	६	१९	५	३	४५	२०	भ. २/४ से ३३/१८ तक,पद्मा एकादशी व्रत (स.),
३०	८	१२	बु.	३३	५२	श्र.	६	२०	सु.	२८	३५	ब.	३	३५	६	२२	३१	११	कुं.	३६	५८	६	१५	६	१८	५	४	४३	५९	पञ्चक प्रारम्भ ३६/५८,श्रवण द्वादशी,श्रीवामन जयन्ती,
३०	२	१३	गु.	३२	४५	ध.	७	३५	धृ.	२५	२	कौ.	३	१८	७	२३	आश्वि १	१२	कुम्भ			६	१५	६	१६	५	५	४२	४०	शक आश्विन प्रारम्भ, सूर्य सायन तुला में २६/५५,(E)
२९	५८	१४	शु.	२९	४०	श.	७	०	शू.	२०	५	ग.	१	१३	८	२४	२	१३	मीं.	५०	२४	६	१६	६	१५	५	६	४१	२४	भ.२९/४० से ५७/२५तक, श्री सत्यनारायणव्रत,अनन्त चतुदर्शी
२९	५३	१५	श.	२५	१०	पू.भा.	४	५२	ग.	१३	५२	ब.	२५	१०	९	२५	३	१४	मीन			६	१७	६	१४	५	७	४०	९	प्रोष्ठपदी श्राद्ध, पूर्णिमा का श्राद्ध,

(A) साम उपाकर्म, मेला बाबा गुसांईं आणां (कुराली),(B) श्री गौरी तृतीया, हरितालिका तृतीया, (C) कलंक चतुर्थी,(चन्द्रास्त रात्रि ८ घं. ४७ मि.), विनायक चतुर्थी,हरितालिका चतुर्थी,
(D) पुण्यकाल २५/१२ तक, श्री महालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ,(E) दक्षिण गोल प्रारम्भ,प्रदोष व्रत,

आषाढ़ शुक्ल. ८ शनि, इष्ट ५८।१३

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	८	७	५	०	३	०	३	९
१	१४	१६	१०	१०	२६	२२	१६	१६
४६	२९	३७	२५	७	७	५८	४३	४३
१८	४६	१६	४२	१४	१९	५३	३८	३८
५८	७२५	४०	१०२	४	१८	२	३	३
३५	३७	७	२५	५३	३९	७	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२	१	४	१	४	३	३	१	३
उ.फा.	पू.फा.	अनु.	हस्त.	अश्वि.	आर्द्रा.	भर.	आर्द्रा.	श्रव.

कुण्डली सूर्योदये

७, सू. ६ बु., ५, मं. ८, शु. रा.४, ९, चं., ३, १०, के., १२, २, ११, गु. १श.

लोक भविष्य- इस पक्ष में शुक्र का कर्क राशि में मार्गी होने से सुभिक्ष का संकेत देता है। लेकिन शनि -मंगल का षडष्टक कहीं सीमा-प्रान्तों पर अशान्ति, कहीं शासन सत्ता के लिए राजनीतिज्ञों को सन्नद्ध रहने का संकेत देता है। कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि, कहीं अग्निकाण्ड व दुर्घटना से हानि किसी विशिष्ट व्यक्ति का पद रिक्त हो ।

ग्रहचाल और बाजार का रुख- पक्षारम्भ में रुई मन्दी होकर फिर तेज हो। चांदी में भी मन्दा बने। चावल, अलसी, सरसों, गुड़ खाण्ड, हल्दी में तेजी आए। पक्ष मध्य में चांदी व शेयरों में मन्दा आए।

आकाश लक्षण- सितम्बर ११,१३,१६,१९,२० के लगभग सिक्किम, भूटान, शिलांग, गोवा, कालीकट, सूरत आदि तटवर्ती प्रदेशों में वर्षा होगी, अन्यत्र कहीं बादलचाल व बूंदाबांदी हो।

कुण्डली सूर्योदये

७, सू. ६ बु., ५, ८ मं., ४ शु. रा., ९, ३, १०, के., १२ चं., २, ११, गु.१ श.

भाद्र. शुक्ल. १५ शनि, इष्ट ५८।२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	११	७	५	०	३	०	३	९
८	१५	२१	२२	९	२८	२२	१६	१६
३६	५०	२०	१	२९	५२	४२	२१	२१
५९	९	४७	४०	४०	२	१	२३	२३
५८	८६१	४१	९५	५	३०	२	३	३
४८	४४	०	३५	५९	१०	४७	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४	४	२	४	३	४	३	४	२
उ.फा.	उ.भा.	ज्ये.	हस्त	अश्वि.	आर्द्रा.	भर.	पुष्य	श्रव.

शकुन विचार- भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा को यदि आकाश निर्मल रहे, तो गेहूं, जौ, चना, चावल के स्टाक से आगे लाभ रहे।

नोट-'भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी को चन्द्र दर्शन करने से कलंक लगता है, अतः इस दिन चन्द्र दर्शन न करें। यदि गलती से चन्द्र दर्शन हो ही जाए तो-' ओं सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः । सुकुमारक मा रोदीस्तव ह्येष स्यमन्तकः॥ इस मंत्र को पूर्वोत्तर मुंह करके जपने से दोष का परिहार हो जाता है।

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१,	आश्विन कृष्ण पक्ष १४	तारीखें	चन्द्र राशि	चण्डीगढ़	उदय-कालिक	(२६सितम्बर से ९ अक्तूबर तक, सन् १९९९ ई.) दक्षिणायन दक्षिण गोल, शरद् ऋतु।

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति घ.	काल प.	नक्षत्र	समाप्ति घ.	काल प.	योग	समाप्ति घ.	काल प.	करण	समाप्ति घ.	काल प.	प्र. आश्विं.	अं. सित.	श आश्विं.	मु ज.त.	प्रवेश काल	घ.	प.	भा.स्टै.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सर्वास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन - २६ सितम्बर से बुध सांय पश्चिम में दीखने लगेगा। सायं गुरु शनि पूर्व में होंगे। मंगल खमध्यासान्न होगा। शुक्र को प्रातः पूर्व में देखें।
२९	५०	१	र.	१९	३२	उ.भा. रे.	१ ५७	२८ १०	वृ. ध्रु.	६ ५८	४२ ४८	कौ.	१९	३२	१०	२६	४	१५	मे.	५७	१०	६	१७	६	१३	५	८	३८	५६	पंचक समाप्त ५७/१०,बुध चित्रा में ४७/५, बुध पश्चिम में(A)
२९	४३	२	चं.	१३	२	अ.	५२	१५	व्या.	५०	२२	ग.	१३	२	११	२७	५	१६	मेष			६	१८	६	११	५	९	३७	४५	भ. ३९/३६बाद ,सूर्य हस्त में २२/३८, तृतीया का श्राद्ध,
२९	४०	३	मं.	६	१०	भ.	४७	१२	ह.	४१	५०	वि.	६	१०	१२	२८	६	१७	मेष			६	१८	६	१०	५	१०	३६	३६	भ. ६/१०तक, शुक्र मघा सिंह में ९/१०, श्री गणेश चतुर्थी(B)
अवम		४	मं.	५९	१२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी तिथिक्षय,
२९	३५	५	बु.	५२	२५	कृ.	४२	१५	व.	३३	२२	कौ.	२५	४८	१३	२९	७	१८	वृ.	०	५८	६	१९	६	९	५	११	३५	३०	पंचमी का श्राद्ध,
२९	३०	६	गु.	४६	८	रो.	३७	४८	सि.	२५	१८	ग.	१९	१७	१४	३०	८	१९	वृष			६	१९	६	७	५	१२	३४	२५	भ.४६/८ बाद, षष्ठी का श्राद्ध,
२९	२५	७	शु.	४०	३०	मृ.	३३	५०	व्य.	१७	३८	वि.	१३	१९	१५	अक्तू. १	९	२०	मि.	५	४९	६	२०	६	६	५	१३	३३	२२	अक्तूबर प्रारम्भ,भ. २३/१९ तक, बुध तुला में ४/२,सप्तमी(C)
२९	२०	८	श.	३५	३८	आ.	३०	४८	व.	१०	३५	बा.	८	४	१६	२	१०	२१	मिथुन			६	२१	६	५	५	१४	३२	२२	अष्टमी का श्राद्ध, जन्मदिन महात्मा गांधी,
२९	१७	९	र.	३१	४२	पुन.	२८	३५	प. शि.	४ ५८	१५ ३५	तै.	३	४०	१७	३	११	२२	क.	१४	८	६	२१	६	४	५	१५	३१	२६	नवमी का श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध,
२९	१०	१०	चं.	२८	३५	पु.	२७	१५	सि.	५३	३८	व.	०	९	१८	४	१२	२३	कर्क			३	२२	६	२	५	१६	३०	३१	भ. ०/८से२८/३५तक, दशमी का श्राद्ध
२९	८	११	मं.	२६	२५	आश्ले.	२६	४२	सा.	४९	२२	बा.	२६	२५	१९	५	१३	२४	सिं.	२६	४२	६	२२	६	१	५	१७	२९	३८	बुध स्वाती में ३२/२,एकादशी का श्राद्ध, इन्दिरा एकादशी(D)
२९	२	१२	बु.	२५	२	म.	२७	२	शु.	४५	४८	तै.	२५	२	२०	६	१४	२५	सिंह			६	२३	६	०	५	१८	२८	४८	द्वादशी का श्राद्ध, मघा श्राद्ध संन्यासियों का श्राद्ध, (E)
२८	५७	१३	गु.	२४	३५	पू.फा.	२८	१५	शु.	४२	५५	व.	२४	३४	२१	७	१५	२६	क.	४३	४८	६	२४	५	५९	५	१९	२७	००	भ. २४/३५ से ५४/५२ तक, त्रयोदशी का श्राद्ध,
२८	५२	१४	शु.	२५	८	उ.फा.	३०	२८	ब्र.	४०	५०	श.	२५	८	२२	८	१६	२७	कन्या			६	२४	५	५७	५	२०	२७	१४	मंगल मूल धनु में २५/२२, शस्त्र-विष आदि से मृतों का श्राद्ध
२८	४७	३०	श.	२६	१८	ह.	३३	३२	ऐं.	३९	२८	ना.	२६	१८	२३	९	१७	२८	कन्या			६	२५	५	५६	५	२१	२६	३०	शनैश्चरी अमा, गजच्छाया पर्व, चतुर्दशी अमा का श्राद्ध, (F)

(A) उदित ३४/३८,पितृ पक्ष (श्राद्ध) प्रारम्भ, प्रतिपदा और द्वितीया का श्राद्ध,(B) व्रत, चतुर्थी का श्राद्ध,(C) का श्राद्ध, श्री महालक्ष्मी व्रत समाप्त , (D)व्रत (स.),
(E)प्रदोष व्रत, महात्रयोदशी (१६घं.२४ मि. बाद) (F) सर्वपितृ श्राद्ध, श्राद्ध समाप्त,

आश्विन कृ. ८ शनि, इष्ट ५७।५२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५ १५ २९ २०	२ २६ १५ २८	७ २६ १० २१	६ २ ५१ ५७	० ८ ४४ ५१	४ २ ५३ ३	० २२ २० ४३	३ १५ ५९ ९	९ १५ ५९ ९
५९ ३	८२४ ३५	४१ ५१	८९ २३	६ ५५	३९ ३७	३ २३	३ ११	३ ११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदये

७ बु.
सू. ६
५शु.
मं. ८
४ रा.
९
३चं.
१० के.
१२
२
११
गु.१ श.

लोक भविष्य- यहां आश्विन कृष्ण तृतीया को मंगलवार है, खाद्य वस्तुओं में भारी महंगाई से जनता कष्ट पाए। कहीं अग्निकाण्ड व प्राकृतिक प्रकोप से जनधन हानि हो, 'आश्विने हि तृतीयायां यदि भौमशनैश्चरौ। तदा त्वग्निभयं विद्यादशवान्न महर्घता।' यहां अमावस शनैश्चरी होने से शासन को कहीं अकाल की स्थिति का सामना करना पड़े। पक्षान्त में धनु राशि का मंगल दक्षिणी गोलार्ध व देशों में प्राकृतिक उत्पाद का संकेत देता है ।

ग्रहचाल और बाजार का रुख- पक्षारंभ में रुई एवं शेयरों में १५ दिन में जोरदार मन्दी आए। २८ सितम्बर के लगभग सोना, तांबा, जौ, चना, गेहूं, लाल चन्दन, मजीठ, लाल मिर्च, घी, गुड़ खाण्ड में तेजी बने। अक्तूबर के प्रारम्भ में तेल तिलहन में मन्दा हो। पक्षान्त में बिनौला, सरसों, घी एवं [illegible]

कुण्डली सूर्योदये

७ बु.
६ सू. चं.
५ शु.
८
४ रा.
९मं.
३
१० के.
१२
२
११
श.१ गु.

आश्विन कृ. ३० शनि, इष्ट ५७।४२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५ २२ २३ ३२	५ २८ २१ ४८	८ १ ५ ३८	६ १२ ५९ ०	० ७ ५४ ११	४ ७ ५३ २	० २१ ५५ २७	३ १५ ३६ ५३	९ १५ ३६ ५३
५९ १९	७४३ २२	४२ ३७	८३ १	७ ३७	४६ ४९	३ ५४	३ ११	३ ११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण- सितम्बर २६,२८ अक्टूबर १ एवं ८ के लगभग कहीं बादल चाल, बूंदाबादी हो, ध्यान दें- सिंह राशि में शुक्र का प्रवेश वर्षा में रुकावट का कारण बनेगा ।'सिंह शुक्र जब होय भवानी। चाले पवन नहीं बरसे पानी।'

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१, आश्विन शुक्ल पक्ष १५

दि. मा. घ.	दि. मा. प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	योग	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	करण	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	तारीखें प्र. आश्वि.	तारीखें अं. अक्टू.	तारीखें श. आश्विन	तारीखें मु. ज.उ.	चन्द्र राशि प्रवेश काल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा.स्टैं.टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सर्यास्त घं.	सर्यास्त मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	(१० से २४ अक्तू. तक, सन् १९९९ ई.) दक्षिणायन, दक्षिण गोल, शरद्-हेमन्त ऋतु।
																														ग्रह दर्शन - २३ अक्तूबर को बुध सूर्य से पश्चिम में परम अन्तर (२४°) पर होगा। प्रातः गुरु शनि पश्चिम में सायं मंगल पूर्व कपाल में होगा। सायं शुक्र भी पश्चिम में होगा ।
२८	४२	१	र.	२९	१२	चि.	३७	४५	वै.	३८	५८	ब.	२९	१२	२४	१०	१८	२९	तु.	५	३८	६	२६	५	५५	५	२२	२५	४८	चन्द्र दर्शन मु. ३०, सूर्य चित्रा में ५४/४२शारद नवरात्र प्रारम्भ(A)
२८	४०	२	चं.	३२	५८	स्वा.	४३	०	वि.	३९	२२	बा.	१	५	२५	११	१९	र. १	तुला			६	२६	५	५४	५	२३	२५	९	रजब मु. प्रारम्भ,
२८	३५	३	मं.	३७	४५	वि.	४९	१५	प्री.	४०	३२	तै.	५	२२	२६	१२	२०	२	वृ.	३२	४१	६	२७	५	५३	५	२४	२४	३१	
२८	३०	४	बु.	४३	३०	अनु.	५६	२२	आ.	४२	२५	व.	१०	३७	२७	१३	२१	३	वृश्चिक			६	२७	५	५१	५	२५	२३	५६	भ. १०/३८ से ४३/३० तक,
२८	२५	५	गु.	४९	५५	ज्ये.	६०	००	सौ.	४४	४२	ब.	१६	४३	२८	१४	२२	४	वृश्चिक			६	२८	५	५०	५	२६	२३	२३	नेपच्यून मार्गी ५/२, उपाङ्ग ललिता व्रत,
२८	२०	६	शु.	५६	१८	ज्ये.	३	५८	शो.	४७	१२	कौ.	२३	६	२९	१५	२३	५	ध.	३	५८	६	२९	५	४९	५	२७	२२	५१	बुध विशा.में १०/१५, सरस्वती आवाहन (देखें पृ०97)
२८	१८	७	श.	६०	००	मू.	११	३५	अ.	४९	२०	ग.	३०	३३	३०	१६	२४	६	धनु			६	२९	५	४८	५	२८	२२	२०	शुक्र पू.फा. में ३६/३२, सरस्वती पूजन (देखें पृ. 97)
२८	१२	७	र.	२	१८	पू.षा.	१८	३८	सु.	५०	४५	व.	४	४८	का. १	१७	२५	७	म.	३५	६	६	३०	५	४७	५	२९	२१	५२	भ.२/१८से ३४/४६ तक, सं. सूर्य तुला में ३८/२२, (B)
२८	८	८	चं.	७	१५	उ.षा.	२४	३२	धृ.	५१	८	ब.	७	१५	२	१८	२६	८	मकर			६	३१	५	४६	६	०	२१	२६	सरस्वती विसर्जन (देखें पृ०98), महाष्टमी, श्री दुर्गाष्टमी(C)
२८	५	९	मं.	१०	४०	श्र.	२८	५०	शू.	५०	२	कौ.	१०	४०	३	१९	२७	९	कु.	५९	५९	६	३१	५	४५	६	१	२१	१	पञ्चक प्रार. ५९/५९, वक्री गुरु अश्वि.२ में २३/३५, (D)
२८	०	१०	बु.	१२	५	ध.	३१	८	ग.	४७	२०	ग.	१२	५	४	२०	२८	१०	कुम्भ			६	३२	५	४४	६	२	२०	३८	भ. ४१/४४बाद, भरत मिलाप
२७	५३	११	गु.	११	२२	श.	३१	२०	वृ.	४२	५५	वि.	११	२२	५	२१	२९	११	कुम्भ			६	३३	५	४३	६	३	२०	१७	भ. ११/२२ तक, पापांकुशा एकादशी व्रत (स.)
२७	५०	१२	शु.	८	३२	पू.भा.	२९	३२	ध्रु.	३६	५८	बा.	८	३२	६	२२	३०	१२	मी.	१४	५९	६	३३	५	४१	६	४	१९	५७	प्रदोष व्रत
२७	४५	१३	श.	३	५०	उ.भा.	२५	५५	व्या	२९	२५	तै.	३	५०	७	२३	का. १	१३	मीन			६	३४	५	४०	६	५	१९	४०	भ. ५७/२८ बाद, बुध वृश्चिक में ३५/२२, सूर्य सायन (E)
अवम		१४	श.	५७	२८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चर्तुदशी तिथिक्षय
२७	४०	१५	र.	४९	५२	रे.	२०	५०	ह.	२०	४८	वि.	२३	४०	८	२४	२	१४	मे.	२०	५०	६	३५	५	३९	६	६	१९	२४	भ. २३/४०तक,पंचक समाप्त२०/५०,सूर्य स्वा. में,२०/३५(F)

(A) घटस्थापन, नाना का श्राद्ध**(B)** मु.४५,पुण्यकाल मध्याह्नोत्तर, सरस्वती को बलिदान (देखें पृ० 97),**(C)** महानवमी (पूजा उपवास के लिए),**(D)** महानवमी (बलिदान के लिए), विजयादशमी (दशहरा),(देखें पृ.98), अपराजिता पूजन, आयुधपूजा, नवरात्र समाप्त,**(E)** वृश्चिक ४९/३०, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ, यूरेनस मार्गी १३/३० , शक कार्तिक प्रारम्भ,**(F)** श्री सत्यनारायण व्रत, शरद् पूर्णिमा, कोजागर व्रत, कार्तिक स्नान प्रारम्भ, महर्षि बाल्मीकि जयन्ती

आश्विन शुक्ल. ८ चन्द्र , इष्ट ५७।३७

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	९	८	६	०	४	०	३	९
१	१६	७	२४	६	१५	२१	१५	१५
१८	४५	३२	४४	४३	२३	१८	८	८
२९	५१	४९	४९	२५	२७	१०	१७	१७
५९	७५७	४३	७१	८	५३	४	३	३
३५	१३	२९	३०	६	४२	२५	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३	३	३	२	३	१	३	४	२
चित्रा	श्रव.	मूल	विशा.	अश्वि.	पू.फा.	भर.	पुष्य	श्रव.

कुण्डली सूर्योदये

८, ६, ७ सू. बु., ५ शु., ९ मं., ४ रा., १० चं. के., ३, ११, १ गु. श., २, १२

लोक भविष्य- इस मास में पांच रविवार है। कहीं, राजनैतिक अशांति, कहीं किसी विशिष्ट व्यक्ति विशेष का वियोग सहना पड़ेगा, सत्ता हस्तान्तरण का समाचार मिले, कहीं प्राकृतिक प्रकोप व यान दुर्घटना से हानि हो,-'यत्र मासे रवेर्वाराः जायन्ते पंच सततम्। दुर्भिक्षं छत्र भंगः स्यात्तदातत्र महद्भयम्' पक्षान्त में वृश्चिक राशि का बुध घी, तेल आदि दैनिक आवश्यक वस्तुओं में तेजी करेगा ।

ग्रहचाल और बाजार का रुख - १४ अक्टूबर को वाजार का रुख बदले। पक्ष मध्य में रुई, चांदी में मन्दी, गेहूं, जौ, चना, अलसी, सोना एवं ताम्बा तेज रहें। चन्दन, मजीट, सुपारी में भी कुछ तेजी रहे। पक्षान्त में घी, तेल, सरसों, रुई, चांदी में तेजी का वातावरण बने ।

कुण्डली सूर्योदये

८ बु., ६, सू. ७, ५ शु., ९ मं., १० के., ४ रा., ११, १ श. गु., ३, चं. १२, २

आश्विन शुक्ल १५ रवि, इष्ट ५७/१८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	०	८	७	०	४	०	३	९
७	८	११	१	५	२०	२०	१४	१४
१६	५८	५४	२३	५४	५४	५१	४९	४९
२८	२३	५९	१६	४२	५२	३	१२	१२
५९	८९६	४३	५७	८	५७	४	३	३
४६	३८	५९	४७	७	१७	३९	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
१	३	४	४	२	३	३	४	२
स्वा.	अश्वि.	मूल	विशा.	अश्वि.	पू.फा.	भर.	पुष्य	श्रव.

आकाश लक्षण- अक्तूबर १४,१५,१७,१९,२३,२४ को लंका, आसाम, बंगलादेश एवं उत्तरी भारत में कहीं बादल चाल व बूंदाबादी के योग हैं। उत्तर भारत का तापमान गिरेगा।

शकुन विचार- यदि आश्विन शुक्ल पूर्णिमा को आकाश मेघाछन्न रहे, तो धान्य के स्टाक से आगामी चैत्र में अच्छा लाभ मिले। 'आश्विनी निर्मलापूर्णा शुभाय जलदोदये। धान्यस्य संग्रहं कुर्यात् चैत्रे लाभ प्रदो मतः'

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१ **कार्त्तिक कृष्ण पक्ष १६** तारीखें | चन्द्र राशि | चण्डीगढ़ | उदय-कालिक

(२५अक्तू. से ८ नवम्बर तक सन् १९९९ ई.) दक्षिणायन दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु।

ग्रह दर्शन -७ नवम्बर को बुध पश्चिम में दीखना बन्द हो जाएगा। गुरु, शनि सूर्यास्त के लगभग पूर्व में उदित होकर सारी रात दीखेंगे। प्रातः शुक्र पूर्व में एवं सायं मंगल पश्चिम में होगा।

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	प्र. कार्ति.	अं. अक्टू.	श. कार्ति.	मु. र.ज.	चन्द्र राशि प्रवेश काल	घ.	प.	भा.स्टैं.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२७	३५	१	चं.	४१	३२	अ.	१४	४५	व.	११	२२	बा.	१५	४२	९	२५	३	१५	मेष			६	३६	५	३८	६	७	१९	११	
२७	३२	२	मं.	३२	५८	भ.	८	१०	सि. व्य.	१ ५१	३० ३२	तै.	७	१५	१०	२६	४	१६	वृ.	२१	३०	६	३६	५	३७	६	८	१८	५९	भ. ५८/४४ बाद, मंगल पू.षा. में ५३/०,
२७	२८	३	बु.	२४	३०	कृ. रो.	१ ५५	३० १५	व.	४१	४५	वि.	२४	३०	११	२७	५	१७	वृष			६	३७	५	३६	६	९	१८	५१	भ.२४/३० तक, बुध अनु. में २/२, श्री गणेश चतुर्थी व्रत(A)
२७	२२	४	गु.	१६	३२	मृ.	४९	४०	प.	३२	३०	बा.	१६	३२	१२	२८	६	१८	मि.	२२	२८	६	३८	५	३५	६	१०	१८	४४	
२७	२०	५	शु.	९	३२	आ.	४५	१०	शि.	२४	५	तै.	९	३२	१३	२९	७	१९	मिथुन			६	३८	५	३४	६	११	१८	३८	
२७	१५	६	श.	३	३५	पुन.	४१	५५	सि.	१०	१०	व.	३	३५	१४	३०	८	२०	क.	२७	४४	६	३९	५	३३	६	१२	१८	३४	भ.३/३५ से ३१/१८ तक, शुक्र उ.फा. में ५०/५०,
अवम		७	श.	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	सप्तमी तिथिक्षय,
२७	१२	८	र.	५५	४८	पु.	४०	०	सा.	४	५०	बा.	२७	२४	१५	३१	९	२१	कर्क			६	४०	५	३३	६	१३	१८	३२	अहोई अष्टमी (पंजाब),
२७	७	९	चं.	५३	५८	आश्ले.	३९	२८	शु. शु.	० ५७	३८ २८	तै.	२४	५३	१६	न. १	१०	२२	सिं.	३९	२८	६	४१	५	३२	६	१४	१८	३२	नवम्बर प्रारम्भ,
२७	२	१०	मं.	५३	२५	म.	४०	१०	ब्र.	५५	८	व.	२३	४२	१७	२	११	२३	सिंह			६	४२	५	३१	६	१५	१८	३६	भ. २३/४२ से ५३/२५ तक,
२७	०	११	बु.	५४	८	पू.फा.	४२	८	ऐं.	५३	४०	ब.	२३	४६	१८	३	१२	२४	क.	५७	५२	६	४२	५	३०	६	१६	१८	४२	शुक्र कन्या में ८/३०, रमा एकादशी व्रत (स.)
२६	५५	१२	गु.	५५	५०	उ.फा.	४५	५	वै.	५२	५५	कौ.	२४	५९	१९	४	१३	२५	कन्या			६	४३	५	२९	६	१७	१८	४९	वक्री शनि भर.२ में ३९/४०, गोवत्स द्वादशी,
२६	५०	१३	शु.	५८	३०	ह.	४९	०	वि.	५२	५०	ग.	२७	१०	२०	५	१४	२६	कन्या			६	४४	५	२८	६	१८	१८	५९	भ. ५८/३० बाद, बुध वक्री ३/३५, प्रदोष व्रत, धन (B)
२६	४५	१४	श	६०	०	चि.	५३	४८	प्री.	५३	२२	वि.	३०	१६	२१	६	१५	२७	तु.	२१	२४	६	४५	५	२७	६	१९	१९	११	भ. ३०/१६ तक, सूर्य विशा. में ४०/३५
२६	४२	१४	र.	२	२	स्वा.	५९	२२	आ.	५४	३५	श.	२	२	२२	७	१६	२८	तुला			६	४६	५	२७	६	२०	१९	२५	बुध पश्चिम में अस्त ३५/५८, दीपावली, श्री लक्ष्मी पूजा(c)
२६	४०	३०	चं.	६	३२	वि.	६०	०	सौ.	५४	३८	ना.	६	३२	२३	८	१७	२९	वृ.	४९	११	६	४६	५	२६	६	२१	१९	४०	सोमवती अमा, गोवर्धन पूजा, अन्नकूट ,बलिपूजा,

(A) करक चतुर्थी (करवा चौथ) (चन्द्रोदय रात्रि ७ घं. ५८ मि.),**(B)** त्रयोदशी, यम को दीपदान,**(C)** नरक चतुर्दशी (पहले अरुणोदय वाली),श्री हनुमान जयन्ती, श्री महावीर निर्वाण (जैन)

कार्तिक कृष्ण ८ रवि, इष्ट ५७/५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	८	७	०	४	०	३	९
१४	२०	१७	६	४	२७	२०	१४	१४
१५	१०	४	४७	५८	४६	१७	२६	२६
३७	५४	२८	२०	२३	२५	५६	५६	५६
६०	८०१	४४	२६	७	६०	४	३	३
२	४०	२९	४४	५३	३९	४९	११	११
–	–	मा.	मा	व.	मा	व.	व	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

कुण्डली सूर्योदये

८बु.
६
७ सू.
९ मं.
शु. ५
१० के
४ चं.रा.
११
गु.१ श
३
१२
२

लोक भविष्य- इस मास में पांच चन्द्रवार हैं, धन-धान्य समृद्धि रहे, जनता में परस्पर सौमनस्य सुख रहे,-'**सोमस्य पंचवारास्तु यत्र मासे भवन्ति हि। धनधान्य समृद्धिःस्यात् सुखं भवति सर्वदा।**' कार्तिक कृष्ण-पंचमी को आर्द्रा नक्षत्र होने से पशुचारा की कमी रहे। कुछ प्रान्तों में वर्षा की कमी अनुभव हो। इस मास में बुध-गुरु शनि का वक्र होना कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि का संकेत देता है।

ग्रहचाल और बाजार का रुख- पक्षारम्भ में सोना, चांदी, चावल, उड़द, घी, दूध, तिल तेल, सरसों, मूंगफली में तेजी, सूत, सण, रुई, सोना चांदी में मन्दा बने। ३ नवं. के लगभग सभी प्रकार के अनाज, गुड़, खाण्ड, घास, व उनी, रेशमी वस्त्रों में तेजी, चावलों में विशेष तेजी का झटका आए। ५ नवं. के लगभग गुड़ खांड, घी, शक्कर में तेजी, रुई में जोरदार तेजी के बाद मन्दा बने। अनाजों में अचानक मन्दा बने।

कुण्डली सूर्योदये

बु. ८
६ शु.
मं. ९
चं. ७ सू.
५
१० के
४ रा.
११
गु. १ श.
३
१२
२

कार्तिक कृष्ण ३० चन्द्र, इष्ट ५६/५०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	७	८	७	०	५	०	३	९
२२	१	२३	६	३	६	१९	१४	१४
१६	३१	२	४३	५७	२	३९	१	१
४७	३५	२९	१९	१५	४७	११	३१	३१
६०	७१६	४५	४१	७	६३	४	३	३
१७	३१	३	३३	१५	३९	५१	११	११
–	–	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.	व.
–	–	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

आकाश लक्षण- नवम्बर ३,४,७ के लगभग पर्वतीय भूभाग पर वर्षा के योग हैं, उत्तरी भारत में शीत का प्रभाव बढ़ने लगेगा। कहीं वायु-वेग के साथ खण्ड वृष्टि भी हो।

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१,						**कार्त्तिक शुक्ल पक्ष१७**										तारीखें				चन्द्र राशि			चण्डीगढ़				उदय-कालिक				(९ से २३नवम्बर तक सन् १९९९ ई.) दक्षिणायन,दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु।
दि. मा.		तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		करण	समाप्ति काल			प्र.	अं.	श.	मु	प्रवेश काल			भा.स्टैं.टा.				स्पष्ट सूर्य				ग्रह दर्शन - प्रातः शुक्र पूर्व में दीखेगा। सायं मंगल पश्चिम कपाल में होगा। गुरु-शनि पूर्व में दृश्य होंगे।
																कार्ति.	नवं.	कार्ति.	र.ज.				सूर्योदय		सर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.							घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२६	३५	१	मं.	११	४८	वि.	५	४८	शो.	५६	५	ब.	११	४८		२४	९	१८	३०	वृश्चिक			६	४७	५	२५	६	२२	१९	५८	चन्द्र दर्शन मु. ३०
२६	३३	२	बु.	१७	४५	अनु.	१२	५०	अ.	५८	३०	कौ.	१७	४५		२५	१०	१९	शा१	वृश्चिक			६	४८	५	२५	६	२३	२०	१७	यम द्वितीया,भाई दूज (देखें पृ. ९४)विश्वकर्मा पूजा, शाबान प्रा.
२३	२८	३	गु.	२४	१५	ज्ये.	२०	२५	सु.	६०	०	ग.	२४	१५		२६	११	२०	२	ध.	२०	२५	६	४९	५	२४	६	२४	२०	३८	भ. ५६/३६ बाद,
२६	२३	४	शु.	३०	५८	मू.	२८	१२	सु.	०	५५	वि.	३०	५८		२७	१२	२१	३	धनु			६	५०	५	२३	६	२५	२१	१	भ.३०/५८तक,वक्री बुध विशा.में ४१/२०,शुक्र हस्त में३८/३८
२६	२३	५	श.	३७	२८	पू.षा.	३५	५०	धृ.	३	२२	ब.	४	१३		२८	१३	२२	४	म.	५२	३२	६	५०	५	२३	६	२३	२१	२५	मंगल उ.षा. में ४५/३०,
२६	१८	६	र.	४३	१०	उ.षा.	४२	४५	शू.	५	२५	कौ.	१०	१९		२९	१४	२३	५	मकर			६	५१	५	२२	६	२७	२१	५१	वक्री गुरु अश्वि.१में १६/२८, जन्मदिन जवाहरलाल नेहरु(A)
२६	१३	७	चं.	४७	३५	श्र.	४८	२०	गं.	६	४५	ग.	१५	२२		३०	१५	२४	६	मकर			६	५२	५	२१	६	२८	२२	१९	भ. ४७/३५ बाद,वक्री बुध तुला में १७/५५,
२६	१०	८	मं.	५०	१५	ध.	५२	१८	वृ.	६	५८	वि.	१८	५५		मार्ग १	१६	२५	७	कु.	२०	१९	६	५३	५	२१	६	२९	२२	४८	भ. १८/५५ तक, पञ्चक प्रा.२०/१९,सं.सूर्य वृश्चिक (B)
२६	५	९	बु.	५०	४८	श.	५४	१५	धु.	५	४७	बा.	२०	३२		२	१७	२६	८	कुम्भ			६	५४	५	२०	७	०	२३	१८	कूष्माण्ड नवमी,अक्षय नवमी (C)
२६	२	१०	गु.	४९	५	पू.भा.	५४	०	व्या ह.	२ ५८	४७ १२	तै.	१९	५६		३	१८	२७	९	मी.	३९	४	६	५५	५	२०	७	१	२३	४९	मंगल मकर में ९/२८,
२५	५८	११	शु.	४५	१२	उ.भा.	५१	३५	व.	५१	५०	व.	१७	०८		४	१९	२८	१०	मीन			६	५६	५	१९	७	२	२४	२२	भ.१७/९से४५/१२तक,सूर्य अनु. में ५५/५, भीष्म पंचक (D)
२५	५८	१२	श.	३९	२२	रे.	४७	२०	सि.	४३	५५	ब.	१२	१७		५	२०	२९	११	मे.	४७	२०	६	५६	५	१९	७	३	२४	५६	पञ्चक समाप्त ४७/२०,तुलसी विवाह,
२५	५५	१३	र.	३१	५५	अ.	४१	२८	व्य.	३४	४२	कौ.	५	३९		६	२१	३०	१२	मेष			६	५७	५	१९	७	४	२५	३१	राहु पुष्य३,केतु श्रव.१में ५९/४५, प्रदोष व्रत, वैकुण्ठ चतुर्दशी,
२५	५०	१४	चं.	२३	१८	भ.	३४	३२	व.	२२	३५	व.	२३	१८		७	२२	मार्ग १	१३	वृ.	४७	३९	६	५८	५	१८	७	५	२६	७	भ. २३/१८ से ४८/३७ तक, सूर्य सायन, (E)
२५	४८	१५	मं.	१३	५५	कृ.	२६	५८	प.	१३	५०	ब.	१३	५५		८	२३	२	१४	वृष			६	५९	५	१८	७	६	२६	४४	भीष्म पंचक समाप्त, श्री गुरु नानक जयन्ती (F)

(A) बाल दिवस (बाल मेला)(B) ३६/५०, मु ३० पुण्यकाल मध्याह्नोत्तर, गोपाष्टमी(C) बलिदान दिन लाला लाजपत राय(D) प्रारम्भ, देव प्रबोधिनी एकादशी व्रत (स.),(E) धनु में ४२/२२ सत्यनारायण व्रत, शक मार्गशीर्ष प्रारम्भ,(F) कार्त्तिक स्नान समाप्त, कार्तिक पूर्णिमा,

कार्तिक शुक्ल ८ मंगल, इष्ट ५६/३२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१०	८	६	०	५	०	३	९
०	७	२९	२७	३	१४	१९	१३	१३
१९	१२	४	४८	२	४०	०	३६	३६
४६	३९	३३	१०	२९	३८	५२	५	५
६०	७९६	४५	७६	६	६५	४	३	३
२९	७	३०	३२	१५	५९	४१	११	११
-	-	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४	१	१	३	१	२	२	४	२
विशा.	शत.	उ.षा.	विशा.	अश्वि.	हस्त	भर.	पुष्य	श्रव.

कुण्डली सूर्योदये

९ मं.
७ बु
चं.१० के.
सू. ८
६ शु.
११
५
१२
२
४ रा.
गु. १ श.
३

लोक भविष्य- इस मास में पांच चन्द्र एवं मंगलवार हैं, अतः पश्चिमी देशों एवं मुस्लिम देशों में कहीं घोर आन्तरिक कलह से वातावरण अशांत हो, कहीं रक्तपात से सत्ता हस्तान्तरण हों, 'यत्र मासे महीसूनोर्जायन्ते पंच वासरा;। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्।' किसी विशिष्ट व्यक्ति का पद कार्तिक किंवा मार्गशीर्ष में रिक्त हो। इस पक्ष में शनि-मंगल का दशम-चतुर्थ योग कहीं युद्धग्नि को भी प्रज्वलित कर सकता है ।

ग्रहचार और बाजार का रुख- पक्षारम्भ में रुई, चांदी, चावल में विशेष मन्दे का वातावरण रहे। अनाजों व दालवाना में इस समय मन्दी आने पर स्टाक करें, आगे अच्छा लाभ मिलेगा। १३ नवम्बर के लगभग रुई में अचानक तेजी से लाभ लें। १५ नवम्बर के लगभग रुई, गुड़ खाण्ड, सेना, अलसी, सरसों आदि तेलवीया में मन्दे की आशा होने पर भी तेजी ही रहे।

कुण्डली सूर्योदये

९
७ बु
के. १० मं.
सू. ८
६ शु
११
५
१२
२ चं.
४ रा.
गु.१ श.
३

कार्तिक शुक्ल १५ मंगल,इष्ट ५६/१७

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१	९	६	०	५	०	३	९
७	१७	४	२१	२	२२	१८	१३	१३
२३	२७	२३	५३	२१	२७	२८	१३	१३
३५	३३	५९	४६	५२	४७	४९	५०	५०
६०	११३	४५	७	५	६७	४	३	३
३८	३७	४७	१९	१०	३९	२५	११	११
-	-	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२	३	३	१	१	४	२	३	१
अनु.	रे.	उ.षा.	विशा.	अश्वि.	हस्त	भर.	पुष्य	श्रव.

आकाश लक्षण- नवम्बर १२ से १८, तक काश्मीर, भूटान, शिलांग, हि.प्र. एवं कुछ अन्य उत्तरी भारत में वायुवेग के साथ बादलचाल वर्षा व बूंदाबादी के योग हैं। शरद ऋतु का प्रभाव बढ़े।

शकुन विचार- कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को सूर्य के चारों तरफ परिवेष (घेरा) दिखाई दे तो तेल के स्टाक से आगे लाभ लें।

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१,						**मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष१८**									तारीखें				चन्द्र राशि			चण्डीगढ़				उदय-कालिक				(२४ नवम्बर से ७ दिसम्बर तक सन् १९९९ ई.) दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु।
दि. मा.		तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		करण	समाप्ति काल		प्र.	अं.	श	मु	प्रवेश काल			भा.स्टैं.टा.				स्पष्ट सूर्य				**ग्रह दर्शन** - ५ दिसम्बर को बुध का सूर्य से अन्तर अधिकतम होगा। २४ नवम्बर को बुध प्रातः पूर्व में दीखने लगेगा। सांय गु. श. पूर्व में होंगे। मंगल पश्चिम कपाल में होंग। प्रातः शुक्र-बुध पूर्व में होंगे।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	मार्ग.	नवं.	मार्ग.	शाबा.		घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सर्यास्त घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२५	४२	१	बु.	४	२०	रो.	१९	१८	शि. सि.	२ ५२	५३ ८	कौ.	४	२०	९	२४	३	१५	मि.	४५	३८	७	०	५	१८	७	७	२७	२३	शुक्र चित्रा में ४२/३० बुध पूर्व में उदित ३३/२,
अवम		२	बु.	५५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वितीय तिथिक्षय
२५	४०	३	गु.	४६	१८	मृ.	११	५८	सा.	४१	५५	व.	२०	३९	१०	२५	४	१६	मिथुन			७	१	५	१७	७	८	२८	४	भ.२०/१९ से ४६/१८ तक, बुध मार्गी ६/२२,
२५	३८	४	शु.	३८	४०	आ.	५	२८	शु.	३२	३२	ब.	१२	२९	११	२६	५	१७	क.	५६	३०	७	२	५	१७	७	९	२८	४६	श्री गणेश चतुर्थी व्रत,
२५	३८	५	श.	३२	३०	पुन. पु.	० ५३	१० २५	शु.	२४	१८	कौ.	५	३५	१२	२७	६	१८	कर्क			७	२	५	१७	७	१०	२९	२९	
२५	३५	६	र.	२७	५२	आश्लृ	५४	१८	ब्र.	१७	२०	ग.	०	११	१३	२८	७	१९	सि.	५४	१८	७	३	५	१७	६	११	३०	१३	भ. २७/५२ से ५६/२९ तक,
२५	३२	७	चं.	२५	५	म.	५३	५२	ऐं.	११	४२	ब.	२५	५	१४	२९	८	२०	सिंह			७	४	५	१७	७	१२	३०	५८	
२५	२७	८	मं.	२४	०	पू.फा.	५५	१०	वै.	७	३२	कौ.	२४	०	१५	३०	९	२१	सिंह			७	५	५	१६	७	१३	३१	४५	भ. ५५/४२ बाद, शुक्र तुला में ३३/३२, श्री कालाष्टमी(A)
२५	२५	९	बु.	२४	३८	उ.फा.	५८	०	वि.	४	४०	ग.	२४	३८	१६	दि.१	१०	२२	क.	१०	५३	७	६	५	१६	७	१४	३२	३४	भ. २४/३८ तक, मंगल श्रवण में १५/१० दिसम्बर प्रारम्भ,
२५	२३	१०	गु.	२६	४५	ह.	६०	०	प्री.	३	०	वि.	२६	४५	१७	२	११	२३	कन्या			७	७	५	१६	७	१५	३३	२५	
२५	२२	११	शु.	३०	१२	ह.	२	१०	आ.	२	२५	बा.	३०	१२	१८	३	१२	२४	तु.	३४	४८	७	७	५	१६	७	१६	३४	१७	सूर्य ज्येष्ठा में ५/३०, उत्पन्ना एकादशी व्रत(स.),
२५	२०	१२	श.	३४	४०	चि.	७	२५	सौ.	२	४०	कौ.	२	२७	१९	४	१३	२५	तुला			७	८	५	१६	७	१७	३५	१२	
२५	१८	१३	र.	३९	५५	स्वा.	१३	३२	शो.	३	३५	ग.	७	१७	२०	५	१४	२६	तुला			७	९	५	१६	७	१८	३६	८	भ. ३९/५५ बाद, प्रदोष व्रत,
२५	१५	१४	च.	४५	४८	वि.	२०	१८	अ.	५	०	वि.	१२	५१	२१	६	१५	२७	वृ.	३	३८	७	१०	५	१६	७	१९	३७	४	भ. ११/५१ तक, बुध वृश्चिक में १७/५, शुक्र स्वा में(B)
२५	१२	३०	मं.	५२	५	अनु.	२७	३२	सु.	६	५२	च.	१८	५७	२२	७	१६	२८	वृश्चिक			७	११	५	१६	७	२०	३८	१२	भौमवती अमावस,

(A) (श्री भैरवाष्टमी)(B) १९/१८ , वेंकटेश(प्लूटो) ज्येष्ठा १ में

मार्गशीर्ष कृष्ण ८ मंगल, इष्ट ५६/२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	४	९	६	०	६	०	३	९
१४	२६	९	२४	१	०	१७	१२	११
२८	५०	४५	२५	४९	२५	५९	५१	५१
३५	२१	२२	१९	२४	४४	१	३४	३४
६०	७६३	४६	५२	३	६९	४	३	३
४९	३१	४	३०	५४	३	१	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

कुण्डली सूर्योदये

९ बु ७ शु
मं.१० के
८ सू.
६
११
५चं.
१२
२
४ रा.
३
श.१गु.

लोक भविष्य- इस पक्ष में मंगल-राहु का समसप्तक, शनि-मंगल का परस्पर दृष्टि सम्बन्ध चीन, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, रूस एवं यूरोपीय बड़े देशों के लिए शुभ नहीं। कहीं भूकम्प से हानि, कहीं बड़े राजनीतिज्ञ को कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़े। कहीं सीम-प्रान्तों पर सैन्य हलचल से तनाव की स्थिति बने । मकर-मीन -कन्या एवं मेष राशि वाले देशों को कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़ेगा।

ग्रहचाल और बाजार का रुख- पक्षारम्भ में ही बुध के मार्गी होने पर बाजार का रुख अचानक तेल, तिलहन में मन्दे का वातावरण बन सकता है। पक्ष मध्य में एवं पक्षान्त में तुला राशि के शुक्र-बुध तेल तिलहन में मन्दे का संकेत देते हैं , लेकिन शीघ्र ही बाजार तेजी की तरफ बढेंगे, सावधानी से काम करें।

कुण्डली सूर्योदये

के ९ बु ७ शु
१० मं
८ सू च.
६
११
५
१२
२
४ रा.
३
गु.१श.

मार्गशीर्ष कृष्ण ३० मंगल, इष्ट ५५/४७

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	९	७	०	६	०	३	९
२१	२२	१५	२	१	८	१७	१२	१२
३४	१४	८	२	२६	३२	३२	२९	२९
४५	८	२८	४६	७	२९	१८	१८	१८
६०	७०९	४६	७७	२	७०	३	३	३
५८	२६	१७	४३	३१	१०	३१	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

आकाश लक्षण- २४ नवम्बर को हवा का जोर रहे, नवम्बर २५,३० एवं दिसम्बर ६ को उत्तरी भारत में बादल चाल व वर्षा हो। शीत लहर जोर पकड़े। हि.प्र., काश्मीर, में जोरदार वर्षा व हिमपात से शीत भयंकर हो।

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष १९ | तारीखें | चन्द्र राशि | चण्डीगढ़ | उदय-कालिक

(८ से २२ दिसम्बर तक, सन् १९९९ ई.)
दक्षिण-उत्तरायण, दक्षिण गोल, हेमन्त शिशिर ऋतु।

ग्रह दर्शन - २१ दिसम्बर को बुध पूर्व में अदृश्य हो जाएगा। प्रातः बु.,शु. को पूर्व में देखें। सायं मंगल पश्चिम में एवं गु.,श. पूर्व में दीखेंगे।

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	प्र. मार्ग.	अं. दिसं.	श. मार्ग.	मु. शाबा.	चन्द्र राशि प्रवेश काल	घ.	प.	भा.स्टै.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२५	१२	१	बु.	५८	४२	ज्ये.	३५	८	धृ.	९	२	किं.	२५	२४	२३	८	१७	२९	ध.	३५	८	७	११	५	१६	७	२१	३९	१	बुध अनुराधा में ५५/२०,
२५	१२	२	गु.	६०	०	मू.	४२	४८	शू.	११	२०	बा.	३२	२०	२४	९	१८	३०	धनु			७	१२	५	१७	७	२२	४०	२	चन्द्र दर्शन मु.३०,
२५	१०	२	शु.	५	१८	पू.षा.	५०	२०	गं.	१३	३८	कौ.	५	१८	२५	१०	१९	र.१	धनु			७	१३	५	१७	७	२३	४१	१	रमजान मु. प्रारम्भ,
२५	१०	३	श.	११	४५	उ.षा.	५७	२८	वृ.	१५	४५	ग.	११	४५	२६	११	२०	२	म.	७	७	७	१३	५	१७	७	२४	४२	१	भ. ४४/३७ बाद, यूरेनस श्रव. ४ में ७/४९,
२५	८	४	र.	१७	३०	श्र.	६०	०	ध्रु.	१७	२२	वि.	१७	३०	२७	१२	२१	३	मकर			७	१४	५	१७	७	२५	४३	५	भ. १७/३० तक,
२५	५	५	चं.	२२	१८	श्र.	३	४३	व्या	१८	१५	बा.	२२	१८	२८	१३	२२	४	कुं.	३६	१५	७	१५	५	१७	७	२६	४४	७	पंचक प्रा. ३६/१५बाद,बलिदान दिन गुरु तेग बहादुर जी,
२५	५	६	मं.	२५	४०	ध.	८	४८	ह.	१८	१०	तै.	२५	४८	२९	१४	२३	५	कुम्भ			७	१६	५	१८	७	२७	४५	१०	गुहषष्ठी, चम्पाषष्ठी,
२५	५	७	बु.	२७	२८	श.	१२	२२	व.	१६	४८	व.	२७	२८	३०	१५	२४	६	मीं.	५८	३६	७	१६	५	१८	७	२८	४६	१३	भ. २७/२८से ५७/२२ तक, मित्र सप्तमी,
२५	२	८	गु.	२७	१५	पू.भा.	१४	०	सि.	१३	५२	ब.	२७	१५	पौ.१	१६	२५	७	मीन			७	१७	५	१८	७	२९	४७	१८	सं. सूर्य मूल धनु में १२/२५ मु,३०,पुण्यकाल सारा दिन,
२५	२	९	शु.	२४	५५	उ.भा.	१३	४०	व्य.	९	२५	कौ.	२४	५५	२	१७	२६	८	मीन			७	१८	५	१९	८	०	४८	२३	शुक्र विशाखा में ३९/२,
२५	२	१०	श.	२०	३५	रे.	११	२२	व. प.	३ ५५	२० ४८	ग.	२०	३५	३	१८	२७	९	मे.	११	२२	७	१८	५	१९	८	१	४९	२८	भ. ४७/३२ बाद, पंचक समाप्त ११/२२, मंगल धनिष्ठा (A)
२५	२	११	र.	१४	३०	अ.	७	१५	शि.	४६	५५	वि.	१४	३०	४	१९	२८	१०	मेष			७	१९	५	२०	८	२	५०	३३	भ. १४/३० तक, मोक्षदा एकादशी व्रत (स.),श्रीगीता जयन्ती,
२५	२	१२	चं.	६	५३	भ. कृ.	१ ५४	३८ ५०	सि.	३७	०	बा.	६	५३	५	२०	२९	११	वृ.	१४	५६	७	१९	५	२०	८	३	५१	३८	गुरु मार्गी ३३/५०, सोम प्रदोष व्रत,
अवम		१३	चं.	५८	१२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	त्रयोदशी तिथिक्षय
२५	०	१४	मं.	४८	४८	रो.	४७	२०	सा.	२६	२२	ग.	२३	३०	६	२१	३०	१२	वृष			७	२०	५	२०	८	४	५२	४४	भ. ४८/४८ बाद, बुध पूर्व में अस्त ६/१२,
२५	२	१५	बु.	३९	१२	मृ.	३९	३८	शु.	१५	२८	वि.	१४	०	७	२२	पौ१	१३	मि.	१३	२९	७	२०	५	२१	८	५	५३	४९	भ. १४/० तक, सूर्य सायन मकर में १५/२,उत्तरायण(B)

(A) में ३१/२०,बुध ज्येष्ठा में २१/४२,**(B)** शिशिर ऋतु प्रारम्भ, श्री सत्यनारायण व्रत, श्री दत्त जयन्ती, शक पौष प्रारम्भ,

मार्ग शीर्षशुक्ल ८ गुरु, इष्ट ५५/३२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	११	९	७	०	६	०	३	९
०	१२	२२	१४	१	१९	१७	१२	१२
४३	१२	५	३३	१०	८	३	०	०
४८	५०	४६	१५	४९	१४	४१	४२	४२
६१	८४२	४६	८७	०	७१	२	३	३
३	२९	५७	५५	३९	१३	४४	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ
१	३	४	४	१	४	२	३	१
मूल.	उ.भा.	श्रव.	अनु.	आश्ले.	स्वा.	भर.	पुष्य	श्रव.

कुण्डली सूर्योदये

के १०
मं.
बु. ८
११
९
सू.
७ शु.
१२
चं.
६
१गु.
श.
३
५
२
४
रा

लोक भविष्य-इस पक्ष में तिथिवृद्धि एवं तिथिक्षय होने से जन जीवनोपयोगी वस्तुओं में मन्दा बनेगा। **''जेहि पखवारे तिथि बढै वाही में घट जाय। सभी वस्तु मन्दी बिकें मंहगाई घट जाय''**। मार्ग-शुक्ल पक्ष में तिथिक्षय होने से किसी राष्ट्र विशेष की शासन सत्ता में परिवर्तन हो, प्रजा में रोगादि से कष्ट एवं कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति भी बन सकती है-**''मार्गशीर्षादि मासेषु शुक्ल पक्षे तिथिक्षयः। छत्रभंगं प्रजापीड़ां दुर्भिक्षं च समादिशेत्।''**

ग्रहचाल बाजार का रुख- पक्ष मध्य में रुई, कपास, सूत, तिल, तेल, सोना, चांदी आदि में तेजी आती है, १८ दिसम्बर के लगभग घी, गुड़, खाण्ड, चावल में तेजी रहेगी। रुई में कुछ मन्दा आकर फिर तेजी। चावल अलसी, गुड़, तम्बाखू में भी तेजी बने। पक्षान्त में अनाज घी आदि मन्दे हो।

कुण्डली सूर्योदये

१०म.
के.
८
बुं.
११
९
सू.
७
शु.
१२
६
गु.१
श.
३
५
चं.२
४
रा.

आकश लक्षण- दिसम्बर ८,११,१६,१७,१८,२०,२१ को वर्षा हो। उत्तरी भारत पूर्ण रूपेण शीत लहर से जकड़ा जाएगा, अनेकत्र धुन्द का वातावरण रहे। हि.प्र., काश्मीर में भारी हिमपात के समाचार मिलेंगे, जिससे यातायात प्रभावित होगा !

शकुन विचार- यदि इस पक्ष में धनिष्ठा नक्षत्र के समय (१४,१५ दिसम्बर को) बादल गरजें तो जनता में संक्रामक रोगों से हानि हो। यदि इस पक्ष में इन्द्रधनुष दीखे तो आगे अच्छी वर्षा हो, बाजार मन्दे हों।

मार्गशीर्ष शुक्ल १५ बुध, इष्ट ५५/२४

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	२	९	७	०	६	०	३	९
६	१०	२६	२३	१	२६	१६	११	११
५०	४४	४४	२८	१०	१७	४८	४१	४१
११	२९	३७	४३	१	३	४४	३६	३६
६१	१०६	४६	९०	०	७१	२	३	३
६	१२	३०	३८	३६	४८	९	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३	२	२	३	१	२	२	३	१
मृग.	रोहि.	धनि.	ज्ये.	आश्ले.	विशा.	भर.	पुष्य	श्रव.

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१,		पौष कृष्ण पक्ष २०														तारीखें				चन्द्र राशि			चण्डीगढ़				उदय-कालिक				(२३ दिसम्बर सन् १९९९ ई. से ६ जनवरी सन् २०००ई.तक) उत्तरायण,दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु।
दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	प्र. पौष	अं. दिसं.	श. पौष	मु. रम.	प्रवेश काल	घ.	प.	भा.स्टैं.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन - बुध अस्त है। सायं मंगल पश्चिम में तथा गु.श. पूर्व कपाल में होंगे। प्रातः शुक्र पूर्व में दीखेगा ।
२५	२	१	गु.	२९	४८	आ.	३२	५	शु. ब्र.	४ ५३	३० ५८	बा.	४	३०	८	२३	२	१४	मिथनु			७	२१	५	२२	८	६	५४	५५	
२५	२	२	शु.	२१	८	पुन.	२५	२०	ऐं.	४४	१०	ग.	२१	८	९	२४	३	१५	क.	१२	२	७	२१	५	२२	८	७	५६	२	भ. ४७/१४ बाद,
२५	२	३	श.	१३	३०	पु.	१९	३८	वै.	३५	१८	वि.	१३	३०	१०	२५	४	१६	कर्क			७	२२	५	२३	८	८	५७	९	भ. १३/३०तक, श्री गणेश चतुर्थी व्रत,
२५	२	४	र.	७	२२	आश्ले.	१५	२५	वि.	२७	४५	बा.	७	२२	११	२६	५	१७	सिं.	१५	२५	७	२२	५	२३	८	९	५८	१६	शुक्र वृश्चिक में १/१८,
२५	२	५	चं.	२	५५	म.	१२	५८	प्री.	२१	३८	तै.	२	५५	१२	२७	६	१८	सिंह			७	२३	५	२४	८	१०	५९	२४	मंगल कुम्भ में ७/१८, बुध मूल धनु में १२/५०,(A)
२५	२	६	मं.	०	२८	पू.फा.	१२	२५	आ.	१७	८	व.	०	२८	१३	२८	७	१९	क.	२७	४५	७	२३	५	२४	८	१२	०	३२	भ.०/२८से ३०/२४ तक, शुक्र अनु. में ४७/३५,
२५	२	७	बु.	०	२०	उ.फा.	१३	४५	सौ.	१४	५	ब.	०	२०	१४	२९	८	२०	कन्या			७	२४	५	२५	८	१३	१	४१	सूर्य पू.षा. में १७/५२,
२५	५	८	गु.	१	२२	ह.	१७	०	शो.	१२	३२	कौ.	१	२२	१५	३०	९	२१	तु.	४९	२२	७	२४	५	२६	८	१४	२	५१	
२५	५	९	शु.	४	३२	चि.	२१	४५	अ.	१२	१५	ग.	४	३२	१६	३१	१०	२२	तुला			७	२४	५	२६	८	१५	४	२	भ.३६/५०बाद, सन् १९९९ई.पूर्ण,
२५	५	१०	श.	९	८	स्वा.	२७	५२	सु.	१३	५	वि.	९	८	१७	ज१	११	२३	तुला			७	२४	५	२७	८	१६	५	१२	भ. ९/८ तक, सन् २०००ई.प्रारम्भ, जनवरी प्रारम्भ,
२५	८	११	र.	१४	४५	वि.	३४	४८	धृ.	१४	३२	बा.	१४	४५	१८	२	१२	२४	वृ.	१८	४	७	२५	५	२८	८	१७	६	२२	सफला एकादशी व्रत(स.),
२५	८	१२	चं.	१३	५	अनु.	४२	१८	शू.	१६	३५	तै.	२३	५	१९	३	१३	२५	वृश्चिक			७	२५	५	२९	८	१८	७	३२	
२५	१०	१३	मं.	२७	४५	ज्ये.	५०	०	गं.	१८	५०	व.	२७	४५	२०	४	१४	२६	ध.	५०	०	७	२५	५	२९	८	१९	८	४२	भ. २७/४५बाद, मंगल शत. में ४२/५८, बुध पू.षा. में (B)
२५	१०	१४	बु.	३४	२२	मू.	५७	३५	वृ.	२१	१०	वि.	१	४	२१	५	१५	२७	धनु			७	२५	५	३०	८	२०	९	५४	भ.१/८ तक,
२५	१२	३०	गु.	४०	५५	पू.षा.	६०	०	ध्रु.	२३	१५	च.	७	३९	२२	६	१६	२८	धनु			७	२६	५	३१	८	२१	११	५	

(A) वक्री शनि भरणी१ में २१/२५, (B) ४८/१२ भौम प्रदोष व्रत,

पौष कृष्ण ८ गुरु, इष्ट ५५/१५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	६	१०	८	०	७	०	३	९
१४	१	२	५	१	५	१६	११	११
५९	१३	५६	४२	२०	५३	३४	१६	१६
९	३८	४६	२२	३४	५८	२७	९	९
६१	७३२	४६	९३	२	७२	१	३	३
९	१४	३२	४	१४	२८	११	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदये

१० के. | ८ शु. | मं. ११ | बु. ९ सू. | ७ | १२ | चं. ६ | गु.१ श. | ३ | ५ | २ | रा. ४

लोक भविष्य- इस पौष मास में पांच गुरुवार होने से पश्चिमी भूभाग पर कहीं युद्धमय वातावरण से शासन चिन्तित हो। किसी देश के साथ तनावपूर्ण वातावरण बने। लेकिन भारत में इस पक्ष में कुम्भ राशि का मंगल कहीं धार्मिक, उन्माद को जन्म दे सकता है, जिससे शासन को कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़ेगा।

ग्रहचाल और बाजार का रुख-२६ दिसंबर के लगभग रुई, शेयर , चांदी में पहले काफी मन्दा बाद में काफी तेजी बने। गेहूं, जौ उड़द, मूंग मोठ, बाजरा एवं दालवाना में तेजी हो, पीतल , तिल, तेल ,अलसी, सरसों, घी, चावल, ज्वार, मिर्च, सूत में भी तेजी रहेगी।

आकाश लक्षण- दिसम्बर २६ से २८ तक एवं ४ जनवरी को पंजाब, हि.प्र., हरयाणा, राजस्थान, केन्द्र शासित कुछ प्रदेशों में भयंकर शीत लहर चलेगी। कहीं धुन्ध, वर्षा व वायुवेग से हानि भी हो।

कुण्डली सूर्योदये

१० के. | ८शु. | मं. ११ | ९ सू. बु. चं. | ७ | १२ | ६ | गु.१ श. | ३ | ५ | २ | रा. ४

पौष कृष्ण ३० गुरु, इष्ट ५५/१०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	१०	८	०	७	०	३	९
२२	२४	८	१६	१	१४	१६	१०	१०
७	४४	२२	४०	४०	२२	२७	५३	५३
२०	२	३१	४३	२८	३७	३६	५३	५३
६१	७१७	४६	९५	३	७२	०	३	३
१०	५४	३२	२८	३८	५४	३२	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१, पौष शुक्ल पक्ष २१

(७ से २१जनवरी तक, सन् २००० ई.)
उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु।

ग्रह दर्शन - बुध अस्त है। प्रातः गुरु, शनि खमध्यासन्न होंगे। सायं मंगल पश्चिम में तथा प्रातः शुक्र पूर्व में होगा।

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	तारीखें प्र. पौष	अं. जन.	श. पौष	मु. रम.	चन्द्र राशि प्रवेश काल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा.स्टैं.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२५	१५	१	शु.	४६	३८	पू.षा.	४	५०	व्या.	२५	१०	किं.	१३	४७	२३	७	१७	२९	म.	२१	३२	७	२६	५	३२	८	२२	१२	१५	
२५	१५	२	श.	५१	४८	उ.षा.	११	३५	ह.	२६	२८	बा.	११	१३	२४	८	१८	३०	मकर			७	२६	५	३२	८	२३	१३	२५	चन्द्र दर्शन मु.३०, शुक्र ज्येष्ठा में ४८/१०,
२५	१७	३	र.	५६	५	श्र.	१७	३५	व.	२७	१२	तै.	२३	५२	२५	९	१९	शबा १	कु.	४९	५८	७	२६	५	३३	८	२४	१४	३५	पञ्चक प्रारम्भ ४९/५८, शब्वाल मु. प्रारम्भ,
२५	२०	४	च.	५९	१५	ध.	२२	३८	सि.	२७	१०	व.	२७	४०	२६	१०	२०	२	कुम्भ			७	२६	५	३४	८	२५	१५	४५	भ. २७/४० से ५९/१५ तक,
२५	२२	५	मं.	६०	०	श.	२६	३५	व्य.	२६	१५	ब.	३०	१०	२७	११	२१	३	कुम्भ			७	२६	५	३५	८	२६	१६	५४	सूर्य उ.षा. में २२/३५,
२५	२५	५	बु.	१	५	पू.भा.	२९	८	व.	२४	१८	बा.	१	५	२८	१२	२२	४	मी.	१३	३०	७	२६	५	३६	८	२७	१८	२	शनि मार्गी ८/८,
२५	२८	६	गु.	१	३०	उ.भा.	३०	१५	प.	२१	८	तै.	१	३०	२९	१३	२३	५	मीन			७	२६	५	३७	८	२८	१९	११	बुध उ.षा. में ७/२८, लोहड़ी (पंजाब-जम्मू काश्मीर),
२५	२८	७	शु.	०	१८	रे.	२९	१०	शि.	१६	४५	व.	०	१८	मा१	१४	२४	६	मे.	२९	१०	७	२६	५	३७	८	२९	२०	१८	भ.०/१८ से २८/५६तक, पंचक समाप्त २९/१०,सं सूर्य (A)
अवम		८	शु.	५७	२८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	अष्टमी तिथिक्षय
२५	३०	९	श.	५३	५	अ.	२७	४८	सि.	११	२०	बा.	२५	१६	२	१५	२५	७	मेष			७	२६	५	३८	९	०	२१	२५	बुध मकर में ९/२२,
२५	३५	१०	र.	४७	४८	भ.	२४	२०	सा. शु.	४ ५६	१५ १५	तै.	२०	१२	३	१६	२६	८	वृ.	३८	८	७	२५	५	३९	९	१	२२	३१	
२५	३८	११	च.	४०	२०	कृ.	१९	३५	शु.	४७	२०	व.	१३	४९	४	१७	२७	९	वृष			७	२५	५	४०	९	२	२३	३७	भ. १३/४९ से ४०/२० तक, पुत्रदा एकादशी व्रत (स.),
२५	४०	१२	मं.	३२	२५	रो.	१३	४८	ब्र.	३७	४२	ब.	६	२२	५	१८	२८	१०	मि.	४०	३३	७	२५	५	४१	९	३	२४	४२	भौम प्रदोष व्रत, (देखें पृष्ठ 98)
२५	४२	१३	बु.	२४	०	मृ.	७	१८	ऐं.	२७	४५	तै.	२४	०	६	१९	२९	११	मिथुन			७	२५	५	४२	९	४	२५	४५	शुक्र मूल धनु में ४३/५५,
२५	४७	१४	गु.	१५	२२	आ. पुन.	० ५३	३५ ५२	वै.	१७	३२	व.	१५	२२	७	२०	३०	१२	क.	४०	३३	७	२४	५	४३	९	५	२६	४८	भ. १५/२२ से ४१/९ तक, सूर्य सायन कुम्भ में ४१/१२, (B)
२५	५०	१५	शु.	६	५५	पु.	४७	४२	वि. प्री.	७ ५८	३२ ५	ब.	६	५५	८	२१	मा. १	१३	कर्क			७	२४	५	४४	९	६	२७	५०	मंगल पू.भा. में ५६/१५, बुध श्रवण में ७/५५, सूर्य (C)

(A) मकर में ३८/५२, मु.३०,पुण्यकाल अगले दिन १८/५२ तक, अवतारदिन श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जी,(B) श्री सत्यनारायण व्रत,(C)अभिजित् में ११/५८, नेपच्यून श्रव. १ में १८/१,माघ स्नान प्रारम्भ, पौषी पूर्णिमा, शक माघ प्रारंभ,

पौष शुक्ल ७ शुक्र, इष्ट ५५/१०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	०	१०	८	०	७	०	३	९
०	५	१४	२९	२	२४	१६	१०	१०
१६	२६	३४	३६	१४	७	२६	२८	२८
३२	२७	२९	२७	५५	७	३०	२७	२७
६१	८५७	४६	९९	५	७३	०	३	३
६	४५	२६	२३	९	१५	२२	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.षा. २	अश्वि. २	शत. ३	उ.षा. १	अश्वि. १	रो. ३	भर. १	पुष्य ३	श्रव. १

कुण्डली सूर्योदये

११ मं. | १० सू. के. | ९ बु. | ८ शु. | ७ | ६ | ५ | ४ रा. | ३ | २ | १ गु. श. | १२ चं.

लोक भविष्य- मेष राशिस्थ शनि का सूर्य के साथ दृष्टि-सम्बन्ध एवं राहु से समसप्तक योग पाकिस्तान के सिन्ध आयरलैण्ड अफ्रीकन देश चीन, जापान में कहीं आन्तरिक अशान्ति, कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि का संकेत देता है। सरकार मंहगाई पर नियन्त्रण पाने में असफल रहे, 'मकरे च स्थितो भानुः घृत तैल-महर्घताम्। सुभिक्षं सर्वधान्यानां लोकानां दुःख पीड़नम्॥'

ग्रहचाल और बाजार का रुख- १२ जनवरी के लगभग रुई में मन्दा आकर तेजी हो, तिल, तेल, सरसों, हींग, लाल मिर्च तेज हों। पक्षमध्य में रुई, सोना, चांदी, घी, तेल, अलसी, गुड़,शक्कर,खाण्ड तेज रहे।

आकाश लक्षण- जनवरी ८,१२,१३,१५,१९,२०,२१ को हि.प्र. , शिलांग, आसाम, अरुणाचल एवं जम्मू क शमीर में वर्षा योग हैं। उत्तरी भारत में जोरदार शीत लहर चले। उच्च पर्वत शिखिरों पर हिमपात हो।

शकुन विचार- यदि पौष शुक्ल पूर्णिमा को बिजली चमके या आकाश मेघाछन्न रहे तो फसल अच्छी हो । पौष शुक्ल पञ्चमी को यदि वर्षा हो तो आगे वर्षा अच्छी होती है ।

कुण्डली सूर्योदये

११ मं. | सू. १० बु. के. | ९ शु. | ८ | ७ | ६ | ५ | ४ रा. चं. | ३ | २ | १ गु. श. | १२

पौष शुक्ल १५ शुक्र, इष्ट ५५/१५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	३	१०	९	०	८	०	३	९
७	१८	१९	११	२	२	१६	१०	१०
२४	३०	५९	२०	५४	४०	३१	६	६
१	४२	१०	२८	३८	४१	२७	११	११
६१	८७३	४६	१०२	६	७३	१	३	३
१	४६	१८	३५	२२	३१	९	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.षा. ४	आर्द्रा १	शत. ४	श्रव. १	अश्वि. १	मृग. १	भर. १	पुष्य २	श्रव. ३

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१,		माघ कृष्ण पक्ष २२														तारीखें				चन्द्र राशि			चण्डीगढ़				उदय-कालिक				(२२जनवरी से ५ फरवरी तक, सन् २००० ई.) उत्तरायण, दक्षिण गोल ,शिशिर ऋतु।
दि. मा.		तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		करण	समाप्ति काल		प्र.	अं.	श.	मु.	प्रवेश काल			भा.स्टै.टा.				स्पष्ट सूर्य				ग्रह दर्शन - बुध अस्त है। सायं मंगल पश्चिम में तथा गु.,श.खमध्यासन्न होंगे। प्रातः शुक्र पूर्व में होगा ।
															माघ	जन.	माघ	शुब्बा.				सूर्योदय		सर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
अव	म	१	शु.	५९	५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथिक्षय,
२५	५२	२	श.	५२	१५	आश्ले.	४२	२५	आ.	४९	२२	तै.	२५	४०	९	२२	२	१४	सि.	४२	२५	७	२४	५	४५	९	७	२८	५१	
२५	५२	३	र.	४६	४८	म.	३८	२५	सौ.	४१	४८	व.	१९	३१	१०	२३	३	१५	सिंह			७	२४	५	४५	९	८	२९	५१	भ.१९/३२ से ४६/४८तक,राहु पुष्य २में,केतु उ.षा.४ में ५१/ ४७,
२५	५८	४	चं.	४३	०	पू.फा.	३६	५	शो.	३५	३५	ब.	१४	४४	११	२४	४	१६	क.	५०	५६	७	२३	५	४६	९	९	३०	५०	सूर्य श्रवण में २८/३५, श्री गणेश (संकष्ट)चतुर्थीव्रत (A)
२६	०	५	मं.	४१	८	उ.फा.	३५	३२	अ.	३०	४८	कौ.	१२	४	१२	२५	५	१७	कन्या			७	२३	५	४७	९	१०	३१	४९	गुरु अश्वि.२ में ४४/५५, सूर्य अभिजित् से निवृत्त २१/८,
२६	५	६	बु.	४१	२०	ह.	३७	२	सु.	२७	३८	ग.	११	१४	१३	२६	६	१८	कन्या			७	२२	५	४८	९	११	३२	४८	भ. ४१/२० बाद, भारतगणतन्त्र दिवस,
२६	७	७	गु.	४३	२५	चि.	४०	४८	धृ.	२५	५८	वि.	१२	२२	१४	२७	७	१९	तु.	८	५५	७	२२	५	४९	९	१२	३३	४६	भ. १२/२३ तक, शनि भर.२ में ५४/१०,(B)
२६	१२	८	शु.	४७	२२	स्वा.	४५	३०	शू.	२५	४५	बा.	१५	२४	१५	२८	८	२०	तुला			७	२१	५	५०	९	१३	३४	४४	बुध धनि. में ५१/१५,जन्मदिन ला. लाजपतराय जी,
२६	१५	९	श.	५२	४२	वि.	५१	५५	गं.	२६	४०	तै.	२०	२	१६	२९	९	२१	वृ.	३५	१९	७	२१	५	५१	९	१४	३५	४१	
२६	२०	१०	र.	५९	२	अनु.	५९	२०	वृ.	२८	२८	व.	२५	५१	१७	३०	१०	२२	वृश्चिक			७	२०	५	५२	९	१५	३६	३७	भ.२५/५२ से ५९/२ तक, शुक्र पू.षा. में ३६/२५,(C)
२६	२२	११	चं.	६०	०	ज्ये.	६०	०	ध्रु.	३०	४५	ब.	३२	२४	१८	३१	११	२३	वृश्चिक			७	२०	५	५३	९	१६	३७	३२	
२६	२५	११	मं.	५	४७	ज्ये.	७	८	व्या.	३३	१२	बा.	५	४७	१९	फ.१	१२	२४	ध.	७	८	७	१९	५	५३	९	१७	३८	२६	बुध कुम्भ में ४०/३०,षट्तिला एकादशी व्रत (स.),फर.प्रारम्भ,
२६	२७	१२	बु.	१२	२८	मू.	१४	४८	ह.	३५	२२	तै.	१२	२८	२०	२	१३	२५	धनु			७	१९	५	५४	९	१८	३९	१९	प्रदोष व्रत,
२६	३२	१३	गु.	१८	३५	पू.षा.	२२	०	व.	३७	१०	व.	१८	३५	२१	३	१४	२६	म.	३८	३६	७	१८	५	५५	९	१९	४०	११	भ. १८/३५ से ५१/१५तक, मंगल मीन में ५६/१२,
२६	३७	१४	शु.	२३	५५	उ.षा.	२८	२५	सि.	३८	१८	श.	२३	५५	२२	४	१५	२७	मकर			७	१७	५	५६	९	२०	४१	२	
२६	४०	३०	श.	२८	१२	श्र.	३३	४८	व्य.	३८	३५	ना.	२८	१२	२३	५	१६	२८	मकर			७	१७	५	५७	९	२१	४१	५२	बुध शत. में ३४/३२, शनैश्चरी अमा,मौनी अमा,महोदय योग,

(A) (चन्द्रोदय रात्रि २१घं.१०मि.),(B) जन्मदिन स्वामी विवेकानन्द जी, (C)बलिदान दिन महात्मा गान्धी जी,जन्म दिन स्वामी दयानन्द सरस्वती जी,

माघ कृष्ण ८ शुक्र, इष्ट ५५/२२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	६	१०	९	०	८	०	३	९
१४	२१	२५	२३	३	११	१६	९	९
३०	५९	२२	२७	४२	१५	४१	४३	४३
५९	१०	५१	६	३७	५८	५०	५६	५६
६०	७२१	४६	१०४	७	७३	१	३	३
५७	८	९	५२	३०	४५	५५	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

कुण्डली सूर्योदये

११ मं.
९शु.
१२
सू. १०बु. के.
८
१ गु. श.
७ चं.
२
४ रा.
६
३
५

लोक भविष्य- इस पक्ष में कुम्भ राशि का बुध एवं मीन राशि का मंगल - जनता में मंहगाई से असन्तोष का कारण बनता है। शनैश्चरी अमा राजनीतिज्ञों में परस्पर मतभेद का संकेत देती है। इस पक्ष में तिथिवृद्धि एवं तिथिक्षय होना शासन को मंहगाई के विरूद्ध अंकुश लगाने के लिए विवश कर दे। मीन राशिस्थ मंगल का फल इस प्रकार लिखा है- 'मीन राशौ कुजश्चैव तृणं काष्ठं चतुष्पदाम्। महर्घं जायते सर्वं ज्ञेयमेवं हि पण्डितैः।'

ग्रहचाल और बाजार का रुख- इस पक्ष में गेहूं, जौ, चावल, रुई, सूत, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, अलसी,सुपारी, लौंग, घी, तेल में तेजी रहे।

आकाश लक्षण- जनवरी २३,२४,२५,२७,२८,३०, फरवरी १,३,५ को [illegible] पूर्वी छोर, पू. पंजाब, उड़ीसा एवं हि.प्र. में [illegible] बादल [illegible] खण्डवृष्टि के योग हैं। उ.भारत में ऋतु परिवर्तन अनुभव होगा।

शकुन विचार- माघ- कृष्ण तृतीया को यदि मेघ गरजें लेकिन वर्षा न हो तो गेहूं और जौ के स्टाक से आगे

कुण्डली सूर्योदये

११ बु.
१० सू. चं. के.
९ शु.
१२ मं.
८
१ गु. श.
७
२
४ रा.
६
३
५

माघ कृष्ण ३० शनि, इष्ट ५५/३२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	११	१०	०	८	०	३	९
२२	२७	१	७	४	२१	१७	९	९
३८	४८	३१	१४	४६	६	०	१८	१८
१४	१७	२४	४७	४६	२९	११	२९	२९
६०	७५०	४५	९८	८	७३	२	३	३
५०	३४	५७	३५	४१	५४	४६	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१,						माघ शुक्ल पक्ष २३									तारीखें				चन्द्र राशि			चण्डीगढ़				उदय-कालिक				(६ से १९ फरवरी तक, सन् २००० ई.) उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर-वसन्त ऋतु।
दि. मा.															प्र.	अं.	श	मु	प्रवेश काल			भा.स्टैं.टा.				स्पष्ट सूर्य				ग्रह दर्शन - ८ फरवरी से बुध सांयकाल पश्चिम में दीखने लगेगा। १४ फरवरी को बुध का सूर्य से परम अन्तर होगा। प्रातः शुक्र पूर्व में सायं मंगल पश्चिम में, गुरु, शनि पश्चिम कपाल में होंगे।
		तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		करण	समाप्ति काल		माघ	फर.	माघ	ज़िल्का.				सूर्योदय		सर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२६	४५	१	र.	३१	२०	ध.	३८	८	व.	३८	२	ब.	३१	२०	२४	६	१७	२९	कु.	५	५८	७	१६	५	५८	९	२२	४२	४०	पञ्चक प्रारम्भ ५/५८, सूर्य धनि. में, ३६/४०,
२६	५०	२	चं.	३३	१८	श.	४१	२०	प.	३६	३५	बा.	२	१९	२५	७	१८	३०	कुम्भ			७	१५	५	५९	९	२३	४३	२८	चन्द्र दर्शन मु,१५ ,
२६	५२	३	मं.	३८	८	पू.भा.	४३	२५	शि.	३४	१५	तै.	३	४३	२६	८	१९	१जि.	मी.	२७	५४	७	१४	५	५९	९	२४	४४	१५	मंगल उ.भा. में १७/२८, बुध पश्चिम में उदित ३१/५२, (A)
२६	५७	४	बु.	३३	४८	उ.भा.	४४	२५	सि.	३१	२	व.	३	५८	२७	९	२०	२	मीन			७	१३	६	०	९	२५	४५	०	भ. ३/५८ से ३३/४८ तक, तिल-कुन्द-वरद चतुर्थी,
२७	०	५	गु.	३२	१८	रे.	४४	१८	सा.	२६	५८	ब.	३	३	२८	१०	२१	३	मे.	४४	१८	७	१३	६	१	९	२६	४५	४४	पंचक समाप्त ४४/१८, शुक्र उ.षा. में २६/२०, श्री पञ्चमी, (B)
२७	५	६	शु.	२९	४८	अ.	४३	१२	शु.	२२	५	कौ.	१	३	२९	११	२२	४	मेष			७	१२	६	२	९	२७	४६	२६	
२७	१०	७	श.	२६	१८	भ.	४१	८	शु.	११	२२	ब.	२६	१८	३०	१२	२३	५	वृ.	५५	२३	७	११	६	३	९	२८	४७	६	भ. २६/१८ से ५४/४ तक, यूरेनस धनि.१ में ५६/२२, रथ(C)
२७	१५	८	र.	२१	५०	कृ.	३८	१०	ब्र.	९	५५	ब.	२१	५०	फा.१	१३	२४	६	वृष			७	१०	६	४	९	२९	४७	४५	सं. सूर्य कुम्भ में १२/०, मु.३०, पुण्यकाल सारा दिन, शुक्र(D)
२७	२०	९	चं.	१३	३२	रो.	३४	२२	ऐं. वै.	२ ५५	४५ ०	कौ.	१६	३२	२	१४	२५	७	वृष			७	९	६	४	१०	०	४८	२२	
२७	२२	१०	मं.	१०	३२	मृ.	२९	५५	वि.	४६	४८	ग.	१०	३२	३	१५	२६	८	मि.	२	९	७	८	६	५	१०	१	४८	५७	भ.३७/१६ बाद, बुध पू. भा. में ३/२८, जया एकादशी व्रत (स्मा.),
२७	२७	११	बु.	४	०	आ.	२५	२	प्री.	३८	१२	वि.	४	०	४	१६	२७	९	मिथुन			७	७	६	६	१०	२	४९	३१	भ. ४/० तक, जया एकादशी व्रत (वै.), भीष्म द्वादशी, (E)
अवम		१२	बु.	५७	२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वादशी तिथिक्षय,
२७	३२	१३	गु.	४९	५८	पुन.	१९	५५	आ.	२९	३०	कौ.	२३	३०	५	१७	२८	१०	क.	६	११	७	६	६	७	१०	३	५०	४	गुरु अश्वि. ३ में ५८/१५, प्रदोष व्रत,
२७	३५	१४	शु.	४३	२२	पु.	१४	५०	सौ.	२०	५२	ग.	१६	४०	६	१८	२९	११	कर्क			७	५	६	७	१०	४	५०	३४	भ. ४३/२२ बाद,
२७	३८	१५	श.	३७	८	आश्ले.	१०	५	शो.	१२	३५	वि.	१०	१५	७	१९	३०	१२	सिं.	१०	५	७	५	६	८	१०	५	५१	२	भ. १०/१५ तक, सूर्य शत. में ४८/२८, सूर्य सायन मीन में (F)

(A) गौरी तृतीया (गोन्तरी), जिल्काद मु. प्रारम्भ, (B) वसन्त पञ्चमी, (C) सप्तमी (पहिले अरुणोदय वाली), आरोग्य सप्तमी, (D) मकर में ८/४२, भीष्माष्टमी, (E) त्रिस्पृशा महाद्वादशी, (F) १७/२५, वसन्त ऋतु प्रारम्भ, माघस्नान समाप्त, श्री सत्यनारायणव्रत, माघी पूर्णिमा, जन्मदिन श्री गुरु रविदास जी,

माघ शुक्ल ८ रवि, इष्ट ५५/५०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१	११	१०	०	९	०	३	९
०	१४	७	१८	५	०	१७	८	८
४४	९	३८	४८	५९	५८	२५	५३	५३
१३	४९	७	३२	५६	२	१०	३	३
६०	८५८	४५	६३	९	७४	३	३	३
३८	११	४१	४५	४३	०	३४	११	११
-	-	मा.	मा.	मा	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३	२	२	४	२	२	२	२	४
धनि.	रो.	उ.भा.	शत.	अश्वि.	उ.षा.	भर.	पुष्य	उ.षा.

कुण्डली सूर्योदये

१२ म.
११ सू. बु.
१० के.
९ शु.
गु. १ श.
२ चं.
३
रा. ४
५
६
७
८

लोक भविष्य- इस चान्द्रमास में पांच शनिवार हैं, कहीं भूकम्प, कहीं प्राकृतिक-प्रकोप से जन-धन हानि, ईशान कोण में कहीं सत्ता परिवर्तन, कहींअग्निकाण्ड से जनधन विनाश हो,- 'शनेश्च पंचकं दृष्टा पाताले कम्पते फणी। ईशान देश भंगश्च वह्निदाहो महर्घता। उ.षा. नक्षत्र का शुक्र चोरी, ठगी एवं रोग आदि से जनता में परेशानी करे। काश्मीर एवं कुछ अन्य विषय विशेष चर्चा के विषय बनें।

ग्रहचाल और बाजार का रुख- पक्षारम्भ में रुई व शेयर बाजारों में मन्दा बने, पक्षमध्य में घी, तेल, नमक, सरसों एवं मूंगफली में तेजी बने, अलसी, एरण्ड, गेहूं, आदि अनाज, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दा बने। पक्षान्त में व्यापारिक वस्तुओं में तेजी बनेगी ।

कुण्डली सूर्योदये

१२ म.
११ सू. बु.
के. १० शु.
९
गु. १ श.
२
३
चं. ४ रा.
५
६
७
८

माघ शुक्ल १५ शनि, इष्ट ५६/२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	४	११	१०	०	९	०	३	९
६	१०	१२	२३	७	८	१७	८	८
४७	५७	११	७	०	२२	४७	३३	३३
३३	१९	३९	२५	२	८	५७	५९	५९
६०	८४४	४५	१०	१०	७४	४	३	३
२८	२५	२७	२९	२५	३	८	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
१	४	३	१	३	४	२	२	४
शत.	मघा	उ.भा.	पू.भा.	अश्वि.	उ.षा.	भर.	पुष्य	उ.षा.

आकाश लक्षण- फर. ६,८,१०,१२,१३,१५,१७,१९ को लंका के पूर्वी छोर, शिलांग आदि में वर्षा के योग हैं। उत्तरी भारत में हवा का जोर रहेगा, मौसम सुखद अनुभव होगा।

शकुन विचार- माघ पूर्णमासी के दिन यदि बादल हो तो अन्न के संग्रह से सातवें मास [illegible] रहे, यदि इस दिन आकाश साफ रहे एवं मेघ किंवा किसी प्रकार का गर्द गुबार न हो तो आगे आषाढ़ में प्रत्येक प्रकार का अन्नाज सस्ता रहेगा, वर्षा खूब होगी।

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१,						**फाल्गुन कृष्ण पक्ष २४**									तारीखें				चन्द्र राशि			चण्डीगढ़				उदय-कालिक				(२० फरवरी से ६ मार्च तक, सन् २००० ई.) उत्तरायण, दक्षिण गोल, बसन्त ऋतु,
दि. मा.		तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		करण	समाप्ति काल		प्र.	अं.	श.	मु.	प्रवेश काल			भा.स्टैं.टा.				स्पष्ट सूर्य				**ग्रह दर्शन** - २१ फरवरी से बुध पश्चिम में दीखना बंद हो जायेगा। प्रातः मं. पश्चिम में और गु., श. पश्चिम कपाल में दीखेंगे। प्रातः शुक्र पूर्व में होगा।
															फाल्गु.	फर.	फाल्गु.	जिल्का.				सूर्योदय		सर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२७	४२	१	र.	३१	५०	म.	६	५	अ. सु.	४ ५८	५५ ५	बा.	४	२९	८	२०	१	१३	सिंह			७	४	६	९	१०	६	५१	२८	शक फाल्गुन प्रारम्भ,
२७	४८	२	चं.	२७	४८	पू. फा.	३	८	धृ.	५२	२५	ग.	२७	४८	९	२१	२	१४	क.१७ ४६			७	३	६	१०	१०	७	५१	५३	भ. ५६/३३ बाद, शुक्र श्रव. में १५/२७, बुध पश्चिम में (A)
२७	५५	३	मं.	२५	१८	उ.फा.	१	४०	शू.	४८	०	वि.	२५	१८	१०	२२	३	१५	कन्या			७	१	६	११	१०	८	५२	१६	भ. २५/१८ तक, श्री गणेश चतुर्थी व्रत,
२७	५८	४	बु.	२४	३०	ह.	१	४५	ग.	४५	०	बा.	२४	३०	११	२३	४	१६	तु.३२ ४२			७	०	६	११	१०	९	५२	३९	
२८	२	५	गु.	२५	३८	चि.	३	३८	वृ.	४३	३०	तै.	२५	३८	१२	२४	५	१७	तुला			६	५९	६	१२	१०	१०	५३	०	
२८	७	६	शु.	२८	३८	स्वा.	७	२२	ध्रु.	४३	२२	व.	२८	३८	१३	१५	६	१८	वृ.	५६	२६	६	५८	६	१३	१०	११	५३	१९	भ. २८/३८ बाद मंगल रेवती में ५१/१२,
२८	१२	७	श.	३३	१८	वि.	१२	४८	व्या.	४४	३०	वि.	०	५८	१४	२६	७	१९	वृश्चिक			६	५७	६	१४	१०	१२	५३	३७	भ. ०/५८ तक,
२८	१५	८	र.	३९	१०	अनु.	१९	३२	ह.	४६	२५	बा.	६	१४	१५	२७	८	२०	वृश्चिक			६	५६	६	१४	१०	१३	५३	५४	
२८	२०	९	चं.	४५	४५	ज्ये.	२७	८	व.	४८	५०	तै.	१२	२७	१६	२८	९	२१	ध.	२७	८	६	५५	६	१५	१०	१४	५४	९	वक्री बुध शत. में २/३०,
२८	२५	१०	मे.	५२	२२	मू.	३४	५२	सि.	५१	१५	व.	१९	०४	१७	२९	१०	२२	धनु			६	५४	६	१६	१०	१५	५४	२३	भ. १९/४ से ५२/२२ तक,
२८	३०	११	बु.	५८	२५	पू.षा.	४२	१५	व्य.	५३	१८	ब.	२५	२४	१८	मा.१	११	२३	म.	५८	५२	६	५३	६	१७	१०	१६	५४	३६	विजया एकादशी व्रत (स.), मार्च प्रारम्भ,
२८	३२	१२	गु.	६०	०	उ.षा.	४८	४५	व.	५४	३५	कौ.	३०	५६	१९	२	१२	२४	मकर			६	५२	६	१७	१०	१७	५४	४६	
२८	३७	१२	शु.	३	२८	श्र.	५४	२	प.	५४	५०	व.	३	२८	२०	३	१३	२५	मकर			६	५१	६	१८	१०	१८	५४	५४	शुक्र धनि. में ३/३८, प्रदोष व्रत,
२८	४२	१३	श.	७	८	घ.	५७	५२	शि.	५४	०	ब.	७	८	२१	४	१४	२६	कुं.	२५	५७	६	५०	६	१९	१०	१९	५५	०	भ. ७/८ से ३८/१४ तक, पञ्चक प्रारम्भ २५/५७ बाद,(B)
२८	४७	१४	र.	९	२०	श.	६०	०	सि.	५२	२	श.	९	२०	२२	५	१५	२७	कुम्भ			६	४८	६	१९	१०	२०	५५	४	
२८	५२	३०	चं.	९	५२	श.	०	२०	सा.	४८	५५	ना.	९	५२	२३	६	१६	२८	मीं.	४६	६	६	४७	६	२०	१०	२१	५५	८	सोमवती अमावस,

(A) अस्त २६/८, बुध वक्री २७/५८, **(B)** सूर्य पू.भा. में ५/०, श्री महाशिवरात्री व्रत,

फाल्गुन कृष्ण ८ रवि, इष्ट ५६/२५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	११	१०	०	९	०	३	९
१४	२३	१८	२०	८	१८	१८	८	८
५०	५६	१४	५	२६	१४	२३	८	८
३५	५८	१३	३७	२३	४९	२१	३३	३३
६०	७११	४५	५६	११	७४	४	३	३
१६	०	९	४०	१५	७	४९	११	११
-	-	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

कुण्डली सूर्योदये

१२ मं. | १० | ११ | शु.के. | गु. १ श. | सू. बु. | ९ | २ | ८ चं. | ५ | ७ | ३ | ६ | ४ रा.

लोक भविष्य- बुध अस्त होते ही वक्र हो रहा है, अतः उत्पात्त व कहीं विशिष्ट व्यक्ति के निधन का समाचार मिले। फाल्गुन कृष्ण प्रतिपदा को पू.फा. नक्षत्र होने से सर्वत्र सुभिक्ष रहें, '**फाल्गुन-प्रथमे पक्षे पूर्वा फाल्गुनि योगतः। सर्वान् दोषान्निहन्त्येव सुभिक्षं भुवि जायते।**'

ग्रहचाल और बाजार का रुख- पक्षारम्भ में रुई में जोरदार मन्दा आए, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी, अनाजों में मन्दा आए। २५ फर. के लगभग गेहूं, चना, मूंग, मोठ, उड़द, ज्वार, बाजरा मंदा, चांदी तेज हो । ३ मार्च से पक्षांत तक दालवाना, चांदी, सोना एवं रुई कपास में तेजी बने। इस समय गुड़, खाण्ड में भी तेजी रहे।

आकाश लक्षण- फरवरी २१,२५,२८ एवं मार्च ३,४ को बंगलादेश, भूटान, सिक्किम, एवं लंका के पश्चिमी भूभाग पर वर्षा के योग हैं। उत्तरी [illegible] में गर्मी [illegible]

शकुन विचार- यदि फाल्गुन में बादल हों परन्तु वर्षा न हो तो आगे वर्षा ऋतु में अच्छी वर्षा हो।

कुण्डली सूर्योदये

१२ मं. | चं. ११ सू. बु. | शु.१० के. | गु. १ श. | ९ | २ | ८ | ५ | ७ | ३ | ६ | ४ रा.

फाल्गुन कृष्ण ३० चन्द्र, इष्ट ५६/३५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	११	११	१०	०	९	०	३	९
२२	२	२४	१२	९	२८	१९	७	७
५१	१९	१४	१३	५९	७	४	४३	४३
५५	५	१८	०	०	५५	२	६	६
६०	८०१	४४	४६	११	७४	५	३	३
३	३१	५०	४०	५९	९	२५	११	११
-	-	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१, फाल्गुन शुक्ल पक्ष २५															तारीखें				चन्द्र राशि			चण्डीगढ़				उदय-कालिक				(७ से २० मार्च तक, सन् २००० ई.) उत्तरायण, दक्षिण-उत्तर गोल, वसन्त ऋतु।
दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	प्र. फाल्गु.	अं. मार्च	श. फाल्गु.	मु. जिल्का.	प्रवेश काल	घ.	प.	भा.स्टैं.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन - ८ मार्च को बुध प्रातः पूर्व में दीखने लगेगा। सायं मं., गु.,श. पश्चिम में होंगे। प्रातः शुक्र पूर्व में चमकता दीखेगा।
२८	५७	१	मं.	९	१५	पू.भा.	१	२२	शु.	४४	५०	ब.	९	१५	२४	७	१७	२९	मीन			६	४६	६	२१	१०	२२	५५	८	चंद्र दर्शन मु.४५, गुरु अश्वि. ४ में १/५०,
२९	०	२	बु.	७	२०	उ.भा.	१	१२	शु.	३९	५५	कौ.	७	२०	२५	८	१८	१जि.	मीन			६	४५	६	२१	१०	२३	५५	७	शुक्र कुम्भ में २७/३५, बुध पूर्व में उदित ३०/२५ (A)
२९	७	३	गु.	४	३०	रे. अ.	० ५८	८ १२	ब्र.	३४	२२	ग.	४	३०	२६	९	१९	२	मे.	०	८	६	४३	६	२२	१०	२४	५५	४	भ. ३३/४२ बाद, पञ्चक समाप्त ५८/१२,
२९	१२	४	शु.	२	५५	भ.	५५	४५	ऐ.	२८	१५	वि.	२	५५	२७	१०	२०	३	मेष			६	४२	६	२३	१०	२५	५४	५९	भ. २/५५ तक,
अवम		५	शु.	५६	३५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	पञ्चमी तिथिक्षय,
२९	१५	६	श.	५१	३८	कृ.	५२	५५	वै.	२१	४८	कौ.	२४	६	२८	११	२१	४	वृ.	१०	१०	६	४१	६	२३	१०	२६	५४	५३	
२९	२०	७	र.	४७	५	रो.	४९	४८	वि.	१५	०	ग.	१९	२२	२९	१२	२२	५	वृष			६	४०	६	२४	१०	२७	५४	४५	भ. ४७/५ बाद,
२९	२५	८	चं.	४२	०	मृ.	४६	२८	प्री.	८	५	वि.	१४	३३	३०	१३	२३	६	मि.	१८	८	६	३९	६	२५	१०	२८	५४	३५	भ. १४/३२ तक, शुक्र शत. में ५१/३५, होलाष्टक प्रारम्भ,(B)
२९	३०	९	मं.	३६	२२	आ.	४३	८	आ. सौ.	१ ५३	०० ४८	बा.	९	११	चै. १	१४	२४	७	मिथुन			६	३७	६	२५	१०	२९	५४	२३	सं. सूर्य मीन में ५/४२, मु.१५, पुण्यकाल २१/४२ तक,(C)
२९	३५	१०	बु.	३१	३२	पुन.	३९	३८	शो.	४६	३८	तै.	३	५७	२	१५	२५	८	क.	२५	३०	६	३६	६	२६	११	०	५४	८	भ. ५८/५६ बाद,
२९	४०	११	गु.	२६	२०	पु.	३६	१२	अ.	३९	३२	वि.	२६	२०	३	१६	२६	९	कर्क			६	३५	६	२७	११	१	५३	५०	भ. २६/२० तक, शनि भर.३ में ४३/२२,गोविन्द द्वादशी,(D)
२९	४२	१२	शु.	२१	१८	आश्ले.	३३	२	सु.	३२	३८	बा.	२१	१८	४	१७	२७	१०	सि.	३३	२	६	३४	६	२७	११	१	५३	३०	सूर्य उ.भा. में २६/४०, प्रदोष व्रत,
२९	४७	१३	श.	१६	४०	म.	३०	२०	धृ.	२६	५	तै.	१६	४०	५	१८	२८	११	सिंह			६	३२	६	२७	११	३	५३	८	
२९	५३	१४	र.	१२	३५	पू.फा.	२८	१०	शू.	२०	०	व.	१२	३५	६	१९	२९	१२	कं.	४२	५२	६	३१	६	२९	११	४	५२	४३	भ. १२/३५ से ४०/५७ तक, होलिका दहन, (E)
२९	५८	१५	चं.	९	२०	उ.फा.	२६	५८	गं.	१४	४८	ब.	११	५०	७	२०	३०	१३	कन्या			६	३०	६	२९	११	५	५२	१६	सूर्य सायन मेष में १६/२८, उत्तर गोल प्रारम्भ, (F)

(A) जन्म दिन श्री राम कृष्ण परमहंस, जिल्हिज्ज मु. प्रारम्भ(B) वेंकटेश (प्लूटो) वक्री(C) मंगल अश्वि. मेष में ४१/३०, बुध मार्गी ४१/१८,(D) आमलकी एकादशी व्रत (स.), (E) (भद्रोपरान्त २२ घं. ५३ मि. बाद),(देखें पृष्ठ... ७४) ,श्री सत्यनारायण व्रत, (F) शक संवत् १९२१ समाप्त, महाविषुवदिन,

फाल्गुन शुक्ल ८ रवि, इष्ट ५७/१८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	२	११	१०	०	१०	०	३	९
२९	९	२९	८	११	६	११	७	७
५१	९	२७	५७	२४	४६	४३	२०	२०
३४	५९	९	४०	३०	५३	२९	५१	५१
५९	८४९	४७	२	१२	७४	५	३	३
४७	१९	३०	१४	३०	८	५५	११	११
-	-	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३	२	४	२	४	२	१	१	४
पू.भा.	आर्द्रा	रेवती	शत.	अश्वि.	शत.	भर.	पुष्य	उ.षा.

कुण्डली सूर्योदये

१२ मं.
१० के.
गु. १ श.
११ सू.बु. शु.
९
चं.२
८
३
५
७
४ रा.
६

लोक भविष्य- पक्षारम्भ में कुम्भ राशि का शुक्र पर्याप्त वर्षा एवं सुभिक्ष करे 'कुम्भ राशौ स्थिते शुक्रे सुभिक्षं प्रचुरं जलम्। भवत्यत्र न सन्देहो लोकाः सर्वे निरामयाः'' लेकिन मेष राशि में शनि-मंगल का सम्बन्ध सीमा प्रान्तों पर सैनिक हलचल से अशांति का कारण बनेगा, -'युद्धदौ शनि-माहेयौ तथा दुर्भिक्षकारकौ।'

ग्रहचाल और बाजार का रुख- पक्षारम्भ में रुई में तेजी, सोना चांदी में घटाबढ़ी चलकर मन्दी हो। गुड़, खाण्ड, गेहूं, चना, जौ, मूंग, ज्वार, बाजरा में भी मन्दे का वातावरण रहे। लाल मिर्च तेज रहे। घी, तिल, पाट , हैसियन में भी तेजी बने। १४ मार्च के लगभग मंगल, शनि का मेष राशि में सम्बन्ध सोना, चांदी आदि धातु, मूंगा, मोती आदि रत्न, रुई, कपास, बारदाना में अच्छी तेजी करेगा।

कुण्डली सूर्योदये

गु. १ म.श.
बु. ११ शु.
२
सू. १२
१० के.
३
९
चं. ६
रा.४
८
७
५

फाल्गुन शु. १५ चन्द्र, इष्ट ५७/३०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	५	०	१०	०	१०	०	३	९
६	१६	४	१०	१२	१५	२०	६	६
४९	४९	३७	३९	५३	२५	२६	५८	५८
२०	२९	४२	४२	२९	४१	८	३५	३५
५९	७९२	४४	३४	१२	७४	६	३	३
३३	१९	१०	२२	५७	७	२०	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
१	१	१	१	४	३	३	१	४
उ.भा.	हस्त	अश्वि.	शत.	अश्वि.	शत.	भर.	पुष्य	उ.षा.

आकाश लक्षण- मार्च ७,८,१३,१४,१५,१६,१७,१८ को हवा का जोर रहे, उत्तरी भारत में तापमान जोर पकड़े, बंगलादेश एवं कुछ दक्षिणी प्रान्तों में बादलचाल एवं खण्डवृष्टि के योग हैं।

शकुन विचार- फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा के दिन यदि वर्षा हो तो फसल को रोली(काल, अंगारी) रोग से हानि होती है। ऐसी स्थिति में अन्न संग्रह से सातवें मास लाभ मिलता है।

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१, चैत्र कृष्ण पक्ष २६

(२१ मार्च से ४ अप्रैल तक,सन् २००० ई.)
उत्तरायण, उत्तर गोल, वसन्त ऋतु।

ग्रह दर्शन - २९ मार्च को बुध सूर्य का अन्तर अधिकतम होगा। सायं मंगल गु. श. पश्चिम में होंगे। प्रातः शुक्र पूर्व में दीखेगा।

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	तारीखें प्र. चैत्र	अं. मार्च	श. चैत्र	मु. ज़िल्हि.	चन्द्र राशि प्रवेश काल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा.स्टैं.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३०	२	१	मं.	७	१२	ह.	२६	५२	वृ.	१०	१०	कौ.	७	१२	८	२१	१	१४	तु.	५७	३३	६	२९	६	३०	११	६	५१	४७	वसन्तोत्सव, शक सं. १९२२ प्रारम्भ, शक चैत्र प्रारम्भ,
३०	८	२	बु.	६	२८	चि.	२८	१५	धु.	६	४८	ग.	६	२८	९	२२	२	१५	तुला			६	२७	६	३१	११	७	५१	१६	भ. ३६/५२ बाद,
३०	१३	३	गु.	७	१५	स्वा.	३१	१०	व्या	४	३८	वि.	७	१५	१०	२३	३	१६	तुला			६	२६	६	३१	११	८	५०	४४	भ.७/१५ तक,गुरु भर.१ में ०/५, (A)
३०	२०	४	शु.	९	४५	वि.	३५	४५	ह.	३	४८	बा.	९	४५	११	२४	४	१७	वृ.	१९	३४	६	२४	६	३२	११	९	५०	१०	शुक्र पू. भा. में ३९/५०,
३०	२०	५	श.	१३	४५	अनु.	४१	४०	व.	४	८	तै.	१३	४५	१२	२५	५	१८	वृश्चिक			६	२४	६	३२	११	१०	४९	३४	
३०	२८	६	र.	१९	१२	ज्ये.	४८	४८	सि.	५	३५	व.	१९	१२	१३	२६	६	१९	ध.	४८	४८	६	२२	६	३३	११	११	४८	५६	भ. १९/१२ से ५२/२१ तक,राहु पुष्य१, केतु उ. षा.३में४८/४२
३०	३३	७	चं.	२५	३०	मू.	५६	३०	व्य.	७	४५	ब.	२५	३०	१४	२७	७	२०	धनु			६	२१	६	३४	११	१२	४८	१६	
३०	३८	८	मं.	३२	२	पू.षा.	६०	०	व.	१०	१५	कौ.	३२	२	१५	२८	८	२१	धनु			६	२०	६	३५	११	१३	४७	३४	
३०	४०	९	बु.	३८	१०	पू.षा.	४	५	प.	१२	४०	तै.	५	३५	१६	२९	९	२२	म.	२०	५१	६	१९	६	३५	११	१४	४६	५०	
३०	४५	१०	गु.	४३	१८	उ.षा.	११	१०	शि.	१४	२८	व.	१०	४४	१७	३०	१०	२३	मकर			६	१८	६	३६	११	१५	४६	६	भ. १०/४४ से ४३/१८ तक, सूर्य रेवती में ५४/३२,
३०	५०	११	शु.	४६	५८	श्र.	१६	५८	सि.	१५	१८	ब.	१५	८	१८	३१	११	२४	कुम्भ	४९	३	६	१६	६	३६	११	१६	४५	१९	पञ्चक प्रारम्भ ४९/३, बुध पू. भा. में ४९/४०, (B)
३०	५५	१२	श.	४८	४८	ध.	२१	८	सा.	१४	५०	कौ.	१७	५६	१९	अप्रै१	१२	२५	कुम्भ			६	१५	६	३७	११	१७	४४	३१	मंगल भर. में ५१/३८, शुक्र मीन में ४६/८, अप्रैल प्रारम्भ,
३०	५७	१३	र.	४८	४८	श.	२३	२८	शु.	१२	५८	ग.	१८	४८	२०	२	१३	२६	कुम्भ			६	१४	६	३७	११	१८	४३	४०	भ. ४८/४८ बाद, प्रदोष व्रत, वारुणीपर्व (१५घं. ३७ मि.तक),
३१	२	१४	चं.	४७	०	पू.भा.	२४	२	शु.	९	३८	वि.	१७	५४	२१	३	१४	२७	मी.	८	५३	६	१३	६	३८	११	१९	४२	४७	भ. १७/५४ तक, मेला पिहोवा तीर्थ (हरियाणा,)
३१	८	३०	मं.	४३	४५	उ.भा.	२३	२	ब्र. ऐ.	४ ५९	५८ १२	च.	१५	२२	२२	४	१५	२८	मीन			६	१२	६	३९	११	२०	४१	५३	शुक्र उ. भा. में २८/१५ भौमवती अमा, चान्द्र संवत्सर (C)

(A) श्री गणेश चतुर्थी व्रत, मेला शीतला माता (कुराली),(B) पापमोचिनी एकादशी व्रत, (स.), (C) सं. २०५६ विक्रमी पूर्ण,

चैत्र कृष्ण ८ मंगल, इष्ट ५७/५५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	०	१०	०	१०	०	३	९
१४	२५	१०	१६	१४	२५	२१	६	६
४४	२५	२९	५७	३८	१८	१८	३३	३३
४९	२३	४७	३३	४६	२९	१५	१०	१०
५९	७१५	४३	६१	१३	७४	६	३	३
१८	३३	४९	२३	२४	६	३५	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४	४	४	४	२	२	३	२	३

कुण्डली सूर्योदये

म. गु. १ श.
बु.११ शु.
१२ सू.
२
१० के.
९ चं.
३
४ रा.
६
८
५
७

लोक भविष्य-- शनि मंगल का एक राशि सम्बन्ध कहीं अशान्तिमय वातावरण बनाएगा, लेकिन किसी विशिष्ट व्यक्ति की मध्यस्थता से माहौल शांत हो। क्योंकि पक्षान्त में मीन राशि का शुक्र सुख-समृद्ध एवं सुभिक्ष का सूचक है- **'मीन राशिगते शुक्र सुभिक्षं प्रचुरं भवेत् । मेदिनी सुख संयुक्ता भविष्यति न संशयः'** पक्षान्त में भौमवती अमा खाद्यवस्तुओं में मंहगाई से असंतोष की परिचायक है ।

ग्रहचाल और बाजार का रूख- चांदी, सोना, अलसी, चावल, जौ, गेहूं, तिल, उड़द, मूंग, मोठ चना, ज्वार, में घटाबढ़ी और रूई में तेजी हो। १ अप्रैल के लगभग सरसों , एरण्डी, अलसी, बिनौला आदि तिलहन एवं अनाजों में मन्दा बने। चांदी में धमाके की अच्छी तेजी बने।

कुण्डली सूर्योदये

म. गु १ श
सू. १२ चं. शु.
११ बु.
१० के.
२
३
९
४ रा.
६
८
५
७

चैत्र कृष्ण ३० मंगल, इष्ट ५८/५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	११	०	१०	०	११	०	३	९
२१	२४	१५	२४	१६	३	२२	६	६
३९	४५	३५	५७	१३	५७	६	१०	१०
१७	३५	२८	४२	३२	२	२४	५५	५५
५८	८२१	४३	७७	१३	७४	७		३
५८	५८	२९	१७	४२	४	३	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२	३	२	२	२	२	३	२	३

आकाश लक्षण- मार्च २३,३०, ३१ एवं १ अप्रैल को उत्तरी भारत में गर्मी का प्रकोप बढ़ने लगे, ल का का पश्चिमी छोर, बंगलादेश, सिक्किम, बंगाल, हि.प्र. एवं मध्यप्रदेश के कुछ भागों में बादल चाल व बूंदाबांदी के योग हैं ।

शकुन विचार- अगर चैत्र कृष्ण अष्टमी को आकाश बादलों से ढका रहे तो गुड़, खाण्ड, गेहूं, सोना , तेज रहे । 'चन्द्रमौलि-शंकरचरण बार

स्टैंडर्ड टाईम को ही प्रयोग में लाइए—घड़ी-पलों को तिलांजलि दीजिए।

—प्रियव्रत शर्मा

प्राचीनकाल में जब स्टैं. टा. का आविष्कार नहीं हुआ था, तिथि, नक्षत्र, योग, करणों की प्रारम्भ-समाप्ति, ग्रहों का राशि-नक्षत्र -नक्षत्र चरणों में प्रवेश आदि का काल घड़ी-पलों में ही दिया जाता था। उसी परम्परानुसार अब भी पंचांगों में घड़ी-पलों में तिथ्यादि का काल दिया रहता है। ये घड़ी पल किसी एक (पंचांगीय)नगर के सूर्योदय से बीता काल बतलाते हैं। अत: इन्हें उसी रूप में किसी अन्य नगर में इस्तेमाल नहीं किया जा सकता । इन्हें किसी दूसरे अभीष्ट नगर में इस्तेमाल करने के लिए इनमें पंचांगीय नगर और अभीष्ट नगर के सूर्योदय कालों के अन्तर का संस्कार (जिसे ''पंचांग परिवर्त्तन संस्कार'' कहा जाता है) करना ज़रूरी होता है। उदाहरणार्थ अमृतसर के पंचांग में दिए गए तिथ्यादि के घड़ी-पलों को केवल अमृतसर में ही प्रयोग में लाया जा सकता है। यदि हम इन्हें जम्मू में इस्तेमाल करना चाहें तो यह आवश्यक होगा कि अमृतसर तथा जम्मू के उस दिन के सूर्योदय कालों का अन्तर जानकर उसे अमृतसर के पंचांग में दिए गए घड़ी-पलों में जोड़ें या घटाएं (उस दिन जम्मू में सूर्योदय अमृतसर के सूर्योदय से पहिले हुआ हो तो जोड़ें, अन्यथा घटाएं)। इस प्रकार प्राप्त तिथ्यादि के घड़ी-पल ही जम्मू में प्रयोग के योग्य होंगे । इस प्रकार स्पष्ट है — तिथ्यादि कालों को घड़ी पलों में बतलाने वाला पंचांग अपने नगर से अन्यत्र प्रयोग के योग्य नहीं होता। लेकिन यदि तिथ्यादि के काल स्टैं. टा. में दिए हों तो उस पंचांग के तिथ्यादि के कालों को उस देश के (जिस देश का स्टैं. टा. उस पंचांग में प्रयुक्त किया गया है, उस देश के)सभी नगरों में बिना ''पंचांग परिवर्त्तन संस्कार'' के प्रयोग में लाया जा सकता है। स्पष्टता के लिए यहां हम कुछ उदाहरण देते हैं-

इस वर्ष (सं. २०५६ वि. में) १८ मार्च '९९ को चैत्र शुक्ल प्रतिपदातिथि भा.स्टैं.टा. के अनुसार २१ घं. ३९ मि. पर समाप्त होगी। प्रतिपदा का यह समाप्तिकाल भारत के प्रत्येक नगर/ग्राम में बिना किसी परिवर्तन के प्रयोग में लाया जाएगा। अर्थात् चण्डीगढ़ हो या दिल्ली, कानपुर हो या बनारस, मद्रास हो या कलकत्ता- सभी नगरों में इस चैत्र शुक्ल प्रतिपदा की समाप्ति का काल (भा.स्टै.टा.) १८ मार्च '९९ को २१ घं. ३९ मि. (रात्रि ९ बजकर ३९ मिनट)ही होगा। भारत में कहीं भी इस काल में किसी प्रकार का जोड़-घटाव नहीं करना पड़ेगा। इसी प्रकार २८ मार्च '९९ को चन्द्रमा का सिंह राशि में प्रवेश काल (भा.स्टैं.टा.)१० घं. ३४ मि. लिखा है। इसका अर्थ है भारत के प्रत्येक नगर/ग्राम में चन्द्र का सिंह में यह प्रवेश प्रात: १० बजकर ३४ मिनट (भा.स्टैं.टा.) पर ही माना जाएगा ।

एक और उदाहरण लीजिए- ''मार्त्तण्ड पंचांग'' में दैनिक स्पष्ट ग्रह प्रात: ५ घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)के दिए रहतेहैं। ये स्पष्ट ग्रह भी भारत के प्रत्येक नगर /ग्राम में प्रात: ५ घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) के ही माने जाएंगे (अर्थात् इन्हें इसी टाईम के ही मानकर भारत के प्रत्येक नगर/ग्राम में उत्पन्न जातक के जन्मकालिक ग्रह चालन द्वारा स्पष्ट करने होंगे)।

इसी प्रकार चन्द्रग्रहण का उदाहरण भी लीजिए- इस वर्ष चन्द्रग्रहण २८ जुलाई, '९९ को भा.स्टैं.टा. के अनुसार सायं ३ घं. ५२ मि. पर प्रारम्भ होकर सायं ६ घं. १५ मि. पर समाप्त होगा। चन्द्रग्रहण के ये प्रारम्भ-समाप्तिकाल भारत के सभी नगरों के लिए हैं, यानि भारत के सभी नगरों में इस चन्द्रग्रहण का प्रारम्भ और समाप्तिकाल उल्लिखित ही होगा, यह बात अलग है कि यह ग्रहण कहीं दिखाई देगा, कहीं नहीं ।

आजकल घटी-पलात्मक काल को बतलाने वाले घटीयंत्र भी तो नहीं हैं। घड़ी -पलात्मक तिथ्यादिसमाप्तिकाल एवं ग्रहों के राशि-नक्षत्र-नवांश में प्रवेश आदि का काल वस्तुत: कब पड़ता है— यह जानने केलिए भी हमें अन्ततः घड़ियों (watches)द्वारा बतलाए जाने वाले स्टैं. टा. की ही शरण लेनी पड़ती है। जैसा कि पहिले स्पष्ट कर चुके हैं- घटी-पलात्मक काल से स्टैं.टा. वाला काल कहीं अधिक सुविधाजनक एवं देश में सर्वत्र एकरूप भी होता है । इसी लिए हम इस पंचांग में विगत ३०-३५वर्षों से भा.स्टैं.टा. में तिथ्यादि समाप्तिकाल, ग्रहों का राशि-नक्षत्र-नवांश-प्रवेश-काल आदि पृथक् पृष्ठों पर देते आ रहे हैं। आप देख रहे हैं - इस वर्ष ''भा.स्टैं. टा. में तिथ्यादि पंचांग'' हमने अधिक विस्तृत रूप में दिया है। पहले यह भा. स्टैं. टा. वाला पंचांग केवल ८ पृष्ठों पर ही होता था, अब इसे १६ पृष्ठ दिए गए हैं। यहां चण्डीगढ़ के साथ दिल्ली, जयपुर,वाराणसी नगरों के सूर्योदयास्त भी दिए गए हैं। जिस नगर में जो तिथि, नक्षत्र या योग पूर्वापरवर्त्ती दोनों सूर्योदय कालों को स्पर्श न कर पाए उस नगर में उस तिथि, नक्षत्र या योग का क्षय, किञ्च यदि वह पूर्वापरवर्त्ती दोनों सूर्योदयों को स्पर्श कर ले तो उसकी वृद्धि मानी जाती है। **यहां तिथ्यादि की क्षय-वृद्धि का निर्णय (निर्देश) केवल चण्डीगढ़ के सूर्योदय के आधार पर ही किया गया है- यह पाठक ध्यान में रखें। कुछ स्थलों पर यह संभव है कि किसी तिथि, नक्षत्र या योग की चण्डीगढ़ के सूर्योदयानुसार तो वृद्धि या क्षय हो, लेकिन वाराणसी,जयपुर या दिल्ली के सूर्योदयानुसार वह वृद्धि-क्षय घटित न हो।**

(शेष पृष्ठ 141 पर)

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग (भा. स्टैं. टा.)

जनवरी १९९९ ई.

मास पक्ष	जन. १९९९ ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल रा. घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मि.	जयपुर सूर्योदय घं. मि.	जयपुर सूर्यास्त घं. मि.	वाराणसी सूर्योदय घं. मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं. मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)
पौष शु.प.	१	१४	शु.	११ १	मृ.	१४ ३५	शु.	९ २९	मिथुन	७ २५	१७ २७	७ १८	१७ ३१	७ २०	१७ ४०	६ ४७	१७ १७	भ ११/१ से २१/४०तक;
							ब्र.	३० २										
	२	१५	श.	८ २०	आ.	१२ ३९	ऐं.	२६ ५४	क. २९ ३२	७ २५	१७ २८	७ १८	१७ ३२	७ २०	१७ ४१	६ ४७	१७ १७	बुध मूल धनु में २५/१८;पौषी पूर्णिमा,
				३० ३														
माघ कृष्ण पक्ष	३	२	र.	२८ २०	पुन.	११ १०	वै.	२४ १२	कर्क	७ २५	१७ २९	७ १९	१७ ३३	७ २०	१७ ४१	६ ४७	१७ १८	माघ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	४	३	चं.	२७ १८	पु	१० १६	वि.	२२ २	कर्क	७ २५	१७ २९	७ १९	१७ ३४	७ २१	१७ ४२	६ ४८	१७ १९	भ.१५ /३९ से २७/१८ तक,
	५	४	मं.	२७ २	आश्ले.	१० ४	प्री.	२० २७	सिं. १० ४	७ २५	१७ ३०	७ १९	१७ ३५	७ २१	१७ ४३	६ ४८	१७ १९	संकष्ट चतुर्थी,
	६	५	बु.	२७ ३३	म.	१० ३७	आ.	१९ २९	सिंह	७ २६	१७ ३१	७ १९	१७ ३६	७ २१	१७ ४४	६ ४९	१७ २०	
	७	६	गु.	२८ ४९	पू.फा.	११ ५६	सौ.	१९ ६	क. १८ २६	७ २६	१७ ३२	७ १९	१७ ३७	७ २१	१७ ४५	६ ४९	१७ २१	भ. २८/४९ बाद, शुक्र श्रवण में २३/३०;
	८	७	शु.	३० ४४	उ.फा.	१३ ५६	शो.	१९ १४	कन्या	७ २६	१७ ३३	७ १९	१७ ३७	७ २१	१७ ४५	६ ४९	१७ २२	भ. १७/४७ तक;
	९	८	श.	- -	ह.	१६ २८	अ.	१९ ४६	तु. २९ ५४	७ २६	१७ ३३	७ १९	१७ ३८	७ २१	१७ ४६	६ ४९	१७ २२	
	१०	८	र.	९ ४	चि.	१९ २०	सु.	२० ३२	तुला	७ २६	१७ ३४	७ १९	१७ ३८	७ २१	१७ ४६	६ ४९	१७ २३	
	११	९	चं.	११ ३७	स्वा.	२२ २०	धृ.	२१ २३	तुला	७ २६	१७ ३५	७ १९	१७ ३९	७ २१	१७ ४७	६ ४९	१७ २४	भ. २४/५४ बाद, सूर्य उ.षा. में १०/२९, बुध पू.षा. में २७/५,(A)
	१२	१०	मं.	१४ १०	वि.	२५ १३	शू.	२२ १०	वृ. १८ ३०	७ २६	१७ ३६	७ १९	१७ ४०	७ २१	१७ ४८	६ ४९	१७ २५	भ.१४/१०तक, मंगल तुला में १४/४३,गुरु पू.भा.४मीन में २७/१५,
	१३	११	बु.	१६ २८	अनु.	२७ ५०	ग.	२२ ४४	वृश्चिक	७ २६	१७ ३७	७ १९	१७ ४१	७ २१	१७ ४९	६ ४९	१७ २५	बुध पूर्व में अस्त;लोहड़ी (पंजाब);
	१४	१२	गु	१८ २४	ज्ये.	३० २	वृ.	२३ १	ध. ३० २	७ २६	१७ ३८	७ १९	१७ ४२	७ २१	१७ ४९	६ ४९	१७ २६	सं. सूर्य मकर में१७/००, पुण्यकाल १०/३६ बाद,
	१५	१३	शु.	१९ ५२	मू.	- -	ध्रु.	२२ ५६	धनु	७ २५	१७ ३९	७ १९	१७ ४२	७ २१	१७ ५०	६ ४९	१७ २७	भ. १९/५२ बाद;
	१६	१४	श.	२० ४९	मू.	७ ४६	व्या.	२२ २७	धनु	७ २५	१७ ३९	७ १९	१७ ४३	७ २१	१७ ५१	६ ४९	१७ २८	भ. ८/२० तक;
	१७	३०	र.	२१ १६	पू.षा.	९ ०	ह.	२१ ३६	म. १५ १२	७ २५	१७ ४०	७ १९	१७ ४४	७ २१	१७ ५२	६ ४९	१७ २९	मौनी अमावस,
माघ शुक्ल पक्ष	१८	१	चं.	२१ १४	उ.षा.	९ ४६	व.	२० २२	मकर	७ २५	१७ ४१	७ १९	१७ ४५	७ २१	१७ ५३	६ ४९	१७ २९	माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, शुक्र धनि. में १५/१२ ;
	१९	२	मं.	२० ४८	श्रव.	१० ७	सि.	१८ ५०	कु. २२ ६	७ २५	१७ ४२	७ १९	१७ ४६	७ २१	१७ ५४	६ ४९	१७ ३०	पञ्चक प्रा. २२/६;शनि अश्विनी २ में २१/३९;
	२०	३	बु.	१९ ५८	धनि.	१० ४	व्य.	१७ ०	कुंभ	७ २४	१७ ४३	७ १८	१७ ४७	७ २१	१७ ५५	६ ४९	१७ ३१	भ.३१/२३बाद;सूर्य सायन कुम्भ में १८/७;बुध उ.षा.में १७/४८,(B)
	२१	४	गु.	१८ ४९	शत.	९ ४१	व.	१४ ५०	मी. २७ ११	७ २४	१७ ४४	७ १८	१७ ४८	७ २१	१७ ५६	६ ४९	१७ ३१	भ.१८/४९ तक; वरद-कुन्द-तिल चतुर्थी;
	२२	५	शु.	१७ २३	पू.भा.	९ १	प.	१२ ३३	मीन	७ २४	१७ ४५	७ १७	१७ ४९	७ २१	१७ ५७	६ ४९	१७ ३२	बुध मकर में १९/५८; वसन्त पंचमी;
	२३	६	श.	१५ ४१	उ.भा.	८ ४	शि.	१० ०	मे. ३० ५४	७ २३	१७ ४६	७ १७	१७ ५०	७ २१	१७ ५८	६ ४९	१७ ३३	पञ्चक समाप्त ३०/५४, शुक्र कुम्भ में २३/१६;
					रे.	३० ५४	सि.	३१ १७										
	२४	७	र.	१३ ४७	अ.	२९ ३२	सा.	२८ २४	मेष	७ २३	१७ ४७	७ १७	१७ ५०	७ २०	१७ ५८	६ ४८	१७ ३४	भ. १३/४७ से २४/४४ तक, सूर्य श्रव. में १२/४३;
	२५	८	चं.	११ ४१	भ.	२८ २	शु.	२५ २५	मेष	७ २३	१७ ४७	७ १७	१७ ५१	७ २०	१७ ५९	६ ४८	१७ ३४	सूर्य अभिजित् से निवृत्त ९/४४;भीष्माष्टमी,
	२६	९	मं.	९ २८	कृ.	२६ २६	शु.	२२ २०	वृ. ९ ३८	७ २२	१७ ४८	७ १६	१७ ५२	७ १९	१७ ५९	६ ४८	१७ ३६	
				३१ १०														
	२७	११	बु.	२८ ५२	रो.	२४ ५०	ब्र.	१९ १५	वृष	७ २२	१७ ४९	७ १६	१७ ५३	७ १९	१८ ००	६ ४७	१७ ३६	भ. १८/१ से २८ /५२ तक, मंगल स्वाती में २३/३३;
	२८	१२	गु.	२६ ४०	मृ.	२३ १८	ऐं.	१६ ११	मि. १२ ४	७ २१	१७ ५०	७ १५	१७ ५४	७ १८	१८ ०१	६ ४७	१७ ३७	बुध श्रव. में २२/४३, भीष्म द्वादशी;
	२९	१३	शु.	२४ ३९	आ.	२१ ५७	वै.	१३ १५	मिथुन	७ २१	१७ ५१	७ १४	१७ ५५	७ १८	१८ ०२	६ ४७	१७ ३८	शुक्र शत. में ७/३३;
	३०	१४	श.	२२ ५६	पुन.	२० ५१	वि.	१० ३०	क. १५ ७	७ २०	१७ ५२	७ १३	१७ ५६	७ १७	१८ ०२	६ ४६	१७ ३९	भ. २२/५६ बाद, गुरु उ.भा. १ में २१/७;
	३१	१५	र.	२१ ३७	पु	२० ९	प्री.	८ १	कर्क	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	भ. १०/१७ तक, माघी पूर्णिमा;
							आ.	२९ ५४										

(A) राहु आश्ले. ४ कर्क में,केतु धनि.२ मकर में १८/४;(B) सूर्य अभिजित् में ३०/५४, गौरी तृतीया,

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग (भा. स्टैं. टा.)

फरवरी १९९९ ई.

मास पक्ष	फर. १९९९ ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं	मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	१	१	चं.	२० ४७	आश्ले.	१९ ५७	सौ.	२८ ११	सिं.	१९	५७	७	१९	१७	५४	७	१३	१७	५७	७	१६	१८	०४	६	४५	१७	४०	फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ;
	२	२	मं.	२० ३४	म.	२० १८	शो.	२६ ५८	सिंह			७	१८	१७	५४	७	१३	१७	५८	७	१६	१८	०४	६	४५	१७	४०	
	३	३	बु.	२० ५८	पू.फा.	२१ १६	अ.	२६ १३	क.	२७	४०	७	१८	१७	५५	७	१२	१७	५८	७	१५	१८	०५	६	४४	१७	४१	भ.८ /४६ से २०/५८ तक,
	४	४	गु.	२२ ०	उ.फा.	२२ ५२	सु.	२५ ५९	कन्या			७	१७	१७	५६	७	१२	१७	५९	७	१५	१८	०६	६	४३	१७	४२	
	५	५	शु.	२३ ३९	ह.	२५ १	धृ.	२६ १०	कन्या			७	१६	१७	५७	७	११	१८	००	७	१४	१८	०७	६	४३	१७	४२	बुध धनि. में. १७/३५,
	६	६	श.	२५ ४७	चि.	२७ ३७	शू.	२६ ४३	तु	१४	१९	७	१६	१७	५८	७	१०	१८	००	७	१४	१८	०८	६	४२	१७	४३	भ. २५/४७ बाद, सूर्य धनि.में १५/५७,
	७	७	र.	१८ १२	स्वा.	३० ३०	गं.	२७ २८	तुला			७	१५	१७	५९	७	०९	१८	०१	७	१३	१८	०८	६	४२	१७	४३	भ. १५/०० तक,
	८	८	चं.	३० ४३	वि.	- -	वृ.	२८ १८	वृ.	२६	४२	७	१४	१८	००	७	०८	१८	०२	७	१३	१८	०९	६	४१	१७	४४	शुक्र पू.भा.में २४/५३,
	९	९	मं.	- -	वि.	९ २६	ध्रु	२९ २	वृश्चिक			७	१३	१८	००	७	०८	१८	०३	७	१२	१८	१०	६	४१	१७	४५	बुध कुम्भ में ११/३०,
	१०	९	बु.	९ ५	अनु.	१२ १३	व्या.	२९ ३२	वृश्चिक			७	१२	१८	०१	७	०७	१८	०३	७	१२	१८	१०	६	४०	१७	४५	भ. २२/५ बाद,
	११	१०	गु.	११ ४	ज्ये.	१४ ३८	ह.	२९ ३९	ध.	१४	३८	७	१२	१८	०२	७	०६	१८	०४	७	११	१८	११	६	३९	१७	४६	भ. ११/४ तक,
	१२	११	शु.	१२ ३३	मू.	१६ ३२	व.	२९ १९	धनु			७	११	१८	०३	७	०६	१८	०५	७	११	१८	१२	६	३९	१६	४६	सं. सूर्य कुम्भ में २९/५९, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न से पूर्व, (A)
	१३	१२	श.	१३ २४	पू.षा.	१७ ५०	सि.	२८ २९	म.	२४	१	७	१०	१८	०४	७	०५	१८	०६	७	०९	१८	१३	६	३८	१७	४७	
	१४	१३	र.	१३ ३६	उ.षा.	१८ २९	व्य.	२७ ९	मकर			७	०९	१८	०५	७	०४	१८	०६	७	०९	१८	१३	६	३८	१७	४७	भ. १३/३६ से २५/२३ तक, श्री महाशिवरात्रि व्रत,
	१५	१४	चं.	१३ १०	श्रव.	१८ ३२	व.	२५ २१	कु.	३०	१८	७	०८	१८	०५	७	०४	१८	०७	७	०७	१८	१४	६	३७	१७	४८	पञ्चक प्रा. ३०/१८, गुरु उ.भा.२ में १४/१९,
	१६	३०	मं.	१२ ९	धनि.	१८ ३	प.	२३ ७	कुम्भ			७	०७	१८	०६	७	०३	१८	०८	७	०७	१८	१५	६	३६	१७	४९	शुक्र मीन में २६/३७, भौमवती अमावस,
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	१७	१	बु.	१० ३९	शत.	१७ ७	शि.	२० ३३	कुम्भ			७	०६	१८	०७	७	०२	१८	०९	७	०६	१८	१६	६	३५	१७	५०	फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,
	१८	२	गु.	८ ४६	पू.भा.	१५ ५०	सि.	१७ ४४	मी.	१०	९	७	०५	१८	०८	७	०१	१८	१०	७	०५	१८	१६	६	३५	१७	५०	
				३० ३७																								
	१९	४	शु.	२८ १७	उ.भा.	१४ ११	सा.	१४ ४३	मीन			७	०४	१८	०९	७	००	१८	१०	७	०४	१८	१७	६	३४	१७	५१	भ. १७/२७ से २८/१७ तक, सूर्य सायन मीन में (B)
	२०	५	श.	२५ ५४	रे.	१२ ४०	शु.	११ ३६	मे.	१२	४०	७	०३	१८	०९	६	५९	१८	११	७	०३	१८	१७	६	३३	१७	५१	पञ्चक समाप्त १२/४०, बुध पश्चिम में उदित, बुध पू.भा. में (C)
	२१	६	र.	२३ ३३	अश्वि.	११ ००	शु.	८ २८	मेष			७	०२	१८	१०	६	५८	१८	१२	७	०२	१८	१८	६	३२	१७	५२	
							ब्र.	२९ २२																				
	२२	७	चं.	२१ १७	भ.	९ २३	ऐं.	२६ २२	वृ.	१५	१	७	०१	१८	११	६	५७	१८	१२	७	०२	१८	१८	६	३२	१७	५२	भ. २१/१७ बाद,
	२३	८	मं.	१९ ११	कृ.	७ ५४	वै.	२३ २९	वृष			७	०	१८	१२	६	५६	१८	१३	७	०१	१८	१९	६	३१	१७	५३	भ. ८/१४ तक, होलाष्टक प्रारम्भ,
					रो.	३० ३६																						
	२४	९	बु.	१७ १८	मृ.	२९ ३१	वि.	२० ४८	मि.	१८	४	६	५९	१८	१२	६	५६	१८	१४	७	००	१८	२०	६	३०	१७	५३	
	२५	१०	गु.	१५ ३९	आ.	२८ ४३	प्री.	१८ १९	मिथुन			६	५८	१८	१३	६	५५	१८	१५	६	५९	१८	२१	६	२९	१७	५४	भ. २६/५८ बाद,
	२६	११	शु.	१४ १८	पुन.	२८ १३	आ.	१६ ४	क.	२२	२१	६	५७	१८	१४	६	५४	१८	१५	६	५८	१८	२१	६	२९	१७	५४	भ. १४/१८ तक, बुध मीन में १०/४२,
	२७	१२	श.	१३ १६	पु	२८ ३	सौ.	१४ ५	कर्क			६	५६	१८	१५	६	५३	१८	१६	६	५७	१८	२२	६	२८	१७	५५	गोविन्द द्वादशी,
	२८	१३	र.	१२ ३६	आश्ले.	२८ १५	शो.	१२ २३	सिंह	२८	१५	६	५५	१८	१५	६	५२	१८	१६	६	५६	१८	२२	६	२७	१७	५५	बुध उ.भा. में १९/१३,

(A) बुध शत. में २७।३८, (B) ८/१७,सूर्य शत. में २०/२३, शुक्र उ.भा. में १९/३२ (C) ११/१० यूरेनस श्रव. ४में २५/३८

मार्च १९९९ ई.

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग (भा. स्टैं. टा.)

मास पक्ष	मार्च १९९९ ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं	मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)
फा.	१	१४	चं.	१२ १९	म.	२८ ५३	अ.	१० ५९	सिंह			६	५४	१८	१६	६	५१	१८	१७	६	५५	१८	२३	६	२५	१७	५६	भ. १२/१९ से २४/२४ तक, होलिका दहन,
शु.	२	१५	मं.	१२ २९	पू.फा.	२९ ५६	सु.	९ ५७	सिंह			६	५२	१८	१७	६	५०	१८	१८	६	५४	१८	२३	६	२४	१७	५६	गुरु. उ.भा.३ में २९/५९, शुक्र रेव. में १५/२९,होलाष्टक समाप्त, (A)
चैत्र कृष्ण पक्ष	३	१	बु.	१३ ६	उ.फा.	- -	धृ.	९ १४	कं.	१२	२०	६	५१	१८	१७	६	४९	१८	१८	६	५३	१८	२४	६	२३	१७	५७	चैत्र कृष्ण पक्ष प्रारम्भ;
	४	२	गु.	१४ १३	उ.फा.	७ २८	शू.	८ ५५	कन्या			६	५०	१८	१८	६	४८	१८	१९	६	५२	१८	२५	६	२२	१७	५७	भ. २७/०बाद, सूर्य पू.भा में २६/४३,
	५	३	शु.	१५ ४८	ह.	९ २८	गं.	८ ५८	तु.	२२	४०	६	४९	१८	१९	६	४६	१८	२०	६	५१	१८	२६	६	२१	१७	५८	भ. १५/४८तक,
	६	४	श.	१७ ४८	चि.	११ ५३	वृ.	९ २०	तुला			६	४८	१८	१९	६	४५	१८	२०	६	५०	१८	२७	६	२०	१७	५९	शनि अश्विनी ३ में ९/३७,
	७	५	र.	२० ७	स्वा.	१४ ३८	ध्रु.	९ ५९	तुला			६	४७	१८	२०	६	४४	१८	२१	६	४९	१८	२७	६	१९	१७	५९	
	८	६	चं.	२२ ३६	वि.	१७ ३३	व्या.	१० ४८	वृ.	१०	५०	६	४५	१८	२१	६	४३	१८	२२	६	४८	१८	२८	६	१८	१८	००	भ. २२/३६बाद,
	९	७	मं.	२५ २	अनु.	२० २९	ह.	११ ३९	वृश्चिक			६	४४	१८	२२	६	४२	१८	२२	६	४७	१८	२८	६	१७	१८	००	भ. ११/४९ तक,
	१०	८	बु.	२७ १२	ज्ये.	२३ ११	व.	१२ २४	ध.	२३	११	६	४३	१८	२२	६	४१	१८	२३	६	४६	१८	२९	६	१६	१८	०१	बुध वक्री १४/४२,
	११	९	गु.	२८ ५४	मू.	२५ २९	सि.	१२ ५२	धनु			६	४२	१८	२३	६	४०	१८	२३	६	४५	१८	२९	६	१५	१८	०१	
	१२	१०	शु.	२९ ५८	पू.षा.	२७ १०	व्य.	१२ ५६	धनु			६	४१	१८	२४	६	३९	१८	२४	६	४४	१८	३०	६	१४	१८	०२	भ. १७/२६से २९/५८ तक, बुध पश्चिम में अस्त,
	१३	११	श.	३० १६	उ.षा.	२८ ९	व.	१२ २९	म.	९	२५	६	३९	१८	२४	६	३८	१८	२४	६	४२	१८	३०	६	१३	१८	०२	शुक्र अश्विनी मेष में १३/३८ , वेंकटेश (प्लूटो) वक्री,
	१४	१२	र.	२९ ४८	श्र.	२८ २३	प.	११ २७	मकर			६	३८	१८	२५	६	३७	१८	२५	६	४१	१८	३१	६	१२	१८	०३	सं. सूर्य मीन में २६/५०, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न से पूर्व,
	१५	१३	चं.	२८ ३५	धनि.	२७ ५३	शि.	९ ४९	कुं.	१६	८	६	३७	१८	२५	६	३६	१८	२५	६	४०	१८	३१	६	११	१८	०३	भ. २८/३५ बाद, पञ्चक प्रा. १६/८, राहु आश्ले.३,केतु धनि. (B)
	१६	१४	मं.	२६ ४३	शत.	२६ ४४	सि.	७ ३६	कुम्भ			६	३६	१८	२६	६	३५	१८	२६	६	३९	१८	३२	६	१०	१८	०४	भ. १५/३९तक, गुरु उ.भा.४ में ७/५८,
							सा.	२८ ५१																				
	१७	३०	बु.	२४ १८	पू.भा.	२५ ३	शु.	२५ ४१	मी.	११	२८	६	३५	१८	२७	६	३३	१८	२७	६	३८	१८	३२	६	०९	१८	०४	विक्रमी सं. २०५५पूर्ण,
चैत्र शुक्ल पक्ष	१८	१	गु.	२१ ३९	उ.भा.	२२ ५८	शु.	२२ १३	मीन			६	३३	१८	२८	६	३२	१८	२७	६	३७	१८	३३	६	०८	१८	०५	चैत्र शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,सूर्य उ.भा.में ११/७,मंगल वक्री १९/१०, (C) ,
	१९	२	शु.	१८ २६	रे.	२० ३९	ब्र.	१८ ३३	मे.	२०	३९	६	३२	१८	२९	६	३१	१८	२८	६	३६	१८	३३	६	०७	१८	०५	चन्द्र दर्शन, पञ्चक समाप्त २०/३९, वक्री वेंकटेश (प्लूटो)अनु. ४ में,
	२०	३	श.	१५ १८	अ.	१८ १७	ऐं.	१४ ४८	मेष			६	३१	१८	३०	६	३०	१८	२८	६	३५	१८	३४	६	०६	१८	०६	भ. २५/४६बाद, गौरी तृतीया
	२१	४	र.	१२ १४	भ.	१५ २९	वै.	११ ७	वृ.	२०	५४	६	३०	१८	३०	६	२८	१८	२९	६	३४	१८	३४	६	०५	१८	०६	भ.१२/१४तक,वक्री बुध.पू.भा.में १७/२१,सूर्य सायन मेष में ७/१६, (D) ,
	२२	५	चं.	९ २२	कृ.	१३ ६	वि.	७ ३६	वृष			६	२८	१८	३१	६	२७	१८	२९	६	३३	१८	३५	६	०४	१८	०६	नाग पंचमी, स्कन्द षष्ठी, **गुरु अस्त (२१ मार्च)**
							प्री.	२८ २०																				
	२३	६	मं.	६ ४९	रो.	१२ १३	आ.	२५ २४	मि.	२३	३५	६	२७	१८	३२	६	२६	१८	३०	६	३२	१८	३५	६	०३	१८	०७	भ. २८/४१ बाद, नेपच्यून श्रव. १ में २४/५५ ,
				२८ ४१																								
	२४	८	बु.	२७ २	मृ.	१० ५६	सौ.	२२ ५१	मिथुन			६	२६	१८	३२	६	२५	१८	३०	६	३१	१८	३६	६	०२	१८	०७	भ. १५/५२ तक, शुक्र भरणी में १४ / १२,श्री दुर्गाष्टमी
	२५	९	गु.	२५ ५१	आ.	१० ७	शो.	२० ४१	क.	२७	५२	६	२५	१८	३३	६	२४	१८	३१	६	२९	१८	३६	६	०१	१८	०७	वक्री बुध कुम्भ में १६/ ३३, श्री रामनवमी व्रत, नवरात्र समाप्त;
	२६	१०	शु.	२५ ११	पुन.	९ ४७	अ.	१८ ५५	कर्क			६	२३	१८	३४	६	२३	१८	३१	६	२८	१८	३७	६	००	१८	०८	बुध पूर्व में उदित १२/४,
	२७	११	श.	२४ ५२	पु.	९ ५७	सु.	१७ ३२	कर्क			६	२२	१८	३४	६	२२	१८	३२	६	२७	१८	३७	५	५९	१८	०८	भ. १३/२ से २४/५२ तक;
	२८	१२	र.	२५ १४	आश्ले.	१० ३४	धृ.	१६ ३१	सिं.	१०	३४	६	२१	१८	३५	६	२१	१८	३३	६	२६	१८	३८	५	५८	१८	०९	
	२९	१३	चं.	२५ ५३	म.	११ ३६	शू.	१५ ४९	सिंह			६	१९	१८	३५	६	१९	१८	३३	६	२५	१८	३८	५	५७	१८	०९	गुरु रेवती १ में २७/३६, श्री महावीर जयन्ती (जैन);
	३०	१४	मं.	२६ ५५	पू. फा.	१३ १	गं.	१५ २५	क.	११	२८	६	१८	१८	३६	६	१८	१८	३४	६	२४	१८	३९	५	५६	१८	१०	भ. २६/५५ बाद,
	३१	१५	बु.	२८ १९	उ.फा.	१४ ४७	वृ.	१५ १९	कन्या			६	१७	१८	३६	६	१७	१८	३५	६	२३	१८	३९	५	५५	१८	१०	भ. १५/३७ तक, सूर्य रेवती में २१/५६,

(A) वसन्तोत्सव, (B) १ में १५/४२.(C) गुरु वार्धक्य प्रारम्भ २८/३०, नवरात्र प्रारम्भ, वि.सं. २०५६ प्रा., (D) गुरु अस्त २८/३०, महाविषुव दिन.

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग (भा. स्टैं. टा.)

अप्रैल १९९९ इ.

मास पक्ष	अप्रै. १९९९ ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)
वैशाख कृष्ण पक्ष	१	१	गु.	३० २	ह.	१६ ५३	धु	१५ २८	तु	३०	६	६	१६	१८	३६	६	१५	१८	३६	६	२२	१८	३८	५	५४	१८	१०	वैशाख कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	२	२	शु.	- -	चि.	१९ १९	व्या.	१५ ५३	तुला			६	१५	१८	३७	६	१४	१८	३६	६	२१	१८	३९	५	५३	१८	११	बुध मार्गी १४/५५,
	३	२	श.	८ ४	स्वा.	२२ ००	ह.	१६ ३१	तुला			६	१४	१८	३८	६	१३	१८	३७	६	२०	१८	४०	५	५२	१८	११	भ. २१/१३ बाद,
	४	३	र.	१० २२	वि.	२४ ५४	व.	१७ १९	वृ.	१८	११	६	१२	१८	३८	६	१२	१८	३७	६	१९	१८	४०	५	५१	१८	१२	भ.१०/२२तक,शुक्र कृतिका में १७/५६. शनि अश्वि. ४ में १५/२४,
	५	४	चं.	१२ ४९	अनु.	२७ ५३	सि.	१८ १३	वृश्चिक			६	११	१८	३९	६	११	१८	३८	६	१८	१८	४१	५	५०	१८	१२	
	६	५	मं.	१५ १७	ज्ये.	- -	व्यति.	१९ ६	वृश्चिक			६	१०	१८	४०	६	१०	१८	३८	६	१६	१८	४२	५	४९	१८	१३	
	७	६	बु.	१७ ३५	ज्ये.	६ ४७	व.	१९ ५२	ध.	६	४७	६	९	१८	४१	६	०९	१८	३९	६	१५	१८	४३	५	४८	१८	१४	भ. १७/३५ बाद, शुक्र वृष में १३/२६,
	८	७	गु.	१९ ३३	मू.	९ २६	प.	२० २०	धनु			६	७	१८	४२	६	०८	१८	३९	६	१४	१८	४३	५	४७	१८	१४	भ. ६/३४ तक,
	९	८	शु.	२० ५७	पू.षा.	११ ३७	शि.	२० २३	म.	१८	१	६	६	१८	४२	६	०७	१८	४०	६	१३	१८	४४	५	४६	१८	१४	शनि अस्त ९/४३,
	१०	९	श.	२१ ३८	उ.षा.	१३ ११	सि.	१९ ५४	मकर			६	५	१८	४३	६	०५	१८	४०	६	१२	१८	४४	५	४५	१८	१४	बुध मीन में २४/५५,
	११	१०	र.	२१ ३१	श्रव.	१३ ५९	सा.	१८ ४७	कुं.	२५	५९	६	४	१८	४४	६	०४	१८	४१	६	११	१८	४५	५	४४	१८	१५	भ. ९/३४ से २१ /३१ तक,पञ्चक प्रा. २५/५९.
	१२	११	चं.	२० ३४	धनि.	१३ ५८	शु.	१७ १	कुम्भ			६	३	१८	४४	६	०३	१८	४१	६	१०	१८	४५	५	४३	१८	१५	गुरु रेवती २ में २२/४७,
	१३	१२	मं.	१८ ४८	शत.	१३ ८	शु.	१४ ३५	मी.	२९	५७	६	२	१८	४५	६	०२	१८	४२	६	०९	१८	४६	५	४२	१८	१६	
	१४	१३	बु.	१६ २०	पू.भा.	११ ३५	ब्र.	११ ३४	मीन			६	०	१८	४६	६	०१	१८	४२	६	०८	१८	४६	५	४१	१८	१६	भ. १६/२० से २६/४९ तक, सं.सूर्य अश्वि मेष में ११/१६,(A)
	१५	१४	गु.	१३ १८	उ.भा.	९ ३५	ऐं.	८ ४	मीन			५	५९	१८	४६	६	००	१८	४३	६	०७	१८	४७	५	४०	१८	१७	बुध उ.भा. में ६/१६, शुक्र रोहिणी में २५/२९,
							वै.	२८ १०																				
	१६	३०	शु.	९ ५१	रे.	६ ४९	वि.	२४ ३	मे.	६	४९	५	५८	१८	४७	५	५९	१८	४३	६	०६	१८	४७	५	३९	१८	१७	पञ्चक समाप्त ६/४९,
					अ.	२७ ५८																						
वैशाख शुक्ल पक्ष	१७	१	श.	६ ११	भ.	२५ ४	प्री.	१९ ५१	मेष			५	५७	१८	४८	५	५८	१८	४४	६	०५	१८	४८	५	३८	१८	१८	वैशाख शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्र दर्शन,
				२६ २८																								
	१८	३	र.	२२ ५४	कृ.	२२ १७	आ.	१५ ४४	वृ.	६	२२	५	५६	१८	४८	५	५७	१८	४४	६	०४	१८	४८	५	३७	१८	१८	श्री परशुराम जयन्ती, अक्षय तृतीया,
	१९	४	चं.	१९ ३९	रो.	१९ ४८	सौ.	११ ४९	वृष			५	५५	१८	४९	५	५६	१८	४५	६	०३	१८	४९	५	३६	१८	१९	भ. ९/१७ से १९/३९ तक,
	२०	५	मं.	१६ ५१	मृ.	१७ ४७	शौ.	८ १५	मि.	६	४७	५	५४	१८	४९	५	५५	१८	४५	६	०२	१८	४९	५	३५	१८	१९	सूर्य सायन वृष में १८/१६, जगद्गुरु आद्य शंकराचार्य जयन्ती,
							अ.	२९ ७																				
	२१	६	बु.	१४ ३७	आ.	१६ २१	सु.	२६ २९	मिथुन			५	५३	१८	५०	५	५४	१८	४६	६	०१	१८	५०	५	३४	१८	२०	गुरु उदित १५/५४,श्री रामानुजाचार्य जयन्ती,
	२२	७	गु.	१३ ३	पुन.	१५ ३५	धृ.	२४ २५	क.	९	४७	५	५२	१८	५१	५	५३	१८	४७	६	००	१८	५०	५	३३	१८	२०	भ. १३/३ से २४/३६ तक, श्री गंगाजन्म,
	२३	८	शु.	१२ ९	पु.	१५ २८	शू.	२२ ५३	कर्क			५	५१	१८	५१	५	५२	१८	४८	५	५९	१८	५१	५	३२	१८	२१	
	२४	९	श.	११ ५६	आश्ले.	१६ १	गं.	२१ ५२	सिं.	१६	१	५	५०	१८	५२	५	५१	१८	४८	५	५८	१८	५१	५	३२	१८	२१	श्री जानकी जयन्ती, गुरुबाल्य समाप्त १५/५४,
	२५	१०	र.	१२ १९	म.	१७ ९	वृ.	२१ १८	सिंह			५	४९	१८	५३	५	५०	१८	४९	५	५७	१८	५२	५	३१	१८	२१	भ. २४/४६ बाद,
	२६	११	चं.	१३ १३	पू.फा.	१८ ४६	ध्रु.	२१ ७	क.	२५	१६	५	४८	१८	५३	५	४९	१८	४९	५	५६	१८	५२	५	३०	१८	२१	भ. १३/१३ तक, बुध रेवती में १८/३३, गुरु रेवती ३ में२२/४१;
	२७	१२	मं.	१४ ३४	उ.फा.	२० ४७	व्या.	२१ १५	कन्या			५	४७	१८	५४	५	४९	१८	५०	५	५५	१८	५३	५	२९	१८	२२	सूर्य भरणी में २७/२,शुक्र मृगशिरा में १३/५४,
	२८	१३	बु.	१६ १६	ह.	२३ ८	ह.	२१ ३८	कन्या			५	४६	१८	५५	५	४८	१८	५०	५	५४	१८	५३	५	२९	१८	२२	नृसिंह जयन्ती,
	२९	१४	गु.	१८ १४	चि.	२५ ४३	व.	२२ १३	तु	१२	२५	५	४५	१८	५५	५	४७	१८	५१	५	५३	१८	५४	५	२८	१८	२३	भ. १८/१४ बाद,
	३०	१५	शु.	२० २४	स्वा.	२८ २९	सि.	२२ ५७	तुला			५	४४	१८	५६	५	४६	१८	५२	५	५३	१८	५५	५	२७	१८	२३	भ.७ /१९ तक, शनि भरणी १ में २४/१६,श्री बुद्धपूर्णिमा, श्रीकर्मजयन्ती,

गुरु उदित
२१अप्रैल,

(A) पुण्यकाल सारा दिन, वैशाखी (पंजाब),

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग (भा. स्टैं. टा.)

मई १९९९ ई.

मास पक्ष	मई १९९९ ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.	घं.	मि.	चण्डीगढ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं	मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)
प्र. ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	१	१	श.	२२ ४३	वि.	- -	व्य.	२३ ४८	वृ.	२४	४०	५	४३	१८	५७	५	४५	१८	५३	५	५२	१८	५६	५	२६	१८	२४	प्र. ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ;
	२	२	र.	२५ ८	वि.	७ २३	व.	२४ ४३	वृश्चिक			५	४२	१८	५७	५	४४	१८	५३	५	५२	१८	५६	५	२६	१८	२४	
	३	३	चं.	२७ ३३	अनु.	१० २१	प.	२५ ३८	वृश्चिक			५	४१	१८	५८	५	४३	१८	५४	५	५१	१८	५७	५	२५	१८	२५	भ. १४/२२ से २७/३३ तक, शुक्र मिथुन में १०/२८,
	४	४	मं.	- -	ज्ये.	१३ १७	शि.	२६ ३०	ध.	१३	१७	५	४०	१८	५९	५	४२	१८	५४	५	५०	१८	५७	५	२४	१८	२५	वक्री मंगल चित्रा में १६/७;
	५	४	बु.	५ ५२	मू.	१६ ५	सि.	२७ ११	धनु			५	३९	१८	५९	५	४१	१८	५५	५	४९	१८	५८	५	२३	१८	२६	बुध अश्वि. मेष में १२/५३,
	६	५	गु.	७ ५७	पू.षा.	१८ ३४	सा.	२७ ३४	म.	२५	४	५	३९	१९	०	५	४१	१८	५५	५	४९	१८	५८	५	२३	१८	२६	नेपच्यून वक्री २८/१४,
	७	६	शु.	९ ३६	उ.षा.	२० ३६	शु.	२७ ३३	मकर			५	३८	१९	१	५	४०	१८	५६	५	४८	१८	५९	५	२२	१८	२७	भ.९/३६से २२/९ तक,
	८	७	श.	१० ४१	श्र.	२२ १	शु.	२७ ०	मकर			५	३७	१९	१	५	३९	१८	५६	५	४७	१८	५९	५	२१	१८	२७	
	९	८	र.	११ २	ध.	२२ ४१	ब्र.	२५ ५१	कुं.	१०	२१	५	३६	१९	२	५	३८	१८	५७	५	४६	१९	००	५	२०	१८	२८	पञ्चक प्रा. १०/२१, शुक्र आर्द्रा में ८/५८;
	१०	९	चं.	१० ३६	श.	२२ ३२	ऐं.	२४ २	कुम्भ			५	३५	१९	३	५	३८	१८	५७	५	४६	१९	००	५	२०	१८	२८	भ. २१/५८ बाद,
	११	१०	मं.	९ २०	पू.भा.	२१ ३५	वै.	२१ ३४	मी.	१५	४९	५	३५	१९	३	५	३७	१८	५८	५	४५	१९	०१	५	१९	१८	२९	भ. ९/२० तक, सूर्य कृत्ति. में २१/१४, गुरु रेवती ४ में ९/४५, (A)
	१२	११	बु.	७ १६	उ.भा.	१९ ५४	वि.	१८ २९	मीन			५	३४	१९	४	५	३६	१८	५९	५	४४	१९	०१	५	१९	१८	२९	बुध भर. में २४/३८,
				२८ ३१																								
	१३	१३	गु.	२५ १२	रे.	१७ ३५	प्री.	१४ ५३	मे.	१७	३५	५	३३	१९	५	५	३५	१९	००	५	४३	१९	०२	५	१८	१८	३०	भ. २५/१२ बाद, पञ्चक समाप्त१७/३५,
	१४	१४	शु.	२१ २९	अ.	१४ ४८	आ.	१० ५२	मेष			५	३३	१९	५	५	३५	१९	००	५	४३	१९	०२	५	१८	१८	३०	भ. ११/२२ तक, बुध पूर्व में अस्त ९/४२,
	१५	३०	श.	१७ ३४	भ.	११ ४५	सौ.	६ ३७	वृ.	१६	५७	५	३२	१९	६	५	३४	१९	०१	५	४२	१९	०३	५	१७	१८	३१	सं. सूर्य वृष में ८/४, पुण्यकाल १४/२८ तक, शनि उदित २१/०, (B)
							शो.	२६ १६																				
प्र.(अधिक) ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	१६	१	र.	१३ ३८	कृ.	८ ३८	अ.	२१ ५८	वृष			५	३१	१९	७	५	३४	१९	०१	५	४२	१९	०३	५	१६	१८	३१	मल (अधिक) ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्र दर्शन,
	१७	२	च.	९ ५३	रो.	५ ३८	सु.	१७ ५२	मि.	१६	१८	५	३१	१९	७	५	३३	१९	०२	५	४१	१९	०४	५	१५	१८	३२	राहु आश्लेषा२, केतु श्रवण ४ में १३/४०,
					मृ.	२६ ५८																						
	१८	३	मं.	६ २८	आ.	२४ ४८	धृ.	१४ ८	मिथुन			५	३०	१९	८	५	३३	१९	०२	५	४१	१९	०४	५	१५	१८	३२	भ. १७ /०१ से २७/३५ तक,
				२७ ३५																								
	१९	५	बु.	२५ २०	पुन.	२३ १५	शू.	१० ५२	क.	१७	३८	५	३०	१९	८	५	३२	१९	०३	५	४०	१९	०५	५	१५	१८	३३	बुध कृतिका में १६/३५,
	२०	६	गु.	२३ ५०	पु	२२ २७	गं.	८ १०	कर्क			५	२९	१९	९	५	३२	१९	०४	५	४०	१९	०६	५	१५	१८	३३	
	२१	७	शु.	२३ ७	आश्ले.	२२ २५	वृ.	६ ५	सिं.	२२	२५	५	२९	१९	१०	५	३१	१९	०५	५	३९	१९	०७	५	१४	१८	३४	भ. २३/७ बाद, बुध वृष में ६/२५, यूरेनस वक्री, २७/१७, (C)
							ध्रु.	२८ ३८																				
	२२	८	श.	२३ १०	म.	२३ ८	व्या.	२७ ४७	सिंह			५	२८	१९	१०	५	३१	१९	०५	५	३९	१९	०७	५	१४	१८	३४	भ. ११/९ तक,
	२३	९	र.	२३ ५५	पू.फा.	२४ ३२	ह.	२७ २८	सिंह			५	२८	१९	११	५	३०	१९	०६	५	३९	१९	०८	५	१३	१८	३५	
	२४	१०	चं.	२५ १४	उ.फा.	२६ ३०	व.	२७ ३५	कं.	७	२	५	२७	१९	१२	५	३०	१९	०६	५	३९	१९	०८	५	१३	१८	३५	श्रीगंगा दशहरा,
	२५	११	मं.	२७ १	ह.	२८ ५४	सि.	२८ ३	कन्या			५	२७	१९	१२	५	२९	१९	०७	५	३८	१९	०९	५	१२	१८	३६	भ. १४/७ से २७/१ तक, सूर्य रोहिणी में १७ /२१, बुध रोहिणी में २१/१,
	२६	१२	बु.	२९ ७	चि.	- -	व्य.	२८ ४५	तु.	१८	१५	५	२६	१९	१३	५	२९	१९	०७	५	३८	१९	०९	५	१२	१८	३६	गुरु अश्वि. मेष में १६/२६,
	२७	१३	गु.	- -	चि.	७ ३६	व.	- -	तुला			५	२६	१९	१३	५	२९	१९	०८	५	३७	१९	१०	५	१२	१८	३७	शनि भरणी २ में १७/३,
	२८	१३	शु.	७ २७	स्वा.	१० २८	व.	५ ३६	तुला			५	२६	१९	१४	५	२९	१९	०८	५	३७	१९	१०	५	१२	१८	३७	
	२९	१४	श.	९ ४६	वि.	१३ २४	प.	६ ३१	वृ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	भ. ९/४६ से २२/५७ तक,
	३०	१५	र.	१२ ९	अनु.	१६ २०	शि.	७ २७	वृश्चिक			५	२५	१९	१५	५	२८	१९	०९	५	३६	१९	११	५	११	१८	३८	शुक्र कर्क में २५/७;
*	३१	१	चं.	२४ २१	ज्ये.	११ २३	सि.	८ २२	ध.	११	२३	५	२५	१९	१५	५	२८	१९	१०	५	३६	१९	१२	५	११	१८	३९	द्वि. (अधिक) ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, बुध मृग. में २३/४२,

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग (भा. स्टैं. टा.)

जून १९९९ ई.

मास पक्ष	जून १९९९ ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि
									रा.	घं.	मि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	(सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)
द्वि.(अधिक) ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	१	२	मं.	१६ ४०	मू.	२१ ५७	सा.	९ ११	धनु			५	२५	१९	१६	५	२८	१९	१०	५	३६	१९	१२	५	११	१८	३९	
	२	३	बु.	१८ ३८	पू.षा.	२४ २७	शु.	९ ५०	धनु			५	२५	१९	१६	५	२८	१९	१०	५	३६	१९	१२	५	११	१८	३९	भ. ५/३९ से १८/३८ तक,
	३	४	गु.	२० १६	उ.षा.	२६ ३७	शु.	१० १७	म.	७	१	५	२४	१९	१७	५	२८	१९	११	५	३६	१९	१३	५	११	१८	४०	बुध मिथुन में २७/५५, शुक्र पुष्य में ७/२८,
	४	५	शु.	२१ २८	श्र.	२८ १९	ब्र.	१० २५	मकर			५	२४	१९	१७	५	२८	१९	११	५	३६	१९	१३	५	११	१८	४०	मंगल मार्गी ११/४८,
	५	६	श.	२२ ६	ध.	- -	ऐं.	१० १०	कुं.	१६	५३	५	२४	१९	१८	५	२७	१९	१२	५	३६	१९	१४	५	११	१८	४१	भ. २२/६ बाद, पंचक प्रा. १६/५३,
	६	७	र.	२२ ६	ध.	५ २७	वै.	९ २६	कुम्भ			५	२४	१९	१८	५	२७	१९	१२	५	३६	१९	१४	५	११	१८	४१	भ. १०/६ तक,
	७	८	चं.	२१ २२	श.	५ ५६	वि.	८ १०	मी.	२३	४६	५	२४	१९	१९	५	२७	१९	१२	५	३६	१९	१४	५	११	१८	४१	बुध आर्द्रा में १२/९, बुध पश्चिम में उदित २६/१८,
	८	९	मं.	१९ ५५	पू.भा.	५ ४२	प्री.	६ १९	मीन			५	२४	१९	१९	५	२७	१९	१३	५	३६	१९	१५	५	११	१८	४१	सूर्य मृग. में १५/१८,
					उ.भा.	२८ ४४	आ.	२७ ५२																				
	९	१०	बु.	१७ ४५	रि.	२७ ६	सौ.	२४ ५२	मे.	२७	६	५	२३	१९	२०	५	२७	१९	१४	५	३६	१९	१६	५	११	१८	४२	भ. ६/५० से १७/४५ तक, पंचक समाप्त २७/६,
	१०	११	गु.	१४ ५९	अ.	२४ ५३	शो.	२१ २४	मेष			५	२३	१९	२०	५	२७	१९	१४	५	३६	१९	१६	५	११	१८	४२	
	११	१२	शु.	११ ४३	भ.	२२ १६	अ.	१७ ३३	वृ.	२७	३४	५	२३	१९	२१	५	२७	१९	१४	५	३६	१९	१६	५	११	१८	४३	
	१२	१३	श.	८ ६	कृ.	१९ २२	सु.	१३ २७	वृष			५	२३	१९	२१	५	२७	१९	१५	५	३६	१९	१७	५	११	१८	४३	भ. ८/६ से १८/१२ तक, गुरु अश्वि. २ में ९/३०,
				२८ १९																								
	१३	३०	र.	२४ ३२	रो.	१६ २४	धृ.	८ १४	मि.	२६	५९	५	२३	१९	२१	५	२७	१९	१५	५	३६	१९	१७	५	११	१८	४४	मल (अधिक) ज्येष्ठ मास समाप्त,
							शू.	२९ ४																				
द्वि.(शुद्ध) ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	१४	१	चं.	२० ५७	मृ.	१३ ३३	गं.	२५ ५	मिथुन			५	२३	१९	२२	५	२७	१९	१५	५	३६	१९	१७	५	११	१८	४४	द्वि. (शुद्ध) ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, बुध पुनर्वसु में २३/४८,
	१५	२	मं.	१७ ४२	आ.	१० ५९	वृ.	२१ २६	क.	२७	२६	५	२३	१९	२२	५	२७	१९	१५	५	३६	१९	१७	५	११	१८	४५	चन्द्रदर्शन, सं. सूर्य मिथुन में १४/३८, पुण्यकाल ८/१४ बाद,
	१६	३	बु.	१४ ५९	पुन.	८ ५४	ध्रु.	१८ १४	कर्क			५	२४	१९	२२	५	२७	१९	१७	५	३६	१९	१७	५	११	१८	४५	भ. २५/५६ बाद, शुक्र आश्लेषा में २६/२०, रम्भाव्रत,
	१७	४	गु.	१२ ५४	पु.	७ २६	व्या.	१५ ३५	कर्क			५	२४	१९	२३	५	२७	१९	१७	५	३६	१९	१८	५	११	१८	४५	भ. १२/५४ तक,
	१८	५	शु.	११ ३५	आश्ले.	६ ४२	ह.	१३ ३३	सिं.	६	४२	५	२४	१९	२३	५	२७	१९	१७	५	३६	१९	१८	५	११	१८	४६	
	१९	६	श.	११ ३	म.	६ ४४	व.	१२ ९	सिंह			५	२४	१९	२३	५	२७	१९	१८	५	३६	१९	१८	५	११	१८	४६	
	२०	७	र.	११ १८	पू.फा.	७ ३४	सि.	११ २३	क.	१३	५७	५	२४	१९	२४	५	२७	११	१८	५	३६	१९	१८	५	११	१८	४६	भ. ११/१८ से २३/४७ तक,
	२१	८	चं.	१२ १७	उ.फा.	९ ६	व्यति.	११ ११	कन्या			५	२४	१९	२४	५	२७	१९	१८	५	३७	१९	१९	५	१२	१८	४६	सूर्य सायन कर्क में २५/१९, दक्षिणायन प्रारम्भ, बुध कर्क में(A)
	२२	९	मं.	१३ ५१	ह.	११ १४	व.	११ २७	तु.	२४	३२	५	२४	१९	२४	५	२८	१९	१८	५	३७	१९	१९	५	१२	१८	४७	सूर्य आर्द्रा में १४/१३,
	२३	१०	बु.	१५ ५२	चि.	१३ ४९	प.	१२ ५	तुला			५	२५	१९	२४	५	२८	१९	१८	५	३७	१९	१९	५	१२	१८	४७	भ. २९/१ बाद,
	२४	११	गु.	१८ ९	स्वा.	१६ ४०	शि.	१२ ५५	तुला			५	२५	१९	२४	५	२९	१९	१८	५	३७	१९	१९	५	१३	१८	४७	भ. १८/९ तक, बुध पुष्य में ९/४५, निर्जला एकादशी,
	२५	१२	शु.	२० ३२	वि.	१९ ३८	सि.	१३ ५३	वृ.	१२	५३	५	२५	१९	२४	५	२९	१९	१८	५	३८	१९	२०	५	१३	१८	४७	
	२६	१३	श.	२२ ५४	अनु.	२२ ३५	सा.	१४ ५०	वृश्चिक			५	२५	१९	२५	५	२९	१९	१८	५	३८	१९	२०	५	१३	१८	४७	
	२७	१४	र.	२५ ७	ज्ये.	२५ २३	शु.	१५ ४२	ध.	२५	२३	५	२६	१९	२५	५	२९	१९	१९	५	३८	१९	२०	५	१३	१८	४७	भ. २५/७ बाद, शनि भरणी ३ में ५/४८,
	२८	१५	चं.	२७ ७	मू.	२७ ५९	शु.	१६ २५	धनु			५	२६	१९	२५	५	२९	१९	१९	५	३८	१९	२०	५	१४	१८	४७	भ. १४/७ तक, वटसावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष),
आषा.कृ.	२९	१	मं.	२८ ५०	पू.षा.	------	ब्र.	१६ ५७	धनु			५	२६	१९	२५	५	३०	१९	१९	५	३९	१९	२०	५	१४	१८	४७	आषाढ़ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	३०	२	बु.	------	पू.षा.	६ १७	ऐं.	१७ १४	म.	१२	४७	५	२७	१९	२५	५	३०	१९	१९	५	४०	१९	२१	५	१४	१८	४७	

(A) १८/२४, नेपच्यून उ.षा.४ में २२/३९,

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग (भा. स्टैं. टा.)

जुलाई १९९९ ई.

मास पक्ष	जुलाई १९९९ ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	१	२	गु.	६ १२	उ.षा.	८ १७	वै.	१७ १३	मकर			५	२७	१९	२५	५	३१	१९	१९	५	४०	१९	२१	५	१५	१८	४७	भ. १८/४२ बाद, गुरु अश्वि .३में २१/५८,
	२	३	शु.	७ ११	श्र.	९ ५२	वि.	१६ ५३	कुं.	२२	२८	५	२७	१९	२५	५	३२	१९	१९	५	४०	१९	२१	५	१५	१८	४७	भ. ७/११ तक,पञ्चक प्रारम्भ २२/२८,शुक्र मघा सिंह में २८/४७,
	३	४	श.	७ ४३	ध.	११ २	प्री.	१६ ११	कुम्भ			५	२८	१९	२५	५	३२	१९	१९	५	४०	१९	२१	५	१५	१८	४७	
	४	५	र.	७ ४५	श.	११ ४१	आ.	१५ ५	कुम्भ			५	२८	१९	२५	५	३२	१९	१९	५	४१	१९	२०	५	१६	१८	४७	
	५	६	चं.	७ १५	पू.भा.	११ ४९	सौ.	१३ ३३	मी.	५	४७	५	२९	१९	२५	२	३३	१९	१८	५	४१	१९	२०	५	१६	१८	४७	भ. ७/१५ से १८/४३ तक,
	६	७	मं.	६ ११	उ.भा.	११ २४	शो.	११ ३३	मीन			५	२९	१९	२५	५	३३	१९	१८	५	४२	१९	२०	५	१७	१८	४७	सूर्य पुन. में १३/५३, मंगल स्वाती में २१/५१,
				२८ ३४																								
	७	९	बु.	२६ २५	रे.	१० २४	अ.	९ ६	मे.	१०	२४	५	३०	१९	२५	५	३३	१९	१८	५	४२	१९	२०	५	१७	१८	४७	पञ्चक समाप्त १०/२४,
	८	१०	गु.	२३ ४९	अ.	८ ५५	सु.	६ १४	मेष			५	३०	१९	२४	५	३३	१९	१८	५	४३	१९	२०	५	१८	१८	४७	भ. १३/७ से २३/४९ तक,
							धृ.	२७ ००																				
	९	११	शु.	२० ५०	भ.	७ ०	शू.	२३ २८	वृ	१२	२६	५	३१	१९	२४	५	३४	१९	१८	५	४३	१९	२०	५	१८	१८	४७	
					कृ.	२८ ४४																						
	१०	१२	श.	१७ ३७	रो.	२६ १७	गं.	१९ ४५	वृष			५	३१	१९	२४	५	३४	१९	१८	५	४४	१९	२०	५	१९	१८	४७	
	११	१३	र.	१४ १७	मृ.	२३ ४७	वृ.	१५ ५७	मि.	१३	२	५	३२	१९	२४	५	३५	१९	१८	५	४४	१९	२०	५	१९	१८	४७	भ. १४/१७ से २४/३९ तक,
	१२	१४	चं.	११ ०	आ.	२१ २३	ध्रु	१२ १२	मिथुन			५	३२	१९	२४	५	३६	१९	१७	५	४५	१९	१९	५	२०	१८	४६	बुध वक्री २८/५९,
	१३	३०	मं.	७ ५४	पुन.	१९ १५	व्या.	८ ३६	क.	१३	४७	५	३३	१९	२३	५	३६	१९	१७	५	४५	१९	१९	५	२०	१८	४६	भौमवती अमावस,
				२९ ८			ह.	२९ १७																				
आषाढ़ शुक्ल पक्ष	१४	२	बु.	२६ ५१	पु	१७ ३२	व.	२६ २३	कर्क			५	३३	१९	२३	५	३७	१९	१७	५	४६	१९	१९	५	२०	१८	४६	आषाढ़ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, रथ यात्रा,
	१५	३	गु.	२५ १०	आश्ले.	१६ २३	सि.	२३ ५८	सिं.	१६	२३	५	३४	१९	२३	५	३७	१९	१७	५	४६	१९	१९	५	२०	१८	४६	
	१६	४	शु.	२४ ११	म.	१५ ५३	व्यति.	२२ ७	सिंह			५	३४	१९	२२	५	३८	१९	१६	५	४७	१९	१८	५	२१	१८	४५	भ. १३/४१से २४/११ तक, सं. सूर्य कर्क में २५/३०,(A)
	१७	५	श.	२३ ५७	पू.फा.	१६ ७	व.	२० ५२	क.	२२	२२	५	३५	१९	२२	५	३८	१९	१६	५	४७	१९	१८	५	२१	१८	४५	
	१८	६	र.	२४ २८	उ.फा.	१७ ६	प.	२० १३	कन्या			५	३५	१९	२२	५	३९	१९	१५	५	४८	१९	१७	५	२२	१८	४५	बुध पश्चिम में अस्त ८/१७, कुमार षष्ठी,
	१९	७	चं.	२५ ४०	हृ.	१८ ४६	शि.	२० ६	कन्या			५	३६	१९	२१	५	३९	१९	१५	५	४८	१९	१७	५	२२	१८	४५	भ. २५/४०बाद,राहु आश्ले. १,केतु श्रव.३ में ११/५, विवस्वत सप्तमी,
	२०	८	मं.	२७ २६	चि.	२१ १	सि.	२० २७	तु.	७	५३	५	३६	१९	२१	५	४०	१९	१४	५	४९	१९	१६	५	२३	१८	४४	भ. १४/३३ तक, सूर्य पुष्य में १३/२०,
	२१	९	बु.	२९ ३६	स्वा.	२३ ४१	सा.	२१ ९	तुला			५	३७	१९	२०	५	४०	१९	१४	५	४९	१९	१६	५	२३	१८	४४	
	२२	१०	गु.	- -	वि.	२६ ३६	शु.	२२ २	वृ.	११	५१	५	३८	१९	२०	५	४१	१९	१३	५	५०	१९	१६	५	२४	१८	४३	
	२३	१०	शु.	७ ५७	अनु.	२९ ३२	शु.	२२ ५९	वृश्चिक			५	३८	१९	१९	५	४१	१९	१३	५	५०	१९	१६	५	२४	१८	४३	भ. २१/८ बाद, सूर्य सायन सिंह में १२/१४,
	२४	११	श.	१० १८	ज्ये.	- -	ब्र.	२३ ५१	वृश्चिक			५	३९	१९	१९	५	४२	१९	१२	५	५१	१९	१५	५	२५	१८	४२	भ. १०/१८ तक, हरिशयनी एकादशी,
	२५	१२	र.	१२ ३०	ज्ये.	८ २१	ऐं.	२४ ३२	ध.	८	२१	५	३९	१९	१८	५	४२	१९	१२	५	५१	१९	१५	५	२५	१८	४२	
	२६	१३	चं.	१४ २२	मू.	१० ५३	वै.	२४ ५७	धनु			५	४०	१९	१८	५	४३	१९	११	५	५२	१९	१४	५	२६	१८	४१	
	२७	१४	मं.	१५ ५२	पू.षा.	१३ ३	वि.	२५ २	म.	१९	२९	५	४१	१९	१७	५	४४	१९	११	५	५२	१९	१४	५	२६	१८	४१	भ. १५/५२ से २८/२३ तक,
	२८	१५	बु.	१६ ५४	उ.षा.	१४ ४७	प्री.	२४ ४६	मकर			५	४१	१९	१७	५	४५	१९	१०	५	५३	१९	१३	५	२७	१८	४०	गुरु पूर्णिमा, चन्द्रग्रहण, कोकिला व्रत,
श्राव.कृ.	२९	१	गु.	१७ २९	श्रव.	१६ ४	आ.	२४ ८	कुं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२७	१८	४०	श्रावण कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, पञ्चक प्रा.२८/२९,गुरु अश्वि.४में १७ /५४,
	३०	२	शु.	१७ ३६	धनि.	१६ ५४	सौ.	२३ ९	कुम्भ			५	४३	१९	१५	५	४६	१९	०९	५	५४	१९	१२	५	२८	१८	३९	भ. २९/२७ बाद, शुक्र वक्री ७/५,
	३१	३	श.	१७ १७	शत.	१७ १७	शो.	२१ ४८	कुम्भ			५	४३	१९	१५	५	४६	१९	०९	५	५४	१९	११	५	२८	१८	३९	भ. १७/१७ तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग (भा. स्टैं. टा.)

अगस्त १९९९ ई.

मास पक्ष	अगस्त १९९९ ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल रा. घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मि.	जयपुर सूर्योदय घं. मि.	जयपुर सूर्यास्त घं. मि.	वाराणसी सूर्योदय घं. मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं. मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)
श्रावण कृष्ण पक्ष	१	४	र.	१६ ३१	पू.भा.	१७ १५	अ.	२० ७	मी. ११ १५	५ ४४	१९ १४	५ ४७	१९ ०८	५ ५५	१९ १०	५ २९	१८ ३८	
	२	५	चं.	१५ २२	उ.भा.	१६ ५०	सु.	१८ ६	मीन	५ ४४	१९ १३	५ ४७	१९ ०८	५ ५५	१९ १०	५ २९	१८ ३८	
	३	६	मं.	१३ ५०	रे.	१६ २	धृ.	१५ ४८	मे. १६ २	५ ४५	१९ १२	५ ४८	१९ ०७	५ ५६	१९ ०९	५ ३०	१८ ३७	भ. १३/५० से २४/५५ तक, पञ्चक समाप्त १६/२, (A)
	४	७	बु.	११ ५९	अ.	१४ ५५	शू.	१३ १४	मेष	५ ४६	१९ १२	५ ४८	१९ ०६	५ ५६	१९ ०९	५ ३०	१८ ३७	बुध पूर्व में उदित १६/५४,
	५	८	गु.	९ ५०	भ.	१३ ३१	ग.	१० २५	वृ. १९ ७	५ ४६	१९ ११	५ ४९	१९ ०५	५ ५७	१९ ०८	५ ३१	१८ ३६	मंगल विशाखा में २६/६, शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ १०/४८,
	६	९	शु.	७ २६	कृ.	११ ५३	वृ.	७ २४	वृष	५ ४७	१९ १०	५ ४९	१९ ०५	५ ५७	१९ ०८	५ ३१	१८ ३६	भ. १८/९ से २८/५३ तक, बुध मार्गी ८/५०,
				२८ ५३			ध्रु	२८ १५										
	७	११	श.	२६ १३	रो.	१० ५	व्या.	२५ १	मि. २१ ९	५ ४८	१९ ९	५ ५०	१९ ०४	५ ५८	१९ ०७	५ ३२	१८ ३५	शुक्र अस्त ८ अगस्त
	८	१२	र.	२३ ३४	मृ.	८ १३	ह.	२१ ४७	मिथुन	५ ४८	१९ ९	५ ५०	१९ ०३	५ ५८	१९ ०६	५ ३२	१८ ३४	शुक्र पश्चिम में अस्त १०/४८,
	९	१३	चं.	२११	आ.	६ २३	व.	१८ ३८	क. २३ ६	५ ४९	१९ ८	५ ५१	१९ ०२	५ ५९	१९ ०५	५ ३३	१८ ३३	भ. २१/१ बाद,
					पुन.	२८ ४१												
	१०	१४	मं.	१८ ४०	पु	२७ १३	सि.	१५ ३७	कर्क	५ ४९	१९ ७	५ ५१	१९ ०१	५ ५९	१९ ०४	५ ३३	१८ ३३	भ. ७/५१ तक,
	११	३०	बु.	१६ ३८	आश्ले.	२६ ८	व्य.	१२ ५२	सिं. २६ ८	५ ५०	१९ ६	५ ५२	१९ ००	६ ००	१९ ०३	५ ३४	१८ ३२	हरयाली अमावस, खग्रास सूर्यग्रहण,
श्रावण शुक्ल पक्ष	१२	१	गु.	१५ ३	म.	२५ ३१	व.	१० २७	सिंह	५ ५१	१९ ५	५ ५३	१८ ५९	६ ००	१९ ०२	५ ३४	१८ ३१	श्रावण शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्र दर्शन,
	१३	२	शु.	१३ ५९	पू.फा.	२५ २८	प.	८ २८	सिंह	५ ५१	१९ ४	५ ५४	१८ ५८	६ ०१	१९ ०१	५ ३५	१८ ३०	
	१४	३	श.	१३ ३३	उ.फा.	२६ ३	शि.	६ ५७	कं. ७ २७	५ ५२	१९ ३	५ ५४	१८ ५८	६ ०१	१९ ०१	५ ३५	१८ ३०	भ. २५/३९ बाद, मधुश्रवा तृतीया, सन्धारा तीज,
	१५	४	र.	१३ ४६	ह.	२७ १८	सि.	५ ५७	कन्या	५ ५३	१९ २	५ ५५	१८ ५७	६ ०२	१९ ००	५ ३६	१८ २९	भ. १३/४६ तक, भारत स्वतंत्रता दिवस,
							सा.	२९ २९										
	१६	५	चं.	१४ ४०	चि.	२९ १०	शु.	२९ ३१	तु. १६ १४	५ ५३	१९ १	५ ५५	१८ ५६	६ ०२	१८ ५९	५ ३६	१८ २८	नागपंचमी,
	१७	६	मं.	१६ १०	स्वा.	- -	शु.	- -	तुला	५ ५४	१९ ०	५ ५६	१८ ५५	६ ०३	१८ ५८	५ ३७	१८ २७	सं. सूर्य मघा सिंह में ९/५६, (B)
	१८	७	बु.	१८ ९	स्वा.	७ ३४	शु.	५ ५८	वृ. २७ ३८	५ ५४	१८ ५९	५ ५६	१८ ५४	६ ०३	१८ ५७	५ ३७	१८ २६	भ.१८/९ बाद, गोस्वामी श्री तुलसी जयन्ती,
	१९	८	गु.	२० २७	वि.	१० २०	ब्र.	६ ४३	वृश्चिक	५ ५५	१८ ५८	५ ५७	१८ ५३	६ ०४	१८ ५६	५ ३७	१८ २५	भ. ७/१८ तक, श्री कल्कि जयन्ती, श्री दुर्गाष्टमी,इर्वाष्टमी व्रत,
	२०	९	शु.	२२ ५०	अनु.	१३ १६	ऐं.	७ ३७	वृश्चिक	५ ५६	१८ ५७	५ ५७	१८ ५२	६ ०४	१८ ५५	५ ३७	१८ २४	बुध आश्लेषा में २७/६,
	२१	१०	श.	२५ ५	ज्ये.	१६ ९	वै.	८ ३१	ध. १९ ९	५ ५६	१८ ५६	५ ५८	१८ ५१	६ ०५	१८ ५४	५ ३८	१८ २३	शुक्र उदित -२५ अगस्त
	२२	११	र.	२७ १	मू.	१८ ४७	वि.	९ १६	धनु	५ ५७	१८ ५५	५ ५८	१८ ५०	६ ०५	१८ ५३	५ ३८	१८ २३	भ. १४/३ से २७/१ तक,
	२३	१२	चं.	२८ २८	पू.षा.	२० ५९	प्री.	९ ४३	म. २७ २४	५ ५७	१८ ५४	५ ५९	१८ ४९	६ ०६	१८ ५२	५ ३९	१८ २२	सूर्य सायन कन्या में १९/२१, मंगल वृश्चिक में २२/३५;
	२४	१३	मं.	२९ २०	उ.षा.	२२ ४०	आ.	९ ४६	मकर	५ ५८	१८ ५३	५ ५९	१८ ४८	६ ०६	१८ ५१	५ ३९	१८ २१	
	२५	१४	बु.	२९ ३६	श्र.	२३ ४५	सौ.	९ २२	मकर	५ ५९	१८ ५२	६ ००	१८ ४६	६ ०७	१८ ५०	५ ४०	१८ २०	भ. २९/३६ बाद, गुरु वक्री ७/५७, वक्री शुक्र (C)
	२६	१५	गु.	२९ १७	ध	२४ १५	शो.	८ ३०	कुं. १२ ०	५ ५९	१८ ५१	६ ००	१८ ४५	६ ०७	१८ ४९	५ ४०	१८ १९	भ. १७/२६ तक, पञ्चक प्रारम्भ १२/०, बुध पूर्व में अस्त २२/११(D)
भाद्र. कृष्ण पक्ष	२७	१	शु.	२८ २६	श.	२४ १३	अ.	७ १०	कुम्भ	६ ००	१८ ५०	६ ०१	१८ ४४	६ ०८	१८ ४८	५ ४०	१८ १८	भाद्रपद कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
							सु.	२९ २५										
	२८	२	श.	२७ ८	पू.भा.	२३ ४४	धृ.	२७ १७	मी. १७ ५१	६ ००	१८ ४८	६ ०१	१८ ४३	६ ०८	१८ ४७	५ ४०	१८ १७	बुध मघा सिंह में १६/४५, शुक्र बाल्य समाप्त १५/५९,
	२९	३	र.	२५ २८	उ.भा.	२२ ५१	शू.	२४ ५३	मीन	६ ०१	१८ ४७	६ ०२	१८ ४२	६ ०९	१८ ४६	५ ४१	१८ १६	भ. १४/१८ से २५/२८ तक, मंगल अनुराधा में ११/२६,
	३०	४	चं.	२३ ३२	रे.	२१ ४२	गं.	२२ १४	मे. २१ ४२	६ ०२	१८ ४६	६ ०२	१८ ४१	६ ०९	१८ ४५	५ ४१	१८ १५	पञ्चक समाप्त २१/४२, सूर्य पू.फा. में २९/५९ (E)
	३१	५	मं.	२१ २४	अ.	२० २१	वृ.	१९ २६	मेष	६ ०२	१८ ४५	६ ०३	१८ ४०	६ १०	१८ ४४	५ ४२	१८ १४	

(A) सूर्य आश्ले. में १२/२०, (B) पुण्यकाल १६/२१ तक, वेंकटेश (प्लूटो) मार्गी, (C) आश्ले. कर्क में २३/ ३५, शुक्र पूर्व में उदित १५/५९, ऋक् उपाकर्म (D) रक्षाबन्धन, शुक्ल कृष्ण यजु उपाकर्म, श्रावणी पूर्णिमा, (E) शनि वक्री ६/५०, बहुला चतुर्थी, संकष्ट चतुर्थी, (चन्द्रोदय रात्रि ९ घं. ११ मि.).

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग (भा. स्टैं. टा.)

सितंबर १९९९ ई.

मास पक्ष	सितं. १९९९ ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं	मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	१	६	बु.	१९ ११	भ.	१८ ५४	धु.	१६ ३३	वृ.	२४	३२	६	३	१८	४४	६	०३	१८	३९	६	१०	१८	४३	५	४२	१८	१३	भ.१९/११ बाद,
	२	७	गु.	१६ ५५	कृ.	१७ २४	व्या.	१३ ३७	वृष			६	३	१८	४३	६	०४	१८	३७	६	११	१८	४१	५	४३	१८	१२	भ. ६/४ तक, वक्री यूरेनस श्रव. ३ में ८/१, श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मार्त),
	३	८	शु.	१४ ४०	रो.	१५ ५६	ह.	१० ४२	मि.	२७	१४	६	४	१८	४१	६	०४	१८	३६	६	११	१८	४०	५	४३	१८	११	श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत(वैष्णव), अगस्त्य उदय,
	४	९	श.	१२ २९	मृ.	१४ ३२	व.	७ ५०	मिथुन			६	५	१८	४०	६	०५	१८	३५	६	११	१८	३९	५	४४	१८	१०	भ. २३/२७ बाद, बुध पू.फा. में १२/४१, गुग्गा नवमी,
							सि.	२९ ३																				
	५	१०	र.	१० २६	आ.	१३ १४	व्य.	२६ २३	मिथुन			६	५	१८	३९	६	०५	१८	३४	६	११	१८	३८	५	४४	१८	०९	भ.१०/२६ तक,
	६	११	चं.	८ ३१	पुन.	१२ ७	व.	२३ ५२	क.	६	२४	६	६	१८	३८	६	०६	१८	३३	६	१२	१८	३७	५	४५	१८	०८	
	७	१२	मं.	६ ४९	पु.	११ १२	प.	२१ ३२	कर्क			६	६	१८	३७	६	०६	१८	३२	६	१२	१८	३६	५	४५	१८	०७	भ.२९/२२ बाद,
				२९ २२																								
	८	१४	बु.	२८ १५	आश्ले.	१० ३३	शि.	११ २८	सिं.	१०	३३	६	७	१८	३५	६	०७	१८	३१	६	१३	१८	३५	५	४५	१८	०६	भ. १६/४८ तक,
	९	३०	गु.	२७ ३२	म.	१० १५	सि.	१७ ४०	सिंह			६	७	१८	३४	६	०७	१८	३०	६	१३	१८	३४	५	४५	१८	०५	कुशोत्पाटिनी अमा,
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	१०	१	शु.	२७ १६	पू.फा.	१० २०	सा.	१६ १४	क.	१६	२९	६	८	१८	३३	६	०८	१८	२८	६	१४	१८	३२	५	४६	१८	०४	भाद्रपद शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,
	११	२	श.	२७ ३२	उ.फा.	१० ५४	शु.	१५ ११	कन्या			६	९	१८	३२	६	०८	१८	२७	६	१४	१८	३१	५	४६	१८	०३	चन्द्र दर्शन, बुध उ.फा.में १२/२३, शुक्र मार्गी २९/५३,साम उपाकर्म,
	१२	३	र.	२८ २२	ह.	११ ५९	शु.	१४ ३४	तु.	२४	४९	६	९	१८	३०	६	०९	१८	२६	६	१५	१८	३०	५	४७	१८	०२	श्री वराह जयन्ती, गौरी तृतीया, हरितालिका तृतीया,
	१३	४	चं.	२९ ४५	चि.	१३ ३८	ब्र.	१४ २३	तुला			६	१०	१८	२९	६	०९	१८	२५	६	१५	१८	२९	५	४७	१८	०१	भ. १७/३ से २९/४५ तक, सूर्य उ.फा. में २३/४८, बुध कन्या(A)
	१४	५	मं.	- -	स्वा.	१५ ४८	ऐं.	१४ ३७	तुला			६	१०	१८	२८	६	१०	१८	२३	६	१६	१८	२८	५	४८	१७	५९	
	१५	५	बु.	७ ३८	वि.	१८ २४	वै.	१५ १२	वृ.	११	४५	६	११	१८	२७	६	१०	१८	२२	६	१६	१८	२७	५	४८	१७	५८	
	१६	६	गु.	९ ५४	अनु.	२१ १८	वि.	१६ २	वृश्चिक			६	११	१८	२५	६	११	१८	२१	६	१७	१८	२६	५	४८	१७	५७	सूर्य षष्ठी,
	१७	७	शु.	१२ २२	ज्ये.	२४ १८	प्री.	१६ ५८	ध.	२४	१८	६	१२	१८	२४	६	११	१८	२०	६	१७	१८	२५	५	४८	१७	५६	भ.१२/२२ से २५/३५ तक, सं. सूर्य कन्या में ९/५३,पुण्यकाल(B)
	१८	८	श.	१४ ४७	मू.	२७ ९	आ.	१७ ५१	धनु			६	१३	१८	२३	६	१२	१८	१८	६	१८	१८	२३	५	४९	१७	५५	बुध हस्त में २३/२९, श्री राधाष्टमी,
	१९	९	र.	१६ ५५	पू.षा.	२९ ३८	सौ.	१८ ३०	धनु			६	१३	१८	२१	६	१२	१८	१७	६	१८	१८	२२	५	४९	१७	५४	मंगल ज्येष्ठा में ७/३,
	२०	१०	चं.	१८ ३४	उ.षा.	- -	शो.	१८ ४५	म.	१२	७	६	१४	१८	२०	६	१३	१८	१६	६	१८	१८	२१	५	५०	१७	५३	वक्री गुरु अश्विनी.३में१७/१४,राहु पुष्य ४, केतु श्रव. २ में ८/५४,
	२१	११	मं.	१९ ३३	उ.षा.	७ ३३	अ.	१८ ३१	मकर			६	१४	१८	१९	६	१३	१८	१५	६	१८	१८	२०	५	५०	१७	५२	भ. ७/७ से १९/३३ तक,
	२२	१२	बु.	१९ ४८	श्र.	८ ४७	सु.	१७ ४१	कुं.	२१	२	६	१५	१८	१८	६	१४	१८	१३	६	१९	१८	१९	५	५१	१७	५१	पञ्चक प्रारम्भ २१/२, श्री वामन जयन्ती,
	२३	१३	गु.	१९ १९	ध.	९ १७	धृ.	१६ १६	कुम्भ			६	१५	१८	१६	६	१४	१८	१२	६	१९	१८	१८	५	५१	१७	५०	सूर्य सायन तुला में १७/१, दक्षिण गोल प्रारम्भ,
	२४	१४	शु.	१८ ८	श.	९ ४	शू.	१४ १८	मी.	२६	२८	६	१६	१८	१५	६	१५	१८	११	६	२०	१८	१७	५	५१	१७	४९	भ. १८/८ से २९/१५ तक,
	२५	१५	श.	१६ २१	पू.भा.	८ १४	गं.	११ ५०	मीन			६	१७	१८	१४	६	१५	१८	१०	६	२०	१८	१६	५	५१	१७	४८	
आश्वि.कृष्ण पक्ष	२६	१	र.	१४ ६	उ.भा.	६ ५२	वृ.	८ ५८	मे.	२९	९	६	१७	१८	१३	६	१६	१८	०९	६	२१	१८	१४	५	५२	१७	४६	आश्विन कृष्ण पक्ष प्रारंभ, पञ्चक समाप्त २९/९, बुध चित्रा में (C)
					रि.	२९ ९	ध्रु.	२९ ४८																				
	२७	२	चं.	११ ३१	अ.	२७ १२	व्या.	२६ २७	मेष			६	१८	१८	११	६	१६	१८	०८	६	२१	१८	१३	५	५२	१७	४५	भ. २२/९ बाद, सूर्य हस्त में१५/२१,
	२८	३	मं.	८ ४६	भ.	२५ ११	ह.	२३ २	मेष			६	१८	१८	१०	६	१७	१८	०७	६	२२	१८	१२	५	५३	१७	४४	भ. ८/४६ तक, शुक्र मघा सिंह में ९/५८,
				२९ ५९																								
	२९	५	बु.	२७ १७	कृ.	२३ १३	ब.	१९ ४०	वृ.	६	४२	६	१९	१८	९	६	१७	१८	०६	६	२२	१८	११	५	५३	१७	४३	
	३०	६	गु.	२४ ४६	रो.	२१ २६	सि.	१६ २६	वृष			६	१९	१८	७	६	१८	१८	०४	६	२३	१८	१०	५	५४	१७	४२	भ. २४/४६ बाद,

(A) से [illegible] चतुर्थी, हरितालिका चतुर्थी, विनायक चतुर्थी, (B) [illegible] तक, श्री महालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ, (C) [illegible], बुध पश्चिम में उदय, [illegible]

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग (भा. स्टैं. टा.)

मास पक्ष	अक्टू. १९९९ ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मि.	जयपुर सूर्योदय घं. मि.	जयपुर सूर्यास्त घं. मि.	वाराणसी सूर्योदय घं. मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं. मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)
आश्विन कृष्ण पक्ष	१	७	शु.	२२ ३२	मृ.	१९ ५४	व्य.	१३ २३	मि.	८	४०	६ २०	१८ ६	६ १८	१८ ०३	६ २३	१८ ०९	५ ५४	१७ ४१	भ.११/३९ तक, बुध तुला में ७/५७, श्री महालक्ष्मी व्रत समाप्त,
	२	८	श.	२० ३६	आ.	१८ ४०	व.	१० ३५	मिथुन			६ २१	१८ ५	६ १९	१८ ०२	६ २४	१८ ०८	५ ५५	१७ ४०	जन्म श्री महात्मा गांधी,
	३	९	र.	१९ २	पुन.	१७ ४७	प.	८ ३	क.	१२	०	६ २१	१८ ४	६ १९	१८ ०१	६ २४	१८ ०७	५ ५५	१७ ३९	
							शि.	२९ ४७												
	४	१०	चं.	१७ ४८	पु.	१७ १५	सि.	२७ ४९	कर्क			६ २२	१८ २	६ २०	१८ ००	६ २५	१८ ०६	५ ५६	१७ ३८	भ. ६/२५ से १७/४८ तक,
	५	११	मं.	१६ ५६	आश्ले.	१७ ३	सा.	२६ ७	सिं.	१७	३	६ २२	१८ १	६ २०	१७ ५९	६ २५	१८ ०५	५ ५६	१७ ३७	बुध स्वाती में १९/११,
	६	१२	बु.	१६ २४	म.	१७ १२	शु.	२४ ४२	सिंह			६ २३	१८ ०	६ २१	१७ ५८	६ २६	१८ ०४	५ ५६	१७ ३६	
	७	१३	गु.	१६ १४	पू.फा.	१७ ४२	शु.	२३ ३४	क.	२३	५५	६ २४	१७ ५९	६ २१	१७ ५७	६ २६	१८ ०३	५ ५६	१७ ३५	भ. १६/१४ से २८/२२ तक,
	८	१४	शु.	१६ २७	उ.फा.	१८ ३५	ब्र.	२२ ४४	कन्या			६ २४	१७ ५७	६ २२	१७ ५५	६ २७	१८ ०१	५ ५७	१७ ३४	मंगल मूल धनु में १६/२२,
	९	३०	श.	१७ ४	ह.	१९ ५०	ऐं.	२२ १२	कन्या			६ २५	१७ ५६	६ २२	१७ ५४	६ २७	१८ ००	५ ५७	१७ ३३	श्राद्ध समाप्त, शनैश्चरी अमा, गजच्छाया पर्व,
आश्विन शुक्ल पक्ष	१०	१	र.	१८ ७	चि.	२१ ३१	वै.	२२ १	तु.	८	४२	६ २६	१७ ५५	६ २३	१७ ५३	६ २८	१७ ५९	५ ५८	१७ ३२	आश्विन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, सूर्य चित्रा में २८/१९, (A)
	११	२	चं.	१९ ३७	स्वा.	२३ ३८	वि.	२२ ११	तुला			६ २६	१७ ५४	६ २३	१७ ५२	६ २८	१७ ५८	५ ५८	१७ ३१	
	१२	३	मं.	२१ ३३	वि.	२६ ९	प्री.	२२ ४०	वृ.	१९	३१	६ २७	१७ ५३	६ २४	१७ ५१	६ २९	१७ ५७	५ ५९	१७ ३०	
	१३	४	बु.	२३ ५१	अनु.	२९ ०	आ.	२३ २५	वृश्चिक			६ २७	१७ ५१	६ २४	१७ ५०	६ २९	१७ ५६	५ ५९	१७ ३०	भ. १०/४२ से २३/५१ तक,
	१४	५	गु.	२६ २४	ज्ये.	- -	सौ.	२४ २१	वृश्चिक			६ २८	१७ ५०	६ २५	१७ ४९	६ ३०	१७ ५५	६ ००	१७ २९	नेप्च्यून मार्गी ८/३९, उपांगललिता व्रत,
	१५	६	शु.	२९ ०	ज्ये.	८ ३	शो.	२५ २०	ध.	८	३	६ २९	१७ ४९	६ २६	१७ ४८	६ ३०	१७ ५४	६ ००	१७ २८	बुध विशा. में १०/३५,
	१६	७	श.	- -	मू.	११ ७	अ.	२६ १३	धनु			६ २९	१७ ४८	६ २७	१७ ४७	६ ३१	१७ ५३	६ ०१	१७ २७	शुक्र पू.फा. में २१/६
	१७	७	र.	७ २५	पू.षा.	१३ ५७	सु.	२६ ४८	म.	२०	३३	६ ३०	१७ ४७	६ २७	१७ ४६	६ ३१	१७ ५२	६ ०१	१७ २६	भ. ७/२५ से २०/२५ तक, सं. सूर्य तुला में २१/५१, पुण्यकाल (B)
	१८	८	चं.	९ २५	उ.षा.	१६ २०	धृ.	२६ ५८	मकर			६ ३१	१७ ४६	६ २८	१७ ४५	६ ३२	१७ ५१	६ ०२	१७ २५	महानवमी,
	१९	९	मं.	१० ४७	श्र.	१८ ३	शू.	२६ ३२	मकर			६ ३१	१७ ४५	६ २८	१७ ४४	६ ३२	१७ ५०	६ ०२	१७ २४	वक्री गुरु अश्वि २ में १५/५७, विजया दशमी (दशहरा), नवरात्र समाप्त,
	२०	१०	बु.	११ २२	ध.	१८ ५९	गं.	२५ २८	कुं.	६	३२	६ ३२	१७ ४४	६ २९	१७ ४३	६ ३३	१७ ४९	६ ०३	१७ २३	भ.२३/१४ बाद, पञ्चक प्रारंभ, ६/३२,
	२१	११	गु.	११ ६	श.	१९ ५	वृ.	२३ ४३	कुम्भ			६ ३३	१७ ४२	६ २९	१७ ४२	६ ३३	१७ ४९	६ ०३	१७ २३	भ. ११/६ तक,
	२२	१२	शु.	९ ५८	पू.भा.	१८ २२	ध्रु.	२१ १९	मी.	१२	३३	६ ३३	१७ ४१	६ ३०	१७ ४१	६ ३४	१७ ४८	६ ०४	१७ २२	
	२३	१३	श.	८ ५	उ.भा.	१६ ५६	व्या.	१८ २०	मीन			६ ३४	१७ ४०	६ ३१	१७ ४०	६ ३५	१७ ४७	६ ०४	१७ २२	भ. २९/३३ बाद, सूर्य सायन वृश्चिक में २६/२२ बुध वृश्चिक (C)
				२९ ३३																
	२४	१५	र.	२६ ३२	रे.	१४ ५५	ह.	१४ ५४	मे.	१४	५५	६ ३५	१७ ३९	६ ३२	१७ ३९	६ ३६	१७ ४६	६ ०५	१७ २१	भ.१६/२ तक, पञ्चक समाप्त १४/५५, सूर्य स्वाती में १४/५१, (D)
कार्तिक कृष्ण पक्ष	२५	१	चं.	२३ १३	अ.	१२ ३०	व.	११ ९	मेष			६ ३६	१७ ३८	६ ३२	१७ ३८	६ ३६	१७ ४५	६ ०५	१७ २०	कार्तिक कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	२६	२	मं.	१९ ४७	भ.	९ ५२	सि.	७ १२	वृ.	१५	१२	६ ३६	१७ ३७	६ ३३	१७ ३७	६ ३७	१७ ४४	६ ०६	१७ १९	भ. ३०/६ बाद, मंगल पू.षा. में २७/४८,
							व्य.	२७ १३												
	२७	३	बु.	१६ २५	कृ.	७ १३	व.	२३ १८	वृष			६ ३७	१७ ३६	६ ३३	१७ ३६	६ ३७	१७ ४३	६ ०६	१७ १८	भ. १६/२५ तक, बुध अनु. में ७/२६, करक चतुर्थी (करवा चौथ),
					रो.	२८ ४३														
	२८	४	गु.	१३ १५	मृ.	२६ ३०	प.	१९ ३७	मि.	१५	३७	६ ३८	१७ ३५	६ ३४	१७ ३५	६ ३८	१७ ४२	६ ०७	१७ १७	
	२९	५	शु.	१० २७	आ.	२४ ४२	शि.	१६ १५	मिथुन			६ ३८	१७ ३४	६ ३४	१७ ३५	६ ३८	१७ ४२	६ ०७	१७ १७	
	३०	६	श.	८ ५	पुन.	२३ २५	सि.	१३ १६	क.	१७	४४	६ ३९	१७ ३३	६ ३५	१७ ३४	६ ३९	१७ ४१	६ ०८	१७ १६	भ. ८ / ५ से १९/१० तक, शुक्र उ.फा. में २६/५९,
				३० १५																
	३१	८	र.	२८ ५९	पु.	२२ ४०	सा.	१० ४३	कर्क			६ ४०	१७ ३३	६ ३६	१७ ३३	६ ४०	१७ ४०	६ ०८	१७ १५	अहोई अष्टमी (पंजाब),

(A) शारद नवरात्र प्रारम्भ, (B) मध्याह्नोत्तर, श्री दुर्गाष्टमी, (C) में २०/४७, यूरेनस मार्गी, ११/५८, (D) शरत् पूर्णिमा, महर्षि श्रीवाल्मीकि जयन्ती,

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग (भा. स्टैं. टा.)

नवम्बर १९९९ ई.

मास पक्ष	नवं. १९९९ ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल रा. घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मि.	जयपुर सूर्योदय घं. मि.	जयपुर सूर्यास्त घं. मि.	वाराणसी सूर्योदय घं. मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं. मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)
कार्तिक कृष्ण पक्ष	१	९	चं.	२८ १६	आश्ले.	२२ २८	शु.	८ ३६	सिं. २२ २८	६ ४१	१७ ३२	६ ३६	१७ ३३	६ ४१	१७ ४०	६ ०८	१७ १५	
	२	१०	मं.	२८ ४	म.	२२ ४६	शु.	६ ५६	सिंह	६ ४२	१७ ३१	६ ३७	१७ ३२	६ ४१	१७ ३९	६ ०९	१७ १४	भ.१६/१०से २८/४ तक.
							ब्र.	२९ ४०										
	३	११	बु.	२८ २१	पू.फा.	२३ ३३	ऐं.	२८ ४५	क. २९ ५१	६ ४२	१७ ३०	६ ३८	१७ ३१	६ ४२	१७ ३८	६ १०	१७ १३	शुक्र कन्या में १०/६,
	४	१२	गु.	२९ ३	उ.फा.	२४ ४५	वै.	२८ १०	कन्या	६ ४३	१७ २९	६ ३९	१७ ३०	६ ४२	१७ ३७	६ ११	१७ १२	वक्री शनि भर. २ में २२/३५, गोवत्स द्वादशी,
	५	१३	शु.	३० ८	ह.	२६ २०	वि.	२७ ५३	कन्या	६ ४४	१७ २८	६ ३९	१७ ३०	६ ४३	१७ ३७	६ ११	१७ ११	भ. ३०/८बाद, बुध वक्री ८/१०, धन त्रयोदशी,
	६	१४	श.	- -	चि.	२८ १६	प्री.	२७ ५२	तु. १५ १८	६ ४५	१७ २७	६ ४०	१७ २९	६ ४३	१७ ३६	६ १२	१७ ११	भ. १८/५२ तक, सूर्य विशाखा में २२/५९,
	७	१४	र.	७ ३५	स्वा.	३० ३१	आ.	२८ ७	तुला	६ ४६	१७ २७	६ ४१	१७ २८	६ ४४	१७ ३६	६ १३	१७ १०	बुध पश्चिम में अस्त२१/९,नरक चतुर्दशी, हनुमान जयन्ती, दीपावली
	८	३०	चं.	९ २३	वि.	- -	सौं.	२८ ३६	वृ. २६ २८	६ ४६	१७ २६	६ ४२	१७ २७	६ ४५	१७ ३५	६ १४	१७ १०	सोमवती अमावस, गोवर्धन पूजा, अन्नकूट,
कार्तिक शुक्ल पक्ष	९	१	मं.	११ ३०	वि.	९ ६	शो.	२९ १३	वृश्चिक	६ ४७	१७ २५	६ ४२	१७ २६	६ ४५	१७ ३५	६ १४	१७ ९	कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्र दर्शन,
	१०	२	बु.	१३ ५४	अनु.	११ ५६	अ.	३० १२	वृश्चिक	६ ४८	१७ २५	६ ४३	१७ २६	६ ४६	१७ ३४	६ १५	१७ ९	यम (भ्रातृ)द्वितीया, विश्वकर्मा पूजा,
	११	३	गु.	१६ ३१	ज्ये.	१४ ५९	सु.	- -	ध. १४ ५९	६ ४९	१७ २४	६ ४४	१७ २५	६ ४७	१७ ३४	६ १६	१७ ८	भ. २९/५२ बाद,
	१२	४	शु.	१९ १३	मू.	१८ ७	सु.	७ १२	धनु	६ ५०	१७ २३	६ ४५	१७ २५	६ ४८	१७ ३३	६ १७	१७ ८	भ. १९/१३तक, वक्री बुध विशा. में २३/२२(A)
	१३	५	श.	२१ ४९	पू.षा.	२१ १०	धृ.	८ ११	म. २७ ५२	६ ५०	१७ २३	६ ४५	१७ २४	६ ४८	१७ ३३	६ १७	१७ ७	मंगल उ.षा. में २५/२,
	१४	६	र.	२४ ७	उ.षा.	२३ ५७	शू.	९ १	मकर	६ ५१	१७ २२	६ ४६	१७ २४	६ ४९	१७ ३२	६ १८	१७ ७	वक्री गुरु अश्विनी १ में १३/२६,
	१५	७	चं.	२५ ५४	श्र.	२६ १३	गं.	९ ३४	मकर	६ ५२	१७ २१	६ ४७	१७ २३	६ ५०	१७ ३२	६ १८	१७ ७	भ. २५/५४बाद, वक्री बुध तुला में १४/२
	१६	८	मं.	२६ ५९	ध.	२७ ४९	वृ.	९ ४०	कुं. १५ ६	६ ५३	१७ २१	६ ४८	१७ २३	६ ५१	१७ ३१	६ १९	१७ ७	भ. १४/२७ तक, पंचक प्रारम्भ १५/६, सं. सूर्य(B)
	१७	९	बु.	२७ १३	श.	२८ ३६	ध्रु.	९ ११	कुम्भ	६ ५४	१७ २०	६ ४९	१७ २२	६ ५१	१७ ३०	६ १९	१७ ६	अक्षय नवमी
	१८	१०	गु.	२६ ३३	पू.भा.	२८ ३१	व्या.	८ २	मी. २२ ३०	६ ५५	१७ २०	६ ५०	१७ २२	६ ५२	१७ ३०	६ २०	१७ ६	मंगल मकर में १०/४२,
							ह.	३० १२										
	१९	११	शु.	२५ १	उ.भा.	२७ ३४	व.	२७ ४०	मीन	६ ५६	१७ १९	६ ५१	१७ २२	६ ५३	१७ ३०	६ २१	१७ ६	भ. १३/४७ से २५/१ तक, सूर्य अनु. में २८/५८, भीष्म(C)
	२०	१२	श.	२२ ४१	रे.	२५ ५२	सि.	२४ ३०	मे. २५ ५२	६ ५६	१७ १९	६ ५२	१७ २२	६ ५४	१७ ३०	६ २२	१७ ६	पञ्चक समाप्त २५/५२, तुलसी विवाह,
	२१	१३	र.	१९ ४३	अ.	२३ ३२	व्य.	२० ५०	मेष	६ ५७	१७ १९	६ ५२	१७ २१	६ ५४	१७ २९	६ २२	१७ ५	वैकुण्ठ चतुर्दशी,राहु पुष्य ३ में, केतु श्रव.१ में, ३०/५१
	२२	१४	चं.	१६ १७	भ.	२० ४७	व.	१६ ४८	वृ. २६ २	६ ५८	१७ १८	७ ५३	१७ २१	६ ५५	१७ २९	६ २३	१७ ५	भ. १६/१७ से २६/२५ तक, सूर्य सायन धनु में २३/५५,
	२३	१५	मं.	१२ ३३	कृ.	१७ ४६	प.	१२ ३१	वृष	६ ५९	१७ १८	६ ५४	१७ २१	६ ५६	१७ २९	६ २४	१७ ५	भीष्म पंचक समाप्त , कार्तिक पूर्णिमा, श्री गुरु नानक जयन्ती,
मार्ग. कृ. पक्ष	२४	१	बु.	८ ४४	रो.	१४ ४३	शि.	८ ९	मि. २५ १६	७ ०	१७ १८	६ ५५	१७ २१	६ ५७	१७ २९	६ २५	१७ ५	मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,शुक्र चित्रा में२४/०,बुध पूर्व में उदित २०/१२,
				२९ ०			सि.	२७ ५२										
	२५	३	गु.	२५ ३२	मृ.	११ ४८	सा.	२३ ४७	मिथुन	७ १	१७ १७	६ ५५	१७ २०	६ ५७	१७ २९	६ २५	१७ ५	भ.१५/१६ से २५/३२ तक, बुध मार्गी ९/३४,
	२६	४	शु.	२२ ३०	आ.	९ १३	शु.	२० ३	क. २५ ३८	७ २	१७ १७	६ ५६	१७ २०	६ ५८	१७ २९	६ २६	१७ ५	
	२७	५	श.	२० २	पुन.	७ ६	शु.	१६ ४६	कर्क	७ २	१७ १७	६ ५७	१७ २०	६ ५९	१७ २९	६ २७	१७ ५	
					पु.	२९ ३६												
	२८	६	र.	१८ १२	आश्ले.	२८ ४६	ब्र.	१३ ५९	सिं. २८ ४६	७ ३	१७ १७	६ ५८	१७ २०	७ ०	१७ २९	६ २८	१७ ५	भ. १८/१२ से २९/३९ तक,
	२९	७	चं.	१७ ६	म.	२८ ३७	ऐं.	११ ४५	सिंह	७ ४	१७ १७	६ ५८	१७ २०	७ ०	१७ २९	६ २८	१७ ५	
	३०	८	मं.	१६ ४१	पू.फा.	२९ ९	वै.	१० ६	सिंह	७ ५	१७ १६	६ [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	शुक्र तुला में २०/३०, कालाष्टमी (श्री भैरवाष्टमी),

(A) [illegible] (B) [illegible] (C) [illegible]

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग (भा.स्टैं. टा.)

दिसम्बर १९९९ ई.

मास पक्ष	दिस. १९९९ ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं	मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)
मार्गं. कृ.पक्ष	१	९	बु.	१६ ५७	उ.फा.	३० १८	वि.	८ ५८	कं.	११	२६	७	६	१७	१६	७	०१	१७	२०	७	२	१७	२९	६	३०	१७	०५	भ. २९/२३ बाद , मंगल श्रव. में १३/६.
	२	१०	गु.	१७ ४९	ह.	- -	प्री.	८ १९	कन्या			७	७	१७	१६	७	०१	१७	२०	७	३	१७	२९	६	३१	१७	०५	भ. १७/४९ तक,
	३	११	शु.	१९ १२	ह.	७ ५९	आ.	८ ५	तु.	२१	३	७	७	१७	१६	७	०२	१७	२०	७	३	१७	२९	६	३१	१७	०५	सूर्य ज्येष्ठा में ९/१९,
	४	१२	श.	२१ १०	चि.	१० ६	सौ.	८ १२	तुला			७	८	१७	१६	७	०२	१७	२०	७	४	१७	२९	६	३२	१७	०५	
	५	१३	र.	२३ ७	स्वा.	१२ ३४	शो.	८ ३५	तुला			७	९	१७	१६	७	०३	१७	२०	७	५	१७	२९	६	३२	१७	०५	भ. २३/७ बाद,
	६	१४	चं.	२५ २९	वि.	१५ १७	अ.	९ १०	वृ.	८	३६	७	१०	१७	१६	७	०४	१७	२०	७	६	१७	२९	६	३३	१७	०५	भ. १२/१८तक, बुध वृश्चिक में १४/०, शुक्र(A)
	७	३०	मं.	२८ १	अनु.	१८ १२	सु.	९ ५६	वृश्चिक			७	११	१७	१६	७	०४	१७	२१	७	६	१७	३०	६	३३	१७	०६	भौमवती अमावस.
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	८	१	बु.	३० ४०	ज्ये.	२१ १४	धृ.	१० ४८	ध.	२१	१४	७	११	१७	१६	७	०५	१७	२१	७	७	१७	३०	६	३४	१७	०६	मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, बुध अनुराधा में २९/१९,
	९	२	गु.	- -	मू.	२४ १९	शू.	११ ४४	धनु			७	१२	१७	१७	७	०६	१७	२१	७	८	१७	३०	६	३५	१७	०६	चन्द्र दर्शन,
	१०	२	शु.	९ २०	पू.षा.	२७ २१	गं.	१२ ४०	धनु			७	१३	१७	१७	७	०७	१७	२१	७	९	१७	३०	६	३६	१७	०६	
	११	३	श.	११ ३४	उ.षा.	३० १२	वृ.	१३ ३१	म.	१०	४	७	१३	१७	१७	७	०७	१७	२२	७	९	१७	३१	६	३६	१७	०६	भ. २४/५४बाद, यूरेनस श्रव. ४ में १०/२०,
	१२	४	र.	१४ १४	श्र.	- -	ध्रु.	१४ ११	मकर			७	१४	१७	१७	७	०८	१७	२२	७	१०	१७	३१	६	३७	१७	०६	भ. १४/१४ तक,
	१३	५	चं.	१६ ११	श्र.	८ ४४	व्या.	१४ ३३	कुं.	२१	४६	७	१५	१७	१७	७	०९	१७	२२	७	१०	१७	३१	६	३८	१७	०६	पञ्चक प्रारम्भ २१/४६,
	१४	६	मं.	१७ ३५	ध.	१० ४७	ह.	१४ ३२	कुम्भ			७	१६	१७	१८	७	१०	१७	२२	७	११	१७	३१	६	३९	१७	०७	गुह षष्ठी, चम्पा षष्ठी,
	१५	७	बु.	१८ १६	श.	१२ १३	व.	१३ ५९	मी.	३०	४०	७	१६	१७	१८	७	१०	१७	२३	७	११	१७	३२	६	३९	१७	०७	भ. १८/१६ से ३०/१४ तक, मित्र सप्तमी.
	१६	८	गु.	१८ ११	पू.भा.	१२ ५३	सि.	१२ ५०	मीन			७	१७	१७	१८	७	११	१७	२३	७	१२	१७	३२	६	४०	१७	०८	सं. सूर्य मूल धनु में १२/१५, पुण्यकाल सारा दिन.
	१७	९	शु.	१७ १६	उ.भा.	१२ ४६	व्य.	११ ४	मीन			७	१८	१७	१९	७	११	१७	२३	७	१३	१७	३२	६	४०	१७	०८	शुक्र विशाखा. में २२/५५,
	१८	१०	श.	२५ ३३	रे.	११ ५१	व.	८ ३८	मे.	११	५१	७	१८	१७	१९	७	१२	१७	२३	७	१४	१७	३२	६	४१	१७	०९	भ. २६/१९ बाद , पञ्चक समाप्त ११/५१ (B)
							प.	२९ ३७																				
	१९	११	र.	१३ ६	अ.	१० १३	शि.	२६ ५	मेष			७	१९	१७	२०	७	१२	१७	२४	७	१४	१७	३२	६	४१	१७	०९	भ. १३/६तक, श्री गीता जयन्ती,
	२०	१२	चं.	१० ४	भ.	७ ५८	सि.	२२ ७	वृ.	१३	१८	७	१९	१७	२०	७	१३	१७	२४	७	१५	१७	३३	६	४२	१७	१०	गुरु मार्गी २०/५१,
				३० ३६	कृ.	२९ १५																						
	२१	१४	मं.	२६ ५१	रो.	२६ १६	सा.	१७ ५३	वृष			७	२०	१७	२०	७	१३	१७	२५	७	१५	१७	३३	६	४३	१७	१०	भ. २६/५१ बाद, बुध पूर्व में अस्त ९/४८,
	२२	१५	बु.	२३ १	मृ.	२३ ११	शु.	१३ ३१	मि.	१२	४४	७	२०	१७	२१	७	१४	१७	२५	७	१६	१७	३४	६	४४	१७	११	भ. १२/५६ तक, सूर्य सायन मकर में १३/२१(C)
पौष कृष्ण पक्ष	२३	१	गु.	१९ १६	आ.	२० ११	शु	९ ९	मिथुन			७	२१	१७	२२	७	१४	१७	२५	७	१६	१७	३४	६	४४	१७	११	पौष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ;
							ब्र.	२८ ५६																				
	२४	२	शु.	१५ ४८	पुन.	१७ २९	ऐं.	२५ १	क.	१२	१०	७	२१	१७	२२	७	१५	१७	२६	७	१७	१७	३५	६	४४	१७	१२	भ. २६/१७ बाद,
	२५	३	श.	१२ ४६	पु.	१५ १३	वै.	२१ २९	कर्क			७	२२	१७	२३	७	१५	१७	२७	७	१७	१७	३५	६	४४	१७	१२	भ. १२/४६ तक,
	२६	४	र.	१० १९	आश्ले.	१३ ३२	वि.	१८ २८	सिं.	१३	३२	७	२२	१७	२३	७	१६	१७	२८	७	१८	१७	३६	६	४५	१७	१३	शुक्र वृश्चिक में ७/५३,
	२७	५	चं.	८ ३३	म.	१२ ३४	प्री.	१६ २	सिंह			७	२३	१७	२४	७	१७	१७	२८	७	१८	१७	३६	६	४५	१७	१३	मंगल कुम्भ में १०/१८, बुध मूल धनु में १२/३१(D)
	२८	६	मं.	७ ३४	पू.फा.	१२ २१	आ.	१४ १४	क.	१८	३९	७	२३	१७	२४	७	१७	१७	२९	७	१८	१७	३७	६	४६	१७	१४	भ. ७/३४ से १९/३३ तक, शुक्र अनुराधा में २६/२५,
	२९	७	बु.	७ ३२	उ.फा.	१२ ५४	सौ.	१३ २	कन्या			७	२४	१७	२५	७	१७	१७	२९	७	१८	१७	३८	६	४६	१७	१४	सूर्य पू.षा. में १४/३३,
	३०	८	गु.	७ ५७	ह.	१४ १२	शो.	१२ २५	तु.	२७	९	७	२४	१७	२६	७	१७	१७	३०	७	१९	१७	३९	६	४७	१७	१५	
	३१	९	शु.	९ १३	चि.	१६ ७	अ.	१२ १८	तुला			७	२४	१७	२६	७	१८	१७	३१	७	२०	१७	४०	६	४७	१७	१६	भ. २२/८ बाद,

(A) स्वाती में १४/५३, वेंकटेश (प्लूटो)ज्येष्ठा १ में,(B) मंगल धनिष्ठा में १९/ ५०, बुध ज्येष्ठा में १५/५९ ,(C) उत्तरायण प्रारंभ, श्री दत्त जयन्ती(D) वक्री शनि भरणी १ में १५/५७,

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग (भा. स्टैं. टा.)

जनवरी २००० ई.

मास पक्ष	जन. २००० ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)
पौष कृ.पक्ष	१	१०	श.	११ ३	स्वा.	१८ ३३	सु.	१२ ३८	तुला			७	२४	१७	२७	७	१८	१७	३१	७	२०	१७	४०	६	४७	१७	१७	भ. ११/३ तक,
	२	११	र.	१३ १९	वि.	२१ २०	धृ.	१३ १४	वृ.	१४	३८	७	२५	१७	२८	७	१८	१७	३२	७	२०	१७	४१	६	४७	१७	१७	
	३	१२	चं.	१५ ५१	अनु.	२४ २०	शू.	१४ ३	वृश्चिक			७	२५	१७	२९	७	१९	१७	३३	७	२०	१७	४१	६	४७	१७	१८	
	४	१३	मं.	१८ ३१	ज्ये.	२७ २५	गं.	१४ ५७	ध.	२७	२५	७	२५	१७	२९	७	१९	१७	३४	७	२१	१७	४२	६	४८	१७	१९	भ. १८/३१ बाद, मंगल शत.में२४/३६, बुध पू.षा.में २६/४२,
	५	१४	बु.	२१ १०	मू.	३० २७	वृ.	१५ ५३	धनु			७	२५	१७	३०	७	१९	१७	३५	७	२१	१७	४३	६	४८	१७	१९	भ. ७/५२ तक,
	६	३०	गु.	२३ ४८	पू.षा.	- -	ध्रु.	१६ ४४	धनु			७	२६	१७	३१	७	१९	१७	३६	७	२१	१७	४४	६	४९	१७	२०	
पौष शुक्ल पक्ष	७	१	शु.	२६ २५	पू.षा.	९ २२	व्या.	१७ २८	म.	१६	१	७	२६	१७	३२	७	१९	१७	३७	७	२१	१७	४५	६	४९	१७	२१	पौष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,
	८	२	श.	२८ ९	उ.षा.	१२ ४	ह.	१८ १	मकर			७	२६	१७	३२	७	१९	१७	३७	७	२१	१७	४५	६	४९	१७	२२	चन्द्र दर्शन, शुक्र ज्येष्ठा में २६/४२,
	९	३	र.	२९ ५२	श्र.	१४ २८	व.	१८ १९	कुं.	२७	२५	७	२६	१७	३३	७	१९	१७	३८	७	२१	१७	४६	६	४९	१७	२२	पञ्चक प्रारम्भ २७/२५,
	१०	४	चं.	३१ ८	ध.	१६ २३	सि.	१८ १८	कुम्भ			७	२६	१७	३४	७	१९	१७	३८	७	२१	१७	४६	६	४९	१७	२३	भ. १८/३० से ३१/८ तक,
	११	५	मं.	- -	श.	१८ ४	व्य.	१७ ५६	कुम्भ			७	२६	१७	३५	७	१९	१७	३९	७	२१	१७	४७	६	४९	१७	२४	सूर्य उ.षा. में १६/२८,
	१२	५	बु.	७ ५२	पु.भा.	१९ ५	व.	१७ ९	मी.	१२	५०	७	२६	१७	३६	७	१९	१७	४०	७	२१	१७	४८	६	४९	१७	२५	शनि मार्गी १०/४१,
	१३	६	गु.	८ २	उ.भा.	१९ ३२	प.	१५ ५३	मीन			७	२६	१७	३७	७	१९	१७	४१	७	२१	१७	४९	६	४९	१७	२५	बुध उ.षा. में १०/२५, लोहड़ी (पंजाब),
	१४	७	शु.	७ ३३	रे.	१९ २१	शि.	१४ ८	मे.	१९	२१	७	२६	१७	३७	७	१९	१७	४२	७	२१	१७	४९	६	४९	१७	२६	भ. ७/३३ से १८/५९ तक, पंचक समाप्त १९/२१, (A)
				३० २५																								
	१५	९	श.	२८ ४०	अ.	१८ ३३	सि.	११ ५८	मेष			७	२६	१७	३८	७	१९	१७	४२	७	२१	१७	५०	६	४९	१७	२७	बुध मकर में ११/११,
	१६	१०	र.	२६ २१	भ.	१७ ९	सा.	९ ७	वृ.	२२	४०	७	२५	१७	३९	७	१९	१७	४३	७	२१	१७	५१	६	४९	१७	२८	
							शु.	२९ ५५																				
	१७	११	चं.	२३ ३३	कृ.	१५ १५	शु.	२६ २१	वृष			७	२५	१७	४०	७	१९	१७	४४	७	२१	१७	५२	६	४९	१७	२९	भ. १२/५७से २३/३३ तक,
	१८	१२	मं.	२० २३	रो.	१२ ५६	ब्र.	२२ ३०	मि.	२३	३८	७	२५	१७	४१	७	१९	१७	४५	७	२१	१७	५३	६	४९	१७	२९	
	१९	१३	बु.	१७ १	मृ.	१० २०	ऐं.	१८ ३०	मिथुन			७	२५	१७	४२	७	१९	१७	४६	७	२१	१७	५४	६	४९	१७	३०	शुक्र मूल धनु में २४/५९, नेपच्यून श्रव. १ में १४/४२,
	२०	१४	गु.	१३ ३३	आ.	७ ३८	वै.	१४ २५	क.	२३	३७	७	२४	१७	४३	[illegible]	१८	१७	४७	७	२१	१७	५५	६	४९	१७	३१	भ. १३/३३ से २३/५२ तक, (B)
					पुन.	२८ ५७																						
	२१	१५	शु.	१० १०	पु.	२६ २८	वि.	१० २५	कर्क			७	२४	१७	४४	७	१८	१७	४८	७	२१	१७	५६	६	४९	१७	३१	सूर्य अभिजित् में १२/१, मंगल पू. भा. में २९/५४, (C)
				३१ २			प्री.	३० ३८																				
माघ कृष्ण पक्ष	२२	२	श.	२८ १८	आश्ले.	२४ २२	आ.	२७ ९	सि.	२४	२२	७	२४	१७	४५	७	१७	१७	४९	७	२१	१७	५७	६	४९	१७	३२	माघ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	२३	३	र.	२६ ७	म.	२२ ४६	सौ.	२४ ७	सिंह			७	२४	१७	४५	७	१७	१७	५०	७	२१	१७	५८	६	४९	१७	३३	भ. १५/१२ से २६/७ तक,राहु पुष्य २ केतु उ.षा ४ में २८/७,
	२४	४	चं.	२४ ३५	पू.फा.	२१ ४९	शो.	२१ ३७	क.	२७	४६	७	२३	१७	४६	७	१७	१७	५०	७	२०	१७	५८	६	४८	१७	३४	सूर्य श्रवण में १८/४९ , संकष्ट चतुर्थी,
	२५	५	मं.	२३ ५०	उ.फा.	२१ ३६	अ.	१९ ४२	कन्या			७	२३	१७	४७	७	१७	१७	५१	७	२०	१७	५९	६	४८	१७	३४	गुरु अश्वि. २ में २५/२१,
	२६	६	बु.	२३ ५४	ह.	२२ ११	सु.	१८ २५	कन्या			७	२२	१७	४८	७	१६	१७	५२	७	१९	१७	५९	६	४८	१७	३५	भ. २३/५४ बाद, भारत गणतंत्र दिवस,
	२७	७	गु.	२४ ४४	चि.	२३ ४१	धृ.	१७ ४५	तु.	१०	५६	७	२२	१७	४९	७	१६	१७	५३	७	१९	१८	००	६	४७	१७	३६	भ. १२/१९ तक , शनि भरणी २ में २८/५२,
	२८	८	शु.	२६ १८	स्वा.	२५ ३३	शू.	१७ ३९	तुला			७	२१	१७	५०	७	१५	१७	५४	७	१८	१८	०१	६	४७	१७	३७	बुध धनिष्ठा में २७/५१,
	२९	९	श.	२८ २६	वि.	२८ ७	गं.	१८ १	वृ.	२१	२९	७	२१	१७	५१	७	१४	१७	५५	७	१८	१८	०२	६	४७	१७	३८	
	३०	१०	र.	३० ५७	अनु.	३१ ४	वृ.	१८ ४३	वृश्चिक			७	२०	१७	५२	७	१३	१७	५६	७	१७	१८	०२	६	४६	१७	३९	भ. १७/४१ से ३०/५७ तक, शुक्र पू.षा में २१/५० ज.दि. (D)
	३१	११	चं.	- -	ज्ये.	- -	ध्रु.	१९ ३८	वृश्चिक			७	२०	१७	५३	७	१२	१७	५७	७	१७	१८	०३	६	४५	१७	४०	

(A) सं. सूर्य मकर में २२/५९, पुण्यकाल अगले दिन १४/५९ तक, जन्म दिन श्री गुरु गोविन्द सिंह जी, (B) सूर्य सायन कुम्भ में २३/५३, (C) बुध श्रव. में १०/३४, (D) स्वामी दयानन्द सरस्वती

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग (भा. स्टैं. टा.)

फरवरी २०००ई.

मास पक्ष	फर. २००० ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल रा. घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मि.	जयपुर सूर्योदय घं. मि.	जयपुर सूर्यास्त घं. मि.	वाराणसी सूर्योदय घं. मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं. मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा.स्टै.टा. दिया गया है।)
माघ.कृ.प.	१	११	मं.	९ ३८	ज्ये.	१० १०	व्या.	२० ३६	ध. १० १०	७ १९	१७ ५३	७ १३	१७ ५७	७ १६	१८ ०४	६ ४५	१७ ४०	बुध कुम्भ में २३/३१,
	२	१२	बु.	१२ १८	मू.	१३ १४	ह.	२१ २८	धनु	७ १९	१७ ५४	७ १३	१७ ५८	७ १६	१८ ०४	६ ४५	१७ ४०	
	३	१३	गु.	१४ ४४	पू.षा.	१६ ०६	व.	२२ १०	म. २२ ४४	७ १८	१७ ५५	७ १२	१७ ५८	७ १५	१८ ०५	६ ४४	१७ ४१	भ. १४/४४ से २७/४८ तक, मंगल मीन में २९/४७,
	४	१४	शु.	१६ ५१	उ.षा.	१८ ३९	सि.	२२ ३६	मकर	७ १७	१७ ५६	७ १२	१७ ५९	७ १५	१८ ०६	६ ४३	१७ ४२	
	५	३०	श.	१८ ३४	श्रव.	२० ४८	व्य.	२२ ४३	मकर	७ १७	१७ ५७	७ ११	१८ ००	७ १४	१८ ०७	६ ४३	१७ ४२	बुध शतभिषा में २१/०६, मौनी अमा, शनैश्चरी अमा, महोदय योग,
माघ शुक्ल पक्ष	६	१	र.	१९ ४८	धनि.	२२ ३१	वरी.	२२ २९	कुं. ९ ३९	७ १६	१७ ५८	७ १०	१८ ००	७ १४	१८ ०८	६ ४२	१७ ४३	माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, पंचक प्रा. ९/३९, सूर्य धनि. में २१/५६,
	७	२	चं.	२० ३४	शत.	२३ ४७	प.	२१ ५३	कुम्भ	७ १५	१७ ५९	७ ९	१८ ०१	७ १३	१८ ०८	६ ४२	१७ ४३	चन्द्र दर्शन,
	८	३	मं.	२० ५३	पू.भा.	२४ ३६	शि.	२० ५६	मी. १८ २४	७ १४	१७ ५९	७ ८	१८ २	७ १३	१८ ०९	६ ४१	१७ ४४	मंगल उ.भा. में १४/१३, बुध पश्चिम में उदित २०/१,(A)
	९	४	बु.	२० ४४	उ.भा.	२४ ५९	सि.	१९ ३८	मीन	७ १३	१८ ००	७ ८	१८ ३	७ १२	१८ १०	६ ४१	१७ ४५	भ. ८/४८ से २०/४४ तक, वरद-तिल-कुन्द चतुर्थी,
	१०	५	गु.	२० ०८	रेव.	२४ ५६	सा.	१६ ००	मे. २४ ५६	७ १३	१८ १	७ ७	१८ ३	७ १२	१८ १०	६ ४०	१७ ४५	पञ्चक समाप्त २४/५६, शुक्र उ.षा में १७/४५, वंसन्त पंचमी,
	११	६	शु.	१९ ०७	अश्वि.	२४ २९	शु.	१६ ०२	मेष	७ १२	१८ २	७ ६	१८ ४	७ ११	१८ ११	६ ३९	१७ ४६	
	१२	७	श.	१७ ४२	भर.	२३ ३८	शु.	१३ ४४	वृ. २९ २०	७ ११	१८ ३	७ ६	१८ ५	७ ११	१८ १२	६ ३९	१७ ४६	भ.१७/४२से२८/४८तक, यूरेनस धनि.१में २९/४०, रथ सप्तमी(B)
	१३	८	र.	१५ ५४	कृति.	२२ २६	ब्र.	११ ०८	वृष	७ १०	१८ ४	७ ५	१८ ६	७ ९	१८ १३	६ ३८	१७ ४७	सं. सूर्य कुम्भ में ११/५८, पुण्यकाल सारा दिन(C)
	१४	९	चं.	१३ ४६	रोहि.	२० ५४	ऐं वै.	८ १५ २९ ९	वृष	७ ९	१८ ४	७ ४	१८ ६	७ ९	१८ १३	६ ३८	१७ ४७	
	१५	१०	मं.	११ २१	मृग.	१९ ०६	वि.	२५ ५०	मि. ८ ००	७ ८	१८ ५	७ ४	१८ ७	७ ७	१८ १४	६ ३७	१७ ४८	भ.२२/०२ बाद, बुध पू.भा. में ८/३१,
	१६	११	बु.	८ ४३ २९ ५६	आर्द्रा	१७ ०८	प्री.	२२ २४	मिथुन	७ ७	१८ ६	७ ३	१८ ८	७ ७	१८ १५	६ ३६	१७ ४९	भ. ८/४३ तक, भीष्म द्वादशी,
	१७	१३	गु.	२७ ०५	पुन.	१५ ०४	आ.	१८ ५४	क. ९ ३५	७ ६	१८ ७	७ २	१८ ९	७ ६	१८ १६	६ ३५	१७ ५०	गुरु अश्विनी ३ में ३०/२४,
	१८	१४	शु.	२४ २६	पुष्य	१३ ०१	सौ.	१५ २६	कर्क	७ ५	१८ ७	७ १	१८ १०	७ ५	१८ १६	६ ३५	१७ ५०	भ. २४/२६ बाद,
	१९	१५	श.	२१ ५६	आश्ले.	११ ०७	शो.	१२ ०७	सिं. ११ ७	७ ५	१८ ८	७ ०	१८ १०	७ ४	१८ १७	६ ३४	१७ ५१	भ. ११/११तक, सूर्य शतभिषा में २६/२८ , सूर्य सायन(D)
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	२०	१	र.	१९ ४८	मघा	९ ३०	अ. सु.	९ २ ३० १७	सिंह	७ ४	१८ ९	६ ५९	१८ ११	७ ३	१८ १७	६ ३३	१७ ५१	फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	२१	२	चं.	१८ १०	पू.फा.	८ १८	धृ.	२७ ५९	क. १४ ०९	७ ३	१८ १०	६ ५८	१८ १२	७ २	१८ १८	६ ३२	१७ ५२	भ. २९/३९ बाद, बुध वक्री १८/१४, शुक्र श्रव. में १३/१२,(E)
	२२	३	मं.	१७ ०८	उ.फा.	७ ४०	शू.	२६ १२	कन्या	७ १	१८ ११	६ ५७	१८ १२	७ २	१८ १८	६ ३२	१७ ५२	भ. १७/०८ तक,
	२३	४	बु.	१६ ४८	हस्त	७ ४२	गं.	२५ ००	तु. २० ०४	७ ०	१८ ११	६ ५६	१८ १३	७ १	१८ १९	६ ३१	१७ ५३	
	२४	५	गु.	१७ १४	चित्रा	८ २६	वृ.	२४ २३	तुला	६ ५९	१८ १२	६ ५६	१८ १४	७ ०	१८ २०	६ ३०	१७ ५३	
	२५	६	शु.	१८ २५	स्वा.	९ ५५	ध्रु.	२४ ११	वृ. २९ ३२	६ ५८	१८ १३	६ ५५	१८ १५	६ ५९	१८ २१	६ २९	१७ ५४	भ. १८/२५ बाद, मंगल रेवती. में २७/२७,
	२६	७	श.	२०.१६	विशा.	१२ ०४	व्या.	२४ ४५	वृश्चिक	६ ५७	१८ १४	६ ५४	१८ १५	६ ५८	१८ २१	६ २९	१७ ५४	भ. ७/२२तक,
	२७	८	र.	२२ ३६	अनु.	१४ ४५	ह.	२५ ३०	वृश्चिक	६ ५६	१८ १४	६ ५३	१८ १६	६ ५७	१८ २२	६ २८	१७ ५५	
	२८	९	चं.	२५ १३	ज्ये.	१७ ४६	व.	२६ २७	ध. १७ ४६	६ ५५	१८ १५	६ ५२	१८ १६	६ ५६	१८ २२	६ २७	१७ ५५	वक्री बुध शतभिषा में ७/५५ ,
	२९	१०	मं.	२७ ५१	मूल	२० ५१	सि.	२७ २४	धनु	६ ५४	१८ १६	६ ५१	१८ १७	६ ५५	१८ २३	६ २६	१७ ५६	भ. १४/३२ से २७/५१ तक,

(A) गौरी तृतीया (गौंतरी), (B) [illegible] सप्तमी, (C) शुक्र मकर [illegible] (D) [illegible] माघी पूर्णिमा (E) बुध पश्चिम में अस्त १७/३०,

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग (भा. स्टैं. टा.)

मार्च २०००ई.

मास पक्ष	मार्च २००० ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)
									रा.	घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	
फाल्गु.कृ.पक्ष	१	११	बु.	३० १५	पू.षा.	२३ ४७	व्य.	२८ १२	म.	३०	२६	६	५३	१८	१७	६	५१	१८	१७	६	५५	१८	२३	६	२५	१७	५६	
	२	१२	गु.	- -	उ.षा.	२६ २२	व.	२८ ४२	मकर			६	५२	१८	१७	६	५०	१८	१८	६	५४	१८	२३	६	२४	१७	५६	
	३	१२	शु.	८ १४	श्रव.	२८ २८	प.	२८ ४७	मकर			६	५१	१८	१८	६	४९	१८	१८	६	५३	१८	२४	६	२३	१७	५७	शुक्र धनि. में ८/१८,
	४	१३	श.	९ ४१	धनि.	२९ ५९	शि.	२८ २६	कुं.	१७	१४	६	५०	१८	१९	६	४८	१८	१९	६	५२	१८	२५	६	२२	१७	५८	भ. ९/४१ से २२/०७ तक, पञ्चक प्रारम्भ. १७/१४, सूर्य(A)
	५	१४	र.	१० ३२	शत.	- -	सि.	२७ ३७	कुम्भ			६	४८	१८	१९	६	४६	१८	२०	६	५१	१८	२६	६	२१	१७	५९	
	६	३०	चं.	१० ४६	श.	६ ५५	सा.	२६ २१	मी.	२५	१३	६	४७	१८	२०	६	४५	१८	२०	६	५०	१८	२७	६	२०	१७	५९	सोमवती अमावस,
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	७	१	मं.	१० २८	पू.भा.	७ १९	शु.	२४ ४२	मीन			६	४६	१८	२१	६	४४	१८	२१	६	४९	१८	२७	६	१९	१७	५९	**फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ**, चन्द्र दर्शन, गुरु अश्विनी ४ में ७/३०,
	८	२	बु.	९ ४१	उ.भा.	७ १४	शु.	२२ ४३	मीन			६	४५	१८	२१	६	४३	१८	२२	६	४८	१८	२८	६	१८	१८	००	शुक्र कुम्भ में १७/४७, बुध पूर्व में उदित १८/५३,जन्मदिन(B)
	९	३	गु.	८ ३१	रेव.	६ ४६	ब्र.	२० २८	मे.	६	४६	६	४३	१८	२२	६	४२	१८	२२	६	४७	१८	२८	६	१७	१८	००	भ. २०/११ बाद, पञ्चक समाप्त ६/४६,
					अश्वि.	३० ०																						
	१०	४	शु.	७ ५२	भ.	२९ ०	ऐं.	१८ ०	मेष			६	४२	१८	२३	६	४१	१८	२३	६	४६	१८	२९	६	१६	१८	०१	भ.७/५२ तक,
				२९ २०																								
	११	६	श.	२७ २८	कृ.	२७ ५१	वै.	१५ २४	वृ.	१०	४४	६	४१	१८	२३	६	४०	१८	२३	६	४५	१८	२९	६	१५	१८	०१	
	१२	७	र.	२५ ३०	रो.	२६ ३५	वि.	१२ ४०	वृष			६	४०	१८	२४	६	३९	१८	२४	६	४४	१८	३०	६	१४	१८	०२	भ. २५/३० बाद,
	१३	८	चं.	२३ २७	मृ.	२५ १४	प्री.	९ ५३	मि.	१३	५५	६	३९	१८	२५	६	३८	१८	२४	६	४२	१८	३०	६	१३	१८	०२	भ. १२/२९ तक, शुक्र शतभिषा में २७/१७, होलाष्टक प्रारम्भ,
	१४	९	मं.	२१ २०	आ.	२३ ५१	आ.	७ १	मिथुन			६	३७	१८	२५	६	३७	१८	२५	६	४१	१८	३१	६	१२	१८	०३	सं. सूर्य मीन में ८ / ५४, पुण्यकाल १५/१८ तक, मंगल(C)
							सौ.	२८ ८																				
	१५	१०	बु.	११ १३	पु.	२२ २७	शो.	२५ १५	क.	१६	४८	६	३६	१८	२६	६	३६	१८	२५	६	४०	१८	३१	६	११	१८	०३	भ. ३०/१० बाद, वेंकटेश (प्लूटो)वक्री,
	१६	११	गु.	१७ ०७	पु.	२१ ०४	अ.	२२ २४	कर्क			६	३५	१८	२७	६	३५	१८	२६	६	३९	१८	३२	६	१०	१८	०४	भ. १७/७ तक, शनि भरणी ३ में २३/५५, गोविन्द द्वादशी,
	१७	१२	शु.	१५ ०५	आश्ले.	१९ ४७	सु.	१९ ३७	सिं.	१९	४७	६	३४	१८	२७	६	३३	१८	२७	६	३८	१८	३२	६	०९	१८	०४	सूर्य उ.भा. में १७/१४ तक,
	१८	१३	श.	१३ १२	म.	१८ ४०	धृ.	१६ ५८	सिंह			६	३२	१८	२७	[illegible]	३२	१८	२७	६	३७	१८	३३	६	०८	१८	०५	
	१९	१४	र.	११ ३३	पू.फा.	१७ ४७	शू.	१४ ३१	क.	२३	३९	६	३१	१८	२९	[illegible]	३१	१८	२८	६	३६	१८	३३	६	०७	१८	०५	भ. ११/३३ से २२/५३ तक, होलिका दहन,
	२०	१५	चं.	१० १४	उ.फा.	१७ १७	ग.	१२ २१	कन्या			६	३०	१८	२९	[illegible]	३०	१८	२८	६	३५	१८	३४	६	०६	१८	०६	सूर्य सायन मेष में १३/०५, उत्तर गोल प्रारम्भ,
चैत्र कृष्ण पक्ष	२१	१	म.	९ २२	ह.	१७ १४	वृ.	१० ३३	तु.	२९	२९	६	२९	१८	३०	६	२८	१८	२९	६	३४	१८	३४	६	०५	१८	०६	चैत्र कृष्ण पक्ष प्रारम्भ , वसन्तोत्सव,
	२२	२	बु.	९ ०२	चि.	१७ ४५	ध्रु	९ १०	तुला			६	२७	१८	३०	६	२७	१८	२९	६	३३	१८	३५	६	०४	१८	०६	भ. २१/११ बाद,
	२३	३	गु.	९ २०	स्वा.	१८ ५४	व्या.	८ १७	तुला			६	२६	१८	३१	६	२६	१८	३०	६	३२	१८	३५	६	०३	१८	०७	भ. ९/२० तक, गुरु भरणी १ में ६/२८,
	२४	४	शु.	१० १८	वि.	२० ४२	ह.	७ ५५	वृ.	१४	१५	६	२४	१८	३२	६	२५	१८	३०	६	३१	१८	३६	६	०२	१८	०७	शुक्र पू.भा. में २२/२०,
	२५	५	श.	११ ५४	अ.	२३ ०४	व.	८ ०३	वृश्चिक			६	२४	१८	३२	६	२४	१८	३१	६	२९	१८	३६	६	०१	१८	०७	
	२६	६	र.	१४ ०३	ज्ये.	२५ ५३	सि.	८ ३६	ध.	२५	५३	६	२२	१८	३३	६	२३	१८	३१	६	२८	१८	३७	६	००	१८	०८	भ. १४/०३से २७/१८ तक, राहु पुष्य १, केतु उ.षा. ३ में २५/५१,
	२७	७	चं.	१६ ३२	मू.	२८ ५७	व्य.	९ २७	धनु			६	२१	१८	३४	६	२२	१८	३२	६	२७	१८	३७	५	५९	१८	०८	
	२८	८	मं.	१९ ०८	पू.षा.	- -	व.	१० २६	धनु			६	२०	१८	३५	६	२१	१८	३३	६	२६	१८	३८	५	५८	१८	०९	
	२९	९	बु.	२१ ३५	पू.षा.	७ ५७	प.	११ २३	म.	१४	३९	६	१९	१८	३५	६	१९	१८	३३	६	२५	१८	३८	५	५७	१८	०९	सूर्य रेवती में २८/०७,
	३०	१०	गु.	२३ ३७	उ.षा.	१० ४६	शि.	१२ ०५	मकर			६	१८	१८	३६	६	१८	१८	३४	६	२४	१८	३९	५	५६	१८	१०	भ. १०/३६ से २३/३७ तक,
	३१	११	शु.	२५ ०३	श्रव.	१३ ०३	सि.	१२ २३	कुं.	२५	५३	६	१६	१८	३६	६	१७	१८	३५	६	२३	१८	३९	५	५५	१८	१०	बुध पू.भा. में २६/०८, पंचक प्राररम्भ २५/५३,

(A) पू.भा. में ८/ ५०, श्री महाशिवरात्रि व्रत(B) श्री रामकृष्ण परमहंस, (C) अश्विनी मेष में २३/१३, बुध मार्गी २३/०८,

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग (भा. स्टैं. टा.)

अप्रैल २०००ई.

मास पक्ष	अप्रै. २००० ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.	घं.	मि.	चण्डीगढ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)
चैत्र कृ. पक्ष	१	१२	श.	२५ ४६	धनि.	१४ ४२	सा.	१२ ११	कुम्भ			६	१५	१८	३७	६	१५	१८	३६	६	२२	१८	३८	५	५४	१८	१०	मंगल भर. में २६/५४, शुक्र मीन में २४/४२,
	२	१३	र.	२५ ४५	शत.	१५ ३७	शु.	११ २५	कुम्भ			६	१४	१८	३७	६	१४	१८	३६	६	२१	१८	३९	५	५३	१८	११	भ. २५/४५ बाद, वारुणी पर्व(१५/३७ तक),
	३	१४	चं.	२५ ०१	पू.भा.	१५ ५०	शु.	१० ०४	मी.	९	४७	६	१३	१८	३८	६	१३	१८	३७	६	२०	१८	४०	५	५२	१८	११	भ. १३/२३ तक,
	४	३०	मं.	२३ ४२	उ.भा.	१५ २५	ब्र.	८ १२	मीन			६	१२	१८	३९	६	१२	१८	३७	६	१९	१८	४०	५	५१	१८	१२	शुक्र उ.भा. में १७/३० भौमवती अमा, वि.सं. २०५६ पूर्ण ,
							ऐं.	२१ ५३																				

(पृष्ठ 125 का शेष भाग)

– भा.स्टैं. टा. वाले तिथ्यादि कालों को विदेशी स्टैं. टा. में बदलना आसान है –

स्टैं. टा. वाले पंचांग को विश्व के किसी भी देश में इस्तेमाल करने के लिए कुछ भी परिश्रम नहीं करना पड़ता। जिस देश का पंचांग आपके पास है और जिस अभीष्ट देश के लिए आप उसे इस्तेमाल करना चाहते हैं — उन दोनों देशों के स्टैं. टाइमों का अन्तर जानिए (पृ. 186 पर भा.स्टैं. टा. और विश्व के अन्य देशों के स्टैं.टा. का अन्तर दिया हुआ है ।) आपके पंचांगीय देश के स्टैं. टा. से यदि अभीष्ट देश का स्टैं. टा. आगे हो तो पंचांगीय देश के स्टैं. टा. में यह अन्तर जोड़ दें, अन्यथा घटा दें । इस प्रकार वह अभीष्ट देशीय स्टैं.टा. बन जाएगा

उदाहरण— ४ अप्रै. '९९ को वैशा. कृष्ण तृतीया भा.स्टैं.टा. के अनुसार प्रातः १० घं. २२ मि. पर समाप्त होगी। हांगकांग में यह तिथि हांगकांग के स्टैं.टा. के अनुसार कब समाप्त होगी — यह जानने के लिए हांगकांग ओर भारत के स्टैं.टाईमों के अन्तर २ घं. ३० मि. को १० घं. २२ मि. में जोड़ने पर १२ घं. ५२ मि. मिला। यह हांगकांग में वहां के स्टैं. टा. के अनुसार वैशा. कृ. तृतीया का समाप्तिकाल मिला। क्योंकि हांगकांग का स्टैं.टा. भा.स्टैं.टा. से २ घं. ३० मि. आगे रहता है, अतः यहाँ २ घं. ३० मि. जोड़े गए हैं।

दूसरा उदाहरण लीजिए— ७ अप्रै. '९९ को १३ घं. २६ मि.(भा.स्टैं.टा.)पर शुक्र वृष में प्रवेश करेगा। इंग्लैण्ड में वहां के स्टैं. टा. (जिसे G.M.T. कहा जाता है) के अनुसार शुक्र का वृष में प्रवेश ७ घं. ५६ मि. पर होगा । (G.M.T. भा.स्टैं.टा. से ५ घं. ३० मि. पीछे रहता है)

एक और उदाहरण लेते हैं— टोकियो (जापान) में बसे श्री अरुण मिश्र के घर २५ अप्रै. '९९ को जापानी स्टैं.टा. के अनुसार १९ घं. २० मि. पर पुत्रजन्म हुआ। ज्ञात कीजिए–क्या यह बच्चा गण्डमूल में पैदा हुआ है। क्योंकि गण्डमूल नक्षत्र मघा २५ अप्रै.'९९ को भा.स्टैं.टा. के अनुसार १७ घं. ९ मि. पर समाप्त हो रहा है । जापानी स्टैं. टा., भा. स्टैं.टा. से ३ घं. ३० मि. आगे रहता है। अतः जापानी स्टैं.टा. के अनुसार इस (मघा) नक्षत्र की समाप्ति २० घं. ३९ मि. पर होगी। अतः स्पष्ट है , श्री अरुण मिश्र जी का पुत्र गण्डमूल में ही जन्मा है। उन्हें गण्डमूल शान्ति करवानी पड़ेगी।

उपरोक्त विवरण से पाठक समझ गए होंगे कि स्टैं.टा. के प्रयोग से पंचांग के तिथ्यादि के काल विश्वजनीन (Universal)बन जाते हैं। स्टैं.टा. वाले पंचांग को विश्व के किसी भी देश में आप तुरन्त (मौखिक जोड़-घटाव द्वारा ही) इस्तेमाल करने योग्य बना सकते हैं। घड़ी-पल वाले पंचांग को तो, विदेश की बात तो दूर रही, आप अपने ही देश के अन्य नगरों में भी आसानी से इस्तेमाल नहीं कर सकते । इसलिए घड़ी-पलों के झंझट को नमस्कार कीजिए, स्टैं.टा. को अपनाइए। इसके प्रयोग से, दैवज्ञ लोग देखेंगे, जन्मपत्र, वर्षफल आदि की गणित सरल एवं अल्पकालसाध्य बन जाती है।

अन्त में पाठकों को हम यह बतला देना आवश्यक समझते हैं कि किसी नगर के सूर्यादि ग्रहों के उदयास्त, लग्नों की प्रारम्भ समाप्ति एवं सूर्यग्रहण के स्पर्श-मोक्ष का काल स्टैं.टा. में भले ही क्यों न हों, इन्हें तिथ्यादि के स्टैं.टा. की भान्ति दूसरे नगर में इस्तेमाल नहीं कियाजा सकता। इन्हें स्टैं.टा. के अन्तर का संस्कार करके दूसरे देशों में भी इस्तेमाल नहीं करना चाहिए ।इन्हें तो उसी नगर में इस्तेमाल किया जा सकता है जिस नगर के लिए इन्हें स्पष्ट किया (बनाया गया) है। अन्य नगरों के लिए इन्हें स्पष्ट करना हो तो इसके लिए उन नगरों के अपने-अपने अक्षांश -रेखांशों के अनुसार विशेष गणित प्रक्रिया करनी पड़ती है ।

चन्द्रमा का नक्षत्रों के चरणों में प्रवेश का काल

सं २०५२ से हमने चन्द्रमा का नक्षत्रों के चरणों में प्रवेश का काल (भा.स्टै. टा.) देना प्रारम्भ किया है। उ. भारत के किसी भी पंचांग में यह हमारा प्रथम प्रयास है। आशा है कि पाठकों की यह अनेक समस्यायों को दूर करेगा। बच्चा जिस समय जन्म लेता है, उस समय किस नक्षत्र के किस चरण (नवांश) में चन्द्रमा है- यह इससे सहसा ज्ञात हो जाएगा, जिससे बच्चे के नाम का आदि अक्षर तथा उसकी जन्मराशि का नवांश तुरन्त जाना जा सकेगा। **ध्यान रहे-** इन पृष्ठों पर दिया गया काल नक्षत्र-चरणों की समाप्ति का नहीं, अपितु प्रारम्भ का है। जैसे- ७मार्च९७ को धनि-नक्षत्र के आगे "२ चरण "वाले कालम में १०।२१ लिखा है। इसका अर्थ है कि ७ मार्च को प्रात: १० बजकर २१ मिनट पर चन्द्र धनि-नक्षत्र के द्वितीय चरण में प्रविष्ट होगा (या यूँ कहिए कि इस समय धनि-का दूसरा चरण प्रारम्भ होगा)। जहाँ तारीख वाले कालम में दो तारीखें लिखी हैं वहां समझना चाहिए कि उस नक्षत्र के शुरू के कुछ चरण पहली तारीख को तथा शेष चरण दूसरी तारीख को प्रारम्भ होगें। जैसे- २४।२५ मार्च, ९७ के आगे हस्त नक्षत्र है। इसका अर्थ है ,कि इस नक्षत्र का पहला, दूसरा एवं तीसरा चरण २४ मार्च को और च ुर्थ चरण २५ मार्च को प्रारम्भ होगा।

चन्द्र का नक्षत्र चरण में प्रवेशकाल ज्ञात होने से ज्यो।तिषियों को जन्मनक्षत्र का भभोग निकालकर उसे ४ से भाग देने आदि की प्रक्रिया से छुटकारा मिल जाएगा। मान लीजिए-किसी बच्चे का जन्म ३ फरवरी, ९७ को प्रात: ९ बजकर ४५ मि. पर हुआ है। ३ फरवरी ९७ को ज्ये. नक्षत्र का प्रथम चरण प्रात: ४।५६ से प्रारम्भ होकर १०।४५ तक रहेगा। इसलिए स्पष्ट है कि इस बच्चे का जन्म ज्ये. नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ

नक्षत्र चरण-प्रवेशकाल से भुक्तदशा का ज्ञान

चन्द्र के नक्षत्र में प्रवेश काल द्वारा जन्मकालिक दशा का लगभग भुक्तकाल बड़ी ही आसानी से इस प्रकार जाना जा सकता है-

नीचे नं.(१) एवं (२)'भुक्तदशा साधन सारिणियां' दी गई हैं। जन्मकालिक नक्षत्र के चरण का भुक्तकाल (घं. मि.) ज्ञात करें। सारिणी (१) से उस नक्षत्र के चरण के नीचे लिखे वर्ष-मास उठा लें। इनमें सारिणी (२) से नक्षत्र चरण के भुक्तकाल के आगे दशेश ग्रह के नीचे लिखे गए वर्ष,मास जोड़ दीजिए। बस यही जन्मकालिक दशा का भुक्तकाल होगा। दशेश का ज्ञान सारणी (१) से हो जाता है।

उदाहरण-

मान लीजिए-किसी बच्चे का जन्म १५ फरवरी, ९७ को २० घन्टा ९ मिनट पर हुआ है। स्पष्ट है कि इसका जन्म रोहिणी के तीसरे चरण में हुआ है। जन्म के समय रोहिणी का तृतीय चरण २ घं. ४ मि. भुक्त था "भुक्तदशा साधन सारणी (१)" में रोहिणी के तृतीय चरण के नीचे ५ वर्ष ० मास लिखा है। इसी सारिणी में रोहिणी का 'दशेश' चन्द्र भी लिखा है "भुक्तदशा साधन सारणी (२)" में रोहिणी के तृतीय चरण के भुक्त काल २ घं. ० मि. के आगे दशेश चन्द्र वाले कालम में ० वर्ष १० मास लिखे हैं। इन्हें ५ वर्ष ० मास में जोड़ने पर ५ वर्ष १० मास हुए। यही इस जातक के जन्म के समय चन्द्र की दशा का लगभग भुक्तकाल है।

भुक्त-दशा साधन सारणी (१)

नक्षत्र			दशेश	१ चरण वर्ष	मास	२ चरण वर्ष	मास	३ चरण वर्ष	मास	४ चरण वर्ष	मास
अश्वि.	मघा	मूल	के.	००	००	१	९	३	६	५	३
भ.	पू. फा.	पू. षा.	शु.	००	००	५	००	१०	००	१५	००
कृ.	उ. फा.	उ. षा.	सू.	००	००	१	६	३	००	४	६
रो.	हस्त	श्रव.	चं.	००	००	२	६	५	००	७	६
मृ.	चित्रा	ध.	मं.	००	००	१	९	३	६	५	३
आर्द्रा.	स्वा.	शत.	रा.	००	००	४	६	९	००	१३	६
पुन.	विशा.	पू. भा.	गु.	००	००	४	००	८	००	१२	००
पुष्य	अनु.	उ. भा.	श.	००	००	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१४	३
आश्ले	ज्येष्ठा.	रेव.	बु.	००	००	४	३	८	६	१२	९

भुक्त-दशा साधन सारणी (२)

नक्षत्र चरण का भुक्त काल घं.	मि.	दशेश सूर्य व.	मा.	दशेश चन्द्र व.	मा.	दशेश भौम-केतु व.	मा.	दशेश बुध व.	मा.	दशेश गुरु व.	मा.	दशेश शुक्र व.	मा.	दशेश शनि व.	मा.	दशेश राहु व.	मा.
०	०	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००
०	३०	०	१	०	२	०	२	०	४	०	४	०	५	०	५	००	४
१	००	०	३	०	५	०	३	०	८	०	८	०	१०	०	९	००	९
१	३०	०	४	०	७	०	५	१	१	१	००	१	[illegible]	१	२	१	१
२	००	०	६	०	१०	०	७	१	५	१	४	१	८	१	७	१	६
२	३०	०	७	१	००	०	९	१	९	१	८	२	१	२	००	१	१०
३	००	०	९	१	३	०	१०	२	१	२	००	२	६	२	४	२	३
३	३०	०	१०	१	५	१	०	२	६	२	४	२	११	२	९	२	७
४	००	१	०	१	८	१	२	२	१०	२	८	३	४	३	२	३	००
४	३०	१	१	१	१०	१	४	३	२	३	००	३	९	३	७	३	४
५	००	१	३	२	१	१	५	३	६	३	४	४	२	३	११	३	९
५	३०	१	४	२	३	१	७	३	११	३	८	४	७	४	४	४	१
६	००	१	६	२	६	१	९	४	३	४	००	५	००	४	९	४	६
*७	३०	१	६	२	६	१	९	४	३	४	००	५	००	४	९	४	६

चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश काल (भा.स्टै.टा.)

नक्षत्र चरण →			१		२		३		४	
जनवरी १९९९ ई.		नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१	२	आर्द्रा	१४	३५	२०	६	१	३७	७	८
२	३	पुन.	१२	३९	१८	१७	२३	५४	५	३२
३	४	पुष्य	११	१०	१६	५६	२२	४३	४	२९
४	५	आश्ले.	१०	१६	१६	१३	२२	१०	४	७
५	६	मघा	१०	४	१६	१२	२२	२०	४	२८
६	७	पू.फा.	१०	३७	१६	५७	२३	१६	५	३६
७	८	उ.फा.	११	५६	१८	२६	०	५६	७	२६
८	९	ह.	१३	५६	२०	३४	३	१२	९	५०
९	१०	चि.	१६	२८	२३	११	५	५४	१२	३७
१०	११	स्वा.	१९	२०	२	५	८	५०	१५	३५
११	१२	वि.	२२	२०	५	३	११	४६	१८	२९
१३		अनु.	१	१३	७	५२	१४	३१	२१	११
१४		ज्ये.	३	५०	१०	२३	१६	५६	२३	२९
१५	१६	मू.	६	२	१२	२८	१८	५४	१	२०
१६	१७	पू.षा.	७	४६	१४	४	२०	२२	२	४१
१७	१८	उ.षा.	९	०	१५	१२	२१	२४	३	३५
१८	१९	श्र.	९	४६	१५	५१	२१	५६	४	१
१९	२०	धनि.	१०	७	१६	७	२२	६	४	५
२०	२१	शत.	१०	४	१५	५८	२१	५२	३	४६
२१	२२	पू.भा.	९	४१	१५	३१	२१	२१	३	११
२२	२३	उ.भा.	९	१	१४	४७	२०	३३	२	१९
२३	२४	रेव.	८	४	१३	४६	१९	२९	१	१३
२४		अश्वि.	६	५४	१२	३३	१८	१२	२३	५१
२५		भर.	५	३२	११	१०	१६	४७	२२	२४
२६		कृ.	४	२	९	३८	१५	२४	२०	५०
२७		रो.	२	२६	८	२	१३	३८	१९	१४
२८		मृ.	०	५०	६	२७	१२	४	१७	४१
२८	२९	आर्द्रा	२३	१८	४	५८	१०	३८	१६	१७
२९	३०	पुन.	२१	५७	३	४१	९	२४	१५	७
३०	३१	पुष्य	२०	५१	२	४१	८	३०	१४	१९
३१	१	आश्ले.	२०	९	२	६	८	३५	१४	०

नक्षत्र चरण →			१		२		३		४	
फरवरी १९९९ ई.		नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१	२	मघा	१९	५७	२	२	८	७	१४	१२
२	३	पू.फा.	२०	१८	२	३२	८	४७	१५	१
३	४	उ.फा.	२१	१६	३	४०	१०	४	१६	२८
४	५	ह.	२२	५२	५	२४	११	५६	१८	२८
६		चित्रा	१	१	७	४०	१४	१९	२०	५८
७		स्वा.	३	३७	१०	२१	१७	४	२३	४५
८	९	वि.	६	३०	१३	१४	१९	५८	२	४२
९	१०	अनु.	९	२६	१६	८	२२	५०	५	३२
१०	११	ज्ये.	१२	१३	१८	४९	१	२५	८	१
११	१२	मूल	१४	३८	२१	७	३	३६	१०	४
१२	१३	पू.षा.	१६	३२	२२	२	५	११	११	३१
१३	१४	उ.षा.	१७	५०	२३	५९	६	९	१२	१९
१४	१५	श्र.	१८	२९	०	३०	६	३१	१२	३१
१५	१६	ध.	१८	३२	०	२५	६	१८	१२	११
१६	१७	श.	१८	३	२३	४९	५	३५	११	२१
१७	१८	पू.भा.	१७	७	२२	४८	४	२८	१०	९
१८	१९	उ.भा.	१५	५०	२१	२७	३	४	८	४१
१९	२०	रेव.	१४	१९	१९	५४	१	२९	७	४
२०	२१	अश्वि.	१२	४०	१८	१५	२३	५०	५	२५
२१	२२	भर.	११	००	१६	३६	२२	१२	३	४८
२२	२३	कृत्ति.	९	२३	१५	१	२०	३९	२	२७
२३	२४	रोहि.	७	५४	१३	३४	१९	१५	०	५५
२४		मृग.	६	२६	१२	२०	१८	३	२३	४७
२५		आर्द्रा	५	३१	११	१९	१७	७	२२	५५
२६		पुन.	४	४३	१०	३५	१६	२७	२२	२२
२७		पुष्य	४	१३	१०	१०	१६	७	२२	५
२८		आश्ले.	४	३	१०	६	१६	९	२२	१२

नक्षत्र चरण →			१		२		३		४	
मार्च १९९९ ई.		नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१		मघा	४	१५	१०	२४	१६	३४	२२	४३
२		पू.फा.	४	५३	११	९	१७	२५	२३	४९
३	४	उ.फा.	५	५६	१२	१९	१८	४२	१	५
४	५	हस्त	७	२८	१३	५८	२०	२८	२	५८
५	६	चित्रा	९	२८	१६	४	२२	४०	५	१६
६	७	स्वा.	११	५३	१८	३४	१	१५	७	५६
७	८	विशा.	१४	३८	२१	२२	४	६	१०	५०
८	९	अनु.	१७	३३	०	१७	७	१	१३	४५
९	१०	ज्ये.	२०	२९	३	१०	९	५१	१६	३१
१०	११	मूल	२३	११	५	४३	१२	१५	१८	४७
१२		पू.षा.	१	१९	७	४७	१४	१५	२०	४३
१३		उ.षा.	३	१०	९	२५	१५	४०	२१	५५
१४		श्रव.	४	९	१०	१२	१६	१६	२२	२०
१५		धनि.	४	२३	१०	१६	१६	८	२२	१
१६		शत.	३	५३	९	३६	१५	१९	२१	२
१७		पू.भा.	२	४४	८	१९	१३	५४	१९	२९
१८		उ.भा.	१	३	६	३१	११	५९	१७	२७
१८	१९	रेवती	२२	५८	४०	२३	९	४८	१५	१३
१९	२०	अश्वि.	२०	३९	२	३	७	२८	१२	५२
२०	२१	भर.	१८	१७	२३	३५	४	५३	१०	११
२१	२२	कृति.	१५	२९	२०	५३	२	१७	७	४१
२२	२३	रोहि.	१६	६	१८	५९	०	५१	६	४४
२३	२४	मृग.	१२	३६	१८	११	२३	४६	५	२१
२४	२५	आर्द्रा	१०	५६	१६	४४	२२	३२	४	२०
२५	२६	पुन.	१०	७	१६	२	२१	५७	३	५२
२६	२७	पुष्य	९	४७	१५	५०	२१	५२	३	५५
२७	२८	आश्ले.	९	५७	१६	६	२२	१५	४	२४
२८	२९	मघा	१०	३४	१६	४९	२३	५	५	२०
२९	३०	पू.फा.	११	३६	१७	५७	०	१८	६	३९
३०	३१	उ.फा.	१३	१	१९	२८	१	५४	८	२१
३१	१अप्रै.	हस्त	१४	४७	२१	१८	३	४८	१०	१९

चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश काल (भा.स्टैं.टा.)

नक्षत्र चरण →			१		२		३		४	
अप्रैल १९९९ ई.		नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१	२	चित्रा	१६	५३	२३	३०	६	६	१२	४२
२	३	स्वाती	१९	१९	१	५९	८	३९	१५	१९
३	४	विशा.	२२	०	४	४४	११	२७	१८	१०
	५	अनु.	०	५४	७	३९	१४	२३	२१	८
६	७	ज्ये.	३	५३	१०	३६	१७	२०	०	३
७	८	मूल	६	४७	१३	२६	२०	६	२	४६
८	९	पू.षा.	९	२६	१५	५९	२२	३२	५	५
९	१०	उ.षा.	११	३७	१८	०	०	२३	६	४७
१०	११	श्रव.	१३	११	१९	२५	१	३५	७	४७
११	१२	धनि.	१३	५९	१९	५८	१	५८	७	५८
१२	१३	शत.	१३	५८	१९	४६	१	३४	७	२१
१३	१४	पू.भा.	१३	८	१८	४५	०	२१	५	५८
१४	१५	उ.भा.	११	३५	१७	३	२२	३०	३	५७
१५	१६	रेवती	९	२५	१४	४६	२०	७	१	२८
	१६	अश्वि.	६	४९	१२	६	१७	२३	२२	४१
	१७	भर.	३	५८	९	१४	१४	३१	१९	४८
	१८	कृति.	१	४	६	२२	११	४१	१६	५९
१८	१९	रोहि.	२२	१७	३	४०	९	३	१४	२५
१९	२०	मृग.	१९	४८	१	१८	६	४७	१२	१७
२०	२१	आर्द्रा	१७	४७	२३	२६	५	५	१०	४३
२१	२२	पुन.	१६	२१	२२	९	३	५८	९	४७
२२	२३	पुष्य	१५	३५	२१	३२	३	३०	९	२९
२३	२४	आश्ले.	१५	२८	२१	३६	३	४५	९	५३
२४	२५	मघा	१६	१	२२	१८	४	३५	१०	५२
२५	२६	पू.फा.	१७	९	२३	३४	५	५८	१२	२२
२६	२७	उ.फा.	१८	४६	१	१६	७	४६	१४	[illegible]
२७	२८	हस्त	२०	४७	३	२३	९	५८	१६	३३
२८	२९	चित्रा	२३	८	५	४६	२२	२५	१९	४

नक्षत्र चरण →			१		२		३		४	
मई १९९९ ई.		नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१	२	विशा.	४	२९	११	१२	१७	५५	०	३९
२	३	अनु.	७	२३	१४	७	२०	५१	३	३६
३	४	ज्ये.	१०	२१	१७	५	२३	४९	६	३३
४	५	मूल	१३	१७	१९	५९	२	४१	९	२३
५	६	पू.षा.	१६	५	२२	४३	५	२०	११	५७
६	७	उ.षा.	१८	३४	१	५	७	३६	१४	६
७	८	श्रव.	२०	३६	२	५७	९	१९	१५	४०
८	९	धनि.	२२	१	४	११	१०	२१	१६	३१
९	१०	शत.	२२	४१	४	३९	१०	३६	१६	३४
१०	११	पू.भा.	२२	३२	४	१८	१०	०४	१५	४९
११	१२	उ.भा.	२१	३५	३	१०	८	४४	१४	१९
१२	१३	रेवती	१९	५४	१	२०	६	४५	१२	१०
१३	१४	अश्वि.	१७	३५	२२	५४	४	१२	९	३०
१४	१५	भर.	१४	४८	२०	३	१	१७	६	३१
१५	१६	कृति.	११	४५	१६	५९	२२	१२	३	२५
१६	१७	रोहि.	८	३८	१३	५३	१९	८	०	२३
	१७	मृग.	५	३८	१०	५८	१६	१८	२१	३८
	१८	आर्द्रा	२	५८	८	२६	१३	५४	१९	२१
	१९	पुन.	०	४८	६	२४	१२	१	१७	३८
	२०	पुष्य	२३	१५	५	३	१०	५१	१६	३९
	२१	आश्ले.	२२	२७	४	२७	१०	२६	१६	२५
	२२	मघा	२२	२५	४	३५	१०	४६	१६	५७
	२३	पू.फा.	२३	८	५	२९	१५	५०	२२	११
	२४	उ.फा.	०	३२	७	१	१३	३०	२०	०
	२५	हस्त	२	३०	९	६	१५	४२	२२	१८
२६	२७	चित्रा	४	५४	११	३५	१८	१६	०	५६
२७	२८	स्वाती	७	३६	१४	१९	२१	२	३	४५
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२९	३०	अनु.	१३	२४	२०	८	२	५२	९	३६
३०	३१	ज्ये.	१६	२०	२२	३	५	४७	१२	३०

नक्षत्र चरण →			१		२		३		४	
जून १९९९ ई.		नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१	२	पू.षा.	२१	५७	४	३५	११	१२	१७	४९
	३	उ.षा.	०	२७	८	०	१४	३३	२१	५
	४	श्रव.	२	३७	९	३	१५	२८	२१	५३
	५	धनि.	४	१९	१०	३६	१६	५३	२३	१०
	६	शत.	५	२७	११	३५	१७	४२	२३	४९
	७	पू.भा.	५	५६	११	५३	१७	४९	२३	४६
	८	उ.भा.	५	४२	११	२८	१७	१४	२२	५९
	९	रेवती	४	४४	१०	१९	१५	५५	२१	३१
	१०	अश्वि.	३	६	८	३२	१३	५९	१९	२६
	११	भर.	०	५३	६	१३	११	३४	१६	५५
११	१२	कृति.	२२	१६	३	३२	८	४९	१४	६
१२	१३	रोहि.	१९	२२	०	३७	५	५३	११	९
१३	१४	मृग.	१६	२४	२१	४२	२	५९	८	१६
१४	१५	आर्द्रा	१३	३३	१८	५४	०	१६	५	३८
१५	१६	पुन.	१०	५९	१६	२७	२१	५६	३	२५
१६	१७	पुष्य	८	५४	१४	३२	२०	१०	१	४८
१७	१८	आश्ले.	७	२६	१३	१५	१९	४	०	५३
१८	१९	मघा	६	४२	१२	४३	१८	४४	०	४४
१९	२०	पू.फा.	६	४४	१२	५६	१९	९	१	२२
२०	२१	उ.फा.	७	३४	१३	५७	२०	२०	२	४३
२१	२२	हस्त	९	६	१५	३८	२२	१०	२	४२
२२	२३	चित्रा	११	१४	१७	५२	०	३१	७	१०
२३	२४	स्वाती	१३	४९	२०	३१	३	१४	९	५७
२४	२५	विशा.	१६	४०	२३	२४	६	८	१२	५३
२५	२६	अनु.	१९	३८	२	२२	९	६	१५	५०
२६	२७	ज्ये.	२२	३५	५	१७	११	५९	१८	४१
	२८	मूल	१	२३	७	५९	१४	३६	२१	१३
	२९	पू.षा.	३	४९	१०	२६	१७	३	२३	४०
३०	१जु.	उ.षा.	६	१७	१२	४७	१९	१७	१	४७

चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश काल (भा.स्टैं.टा.)

नक्षत्र चरण →			१		२		३		४	
जुलाई १९९९ई.		नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१	२	श्रव.	८	१७	१४	४०	२१	४	३	२८
२	३	धनि.	९	५२	१६	९	२२	२७	४	४५
३	४	शत.	११	२	१७	१२	२३	२२	५	३१
४	५	पू.भा.	११	४१	१७	४३	२३	४५	५	४७
५	६	उ.भा.	११	४९	१७	४३	२३	३७	५	३१
६	७	रेवती	११	२४	१७	९	२२	५४	४	३९
७	८	अश्वि.	१०	२४	१६	२	२१	४०	३	१८
८	९	भर.	८	५५	१४	२७	१९	५८	१	२९
	९	कृत्ति.	७	०	१२	२६	१७	५२	२३	१८
	१०	रोहि.	४	४४	१०	१४	१५	४४	२१	१४
	११	मृग.	२	४४	८	०	१३	१५	१८	३१
११	१२	आर्द्रा	२३	४७	५	११	१०	३५	१५	५९
१२	१३	पुन.	२१	२३	२	५१	८	१९	१३	४७
१३	१४	पुष्य	१९	१५	०	५०	६	२४	११	५८
१४	१५	आश्ले.	१७	३२	२३	१४	४	५७	१०	४०
१५	१६	मघा	१६	२३	२२	१५	४	८	१०	१
१६	१७	पु.फा.	१५	५३	२१	५६	४	०	१०	४
१७	१८	उ.फा.	१६	७	२२	२२	४	३६	१०	५१
१८	१९	हस्त	१७	६	२३	३१	५	५६	१२	२१
१९	२०	चित्रा	१८	४६	१	२०	७	५३	१४	२७
२०	२१	स्वाती	२१	१	३	४१	१०	२१	१७	१
२१	२२	विशा.	२३	४१	६	२४	१३	८	१९	५२
	२३	अनु.	२	३६	९	२०	१६	४	२२	४८
२४	२५	ज्ये.	५	३२	१२	१५	१८	५७	१	३९
२५	२६	मूल	८	२१	१४	५९	२१	३७	४	१५
२६	२७	पू.षा.	१०	५३	१७	२५	२३	५८	६	३१
२७	२८	उ.षा.	१३	३	१९	२९	१	५५	८	२१
२८	२९	श्रव.	१४	४७	२१	७	३	२६	९	४५
२९	३०	धनि.	१६	४	२२	१६	४	२९	१०	४२
३०	३१	शत.	१६	५४	२३	०	५	५	११	११
३१	१अग.	पू.भा.	१७	१७	२३	१६	५	१५	११	१५

नक्षत्र चरण →			१		२		३		४	
अगस्त १९९९ ई.		नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१	२	उ.भा.	१७	१५	२३	८	५	१	१०	५५
२	३	रेवती	१६	५०	२२	३८	४	२६	१०	१४
३	४	अश्वि.	१६	२	२१	४६	३	२९	९	१२
४	५	भर.	१४	५५	२०	३४	२	१३	७	५२
५	६	कृत्ति.	१३	३१	१९	६	०	४२	६	१७
६	७	रोहि.	११	५३	१७	२६	२२	५९	४	३२
७	८	मृग.	१०	५	१५	३७	२१	९	२	४१
८	९	आर्द्रा	८	१३	१३	४५	१९	१८	०	५१
	९	पुन.	६	२३	११	५७	१७	३२	२३	७
	१०	पुष्य	४	४१	१०	२३	१६	६	२१	४९
	११	आश्ले.	३	३१	९	१०	१४	५०	२०	२९
	१२	मघा	२	८	७	५८	१३	४८	१९	३९
	१३	पू.फा.	१	३१	७	३०	१३	२९	१९	२९
	१४	उ.फा.	१	२८	७	३६	१३	४५	१९	५४
	१५	हस्त	२	३	८	२१	१४	४०	२०	५९
	१६	चित्रा	३	१८	९	४६	१६	१४	२२	४२
१७	१८	स्वाती	५	१०	११	४६	१८	२२	०	५८
१८	१९	विशा.	७	३४	१४	१५	२०	५७	३	३९
१९	२०	अनु.	१०	२०	१७	४	२३	४८	६	३२
२०	२१	ज्ये.	१३	१६	१९	५९	२	४२	९	२६
२१	२२	मूल	१६	९	२२	४८	४	२८	११	८
२२	२३	पू.षा.	१८	४७	१	२०	७	५३	१४	२६
२३	२४	उ.षा.	२०	५९	३	२५	९	५०	१६	१५
२४	२५	श्रव.	२२	४०	४	५७	११	१३	१७	२९
२५	२६	धनि.	२३	४५	५	५२	१२	०	१८	८
	२७	शत.	०	१५	६	१४	१२	१३	१८	१३
	२८	पू.भा.	०	१३	६	६	११	५८	१७	५१
२८	२९	उ.भा.	२३	४४	५	३०	११	१७	१७	४
२९	३०	रेवती	२२	५१	४	३४	१०	१६	१५	५९
३०	३१	अश्वि.	२१	४२	३	२२	९	१	१४	४१
३१	१ सितं.	भर.	२०	२१	२	०	७	३८	१३	१६

नक्षत्र चरण →			१		२		३		४	
सितम्बर १९९९ ई		नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१	२	कृत्ति.	१५	५४	०	३२	६	१०	११	४७
२	३	रोहि.	१७	२४	२३	२	४	४०	१०	१८
३	४	मृग.	१५	५६	२१	३५	३	१४	८	५३
४	५	आर्द्रा	१४	३२	२०	१२	१	५३	७	३४
५	६	पुन.	१३	१४	१८	५८	०	४१	६	२४
६	७	पुष्य	१२	७	१७	५४	२३	४०	५	२६
७	८	आश्ले.	११	१२	१७	३	२२	५३	४	४३
८	९	मघा	१०	३३	१६	२८	२२	२४	४	२०
९	१०	पू.फा.	१०	१५	१६	१७	२२	१८	४	१९
१०	११	उ.फा.	१०	२०	१६	२८	२२	३७	४	४६
११	१२	हस्त	१०	५४	१७	१०	२३	२७	५	४३
१२	१३	चित्रा	११	५९	१८	२३	१	४८	७	१३
१३	१४	स्वाती	१३	३८	२०	१०	२	४३	९	१५
१४	१५	विशा.	१५	४८	२२	२७	५	६	११	४५
१५	१६	अनु.	१८	२४	१	७	७	५०	१४	३४
१६	१७	ज्ये.	२१	१८	४	३	१०	४८	१७	३३
	१८	मूल	०	१८	७	०	१३	४३	२०	२६
	१९	पू.षा.	३	९	९	४७	१६	२४	२३	१
२०	२१	उ.षा.	५	३८	१२	७	१८	३५	१	४
२१	२२	श्रव.	७	३३	१३	५२	२०	११	२	२९
२२	२३	धनि.	८	४७	१४	५४	२१	२	३	१०
२३	२४	शत.	९	१७	१५	१४	२१	१०	३	७
२४	२५	पू.भा.	९	४	१४	५२	२०	४०	२	२७
२५	२६	उ.भा.	८	१४	१३	५४	१९	३४	१	१३
	२६	रेवती	६	५२	१२	२७	१८	१	२३	३५
	२७	अश्वि.	५	९	१०	३९	१६	१०	२१	४१
	२८	भर.	३	१२	८	४१	१४	११	१९	४१
	२९	कृत्ति.	१	११	६	४२	१२	१३	१७	४३
२९	३०	रोहि.	२३	१३	४	४२	१०	१०	१५	३८
३०	१अक्तू.	मृग.	२१	६	२	४८	८	३०	१४	१२

चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश काल (भा.स्टैं.टा.)

नक्षत्र चरण →			१		२		३		४	
अक्टू. १९९९ ई.		नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१	२	आर्द्रा	१९	५४	१	३५	७	१६	१२	५८
२	३	पुन.	१८	४०	०	२६	६	१३	१२	०
३	४	पुष्य	१७	४७	२३	३९	५	३१	११	२३
४	५	आश्ले.	१७	१५	२३	१२	५	९	११	६
५	६	मघा	१७	३	२३	६	५	८	११	१०
६	७	पू.फा.	१७	१२	२३	२०	५	२७	११	३५
७	८	उ.फा.	१७	४२	२३	५६	६	९	१२	२२
८	९	हस्त	१८	३५	०	५४	७	१२	१३	३१
९	१०	चित्रा	१९	५०	२	१६	८	४१	१५	६
१०	११	स्वाती	२१	३१	४	३	१०	३४	१७	६
११	१२	विशा.	२३	३८	६	१५	१२	५३	१९	३१
	१३	अनु.	२	९	८	५१	१५	३४	२२	१७
१४	१५	ज्ये.	५	०	११	४५	१८	३१	१	१७
१५	१६	मूल	८	३	१४	४९	२१	३५	४	२१
१६	१७	पू.षा.	११	७	१७	५०	०	३३	७	१५
१७	१८	उ.षा.	१३	५७	२०	३२	३	८	९	४४
१८	१९	श्रव.	१६	२०	२२	४५	५	११	११	३७
१९	२०	धनि.	१८	३	०	१७	६	३१	१२	४५
२०	२१	शत.	१८	५९	१	१	७	२	१३	४
२१	२२	पू.भा.	१९	५	०	५५	६	४४	१२	३३
२२	२३	उ.भा.	१८	२२	०	१	५	३९	११	१८
२३	२४	रेवती	१६	५६	२२	२५	३	५५	९	२५
२४	२५	अश्वि.	१४	५५	२०	१९	१	४३	७	७
२५	२६	भर.	१२	३०	१७	५०	२३	११	४	३२
२६	२७	कृत्ति.	९	५२	१५	१३	२०	३३	१	५३
	२७	रोहि.	७	१३	१२	३६	१७	५८	२३	२०
	२८	मृग.	४	४३	१०	१०	१५	३७	२१	३
	२९	आर्द्रा	२	३०	८	३	१३	३६	१९	९
	३०	पुन.	०	४२	६	२२	१२	३	१७	४४
३०	३१	पुष्य	२३	२५	५	२६	२२	२	२६	५१

नक्षत्र चरण →			१		२		३		४	
नवम्बर १९९९ ई.		नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१	२	मघा	२२	२८	४	३३	१०	३७	१५	४२
२	३	पू.फा.	२२	४६	४	५८	११	९	१७	२१
३	४	उ.फा.	२३	३३	५	५१	१२	९	१८	२७
	५	हस्त	०	४५	७	८	१३	३२	१९	५६
	६	चित्रा	२	२०	८	४९	१५	१८	२१	४७
	७	स्वाती	४	१६	१०	५०	१७	२३	२३	५७
८	९	विशा.	६	३१	१३	९	१९	४८	२६	२७
९	१०	अनु.	९	६	१५	४८	२२	३१	५	१४
१०	११	ज्ये.	११	५६	१८	४२	१	२८	८	१३
११	१२	मूल	१४	५९	२१	४६	४	३३	११	२०
१२	१३	पू.षा.	१८	७	०	५३	७	३९	१४	२५
१३	१४	उ.षा.	२१	१०	३	५१	१०	३३	१७	१५
१४	१५	श्रव.	२३	५७	६	३१	१३	५	१९	३९
	१६	धनि.	२	१३	८	३७	१५	१	२१	२५
	१७	शत.	३	४९	१०	१	१६	१२	२२	२४
	१८	पू.भा.	४	३६	१०	३४	१६	३३	२२	३२
	१९	उ.भा.	४	३१	१०	१७	१६	२	२१	४८
	२०	रेवती	३	३४	९	९	१४	४४	२०	१८
	२१	अश्वि.	१	५२	७	८	१२	४३	१८	८
२१	२२	भर.	२३	३२	४	५०	१०	९	१५	२८
२२	२३	कृत्ति.	२०	४७	२	१	७	१६	१२	३१
२३	२४	रोहि.	१७	४६	२३	०	४	१४	९	२९
२४	२५	मृग.	१४	४३	२०	०	१	१६	६	३२
२५	२६	आर्द्रा	११	४८	१७	१०	२२	३१	३	५२
२६	२७	पुन.	९	१३	१४	४२	२०	१०	१	३९
२७	२८	पुष्य	७	६	१२	४३	१८	२१	२३	५९
	२८	आश्ले.	५	३६	११	२४	१७	१२	२१	५९
	२९	मघा	४	४६	१०	४३	१६	४१	२२	३९
	३०	पू.फा.	४	५७	१०	४५	१६	५७	२३	२

नक्षत्र चरण →			१		२		३		४	
दिसम्बर १९९९ ई.		नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१	२	उ.फा.	५	९	११	२७	१७	४४	०	१
२	३	हस्त	६	१८	१२	४४	१९	९	१	३४
३	४	चित्रा	७	५९	१४	३०	२१	२	३	३४
४	५	स्वाती	१०	६	१६	४३	२३	२०	५	५७
५	६	विशा.	१२	३४	१९	१५	१	५६	८	३७
६	७	अनु.	१५	१७	२२	०	४	४४	११	२८
७	८	ज्ये.	१८	१२	०	५८	७	४३	१४	२८
८	९	मूल	२१	१४	४	१	१०	४७	१७	३३
	१०	पू.षा.	०	१९	७	५	१३	५०	२०	३६
	११	उ.षा.	३	२१	१०	३	१६	४६	२३	२९
१२	१३	श्रव.	६	१२	१२	५०	१९	२८	२	६
१३	१४	धनि.	८	४४	१५	१४	२१	४५	४	१६
१४	१५	शत.	१०	४७	१८	९	०	३१	६	५२
१५	१६	पू.भा.	१२	१३	१८	२३	०	३३	६	४३
१६	१७	उ.भा.	१२	५३	१८	५२	०	५०	६	४८
१७	१८	रेवती	१२	४६	१८	३२	०	१८	६	४
१८	१९	अश्वि.	११	५१	१७	२६	२३	२	४	३८
१९	२०	भर.	१०	१३	१५	४०	२१	६	२	३२
	२०	कृत्ति.	७	५८	१३	१८	१८	३७	२३	५६
	२१	रोहि	५	१५	१०	३०	१५	४६	२१	१
	२२	मृग.	२	१६	७	२९	१२	४३	१७	५७
२२	२३	आर्द्रा	२३	११	४	२६	९	४१	१४	५६
२३	२४	पुन.	२०	११	१	३०	६	४९	१२	९
२४	२५	पुष्य	१७	२९	२२	५५	४	२१	९	४७
२५	२६	आश्ले.	१५	१३	२०	४७	२	२२	७	५७
२६	२७	मघा	१३	३२	१९	१७	१	३	६	४९
२७	२८	पू.फा.	१२	३४	१८	३०	०	२७	६	२४
२८	२९	उ.फा.	१२	२१	१८	३०	०	३८	६	४६
२९	३०	हस्त	१२	५४	१९	१४	१	३४	७	५३
३०	३१	चित्रा	१४	१२	२०	४०	३	९	९	३८

चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश काल (भा.स्टैं.टा.)

नक्षत्र चरण →			१		२		३		४	
जनवरी २००० ई.		नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१	२	विशा.	१८	३३	१	१४	७	५६	१४	३८
२	३	अनु.	२१	२०	४	५	१०	५०	१७	३५
	४	ज्ये.	०	२०	७	७	१३	५३	२०	३९
	५	मूल	३	२५	१०	१०	१६	५६	२३	४२
६	७	पू.षा.	६	२७	१३	१०	१९	५४	२	३८
७	८	उ.षा.	९	२२	१६	२	२२	४३	५	२४
८	९	श्रव.	१२	४	१८	४०	१	१६	७	५२
९	१०	धनि.	१४	२८	२०	५६	३	२५	९	५४
१०	११	शत.	१६	२३	२२	४९	५	१४	११	३९
११	१२	पू.भा.	१८	४	०	२०	६	३५	१२	५०
१२	१३	उ.भा.	१९	५	१	११	७	१८	१३	२५
१३	१४	रेवती	१९	३२	१	३०	७	२८	१३	२६
१४	१५	अश्वि.	१९	२१	१	३९	७	५७	१४	१५
१५	१६	भर.	१८	३३	०	१२	५	५१	११	३०
१६	१७	कृत्ति.	१७	९	२२	४०	४	१२	९	४४
१७	१८	रोहि.	१५	१५	२०	४०	२	६	७	३१
१८	१९	मृग.	१२	५६	१८	१७	२३	३८	४	५९
१९	२०	आर्द्रा	१०	२०	१५	४०	२०	५९	२	१९
	२०	पुन.	७	३८	१२	५७	१८	१७	२३	३७
	२१	पुष्य	४	५७	१०	१९	१५	४२	२१	५
	२२	आश्ले.	२	२८	७	५७	१३	२५	१८	५४
	२३	मघा	०	२२	५	५८	११	३४	१७	१०
२३	२४	पू.फा.	२२	४६	४	३२	१०	१७	१६	३
२४	२५	उ.फा.	२१	४९	३	४५	९	४२	१५	३९
२५	२६	हस्त	२१	३६	३	४४	९	५३	१६	२
२६	२७	चित्रा	२२	११	४	३४	१०	५६	१७	१९
२७	२८	स्वाती	२३	४१	६	९	१२	३७	१९	५
	२९	विशा.	१	३३	८	१२	१४	५०	२१	२९
३०	३१	अनु.	४	७	१०	५२	१७	३६	०	२०
३१	१फर.	ज्ये.	७	४	१३	५०	२०	३७	३	२४

नक्षत्र चरण →			१		२		३		४	
फरवरी २००० ई.		नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१	२	मूल	१०	१०	१६	५६	२३	४२	६	२८
२	३	पू.षा.	१३	१४	१९	५७	२	४०	९	२३
३	४	उ.षा.	१६	६	२२	४५	५	२३	१२	१
४	५	श्रव.	१८	३९	१	११	७	४३	१४	१५
५	६	धनि.	२०	४८	३	१३	९	३९	१६	५
६	७	शत.	२२	३१	४	५०	११	९	१७	२८
७	८	पू.भा.	२३	४७	६	०	११	१२	१८	२४
	९	उ.भा.	०	३६	६	४२	१२	४७	१८	५३
	१०	रेवती	०	५९	६	५८	१२	५८	१८	५७
	११	अश्वि.	०	५६	६	५०	१२	४३	१८	३६
	१२	भर.	०	२९	६	१७	१२	४	१७	५१
१२	१३	कृत्ति.	२३	३८	५	२०	११	२	१६	४४
१३	१४	रोहि.	२२	२६	४	३	९	४०	१५	१७
१४	१५	मृग.	२०	५४	२	२७	८	०	१३	३३
१५	१६	आर्द्रा	१९	६	०	३७	६	७	११	३८
१६	१७	पुन.	१७	८	२२	३७	४	६	९	३५
१७	१८	पुष्य	१५	४	२०	३४	२	३	७	३२
१८	१९	आश्ले.	१३	१	१८	३२	०	४	५	३६
१९	२०	मघा	११	७	१६	४३	२२	१८	३	५४
२०	२१	पू.फा.	९	३०	१५	१२	२०	५४	२	३६
२१	२२	उ.फा.	८	१८	१४	८	१९	५९	१	५०
२२	२३	हस्त	७	४०	१३	४१	१९	४१	१	४२
२३	२४	चित्रा	७	४२	१३	५३	२०	४	२६	१५
२४	२५	स्वाती	८	२६	१४	४९	२१	११	३	३३
२५	२६	विशा.	९	५५	१६	२८	२३	०	५	३२
२६	२७	अनु.	१२	४	१८	४५	१	२५	८	५
२७	२८	ज्ये.	१४	४५	२१	३०	४	१६	११	१
२८	२९	मूल	१७	४६	०	३३	७	१९	१४	५
२९	१मार्च	पू.षा.	२०	५१	३	३५	१०	१९	१७	३

नक्षत्र चरण →			१		२		३		४	
मार्च २००० ई.		नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१	२	उ.षा.	२३	४७	६	२५	१३	४	१९	४३
	३	श्रव.	२	२२	८	५३	१५	२४	२१	५४
	४	धनि	४	२४	१०	४७	१७	११	२३	३५
५	६	शत.	५	५९	१२	१३	१८	२७	०	४१
६	७	पू.भा.	६	५५	१३	३	१९	१२	१	२१
७	८	उ.भा.	७	२९	१३	२६	१९	२२	१	१८
८	९	रेवती	७	१४	१३	७	१९	०	०	५३
९	१०	अश्वि.	६	४६	१२	३४	१८	२३	०	१२
	१०	भर.	६	०	११	४५	१७	३०	२३	१५
	११	कृत्ति.	५	०	१०	४२	१६	२५	२२	८
	१२	रोहि.	३	५१	९	३२	१५	१३	२०	५४
	१३	मृग.	२	३५	८	१४	१३	५४	१९	३४
	१४	आर्द्रा	१	१४	६	५४	१२	३३	१८	१२
१४	१५	पुन.	२३	५१	५	३०	११	९	१६	४८
१५	१६	पुष्य	२२	२७	६	७	११	४६	१७	२५
१६	१७	आश्ले.	२१	४	२	४४	८	२५	१४	६
१७	१८	मघा	१९	४७	०	३१	६	१४	११	५७
१८	१९	पू.फा.	१८	४०	०	२६	६	१३	१२	०
१९	२०	उ.फा.	१७	४७	२३	३९	५	३२	११	२५
२०	२१	हस्त	१७	१७	२३	१७	५	१६	११	१५
२१	२२	चित्रा	१७	१४	२३	२१	५	२९	११	३७
२२	२३	स्वाती	१७	४५	०	२	६	२०	१२	३७
२३	२४	विशा.	१८	५४	१	२१	७	४८	१४	१५
२४	२५	अनु.	२०	४२	३	१७	९	५३	१६	२९
२५	२६	ज्ये.	२३	४	५	४७	१२	३०	१९	१२
	२७	मूल	१	५३	८	३९	१५	२५	२२	११
२८	२९	पू.षा.	४	५७	११	४२	१८	२७	१	१२
२९	३०	उ.षा.	७	५७	१४	४०	२१	२२	४	४
३०	३१	श्रव.	१०	४६	१७	२०	२३	५५	६	२९
३१	१अप्रै.	धनि.	१३	३	१९	२७	१	५२	७	१७
अप्रैल										
१	२	शत.	१४	४२	२०	५६	३	९	९	२३
२	३	पू.भा.	१५	३७	२१	४०	३	४४	९	४७
३	४	उ.भा.	१५	५०	२१	४३	४	३७	११	३१
४	५	रेव.	१५	२५						

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि.,भा.स्टैं.टा.) (१ जनवरी १९९९ई. को अयनांश २३ ° /५०'/३४'')

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चन्द्र शर	तारीख
१९९९ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	१९९९ई.
जन. १	८ १६ १५ ५२	२ १ ७ १	५ २४ ३२ ३०	७ २७ २५ ४२	१० २८ ६ ०	९ १ ३२ २९	० २ ५५ ५५	४ ० ३३ २८	-२३ ३	+१८ ५९	-४ २२	जन. १
२	८ १७ १६ ५९	२ १५ ४१ ३६	५ २५ २ ७	७ २८ ४९ ५१	१० २८ १४ ५१	९ २ ४७ ४१	० २ ५६ १५	४ ० ३० १७	२२ ५८	१९ ३४	३ ३२	२
३	८ १८ १८ ७	२ २९ ५९ ४०	५ २५ ३१ ३५	८ ० १४ ५०	१० २८ २३ ५२	९ ४ २ ५३	० २ ५६ ४०	४ ० २७ ६	२२ ५३	१८ ५३	२ ३०	३
४	८ १९ १९ १५	३ १३ ५६ १	५ २६ ० ५५	८ १ ४० ३५	१० २८ ३२ ५८	९ ५ १८ ४	० २ ५७ १२	४ ० २३ ५६	२२ ४७	१७ २	१ २०	४
५	८ २० २० २३	३ २७ २७ ४६	५ २६ ३० ४	८ ३ ७ ४	१० २८ ४२ १४	९ ६ ३३ १४	० २ ५७ ५१	४ ० २० ४५	२२ ४१	१४ १७	-० १०	५
६	८ २१ २१ ३१	४ १० ३४ ३५	५ २६ ५९ ३	८ ४ ३४ ११	१० २८ ५१ ३७	९ ७ ४८ २४	० २ ५८ ३६	४ ० १७ ३४	२२ ३४	१० ५३	+१ ४	६
७	८ २२ २२ ३९	४ २३ १८ १६	५ २७ २७ ५२	८ ६ १ ५५	१० २९ १ ८	९ ९ ३ ३४	० २ ५९ ३०	४ ० १४ २३	२२ २७	७ ४	२ १०	७
८	८ २३ २३ ४७	५ ५ ४२ ८	५ २७ ५६ ३२	८ ७ ३० १५	१० २९ १० ४६	९ १० १८ ४२	० ३ ० २७	४ ० ११ १३	२२ २०	+३ ३	३ ८	८
९	८ २४ २४ ५५	५ १७ ५० ३४	५ २८ २४ ५९	८ ८ ५९ ९	१० २९ २० ३४	९ ११ ३३ ५१	० ३ १ ३३	४ ० ८ २	२२ १२	-१ ०	३ ५६	९
१०	८ २५ २६ ४	५ २९ ४८ २५	५ २८ ५३ १६	८ १० २८ ३६	१० २९ ३० २८	९ १२ ४८ ५८	० ३ २ ४५	४ ० ४ ५१	२२ ३	४ ५७	४ ३३	१०
११	८ २६ २७ १३	६ ११ ४० ४६	५ २९ २१ २२	८ ११ ५८ ३२	१० २९ ४० ३०	९ १४ ४ ५	० ३ ४ ३	४ ० १ ४०	२१ ५४	८ ४०	४ ५९	११
१२	८ २७ २८ २१	६ २३ ३२ २२	५ २९ ४९ १६	८ १३ २९ ३	१० २९ ५० ३९	९ १५ १९ १२	० ३ ५ २८	३ २९ ५८ २९	२१ ४५	१२ २	५ ११	१२
१३	८ २८ २९ २९	७ ५ २७ ३६	६ ० १६ ५९	८ १५ ० २	११ ० ० ५५	९ १६ ३४ १८	० ३ ७ ०	३ २९ ५५ १८	२१ ३५	१४ ५७	५ १०	१३
१४	८ २९ ३० ३८	७ १७ ३० १४	६ ० ४४ ३०	८ १६ ३१ ३१	११ ० ११ २०	९ १७ ४९ २२	० ३ ८ ३८	३ २९ ५२ ८	२१ २५	१७ १५	४ ५६	१४
१५	९ ० ३१ ४६	७ २९ ४३ १२	६ १ ११ ४८	८ १८ ३ ३०	११ ० २१ ४९	९ १९ ४ २७	० ३ १० २३	३ २९ ४८ ५७	२१ १४	१८ ४९	४ २८	१५
१६	९ १ ३२ ५४	८ १२ ८ ३४	६ १ ३८ ५५	८ १९ ३६ ०	११ ० ३२ २६	९ २० १९ ३०	० ३ १२ १४	३ २९ ४५ ४६	२१ ४	१९ ३१	३ ४७	१६
१७	९ २ ३४ १	८ २४ ४७ ३०	६ २ ५ ४६	८ २१ ९ १	११ ० ४३ १०	९ २१ ३४ ३१	० ३ १४ १२	३ २९ ४२ ३५	२० ५२	१९ १६	२ ५४	१७
१८	९ ३ ३५ ८	९ ७ ४० १८	६ २ ३२ २६	८ २२ ४२ ३२	११ ० ५४ १	९ २२ ४९ ३४	० ३ १६ १५	३ २९ ३९ २४	२० ४०	१८ १	१ ५१	१८
१९	९ ४ ३६ १५	९ २० ४६ ४०	६ २ ५८ ५२	८ २४ १६ ३४	११ १ ४ ५८	९ २४ ४ ३५	० ३ १८ २७	३ २९ ३६ १३	२० २८	१५ ४७	+० ४१	१९
२०	९ ५ ३७ २०	१० ४ ५ ५०	६ ३ २५ ४	८ २५ ५१ ८	११ १ १६ २	९ २५ १९ ३४	० ३ २० ४४	३ २९ ३३ ३	२० [illegible]	१२ ४१	-० ३२	२०
२१	९ ६ ३८ २५	१० १७ ३६ ४८	६ ३ ५१ ४	८ २८ २६ १४	११ १ २७ १२	९ २६ ३४ ३३	० ३ २३ ७	३ २९ २९ ५२	२० ३	८ ५३	१ ४४	२१
२२	९ ७ ३९ ३०	११ १ १८ ३३	६ ४ १६ ४७	८ २९ १ ५५	११ १ ३८ २९	९ २७ ४९ ३०	० ३ २५ ३७	३ २९ २६ ४१	१९ ४९	-४ ३३	२ ५२	२२
२३	९ ८ ४० ३३	११ १५ १० ६	६ ४ ४२ १६	९ ० ३८ ७	११ १ ४९ ५०	९ २९ ४ २६	० ३ २८ १३	३ २९ २३ ३०	१९ ३६	+० २	३ ५०	२३
२४	९ ९ ४१ ३५	११ २९ १० २४	६ ५ ७ ३१	९ २ १४ ५६	११ २ १ १८	१० ० १९ २०	० ३ ३० ५५	३ २९ २० १९	१९ २२	४ ४१	४ ३६	२४
२५	९ १० ४२ ३६	० १३ १८ १२	६ ५ ३२ ३०	९ ३ ५२ २०	११ २ १२ ५२	१० १ ३४ १३	० ३ ३३ ४३	३ २९ १७ ९	१९ ७	९ ५	५ ५	२५
२६	९ ११ ४३ ३७	० २७ ३१ ४६	६ ५ ५७ १४	९ ५ ३० २१	११ २ २४ ३२	१० २ ४९ ५	० ३ ३६ ३८	३ २९ १३ ५८	१८ ५३	१३ १	५ १६	२६
२७	९ १२ ४४ ३६	१ ११ ४८ ४१	६ ६ २१ ४२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] २९ १० ४७	१८ ३८	१६ १२	५ ७	२७
२८	९ १३ ४५ ३३	१ २६ ५ ४५	६ ६ ४५ ५५	९ ८ ४८ १३	११ २ ४८ ८	१० ५ १८ ४३	० ३ ४२ ४५	३ २९ ७ ३६	१८ २२	१८ २४	४ ४०	२८
२९	९ १४ ४६ ३०	२ १० ११ ५	६ ७ ९ ५२	९ १० २८ ९	११ ३ ० ४	१० ६ ३३ ३०	० ३ ४५ ५६	३ २९ ४ २५	१८ ६	१९ २७	३ ५५	२९
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३०

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा.स्टैं.टा.) (१ फरवरी,'९९ई. को अयनांश २३°/५०'/३९'')

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चन्द्र शर	तारीख
१९९९ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	१९९९ई.
फर. १	९ १७ ४९ १४	३ २१ ५५ ४२	६ ८ १९ ५९	९ १५ ३१ ५८	११ ३ ३६ २३	१० १० १७ ४०	० ३ ५६ ८	३ २८ ५४ ५३	-१७ १७	+१५ ३३	-० ३५	फर.१
२	९ १८ ५० ७	४ ५ १५ ३८	६ ८ ४२ ४८	९ १७ १४ ३८	११ ३ ४८ ४०	१० ११ ३२ २०	० ३ ५९ ४३	३ २८ ५१ ४२	१७ ०	१२ २३	+० ३९	२
३	९ १९ ५० ५८	४ १८ १६ ३५	६ ९ ५ १५	९ १८ ५७ ५९	११ ४ १ १	१० १२ ४६ ५८	० ४ ३ २५	३ २८ ४८ ३१	१६ ४३	८ ४१	१ ४९	३
४	९ २० ५१ ४९	५ ० ५८ ४९	६ ९ २७ २७	९ २० ४२ ५	११ ४ १३ २६	१० १४ १ ३६	० ४ ७ १२	३ २८ ४५ २१	१६ २५	४ ४१	२ ५१	४
५	९ २१ ५२ ३९	५ १३ २४ ५	६ ९ ४९ १९	९ २२ २६ ५१	११ ४ २५ ५८	१० १५ १६ ११	० ४ ११ ३	३ २८ ४२ १०	१६ ७	+० ३४	३ ४५	५
६	९ २२ ५३ २७	५ २५ ३५ ६	६ १० १० ५२	९ २४ १२ २२	११ ४ ३८ ३३	१० १६ ३० ४४	० ४ १५ ०	३ २८ ३८ ५९	१५ ४९	-३ २९	४ २७	६
७	९ २३ ५४ १५	६ ७ ३५ ३५	६ १० ३२ ५	९ २५ ५८ ३३	११ ४ ५१ १३	१० १७ ४५ १०	० ४ १९ ३	३ २८ ३५ ४८	१५ ३१	७ २०	४ ५७	७
८	९ २४ ५५ ३	६ १९ २९ ४७	६ १० ५२ ५७	९ २७ ४५ २५	११ ५ ३ ५८	१० १८ ५९ ४६	० ४ २३ १२	३ २८ ३२ ३८	१५ १२	१० ५१	५ १४	८
९	९ २५ ५५ ४८	७ १ २२ २०	६ ११ १३ २८	९ २९ ३२ ५५	११ ५ १६ ४६	१० २० १४ १४	० ४ २७ २६	३ २८ २९ २७	१४ ५३	१३ ५६	५ १७	९
१०	९ २६ ५६ ३३	७ १३ १८ १	६ ११ ३३ ३८	१० १ २१ २	११ ५ २९ ४०	१० २१ २८ ४०	० ४ ३१ ४५	३ २८ २६ १६	१४ ३४	१६ २८	५ ७	१०
११	९ २७ ५७ १७	७ २५ २१ २०	६ ११ ५३ २५	१० ३ ९ ४१	११ ५ ४२ ३७	१० २२ ४३ ४	० ४ ३६ ९	३ २८ २३ ५	१४ १४	१८ १८	४ ४३	११
१२	९ २८ ५८ ०	८ ७ ३६ ३२	६ १२ १२ ५०	१० ४ ५८ ५०	११ ५ ५५ ३८	१० २३ ५७ २७	० ४ ४० ३८	३ २८ १९ ५५	१३ ५५	१९ २०	४ ६	१२
१३	९ २९ ५८ ४२	८ २० ७ ६	६ १२ ३१ ५२	१० ६ ४८ २४	११ ६ ८ ४३	१० २५ ११ ४८	० ४ ४५ १२	३ २८ १६ ४४	१३ ३५	१९ २७	३ १७	१३
१४	१० ० ५९ २२	९ २ ५५ ३५	६ १२ ५० ३०	० ८ ३८ १६	११ ६ २१ ५२	१० २६ २७ ६	० ४ ४९ ५२	३ २८ १३ ३३	१३ १५	१८ ३४	२ १६	१४
१५	१० २ ० १	९ १६ ३ १८	६ १३ ८ ४४	१० १० २८ १७	११ ६ ३५ ५	१० २७ ४० २२	० ४ ५४ ३७	३ २८ १० २२	१२ ५४	१६ ४१	+१ ८	१५
१६	१० ३ ० ३९	९ २९ ३० १३	६ १३ २६ ३३	१० १२ १८ २१	११ ६ ४८ २१	१० २८ ५४ ३६	० ४ ५९ २७	३ २८ ७ १२	१२ ३४	१३ ५०	-० ७	१६
१७	१० ४ १ १६	१० १३ १४ ५४	६ १३ ४३ ५८	१० १४ ८ १४	११ ७ १ ४१	११ ० ८ ४८	० ५ ४ २२	३ २८ ४ १	१२ १३	१० १०	१ २२	१७
१८	१० ५ १ ५०	१० २७ १४ २८	६ १४ ० ५५	१० १५ ५७ ४५	११ ७ १५ ५	११ १ २२ ५८	० ५ ९ २०	३ २८ ० ५०	११ ५२	५ ५३	२ ३४	१८
१९	१० ६ २ २४	११ ११ २५ ९	६ १४ १७ २७	१० १७ ४६ ३५	११ ७ २८ ३१	११ २ ३७ ५	० ५ १४ २४	३ २७ ५७ ४०	११ ३१	-१ १४	३ ३७	१९
२०	१० ७ २ ५५	११ २५ ४२ ३७	६ १४ ३३ ३१	१० १९ ३४ ३०	११ ७ ४२ २	११ ३ ५१ ८	० ५ १९ ३२	३ २७ ५४ २९	११ ९	+३ ३२	४ २७	२०
२१	१० ८ ३ २५	० १० २ २९	६ १४ ४९ ८	१० २१ २१ ९	११ ७ ५५ ३५	११ ५ ५ ११	० ५ २४ ४५	३ २७ ५१ १८	१० ४८	८ ५	५ १	२१
२२	१० ९ ३ ५३	० २४ २० ५०	६ १५ ४ १८	१० २३ ६ ७	११ ८ ९ ११	११ ६ १९ १२	० ५ ३० ३	३ २७ ४८ ८	१० २६	१२ ११	५ १७	२२
२३	१० १० ४ १९	१ ८ ३४ २७	६ १५ १८ ५८	१० २४ ४९ १	११ ८ २२ ५०	११ ७ ३३ ८	० ५ ३५ २५	३ २७ ४४ ५७	१० ४	१५ ३३	५ ११	२३
२४	१० ११ ४ ४३	१ २२ ४० ५७	६ १५ ३३ ९	१० २६ २९ १८	११ ८ ३६ ३३	११ ८ ४७ १	० ५ ४० ५०	३ २७ ४१ ४६	९ ४२	१७ ५८	४ ४८	२४
२५	१० १२ ५ ५	२ ६ ३८ ३६	६ १५ ४६ ५२	१० २८ ६ ३३	११ ८ ५० १७	११ १० ० ५२	० ५ ४६ २१	३ २७ ३८ ३५	९ २०	१९ १८	४ ८	२५
२६	१० १३ ५ २५	२ २० २६ १२	६ १६ ० ४	१० २९ ४० ५	११ ९ ४ ५	११ ११ १४ ४०	० ५ ५१ ५६	३ २७ ३५ २५	८ ५८	१९ २७	३ १४	२६
२७	१० १४ ५ ४३	३ ४ २ ५०	६ १६ १२ ४६	११ १ ९ २९	११ ९ १७ ५५	११ १२ २८ २५	० ५ ५७ ३५	३ २७ ३२ १४	८ ३५	१८ २७	२ १०	२७
२८	१० १५ ६ ०	३ १७ २७ ४३	६ १६ २४ ५६	११ २ ३३ ५५	११ ९ ३१ ४८	११ १३ ४२ ६	० ६ ३ १७	३ २७ २९ ३	-८ १३	+१६ २६	-१ ०	२८

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा.स्टैं.टा.) (१ मार्च '९९ ई. को अयनांश २३°/५१'/ ४३'')

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
१९९९ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	१९९९ई.
मार्च १	१० १६ ६ १४	४ ० ४० ७	६ १६ ३६ ३४	११ ३ ५३ ३	११ ९ ४५ ४३	११ १४ ५५ ४४	० ६ ९ ४	३ २७ २५ ५२	-७ ५०	+१३ ३३	+० १३	मार्च १
२	१० १७ ६ २६	४ १३ ३९ २७	६ १६ ४७ ४०	११ ५ ६ ०	११ ९ ५९ ४०	११ १६ ९ १९	० ६ १४ ५५	३ २७ २२ ४१	७ २८	१० ३	१ २४	२
३	१० १८ ६ ३७	४ २६ २५ २४	६ १६ ५८ ११	११ ६ १२ २६	११ १० १३ ४०	११ १७ २२ ५२	० ६ २० ५०	३ २७ १९ ३०	७ ५	६ ८	२ २९	३
४	१० १९ ६ ४६	५ ८ ५८ ३	६ १७ ८ १०	११ ७ ११ ३२	११ १० २७ ४१	११ १८ ३६ २०	० ६ २६ ४८	३ २७ १६ २०	६ ४२	+२ २	३ २६	४
५	१० २० ६ ५३	५ २१ १८ १०	६ १७ १७ ३३	११ ८ ३ ३	११ १० ४१ ४५	११ १९ ४९ ४५	० ६ ३२ ५०	३ २७ १३ ९	६ १९	-२ ६	४ १२	५
६	१० २१ ६ ५९	६ ३ २७ १२	६ १७ २६ २१	११ ८ ४६ १९	११ १० ५५ ५१	११ २१ ३ ८	० ६ ३८ ५५	३ २७ ९ ५८	५ ५५	६ ४	४ ४६	६
७	१० २२ ७ ३	६ १५ २७ २२	६ १७ ३४ ३३	११ ९ २१ ८	११ ११ ९ ५९	११ २२ १६ २७	० ६ ४५ ५	३ २७ ६ ४७	५ ३२	९ ४५	५ ६	७
८	१० २३ ७ ५	६ २७ २१ ४५	६ १७ ४२ ८	११ ९ ४७ ४	११ ११ २४ १०	११ २३ २९ ४२	० ६ ५१ १८	३ २७ ३ ३६	५ ९	१३ ०	५ १४	८
९	१० २४ ७ ६	७ ९ १४ ५	६ १७ ४९ ५	११ १० ४ ५	११ ११ ३८ २१	११ २४ ४२ ५५	० ६ ५७ ३५	३ २७ ० २५	४ ४६	१५ ४४	५ ८	९
१०	१० २५ ७ ५	७ २१ ८ ४०	६ १७ ५५ २४	११ १० १२ २३	११ ११ ५२ ३४	११ २५ ५६ ५	० ७ ३ ५५	३ २६ ५७ १५	४ २२	१७ ४९	४ ४९	१०
११	१० २६ ७ २	८ ३ १० १०	६ १८ १ ४	११ १० ११ ०	११ १२ ६ ५०	११ २७ ९ ९	० ७ १० १७	३ २६ ५४ ४	३ ५९	१९ ८	४ १७	११
१२	१० २७ ६ ५८	८ १५ २३ २४	६ १८ ६ ५	११ १० १ १३	११ १२ २१ ६	११ २८ २२ ११	० ७ १६ ४२	३ २६ ५० ५३	३ ३५	१९ ३५	३ ३३	१२
१३	१० २८ ६ ५२	८ २७ ५३ २	६ १८ १० २३	११ ९ ४३ १	११ १२ ३५ २५	११ २९ ३५ १०	० ७ २३ १२	३ २६ ४७ ४२	३ ११	१९ ५	२ ३८	१३
१४	१० २९ ६ ४५	९ १० ४३ ९	६ १८ १४ २	११ ९ १६ ५९	११ १२ ४९ ४४	० ० ४८ ५	० ७ २९ ४४	३ २६ ४४ ३२	२ ४८	१७ ३७	१ ३३	१४
१५	११ ० ६ ३५	९ २३ ५६ ४३	६ १८ १६ ५८	११ ८ ४३ ४३	११ १३ ४ ५	० २ ० ५७	० ७ ३६ २०	३ २६ ४१ २१	२ २४	१५ ९	+० २२	१५
१६	११ १ ६ २४	१० ७ ३५ ८	६ १८ १९ १२	११ ८ ४ ७	११ १३ १८ २८	० ३ १३ ४४	० ७ ४२ ५८	३ २६ ३८ १०	२ ०	११ ४७	-० ५२	१६
१७	११ २ ६ ११	१० २१ ३७ ३९	६ १८ २० ४२	११ ७ १९ ५	११ १३ ३२ ५१	० ४ २६ २९	० ७ ४९ ३९	३ २६ ३४ ५९	१ ३७	७ ३९	२ ५	१७
१८	११ ३ ५ ५६	११ ४ १ २	६ १८ २१ २९	११ ६ २९ ४३	११ १३ ४७ १५	० ५ ३९ ८	० ७ ५६ २४	३ २६ ३१ ४९	१ १३	-३ ०	३ १२	१८
१९	११ ४ ५ ४०	११ २० ३९ ४७	६ १८ २१ ३३	११ ५ २७ ९	११ १४ १ ४०	० ६ ५१ ४५	० ८ ३ ११	३ २६ २८ ३८	० ४९	+१ ५५	४ ८	१९
२०	११ ५ ५ २१	० ५ २६ ३१	६ १८ २० ५१	११ ४ ४२ ४०	११ १४ १६ ८	० ८ ४ १८	० ८ १० ०	३ २६ २५ २७	० २५	६ ४४	४ ४७	२०
२१	११ ६ ४ ५९	० २० १३ २२	६ १८ १९ २५	११ ३ ४७ २०	११ १४ ३० ३६	० ९ १६ ४५	० ८ १६ ५३	३ २६ २२ १७	-० २	११ १०	५ ८	२१
२२	११ ७ ४ ३६	१ ४ ५२ ५७	६ १८ १७ १४	११ २ ५२ २८	११ १४ ४५ ४	० १० २९ ९	० ८ २३ ४८	३ २६ १९ ६	+० २२	१४ ५२	५ ८	२२
२३	११ ८ ४ १०	१ १९ १९ ३१	६ १८ १४ १८	११ १ ५९ २	११ १४ ५९ ३३	० ११ ४१ २८	० ८ ३० ४५	३ २६ १५ ५५	० ४६	१७ ३७	४ ४८	२३
२४	११ ९ ३ ४३	२ ३ २९ ३०	६ १८ १० ३६	११ १ ८ ९	११ १५ १४ २	० १२ ५३ ४३	० ८ ३७ ४४	३ २६ १२ ४४	१ ९	१९ १३	४ ११	२४
२५	११ १० ३ १२	२ १७ २१ २७	६ १८ ६ ९	११ ० २० ३६	११ १५ २८ ३२	० १४ ५ ५३	० ८ ४४ ४६	३ २६ ९ ३३	१ ३३	१९ ३८	३ २०	२५
२६	११ ११ २ ३९	३ ० ५५ ३४	६ १८ ० ५६	१० २९ ३७ १२	११ १५ ४३ २	० १५ १७ ५८	० ८ ५१ ५०	३ २६ ६ २३	१ ५७	१८ ५३	२ १९	२६
२७	११ १२ २ ५	३ १४ १३ ९	६ १७ ५४ ५७	१० २८ ५८ २८	११ १५ ५७ ३३	० १६ २९ ५९	० ८ ५८ ५७	३ २६ ३ १२	२ २०	१७ ६	१ १२	२७
२८	११ १३ १ २७	३ २७ १५ ५७	६ १७ ४८ १३	१० २८ २४ ५६	११ १६ १२ ३	० १७ ४१ ५४	० ९ ६ ५	३ २६ ० १	२ ४४	१४ २६	-० २	२८
२९	११ १४ ० ४८	४ १० ५ ४८	६ १७ ४० ४२	१० २७ ५६ ५२	११ १६ २६ ३४	० १८ ५३ ४५	० ९ १३ १५	३ २५ ५६ ५०	३ ७	११ ६	+१ ७	२९
३०	११ १५ ० ६	४ २२ ४६ २४	६ १७ ३२ २६	१० २७ ३४ ३०	११ १६ ४२ ६	० २० ५ ३०	० ९ २० २८	३ २५ ५३ ४०	३ ३०	७ १९	२ १२	३०

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि.,भा.स्टैं.टा.) (१ अप्रैल '९९ई. को अयनांश २३°/५०'/ ४६")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
१९९९ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	१९९९ई.
अप्रै. १	११ १६ ५८ ३७	५ १७ ३१ २८	६ १७ १३ ३६	१० २७ ७ ९	११ १७ १० ८	० २२ २८ ४६	० ९ ३४ ५८	३ २५ ४७ १८	+४ १७	-० ५३	+३ ५६	अप्रै. १
२	११ १७ ५७ ४८	५ २९ ४२ ५	६ १७ ३ ३	१० २७ २ ७	११ १७ २४ ३९	० २३ ४० १६	० ९ ४२ १६	३ २५ ४४ ७	४ ५०	४ ५६	४ ३२	२
३	११ १८ ५६ ५८	६ ११ ४५ १७	६ १६ ५१ ४५	१० २७ २ ४४	११ १७ ३९ १०	० २४ ५१ ४१	० ९ ४९ ३५	३ २५ ४० ५६	५ ५	८ ४५	४ ५५	३
४	११ १९ ५६ ७	६ २३ ४२ २८	६ १६ ३९ ४३	१० २७ ८ ४९	११ १७ ५३ ४१	० २६ ३ १	० ९ ५६ ५६	३ २५ ३७ ४६	५ २६	१२ ११	५ ५	४
५	११ २० ५५ १३	७ ५ ३५ ३३	६ १६ २६ ५७	१० २७ २० १३	११ १८ ८ १२	० २७ १४ १४	० १० ४ १९	३ २५ ३४ ३५	५ ४९	१५ ७	५ २	५
६	११ २१ ५४ १७	७ १७ २७ ११	६ १६ १३ २७	१० २७ ३६ ४०	११ १८ २२ ४२	० २८ २५ २५	० १० ११ ४३	३ २५ ३१ २४	६ १२	१७ २५	४ ४६	६
७	११ २२ ५३ २०	७ २९ २० ४५	६ १५ ५९ १५	१० २७ ५८ १	११ १८ ३७ १२	० २९ ३६ २६	० १० १९ ९	३ २५ २८ १४	६ ३५	१८ ५९	४ १७	७
८	११ २३ ५२ २१	८ ११ २० १५	६ १५ ४४ २०	१० २८ २४ ०	११ १८ ५१ ४२	१ ० ४७ २४	० १० २६ ३६	३ २५ २५ ३	६ ५७	१९ ४३	३ ३७	८
९	११ २४ ५१ २०	८ २३ ३० २३	६ १५ २८ ४५	१० २८ ५४ २५	११ १९ ६ ११	१ १ ५८ १६	० १० ३४ ४	३ २५ २१ ५२	७ २०	१९ ३४	२ ४६	९
१०	११ २५ ५० १७	९ ५ ५६ ६	६ १५ १२ ३१	१० २९ २९ २	११ १९ २० ३९	१ ३ ९ २	० १० ४१ ३३	३ २५ १८ ४२	७ ४२	१८ २७	१ ४७	१०
११	११ २६ ४९ १२	९ १८ ४२ १८	६ १४ ५५ ३८	११ ० ७ ३९	११ १९ ३५ ७	१ ४ १९ ४३	० १० ४९ ४	३ २५ १५ ३१	८ ४	१६ २३	+० ४१	११
१२	११ २७ ४८ ६	१० १ ५३ १९	६ १४ ३८ ८	११ ० ५० ३	११ १९ ४९ ३४	१ ५ ३० १८	० १० ५६ ३६	३ २५ १२ २०	८ २६	१३ २४	-० २९	१२
१३	११ २८ ४६ ५८	१० १५ ३२ ९	६ १४ २० २	११ १ ३६ ३	११ २० ४ १	१ ६ ४० ४७	० ११ ४ ९	३ २५ ९ ९	८ ४८	९ ३६	१ ४०	१३
१४	११ २९ ४५ ४८	१० २९ ३९ ४०	६ १४ १ २३	११ २ २५ २९	११ २० १८ २६	१ ७ ५१ १०	० ११ ११ ४३	३ २५ ५ ५९	९ १०	५ ९	२ ४८	१४
१५	० ० ४४ ३७	११ १४ १३ ४७	६ १३ ४२ १२	११ ३ १८ ३	११ २० ३२ ५०	१ ९ १ २७	० ११ १९ १७	३ २५ २ ४८	९ ३२	-० १५	३ ४६	१५
१६	० १ ४३ २३	११ २९ ९ ३	६ १३ २२ ५१	११ ४ १३ ५६	११ २० ४७ १४	१ १० ११ ३८	० ११ २६ ५३	३ २४ ५९ ३७	९ ५३	+४ ४५	४ ३०	१६
१७	० २ ४२ ८	० १४ १६ ५६	६ १३ २ २२	११ ५ १२ ३९	११ २१ १ ३६	१ ११ २१ ४२	० ११ ३४ २९	३ २४ ५६ २६	१० १४	९ ३२	४ ५६	१७
१८	० ३ ४० ५०	० २९ २७ २	६ १२ ४१ ४८	११ ६ १४ १०	११ २१ १५ ५७	१ १२ ३१ ३९	० ११ ४२ ७	३ २४ ५३ १५	१० ३६	१३ ४३	५ २	१८
१९	० ४ ३९ ३१	१ १४ २८ ५८	६ १२ २० ५०	११ ७ १८ २४	११ २१ ३० १६	१ १३ ४१ ३०	० ११ ४९ ४४	३ २४ ५० ४	१० ५६	१६ ५९	४ ४६	१९
२०	० ५ ३८ ९	१ २९ १४ ६	६ ११ ५९ ३२	११ ८ २५ १२	११ २१ ४४ ३५	१ १४ ५१ १५	० ११ ५७ २२	३ २४ ४६ ५४	११ १७	१९ ४	४ १२	२०
२१	० ६ ३६ ४५	२ १३ ३६ ४७	६ ११ ३७ ५६	११ ९ ३४ २९	११ २१ ५८ ५१	१ १६ ० ५१	० १२ ५ १	३ २४ ४३ ४३	११ ३८	१९ ५२	३ २२	२१
२२	० ७ ३५ १९	२ २७ ३४ ३४	६ ११ १६ ५	११ १० ४६ ९	११ २२ १३ ७	१ १७ १० २१	० १२ १२ ४०	३ २४ ४० ३२	११ ५८	१९ २४	२ २२	२२
२३	० ८ ३३ ५१	३ ११ ७ ४८	६ १० ५४ ०	११ १२ ० ८	११ २२ २७ २०	१ १८ १९ ४३	० १२ २० २०	३ २४ ३७ २१	१२ १९	१७ ४९	१ १५	२३
२४	० ९ ३२ २०	३ २४ १८ ३९	६ १० ३१ ४५	११ १३ १६ २१	११ २२ ४१ ३२	१ १९ २८ ५७	० १२ २७ ५९	३ २४ ३४ ११	१२ ३८	१५ १८	-० ६	२४
२५	० १० ३० ४८	४ ७ १० २३	६ १० ९ २३	११ १४ ३४ ४४	११ २२ ५५ ४२	१ २० ३८ ३	० १२ ३५ ३९	३ २४ ३१ ०	१२ ५८	१२ ५	+१ २	२५
२६	० ११ २९ १३	४ १९ ४६ २८	६ ९ ४६ ५५	११ १५ ५५ १५	११ २३ ९ ५१	१ २१ ४७ २	० १२ ४३ १९	३ २४ २७ ५०	१३ १८	८ २२	२ ५	२६
२७	० १२ २७ ३६	५ २ १० १२	६ ९ २४ २५	११ १७ १७ ५०	११ २३ २३ ५७	१ २२ ५५ ५२	० १२ ५० ५९	३ २४ २४ ३९	१३ ३७	४ २२	३ २	२७
२८	० १३ २५ ५७	५ १४ २४ २४	६ ९ १ ५५	११ १८ ४२ २६	११ २३ ३८ १	१ २४ ४ ३४	० १२ ५८ ३९	३ २४ २१ २८	१३ ५६	+० १४	३ ४८	२८
२९	० १४ २४ १६	५ २६ ३१ १६	६ ८ ३९ २८	११ २० ९ ३	११ २३ ५२ ४	१ २५ १३ ७	० १३ ६ १९	३ २४ १८ १८	१४ १५	-३ ५२	४ २४	२९
३०	० १५ २२ ३३	६ ८ ३२ २८	६ ८ १७ ६	११ २१ ३७ ३६	११ २४ ६ ४	१ २६ २१ ३१	० १३ १३ ५९	३ २४ १५ ७	+१४ ३४	-७ ४७	+४ ४८	३०

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा.स्टैं.टा.) (१मई' ९९ई.को अयनांश २३°/५०'/ ५०")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
१९९९ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	१९९९ई.
मई १	० १६ २० ४९	६ २० २९ २२	६ ७ ५४ ५३	११ २३ ८ ७	११ २४ २० ३	१ २७ २९ ४७	० १३ २१ ३९	३ २४ ११ ५६	+१४ ५२	-११ २२	+४ ५९	मई १
२	० १७ १९ ३	७ २ २३ ११	६ ७ ३२ ५०	११ २४ ४० ३३	११ २४ ३३ ५९	१ २८ ३७ ५४	० १३ २९ १८	३ २४ ८ ४६	१५ ११	१४ ३०	४ ५७	२
३	० १८ १७ १५	७ १४ १५ २०	६ ७ ११ ०	११ २६ १४ ५५	११ २४ ४७ ५३	१ २९ ४५ ५१	० १३ ३६ ५८	३ २४ ५ ३५	१५ २९	१७ १	४ ४२	३
४	० १९ १५ २५	७ २६ ७ ३६	६ ६ ४९ २६	११ २७ ५१ १०	११ २५ १ ४४	२ ० ५३ ३९	० १३ ४४ ३६	३ २४ २ २४	१५ ४६	१८ ५०	४ १४	४
५	० २० १३ ३४	८ ८ २ २४	६ ६ २८ ९	११ २९ २९ १९	११ २५ १५ ३३	२ २ १ १८	० १३ ५२ १५	३ २३ ५९ १४	१६ ४	१९ ५०	३ ३६	५
६	० २१ ११ ४१	८ २० २ ५१	६ ६ ७ १४	० १ ९ २२	११ २५ २९ २०	२ ३ ८ ४८	० १३ ५९ ५३	३ २३ ५६ ३	१६ २१	१९ ५७	२ ४७	६
७	० २२ ९ ४७	९ २ १२ ४५	६ ५ ४६ ४१	० २ ५१ १९	११ २५ ४३ ४	२ ४ १६ ७	० १४ ७ ३२	३ २३ ५२ ५२	१६ ३८	१९ ८	१ ५०	७
८	० २३ ७ ५१	९ १४ ३६ ३३	६ ५ २६ ३३	० ४ ३५ १०	११ २५ ५६ ४५	२ ५ २३ १६	० १४ १५ ८	३ २३ ४९ ४२	१६ ५४	१७ २३	+० ४७	८
९	० २४ ५ ५४	९ २७ १९ ०	६ ५ ६ ५२	० ६ २० ५६	११ २६ १० २४	२ ६ ३० १५	० १४ २२ १४	३ २३ ४६ ३१	१७ ११	१४ ४६	-० २०	९
१०	० २५ ३ ५६	१० १० २४ ४४	६ ४ ४७ ४१	० ८ ८ ३५	११ २६ २४ ०	२ ७ ३७ ५	० १४ ३० १९	३ २३ ४३ २०	१७ २७	११ १९	१ २८	१०
११	० २६ १ ५७	१० २३ ५७ ३५	६ ४ २९ २	० ९ ५८ १०	११ २६ ३७ ३४	२ ८ ४३ ४३	० १४ ३७ ५४	३ २३ ४० १०	१७ ४२	७ १०	२ ३३	११
१२	० २६ ५९ ५५	११ ७ ५९ ४४	६ ४ १० ५६	० ११ ४९ ३८	११ २६ ५१ ४	२ ९ ५० १०	० १४ ४५ २८	३ २३ ३६ ५९	१७ ५८	-२ ३०	३ ३२	१२
१३	० २७ ५७ ५३	११ २२ ३० ४०	६ ३ ५३ २५	० १३ ४३ ३	११ २७ ४ ३१	२ १० ५६ २७	० १४ ५३ १	३ २३ ३३ ४८	१८ १३	+२ २७	४ १९	१३
१४	० २८ ५५ ४९	० ७ २६ २६	६ ३ ३६ ३२	० १५ ३८ १९	११ २७ १७ ५५	२ १२ २ ३३	० १५ ० ३३	३ २३ ३० ३७	१८ २८	७ २४	४ ४९	१४
१५	० २९ ५३ ४५	० २२ ३९ २२	६ ३ २० १८	० १७ ३५ २९	११ २७ ३१ १६	२ १३ ८ २६	० १५ ८ ५	३ २३ २७ २६	१८ ५२	११ ५८	५ ०	१५
१६	१ ० ५१ ३८	१ ७ ५८ ४७	६ ३ ४ ४४	० १९ ३४ २८	११ २७ ४४ ३४	२ १४ १४ ८	० १५ १५ ३५	३ २३ २४ १५	१८ ५७	१५ ४७	४ ५०	१६
१७	१ १ ४९ ३०	१ २३ १३ ३६	६ २ ४९ ५२	० २१ ३५ १७	११ २७ ५७ ४८	२ १५ १९ ३८	० १५ २३ ३	३ २३ २१ ५	१९ ११	१८ ३०	४ १९	१७
१८	१ २ ४७ २०	२ ८ १२ ४३	६ २ ३५ ४४	० २३ ३७ ४८	११ २८ १० ५९	२ १६ २४ ५५	० १५ ३० ३१	३ २३ १७ ५४	१९ २४	१९ ५४	३ ३१	१८
१९	१ ३ ४५ ९	२ २२ ४८ ३२	६ २ २२ २१	० २५ ४२ २	११ २८ २४ ७	२ १७ २९ ५९	० १५ ३७ ५७	३ २३ १४ ४३	१९ ३७	१९ ५५	२ ३०	१९
२०	१ ४ ४२ ५६	३ ६ ५६ ५४	६ २ ९ ४३	० २७ ४७ ४५	११ २८ ३७ १०	२ १८ ३४ ४९	० १५ ४५ २२	३ २३ ११ ३२	१९ ५०	१८ ४०	१ २१	२०
२१	१ ५ ४० ४२	३ २० ३७ ०	६ १ ५७ ५१	० २९ ५४ ५९	११ २८ ५० १०	२ १९ ३९ २६	० १५ ५२ ४५	३ २३ ८ २२	२० ३	१६ २०	-० १०	२१
२२	१ ६ ३८ २६	४ ३ ३० ३८	६ १ ४६ ४६	१ २ ३ २६	११ २९ ३ ७	२ २० ४३ ४९	० १६ ० ७	३ २३ ५ ११	२० १५	१३ १३	+१ ०	२२
२३	१ ७ ३६ ८	४ १६ ४१ १६	६ १ ३६ २९	१ ४ १३ ४	११ २९ १५ ५९	२ २१ ४७ ५६	० १६ ७ २७	३ २३ २ ०	२० २७	९ ३३	२ ५	२३
२४	१ ८ ३३ ४९	४ २९ १३ ४	६ १ २७ १	१ ६ २३ ३३	११ २९ २८ ४७	२ २२ ५१ ४८	० १६ १४ ४६	३ २२ ५८ ४९	२० ३८	५ ३२	३ २	२४
२५	१ ९ ३१ २७	५ ११ ३० १९	६ १ १८ २०	१ ८ ३४ ४७	११ २९ ४१ ३२	२ २३ ५५ २५	० १६ २२ २	३ २२ ५५ ३९	२० ५०	+१ २३	३ ४९	२५
२६	१ १० २९ ५	५ २३ ३६ ५९	६ १ १० २८	१ १० ४६ २६	११ २९ ५४ १२	२ २४ ५८ ४७	० १६ २९ १८	३ २२ ५२ २८	२१ ०	-२ ४६	४ २५	२६
२७	१ ११ २६ ४२	६ ५ ३६ ३०	६ १ ३ २५	१ १२ ५८ १८	० ० ६ ४९	२ २६ १ ५०	० १६ ३६ ३१	३ २२ ४९ १७	२१ ११	६ ४६	४ ४९	२७
२८	१ १२ २४ १६	६ १७ ३१ ३७	६ ० ५७ ११	१ १५ १० ४	० ० १९ ३१	२ २७ ४ ३७	० १६ ४३ ४२	३ २२ ४६ ६	२१ २१	१० २८	५ १	२८
२९	१ १३ २२ ५०	६ २९ २४ ३१	६ ० ५१ ४६	१ १७ ३२ २८	० ० ३१ ४८	२ २८ ७ ७	० १६ ५० ५२	३ २२ ४२ ५५	२१ ३१	१३ ४६	४ ५९	२९
३०	१ १४ १९ २२	७ ११ २६ ५५	६ ० ४७ ९	१ १९ ३२ १६	० ० ४४ १२	२ २९ ९ २०	० १६ ५७ ५९	३ २२ ३९ ४४	२१ ४०	१६ ३०	४ ४४	३०
३१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३ ० ११ ३३	० १७ ५ ५	३ २२ ३६ ३४	+२१ ४९	-१८ ३३	+४ १७	३१

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा.स्टैं.टा.) (१ जून, ९९ ई. को अयनांश २३°/५०′/५४″)

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां	चंद्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
१९९९ई.	रा.अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	१९९९ ई.
जून १	१ १६ १४ २४	८ ५ ६ १२	६ ० ४० २१	१ २३ ३० ५४	० १ ८ ४५	३ १ १२ ४७	० १७ १२ ८	३ २२ ३३ २३	+२१ ५८	-१९ ४८	+३ ३८	जून १
२	१ १७ ११ ५३	८ १७ ६ १९	६ ० ३८ १०	१ २५ ५८ १३	० १ २० ५५	३ २ १४ ३	० १७ १९ ९	३ २२ ३० १२	२२ ६	२० १०	२ ५०	२
३	१ १८ ९ २१	८ २९ १२ ४८	६ ० ३६ ४६	१ २८ ४ ०	० १ ३३ १	३ ३ १४ ५८	० १७ २६ ८	३ २२ २७ १	२२ १४	१९ ३७	१ ५३	३
४	१ १९ ६ ४९	९ ११ २८ २५	६ ० ३६ १०	२ ० ७ ५६	० १ ४५ १	३ ४ १५ ३३	० १७ ३३ ५	३ २२ २३ ५१	२२ २१	१८ ८	+० ५०	४
५	१ २० ४ १५	९ २३ ५८ २८	६ ० ३६ २१	२ २ १० ०	० १ ५६ ५७	३ ५ १५ ४६	० १७ ३९ ५९	३. २२ २० ४०	२२ २८	१५ ४६	-० १७	५
६	१ २१ १ ४१	१० ६ ४० ४१	६ ० ३७ २०	२ ४ ९ ५४	० २ ८ ४८	३ ६ १५ ३९	० १७ ४६ ५१	३ २२ १७ २९	२२ ३५	१२ ३५	१ २६	६
७	१ २१ ५९ ६	१० १९ ४४ ५६	६ ० ३९ ४	२ ६ ७ ४१	० २ २० ३३	३ ७ १५ ९	० १७ ५३ ४१	३ २२ १४ १८	२२ ४१	८ ४४	२ २८	७
८	१ २२ ५६ ५१	११ ३ १२ ४४	६ ० ४१ ३५	२ ८ ३ ८	० २ ३२ १४	३ ८ १४ १६	० १८ ० २८	३ २२ ११ ७	२२ ४७	-४ २०	३ २७	८
९	१ २३ ५३ ५५	११ १७ ६ २६	६ ० ४४ ५१	२ ९ ५६ १६	० २ ४३ ५०	३ ९ १३ ०	० १८ ७ १२	३ २२ ७ ५६	२२ ५२	+० २६	४ १५	९
१०	१ २४ ५१ १९	० १ २६ २८	६ ० ४८ ५३	२ ११ ४६ ५६	० २ ५५ २०	३ १० ११ १९	० १८ १३ ५४	३ २२ ४ ४६	२२ ५७	५ १८	४ ४९	१०
११	१ २५ ४८ ४२	० १६ १० २५	६ ० ५३ ३९	२ १३ ३५ १२	० ३ ६ ४५	३ ११ ९ १४	० १८ २० ३३	३ २२ १ ३५	२३ २	१० ०	५ ५	११
१२	१ २६ ४६ ४	१ १ १२ ३९	६ ० ५९ १०	२ १५ २० ५५	० ३ १८ ४	३ १२ ६ ४३	० १८ २७ १०	३ २१ ५८ २४	२३ ६	१४ १०	५ १	१२
१३	१ २७ ४३ २६	१ १६ २४ ३३	६ १ ५ २५	२ १७ ४ १०	० ३ २९ १८	३ १३ ३ ४५	० १८ ३३ ४३	३ २१ ५५ १३	२३ १०	१७ २७	४ ३५	१३
१४	१ २८ ४० ४७	२ १ ३५ ४६	६ १ १२ २३	२ १८ ४४ ५०	० ३ ४० २६	३ १४ ० २०	० १८ ४० १३	३ २१ ५२ २	२३ १४	१९ ३१	३ ५०	१४
१५	१ २९ ३८ ८	२ १६ ३५ ५५	६ १ २० ४	२ २० २२ ५८	० ३ ५१ २८	३ १४ ५६ २७	० १८ ४६ ४१	३ २१ ४८ ५२	२३ १७	२० १२	२ ५०	१५
१६	२ ० ३५ २८	३ १ १६ २३	६ १ २८ २७	२ २१ ५८ ३०	० ४ २ २४	३ १५ ५२ ४	० १८ ५३ ५	३ २१ ४५ ४०	२३ १९	१९ २८	१ ४०	१६
१७	२ १ ३२ ४७	३ १५ ३१ २९	६ १ ३७ ३२	२ २३ ३१ २७	० ४ १३ १५	३ १६ ४७ १०	० १८ ५९ २७	३ २१ ४२ ३०	२३ २१	१७ ३१	-० २५	१७
१८	२ २ ३० ५	३ २९ १८ ४८	६ १ ४७ १८	२ २५ १ ४६	० ४ २३ ५९	३ १७ ४१ ४४	० १९ ५ ४५	३ २१ ३९ १९	२३ २३	१४ ३५	+० ५०	१८
१९	२ ३ २७ २२	४ १२ ३८ ४३	६ १ ५७ ४४	२ २६ २९ २८	० ४ ३४ ३७	३ १८ ३५ ४६	० १९ १२ ०	३ २१ ३६ ८	२३ २५	१० ५८	१ ५९	१९
२०	२ ४ २४ ३९	४ २५ ३३ ४४	६ २ ८ ४९	२ २७ ५४ २९	० ४ ४५ ८	३ १९ २९ १२	० १९ १८ ११	३ २१ ३२ ५७	२३ २६	६ ५७	३ ०	२०
२१	२ ५ २१ ५४	५ ८ ७ ४०	६ २ २० ३३	२ २९ १६ ४८	० ४ ५५ २४	३ २० २२ ४	० १९ २४ १९	३ २१ २९ ४७	२३ २६	+२ ४४	३ ५०	२१
२२	२ ६ १९ ९	५ २० २४ ५४	६ २ ३२ ५५	३ ० ३६ २३	० ५ ५ ५३	३ २१ १४ १८	० १९ ३० २४	३ २१ २६ ३६	२३ २६	-१ २९	४ २९	२२
२३	२ ७ १६ २४	६ २ २९ ५७	६ २ ४५ ५४	३ १ ५३ ११	० ५ १६ ५	३ २२ ५ ५५	० १९ ३६ २५	३ २१ २३ २५	२३ २६	५ ३५	४ ५५	२३
२४	२ ८ १३ ३८	६ १४ २७ २	६ २ ५९ ३०	३ ३ ७ ९	० ५ २६ ११	३ २२ ५६ ५१	० १९ ४२ २३	३ २१ २० १४	२३ २५	९ २५	५ ८	२४
२५	२ ९ १० ५१	६ २६ १९ ५५	६ ३ १३ ४२	३ ४ १८ १४	० ५ ३६ १०	३ २३ ४७ ६	० १९.४८ १७	३ २१ १७ ३	२३ २४	१२ ३१	५ ७	२५
२६	२ १० ८ ३	७ ८ ११ ४९	६ ३ २८ २८	३ ५ २६ २२	० ५ ४६ २	३ २४ ३६ ३९	० १९ ५४ ८	३ २१ १३ ५३	२३ २३	१५ ४६	४ ५३	२६
२७	२ ११ ५ १५	७ २० ५ २०	६ ३ ४३ ४९	३ ६ ३१ २८	० ५ ५५ ४८	३ २५ २५ २८	० १९ ५९ ५५	३ २१ १० ४२	२३ २१	१८ ३	४ २७	२७
२८	२ १२ २ २७	८ २ २ ३६	६ ३ ५९ ४४	३ ७ ३३ २९	० ६ ५ २६	३ २६ १३ ३०	० २० ५ ३८	३ २१ ७ ३१	२३ १९	१९ ३४	३ ४९	२८
२९	२ १२ ५९ ३९	८ १४ ५ १९	६ ४ १६ [illegible]	३ ८ ३२ १८	० ६ १४ १७	३ २७ ० ४५	० २० ११ १७	३ २१ ४ २०	२३ १६	२० १२	३ ०	२९
३०	२ १३ ५६ ५०	८ २६ १५ ३	६ ४ ३३ ११	३ ९ २७ ५०	० ६ २४ ५२	३ २७ ४७ ११	० २० १६ ५२	३ २१ १ १०	+२३ १२	-१९ ५५	+२ ३	३०

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा.स्टैं.टा.) (१ जुलाई '९९को अयनांश २३°/५०′/ ५८″)

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
१९९९ ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	१९९९ई.
जुला. १	२ १४ ५४ १	९ ८ ३३ १८	६ ४ ५० ४२	३ १० १९ ५९	० ६ ३३ ३९	३ २८ ३२ ४७	० २० २२ २४	३ २० ५८ ०	+२३ ९	-११ ४०	+० ५९	जुला.१
२	२ १५ ५१ १२	९ २१ १ ४२	६ ५ ८ ४५	३ ११ ८ ३९	० ६ ४२ ४८	३ २९ १७ २८	० २० २७ ५१	३ २० ५४ ४९	२३ ५	१६ ३१	-० ९	२
३	२ १६ ४८ २३	१० ३ ४२ १०	६ ५ २७ १८	३ ११ ५३ ४२	० ६ ५१ ५१	४ ० १ १५	० २० ३३ १५	३ २० ५१ ३८	२३ १	१३ ३२	१ १८	३
४	२ १७ ४५ ३५	१० १४ ३६ ५०	६ ५ ४६ ५	३ १२ ३५ १	० ७ ० ४५	४ ० ४४ ३	० २० ३८ ३४	३ २० ४८ २८	२२ ५६	९ ५२	२ २४	४
५	२ १८ ४२ ४६	१० २९ ४७ ५६	६ ६ ५ ५३	३ १३ १२ २९	० ७ ९ ३२	४ १ २५ ५७	० २० ४३ ४९	३ २० ४५ १७	२२ ५१	५ ३८	३ २३	५
६	२ १९ ३९ ५८	११ १३ ७ ३१	६ ६ २५ ५४	३ १३ ४५ ५९	० ७ १८ १२	४ २ ६ ४७	० २० ४९ ०	३ २० ४२ ६	२२ ४५	-१ ३	४ १३	६
७	२ २० ३७ १०	११ २७ ७ ०	६ ६ ४६ २४	३ १४ १५ २२	० ७ २६ ४३	४ २ ४६ ३३	० २० ५४ ७	३ २० ३८ ५५	२२ ३९	+३ ४२	४ ५०	७
८	२ २१ ३४ २२	० ११ १६ ३३	६ ७ ७ २१	३ १४ ४० ३०	० ७ ३५ ६	४ ३ २५ १५	० २० ५९ ९	३ २० ३५ ४५	२२ ३३	८ २१	५ १०	८
९	२ २२ ३१ ३५	० २५ ४४ ३५	६ ७ २८ ४६	३ १५ १ १६	० ७ ४३ २२	४ ४ २ ४९	० २१ ४ ७	३ २० ३२ ३४	२२ २६	१२ ३८	५ १३	९
१०	२ २३ २८ ४८	१ १० ७ २०	६ ७ ५० ३९	३ १५ १७ ३४	० ७ ५१ २९	४ ४ ३९ ११	० २१ ९ १	३ २० २९ २३	२२ १९	१६ १३	४ ५३	१०
११	२ २४ २६ २	१ २५ १८ ५३	६ ८ १२ ५८	३ १५ २९ १७	० ७ ५९ २७	४ ५ १४ २१	० २१ १३ ५०	३ २० २६ १२	२२ ११	१८ ४७	४ १४	११
१२	२ २५ २३ १६	२ १० ११ ४३	६ ८ ३५ ४३	३ १५ ३६ १९	० ८ ७ १८	४ ५ ४८ १४	० २१ १८ ३४	३ २० २३ १	२२ ५	२० ५	३ १८	१२
१३	२ २६ २० ३०	२ २४ ५७ ४३	६ ८ ५८ ५४	३ १५ ३८ ३७	० ८ १४ ५९	४ ६ २० ४८	० २१ २३ १४	३ २० १९ ५१	२१ ५५	१९ ५९	२ ९	१३
१४	२ २७ १७ ४४	३ ९ ९ २३	६ ९ २२ ३०	३ १५ ३६ ७	० ८ २२ ३२	४ ६ ५२ ०	० २१ २७ ४९	३ २० १६ ४०	२१ ४७	१८ ३३	-० ५३	१४
१५	२ २८ १४ ५९	३ २३ ४० ५५	६ ९ ४६ ३१	३ १५ २८ ५२	० ८ २९ ५६	४ ७ २१ ४५	० २१ ३२ १९	३ २० १३ २९	२१ ३८	१५ ५९	+० २५	१५
१६	२ २९ १२ १३	४ ७ २८ ४४	६ १० १० ५७	३ १५ १६ ५२	० ८ ३७ १२	४ ७ ५० ३	० २१ ३६ ४४	३ २० १० १८	२१ २८	१२ ३३	१ ३९	१६
१७	३ ० ९ २९	४ २० ५१ ४२	६ १० ३५ ४६	३ १५ ० १३	० ८ ४४ १८	४ ८ १६ ४८	० २१ ४१ ५	३ २० ७ ७	२१ १८	८ ३४	२ ४६	१७
१८	३ १ ६ ४४	५ ३ ३० ४४	६ ११ ० ५९	३ १४ ३९ ५	० ८ ५१ १५	४ ८ ४१ ५६	० २१ ४५ २०	३ २० ३ ५६	२१ ८	+४ १९	३ ४२	१८
१९	३ २ ३ ५९	५ १६ २८ २४	६ ११ २६ ३५	३ १४ १३ ४२	० ८ ५८ ३	४ ९ ५ २५	० २१ ४९ ३१	३ २० ० ४५	२० ५८	-० १	४ २६	१९
२०	३ ३ १ १४	५ २८ ४८ २१	६ ११ ५२ ३५	३ १३ ४४ २०	० ९ ४ ४२	४ ९ २७ १०	० २१ ५३ ३६	३ १९ ५७ ३४	२० ४७	४ १४	४ ५६	२०
२१	३ ३ ५८ ३०	६ १० ५४ ५२	६ १२ १८ ५२	३ १३ ११ २३	० ९ ११ ११	४ ९ ४७ १०	० २१ ५७ ३६	३ १९ ५४ २४	२० ३६	८ १२	५ १३	२१
२२	३ ४ ५५ ४६	६ २२ ५२ २७	६ १२ ४५ ३४	३ १२ ३५ १६	० ९ १७ ३१	४ १० ५ १७	० २२ १ ३२	३ १९ ५१ १३	२० २४	११ ४७	५ १५	२२
२३	३ ५ ५३ २	७ ४ ४५ २९	६ १३ १२ ३६	३ ११ ५६ ३२	० ९ २३ ४२	४ १० २१ ३०	० २२ ५ २२	३ १९ ४८ २	२० १२	१४ ५४	५ ४	२३
२४	३ ६ ५० १८	७ १६ ३८ ६	६ १३ ३९ ३९	३ ११ १५ ४५	० ९ २९ ४२	४ १० ३५ ४६	० २२ ९ ६	३ १९ ४४ ५१	२० ०	१७ २३	४ ४१	२४
२५	३ ७ ४७ ३५	७ २८ ३३ ५८	६ १४ ७ ४२	३ १० ३३ ३८	० ९ ३५ ३३	४ १० ४८ १	० २२ १२ ४६	३ १९ ४१ ४०	१९ ४८	१९ ९	४ ४	२५
२६	३ ८ ४४ ५२	८ १० ३६ १३	६ १४ ३५ ४५	३ ९ ५० ५०	० ९ ४१ १५	४ १० ५८ १०	० २२ १६ २०	३ १९ ३८ ३०	१९ ३५	२० ५	३ १७	२६
२७	३ ९ ४२ १०	८ २२ ४७ १९	६ १५ ४ ७	३ ९ ८ ९	० ९ ४६ ४६	४ ११ ६ १०	० २२ १९ ४९	३ १९ ३५ १९	१९ २२	२० ५	२ २१	२७
२८	३ १० ३९ २८	९ ५ ९ १३	६ १५ ३२ ४७	३ ८ २६ १९	० ९ ५२ ७	४ ११ १२ ०	० २२ २३ १२	३ १९ ३२ ८	१९ ८	१९ ७	१ १६	२८
२९	३ ११ ३६ ४८	९ १७ ४३ १५	६ १६ १ ४७	३ ७ ४६ ८	० ९ ५७ १९	४ ११ १५ ३७	० २२ २६ ३०	३ १९ २८ ५७	१८ ५४	१७ १२	+० ८	२९
३०	३ १२ ३४ ८	१० ० ३० १८	६ १६ ३१ ५	३ ७ ८ १९	० १० २ २०	४ ११ १६ ५५	० २२ २९ ४३	३ १९ २५ ४७	१८ ४०	१४ २४	-१ ३	३०
३१	३ १३ ३२ २८	१० १३ १० ५०	६ १७ ० ४०	३ ६ ३३ ३८	० १० ७ ११	४ ११ २५ ५५	० २२ ३२ ५०	३ १९ २२ ३६	+१८ २५	-१० ५८	-२ ११	३१

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा.स्टैं.टा.) (१अगस्त '९९ई. को अयनांश २३°/५०'/ २")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
१९९९ई.	रा.अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	१९९९ ई.
अग. १	३ १४ २८ ५०	१० २६ २४ ४	६ १७ ३० ३४	३ ६ २ ४४	० १० ११ ५१	४ ११ १२ ३५	० २२ ३५ ५१	३ १९ १९ २५	+१८ ११	-६ ४२	-३ १४	अग. १
२	३ १५ २६ १२	११ १० १२ ५९	६ १८ ० ४४	३ ५ ३६ १५	० १० १६ २१	४ ११ ६ ५३	० २२ ३८ ४७	३ १९ १६ १४	१७ ५६	२ १०	४ ७	२
३	३ १६ २३ ३७	११ २३ ५४ १८	६ १८ ३१ १२	३ ५ १४ ४२	० १० २० ४१	४ १० ५८ ४८	० २२ ४१ ३७	३ १९ १३ ४	१७ ४०	+२ ३२	४ ४७	३
४	३ १७ २१ १	० ७ ४८ २७	६ १९ १ ५७	३ ४ ५८ ३७	० १० २४ ४९	४ १० ४८ २१	० २२ ४४ २१	३ १९ ९ ५३	१७ २५	७ ११	५ ११	४
५	३ १८ १८ २७	० २१ ५४ २२	६ १९ ३२ ५८	३ ४ ४८ २०	० १० २८ ४७	४ १० ३५ ३३	० २२ ४६ ५९	३ १९ ६ ४२	१७ ९	११ ३०	५ १७	५
६	३ १९ १५ ५५	१ ६ १० १६	६ २० ४ १५	३ ४ ४४ १४	० १० ३२ ३४	४ १० २० २३	० २२ ४९ ३२	३ १९ ३ ३१	१६ ५३	१५ १३	५ ३	६
७	३ २० १३ २४	१ २० ३३ ३४	६ २० ३५ ४९	३ ४ ४६ ३२	० १० ३८ १०	४ १० २ ५५	० २२ ५१ ५९	३ १९ ० २०	१६ ३६	१८ ३	४ ३१	७
८	३ २१ १० ५४	२ ५ ० ४२	६ २१ ७ ३९	३ ४ ५५ २८	० १० ३९ ३५	४ ९ ४३ ११	० २२ ५४ १९	३ १८ ५७ १०	१६ २०	१९ ४५	३ ४१	८
९	३ २२ ८ २५	२ १९ २७ १९	६ २१ ३९ ४५	३ ५ ११ ८	० १० ४२ ४९	४ ९ २१ १६	० २२ ५६ ३४	३ १८ ५३ ५९	१६ ३	२० १०	२ ३७	९
१०	३ २३ ५ ५८	३ ३ २८ ३१	६ २२ १२ ६	३ ५ ३३ ३७	० १० ४५ ५२	४ ८ ५७ १४	० २२ ५८ ४३	३ १८ ५० ४८	१५ ४५	१९ १५	१ २४	१०
११	३ २४ ३ ३१	३ १७ ५९ २५	६ २२ ४४ ४३	३ ६ २ ५७	० १० ४८ ४३	४ ८ ३१ ९	० २३ ० ४६	३ १८ ४७ ३७	१५ २८	१७ ८	-० ६	११
१२	३ २५ १ ६	४ १ ५५ ३८	६ २३ १७ ३५	३ ६ ३९ ५	० १० ५१ २३	४ ८ ३ ११	० २३ २ ४२	३ १८ ४४ २६	१५ १०	१४ २	+१ १०	१२
१३	३ २५ ५८ ४२	४ १५ ३३ ४७	६ २३ ५० ४२	३ ७ २२ १	० १० ५३ ५१	४ ७ ३३ २६	० २३ ४ ३३	३ १८ ४१ १६	१४ ३२	१० १३	२ २१	१३
१४	३ २६ ५६ १९	४ २८ ५१ ५६	६ २४ २४ ३	३ ८ ११ ३४	० १० ५६ ८	४ ७ २ ३	० २३ ६ १७	३ १८ ३८ ५	१४ ३४	६ ०	३ २३	१४
१५	३ २७ ५३ ५७	५ ११ ४९ ३९	६ २४ ५७ ३९	३ ९ ७ ४१	० १० ५८ १३	४ ६ २९ १२	० २३ ७ ५५	३ १८ ३४ ५४	१४ १५	+१ ३६	४ १२	१५
१६	३ २८ ५१ ३६	५ २४ २८ १	६ २५ ३१ २९	३ १० १० ६	० ११ ० ६	४ ५ ५५ ३	० २३ ९ २७	३ १८ ३१ ४४	१३ ५७	-२ ४४	४ ४८	१६
१७	३ २९ ४९ १७	६ ६ ४९ २३	६ २६ ५ ३३	३ ११ १८ ४४	० ११ १ ४८	४ ५ १९ ५१	० २३ १० ५३	३ १८ २८ ३३	१३ ३८	६ ५२	५ ९	१७
१८	४ ० ४६ ५८	६ १८ ५७ ९	६ २६ ३९ ५०	३ १२ ३३ ११	० ११ ३ १८	४ ४ ४३ ४६	० २३ १२ १२	३ १८ २५ २२	१३ १९	१० ३९	५ १०	१८
१९	४ १ ४४ ४०	७ ० ५५ २६	६ २७ १४ २१	३ १३ ५३ २१	० ११ ४ ३६	४ ४ ७ १	० २३ १३ २६	३ १८ २२ ११	१२ ५९	१३ ५७	५ १६	१९
२०	४ २ ४२ २३	७ १२ ४८ ४३	६ २७ ४९ ५	३ १५ १८ ४३	० ११ ५ ४३	४ ३ २९ ५२	० २३ १४ ३३	३ १८ १९ ०	१२ ४०	१६ ४०	४ ५०	२०
२१	४ ३ ४० ८	७ २४ ४१ ४२	६ २८ २४ १	३ १६ ४९ ९	० ११ ६ ३७	४ २ ५२ ३३	० २३ १५ ३३	३ ९८ १५ ५०	१२ २०	१८ ४०	४ १७	२१
२२	४ ४ ३७ ५४	८ ६ ३८ ५६	६ २८ ५९ १०	३ १८ २४ ३	० ११ ७ २०	४ २ १५ १७	० २३ १६ २८	३ १८ १२ ३९	१२ ०	१९ ५३	३ ३४	२२
२३	४ ५ ३५ ४०	८ १८ ४४ ३८	६ २९ ३४ ३१	३ २० ३ १४	० ११ ७ ५१	४ १ ३८ २०	० २३ १७ १६	३ १८ ९ २८	११ ४०	२० ११	२ ४०	२३
२४	४ ६ ३३ २८	९ १ २ ३०	७ ० १० ५	३ २१ ४६ ३	० ११ ८ १०	४ १ १ ५६	० २३ १७ ५७	३ १८ ६ १७	११ २०	१९ ३२	१ ३८	२४
२५	४ ७ ३१ १७	९ १३ ३५ २४	७ ० ४५ ५०	३ २३ ३२ १६	० ११ ८ १७	४ ० २६ १८	० २३ १८ ३३	३ १८ ३ ६	१० ५९	१७ ५५	+० ३०	२५
२६	४ ८ २९ ८	९ २६ २५ १३	७ १ २१ ४७	३ २५ २१ १५	० ११ ८ १३	३ २९ ५१ ४१	० २३ १९ २	३ १७ ५९ ५६	१० ३९	१५ २२	-० ४०	२६
२७	४ ९ २७ १	१० ९ ३२ ४३	७ १ ५७ ५६	३ २७ १२ ४३	० ११ ७ ५६	३ २९ १८ १८	० २३ १९ २४	३ १७ ५६ ४५	१० १८	११ ५८	१ ५०	२७
२८	४ १० २४ ५४	१० २३ ५७ २५	७ २ ३४ १६	३ २९ ६ ७	० ११ ७ २७	३ २८ ४६ १९	० २३ १९ ४०	३ १७ ५३ ३४	९ ५७	७ ५४	२ ५६	२८
२९	४ ११ २२ ४९	११ ६ ३७ ४१	७ ३ १० ४६	४ १ १ ८	० ११ ६ ४७	३ २८ १५ ५६	० २३ १९ ५०	३ १७ ५० २३	९ ३६	-३ २२	३ ५२	२९
३०	४ १२ २० ४६	११ २० ३० ५५	७ ३ ४७ ३९	४ २ ५७ १८	० ११ ५ ५४	३ २७ ४७ १९	० २३ १९ ५४	३ १७ ४७ १३	९ १४	+१ २३	४ ३६	३०
३१	४ १३ १८ ४५	० ४ ३३ ५७	७ ४ २४ २१	४ ४ ५४ १९	० ११ ४ ४९	३ २७ २० ३७	० २३ १९ ५१	३ १७ ४४ २	+८ ५३	+४ १०	-५ ४	३१

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा.स्टैं.टा.) (१ सितम्बर '९९ई. को अयनांश २३°/५०'/ ६'')

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
१९९९ई.	रा.अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	१९९९ई.
सितं. १	४ १४ १६ ४६	० १८ २३ २३	७ ५ १ २५	४ ६ ५१ ५०	० ११ ३ ३३	३ २६ ५५ ५८	० २३ १९ ४२	३ १७ ४० ५२	+८ ३१	+१० ३७	-५ १४	सितं. १
२	४ १५ १४ ४८	१ २ ५५ ५९	७ ५ ३८ ४०	४ ८ ४९ ३४	० ११ २ ४	३ २६ ३३ २७	० २३ १९ २६	३ १७ ३७ ४१	८ १०	१४ ३०	५ ४	२
३	४ १६ १२ ५२	१ १७ ८ ५७	७ ६ १६ ५	४ १० ४७ १७	० ११ ० २४	३ २६ १३ ९	० २३ १९ ४	३ १७ ३४ ३०	७ ४८	१७ ३२	४ ३६	३
४	४ १७ १० ५९	२ १ १९ ५७	७ ६ ५३ ४०	४ १२ ४४ ४३	० १० ५८ ३१	३ २५ ५५ १२	० २३ १८ ३६	३ १७ ३१ १९	७ २६	१९ ३०	३ ५२	४
५	४ १८ ९ ७	२ १५ २७ ३	७ ७ ३१ २६	४ १४ ४१ ४६	० १० ५६ २७	३ २५ ३९ ३५	० २३ १८ १	३ १७ २८ ९	७ ४	२० १४	२ ५३	५
६	४ १९ ७ १८	२ २९ २८ २७	७ ८ ९ २३	४ १६ ३८ ११	० १० ५४ १०	३ २५ २६ २१	० २३ १७ २०	३ १७ २४ ५८	६ ४१	१९ ४२	१ ४४	६
७	४ २० ५ ३०	३ १३ २२ २३	७ ८ ४७ २९	४ १८ ३३ ५६	० १० ५१ ४२	३ २५ १५ ३२	० २३ १६ ३२	३ १७ २१ ४७	६ १९	१७ ५९	-० ३०	७
८	४ २१ ३ ४५	३ २७ ६ ५५	७ ९ २५ ४६	४ २० २८ ४९	० १० ४९ २	३ २५ ७ ९	० २३ १५ ३८	३ १७ १८ ३७	५ ५७	१५ १३	+० ४५	८
९	४ २२ २ १	४ १० ४० ४	७ १० ४ १३	४ २२ २२ ५१	० १० ४६ ११	३ २५ १ १०	० २३ १४ ३८	३ १७ १५ २६	५ ३४	११ ३९	१ ५६	९
१०	४ २३ ० १९	४ २३ ५९ ५२	७ १०·४२ ४९	४ २४ १५ ५२	० १० ४३ ७	३ २४ ५७ ३४	० २३ १३ ३१	३ १७ १२ १५	५ ११	७ ३४	३ ०	१०
११	४ २३ ५८ ३८	५ ७ ४ ४७	७ ११ २१ ३६	४ २६ ७ ५५	० १० ३९ ५२	३ २४ ५६ २१	० २३ १२ १८	३ १७ ९ ४	४ ४९	+३ ११	३ ५२	११
१२	४ २४ ५७ ०	५ १९ ५३ ५५	७ १२ ० ३२	४ २७ ५८ ५४	० १० ३६ २६	३ २४ ५७ २८	० २३ १० ५९	३ १७ ५ ५३	४ २६	-१ १४	४ ३२	१२
१३	४ २५ ५५ २३	६ २ २७ २१	७ १२ ३९ ३७	४ २९ ४८ ५०	० १० ३२ ४९	३ २५ ० ५४	० २३ ९ ३४	३ १७ २ ४३	४ ३	५ ३१	४ ५८	१३
१४	४ २६ ५३ ४८	६ १४ ४६ ११	७ १३ १८ ५१	५ १ ३७ ४१	० १० २९ ०	३ २५ ६ ३५	० २३ ८ २	३ १६ ५९ ३२	३ ४०	९ २९	५ ९	१४
१५	४ २७ ५२ १५	६ २६ ५२ ५८	७ १३ ५८ १५	५ ३ २५ २७	० १० २५ ०	३ २५ १४ २९	० २३ ६ २५	३ १६ ५६ २१	३ १७	१३ ०	५ ७	१५
१६	४ २८ ५० ४३	७ ८ ४९ ५५	७ १४ ३७ ४७	५ ५ १२ ७	० १० २० ४९	३ २५ २४ ३३	० २३ ४ ४१	३ १६ ५३ १०	२ ४९	१५ ५७	४ ५०	१६
१७	४ २९ ४९ १३	७ २० ४२ ४	७ १५ १७ २८	५ ६ ५७ ४३	० १० १६ २८	३ २५ ३६ ४४	० २३ २ ५१	३ १६ ५० ०	२ ३१	१८ १२	४ २२	१७
१८	५ ० ४७ ४४	८ २ ३३ ४१	७ १५ ५७ १८	५ ८ ४२ १४	० १० ११ ५६	३ २५ ५० ५७	० २३ ० ५५	३ १६ ४६ ४९	२ ८	१९ ४१	३ ४२	१८
१९	५ १ ४६ १८	८ १४ २९ ५६	७ १६ ३७ १६	५ १० २५ ४२	० १० ७ १४	३ २६ ७ १९	० २२ ५८ ५३	३ १६ ४३ ३८	१ ४४	२० १८	२ ५३	१९
२०	५ २ ४४ ५३	८ २६ ३५ २३	७ १७ १७ २३	५ १२ ८ ७	० १० २ २१	३ २६ २५ ५८	० २२ ५६ ४६	३ १६ ४० २७	१ २१	२० ०	१ ५५	२०
२१	५ ३ ४३ २९	९ ८ ५५ २२	७ १७ ५७ ३७	५ १३ ४९ ५१	० ९ ५७ १८	३ २६ ४५ २१	० २२ ५४ ३२	३ १६ ३८ १७	० ५८	१८ ४३	+० ५०	२१
२२	५ ४ ४२ ७	९ २१ ३३ ५५	७ १८ ३८ ०	५ १५ २९ ५४	० ९ ५२ ६	३ २७ ७ १९	० २२ ५२ १३	३ १६ ३४ ६	० ३५	१६ ३०	-० १८	२२
२३	५ ५ ४० ४८	१० ४ ३४ ९	७ १९ १८ ३०	५ १७ ९ १७	० ९ ४६ ४३	३ २७ ३० ४८	० २२ ४९ ४८	३ १६ ३० ५५	+० ११	१३ २२	१ २७	२३
२४	५ ६ ३९ ३०	१० १७ ५७ ३५	७ १९ ५९ ८	५ १८ ४७ ४२	० ९ ४१ ११	३ २७ ५६ २२	० २२ ४७ १८	३ १६ २७ ४४	-० १२	९ २९	२ ३३	२४
२५	५ ७ ३८ १३	११ १ २३ ४८	७ २० ३९ ५४	५ २० २५ ९	० ९ ३५ ३०	३ २८ २३ २३	० २२ ४४ ४२	३ १६ २४ ३३	० ३५	५ ०	३ ३२	२५
२६	५ ८ ३६ ५९	११ १५ ५० ९	७ २१ २० ४७	५ २२ १ ४०	० ९ २९ ४०	३ २८ ५२ २	० २२ ४२ १	३ १६ २१ २३	० ५९	-० ९	४ २०	२६
२७	५ ९ ३५ ३९	० ० ११ ५३	७ २२ १ ४७	५ २३ ३७ १५	० ९ २३ ४१	३ २९ २२ १२	० २२ ३९ १४	३ १६ १८ १२	१ २२	+४ ४८	४ ५१	२७
२८	५ १० ३४ ३७	० १४ ४२ ५१	७ २२ ४२ ५५	५ २५ ११ ५५	० ९ १७ ३३	३ २९ ५३ ५५	० २२ ३६ २१	३ १६ १५ २	१ ४६	९ ३२	५ ५	२८
२९	५ ११ ३३ २९	० २९ १६ २२	७ २३ २४ १०	५ २६ ४५ ४१	० ९ ११ १६	४ ० २७ ३	० २२ ३३ २४	३ १६ ११ ५१	२ ९	१३ ४३	५ ०	२९
३०	५ १२ ३२ २३	१ १३ ४६ १६	७ २४ ५ ३२	५ २८ १८ ३४	० ९ ४ ३२	४ १ १ ३५	० २२ ३० २१	३ १६ ८ ४१	-२ ३२	+१७ ४	-४ ३५	३०

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा.स्टैं.टा.) (१ अक्तूबर '९९ई. को अयनांश २३°/५९/ १०'')

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
१९९९ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	१९९९ई.
अक्तू. १	५ १३ ३१ १९	१ २८ ७ ५०	७ २४ ४७ १	५ २९ ५० ३४	० ८ ५८ १९	४ १ ३७ २७	० २२ २७ १३	३ १६ ५ ३०	-२ ५६	+१९ २०	-३ ५३	अक्तू १
२	५ १४ ३० १८	२ १२ १८ १	७ २५ २८ ३८	६ १ २१ ४१	० ८ ५१ ३९	४ २ १४ ३८	० २२ २४ ०	३ १६ २ १९	३ १९	२० २१	२ ५७	२
३	५ १५ २९ २०	२ २६ १५ २८	७ २६ १० २१	६ २ ५१ ५७	० ८ ४४ ५१	४ २ ५३ ३	० २२ २० ४३	३ १५ ५९ ९	३ ४२	२० ६	१ ५१	३
४	५ १६ २८ २३	३ १० ० ३	७ २६ ५२ १२	६ ४ २१ २०	० ८ ३७ ५६	४ ३ ३२ ४०	० २२ १७ २०	३ १५ ५५ ५८	४ ५	१८ ३९	-० ४०	४
५	५ १७ २७ २९	३ २३ ३२ १५	७ २७ ३४ ९	६ ५ ४९ ५१	० ८ ३० ५४	४ ४ १३ २५	० २२ १३ ५२	३ १५ ५२ ४७	४ २८	१६ ८	+० ३२	५
६	५ १८ २६ ३७	४ ६ ३२ ४५	७ २८ १६ १४	६ ७ १७ २९	० ८ २३ ४५	४ ४ ५५ १८	० २२ १० २०	३ १५ ४९ ३६	४ ५१	१२ ४८	१ ४२	६
७	५ १९ २५ ४८	४ २० २ ०	७ २८ ५८ २५	६ ८ ४४ १४	० ८ १६ ३१	४ ५ ३८ १४	० २२ ६ ४३	३ १५ ४६ २६	५ १५	८ ५२	२ ४४	७
८	५ २० २५ ०	५ ३ ० ४	७ २९ ४० ४२	६ १० १० ५	० ८ ९ १०	४ ६ २२ १२	० २२ ३ २	३ १५ ४३ १५	५ ३८	४ ३५	३ ३८	८
९	५ २१ २४ १५	५ १५ ४६ ४६	८ ० २३ ७	६ ११ ३५ १	० ८ १ ४३	४ ७ ७ ८	० २१ ५९ १६	३ १५ ४० ४	६ ०	+० ९	४ १९	९
१०	५ २२ २३ ३२	५ २८ २१ ४८	८ १ ५ ३८	६ १२ ५९ ०	० ७ ५४ ११	४ ७ ५३ २	० २१ ५५ २७	३ १५ ३६ ५३	६ २३	-४ १३	४ ४७	१०
११	५ २३ २२ ५१	६ १० ४५ १०	८ १ ४८ १५	६ १४ २२ १	० ७ ४६ ३४	४ ८ ३९ ५१	० २१ ५१ ३३	३ १५ ३३ ४३	६ ४६	८ २०	५ ०	११
१२	५ २४ २२ ११	६ २३ ५७ १९	८ २ ३० ५९	६ १५ ४४ १	० ७ ३८ ५३	४ ९ २७ ३१	० २१ ४७ ३५	३ १५ ३० ३२	७ ९	१२ ३	५ ०	१२
१३	५ २५ २१ ३४	७ ४ ५९ ३१	८ ३ १३ ४८	६ १७ ४ ५७	० ७ ३१ ७	४ १० १६ ३	० २१ ४३ ३३	३ १५ २७ २१	७ ३१	१५ १४	४ ४६	१३
१४	५ २६ २० ५९	७ १६ ५३ ५७	८ ३ ५६ ४४	६ १८ २४ ४७	० ७ २३ १८	४ ११ ५ २४	० २१ ३९ २८	३ १५ २४ १०	७ ५४	१७ ४६	४ २०	१४
१५	५ २७ २० २५	७ २८ ४३ ४५	८ ४ ३९ ४६	६ १९ ४३ २७	० ७ १५ २५	४ ११ ५५ ३३	० २१ ३५ १९	३ १५ २१ ०	८ १६	१९ ३१	३ ४३	१५
१६	५ २८ १९ ५३	८ १० ३२ ५३	८ ५ २२ ५३	६ २१ ० ५२	० ७ ७ २८	४ १२ ४६ २७	० २१ ३१ ६	३ १५ १७ ४९	८ ३८	२० २६	२ ५६	१६
१७	५ २९ १९ २३	८ २२ २६ ६	८ ६ ६ ६	६ २२ १६ ५८	.० ६ ५९ २९	४ १३ ३८ ४	० २१ २६ ५१	३ १५ १४ ३८	९ ०	२० २६	२ १	१७
१८	६ ० १८ ५५	९ ४ ८ ३७	८ ६ ४९ २५	६ २३ ३१ ३९	० ६ ५१ २८	४ १४ ३० २५	० २१ २२ ३२	३ १५ ११ २७	९ २२	१९ ३०	+१ १	१८
१९	६ १ १८ २९	९ १६ ४५ ५१	८ ७ ३२ ४९	६ २४ ४४ ४९	० ६ ४३ २५	४ १५ २३ २७	० २१ १८ १०	३ १५ ८ १७	९ ४४	१७ ३९	-० ४	१९
२०	६ २ १८ ४	९ २९ २३ ४	८ ८ १६ १८	६ २५ ५६ १९	० ६ ३५ १९	४ १६ १७ ९	० २१ १३ ४५	३ १५ ५ ६	१० ६	१४ ५३	१ ११	२०
२१	६ ३ १७ ४१	१० १२ २४ ४४	८ ८ ५९ ५२	६ २७ ६ १	० ६ २७ १३	४ १७ ११ २९	० २१ ९ १८	३ १५ १ ५५	१० २७	११ १८	२ १५	२१
२२	६ ४ १७ २०	१० २५ ५३ ४९	८ ९ ४३ ३२	६ २८ १३ ४६	० ६ १९ ६	४ १८ ६ २७	० २१ ४ ४७	३ १४ ५८ ४४	१० ४९	७ २	३ १५	२२
२३	६ ५ १७ १	११ ९ ३१ ६	८ १० २७ १६	६ २९ १९ २३	० ६ १० ५८	४ १९ २ १	० २१ ० १५	३ १४ ५५ ३३	११ १०	-२ १६	४ ४	२३
२४	६ ६ १६ ४३	११ २४ १४ २४	८ ११ ११ ५	७ ० २२ ३७	० ६ २ ५०	४ १९ ५८ १०	० २० ५५ ४०	३ १४ ५२ २३	११ ३१	+२ ४६	४ ४०	२४
२५	६ ७ १६ २८	० ८ ५८ २३	८ ११ ५४ ५९	७ १ २३ १६	० ५ ५४ ४२	४ २० ५४ ५२	० २० ५१ ३	३ १४ ४९ १२	११ ५२	७ ४६	४ ५९	२५
२६	६ ८ १६ १४	० २३ ५५ १	८ १२ ३८ ५८	७ २ २१ ३	० ५ ४६ ३५	४ २१ ५२ ९	० २० ४६ २४	३ १४ ४६ १	१२ १३	१२ २२	४ ५७	२६
२७	६ ९ १६ ३	१ ८ ५४ ४६	८ १३ २३ १	७ ३ १५ ३९	० ५ ३८ २९	४ २२ ४९ ५८	० २० ४१ ४३	३ १४ ४२ ५०	१२ ३३	१६ १३	४ ३५	२७
२८	६ १० १५ ५३	१ २३ ४८ २२	८ १४ ७ ९	७ ४ ६ ४३	० ५ ३० २४	४ २३ ४८ १७	० २० ३७ १	३ १४ ३९ ३९	१२ ५३	१८ ५९	३ ५४	२८
२९	६ ११ १५ ४६	२ ८ ८ १७	८ १४ ५१ २२	७ ४ ५३ ५३	० ५ २२ २०	४ २४ ४७ ५	० २० ३२ १६	३ १४ ३६ २८	१३ १४	२० २६	२ ५९	२९
३०	६ १२ १५ ४१	२ २२ ४९ ४१	८ १५ ३५ ३८	७ ५ ३६ ४२	० ५ १४ ११	४ २५ ४६ २४	० २० २७ ३१	३ १४ ३३ १८	१३ ३३	२० ३२	१ ५३	३०
३१	६ १३ १५ ३८	३ ६ ३० ३०	८ १६ २० १	७ ६ १४ ४२	० ५ ६ २०	४ २६ ४६ ११	० २० २२ ४४	३ १४ ३० ७	-१३ ५३	+१९ २०	-० ४१	३१

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि. भा.स्टैं.टा.) (१ नवम्बर ९९ को अयनांश २३°/५०'/ १४")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां	चंद्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
१९९९ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	१९९९ ई.
नवं. १	६ १४ १५ ३७	३ २० १० ५४	८ १७ ४ २८	७ ६ ४७ २०	० ४ ५८ २३	४ २७ ४६ २५	० २० १७ ५६	३ १४ २६ ५६	-१४ १३	+१७ १	+० ३१	१ नवं.
२	६ १५ १५ ३९	४ ३ ३२ ३४	८ १७ ४८ ५७	७ ७ १४ ४	० ४ ५० ३०	४ २८ ४७ ४	० २० १३ ७	३ १४ २३ ४६	१४ ३२	१३ ४९	१ ४०	२
३	६ १६ १५ ४३	४ १६ ५७ ५०	८ १८ ३३ ३२	७ ७ ३४ १४	० ४ ४२ ४०	४ २९ ४८ १०	० २० ८ १७	३ १४ २० ३५	१४ ५१	१० ०	२ ४२	३
४	६ १७ १५ ४८	४ २९ ४९ ६	८ १९ १८ ११	७ ७ ४७ १७	० ४ ३४ ५४	५ ० ४९ ३९	० २० ३ २७	३ १४ १७ २४	१५ १०	५ ४७	३ ३४	४
५	६ १८ १५ ५६	५ १२ २८ २७	८ २० २ ५४	७ ७ ५२ २६	० ४ २७ १२	५ १ ५१ ३३	० १९ ५८ ३६	३ १४ १४ १४	१५ २८	+१ २४	४ १५	५
६	६ १९ १६ ६	५ २४ ५७ २५	८ २० ४७ ४२	७ ७ ४९ १२	० ४ १९ ३५	५ २ ५३ ४८	० १९ ५३ ४५	३ १४ ११ ३	१५ ४७	-३ ०	४ ३४	६
७	६ २० १६ १८	६ ७ १७ ३	८ २१ ३२ ३४	७ ७ ३६ ५१	० ४ १२ ३	५ ३ ५६ २७	० १९ ४८ ५३	३ १४ ७ ५२	१६ ५	७ १३	४ ५८	७
८	६ २१ १६ ३१	६ १९ २८ १४	८ २२ १७ २९	७ ७ १५ ३	० ४ ४ ३६	५ ४ ५९ २७	० १९ ४४ २	३ १४ ४ ४२	१६ २२	११ ६	४ ५८	८
९	६ २२ १६ ४७	७ १ ३१ ३५	८ २३ २ २९	७ ६ ४३ १९	० ३ ५७ १५	५ ६ २ ४७	० १९ ३९ ११	३ १४ १ ३१	१६ ४०	१४ २९	४ ४५	९
१०	६ २३ १७ ४	७ १३ २८ ६	८ २३ ४७ ३२	७ ६ १ ४६	० ३ ५० ०	५ ७ ६ २६	० १९ ३४ २०	३ १३ ५८ २०	१६ ५७	१७ १५	४ २०	१०
११	६ २४ १७ २३	७ २५ १९ १७	८ २४ ३२ ३९	७ ५ १० २७	० ३ ४२ ५१	५ ८ १० २६	० १९ २९ ३०	३ १३ ५५ ९	१७ १४	१९ १७	३ ४३	११
१२	६ २५ १७ ४३	८ ७ ७ २१	८ २५ १७ ५०	७ ४ १० १४	० ३ ३५ ४९	५ ९ १४ ४५	० १९ २४ ४१	३ १३ ५१ ५९	१७ ३१	२० २९	२ ५७	१२
१३	६ २६ १८ ५	८ १८ ५५ १८	८ २६ ३ ४	७ ३ २ ०	० ३ २८ ५४	५ १० १९ २१	० १९ १९ ५३	३ १३ ४८ ४८	१७ ४७	२० ४७	२ ३	१३
१४	६ २७ १८ २८	९ ० ४६ ५९	८ २६ ४८ २२	७ १ ४७ ३५	० ३ २२ ६	५ ११ २४ १४	० १९ १५ ६	३ १३ ४५ ३७	१८ ३	२० ९	१ ४	१४
१५	६ २८ १८ ५३	९ १२ २६ ५९	८ २७ ३३ ४२	७ ० २८ ४३	० ३ १५ २६	५ १२ २९ २६	० १९ १० २०	३ १३ ४२ २६	१८ १९	१८ ३६	+० ०	१५
१६	६ २९ १९ १९	९ २५ ० २५	८ २८ १९ ६	६ २९ ८ ६	० ३ ८ ५३	५ १३ ३४ ५४	० १९ ५ ३५	३ १३ ३९ १६	१८ ३४	१६ ११	-१ ४	१६
१७	७ ० १९ ४६	१० ७ १२ ३९	८ २९ ४ ३३	६ २७ ४८ १०	० ३ २ २९	५ १४ ४० ३८	० १९ ० ५२	३ १३ ३६ ५	१८ ४९	१२ ५८	२ ७	१७
१८	७ १ २० १५	१० २० २८ ४६	८ २९ ५० ३	६ २६ ३१ ३८	० २ ५६ १४	५ १५ ४६ ३७	० १८ ५६ ११	३ १३ ३२ ५४	१९ ४	९ १	३ ६	१८
१९	७ २ २० ४५	११ ३ ३२ ५६	९ ० ३५ ३६	६ २५ २० ५९	० २ ५० ७	५ १६ ५२ ५३	० १८ ५१ ३१	३ १३ २९ ४३	१९ १८	-४ ३१	३ ५६	१९
२०	७ ३ २१ १६	११ १७ ४७ २८	९ १ २१ ११	६ २४ १८ १८	० २ ४४ ९	५ १७ ५९ २३	० १८ ४६ ५४	३ १३ २६ ३३	१९ ३२	+० २३	४ ३५	२०
२१	७ ४ २१ ४९	० २ ११ ५२	९ २ ६ ४९	६ २३ २५ २४	० २ ३८ २१	५ १९ ६ ८	० १८ ४२ १९	३ १३ २३ २२	१९ ४६	५ २६	४ ५८	२१
२२	७ ५ २२ २३	० १७ २ १०	९ २ ५२ ३०	६ २२ ४३ १५	० २ ३२ ४१	५ २० १३ ६	० १८ ३७ ४६	३ १३ २० ११	१९ ५९	१० १८	५ २	२२
२३	७ ६ २२ ५८	१ २ १० ४९	९ ३ ३८ १३	६ २२ १२ ४४	० २ २७ १२	५ २१ २० २०	० १८ ३३ १६	३ १३ १७ ०	२० १२	१४ ३९	४ ४५	२३
२४	७ ७ २३ ३५	१ १७ २७ ३३	९ ४ २३ ५९	६ २१ ५३ ४६	० २ २१ ५२	५ २२ २७ ४७	० १८ २८ ४९	३ १३ १३ ५०	२० २४	१८ ३	४ ७	२४
२५	७ ८ २४ १३	२ २ ४१ १०	९ ५ ९ ४६	६ २१ ४६ २७	० २ १६ ४२	५ २३ ३५ २६	० १८ २४ २४	३ १३ १० ३९	२० ३६	२० ११	३ १२	२५
२६	७ ९ २४ ५३	२ १७·४१ ३१	९ ५ ५५ ३७	६ २१ ४९ ५८	० २ ११ ४२	५ २४ ४३ १९	० १८ २० २	३ १३ ७ २८	२० ४८	२० ५२	२ ५	२६
२७	७ १० २५ ३४	३ २ २१ ५	९ ६ ४१ २९	६ २२ ३·५३	० २ ६ ५३	५ २५ ५१ २४	० १८ १५ ४३	३ १३ ४ १७	२१ ०	२० ५	-० ५०	२७
२८	७ ११ २६ १७	३ १६ ३५ ४४	९ ७ २७ [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३ १३ १ ७	२१ ११	१८ २	+० २६	२८
२९	७ १२ २७ १	४ ० २४ २२	९ ८ १३ २२	६ २२ ५९ १२	० १ ५७ ४७	५ २८ ८ १२	० १८ ७ १५	३ १२ ५७ ५६	२१ २२	१४ ५९	१ ३८	२९
३०	७ १३ २७ ४७	४ १३ ४८ २०	९ ८ ५९ २०	६ २३ ३८ ४८	० १ ५३ ३८	५ २९ १६ ५२	० १८ ३ ६	३ १२ ५४ ४५	-२१ ३२	+११ १३	+२ ४३	३०

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा.स्टैं.टा.) (१ दिसम्बर '९९ को अयनांश २३°/५८/१८'')

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
१९९९ ई.	रा.अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	१९९९ ई.
दिसं. १	७ १४ २८ ३५	४ २६ ५० २१	९ ९ ४५ २२	६ २४ २५ १९	० १ ४९ २४	६ ० २५ ४४	० १७ ५९ १	३ १२ ५१ ३४	-२१ ४२	+७ १	+३ ३७	दिसं. १
२	७ १५ २९ २४	५ ९ ३३ ५२	९ १० ३१ २६	६ २५ १७ ४९	० १ ४५ ३०	६ १ ३४ ४७	० १७ ५५ ०	३ १२ ४८ २३	२१ ५१	+२ ३६	४ १९	२
३	७ १६ ३० १४	५ २२ २ २३	९ ११ १७ ३१	६ २६ १५ ३९	० १ ४१ ४७	६ २ ४४ ०	० १७ ५१ २	३ १२ ४५ १२	२२ ०	-१ ४९	४ ४८	३
४	७ १७ ३१ ६	६ ४ १९ ४	९ १२ ३ ३९	६ २७ १८ ३	० १ ३८ १५	६ ३ ५३ २३	० १७ ४७ ९	३ १२ ४२ २	२२ ९	६ ६	५ ३	४
५	७ १८ ३१ ५९	६ १६ २६ ३६	९ १२ ४९ ४९	६ २८ २४ २९	० १ ३४ ५५	६ ५ २ ५६	० १७ ४३ २०	३ १२ ३८ ५१	२२ १७	१० ५	५ ४	५
६	७ १९ ३२ ५३	६ २८ २७ १०	९ १३ ३६ ०	६ २९ ३४ २३	० १ ३१ ४७	६ ६ १२ ३८	० १७ ३९ ३५	३ १२ ३५ ४०	२२ २४	१३ ५८	४ ५२	६
७	७ २० ३३ ४८	७ १० २२ ३१	९ १४ २२ १३	७ ० ४७ १७	० १ २८ ५१	६ ७ २२ २९	० १७ ३५ ५४	३ १२ ३२ २९	२२ ३२	१६ ३७	४ २७	७
८	७ २१ ३४ ४५	७ २२ १४ ८	९ १५ ८ २८	७ २ २ ४६	० १ २६ ७	६ ८ ३२ २९	० १७ ३२ १८	३ १२ २९ १८	२२ ३८	१८ ५३	३ ५०	८
९	७ २२ ३५ ४३	८ ४ ३ ३४	९ १५ ५४ ४५	७ ३ २० २९	० १ २३ ३६	६ ९ ४२ ३७	० १७ २८ ४७	३ १२ २६ ७	२२ ४५	२० २१	३ ४	९
१०	७ २३ ३६ ४१	८ १५ ५२ ३०	९ १६ ४१ ४	७ ४ ४० ८	० १ २१ १६	६ १० ५२ ५४	० १७ २५ २१	३ १२ २२ ५७	२२ ५१	२० ५६	२ ९	१०
११	७ २४ ३७ ४०	८ २७ ४३ ७	९ १७ २७ २३	७ ६ १ २६	० १ १९ ९	६ १२ ३ १८	० १७ २१ ५९	३ १२ १९ ४६	२२ ५६	२० ३४	१ ९	११
१२	७ २५ ३८ ४०	९ ९ ३८ ७	९ १८ १३ ४४	७ ७ २४ ९	० १ १७ १५	६ १३ १३ ४९	० १७ १८ ४३	३ १२ १६ ३५	२३ १	१९ १८	+० ५	१२
१३	७ २६ ३९ ४१	९ २१ ४० ५३	९ १९ ० ६	७ ८ ४८ ६	० १ १५ ३२	६ १४ २४ २८	० १७ १५ ३२	३ १२ १३ २४	२३ ६	१७ ८	-१ ०	१३
१४	७ २७ ४० ४२	१० ३ ५५ २०	९ १९ ४६ ३०	७ १० १३ ७	० १ १४ ३	६ १५ ३५ १५	० १७ १२ २६	३ १२ १० १४	२३ १०	१४ ११	२ ४	१४
१५	७ २८ ४१ ४३	१० १६ २५ ५४	९ २० ३२ ५४	७ ११ ३९ ४	० १ १२ ४६	६ १६ ४६ ८	० १७ ९ २५	३ १२ ७ ३	२३ १४	१० ३२	३ ३	१५
१६	७ २९ ४२ ४६	१० २९ १७ २	९ २१ १९ २०	७ १३ ५ ४८	० १ ११ ४१	६ १७ ५७ ८	० १७ ६ ३०	३ १२ ३ ५३	२३ १७	६ १८	३ ५४	१६
१७	८ ० ४३ ४८	११ १२ १२ ५०	९ २२ ५ ४६	७ १४ ३३ १५	० १ १० ४९	६ १९ ८ १४	० १७ ३ ४१	३ १२ ० ४२	२३ २०	-१ ४०	४ ३५	१७
१८	८ १ ४४ ५१	११ २६ १६ १९	९ २२ ५२ ४३	७ १६ १ १०	० १ १० १०	६ २० १९ २७	० १७ ० ५७	३ ११ ५७ ३१	२३ २२	+३ १२	५ २	१८
१९	८ २ ४५ ५४	० १० २८ २८	९ २३ ३८ ४१	७ १७ २९ ५४	० १ ९ ४३	६ २१ ३० ४६	० १६ ५८ १८	३ ११ ५४ २०	२३ २४	८ ४	५ ११	१९
२०	८ ३ ४६ ५८	० २५ ७ ३१	९ २४ २५ ९	७ १८ ५८ ५९	० १ ९ २८	६ २२ ४२ ११	० १६ ५५ ४६	३ ११ ५१ ९	२३ २५	१२ ३८	५ १	२०
२१	८ ४ ४८ २	१ १० ८ २२	९ २५ ११ ३८	७ २० २८ ३१	० १ ९ २७	६ २३ ५३ ४३	० १६ ५३ १९	३ ११ ४७ ५८	२३ २६	१६ ३१	४ ३०	२१
२२	८ ५ ४९ ६	१ [illegible] २२ ४९	९ २५ ५८ ७	७ २१ ५८ २६	० १ ९ ३८	६ २५ ५ २०	० १६ ५० ५८	३ ११ ४४ ४७	२३ २६	१९ २१	३ ४०	२२
२३	८ ६ ५० ११	२ १० ४४ २९	९ २६ ४४ ३८	७ २३ २८ ४३	० १ १० १	६ २६ १७ ३	० १६ ४८ ४४	३ ११ ४१ ३६	२३ २६	२० ४८	२ ३४	२३
२४	८ ७ ५१ १७	२ २५ ५० ४१	९ २७ ३१ ७	७ २५ ५९ २१	० १ १० ३७	६ २७ २८ ५१	० १६ ४६ ३५	३ ११ ३८ २५	२३ २६	२० ४३	-१ १७	२४
२५	८ ८ ५२ २३	३ १० ४४ १	९ २८ १७ ३७	७ २६ ३० १८	० १ ११ २५	६ २८ ४० ४६	० १६ ४४ ३२	३ ११ ३५ १४	२३ २५	१९ १०	+० ३	२५
२६	८ ९ ५३ २९	३ २५ १३ ४८	९ २९ ४ ८	७ २८ १ २४	० १ १२ २५	६ २९ ५२ ४५	० १६ ४२ ३५	३ ११ ३२ ३	२३ २३	१६ २४	१ २२	२६
२७	८ १० ५४ ३६	४ ९ १६ ३१	९ २९ ५० ३९	७ २९ ३३ ८	० १ १३ ३८	७ १ ४ ५०	० १६ ४० ४५	३ ११ २८ ५२	२३ २१	१२ ४४	२ ३३	२७
२८	८ ११ ५५ ४३	४ २२ ५१ ३२	१० ० ३७ १०	८ १ ५ ०	० १ १५ ४	७ २ १६ ५९	० १६ ३९ १	३ ११ २५ ४१	२३ १९	८ ३१	३ ३३	२८
२९	८ १२ ५६ ५१	५ ६ ० ३०	१० १ २३ ४२	८ २ ३७ ९	० १ १६ ४१	७ ३ २९ १४	० १६ ३७ २३	३ ११ २२ ३१	२३ १६	+४ २	४ २०	२९
३०	८ १३ ५८ ०	५ १८ ४६ ३३	१० २ १० १४	८ ४ ९ ३७	० १ १८ ३१	७ ४ ४१ ३४	० १६ ३५ ५२	३ ११ १९ २०	२३ १२	-० ३०	४ ५३	३०
३१	८ १४ ५९ ९	६ १ १३ ३८	१० २ ५६ ४६	८ [illegible]	० १ [illegible]	७ [illegible]	० [illegible]	३ ११ १६ ९	-२३ ८	-४ ५३	+५ ११	३१

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा.स्टैं.टा.) (१ जनवरी २०००ई. को अयनांश २३°/५०'/ ३४")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
२०००ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क	२०००ई.
जन. १	८ १६ ० १८	६ १३ २५ ५२	१० ३ ४३ १८	८ ७ १५ २६	० १ २२ ४८	७ ७ ६ २६	० १६ ३३ ८	३ ११ १२ ५८	-२३ ४	-८ ५९	+५ १४	जन.१
२	८ १७ १ २८	६ २५ २७ १८	१० ४ २९ ५०	८ ८ ४८ ४८	० १ २५ १५	७ ८ १८ ५८	० १६ ३१ ५७	३ ११ ९ ४७	२३ ०	१२ ४१	५ ३	२
३	८ १८ २ ३८	७ ७ २१ ३५	१० ५ १६ २३	८ १० २२ ३०	० १ २७ ५३	७ ९ ३१ ३५	० १६ ३० ५१	३ ११ ६ ३६	२२ ५४	१५ ५०	४ ४०	३
४	८ १९ ३ ४८	७ १९ ११ ५४	१० ६ २ ५५	८ १२ ५६ ५१	० १ ३० ४४	७ १० ४४ १५	० १६ २९ ५२	३ ११ ३ २५	२२ ४९	१८ २०	४ ४	४
५	८ २० ४ ५९	८ १ ० ५७	१० ६ ४९ २७	८ १३ ३० ५४	० १ ३३ ४७	७ ११ ५६ ५९	० १६ २९ ०	३ ११ ० १४	२२ ४३	२० २	३ १८	५
६	८ २१ ६ १०	८ १२ ५० ५९	१० ७ ३५ ५९	८ १५ ५ ३७	० १ ३७ १	७ १३ ९ ४६	० १६ २८ १५	३ १० ५७ ४	२२ ३६	२० ५२	२ ३२	६
७	८ २२ ७ २०	८ २४ ४४ २	१० ८ २२ ३१	८ १६ ४० ४३	० १ ४० २८	७ १४ २२ ३७	० १६ २७ ३६	३ १० ५३ ५३	२२ २९	२० ४७	१ २२	७
८	८ २३ ८ ३०	९ ६ ४१ ५६	१० ९ ९ ३	८ १८ १६ ११	० १ ४४ ६	७ १५ ३५ ३१	० १६ २७ ४	३ १० ५० ४३	२२ २१	१९ ४५	+० १७	८
९	८ २४ ९ ४०	९ १८ ४६ ३३	१० ९ ५५ ३४	८ १९ ५२ ४	० १ ४७ ५६	७ १६ ४८ २७	० १६ २६ ३९	३ १० ४७ ३२	२२ १४	१७ ४९	-० ५०	९
१०	८ २५ १० ५०	१० ० ५९ ५८	१० १० ४२ ५	८ २१ २८ २१	० १ ५१ ५७	७ १८ १ २७	० १६ २६ २०	३ १० ४४ २१	२२ ५	१५ २	१ ५५	१०
११	८ २६ १२ ०	१० १३ २४ २९	१० ११ २८ ३५	८ २३ ५ ४	० १ ५६ १०	७ १९ १४ ३०	० १६ २६ ९	३ १० ४१ १०	२१ ५६	११ ३४	२ ५६	११
१२	८ २७·१३ ८	११ २६ २ ४२	१० १२ १५ ५	८ २४ ४२ १३	० २ ० ३५	७ २० २७ ३६	० १६ २६ ४	३ १० ३७ ५९	२१ ४७	७ ३१	३ ४९	१२
१३	८ २८ १४ १७	११ ८ ५७ २४	१० १३ १ ३३	८ २६ १९ ४९	० २ ५ १०	७ २१ ४० ४३	० १६ २६ ६	३ १० ३४ ४९	२१ ३८	-३ ३	४ ३३	१३
१४	८ २९ १५ २५	११ २२ ११ १४	१० १३ ४८ २	८ २७ ५७ ५४	० २ ९ ५७	७ २२ ५३ ५४	० १६ २६ १४	३ १० ३१ ३८	२१ २८	+१ ३९	५ ३	१४
१५	९ ० १६ ३२	० ५ २६ २७	१० १४ ३४ २९	८ २९ ३६ २७	० २ १४ ५५	७ २४ ७ ७	० १६ २६ ३०	३ १० २८ २७	२१ १७	६ २४	५ १७	१५
१६	९ १ १७ ३८	० १९ ४४ १२	१० १५ २० ५५	९ १ १५ ५०	० २ २० ४	७ २५ २० २२	० १६ २६ ५२	३ १० २५ १६	२१ ६	१० ५६	५ १३	१६
१७	९ २ १८ ४४	१ ४ ४ ६	१० १६ ७ २०	९ २ ५५ ३	० २ २५ २३	७ २६ ३३ ३९	० १६ २७ २१	३ १० २२ ५	२० ५५	१४ ५९	४ ५०	१७
१८	९ ३ १९ ४९	१ १८ ४३ ३२	१० १६ ५३ ४५	९ ४ ३५ ७	० २ ३० ५३	७ २७ ४७ ०	० १६ २७ ५७	३ १० १८ ५४	२० ४३	१८ १३	४ ७	१८
१९	९ ४ २० ५३	२ ३ ३७ ३५	१० १७ ४० ८	९ ६ १५ ४१	० २ ३६ ३४	७ २९ ० २२	० १६ २८ ३९	३ १० १५ ४३	२० ३१	२० १७	३ ८	१९
२०	९ ५ २१ ५६	२ १८ ३९ ८	१० १८ २६ ३०	९ ७ ५८ ४६	० २ ४२ २५	८ ० १३ ४६	० १६ २९ २९	३ १० १२ ३३	२० १९	२० ५६	१ ५५	२०
२१	९ ६ २२ ५९	३ ३ ३९ ४३	१० १९ १२ ५०	९ ९ ३८ २२	० २ ४८ २७	८ १ २७ १२	० १६ ३० २३	३ १० ९ २२	२० ६	२० ६	-० ३४	२१
२२	९ ७ २४ १	३ १८ ३० ४२	१० १९ ५९ १०	९ ११ २० २८	० २ ५४ ३८	८ २ ४० ४१	० १६ ३१ २७	३ १० ६ ११	१९ ५३	१७ ५२	+० ४८	२२
२३	९ ८ २५ २	४ ३ ४ २८	१० २० ४५ २८	९ १३ ३ ३	० ३ १ ०	८ ३ ५४ १२	० १६ ३२ ३६	३ १० ३ ०	१९ ३९	१४ ३०	२ ६	२३
२४	९ ९ २६ ३	४ १७ १५ २५	१० २१ ३१ ४५	९ १४ ४६ ७	० ३ ७ ३२	८ ५ ७ ४५	० १६ ३३ ५२	३ ९ ५९ ५०	१९ २५	१० २३	३ १४	२४
२५	९ १० २७ ३	५ १ ० ३०	१० २२ १८ १	९ १६ २९ ३७	० ३ १४ १४	८ ६ २१ २०	० १६ ३५ १३	३ ९ ५६ ३९	१९ ११	५ ५०	४ ८	२५
२६	९ ११ २८ ३	५ १४ १९ ९	१० २३ ४ १५	९ १८ १३ ३२	० ३ २१ ५	८ ७ ३४ ५७	० १६ ३६ ४४	३ ९ ५३ २८	१८ ५६	+१ ९	४ ४७	२६
२७	९ १२ २९ २	५ २७ १२ ५५	१० २३ ५० २९	९ १९ ५७ ४८	० ३ २८ ६	८ ८ ४८ ३६	० १६ ३८ १९	३ ९ ५० १७	१८ ४१	-३ २५	५ १०	२७
२८	९ १३ ३० १	६ ९ ४४ ५४	१० २४ ३६ ४०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३ ९ ४७ ६	१८ २६	७ ४४	५ १८	२८
२९	९ १४ ३० ५९	६ २१ ५९ १०	१० २५ २२ ५१	९ २३ २७ ६	० ३ ४२ ३७	८ ११ १५ ५८	० १६ ४१ ५०	३ ९ ४३ ५६	१८ १०	११ ३७	५ ११	२९
३०	९ १५ ३२ ५६	७ ४ ० १८	१० २६ ९ ०	९ २५ ११ ५८	० ३ ५० ७	८ १२ २९ ४३	० १६ ४३ ४५	३ ९ ४० ४५	१७ ५४	१४ ५८	४ ५०	३०

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा.स्टैं.टा.) (१ फरवरी, '२०००ई. को अयनांश २३°/५१'/२५'')

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
२००० ई.	रा. अ. क. वि.	रा. अ. क. वि.	रा. अ. क. वि.	रा. अ. क. वि.	रा. अ. क. वि.	रा. अ. क. वि.	रा. अ. क. वि.	रा. अ. क. वि.	अ. क.	अ. क.	अ. क.	२०००ई.
फर. १	९ १७ ३३ ४८	७ २७ ४१ ३६	१० २७ ४१ १५	९ २८ ४१ २९	० ४ ५ ३३	८ १४ ५७ १५	० १६ ४७ ५५	३ ९ ३४ २३	-१७ २१	-१९ ३७	+३ ३४	फर.१
२	९ १८ ३४ ४४	८ ९ ३० २०	१० २८ २७ २०	१० ० २५ ४८	० ४ १३ ३०	८ १६ ११ ३	० १६ ५० १०	३ ९ ३१ १२	१७ ४	२० ४३	२ ४१	२
३	९ १९ ३५ ३८	८ २१ २२ ४४	१० २९ १३ २३	१० २ ९ ३४	० ४ २१ ३६	८ १७ २४ ५३	० १६ ५२ ३१	३ ९ २८ २	१६ ४७	२० ५४	१ ४१	३
४	९ २० ३६ ३१	९ ३ २१ ४३	१० २९ ५९ २५	१० ३ ५२ ३१	० ४ २९ ५१	८ १८ ३८ ४४	० १६ ५४ ५८	३ ९ २४ ५१	१६ ३०	२० ७	+० ३६	४
५	९ २१ ३७ २३	९ १५ २९ ३९	११ ० ४५ २५	१० ५ ३४ २२	० ४ ३८ १५	८ १९ ५२ ३६	० १६ ५७ ३१	३ ९ २१ ४०	१६ १२	१८ २५	-० ३१	५
६	९ २२ ३८ १४	९ २७ ४८ १७	११ १ ३१ २४	१० ७ १४ ४७	० ४ ४६ ४६	८ २१ ६ २९	० १७ ० ११	३ ९ १८ २९	१५ ५४	१५ ५०	१ ३८	६
७	९ २३ ३९ ४	१० १० १८ ५१	११ २ १७ २१	१० ८ ५३ २२	० ४ ५५ २७	८ २२ २० २३	० १७ २ ५७	३ ९ १५ १९	१५ ३५	१२ २८	२ ४१	७
८	९ २४ ३९ ५३	१० २३ २ ८	११ ३ ३ १६	१० १० २९ ४२	० ५ ४ १६	८ २३ ३४ १८	० १७ ५ ५०	३ ९ १२ ८	१५ १७	८ ३०	३ ३७	८
९	९ २५ ४० ४०	११ ५ ५८ ४३	११ ३ ४९ १०	१० १२ ३ १३	० ५ १३ १३	८ २४ ४८ १४	० १७ ८ ४८	३ ९ ८ ५७	१४ ५८	-४ ५	४ २३	९
१०	९ २६ ४१ २६	११ १९ ८ ५८	११ ४ ३५ १	१० १३ ३३ २९	० ५ २२ १८	८ २६ २ १०	० १७ ११ ५२	३ ९ ५ ४६	१४ ३८	+० ३६	४ ५६	१०
११	९ २७ ४२ १०	० २ ३३ ९	११ ५ २० ५१	१० १४ ५९ ४५	० ५ ३१ ३१	८ २७ १६ ७	० १७ १५ ३	३ ९ २ ३५	१४ १९	५ १९	५ १३	११
१२	९ २८ ४२ ५३	० १६ ११ २८	११ ६ ६ ३८	१० १६ २१ ३२	० ५ ४० ५१	८ २८ ३० ५	० १७ १८ १९	३ ८ ५९ २५	१३ ५९	९ ५२	५ १४	१२
१३	९ २९ ४३ ३४	१ ० ३ ५१	११ ६ ५२ २४	१० १७ ३७ ५८	० ५ ५० २०	८ २९ ४४ ३	० १७ २१ ४२	३ ८ ५६ १४	१३ ४०	१३ ५८	४ ५६	१३
१४	१० ० ४४ १३	१ १४ ९ ४९	११ ७ ३८ ७	१० १८ ४८ ३२	० ५ ५९ ५६	९ ० ५८ २	० १७ २५ १०	३ ८ ५३ ३	१३ १९	१७ २१	४ २१	१४
१५	१० १ ४४ ५१	१ २८ २८ ०	११ ८ २३ ४८	१० १९ ५२ १७	० ६ ९ ३९	९ २ १२ २	० १७ २८ ४४	३ ८ ४९ ५३	१२ ५९	१९ ४५	३ २८	१५
१६	१० २ ४५ २६	२ १२ ५६ २	११ ९ ९ २७	१० २० ४८ ४५	० ६ १९ २९	९ ३ २६ २	० १७ ३२ २३	३ ८ ४६ ४२	१२ ३९	२० ५३	२ २३	१६
१७	१० ३ ४६ १	२ २७ ३० १६	११ ९ ५५ ३	१० २१ ३६ ५९	० ६ २९ २७	९ ४ ४० २	० १७ ३६ ८	३ ८ ४३ ३१	१२ १८	२० ३८	-१ ७	१७
१८	१० ४ ४६ ३३	३ १२ ५ ४८	११ १० ४० ३७	१० २२ १६ ३६	० ६ ३९ ३२	९ ५ ५४ ३	० १७ ३९ ५९	३ ८ ४० २०	११ ५६	१८ ५९	+२ १३	१८
१९	१० ५ ४७ ४	३ २६ ३६ ५०	११ ११ २६ ९	१० २२ ४६ ४९	० ६ ४९ ४४	९ ७ ८ ५	० १७ ४३ ५६	३ ८ ३७ १०	११ ३६	१६ ७	१ ३१	१९
२०	१० ६ ४७ ३३	४ १० ५७ १९	११ १२ ११ ३९	१० २३ ७ २५	० ७ ० २	९ ८ २२ ८	० १७ ४७ ५७	३ ८ ३३ ५९	११ १५	१२ १७	२ ४३	२०
२१	१० ७ ४८ १	४ २५ १ ४४	११ १२ ५७ ६	१० २३ १७ ५४	० ७ १० २७	९ ९ ३६ ११	० १७ ५२ ५	३ ८ ३० ४९	१० ५३	७ ४९	३ ४३	२१
२२	१० ८ ४८ २७	५ ८ ४५ ४९	११ १३ ४२ ३१	१० २३ १८ १६	० ७ २० ५९	९ १० ५० १४	० १७ ५६ १७	३ ८ २७ ३८	१० ३१	+३ ४	४ २९	२२
२३	१० ९ ४८ ५२	५ २२ ७ १२	११ १४ २७ ५४	१० २३ ८ २९	० ७ ३१ ३७	९ १२ ४ १९	० १८ ० ३५	३ ८ २४ २७	१० १०	-१ ४१	४ ५९	२३
२४	१० १० ४९ १६	६ ५ ५ २७	११ १५ १३ १४	१० २२ ४८ ५३	० ७ ४२ २२	९ १३ १८ २४	० १८ ४ ५८	३ ८ २१ १६	९ ४८	६ १४	५ १२	२४
२५	१० ११ ४९ ३७	६ १७ ४२ २	११ १५ ५८ ३३	१० २२ १९ ५७	० ७ ५३ १३	९ १४ ३२ २९	० १८ ९ २६	३ ८ १८ ६	९ २६	१० २३	५ १०	२५
२६	१० १२ ४९ ५८	६ २९ ५९ ५८	११ १६ ४३ ४८	१० २१ ४२ २४	० ८ ४ १०	९ १५ ४६ ३५	० १८ १३ ५९	३ ८ १४ ५५	९ ३	१४ ०	४ ५३	२६
२७	१० १३ ५० १७	७ १२ ३ २०	११ १७ २९ २	१० २० ५७ १५	० ८ १५ १३	९ १७ ० ४२	० १८ १८ ३८	३ ८ ११ ४४	८ ४१	१९ ५८	४ २३	२७
२८	१० १४ ५० ३५	७ २३ ५६ ५८	११ १८ १४ १३	१० २० ५ ३७	० ८ २६ २३	९ १८ १४ ४९	० १८ २३ २१	३ ८ ८ ३३	८ १८	१९ ११	३ ४३	२८
२९	१० १५ ५० ५१	८ ५ ५५ ५८	११ १८ ५९ २२	१० १९ ८ ५७	० ८ ३७ ३८	९ १९ २८ ५६	० १८ २८ १०	३ ८ ५ २२	-७ ५६	-२० ३३	+२ ५३	२९

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा.स्टैं.टा.) (१ मार्च २०००ई. को अयनांश २३°/५१'/ २९'')

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां	तारीख	चन्द्रशर
२०००ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	२०००ई.
मार्च १	१० १६ ५१ ६	८ १७ ३५ २५	११ १९ ४४ २९	१० १८ ८ ३५	० ८ ४८ ५९	९ २० ४३ ४	० १८ ३३ ३	३ ८ २ ११	-७ ३३	-२१ १	+१ ५६	मार्च १
२	१० १७ ५१ १९	८ २९ ३० ७	११ २० २९ ३३	१० १७ ६ १२	० ९ ० २५	९ २१ ५७ १२	० १८ ३८ १	३ ७ ५९ ०	७ १०	२० ३२	+० ५४	२
३	१० १८ ५१ ३०	९ ११ ३४ १८	११ २१ १४ ३५	१० १६ ३ ११	० ९ ११ ५८	९ २३ ११ २०	० १८ ४३ ४	३ ७ ५५ ५०	६ ४७	१९ ६	-० १२	३
४	१० १९ ५१ ४०	९ २३ ५१ २६	११ २१ ५९ ३४	१० १५ १ ९	० ९ २३ ३५	९ २४ २५ २९	० १८ ४८ ११	३ ७ ५२ ३९	६ २४	१६ ४६	१ १८	४
५	१० २० ५१ ४८	१० ६ ३ ५८	११ २२ ४४ ३१	१० १४ १ १८	० ९ ३५ १८	९ २५ ३९ ३७	० १८ ५३ २४	३ ७ ४९ २८	६ १	१३ ३५	२ २१	५
६	१० २१ ५१ ५५	१० १९ १३ १०	११ २३ २९ २६	१० १३ ४ ५८	० ९ ४७ ७	९ २६ ५३ ४६	० १८ ५८ ४०	३ ७ ४६ १७	५ ३८	९ ४३	३ १९	६
७	१० २२ ५१ ५९	११ २ १९ ५	११ २४ १४ १८	१० १२ १३ ०	० ९ ५९ ०	९ २८ ७ ५५	० १९ ४ २	३ ७ ४३ ६	५ १५	५ १८	४ ७	७
८	१० २३ ५२ २	११ १५ ४० ३६	११ २४ ५९ ८	१० ११ २६ २०	० १० १० ५९	९ २९ २२ ४	० १९ ९ २७	३ ७ ३९ ५६	४ ५१	-० ३४	४ ४३	८
९	१० २४ ५२ २	११ २९ १५ ४४	११ २५ ४३ ५५	१० १० ४५ २७	० १० २३ २	१० ० ३६ १२	० १९ १४ ५७	३ ७ ३६ ४५	४ २८	+४ १७	५ ४	९
१०	१० २५ ५२ १	० १३ १ ५५	११ २६ २८ ३९	१० १० १० ५१	० १० ३५ ११	१० १ ५० २१	० १९ २० ३१	३ ७ ३३ ३४	४ ४	८ ५८	५ ७	१०
११	१० २६ ५१ ५७	० २६ ५६ ३३	११ २७ १३ २०	१० ९ ४२ ४२	० १० ४७ २४	१० ३ ४ २९	० १९ २६ १०	३ ७ ३० २३	३ ४१	१३ १५	४ ५३	११
१२	१० २७ ५१ ५२	१ १० ५७ १६	११ २७ ५७ ५९	१० ९ २१ १०	० १० ५९ ४१	१० ४ १८ ३७	० १९ ३१ ५२	३ ७ २७ १२	३ १७	१६ ४९	४ २१	१२
१३	१० २८ ५१ ४४	१ २५ २ १४	११ २८ ४२ ३५	१० ९ ६ १०	० ११ १२ ३	१० ५ ३२ ४५	० १९ ३७ ३९	३ ७ २४ २	२ ५३	१९ २६	३ ३३	१३
१४	१० २९ ५१ ३४	२ ९ ९ ५९	११ २९ २७ ९	१० ८ ५७ ४०	० ११ २४ ३०	१० ६ ४६ ५३	० १९ ४३ २९	३ ७ २० ५१	२ ३०	२० ५२	२ ३२	१४
१५	११ ० ५१ ११	२ २३ १९ १८	० ० ११ ३९	१० ८ ५५ २६	० ११ ३७ ०	१० ८ १ १	० १९ ४९ २४	३ ७ १७ ४०	२ ६	२० ५९	१ २१	१५
१६	११ १ ५१ ६	३ ७ २८ ४५	० ० ५६ ७	१० ८ ५९ १६	० ११ ४९ ३५	१० ९ १५ ८	० १९ ५५ २२	३ ७ १४ २९	१ ४२	१९ ४६	-० ६	१६
१७	११ २ ५० ४९	३ २१ ३६ २७	० १ ४० ३१	१० ९ ८ ५३	० १२ २ १४	१० १० २९ १५	० २० १ २४	३ ७ ११ १८	१ १९	१७ १८	+१ ९	१७
१८	११ ३ ५० ३०	४ ५ ३९ ४६	० २ २४ ५५	१० ९ २४ २	० १२ १४ ५७	१० ११ ४३ २२	० २० ७ ३०	३ ७ ८ ८	० ५५	१३ ४९	२ २०	१८
१९	११ ४ ५० ९	४ १९ ३५ २६	० ३ ९ १२	१० ९ ४४ २४	० १२ २७ ४४	१० १२ ५७ २८	० २० १३ ३९	३ ७ ४ ५७	० ३१	९ ३६	३ २१	१९
२०	११ ५ ४९ ४५	५ ३ १९ ४९	० ३ ५३ २८	१० १० ९ ४३	० १२ ४० ३४	१० १४ ११ ३५	० २० १९ ५२	३ ७ १ ४६	-० ८	४ ५७	४ १०	२०
२१	११ ६ ४९ २०	५ १६ ४९ २९	० ४ ३७ ४२	१० १० ३९ ४२	० १२ ५३ २९	१० १५ २५ ४१	० २० २६ ८	३ ६ ५८ ३५	+० १६	+० ८	४ ४४	२१
२२	११ ७ ४८ ५३	६ ० १ ४८	० ५ २१ ५२	१० ११ १४ ४	० १३ ६ २६	१० १६ ३३ ४८	० २० ३२ २८	३ ६ ५५ २५	० ४०	-४ ३६	५ १	२२
२३	११ ८ ४८ २३	६ १२ ५५ २१	० ६ ६ ०	१० ११ ५२ ३४	० १३ १९ २८	१० १७ ५३ ५४	० २० ३८ ५१	३ ६ ५२ १४	१ ४	९ ०	५ ३	२३
२४	११ ९ ४७ ५२	६ २५ ३० १६	० ६ ५० ४	१० १२ ३४ ५७	० १३ ३२ ३३	१० १९ ८ ०	० २० ४५ १७	३ ६ ४९ ३	१ २७	१२ ५५	४ ५०	२४
२५	११ १० ४७ १९	७ ७ ४८ १३	० ७ ३४ ६	१० १३ २० ५८	० १३ ४५ ४१	१० २० २२ ६	० २० ५१ ४६	३ ६ ४५ ५३	१ ५१	१६ ११	४ २३	२५
२६	११ ११ ४६ ४४	७ १९ ५२ १४	० ८ १८ ६	१० १४ १० २६	० १३ ५८ ३३	१० २१ ३६ १२	० २० ५८ १९	३ ६ ४२ ४२	२ १४	१८ ४३	३ ४५	२६
२७	११ १२ ४६ ८	८ १ २६ २६	० ९ २ २	१० १५ ३ ८	० १४ १२ २	१० २२ ५० १८	० २१ ४ ५५	३ ६ ३९ ३१	२ ३८	२० २४	२ ५८	२७
२८	११ १३ ४५ २९	८ १३ ३५ ४२	० ९ ४५ ५६	१० १५ ५८ ५४	० १४ २५ २५	१० २४ ४ २४	० २१ ११ ३३	३ ६ ३६ २०	३ १	२१ १०	२ ३	२८
२९	११ १४ ४४ ४९	८ २५ २५ २३	० १० २९ ४७	१० १६ ५७ ३३	० १४ ३८ ४६	१० २५ १८ २९	० २१ १८ १५	३ ६ ३३ १०	३ २५	२१ ०	१ ३	२९
३०	११ १५ ४४ ७	९ ७ २० ५६	० ११ २३ ३६	१० १७ ५८ ५६	० १४ ५२ १०	१० २६ ३२ ३५	० २१ २५ ०	३ ६ २९ ५९	३ ४८	१९ ५३	+० ०	३०
३१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१० २७ ४६ ४०	[illegible]	३ ६ २६ ४८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३१

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३०, मि. भा.स्टैं.टा.) (१अप्रैल २०००ई. को अयनांश २३°/५१′/ ३३″)

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चन्द्र शर	तारीख
२००० ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	२०००ई.
अप्रै. १	११ १७ ४२ ३८	१० १ २९ ५९	० १२ ४१ ४	१० २० ९ २१	० १५ १९ ७	१० २९ ० ४३	० २१ ३८ ३७	३ ६ २३ ३७	+४ ३४	-१४ ५६	-२ ६	अप्रै. १
२	११ १८ ४१ ५०	१० १४ ३१ ४४	० १३ २४ ४४	१० २१ १८ ९	० १५ ३२ ४०	११ ० १४ ५०	० २१ ४५ ३०	३ ६ २० २७	४ ५८	११ १६	३ ४	२
३	११ १९ ४१ १	१० २७ ३५ २	० १४ ८ २२	१० २२ २९ १२	० १५ ४६ १५	११ १ २८ ५४	० २१ ५२ २६	३ ६ १७ १६	५ २१	६ ५८	३ ५३	३
४	११ २० ४० १०	११ ११ ० १३	० १४ ५१ ५६	१० २३ ४२ २५	० १५ ५९ ५२	११ २ ४२ ५९	० २१ ५९ २४	३ ६ १४ ५	५ ४४	-२ १३	४ ३१	४
५	११ २१ ३९ १७	११ २४ ४५ ३५	० १५ ३५ २८	१० २४ ५७ ४२	० १६ १३ ३२	११ ३ ५६ २	० २२ ६ २४	३ ६ १० ५५	+ ६	२ ४५	-४ ५५	५

लगभग इष्टकालिक ग्रहस्पष्ट करें -

ग्रह की दैनिक गति की कलाओं और इष्टकाल (प्रातः ५ घं. ३० मि. से बीते काल) के घण्टों द्वारा नीचे दी गई सारणी से चालन कलाएं लेकर उन्हें प्रातः ५ घं. ३० मि. कालिक ग्रह में संस्कार करने पर इष्टकालिक लगभग ग्रह स्पष्ट हो जाएगा। यदि इष्टकाल के मिनटों और गति की शेष कलाओं के लिए मौखिक अनुपात कर लिया जाए तो इस सारणी से कला तक शुद्ध ग्रह स्पष्ट होगा।

गति कलाएं

इ.घं.	१२	२४	३६	४८	६०	७२	८४	९६	१०८	१२०	१३२	१४४	१५६	१६८	१८०	१९२	इ.घ.	१२	२४	३६	४८	६०	७२	८४	९६	१०८	१२०	१३२	१४४	१५६	१६८	१८०	१९२
१	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	८	१३	६	१३	१९	२६	३२	३९	४५	५२	५८	६५	७१	७८	८४	९१	९७	१०४
२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१४	७	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	६३	७०	७७	८४	९१	९८	१०५	११२
३	१	३	४	६	७	९	१०	१२	१३	१५	१६	१८	१९	२१	२२	२४	१५	७	१५	२२	३०	३७	४५	५२	६०	६७	७२	८२	९०	९७	१०५	११२	१२०
४	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	१६	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	६४	७२	८०	८८	९६	१०४	११२	१२०	१२८
५	२	५	७	१०	१२	१५	१७	२०	२२	२५	२७	३०	३२	३५	३७	४०	१७	८	१७	२५	३४	४२	५१	५९	६८	७६	८५	९३	१०२	११०	११९	१२७	१३६
६	३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७	३०	३३	३६	३९	४२	४५	४८	१८	९	१८	२७	३६	४५	५४	६३	७२	८१	९०	९९	१०८	११७	१२६	१३५	१४४
७	३	७	१०	१४	१७	२१	२५	२८	३१	३५	३८	४२	४५	४९	५२	५६	१९	९	१९	२८	३८	४७	५७	६६	७६	८५	९५	१०४	११४	१२३	१३३	१४२	१५२
८	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६	६०	६४	२०	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००	११०	१२०	१३०	१४०	१५०	१६०
९	४	९	१३	१८	२२	२७	३१	३६	४०	४५	४९	५४	५८	६३	६७	७२	२१	१०	२१	३१	४२	५२	६३	७३	८४	९४	१०५	११४	१२६	१३६	१४७	१५७	१६८
१०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५	६०	६५	७०	७५	८०	२२	११	२२	३३	४४	५५	६६	७७	८८	९९	११०	१२१	१३२	१४३	१५४	१६५	१७६
११	५	११	१६	२२	२७	३३	३८	४४	४९	५५	६०	६६	[illegible]	७७	८२	८८	२३	११	२३	३४	४६	५७	६९	८०	९२	१०३	११५	१२६	१३८	१४९	१६१	१७२	१८४
१२	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	६०	६६	७२	७८	८४	९०	९६	२४	१२	२४	३६	४८	६०	७२	८४	९६	१०८	१२०	१३२	१४४	१५६	१६८	१८०	१९२

इष्टकालिक ग्रह स्पष्ट करने के लिए सारणी, (चालन)

ग्रहकी दैनिक गति	अं ०	क ०	अं ०	क १०	अं ०	क २०	अं ०	क ३०	अं ०	क ४०	अं ०	क ५०	अं १	क ०	अं १	क १०	अं १	क २०	अं १	क ३०	अं १	क ४०	अं १	क ५०	अं २	क ०	अं २	क १०	अं २	क २०
इष्ट	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क	अं	क
घंटा ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	०	०	०	०	०	१	०	१	०	२	०	२	०	२	०	३	०	३	०	४	०	४	०	५	०	५	०	५	०	६
२	०	०	०	१	०	२	०	२	०	३	०	४	०	५	०	६	०	७	०	७	०	८	०	९	०	१०	०	११	०	१२
३	०	०	०	१	०	२	०	४	०	५	०	६	०	७	०	९	०	१०	०	११	०	१२	०	१४	०	१५	०	१६	०	१७
४	०	०	०	२	०	३	०	५	०	७	०	८	०	१०	०	१२	०	१३	०	१५	०	१७	०	१८	०	२०	०	२२	०	२३
५	०	०	०	२	०	४	०	६	०	८	०	१०	०	१२	०	१५	०	१७	०	१९	०	२१	०	२३	०	२५	०	२७	०	२९
६	०	०	०	२	०	५	०	७	०	१०	०	१२	०	१५	०	१७	०	२०	०	२२	०	२५	०	२७	०	३०	०	३२	०	३५
७	०	०	०	३	०	६	०	९	०	१२	०	१५	०	१७	०	२०	०	२३	०	२६	०	२९	०	३२	०	३५	०	३८	०	४१
८	०	०	०	३	०	७	०	१०	०	१३	०	१७	०	२०	०	२३	०	२७	०	३०	०	३३	०	३७	०	४०	०	४३	०	४७
९	०	०	०	४	०	७	०	११	०	१५	०	१९	०	२२	०	२६	०	३०	०	३४	०	३७	०	४१	०	४५	०	४९	०	५२
१०	०	०	०	४	०	८	०	१२	०	१७	०	२१	०	२५	०	२९	०	३३	०	३७	०	४२	०	४६	०	५०	०	५४	०	५८
११	०	०	०	५	०	९	०	१४	०	१८	०	२३	०	२७	०	३२	०	३७	०	४१	०	४६	०	५०	०	५५	१	०	१	४
१२	०	०	०	५	०	१०	०	१५	०	२०	०	२५	०	३०	०	३५	०	४०	०	४५	०	५०	०	५५	१	०	१	५	१	१०
१३	०	०	०	५	०	११	०	१६	०	२२	०	२७	०	३२	०	३८	०	४३	०	४९	०	५४	१	०	१	५	१	[illegible]	१	१६
१४	०	०	०	६	०	१२	०	१७	०	२३	०	२९	०	३५	०	४१	०	४७	०	५२	०	५८	१	४	१	१०	१	[illegible]	१	२२
१५	०	०	०	६	०	१२	०	१९	०	२५	०	३१	०	३७	०	४४	०	५०	०	५६	१	२	१	९	१	१५	१	[illegible]	१	२७
१६	०	०	०	७	०	१३	०	२०	०	२७	०	३३	०	४०	०	४७	०	५३	१	०	१	७	१	१३	१	२०	१	[illegible]	१	३३
१७	०	०	०	७	०	१४	०	२१	०	२८	०	३५	०	४२	०	५०	०	५७	१	४	१	११	१	१८	१	२५	१	[illegible]	१	३९
१८	०	०	०	७	०	१५	०	२२	०	३०	०	३७	०	४५	०	५२	१	०	१	७	१	१५	१	२२	१	३०	१	[illegible]	१	४५
१९	०	०	०	८	०	१६	०	२४	०	३२	०	४०	०	४७	०	५५	१	३	१	११	१	१९	१	२७	१	३५	१	[illegible]	१	५१
२०	०	०	०	८	०	१७	०	२५	०	३३	०	४२	०	५०	०	५८	१	७	१	१५	१	२३	१	३२	१	४०	१	[illegible]	१	५७
२१	०	०	०	९	०	१७	०	२६	०	३५	०	४४	०	५२	१	१	१	१०	१	१९	१	२७	१	३६	१	४५	[illegible]	[illegible]	२	२
२२	०	०	०	९	०	१८	०	२७	०	३७	०	४६	०	५५	१	४	१	१३	१	२२	१	३२	१	४१	१	५०	[illegible]	[illegible]	२	८
२३	०	०	०	१०	०	१९	०	२९	०	३८	०	४८	०	५७	१	७	१	१७	१	२६	१	३६	१	४५	१	५५	२	[illegible]	२	१४
मिनट ६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	[illegible]	०	१
१२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	१	०	१	०	१	०	१	०	१	०	[illegible]	०	१
१८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	१	०	१	०	१	०	१	०	१	०	१	०	१	०	[illegible]	०	२
२४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	१	०	१	०	१	०	१	०	१	०	२	०	२	०	२	०	[illegible]	०	२
३०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	१	०	१	०	१	०	१	०	२	०	२	०	२	०	२	०	२	०	[illegible]	०	३
३६	०	०	०	०	०	१	०	१	०	१	०	१	०	१	०	२	०	२	०	२	०	२	०	३	०	३	०	[illegible]	०	३
४२	०	०	०	०	०	१	०	१	०	१	०	१	०	२	०	२	०	२	०	२	०	३	०	३	०	३	०	[illegible]	०	४
४८	०	०	०	०	०	१	०	१	०	१	०	२	०	२	०	२	०	२	०	३	०	३	०	३	०	४	०	[illegible]	०	४
५४	०	०	०	०	०	१	०	१	०	१	०	२	०	२	०	३	०	३	०	३	०	४	०	४	०	४	०	[illegible]	०	५

सहायक सारणी (चालन)

इष्ट घंटे	गति की शेषकलाएं								
	१	२	३	४	५	६	७	८	९
	क	क	क	क	क	क	क	क	क
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	०	०	०	०	०	०	१	१	१
३	०	०	०	०	१	१	१	१	१
४	०	०	०	१	१	१	१	१	१
५	०	०	१	१	१	१	१	२	२
६	०	०	१	१	१	१	२	२	२
७	०	१	१	१	१	२	२	२	३
८	०	१	१	१	२	२	२	३	३
९	०	१	१	१	२	२	३	३	३
१०	०	१	१	२	२	२	३	३	४
११	०	१	१	२	२	३	३	४	४
१२	०	१	१	२	२	३	३	४	४
१३	१	१	२	२	३	३	४	४	५
१४	१	१	२	२	३	३	४	५	५
१५	१	१	२	२	३	४	४	५	६
१६	१	१	२	३	३	४	५	५	६
१७	१	१	२	३	४	४	५	६	६
१८	१	१	२	३	४	४	५	६	७
१९	१	२	२	३	४	५	६	६	७
२०	१	२	२	३	४	५	६	७	७
२१	१	२	३	३	४	५	६	७	८
२२	१	२	३	४	५	५	६	७	८
२३	१	२	३	४	५	६	७	८	९

सारिणी से इष्टकालिक ग्रह स्पष्ट करनेकी विधि- पंचांग में जिस समय के दैनिक ग्रह दिए हुए हों, उस समय से आपका अभीष्ट समय कितना आगे है- यह मालूम कीजिए और इसे 'इष्ट' कहिए। आपके अभीष्ट समय से पहिले और आगे पंचांग में जो ग्रह के राश्यादि हैं उनका अन्तर कीजिए- यह ग्रह की दैनिक गति होगी। अब ऊपर दी गई सारणी में ग्रह की दैनिक गति के नीचे लिखी इष्ट के घण्टा-मिनटों की अंश-कलाओं को लेकर जोड़ लें- यह स्थूल चालन है। क्योंकि इस सारणी में१०-१० कलाओं के अन्तर पर ग्रह गति का चालन दिया गया है, अतः ग्रहगति की शेष १,२,३ आदि कलाओं का चालन बाईं ओर दी गई सहायक सारणी से इष्ट के घंटों द्वारा उठाएं। इसे स्थूल चालन मे जोड़ने पर सूक्ष्म चालन होगा। यदि ग्रह मार्गी है, तो इस चालन को इष्ट काल से पहिले वाले (पंचांग में दिए गए) स्पष्ट ग्रह के राश्यादि में जोड़ने पर, वक्री हो तो घटाने पर इष्ट काल का ग्रह स्पष्ट हो जायेगा।

उदाहरण- १७ मार्च (सन् १९७२)को रात के २ बज कर ५८ मि. (भा.स्टैं.टा.) पर बुध स्पष्ट करना है। पंचांग में १६ मार्च को प्रातः ५ घंटे. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) पर स्पष्ट बुध दिया गया है। हमारा अभीष्ट समय ५ घंटा ३० मि. से २१ घं. २८ मि. आगे है। अतः हमारा इष्ट २१ घं. २८ मि. है। पंचांग में दिए गए १६ और १७ मार्च के स्पष्ट बुध के राश्यादि का अन्तर (अर्थात्- बुध की दैनिक गति)०अं ४३ कला है। ऊपर वाली सारणी में ० अं. ४० क. गति के नीचे २१ घं. के आगे ० अं. ३५ क. और २८ मि. के आगे ०अं. १ क. लिखा है। इन दोनों का योग ० अं. ३६ क. स्थूलचालन हुआ। इसे गति की शेष कला ३ के नीचे २१ घं. के आगे सहायक सारणी में ३ क. लिखा है। अतः स्थूलचालन में जोड़ने पर ० अं. ३९ क. सूक्ष्म चालन हुआ। क्योंकि बुध मार्गी है अतः १६ मार्च के प्रातः ५ घं. ३० मि. वाले स्पष्ट बुध (११ रा. २० अं. ७ क.)में यह सूक्ष्मचालन जोड़ने पर ११ रा. २० अं. ४६ क. हमारा इष्टकालिक बुध स्पष्ट हो गया।

इस सारणी का तीन चार बार प्रयोग करने के बाद आप इससे मौखिक रूप से ही ग्रह स्पष्ट कर सकेंगे और आपको सूक्ष्म चालन बनाने के लिए १० सेकण्ड से अधिक समय नहीं लगेगा। 'लघु रिक्थ कोष्ठक' से भी चालन जानने के लिए इससे कहीं अधिक समय लगता है। यह सारणी मेरे अप्रकाशित ग्रंथ, **गणक मार्त्तण्ड**, से उद्धृत है।

यूरेनस, नेपच्यून, वेंकटेश (प्लूटो)के निरयण भोगांश, (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख	यूरेनस			नेपच्यून			वेंकटेश		
१९९९ ई.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.
मार्च १८	९	२१	१८	९	९	५१	७	१६	३९
२२	९	२१	३०	९	९	५७	७	१६	३८
२६	९	२१	४२	९	१०	३	७	१६	३६
३०	९	२१	५३	९	१०	८	७	१६	३४
अप्रै. ३	९	२२	३	९	१०	१२	७	१६	३१
७	९	२२	१२	९	१०	१६	७	१६	२८
११	९	२२	२०	९	१०	२०	७	१६	२५
१८	९	२२	२७	९	१०	२३	७	१६	२१
२२	९	२२	३४	९	१०	२६	७	१६	१७
२६	९	२२	४०	९	१०	२९	७	१६	१२
३०	९	२२	४४	९	१०	३०	७	१६	६
मई ४	९	२२	४८	९	१०	३१	७	१६	०
८	९	२२	५२	९	१०	३१	७	१५	५४
१२	९	२२	५४	९	१०	३१	७	१५	४८
१६	९	२२	५५	९	१०	३०	७	१५	४१
२०	९	२२	५६	९	१०	२८	७	१५	३४
२४	९	२२	५६	९	१०	२६	७	१५	२८
२८	९	२२	५५	९	१०	२३	७	१५	२१
जून १	९	२२	५४	९	१०	२१	७	१५	१६
५	९	२२	५२	९	१०	१८	७	१५	१०
९	९	२२	४८	९	१०	१४	७	१५	३
१३	९	२२	४५	९	१०	१०	७	१४	५७
१७	९	२२	४०	९	१०	६	७	१४	५१
२१	९	२२	३५	९	१०	१	७	१४	४४
२५	९	२२	२९	९	९	५५	७	१४	३९
२१	९	२२	२३	९	९	५०	७	१४	३३
जुला. ३	९	२२	१६	९	९	४४	७	१४	२८
७	९	२२	९	९	९	३८	७	१४	२२
११	९	२२	१	९	९	३२	७	१४	१८
१५	९	२१	५२	९	९	३२	७	१४	१३
१९	९	२१	४४	९	९	१९	७	१४	९
२३	९	२१	३५	९	९	१३	७	१४	६
२७	९	२१	२५	९	९	६	७	१४	३

तारीख	यूरेनस			नेप्च्यून			वेंकटेश		
१९९९ ई.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.
जुला. ३१	९	२१	१६	९	९	०	७	१४	०
अग. १	९	२१	१४	९	८	५८	७	१३	५९
५	९	२१	४	९	८	५२	७	१३	५७
९	९	२०	५५	९	८	४६	७	१३	५६
१३	९	२०	४५	९	८	३९	७	१३	५५
१७	९	२०	३६	९	८	३३	७	१३	५४
२१	९	२०	२६	९	८	२७	७	१३	५४
२८	९	२०	१०	९	८	१८	७	१३	५५
सितं. १	९	२०	२	९	८	१३	७	१३	५७
५	९	१९	५४	९	८	८	७	१३	५९
९	९	१९	४६	९	८	३	७	१४	१
१३	९	१९	३८	९	७	५९	७	१४	४
१८	९	१९	३१	९	७		७	१४	८
२१	९	१९	२५	९	७	५३	७	१४	१२
२५	९	१९	२०	९	७	५०	७	१४	१६
२९	९	१९	१५	९	७	४८	७	१४	२१
अक्तू. ३	९	१९	१०	९	७	४६	७	१४	२७
७	९	१९	७	९	७	४५	७	१४	३३
११	९	१९	४	९	७	४४	७	१४	३९
१५	९	१९	२	९	७	४४	७	१४	४६
१९	९	१९	१	९	७	४४	७	१४	५३
२३	९	१९	०	९	७	४५	७	१५	०
२७	९	१९	१	९	७	४७	७	१५	८
३१	९	१९	२	९	७	४९	७	१५	१६
नवं. १	९	१९	२	९	७	४९	७	१५	१८
५	९	१९	४	९	७	५२	७	१५	२७
९	९	१९	७	९	७	५५	७	१५	३५
१३	९	१९	११	९	७	५९	७	१५	४४
१७	९	१९	१६	९	८	३	७	१५	५३
२१	९	१९	२१	९	८	८	७	१६	२
२५	९	१९	२७	९	८	१३	७	१६	११
२९	९	१९	३४	९	८	१९	७	१६	२१
दिसं. ३	९	१९	४२	९	८	२५	७	१६	३०

तारीख	यूरेनस			नेप्च्यून			वेंकटेश		
१९९९ ई.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.
दिसं. ७	९	१९	५२	९	८	३१	७	१६	३९
११	९	१९	५९	९	८	३९	७	१६	४९
१५	९	२०	७	९	८	४५	७	१६	५८
१९	९	२०	१९	९	८	५३	७	१७	७
२३	९	२०	२९	९	९	१	७	१७	१६
२७	९	२०	४१	९	९	९	७	१७	२५
३१	९	२०	५२	९	९	१८	७	१७	३४
सन् २००० ई.									
जन. ४	९	२१	४	९	९	२५	७	१७	४२
८	९	२१	१७	९	९	३४	७	१७	५०
१२	९	२१	३०	९	९	४३	७	१७	५८
१६	९	२१	४३	९	९	५२	७	१८	५
२०	९	२१	५६	९	१०	१	७	१८	१३
२४	९	२२	१०	९	१०	१०	७	१८	१९
२८	९	२२	२४	९	१०	१९	७	१८	२६
फर. १	९	२२		९	१०	२८	७	१८	३२
५	९	२२	५२	९	१०	३७	७	१८	३७
९	९	२३	५	९	१०	४६	७	१८	४२
१३	९	२३	१९	९	१०	५५	७	१८	४७
१७	९	२३	३३	९	११	४	७	१८	५१
२१	९	२३	४७	९	११	१२	७	१८	५४
२५	९	२४	१	९	११	२०	७	१८	५७
२९	९	२४	१४	९	११	२८	७	१८	५९
मार्च ४	९	२४	२७	९	११	३६	७	१९	१
८	९	२४	४०	९	११	४४	७	१९	३
१२	९	२४	५२	९	११	५१	७	१९	३
१६	९	२५	४	९	११	५७	७	१९	४
२०	९	२५	१६	९	१२	४	७	१९	३
२४	९	२५	२७	९	१२	९	७	१९	२
२८	९	२५	३७	९	१२	१५	७	१९	१
अप्रै. १	९	२५	४७	९	१२	२१	७	१९	१
५	९	२५	५५	९	१२	२८	७	१९	०

भौमादि ग्रहों के क्रान्ति-शर (प्रातः ५घं. ३० मि., भा.स्टैं.टा.)

तारीख	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेपच्यून		वेंकटेश (प्लूटो)	
सन्	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
१९९९ई.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
मार्च १८	-१३ २६	+२ ९	+३ २२	+३ ३२	+२ २	-१ ५	+११ १९	+० २	+१० २४	-२ १४	-१६ ५४	-० ३७	-१९ ३	+० १७	-१० २७	+११ ४२
२२	१३ २७	२ ७	+१ २९	३ २	२ २५	१ ५	१३ १२	० १४	१० ३४	२ १४	१६ ५२	० ३८	१९ १	० १७	१० २५	११ ४२
२६	१३ २४	२ ५	-० १४	२ ९	२ ४७	१ ५	१४ ५८	० २७	१० ४२	२ १३	१६ ५०	० ३८	१९ ०	० १७	१० २२	११ ४३
३०	१३ १८	२ २	२ १९	+१ ७	३ १०	१ ५	१६ ३९	० ४०	१० ५०	२ १३	१६ ४७	० ३९	१८ ५८	० १७	१० २०	११ ४४
अप्रै. ३	१३ ९	१ ५८	३ २७	-० १७	३ ३४	१ ५	१८ १४	० ५४	१० ५८	२ १३	१६ ४५	० ३९	१८ ५७	० १७	१० १८	११ ४५
७	१२ ५८	१ ५३	३ ५७	० ४६	३ ५६	१ ५	१९ ४३	१ ७	११ ६	२ १२	१६ ४३	० ३९	१८ ५७	० १७	१० १७	११ ४६
११	१२ ४३	१ ४७	३ ४४	१ ३०	४ १८	१ ५	२१ २	१ १९	११ १४	२ १२	१६ ४०	० ३९	१८ ५६	० १७	१० १५	११ ४७
१५	१२ २६	१ ४०	३ ०	२ ५	४ ४०	१ ५	२२ १३	१ ३१	११ २२	२ १२	१६ ३८	० ३९	१८ ५६	० १७	१० १५	११ ४८
१९	१२ ७	१ ३३	१ ४९	२ २९	५ २	१ ५	२३ १६	१ ४३	११ ३०	२ १२	१६ ३६	० ३९	१८ ५५	० १७	१० १४	११ ४९
२३	११ ४६	१ २४	-० ४०	२ ४२	५ २४	१ ६	२४ ८	१ ५५	११ ३७	२ ११	१६ ३३	० ४०	१८ ५४	० १७	१० १४	११ ४९
२७	११ २५	१ १५	+१ ५१	२ ४७	५ ४५	१ ६	२४ ५०	२ ६	११ ४४	२ ११	१६ ३१	० ४०	१८ ५४	० १७	१० १३	११ ५०
मई १	११ ४	१ ५	४ ९	२ ४३	६ ७	१ ६	२५ २४	२ १४	११ ५२	२ ११	१६ २९	० ४०	१८ ५३	० १७	१० १२	११ ५१
५	१० ४३	० ५४	६ ४४	२ २९	६ २८	१ ६	२५ ४५	२ २३	१२ १	२ ११	१६ २८	० ४०	१८ ५३	० १७	१० ११	११ ५२
९	१० २५	० ४४	९ ३१	२ ८	६ ४८	१ ६	२५ ५६	२ २९	१२ ११	२ १२	१६ २७	० ४०	१८ ५३	० १७	१० ९	११ ५२
१३	१० ८	० ३४	१२ २७	१ ३९	७ ८	१ ७	२५ ५६	२ ३५	१२ २०	२ १२	१६ २७	० ४०	१८ ५३	० १७	१० ८	११ ५२
१७	९ ५५	० २३	१५ २६	१ ३	७ २८	१ ७	२५ ४६	२ ३९	१२ २९	२ १३	१६ २७	० ४०	१८ ५४	० १७	१० ७	११ ५२
२१	९ ४६	० १३	१८ २०	-० २३	७ ४७	१ ७	२५ २५	२ ४१	१२ ३८	२ १४	१६ २७	० ४०	१८ ५४	० १७	१० ६	११ ५२
२५	९ ४१	+० ३	२० ५७	+० १९	८ ५	१ ८	२४ ५५	२ ४१	१२ ४७	२ १४	१६ २७	० ४०	१८ ५४	० १७	१० ६	११ ५२
२९	९ ४०	-० ६	२३ ५	० ५८	८ २३	१ ८	२४ १६	२ ३९	१२ ५६	२ १५	१६ २८	० ४१	१८ ५५	० १७	१० ५	११ ५२
जून २	९ ४४	० १५	२४ ३३	१ ३०	८ ४१	१ ९	२३ २८	२ ३५	१३ ५	२ १६	१६ २८	० ४१	१८ ५६	० १७	१० ५	११ ५२
६	९ ५१	० २४	२५ १८	१ ५२	८ ५८	१ ९	२२ ३३	२ २८	१३ १३	२ १६	१६ २९	० ४१	१८ ५६	० १७	१० ४	११ ५१
१०	१० ३	० ३२	२५ २२	२ ३	९ १४	१ १०	२१ ३०	२ १९	१३ २१	२ १७	१६ ३०	० ४१	१८ ५७	० १७	१० ४	११ ५१
१४	१० १८	० ३९	२४ ५१	२ ०	९ ३०	१ १०	२० २२	२ ८	१३ २९	२ १७	१६ ३१	० ४१	१८ ५८	० १७	१० ३	११ ५०
१८	१० ३७	० ४६	२३ ५३	१ ४६	९ ४५	१ ११	१९ ८	१ ५३	१३ ३६	२ १७	१६ ३३	० ४१	१८ ५९	० १७	१० ३	११ ४९
२२	११ ०	० ५३	२२ ३६	१ २३	९ ५९	१ ११	१७ ५०	१ ३६	१३ ४२	२ १८	१६ ३४	० ४१	१९ १	० १७	१० ३	११ ४८
२६	११ २५	० ५९	२१ ६	० ४८	१० १२	१ १२	१६ २९	१ १४	१३ ४९	२ १८	१६ ३६	० ४१	१९ २	० १७	१० ३	११ ४७
३०	११ ५३	१ ४	१९ ३१	+० १३	१० २५	१ १३	१५ ६	० ५०	१३ ५५	२ १८	१६ ३८	० ४२	१९ ३	० १७	१० ४	११ ४६
जुला. ४	१२ २५	१ ९	१७ ५६	-० ४५	१० ३७	१ १४	१३ ४२	+० २३	१४ १	२ १८	१६ ४१	० ४२	१९ ४	० १७	१० ४	११ ४५
८	१२ ५७	१ १३	१६ २९	१ ४२	१० ४८	१ १४	१२ १७	-० ७	१४ ६	२ १९	१६ ४३	० ४२	१९ ६	० १७	१० ५	११ ४३
१२	१३ ३२	१ १७	१५ १८	२ ४०	१० ५८	१ १५	१० ५५	१ २	१४ ११	२ १९	१६ ४६	० ४२	१९ ७	० १७	१० ५	११ ४२
१६	१४ ८	१ २१	१४ २८	३ ३८	११ ८	१ १६	९ ३५	१ २३	१४ १६	२ २०	१६ ४८	० ४२	१९ ९	० १७	१० ६	११ ४१
२०	१४ ४६	१ २५	१४ ६	४ २४	११ १७	१ १७	८ २०	२ ६	१४ २०	२ २०	१६ ५१	० ४२	१९ १०	० १७	१० ७	११ ४०
२४	१५ २४	१ २८	१४ १४	४ ५६	११ २५	१ १८	७ ११	२ ५४	१४ २४	२ २०	१६ ५४	० ४२	१९ १२	० १७	१० ८	११ ३८
२८	१६ ४	१ ३२	१४ ५०	४ ३९	११ ३२	१ १९	६ ११	३ ४४	१४ २७	२ २१	१६ ५७	० ४२	१९ १३	० १७	१० ९	११ ३६
आग. १	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४ ३०	११ ३७	१ २०	५ २२	४ ३७	१४ २९	२ २२	१६ ५९	० ४३	१९ १५	० १७	१० १०	११ ३४

भौमादि ग्रहों के क्रान्ति-शर (प्रातः ५घं. ३० मि., भा.स्टैं.टा.)

तारीख	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेपच्यून		वेंकटेश (प्लूटो)	
सन्	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
१९९९ई.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
अग. १३	−१८ ४३	−१ ४१	+१८ २०	−१ ३४	+११ ४८	−१ २२	+४ १९	−७ ७	+१४ ३४	−२ २३	−१७ ७	−० ४३	−१९ १९	+० १७	−१० १५	+११ २९
१७	१९ २२	१ ४२	१८ २८	−० ३१	११ ५०	१ २३	४ ३०	७ ४३	१४ ३५	२ २४	१७ १०	० ४३	१९ २१	० १७	१० १७	११ २८
२१	२० ०	१ ४४	१७ ५६	+० ४७	११ ५१	१ २३	४ ५६	८ ८	१४ ३६	२ २४	१७ १३	० ४३	१९ २२	० १६	१० १८	११ २६
२५	२० ३७	१ ४५	१६ ४०	१ ६	११ ५०	१ २४	५ ३३	८ १९	१४ ३६	२ २५	१७ १६	० ४३	१९ २३	० १६	१० २०	११ २४
२९	२१ १३	१ ४६	१४ ४१	१ ३२	११ ४९	१ २५	६ १८	८ १३	१४ ३५	२ २६	१७ १८	० ४३	१९ २५	० १६	१० २२	११ २२
सितं. २	२१ ४७	१ ४७	१२ ९	१ ४४	११ ४७	१ २५	७ ४	८ ०	१४ ३४	२ २६	१७ २०	० ४२	१९ २६	० १६	१० २४	११ २०
६	२२ २०	१ ४८	९ १६	१ ४५	११ ४३	१ २६	७ ४९	७ ३४	१४ ३३	२ २७	१७ २३	० ४२	१९ २७	० १६	१० २७	११ १८
१०	२२ ५०	१ ४९	६ १०	१ ३५	११ ३९	१ २७	८ २९	७ २	१४ ३१	२ २८	१७ २५	० ४२	१९ २८	० १६	१० २९	११ १६
१४	२३ १८	१ ४९	+३ ०	१ १५	११ ३४	१ २८	९ १	६ २५	१४ २९	२ ३०	१७ २७	० ४२	१९ २९	० १६	१० ३१	११ १४
१८	२३ ४३	१ ४९	−० ८	० ५६	११ २६	१ २९	९ २५	५ ४६	१४ २६	२ ३१	१७ २९	० ४२	१९ ३०	० १६	१० ३३	११ १२
२२	२४ ६	१ ४९	३ १४	० ३१	११ १८	१ ३०	९ ४०	५ ५	१४ २३	२ ३२	१७ ३१	० ४२	१९ ३०	० १६	१० ३६	११ ११
२६	२४ २५	१ ४९	६ ११	+० ३	११ १०	१ ३०	९ ४५	४ २५	१४ १९	२ ३३	१७ ३२	० ४२	१९ ३१	० १६	१० ३८	११ ९
३०	२४ ४२	१ ४९	९ १	−० २५	११ ३	१ ३१	९ ४०	३ ४६	१४ १५	२ ३५	१७ ३३	० ४२	१९ ३२	० १६	१० ४०	११ ७
अक्तू. ४	२४ ५५	१ ४८	११ ४१	० ५४	१० ५३	१ ३२	९ २५	३ ८	१४ ११	२ ३५	१७ ३४	० ४२	१९ ३२	० १६	१० ४३	११ ५
८	२५ ४	१ ४८	१४ १०	१ २३	१० ४३	१ ३२	९ १	२ ३१	१४ ६	२ ३६	१७ ३५	० ४२	१९ ३२	० १५	१० ४५	११ ४
१२	२५ १०	१ ४७	१६ २५	१ ४३	१० ३३	१ ३१	८ २८	२ ७	१४ १	२ ३७	१७ ३६	० ४१	१९ ३३	० १५	१० ४८	११ २
१६	२५ १२	१ ४६	१८ २६	२ १४	१० २२	१ ३१	७ ४५	१ २५	१३ ५६	२ ३७	१७ ३७	० ४१	१९ ३३	० १५	१० ५०	११ १
२०	२५ १०	१ ४५	२० १०	२ ३५	१० ११	१ ३१	६ ५५	० ४४	१३ ५१	२ ३६	१७ ३७	० ४१	१९ ३३	० १५	१० ५३	११ ०
२४	२५ ४	१ ४४	२१ ३५	२ ५०	१० ०	१ ३०	५ ५७	० २७	१३ ४६	२ ३६	१७ ३६	० ४१	१९ ३२	० १५	१० ५५	१० ५९
२८	२४ ५४	१ ४२	२२ ३६	२ ५८	९ ४८	१ २९	४ ५२	−० १	१३ ४०	२ ३५	१७ ३६	० ४१	१९ ३२	० १५	१० ५७	१० ५७
नवं. १	२४ ४०	१ ४१	२२ ८	२ ५४	९ ३७	१ २९	३ ४०	+० २२	१३ ३५	२ ३५	१७ ३६	० ४१	१९ ३२	० १५	११ ०	१० ५६
५	२४ २१	१ ३९	२३ २	१ ३३	९ २७	१ २८	२ २३	० ४४	१३ २९	२ ३४	१७ ३५	० ४१	१९ ३१	० १५	११ २	१० ५५
९	२३ ५९	१ ३७	२२ ५	१ ४२	९ १७	१ २७	+१ ०	१ २	१३ २३	२ ३४	१७ ३४	० ४१	१९ ३१	० १५	११ ४	१० ५५
१३	२३ ३२	१ ३५	२० ९	−० ४३	९ ७	१ २६	−० २५	१ २०	१३ १८	२ ३३	१७ ३३	० ४१	१९ ३०	० १५	११ ६	१० ५४
१७	२३ १	१ ३३	१७ ३४	+१ ३८	८ ५८	१ २५	१ ५५	१ ३५	१३ १३	२ ३२	१७ ३१	० ४१	१९ २९	० १५	११ ८	१० ५३
२१	२२ २७	१ ३१	१५ १७	२ ४	८ ५१	१ २४	३ २७	१ ४७	१३ ८	२ ३२	१७ २९	० ४०	१९ २८	० १५	११ १०	१० ५२
२५	२१ ४८	१ २९	१४ १३	२ २४	८ ४४	१ २३	५ २	१ ५८	१३ ३	२ ३१	१७ २८	० ४०	१९ २७	० १५	११ १२	१० ५१
२९	.१ ६	१ २७	१४ २५	२ ३१	८ ३८	१ २२	६ ३६	२ ६	१२ ५८	२ ३०	१७ २६	० ४०	१९ २६	० १५	११ १४	१० ५१
दिसं. ३	२० २०	१ २४	१५ २९	२ २१	८ ३३	१ २२	८ ११	२ १३	१२ ५४	२ २९	१७ २३	० ४०	१९ २५	० १५	११ १५	१० ५१
७	१९ ३१	१ २२	१६ ५९	२ ०	८ ३०	१ २१	९ ४५	२ १७	१२ ५०	२ २९	१७ २१	० ४०	१९ २४	० १५	११ १७	१० ५०
११	१८ ३९	१ १९	१८ ३६	१ ३२	८ २७	१ २१	११ १७	२ १९	१२ ४६	२ २८	१७ १८	० ४०	१९ २२	० १४	११ १८	१० ५०
१५	१७ ४४	१ १६	२० ११	१ ३	८ २६	१ २०	१२ ४७	२ २०	१२ ४३	२ २८	१७ १५	० ४०	१९ २०	० १४	११ १९	१० ५०
१९	१६ ४५	१ १३	२१ ३५	० ३२	८ २६	१ २०	१४ १३	२ १९	१२ ४१	२ २७	१७ १२	० ४०	१९ १८	० १४	११ २०	१० ५०
२३	१५ ४४	१ ११	२२ ४६	+० ३	८ २७	१ १९	१५ ३५	२ १५	१२ ३९	२ २७	१७ ९	० ४०	१९ १७	० १४	११ २२	१० ५०
२७	१४ ४१	१ ८	२३ ४१	−० २४	८ ३०	१ १९	१६ ३१	२ १२	१२ ३७	२ २६	१७ ६	० ४०	१९ १५	० १४	११ २३	१० ५०
३१	१३ ३६	१ ५	२४ १७	० ५१	८ ३४	१ १८	१८ २	२ ६	१२ ३७	२ २६	१७ २	० ४०	१९ १३	० १४	११ २३	१० ५१
जन. ४	−१२ २८	−१ ३	−२४ ३२	−१ १०	+८ ३९	−१ १७	−१९ ५	+२ ०	+१२ ३७	−२ २५	−१६ ५८	−० ४०	−१९ ११	+० १४	−११ २४	+१० ५१

भौमादि ग्रहों के क्रान्ति-शर (प्रातः ५घं. ३० मि., भा.स्टैं.टा.)

तारीख	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेपच्यून		वेंकटेश (प्लूटो)	
सन्	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
२०००ई.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जन. ८	-११ १९	-१ ३	-२४ २६	-१ ३०	+८ ४४	-१ १६	-२० १	+१ ५४	+१२ ३७	-२ २४	-१६ ५५	-० ४०	-१९ ९	+० १४	-११ २५	+१० ४९
१२	१० ८	१ ०	२३ ५७	१ ४८	८ ५१	१ १५	२० ४९	१ ४१	१२ ३८	२ २३	१६ ५१	० ४०	१९ ७	० १४	११ २५	१० ४९
१६	८ ५६	० ५७	२३ ४	२ ४	९ ०	१ १४	२१ २७	+१ २७	१२ ३९	२ २२	१६ ४७	० ४०	१९ ५	० १४	११ २५	१० ४९
२०	७ ४२	० ५४	२१ ४७	२ ४९	९ ९	१ १४	२१ ५६	१ १०	१२ ४१	२ २१	१६ ४३	० ३९	१९ ३	० १४	११ २६	१० ४९
२४	६ २९	० ५०	२० ५	३ १४	९ १९	१ १३	२२ १५	० ५०	१२ ४३	२ २०	१६ ३९	० ३९	१९ १	० १३	११ २६	१० ४९
२८	५ १४	० ४०	१८ ०	१ ४८	९ ३०	१ १३	२२ २३	+० २०	१२ ४६	२ १९	१६ ३५	० ३९	१८ ५९	० १३	११ २६	१० ४८
फर. १	३ ५८	० ४०	१५ ३१	-१ ३६	९ ४२	१ १२	२२ २१	-० २५	१२ ५०	२ १८	१६ ३१	० ३९	१८ ५७	० १३	११ २६	१० ४८
५	२ ४२	० ३७	१२ ४३	+० १८	९ ५५	१ १२	२२ ८	१ ०	१२ ५४	२ १७	१६ २६	० ३९	१८ ५५	० १३	११ २५	१० ४८
९	१ २७	० ३४	९ ४५	१ ४८	१० ८	१ ११	२१ ५४	१ ३६	१२ ५८	२ १६	१६ २२	० ३९	१८ ५२	० १३	११ २५	१० ४८
१३	-० ११	० ३१	६ ५१	-० १८	१० २२	१ ११	२१ ११	२ १०	१३ ३	२ १५	१६ १८	० ३८	१८ ५०	० १२	११ २४	१० ४७
१७	+१ ४	० २८	४ २३	-१ २४	१० ३६	१ ११	२० २८	२ ५०	१३ ९	२ १४	१६ १४	० ३८	१८ ४८	० १२	११ २४	१० ४७
२१	२ १९	० २५	२ ४७	२ ३१	१० ५१	१ १०	१९ ३४	३ १०	१३ १५	२ १३	१६ १०	० ३८	१८ ४६	० १२	११ २३	१० ४७
२५	३ ३३	० २२	२ २३	३ १०	११ ७	१ ९	१८ ३२	३ ८	१३ २१	२ १२	१६ ६	० ३८	१८ ४४	० १२	११ २२	१० ४८
२९	४ ४७	० १९	३ १५	३ ४१	११ २३	१ ९	१७ २१	३ ६	१३ २८	२ ११	१६ १	० ३८	१८ ४२	० १२	११ २२	१० ४८
मार्च ४	५ ५९	० १६	४ ५८	३ ५६	११ ३९	१ ८	१६ २	१०	१३ ३५	२ १०	१५ ५८	० ३८	१८ ४१	० ११	११ २१	१० ४८
८	७ ११	० १३	६ ५४	२ ५४	११ ५६	१ ८	१४ ३६	३ १३	१३ ४२	२ ९	१५ ५४	० ३८	१८ ३९	० ११	११ २०	१० ४९
१२	८ २१	० १०	८ ३०	१ ५६	१२ १३	१ ७	१३ ३	३ १६	१३ ४९	२ ९	१५ ५०	० ३८	१८ ३७	० ११	११ १९	१० ४९
१६	९ ३०	० ६	९ ३२	० ५८	१२ ३०	१ ६	११ २५	३ १७	१३ ५७	२ ८	१५ ४६	० ३७	१८ ३५	० ११	११ १८	१० ५०
२०	१० ३७	० ४	९ ५७	+० १०	१२ ४७	१ ५	९ ४१	३ १८	१४ ५	२ ८	१५ ४३	० ३७	१८ ३४	० ११	११ १६	१० ५०
२४	११ ४२	-० १	९ ४८	-० ३१	१३ ५	१ ४	७ ५४	२ ४७	१४ १३	२ ७	१५ ३९	० ३७	१८ ३३	० ११	११ १५	१० ५१
२८	१२ ४५	+ २	९ ८	-१ २३	१३ २३	१ ४	६ ३	२ २७	१४ २१	२ ७	१५ ३६	० ३६	१८ ३१	० १०	११ १४	१० ५१
अप्रै. १	१३ ४६	० ५	८ ०	१ ५१	१३ ४१	१ ३	४ १०	१ ५९	१४ ३०	२ ६	१५ ३३	० ३६	१८ ३०	० १०	११ १३	१० ५२
५	+१४ ४५	+० ७	-६ २९	-२ १२	+१३ ५८	-१ २	-२ १४	-१ ५०	+१४ ३९	-२ ६	-१५ ३०	-० ३६	-१८ २९	+० १०	-११ ११	+१० ५२

ग्रहों की समकल युतियां (सं. २०५६ वि.)

युतग्रह	तारीख	युतग्रह	तारीख	युतग्रह	तारीख	युतग्रह	तारीख	युतग्रह	तारीख	युतग्रह	तारीख
(१९९९-२०००ई.)		सू. बु.	नवं. '९९ १५	सू. श.	अप्रै. '९९ २७	मं. शु.	×	बु. शु.	मार्च(२०००ई.) १५	गु. रा.	×
सू. बु.	मार्च '९९ २९	सू. बु.	जन.(२०००ई.) १६	सू. रा.	अग. '९९ ५	मं. श.	×	बु. श.	मई '९९ १३	गु. के.	×
सू. बु.	मई '९९ २५	सू. बु.	मार्च(२०००ई.) १	सू. के.	जन.(२०००ई.) २४	मं. रा.	×	बु. रा.	अग. '९९ २१	शु. श.	मार्च '९९ २०
सू. बु.	जुला. '९९ २६	सू. गु.	अप्रै. '' १	मं. बु.	×	मं. के.	दिस. '९९ ४	बु. के.	जन.(२०००ई.) २०	शु. रा.	जून '९९ २१
सू. बु.	सितं. '९९ ८	सू. गु.	अग. '९९ २०	मं. गु.	×	बु. गु.	मई '९९ २	गु. श.	×	शु. के.	फर.(२०००ई.) २०
						बु. श.	अग. '९९ २७				

ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्र-चरण-चार (संवत् २०५६ वि.)

सूर्य-चार

तारीख १९९९ ई.	नक्षत्रचरण राशि
मार्च १८	उ.भा. १
२१	२
२५	३
२८	४
३१	रेव. १
अप्रै. ४	२
७	३
११	४
१४	अश्वि.१मेष
१७	२
२१	३
२४	४
२८	भर. १
मई १	२
४	३
८	,, ४
११	कृति. १
१५	२ वृष
१८	३
२२	४
२५	रो. १
२९	२
जून १	३
५	४
८	मृग. १
१२	२
१५	३ मिथुन
१९	४
२२	आर्द्रा १
२६	२
२९	३
जुला. ३	४
६	पुन. १
१०	२
१३	३
१७	४ कर्क
२०	पुष्य १

तारीख १९९९ ई.	नक्षत्रचरण राशि
जुला. २३	पुष्य २
२७	३
३१	४
अग. ३	आश्ले. १
६	२
१०	३
१३	४
१७	मघा १सिंह
२०	२
२४	३
२७	४
३१	पू.फा. १
सित. ३	२
७	३
१०	४
१३	उ.फा. १
१७	२ कन्या
२०	३
२४	४
२७	हस्त १
अक्तू. १	२
४	३
७	४
११	चित्रा १
१४	२
१७	३ तुला
२१	४
२४	स्वाती १
२७	२
३१	३
नवं. ३	४
६	विशा. १
१०	२
१३	३
१६	४ वृश्चि.
२०	अनु. १

तारीख १९९९ई.	नक्षत्रचरण राशि
नवं. २३	अनु. २
२६	३
३०	४
दिसं. ३	ज्ये. १
६	२
९	३
१३	४
१६	मू.१ धनु
१९	२
२३	३
२६	४
२९	पूषा. १

सन् २००० ई.

तारीख	नक्षत्रचरण राशि
जन. १	२
५	३
८	४
११	उ.षा. १
१४	२ मकर
१८	३
२१	४
२४	श्रव. १
२८	२
३१	३
फर. ३	४
६	धनि. १
१०	२
१३	३ कुभ
१६	४
२०	शत. १
२३	२
२६	३
मार्च. १	४
४	पू.भा. १
८	२
११	३
१४	४ मीन

तारीख २००० ई.	नक्षत्रचरण राशि
मार्च १७	उ.भा.१
२१	२
२४	३
२८	४
३१	रेवती १
अप्रै. ३	२

मंगल-चार (सन् १९९९ ई.)

तारीख	नक्षत्रचरण राशि
मार्च १८	वक्री
अप्रै. ४	स्वा. ३
१६	२
२५	१
मई ४	चित्रा ४
१५	३
जून ४	मार्गी
२५	चित्रा ४
जुला. ६	स्वा. १
१५	२
२३	३
३०	४
अग. ६	विशा. १
१२	२
१८	३
२३	४ वृश्चि.
२९	अनु. १
सितं. ३	२
९	३
१४	४
१९	ज्ये. १
२४	२
२९	३
अक्तू. ३	४
८	मूल १धनु
१३	२
१८	३
२२	४

मंगल-चार

तारीख १९९९ ई.	नक्षत्रचरण राशि
अक्तू. २७	पू.षा. १
३१	२
नवं. ५	३
९	४
१४	उ.षा. १
१८	२ मकर
२२	३
२७	४
दिस. १	श्रव. १
५	२
१०	३
१४	४
१८	धनि. १
२३	२
२७	३ कुम्भ
३१	४

सन् २००० ई.

तारीख	नक्षत्रचरण राशि
जन. ५	शत. १
९	२
१३	३
१७	४
२२	पू.भा.१
२६	२
३०	३
फर. ४	४ मीन
८	उ.भा. १
१२	२
१७	३
२१	४
२६	रेव. १
मार्च १	२
६	३
१०	४
१४	अश्वि. १मेष
१९	२
२४	३

तारीख २००० ई.	नक्षत्रचरण राशि
मार्च २८	अश्वि. ४
अप्रै. २	भर. १

बुध-चार (सन् १९९९ई.)

तारीख	नक्षत्रचरण राशि
मार्च १८	उ.भा. १
२१	पू.भा. ४
२५	३ कुंभ
अप्रै. २	मार्गी
११	पू.भा.४ मी.
१५	उ.भा. १
१८	२
२१	३
२४	४
२६	रेव. १
२९	२
मई १	३
३	४
५	अश्वि.१ मे.
७	२
९	३
११	४
१३	भर. १
१४	२
१६	३
१८	४
१९	कृति. १
२१	२ वृष
२२	३
२४	४
२५	रोहि. १
२७	२
२८	३
३०	४
३१	मृग. १
जून २	२
४	३ मिथुन

बुध-चार

तारीख १९९९ ई.	नक्षत्रचरण राशि
जून ५	मिथुन ४
७	आर्द्रा १
९	२
११	३
१२	४
१४	पुन. १
१७	२
१९	३
२१	४ कर्क
२४	पुष्य १
२७	२
३०	३
जुला. ५	४
१३	वक्री
२०	पुष्य ३
२५	२
३०	१
अग. ६	मार्गी
१२	पुष्य २
१५	३
१८	४
२१	आश्ले. १
२३	२
२५	३
२६	४
२८	मघा १ सिंह
३०	२
सितं. १	३
२	४
४	पू.फा. १
६	२
७	३
९	४
११	उ.फा. १
१३	२ कन्या
१५	३

तारीख १९९९ ई.	नक्षत्रचरण राशि
सितं. १७	उ.फा. ४
१८	हस्त. १
२०	२
२२	३
२४	४
२७	चित्रा १
२९	२
अक्तू. १	३ तुला
३	४
५	स्वा. १
८	२
१०	३
१२	४
१५	विशा. १
१८	२
२०	३
२३	४ वृश्चि.
२७	अनु. १
३१	२
नवं. ५	वक्री
९	अनु. १
१२	विशा. ४
१५	३ तुला
१८	२
२१	१
२५	मार्गी
२९	विशा. २
दिसं. ३	३
६	४ वृश्चि.
९	अनु. १
११	२
१४	३
१६	४
१८	ज्ये. १
२०	२
२३	३

ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्र-चरण-चार (संवत् २०५६ वि.)

बुध-चार

तारीख १९९९ ई.	नक्षत्रचरण राशि
दिसं. २५	ज्ये. ४
२७	मूल १ धनु
२९	२
३१	३
सन् २०००ई.	
जन. २	मूल ४
५	पू.षा. १
७	२
९	३
११	४
१३	उ.षा. १
१५	२
१७	३
१९	४
२१	श्रव. १
२३	२
२५	३
२७	४
२९	धनि. १
३१	२
फर. १	३ कुंभ
३	४
५	शत. १
७	२
१०	३
१२	४
१५	पू.भा. १
२१	वक्री
२८	शत. ४
मार्च २	३
६	२
१०	१
१५	मार्गी
२०	शत. २
२५	३
२९	४
अप्रै. २	पू.भा. १

गुरु-चार

तारीख १९९९ ई.	नक्षत्रचरण राशि
मार्च ३०	रेव. १
अप्रै. १२	२
अप्रै. २६	३
मई ११	४
२६	अश्वि. १ मेष
जून १२	२
जुला. १	३
२९	४
अग. २५	वक्री
सितं. २०	अश्वि. ३
अक्तू. १९	२
नवं. १४	१
दिसं. २०	मार्गी
सन् २०००ई.	
जन. २५	अश्वि. २
फर. १८	३
मार्च ७	४
२३	भर. १

शुक्र चार (सन् १९९९ई.)

तारीख	नक्षत्रचरण राशि
मार्च १९	अश्वि. ३
२१	४
२४	भर. १
२७	२
२९	३
अप्रै. १	४
अप्रै. ४	कृति. १
७	२ वृष
१०	३
१३	४
१५	रोहि. १
१८	२
२२	३

शुक्र-चार

तारीख १९९९ ई.	नक्षत्रचरण राशि
अप्रै. २७	मृग. १
३०	२
मई ३	३ मिथुन
६	४
९	आर्द्रा १
१२	२
१५	३
१८	४
२१	पुन. १
२४	२
२७	३
३१	४ कर्क
जून. ३	पुष्य १
६	२
१०	३
१३	४
१७	आश्ले. १
२०	२
२४	३
२८	४
जुला. २	मघा १ सिं.
८	२
१३	३
२१	४
३०	वक्री
अग. ७	मघा ३
१४	२
२०	१
२५	आश्ले. ४ कर्क
सितं. १	३
१२	मार्गी
२०	आश्ले. ४
२८	मघा १ सिंह
अक्तू. ३	२
८	३
१२	४
१६	पू.फा. १
२०	२

तारीख १९९९ ई.	नक्षत्रचरण राशि
अक्तू. २७	पू.फा. ४
३१	उ.फा. १
नवं. ३	२ कन्या
६	३
९	४
१२	हस्त १
१५	२
१९	३
२२	४
२५	चित्रा १
२७	२
३०	३ तुला
दिसं. ३	४
६	स्वा. १
९	२
१२	३
१५	४
१७	विशा. १
२०	२
२३	३
२६	४ वृश्चि
२८	अनु. २
३१	१
सन् २०००ई.	
जन. ३	३
६	४
८	ज्ये. १
११	२
१४	३
१७	४
२०	मूल १ धनु
२२	२
२५	३
२८	४
३०	पू.षा. १
फर. २	२

तारीख २००० ई.	नक्षत्रचरण राशि
फर. ८	पू.षा. ४
१०	उ.षा. १
१३	२ मकर
१६	३
१८	४
२१	श्रव. १
२४	२
२६	३
२९	४
मार्च ३	धनि. १
६	२
८	३ कुंभ
११	४
१४	शत. १
१६	२
१९	३
२२	४
२४	पू.भा. १
२७	२
३०	३
अप्रै. १	४ मीन
४	उ.भा. १

शनि चार सन् १९९९-२०००

तारीख	नक्षत्रचरण राशि
अप्रै. ४	अश्वि. ४
मई १	भर. १
२७	२
जून २७	३
अग. ३०	वक्री
नवं. ४	भर. २
दिसं. २७	१
जन. १२	मार्गी
२८	भर. २
मार्च २६	३

राहु-चार

तारीख १९९९ ई.	नक्षत्रचरण राशि
मई १६	आश्ले. २
जुला. १९	१
सितं. २०	पुष्य ४
नवं. २२	३
सन् २०००ई.	
जन. २३	२
मार्च २७	१

केतु-चार सन् १९९९-२०००ई

तारीख	नक्षत्रचरण राशि
मई १६	श्रव. ४
जुला. १९	३
सितं. २०	२
नवं. २२	१
जन. २३	उषा. ४
मार्च २७	३

यूरेनस-चार सन् १९९९-२०००ई.

तारीख	नक्षत्रचरण राशि
मई २२	वक्री
सितं. २	श्रव. ३
अक्तू. २३	मार्गी
दिसं. ११	श्रव. ४
फर. १३	धनि. १

नेपच्यून-चार सन् १९९९-२०००

तारीख	नक्षत्रचरण राशि
मार्च २४	श्रव. १
मई ७	वक्री
जून २१	उ.षा. ४
अक्तू. १४	मार्गी
जन. १९	श्रव. ५

प्लूटो-चार सन् १९९९-२०००ई.

तारीख	नक्षत्रचरण राशि
मार्च १९	अनु. ४
अग. १८	मार्गी
दिसं. ६	ज्ये. १
मार्च १५	वक्री

ग्रहों के वक्र-मार्ग

ग्रह	ता.	वक्र-मार्ग
मंगल	मा.१८	वक्री
,,	जू. ४	मार्गी
बुध	अप्रै.२	मार्गी
,,	जुला.१३	वक्री
,,	अग.६	मार्गी
,,	नवं.५	वक्री
,,	नवं.२५	मार्गी
सन् २०००ई.		
,,	फर.२१	वक्री
,,	मा.१५	मार्गी
सन् १९९९ ई.		
गुरु	अग.२५	वक्री
,,	दिसं.२०	मार्गी

ग्रह	ता.	वक्र-मार्ग
सन् १९९९ई.		
शुक्र	जुला.३०	वक्री
	सितं.१२	मार्गी
शनि	अग.३०	वक्री
	जन. १२ (सन् २०००ई.)	मार्गी
युरेनेप	मई २२ '९९	वक्री
युरेनस	अक्तू.२३	मार्गी
नेप.	मई ७	वर्की
प्लूटो	अग.१८	मार्गी
प्लूटो	मा.१५ (सन् २०००ई.)	वक्री

ग्रहों के उदय-अस्त सन् १९९९-२००० ई.

ग्रह	तारीख	दिशा	उदय/अस्त
बुध	मार्च २६	पूर्व	उदय
,,	मई १५	पूर्व	अस्त
,,	जून ८	पश्चिम	उदय
,,	जुला. १७	पश्चिम	अस्त
,,	अग. ४	पूर्व	उदय
,,	अग. २६	पूर्व	अस्त
,,	सितं. २६	पश्चिम	उदय
,,	नवं. ७	पश्चिम	अस्त
,,	नवं. २४	पूर्व	उदय
,,	दिसं. २१	पूर्व	अस्त
,,	फर. ८ (२००० ई.)	पश्चिम	उदय
,,	,, २१	पश्चिम	अस्त
,,	मार्च ८	पूर्व	उदय
गुरु	मार्च २२, १९९९ ई.	पश्चिम	अस्त
गुरु	अप्रै. २२	पूर्व	उदय
शुक्र	अग.१०	पश्चिम	अस्त
शुक्र	अग.२६	पूर्व	उदय
शनि	अप्रै. ९	पश्चिम	अस्त
शनि	मई १५	पूर्व	उदय

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्तकाल (सं. २०५६वि.)
(भा.स्टैं. टा.)

सन् १९९९ई.	चैत्र शु.	चन्द्रास्त घं.	मि.	सन् १९९९ई.	वैशा. कृ.	चन्द्रोदय घं.	मि.	सन् १९९९ई.	वैशा. शु.	चन्द्रास्त घं.	मि.	सन् १९९९ई.	प्र.ज्ये. कृ.	चन्द्रोदय घं.	मि.
मार्च.१८	१	१९	१४	अप्रै.१	१	१९	०४	अप्रै.१७	१	२०	१५	मई १	१	१९	३८
१९	२	२०	२०	२	२	१९	५८	१८	३	२१	२४	२	२	२०	३०
२०	३	२१	२७	३	२	२०	५१	१९	४	२२	३०	३	३	२१	२३
२१	४	२२	३३	४	३	२१	४३	२०	५	२३	३३	४	४	२२	१४
२२	५	२३	३९	५	४	२२	३६	२१	६	–	–	५	४	२३	०४
२३	६	–	–	६	५	२३	२८	२२	७	०	३१	६	५	२३	५१
२४	८	०	४२	७	६	–	–	२३	८	१	२३	७	६	----	----
२५	९	१	४१	८	७	०	१८	२४	९	२	८	८	७	०	३६
२६	१०	२	३५	९	८	१	०८	२५	१०	२	४९	९	८	१	१९
२७	११	३	२४	१०	९	१	५५	२६	११	३	२७	१०	९	२	००
२८	१२	४	८	११	१०	२	४०	२७	१२	४	०१	११	१०	२	३९
२९	१३	४	४८	१२	११	३	२३	२८	१३	४	३४	१२	११	३	१८
३०	१४	५	२५	१३	१२	४	०५	२९	१४	५	०७	१३	१३	३	५८
३१	१५	५	४९	१४	१३	४	४६	३०	१५	५	४०	१४	१४	४	४०
				१५	१४	५	२६					१५	३०	५	२५
				१६	३०	६	०८								

सन् १९९९ई.	प्र.अ. ज्ये.	चन्द्रास्त घं.	मि.	सन् १९९९ई.	द्वि.ज्ये कृ.	चन्द्रोदय घं.	मि.	सन् १९९९ई.	द्वि.ज्ये. शु.	चन्द्रास्त घं.	मि.	सन् १९९९ई.	आषा. कृ.	चन्द्रोदय घ.	मि.
मई १६	१	२०	१०	मई ३१	१	२०	१०	जून १४	१	२०	०१	जून २९	१	१९	४७
१७	२	२१	१७	जून १	२	२१	०९	१५	२	२१	०२	३०	२	२०	३४
१८	३	२२	२०	२	३	२१	४९	१६	३	२१	५६	जुला.१	२	२१	१९
१९	५	२३	१६	३	४	२२	३५	१७	४	२२	४४	२	३	२२	००
२०	६	----	----	४	५	२३	१८	१८	५	२३	२६	३	४	२२	३९
२१	७	०	०६	५	६	२३	५९	१९	६	----	----	४	५	२३	१७
२२	८	०	४९	६	७	----	----	२०	७	०	०४	५	६	२३	५४
२३	९	१	२८	७	८	०	३८	२१	८	०	३९	६	७	----	----
२४	१०	२	०४	८	९	१	१६	२२	९	१	०२	७	९	०	३१
२५	११	२	३७	९	१०	१	५३	२३	१०	१	४५	८	१०	१	१०
२६	१२	३	१०	१०	११	२	३३	२४	११	२	१७	९	११	१	५२
२७	१३	३	४२	११	१२	३	१४	२५	१२	२	५२	१०	१२	२	३९
२८	१३	४	१६	१२	१३	४	००	२६	१३	३	२८	११	१३	३	३०
२९	१४	४	५१	१३	३०	४	५०	२७	१४	४	०८	१२	१४	४	२८
३०	१५	५	२८					२८	१५	४	५१	१३	३०	५	२९

सन् १९९९ई.	आषा. शु.	चन्द्रास्त घं.	मि.	सन् १९९९ई.	श्राव. कृ.	चन्द्रोदय घं.	मि.	सन् १९९९ई.	श्राव शु.	चन्द्रास्त घं.	मि.	सन् १९९९ई.	भाद्र. कृ.	चन्द्रोदय घं.	मि.
जुला.१४	२	२०	३४	जुला.२९	१	१९	५९	अग.१२	१	१९	५३	अग.२७	१	१९	१७
१५	३	२१	२०	३०	२	२०	४०	१३	२	२०	३२	२८	२	१९	५५
१६	४	२२	००	३१	३	२१	१८	१४	३	२१	०९	२९	३	२०	३३
१७	५	२२	३७	अग.१	४	२१	५६	१५	४	२१	४३	३०	४	२१	११
१८	६	२३	१२	२	५	२२	३२	१६	५	२२	१६	३१	५	२१	५१
१९	७	२३	४५	३	६	२३	१०	१७	६	२२	५०	सितं.१	६	२२	३३
२०	८	----	----	४	७	२३	५०	१८	७	२३	२५	२	७	२३	१९
२१	९	०	१८	५	८	----	----	१९	८	----	----	३	८	----	----
२२	१०	०	५२	६	९	०	३४	२०	९	०	०२	४	९	०	१०
२३	१०	१	२७	७	११	१	२२	२१	१०	०	४३	५	१०	१	०५
२४	११	२	०६	८	१२	२	१५	२२	११	१	२६	६	११	२	०४
२५	१२	२	४७	९	१३	३	१३	२३	१२	२	१४	७	१२	३	०६
२६	१३	३	३३	१०	१४	४	१५	२४	१३	३	०६	८	१४	४	०८
२७	१४	४	२२	११	३०	५	१९	२५	१४	४	०१	९	३०	५	१०
२८	१५	५	१५					२६	१५	४	५८				

सन् १९९९ई.	भाद्र. शु.	चन्द्रास्त घं.	मि.	सन् १९९९ई.	आश्वि कृ.	चन्द्रोदय घं.	मि.	सन् १९९९ई.	आश्वि शु.	चन्द्रास्त घं.	मि.	सन् १९९९ई.	कार्ति. कृ.	चन्द्रोदय घं.	मि.
सितं.१०	१	१९	०५	सितं.२६	१	१९	०८	अक्तू.१०	१	१८	४६	अक्तू.२५	१	१८	२२
११	२	१९	४०	२७	२	१९	४८	११	२	१९	२०	२६	२	१९	०८
१२	३	२०	१४	२८	३	२०	३०	१२	३	१९	५५	२७	३	१९	५८
१३	४	२०	४७	२९	५	२१	१६	१३	४	२०	३०	२८	४	२०	५२
१४	५	२१	२२	३०	६	२२	०६	१४	५	२१	१४	२९	५	२१	५१
१५	५	२१	५९	अक्तू.१	७	२३	००	१५	६	२१	५८	३०	६	२२	५२
१६	६	२२	३७	२	८	२३	५८	१६	७	२२	४६	३१	८	२३	५४
१७	७	२३	२०	३	९	----	----	१७	७	२३	३६	नवं. १	९	----	----
१८	८	----	----	४	१०	०	५९	१८	८	----	----	२	१०	०	५५
१९	९	०	०५	५	११	२	००	१९	९	०	३०	३	११	१	५४
२०	१०	०	५५	६	१२	३	०१	२०	१०	१	२७	४	१२	२	५२
२१	११	१	४८	७	१३	४	००	२१	११	२	२६	५	१३	३	४९
२२	१२	२	४४	८	१४	४	५८	२२	१२	३	२६	६	१४	४	४४
२३	१३	३	४३	९	३०	५	५५	२३	१३	४	२९	७	१४	५	३८
२४	१४	४	४३					२४	१५	५	३४	८	३०	६	३२
२५	१५	५	४५												

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्तकाल (सं. २०५६वि.)

(भा.स्टैं. टा.)

सन् १९९९ई	कार्ति. शु.	चन्द्रास्त घं.	मि.	सन् १९९९ई	मार्ग कृ.	चन्द्रोदय घं.	मि.	सन् १९९९ई	मार्ग. शु.	चन्द्रास्त घं.	मि.	सन् १९९९ई.	पौष कृ.	चन्द्रोदय घं.	मि.
नवं.९	१	१८	३१	नवं. २४	१	२८	३६	दिसं.८	१	१७	५१	दिसं.२३	१	१८	१६
१०	२	१९	११	२५	३	१९	३५	९	२	१८	३६	२४	२	१९	२२
११	३	१९	५३	२६	४	२०	३८	१०	२	१९	२४	२५	३	२०	२८
१२	४	२०	४०	२७	५	२१	४३	११	३	२०	१५	२६	४	२१	३४
१३	५	२१	२९	२८	६	२२	४६	१२	४	२१	०९	२७	५	२२	३६
१४	६	२२	२१	२९	७	२३	४८	१३	५	२२	०४	२८	६	२३	३६
१५	७	२३	१५	३०	८	--	--	१४	६	२३	००	२९	७	--	--
१६	८	--	--	दिसं.१	९	०	४७	१५	७	२३	५७	३०	८	०	३३
१७	९	०	१२	२	१०	१	४४	१६	८	--	--	३१	९	१	२८
१८	१०	१	१०	३	११	२	३९	१७	९	०	५६	सन् २०००ई.			
१९	११	२	१०	४	१२	३	३४	१८	१०	१	५७	जन. १	१०	२	२२
२०	१२	३	१२	५	१३	४	२७	१९	११	३	००	२	११	३	१६
२१	१३	४	१६	६	१४	५	२१	२०	१२	४	०७	३	१२	४	०९
२२	१४	५	२३	७	३०	६	१४	२१	१४	५	१६	४	१३	५	०२
२३	१५	६	३३					२२	१५	६	२६	५	१४	५	५४
												६	३०	६	४५

सन् २०००ई.	पौष शु.	चन्द्रास्त घं.	मि.	सन् २०००ई.	माघ. कृ.	चन्द्रोदय घं.	मि.	सन् २०००ई.	माघ शु.	चन्द्रास्त घ.	मि.	सन् २०००ई.	फाल्गु. कृ.	चन्द्रोदय घं.	मि.
जन.७	१	१८	११	जन. २२	२	१९	११	फर. ६	१	१८	४९	फर.२०	१	१९	००
८	२	१९	०४	२३	३	२०	१७	७	२	१९	४६	२१	२	२०	०२
९	३	१९	५९	२४	४	२१	२०	८	३	२०	४३	२२	३	२१	०३
१०	४	२०	५५	२५	५	२२	२०	९	४	२१	४२	२३	४	२२	०१
११	५	२१	५१	२६	६	२३	१८	१०	५	२२	४१	२४	५	२२	५७
१२	५	२२	४८	२७	७	--	--	११	६	२३	४२	२५	६	२३	५३
१३	६	२३	४७	२८	८	०	१४	१२	७	--	--	२६	७	--	--
१४	७	--	--	२९	९	१	०९	१३	८	०	४५	२७	८	०	४७
१५	९	०	४७	३०	१०	२	०३	१४	९	१	४९	२८	९	१	४०
१६	१०	१	५०	३१	११	२	५६	१५	१०	२	५४	२९	१०	२	३२
१७	११	२	५५	फर. १	११	३	४८	१६	११	३	५७	मार्च१	११	३	२२
१८	१२	४	०२	२	१२	४	३९	१७	१३	४	५८	२	१२	४	१०
१९	१३	५	०९	३	१३	५	२९	१८	१४	५	५३	३	१२	४	५४
२०	१४	६	१४	४	१४	६	१५	१९	१५	६	४३	४	१३	५	३६
२१	१५	७	१४	५	३०	६	५९					५	१४	६	१६
												६	३०	६	५३

सन् २०००ई	फाल्गु. शु.	चन्द्रास्त घं.	मि.	सन् २०००ई.	चैत्र कृ.	चन्द्रोदय घं.	मि.
मार्च७	१	१९	३४	मार्च २१	१	१९	४६
८	२	२०	३४	२२	२	२०	४४
९	३	२१	३६	२३	३	२१	४०
१०	४	२२	३९	२४	४	२२	३६
११	६	२३	४२	२५	५	२३	३१
१२	७	--	--	२६	६	--	--
१३	८	०	४६	२७	७	०	२४
१४	९	१	४९	२८	८	१	१५
१५	१०	२	५०	२९	९	२	०३
१६	११	३	४५	३०	१०	२	४९
१७	१२	४	३५	३१	११	३	३१
१८	१३	५	२१	अप्रै.१	१२	४	११
१९	१४	६	०२	२	१३	४	४९
२०	१५	६	३९	३	१४	५	२६
				४	३०	६	०२

अक्षांश भेद से भारत में चन्द्रदर्शन की तारीखें और चन्द्र के उन्नत शृंग की दिशा तथा अंश (सं.२०५६वि.)

मास	चैत्र		वैशाख		प्र.ज्येष्ठ		द्वि.ज्येष्ठ		आषाढ़		श्रावण		भाद्रपद		आश्विन		कार्तिक		मार्गशीर्ष		पौष		माघ		फाल्गुन	
भारतीय अक्षांश	चन्द्रदर्शन (१९९९ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (१९९९ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (१९९९ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (१९९९ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (१९९९ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (१९९९ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (१९९९ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (१९९९ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (१९९९ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (१९९९ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (२०००ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (२०००ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (२०००ई.)	उन्नत शृंग (अंश)
+५°	१९मा.	द. ८	१७अप्रै	०	१६मई	उ.१०	१५जून	उ.१०	१४जुल.	उ.१५	१२अग.	उ.१५	११सितं	उ.१६	१०अक्तू	उ. ४	९नवं.	उ.४	९दिसं.	उ. १	८ जन.	०	६ फर.	द. १	७ मा.	द. २
+१५°	,, ,,	उ. ४	,, ,,	उ. ११	,, ,,	उ.२०	,, ,,	उ.२१	,, ,,	उ.२५	१३अग.*	उ. २८	,, ,,	उ. २६	,, ,,	उ. १४	,, ,,	उ.१४	,, ,,	उ.११	,, ,,	उ.११	७ फर.	उ. ७	,, ,,	उ. ८
+२५°	,, ,,	उ.१३	,, ,,	उ.२१	,, ,,	उ. ३०	,, ,,	उ.३१	,, ,,	उ.३५	,, ,	उ. ३९	,, ,,	उ. ३६	,, ,, ×	उ. २४	,, ,,	उ.२४	,, ,,	उ.२१	,, ,,	उ.२१	,, ,,	उ.१८	,, ,,	उ. १८
+३५°	,, ,,	उ.२४	,, ,,	उ.३१	,, ,,	उ. ४१	,, ,,	उ.४२	,, ,,	उ. ४५	,, ,,	उ. ५०	,, ,,	उ. ४६	११अक्तू.	उ. ४८	,, ,,	उ. ३४	,, ,,	उ. ३१	,, ,,	उ.३१	,, ,,	उ. २८	,, ,,	उ.२८

* भारत के केवल दक्षिणी छोर पर (चेन्नई, कोचीन, बंगलौर, रामेश्वरम् के आसपास) १२ अगस्त को ही चन्द्र दर्शन होगा ।
× २५° अक्षांश पर भी १० अक्तूबर को चन्द्रदर्शन की संभावना कम ही है ।

'मार्तण्ड पंचांग' में दिये चण्डीगढ़ीय चन्द्रोदयास्त से प्रमुख कुछ शहरों में चन्द्रोदयास्त जानने की विधि

लेखक –डा. शक्तिधर शर्मा

इस पंचांग में लग्न, सूर्योदयास्तादि के परिवर्तन की सारणियां पिछले समय से दी जाती रही हैं। चन्द्रोदयास्त के परिवर्तन की सारणी इस बार सैद्धान्तिक उपपत्ति से विचार कर बनाई गई है। जो पंचांगप्रेमियों के हितार्थ यहां दी जा रही हैं । वस्तुतः शुद्ध चन्द्रोदयास्त गणित अपेक्षाकृत कठिन है और यह समझा जाता है कि इसके लिए सूक्ष्म परिणाम देने वाली सारणियां बनाना कठिन है । इस सारणी में विशेषता यह है कि केवल एक फल में ही सभी संस्कार समाविष्ट कर दिये गये हैं, इस प्रकार इसका उपयोग अत्यन्त ही सरल है। आप देखेंगे कि सारणी में उपकरण केवलमात्र चन्द्रक्रान्ति है, जो कि चण्डीगढ़ीय चन्द्रोदय या चन्द्रास्त के समय की ही लेनी होगी। निरयण ग्रह स्पष्टों वाले पृष्ठों पर इसी पंचांग में राहु के भोगांश के बाद सूर्य की क्रान्ति, तदनन्तर चन्द्रक्रान्ति एवं चन्द्रशर के कालम हैं, जिनसे चन्द्रमा की क्रान्ति किसी भी अभीष्ट समय के लिए सरलता से अनुपात द्वारा जानी जा सकती हैं। इससे अभीष्ट तारीख के चण्डीगढ़ीय चन्द्रोदयास्त के समय की तात्कालिक चन्द्रक्रान्ति ज्ञात कर लीजिए,और इसे उपकरण मानकर मद्रास, बंगलौर, कलकत्ता, शिमला, जयपुर, बम्बई व देहली में चन्द्रोदयास्त जानने के लिए निम्नलिखित निर्देश अनुसार प्रथम या द्वितीय फल ज्ञात करें –

यदि क्रान्ति धन हो तो अस्त के लिए 'प्रथप फल ' उदय के लिए 'द्वितीय फल'।

यदि क्रान्ति ऋण हो तो अस्त के लिए 'द्वितीय फल' और उदय के लिए 'प्रथम फल'।

इस फल को चिह्नानुसार चण्डीगढ़ीय उदय या अस्त में जोड़ने, घटाने से अभीष्ट स्थानीय चन्द्रोदयास्त ज्ञात हो जाएगा। इस चन्द्रोदयास्त में कभी ही १ या २ मिनट की अशुद्धि हो सकती है। वस्तुतः इस सारणी से प्राप्त परिणाम काफी सूक्ष्म होगें। चन्द्रोदयास्त गणित में विषुवकाल एवं क्रान्ति से असकृत्कर्म करना पड़ता है। इस कठिन परिश्रम के बिना ही पर्याप्त सूक्ष्म परिणाम इस एकमात्र सारणी की सहायता से सहज ही प्राप्त होगें। नीचे दिये उदाहरणों से यह प्रक्रिया स्पष्ट हो जाएगी-

कल्पना करो कि हमें तारीख २५ अगस्त १९८७ को चन्द्रास्त कलकत्ता के लिए मालूम करना है । इस पंचांग में २५ अगस्त को चण्डीगढ़ीय चन्द्रास्त १९ घं. ३१ मि. पर है। स्पष्ट निरयण ग्रहों वाले पृष्ठों पर २५ अगस्त को चन्द्रक्रान्ति तथा २६ अगस्त को भी इसका मान देखिये –

२५ अगस्त १९८७ को चन्द्रक्रान्ति = +११।६'

२६ ,, ,, ,, ,, = +५°।२९'

ये दोनों प्रातः ५ घं. ३० मि. भा. स्टैं. टा. की हैं। क्योंकि चण्डीगढ़ में चन्द्रास्त १९ घं. ३१ मिनट पर है तो हमें इस समय की चन्द्रक्रान्ति जानने के लिए अनुपात करना होगा।

यह स्पष्ट है कि एक दिन में चन्द्रक्रान्ति की गति =११°।६'–५°।२९' = ५°।३७' है। हमारे अभीष्ट समय १९ घं. ३१ मि. का ५ घं. ३० मि. से अन्तर १४ घं. १ मि. आया। इससे क्रान्तिगति से अनुपात करने पर अनुपात फल ३°।१६' आया। क्योंकि २५ के बाद २६ अगस्त को क्रान्ति घटी है अतः इसे ११°।६ में से घटाने पर तात्कालिक चन्द्रक्रान्ति =+७°।५०' प्राप्त हुई। इसके अंश मात्र ही सारणी से फल प्राप्त करने के लिए पर्याप्त होंगे। अतः चन्द्रक्रान्ति ८° के सम्मुख कलकत्ता के नीचे हमें प्रथमफल प्राप्त करना होगा (क्योंकि क्रान्ति धन है) । सारणी में देखने से यह फल –५४ मिनट प्राप्त हुआ। अतः १९ घं. ३१ मि. से ५४ मिनट घटाने पर १८ घं. ३७ मि. भा. स्टैं. टा. चन्द्रास्त का समय आया। यदि चन्द्रोदय ज्ञात करना हो तो द्वितीय फल लेना होगा। परन्तु शुक्ल पक्ष होने से इस दिन पञ्चांग में चन्द्रोदय नहीं दिया । अतः चन्द्रोदय के उदाहरण के रुप में हम यहां ता. २४ अगस्त' ८७ के दिन बम्बई में चन्द्रोदय ज्ञात करेंगे। इस दिन चण्डीगढ़ में चन्द्रोदय ५ घं. २९ मि. है इस समय की क्रान्ति हमें (निरयणस्पष्ट ग्रहों वाले पृष्ठों से) +१६°।१५' प्राप्त हुई (यहां अनुपात करने की भी आवश्यकता नहीं पड़ी क्योंकि चन्द्रक्रान्ति ५ घ. ३० मिनट की ही है।) अतः क्रान्ति१६° के आगे सारणी में बम्बई के कालम में से हमें द्वितीयफल लेना होगा (क्योंकि क्रान्ति धन है।) सारणी से देखने पर द्वितीयफल +३४ मि. प्राप्त हुआ। अतः ५ घं. २९ मि. में ३४ मिनट जोड़ने पर इस दिन बम्बई में चन्द्रोदय ६ घं. ३ मिनट आया।

स्थानीय चन्द्रोदयास्त का ज्ञान कृष्णजन्माष्टमी, श्रीगणेश चतुर्थी तथा करक चतुर्थी आदि व्रतों के लिए अत्यन्त आवश्यक है। चण्डीगढ़ से दूर कलकत्ता आदि नगरों में रहने वाले श्री मार्तण्ड पंचांग के प्रेमी लोग भी इस सारणी की मदद से इन व्रत-पर्वो के दिन चन्द्रोदयास्त काल सरलता से जान सकते हैं।

चन्द्रोदयास्त – परिवर्तन – सारिणी

चन्द्र-क्रान्ति	कलकत्ता		बम्बई		मद्रास		बंगलौर		दिल्ली		जयपुर		शिमला	
	प्रथम फल	द्वितीय फल	प्रथम फल	द्वितीय फल	प्रथम फल	द्वितीय फल	प्रथम फल	द्वितीय फल	प्रथम फल	द्वितीय फल	प्रथम फल	द्वितीय फल	प्रथम फल	द्वितीय फल
अंश	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट
०	-४८	-४८	+१७	+१७	-१४	-१४	-३	-३	-१	-१	+४	+४	-१	-१
१	-४९	-४८	+१६	+१८	-१५	-१२	-५	-२	-१	-१	+४	+४	-१	-२
२	-५०	-४७	+१४	+१९	-१७	-११	-६	०	-२	-१	+३	+५	-१	-२
३	-५०	-४७	+१३	+२०	-१९	-९	-७	+१	-२	-१	+३	+५	-१	-२
४	-५१	-४५	+१२	+२१	-२१	-८	-९	+३	-२	०	+३	+५	-१	-२
५	-५२	-४४	+११	+२२	-२२	-६	-१०	+४	-२	०	+२	+६	-१	-२
६	-५३	-४३	+१०	+२३	-२३	-५	-१२	+६	-३	०	+२	+६	-१	-२
७	-५३	-४२	+९	+२४	-२५	-३	-१३	+७	-३	०	+२	+६	-१	-२
८	-५४	-४१	+८	+२५	-२६	-२	-१५	+९	-३	०	+१	+७	-१	-२
९	-५५	-४१	+७	+२६	-२८	-१	-१७	+१०	-३	०	+१	+७	-१	-२
१०	-५५	-४०	+६	+२७	-३०	+१	-१९	+१२	-३	+१	०	+८	-१	-२
११	-५६	-३९	+५	+२८	-३१	+३	-२०	+१३	-४	+१	०	+८	-१	-२
१२	-५७	-३८	+४	+२९	-३२	+४	-२१	+१५	-४	+१	०	+८	-१	-२
१३	-५८	-३८	+३	+३०	-३४	+६	-२३	+१७	-४	+१	-१	+९	-१	-२
१४	-५८	-३७	+१	+३१	-३६	+७	-२५	+१९	-४	+१	-१	+९	-१	-२
१५	-५९	-३६	०	+३२	-३७	+९	-२६	+२०	-४	+२	-१	+९	-१	-२
१६	-६०	-३५	-१	+३४	-३९	+१०	-२८	+२२	-५	+२	-२	+१०	-१	-२
१७	-६१	-३४	-२	+३५	-४०	+१२	-३०	+२४	-५	+२	-२	+१०	-१	-२
१८	-६२	-३४	-३	+३६	-४२	+१४	-३१	+२५	-५	+२	-३	+११	-१	-२
१९	-६३	-३३	-४	+३७	-४४	+१६	-३३	+२७	-५	+३	-३	+११	-१	-२
२०	-६३	-३२	-५	+३८	-४६	+१८	-३५	+२९	-६	+३	-३	+११	-१	-२
२१	-६४	-३१	-७	+३९	-४८	+२०	-३६	+३०	-६	+३	-४	+१२	-१	-२
२२	-६५	-३०	-८	+४०	-५०	+२१	-३८	+३२	-६	+३	-४	+१२	-१	-२
२३	-६६	-२९	-९	+४२	-५१	+२३	-४०	+३४	-६	+४	-५	+१३	-१	-२
२४	-६७	-२८	-१०	+४३	-५३	+२५	-४२	+३६	-६	+४	-५	+१३	०	-३
२५	-६८	-२७	-१२	+४४	-५५	+२७	-४४	+३७	-७	+४	-६	+१४	०	-३
२६	-६९	-२६	-१३	+४६	-५७	+२९	-४६	+३९	-७	+४	-६	+१४	०	-३
२७	-७०	-२६	-१५	+४८	-५९	+३१	-४८	+४१	-७	+५	-७	+१५	०	-३
२८	-७१	-२४	-१७	+५०	-६१	+३३	-५०	+४३	-८	+५	-७	+१६	०	-३
२९	-७२	-२३	-१८	+५१	-६३	+३५	-५२	+४५	-८	+५	-८	+१७	०	-३
३०	-७३	-२३	-२०	+५२	-६५	+३७	-५५	+४८	-८	+६	-८	+१७	०	-३

यदि चन्द्रक्रान्ति धन हो तो अस्त के लिए प्रथमफल और उदय के लिए द्वितीयफल लें, यदि चन्द्रक्रान्ति ऋण हो तो अस्त के लिए द्वितीय फल तथा उदय के लिए प्रथमफल लें ।

दैनिक लग्नसारणी, चंडीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा. स्टै.टा.]

वैशाख

	अंग्रेजी तारीखें	वैशाख प्रविष्टे	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
	१३	१	७ ३६	९ ३०	११ ४४	१४ ७	१६ २७	१८ ४४	२१ ६	२३ २६	१ ३१	३ १२	४ ३७	५ ५९
	१४	२	७ ३२	९ २६	११ ४०	१४ ३	१६ २३	१८ ४०	२१ २	२३ २२	१ २७	३ ८	४ ३३	५ ५५
	१५	३	७ २८	९ २२	११ ३७	१३ ५९	१६ १९	१८ ३६	२० ५८	२३ १८	१ २३	३ ४	४ २९	५ ५१
	१६	४	७ २४	९ १८	११ ३३	१३ ५५	१६ १५	१८ ३३	२० ५४	२३ १४	१ १९	३ ०	४ २५	५ ४७
	१७	५	७ २०	९ १४	११ २९	१३ ५१	१६ ११	१८ २९	२० ५०	२३ १०	१ १५	२ ५६	४ २१	५ ४३
	१८	६	७ १६	९ ११	११ २५	१३ ४७	१६ ७	१८ २५	२० ४६	२३ ६	१ ११	२ ५२	४ १७	५ ३९
	१९	७	७ १२	९ ७	११ २१	१३ ४३	१६ ३	१८ २१	२० ४२	२३ २	१ ७	२ ४८	४ १३	५ ३५
	२०	८	७ ८	९ ३	११ १७	१३ ३९	१५ ५९	१८ १७	२० ३८	२२ ५८	१ ३	२ ४४	४ ९	५ ३१
	२१	९	७ ४	८ ५९	११ १३	१३ ३५	१५ ५५	१८ १३	२० ३४	२२ ५४	० ५९	२ ४०	४ ५	५ २८
अप्रैल	२२	१०	७ ०	८ ५५	११ ९	१३ ३१	१५ ५१	१८ ९	२० ३०	२२ ५१	० ५५	२ ३६	४ १	५ २४
	२३	११	६ ५६	८ ५१	११ ५	१३ २७	१५ ४७	१८ ५	२० २७	२२ ४७	० ५१	२ ३२	३ ५७	५ २०
	२४	१२	६ ५२	८ ४७	११ १	१३ २३	१५ ४३	१८ १	२० २३	२२ ४३	० ४७	२ २८	३ ५३	५ १६
	२५	१३	६ ४८	८ ४३	१० ५७	१३ १९	१५ ३९	१७ ५७	२० १९	२२ ३९	० ४३	२ २४	३ ४९	५ १२
	२६	१४	६ ४४	८ ३९	१० ५३	१३ १६	१५ ३६	१७ ५३	२० १५	२२ ३५	० ३९	२ २०	३ ४५	५ ८
	२७	१५	६ ४१	८ ३५	१० ४९	१३ १२	१५ ३२	१७ ४९	२० ११	२२ ३१	० ३५	२ १६	३ ४२	५ ४
	२८	१६	६ ३७	८ ३१	१० ४५	१३ ८	१५ २८	१७ ४५	२० ७	२२ २७	० ३२	२ १३	३ ३८	५ ०
	२९	१७	६ ३३	८ २७	१० ४२	१३ ४	१५ २४	१७ ४१	२० ३	२२ २३	० २८	२ ९	३ ३४	४ ५६
	३०	१८	६ २९	८ २३	१० ३८	१३ ०	१५ २०	१७ ३७	१९ ५९	२२ १९	० २४	२ ५	३ ३०	४ ५२
	१	१९	६ २५	८ १९	१० ३४	१२ ५६	१५ १६	१७ ३४	१९ ५५	२२ १५	० २०	२ १	३ २६	४ ४८
	२	२०	६ २१	८ १६	१० ३०	१२ ५२	१५ १२	१७ ३०	१९ ५१	२२ ११	० १६	१ ५७	३ २२	४ ४४
	३	२१	६ १७	८ १२	१० २६	१२ ४८	१५ ८	१७ २६	१९ ४७	२२ ७	० १२	१ ५३	३ १८	४ ४०
	४	२२	६ १३	८ ८	१० २२	१२ ४४	१५ ४	१७ २२	१९ ४३	२२ ३	० ८	१ ४९	३ १४	४ ३६
	५	२३	६ ९	८ ४	१० १८	१२ ४०	१५ ०	१७ १८	१९ ३९	२१ ५९	० ४	१ ४५	३ १०	४ ३२
मई	६	२४	६ ५	८ ०	१० १४	१२ ३६	१४ ५६	१७ १४	१९ ३५	२१ ५६	० ०	१ ४१	३ ६	४ २९
	७	२५	६ १	७ ५६	१० १०	१२ ३२	१४ ५२	१७ १०	१९ ३२	२१ ५२	२३ ५६	१ ३७	३ २	४ २५
	८	२६	५ ५७	७ ५२	१० ६	१२ २८	१४ ४८	१७ ६	१९ २८	२१ ४८	२३ ५२	१ ३३	२ ५८	४ २१
	९	२७	५ ५३	७ ४८	१० २	१२ २४	१४ ४४	१७ २	१९ २४	२१ ४४	२३ ४८	१ २९	२ ५४	४ १७
	१०	२८	५ ४९	७ ४४	९ ५८	१२ २०	१४ ४०	१६ ५८	१९ २०	२१ ४०	२३ ४४	१ २५	२ ५०	४ १३
	११	२९	५ ४६	७ ४०	९ ५४	१२ १७	१४ ३६	१६ ५४	१९ १६	२१ ३६	२३ ४०	१ २१	२ ४६	४ ९
	१२	३०	५ ४२	७ ३६	९ ५०	१२ १३	१४ ३३	१६ ५०	१९ १२	२१ ३२	२३ ३७	१ १८	२ ४३	४ ५
	१३	३१	५ ३८	७ ३२	९ ४६	१२ ९	१४ २९	१६ ४६	१९ ८	२१ २८	२३ ३३	१ १४	२ ३९	४ १
	[illegible]		५ ३४											

ज्येष्ठ

	अंग्रेजी तारीखें	ज्येष्ठ प्रविष्टे	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
	१४	१	७ २८	९ ४३	१२ ५	१४ २५	१६ ४२	१९ ४	२१ २४	२३ २९	१ १०	२ ३५	३ ५७	५ ३०
	१५	२	७ २४	९ ३९	१२ १	१४ २१	१६ ३९	१९ ०	२१ २०	२३ २५	१ ६	२ ३१	३ ५३	५ २६
	१६	३	७ २०	९ ३५	११ ५७	१४ १७	१६ ३५	१८ ५६	२१ १६	२३ २१	१ २	२ २७	३ ४९	५ २२
	१७	४	७ १७	९ ३१	११ ५३	१४ १३	१६ ३१	१८ ५२	२१ १२	२३ १७	० ५८	२ २३	३ ४५	५ १८
	१८	५	७ १३	९ २७	११ ४९	१४ ९	१६ २७	१८ ४८	२१ ८	२३ १३	० ५४	२ १९	३ ४१	५ १४
	१९	६	७ ९	९ २३	११ ४५	१४ ५	१६ २३	१८ ४४	२१ ४	२३ ९	० ५०	२ १५	३ ३७	५ १०
	२०	७	७ ५	९ १९	११ ४१	१४ १	१६ १९	१८ ४०	२१ १	२३ ५	० ४६	२ ११	३ ३४	५ ६
	२१	८	७ १	९ १५	११ ३७	१३ ५७	१६ १५	१८ ३६	२० ५७	२३ १	० ४२	२ ७	३ ३०	५ २
	२२	९	६ ५७	९ ११	११ ३३	१३ ५३	१६ ११	१८ ३३	२० ५३	२२ ५७	० ३८	२ ३	३ २६	४ ५८
	२३	१०	६ ५३	९ ७	११ २९	१३ ४९	१६ ७	१८ २९	२० ४९	२२ ५३	० ३४	१ ५९	३ २२	४ ५४
मई	२४	११	६ ४९	९ ३	११ २५	१३ ४५	१६ ३	१८ २५	२० ४५	२२ ४९	० ३०	१ ५५	३ १८	४ ५०
	२५	१२	६ ४५	८ ५९	११ २२	१३ ४१	१५ ५९	१८ २१	२० ४१	२२ ४२	० २६	१ ५१	३ १४	४ ४७
	२६	१३	६ ४१	८ ५५	११ १८	१३ ३८	१५ ५५	१८ १७	२० ३७	२२ ४२	० २२	१ ४८	३ १०	४ ४३
	२७	१४	६ ३७	८ ५१	११ १४	१३ ३४	१५ ५१	१८ १३	२० ३३	२२ ३८	० १९	१ ४४	३ ६	४ ३९
	२८	१५	६ ३३	८ ४७	११ १०	१३ ३०	१५ ४७	१८ ९	२० २९	२२ ३४	० १५	१ ४०	३ २	४ ३५
	२९	१६	६ २९	८ ४४	११ ६	१३ २६	१५ ४३	१८ ५	२० २५	२२ ३०	० ११	१ ३६	२ ५८	४ ३१
	३०	१७	६ २५	८ ४०	११ २	१३ २२	१५ ४०	१८ १	२० २१	२२ २६	० ७	१ ३२	२ ५४	४ २७
	३१	१८	६ २२	८ ३६	१० ५८	१३ १८	१५ ३६	१७ ५७	२० १७	२२ २२	० ३	१ २८	२ ५०	४ २३
	१	१९	६ १८	८ ३२	१० ५४	१३ १४	१५ ३२	१७ ५३	२० १३	२२ १८	२३ ५९	१ २४	२ ४६	४ १९
	२	२०	६ १४	८ २८	१० ५०	१३ १०	१५ २८	१७ ४९	२० ९	२२ १४	२३ ५५	१ २०	२ ४२	४ १५
	३	२१	६ १०	८ २४	१० ४६	१३ ६	१५ २४	१७ ४५	२० ५	२२ १०	२३ ५१	१ १६	२ ३८	४ ११
	४	२२	६ ६	८ २०	१० ४२	१३ २	१५ २०	१७ ४१	२० २	२२ ६	२३ ४७	१ १२	२ ३५	४ ७
	५	२३	६ २	८ १६	१० ३८	१२ ५८	१५ १६	१७ ३७	१९ ५८	२२ २	२३ ४३	१ ८	२ ३१	४ ३
	६	२४	५ ५८	८ १२	१० ३४	१२ ५४	१५ १२	१७ ३४	१९ ५४	२१ ५८	२३ ३९	१ ४	२ २७	३ ५९
	७	२५	५ ५४	८ ८	१० ३०	१२ ५०	१५ ८	१७ ३०	१९ ५०	२१ ५४	२३ ३५	१ ०	२ २३	३ ५५
जून	८	२६	५ ५०	८ ४	१० २६	१२ ४६	१५ ४	१७ २६	१९ ४६	२१ ५०	२३ ३१	० ५६	२ १९	३ ५१
	९	२७	५ ४६	८ ०	१० २३	१२ ४३	१५ ०	१७ २२	१९ ४२	२१ ४६	२३ २७	० ५२	२ १५	३ ४८
	१०	२८	५ ४२	७ ५६	१० १९	१२ ३९	१४ ५६	१७ १८	१९ ३८	२१ ४३	२३ २३	० ४९	२ ११	३ ४४
	११	२९	५ ३८	७ ५२	१० १५	१२ ३५	१४ ५२	१७ १४	१९ ३४	२१ ३९	२३ २०	० ४५	२ ७	३ ४०
	१२	३०	५ ३४	७ ४९	१० ११	१२ ३१	१४ ४८	१७ १०	१९ ३०	२१ ३५	२३ १६	० ४१	२ ३	३ ३६
	१३	३१	५ ३०	७ ४५	१० ७	१२ २७	१४ ४५	१७ ६	१९ २६	२१ ३१	२३ १२	० ३७	१ ५९	३ ३२
	१४ आ १		५ २६											

दैनिक लग्नसारणी, चंडीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

आषाढ़

	अंग्रेजी तारीखें	आषाढ़ प्रविष्टे	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु. घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.
	१४	१	७ ४१	१० ३	१२ २३	१४ ४१	१७ २	१९ २२	२१ २७	२३ ८	० ३३	१ ५५	३ २८	५ २३
	१५	२	७ ३७	९ ५९	१२ १९	१४ ३७	१६ ५८	१९ १८	२१ २३	२३ ४	० २९	१ ५१	३ २४	५ १९
	१६	३	७ ३३	९ ५५	१२ १५	१४ ३३	१६ ५४	१९ १४	२१ १९	२३ ०	० २५	१ ४७	३ २०	५ १५
	१७	४	७ २९	९ ५१	१२ ११	१४ २९	१६ ५०	१९ १०	२१ १५	२२ ५६	० २१	१ ४३	३ १६	५ ११
	१८	५	७ २५	९ ४७	१२ ७	१४ २५	१६ ४६	१९ ६	२१ ११	२२ ५२	० १७	१ ३९	३ १२	५ ७
	१९	६	७ २१	९ ४३	१२ ३	१४ २१	१६ ४२	१९ ३	२१ ७	२२ ४८	० १३	१ ३६	३ ८	५-३
	२०	७	७ १७	९ ३९	११ ५९	१४ १७	१६ ३९	१८ ५९	२१ ३	२२ ४४	० ९	१ ३२	३ ४	४ ५९
	२१	८	७ १३	९ ३५	११ ५५	१४ १३	१६ ३५	१८ ५५	२० ५९	२२ ४०	० ५	१ २८	३ ०	४ ५५
	२२	९	७ ९	९ ३१	११ ५१	१४ ९	१६ ३१	१८ ५१	२० ५५	२२ ३६	० १	१ २४	२ ५६	४ ५१
जून	२३	१०	७ ५	९ २७	११ ४७	१४ ५	१६ २७	१८ ४७	२० ५१	२२ ३२	२३ ५७	१ २०	२ ५३	४ ४७
	२४	११	७ १	९ २४	११ ४४	१४ १	१६ २३	१८ ४३	२० ४८	२२ २८	२३ ५४	१ १६	२ ४९	४ ४३
	२५	१२	६ ५७	९ २०	११ ४०	१३ ५७	१६ १९	१८ ३९	२० ४४	२२ २५	२३ ५०	१ १२	२ ४५	४ ३९
	२६	१३	६ ५३	९ १६	११ ३६	१३ ५३	१६ १५	१८ ३५	२० ४०	२२ २१	२३ ४६	१ ८	२ ४१	४ ३५
	२७	१४	६ ५०	९ १२	११ ३२	१३ ४९	१६ ११	१८ ३१	२० ३६	२२ १७	२३ ४२	१ ४	२ ३७	४ ३१
	२८	१५	६ ४६	९ ८	११ २८	१३ ४६	१६ ७	१८ २७	२० ३२	२२ १३	२३ ३८	१ ०	२ ३३	४ २७
	२९	१६	६ ४२	९ ४	११ २४	१३ ४२	१६ ३	१८ २३	२० २८	२२ ९	२३ ३४	०.५६	२ २९	४ २४
	३०	१७	६ ३८	९ ०	११ २०	१३ ३८	१५ ५९	१८ १९	२० २४	२२ ५	२३ ३०	० ५२	२ २५	४ २०
	१	१८	६ ३४	८ ५६	११ १६	१३ ३४	१५ ५५	१८ १५	२० २०	२२ १	२३ २६	० ४८	२ २१	४ १६
	२	१९	६ ३०	८ ५२	११ १२	१३ ३०	१५ ५१	१८ ११	२० १६	२१ ५७	२३ २२	० ४४	२ १७	४ १२
	३	२०	६ २६	८ ४८	११ ८	१३ २६	१५ ४७	१८ ८	२० १२	२१ ५३	२३ १८	० ४१	२ १३	४ ८
	४	२१	६ २२	८ ४४	११ ४	१३ २२	१५ ४३	१८ ४	२० ८	२१ ४९	२३ १४	० ३७	२ ९	४ ४
	५	२२	६ १८	८ ४०	११ ०	१३ १८	१५ ४०	१८ ०	२० ४	२१ ४५	२३ १०	० ३३	२ ५	४ ०
जुलाई	६	२३	६ १४	८ ३६	१० ५६	१३ १४	१५ ३६	१७ ५६	२० ०	२१ ४१	२३ ६	० २९	२ १	३ ५६
	७	२४	६ १०	८ ३२	१० ५२	१३ १०	१५ ३२	१७ ५२	१९ ५६	२१ ३७	२३ २	० २५	१ ५७	३ ५५
	८	२५	६ ६	८ २९	१० ४९	१३ ६	१५ २८	१७ ४८	१९ ५२	२१ ३३	२२ ५८	० २१	१ ५४	३ ४८
	९	२६	६ २	८ २५	१० ४५	१३ २	१५ २४	१७ ४४	१९ ४९	२१ २९	२२ ५५	० १७	१ ५०	३ ४४
	१०	२७	५ ५८	८ २१	१० ४१	१२ ५८	१५ २०	१७ ४०	१९ ४५	२१ २६	२२ ५१	० १३	१ ४६	३ ४०
	११	२८	५ ५५	८ १७	१० ३७	१२ ५४	१५ १६	१७ ३६	१९ ४१	२१ २२	२२ ४७	० ९	१ ४२	३ ३६
	१२	२९	५ ५१	८ १३	१० ३३	१२ ५०	१५ १२	१७ ३२	१९ ३७	[illegible]	२२ ४३	० ५	१ ३८	३ ३२
	१३	३०	५ ४७	८ ९	१० २९	१२ ४७	१५ ८	१७ २८	१९ ३३	२१ १४	२२ ३९	० १	१ ३४	३ २९
	१४	३१	५ ४३	८ ५	१० २५	१२ ४३	१५ ४	१७ २४	१९ २९	२१ १०	२२ ३५	२३ ५७	१ ३०	३ २५
	१५	३२	५ ३९	८ १	१० २१	१२ ३९	१५ ०	१७ २०	१९ २५	२१ ६	२२ ३१	२३ ५३	१ २६	३ २१

श्रावण

	अंग्रेजी तारीखें	श्रावण प्रविष्टे	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन. घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.
	१६	१	७ ५७	१० १७	१२ ३५	१४ ५६	१७ १६	१९ २१	२१ २	२२ २७	२३ ४९	१ २२	३ १७	५ ३१
	१७	२	७ ५३	१० १३	१२ ३१	१४ ५२	१७ १२	१९ १७	२० ५८	२२ २३	२३ ४५	१ १८	३ १३	५ २७
	१८	३	७ ४९	१० ९	१२ २७	१४ ४८	१७ ९	१९ १३	२० ५४	२२ १९	२३ ४१	१ १४	३ ९	५ २३
	१९	४	७ ४५	१० ५	१२ २३	१४ ४५	१७ ५	१९ ९	२० ५०	२२ १५	२३ ३८	१ १०	३ ५	५ १९
	२०	५	७ ४१	१० १	१२ १९	१४ ४१	१७ १	१९ ५	२० ४६	२२ ११	२३ ३४	१ ६	३ १	५ १५
	२१	६	७ ३७	९ ५७	१२ १५	१४ ३७	१६ ५७	१९ १	२० ४२	२२ ७	२३ ३०	१ २	२ ५७	५ ११
	२२	७	७ ३३	९ ५३	१२ ११	१४ ३३	१६ ५३	१८ ५७	२० ३८	२२ ३	२३ २६	० ५८	२ ५३	५ ७
	२३	८	७ ३०	९ ५०	१२ ७	१४ २९	१६ ४९	१८ ५३	२० ३४	२१ ५९	२३ २२	० ५५	२ ४९	५ ३
जुलाई	२४	९	७ २६	९ ४६	१२ ३	१४ २५	१६ ४५	१८ ५०	२० ३०	२१ ५६	२३ १८	० ५१	२ ४५	४ ५९
	२५	१०	७ २२	९ ४२	११ ५९	१४ २१	१६ ४१	१८ ४६	२० २७	२१ ५२	२३ १४	० ४७	२ ४१	४ ५६
	२६	११	७ १८	९ ३८	११ ५५	१४ १७	१६ ३७	१८ ४२	२० २३	२१ ४८	२३ १०	० ४३	२ ३७	४ ५२
	२७	१२	७ १४	९ ३४	११ ५२	१४ १३	१६ ३३	१८ ३८	२० १९	२१ ४४	२३ ६	० ३९	२ ३३	४ ४८
	२८	१३	७ १०	९ ३०	११ ४८	१४ ९	१६ २९	१८ ३४	२० १५	२१ ४०	२३ २	० ३५	२ ३०	४ ४४
	२९	१४	७ ६	९ २६	११ ४४	१४ ५	१६ २५	१८ ३०	२० ११	२१ ३६	२२ ५८	० ३१	२ २६	४ ४०
	३०	१५	७ २	९ २२	११ ४०	१४ १	१६ २१	१८ २६	२० ७	२१ ३२	२२ ५४	० २७	२ २२	४ ३६
	३१	१६	६ ५८	९ १८	११ ३६	१३ ५७	१६ १७	१८ २२	२० ३	२१ २८	२२ ५०	० २३	२ १८	४ ३१
	१	१७	६ ५४	९ १४	११ ३२	१३ ५३	१६ १३	१८ १८	१९ ५९	२१ २४	२२ ४७	० १९	२ १४	४ २८
	२	१८	६ ५०	९ १०	११ २८	१३ ४९	१६ १०	१८ १४	१९ ५५	२१ २०	२२ ४३	० १५	२ १०	४ २४
	३	१९	६ ४६	९ ६	११ २४	१३ ४६	१६ ६	१८ १०	१९ ५१	२१ १६	२२ ३९	० ११	२ ६	४ २०
	४	२०	६ ४२	९ २	११ २०	१३ ४२	१६ २	१८ ६	१९ ४७	२१ १२	२२ ३५	० ७	२ २	४ १६
	५	२१	६ ३८	८ ५८	११ १६	१३ ३८	१५ ५८	१८ २	१९ ४३	२१ ८	२२ ३१	० ३	१ ५८	४ १२
अगस्त	६	२२	६ ३४	८ ५४	११ १२	१३ ३४	१५ ५४	१७ ५८	१९ ३९	२१ ४	२२ २७	० ०	१ ५४	४ ८
	७	२३	६ ३१	८ ५१	११ ८	१३ ३०	१५ ५०	१७ ५५	१९ ३५	२१ १	२२ २३	२३ ५६	१ ५०	४ ४
	८	२४	६ २७	८ ४७	११ ४	१३ २६	१५ ४६	१७ ५१	१९ ३२	२० ५७	२२ १९	२३ ५२	१ ४६	४ ०
	९	२५	६ २३	८ ४३	११ ०	१३ २२	१५ ४२	१७ ४७	१९ २८	२० ५३	२२ १५	२३ ४८	१ ४२	३ ५७
	१०	२६	६ १९	८ ३९	१० ५६	१३ १८	१५ ३८	१७ ४३	१९ २४	२० ४९	२२ ११	२३ ४४	१ ३८	३ ५३
	११	२७	६ १५	८ ३५	१० ५३	१३ १४	१५ ३४	१७ ३९	१९ २०	२० ४५	२२ ७	२३ ४०	१ ३४	३ ४९
	१२	२८	६ ११	८ ३१	१० ४९	१३ १०	१५ ३०	१७ ३५	१९ १६	२० ४१	२२ ३	२३ ३६	१ ३१	३ ४५
	१३	२९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] ६	१५ २६	१७ ३१	१९ १२	२० ३७	२१ ५९	२३ ३२	१ २७	३ ४१
	१४	३०	६ ३	८ २३	१० ४२	१३ २	१५ २२	१७ २७	१९ ८	२० ३३	२१ ५५	२३ २८	१ २३	३ ३७
	१५	३१	५ ५९	८ १९	१० ३७	१२ ५८	१५ १८	१७ २३	१९ ४	२० २९	२१ ५१	२३ २४	१ १९	३ ३३

दैनिक लग्न सारणी, चंडीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं. टा.]

भाद्रपद

मास	अंग्रेजी तारीखें	भाद्रपद प्रविष्टे	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.
अगस्त	१६	१	८ १५	१० ३३	१२ ५४	१५ १५	१७ १९	१९ ०	२० २५	२१ ४८	२३ २०	१ १५	३ २९	५ ५१
	१७	२	८ ११	१० २९	१२ ५०	१५ ११	१७ १५	१८ ५६	२० २१	२१ ४४	२३ १६	१ ११	३ २५	५ ४७
	१८	३	८ ७	१० २५	१२ ४७	१५ ७	१७ ११	१८ ५२	२० १७	२१ ४०	२३ १२	१ ७	३ २१	५ ४३
	१९	४	८ ३	१० २१	१२ ४३	१५ ३	१७ ७	१८ ४८	२० १३	२१ ३६	२३ ८	१ ३	३ १७	५ ३९
	२०	५	७ ५९	१० १७	१२ ३९	१४ ५९	१७ ३	१८ ४४	२० ९	२१ ३२	२३ ४	० ५९	३ १३	५ ३६
	२१	६	७ ५६	१० १३	१२ ३५	१४ ५५	१६ ५९	१८ ४०	२० ५	२१ २८	२३ १	० ५५	३ ९	५ ३२
	२२	७	७ ५२	१० ९	१२ ३१	१४ ५१	१६ ५६	१८ ३६	२० २	२१ २४	२२ ५७	० ५१	३ ५	५ २८
	२३	८	७ ४८	१० ५	१२ २७	१४ ४७	१६ ५२	१८ ३३	१९ ५८	२१ २०	२२ ५३	० ४७	३ २	५ २४
	२४	९	७ ४४	१० १	१२ २३	१४ ४३	१६ ४८	१८ २९	१९ ५४	२१ १६	२२ ४९	० ४३	२ ५८	५ २०
	२५	१०	७ ४०	९ ५७	१२ १९	१४ ३९	१६ ४४	१८ २५	१९ ५०	२१ १२	२२ ४५	० ३९	२ ५४	५ १६
	२६	११	७ ३६	९ ५४	१२ १५	१४ ३५	१६ ४०	१८ २१	१९ ४६	२१ ८	२२ ४१	० ३६	२ ५०	५ १२
	२७	१२	७ ३२	९ ५०	१२ ११	१४ ३१	१६ ३६	१८ १७	१९ ४२	२१ ४	२२ ३७	० ३२	२ ४६	५ ८
	२८	१३	७ २८	९ ४६	१२ ७	१४ २७	१६ ३२	१८ १३	१९ ३८	२१ ०	२२ ३३	० २८	२ ४२	५ ४
	२९	१४	७ २४	९ ४२	१२ ३	१४ २३	१६ २८	१८ ९	१९ ३४	२० ५६	२२ २९	० २४	२ ३८	५ ०
	३०	१५	७ २०	९ ३८	११ ५९	१४ १९	१६ २४	१८ ५	१९ ३०	२० ५२	२२ २५	० २०	२ ३४	४ ५६
	३१	१६	७ १६	९ ३४	११ ५५	१४ १६	१६ २०	१८ १	१९ २६	२० ४९	२२ २१	० १६	२ ३०	४ ५२
सितम्बर	१	१७	७ १२	९ ३०	११ ५२	१४ १२	१६ १६	१७ ५७	१९ २२	२० ४५	२२ १७	० १२	२ २६	४ ४८
	२	१८	७ ८	९ २६	११ ४८	१४ ८	१६ १२	१७ ५३	१९ १८	२० ४१	२२ १३	० ८	२ २२	४ ४४
	३	१९	७ ४	९ २२	११ ४४	१४ ४	१६ ८	१७ ४९	१९ १४	२० ३७	२२ ९	० ४	२ १८	४ ४०
	४	२०	७ ०	९ १८	११ ४०	१४ ०	१६ ४	१७ ४५	१९ १०	२० ३३	२२ ६	० ०	२ १४	४ ३७
	५	२१	६ ५७	९ १४	११ ३६	१३ ५६	१६ ०	१७ ४१	१९ ६	२२ २९	२२ २	२३ ५६	२ १०	४ ३३
	६	२२	६ ५३	९ १०	११ ३२	१३ ५२	१५ ५७	१७ ३८	१९ ३	२० २५	२१ ५८	२३ ५२	२ ६	४ २९
	७	२३	६ ४९	९ ६	११ २८	१३ ४८	१५ ५३	१७ ३४	१८ ५९	२० २१	२१ ५४	२३ ४८	२ ३	४ २५
	८	२४	६ ४५	९ २	११ २४	१३ ४४	१५ ४९	१७ ३०	१८ ५५	२० १७	२१ ५०	२३ ४४	१ ५९	४ २१
	९	२५	६ ४१	८ ५९	११ २०	१३ ४०	१५ ४५	१७ २६	१८ ५१	२० १३	२१ ४६	२३ ४०	१ ५५	४ १७
	१०	२६	६ ३७	८ ५५	११ १६	१३ ३६	१५ ४१	१७ २२	१८ ४७	२० ९	२१ ४२	२३ ३७	१ ५१	४ १३
	११	२७	६ ३३	८ ५१	११ १२	१३ ३२	१५ ३७	१७ १८	१८ ४३	२० ५	२१ ३८	२३ ३३	१ ४७	४ ९
	१२	२८	६ २९	८ ४७	११ ८	१३ २८	१५ ३३	१७ १४	१८ ३९	२० १	२१ ३४	२३ २९	१ ४३	४ ५
	१३	२९	६ २५	८ ४३	११ ४	१३ २४	१५ २९	१७ १०	१८ ३५	१९ ५७	२१ ३०	२३ २५	१ ३९	४ १
	१४	३०	६ २१	८ ३९	११ ०	१३ २१	१५ २५	१७ ६	१८ ३१	१९ ५४	२१ २६	२३ २१	१ ३५	३ ५७
	१५	३१	६ १७	८ ३५	१० ५६	१३ १७	१५ २१	१७ २	१८ २७	१९ ५०	२१ २२	२३ १७	१ ३१	३ ५३
	१६	आ१	६ १३											

आश्विन

मास	अंग्रेजी तारीखें	आश्विन प्रविष्टे	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.
सितम्बर	१६	१	८ ३१	१० ५३	१३ १३	१५ १७	१६ ५८	१८ २३	१९ ४६	२१ १८	२३ १३	१ २७	३ ४९	६ ९
	१७	२	८ २७	१० ४९	१३ ९	१५ १३	१६ ५४	१८ १९	१९ ४२	२१ १४	२३ ९	१ २३	३ ४५	६ ५
	१८	३	८ २३	१० ४५	१३ ५	१५ ९	१६ ५०	१८ १५	१९ ३८	२१ १०	२३ ५	१ १९	३ ४२	६ १
	१९	४	८ १९	१० ४१	१३ १	१५ ५	१६ ४६	१८ ११	१९ ३४	२१ ७	२३ १	१ १५	३ ३८	५ ५८
	२०	५	८ १५	१० ३७	१२ ५७	१५ २	१६ ४२	१८ ८	१९ ३०	२१ ३	२२ ५७	१ ११	३ ३४	५ ५४
	२१	६	८ ११	१० ३३	१२ ५३	१४ ५८	१६ ३९	१८ ४	१९ २६	२० ५९	२२ ५३	१ ७	३ ३०	५ ५०
	२२	७	८ ७	१० २९	१२ ४९	१४ ५४	१६ ३५	१८ ०	१९ २२	२० ५५	२२ ४९	१ ४	३ २६	५ ४६
	२३	८	८ ३	१० २५	१२ ४५	१४ ५०	१६ ३१	१७ ५६	१९ १८	२० ५१	२२ ४५	१ ०	३ २२	५ ४२
	२४	९	८ ०	१० २१	१२ ४१	१४ ४६	१६ २७	१७ ५२	१९ १४	२० ४७	२२ ४१	० ५६	३ १८	५ ३८
	२५	१०	७ ५६	१० १७	१२ ३७	१४ ४२	१६ २३	१७ ४८	१९ १०	२० ४३	२२ ३८	० ५२	३ १४	५ ३४
	२६	११	७ ५२	१० १३	१२ ३३	१४ ३८	१६ १९	१७ ४४	१९ ६	२० ३९	२२ ३४	० ४८	३ १०	५ ३०
	२७	१२	७ ४८	१० ९	१२ २९	१४ ३४	१६ १५	१७ ४०	१९ २	२० ३५	२२ ३०	० ४४	३ ६	५ २६
	२८	१३	७ ४४	१० ५	१२ २५	१४ ३०	१६ ११	१७ ३६	१८ ५८	२० ३१	२२ २६	० ४०	३ २	५ २२
	२९	१४	७ ४०	१० १	१२ २२	१४ २६	१६ ७	१७ ३२	१८ ५५	२० २७	२२ २२	० ३६	२ ५८	५ १८
	३०	१५	७ ३६	९ ५७	१२ १८	१४ २२	१६ ३	१७ २८	१८ ५१	२० २३	२२ १८	० ३२	२ ५४	५ १४
अक्तूबर	१	१६	७ ३२	९ ५४	१२ १४	१४ १८	१५ ५९	१७ २४	१८ ४७	२० १९	२२ १४	० २८	२ ५०	५ १०
	२	१७	७ २८	९ ५०	१२ १०	१४ १४	१५ ५५	१७ २०	१८ ४३	२० १५	२२ १०	० २४	२ ४६	५ ६
	३	१८	७ २४	९ ४६	१२ ६	१४ १०	१५ ५१	१७ १६	१८ ३९	२० ११	२२ ६	० २०	२ ४३	५ ३
	४	१९	७ २०	९ ४२	१२ २	१४ ६	१५ ४७	१७ १२	१८ ३५	२० ८	२२ २	० १६	२ ३९	४ ५९
	५	२०	७ १६	९ ३८	११ ५८	१४ ३	१५ ४३	१७ ९	१८ ३१	२० ४	२१ ५८	० १२	२ ३५	४ ५५
	६	२१	७ १२	९ ३४	११ ५४	१३ ५९	१५ ४०	१७ ५	१८ २७	२० ०	२१ ५४	० ८	२ ३१	४ ५१
	७	२२	७ ८	९ ३०	११ ५०	१३ ५५	१५ ३६	१७ १	१८ २३	१९ ५६	२१ ५०	० ५	२ २७	४ ४७
	८	२३	७ ५	९ २६	११ ४६	१३ ५१	१५ ३२	१६ ५७	१८ १९	१९ ५२	२१ ४६	० १	२ २३	४ ४३
	९	२४	७ १	९ २२	११ ४२	१३ ४७	१५ २८	१६ ५३	१८ १५	१९ ४८	२१ ४३	२३ ५७	२ १९	४ ३९
	१०	२५	६ ५७	९ १८	११ ३८	१३ ४३	१५ २४	१६ ४९	१८ ११	१९ ४४	२१ ३९	२३ ५३	२ १५	४ ३५
	११	२६	६ ५३	९ १४	११ ३४	१३ ३९	१५ २०	१६ ४५	१८ ७	१९ ४०	२१ ३५	२३ ४९	२ ११	४ ३१
	१२	२७	६ ४९	९ १०	११ ३०	१३ ३५	१५ १६	१६ ४१	१८ ३	१९ ३६	२१ ३१	२३ ४५	२ ७	४ २७
	१३	२८	६ ४५	९ ६	११ २६	१३ ३१	१५ १२	१६ ३७	१७ ५९	१९ ३२	२१ २७	२३ ४१	२ ३	४ २३
	१४	२९	६ ४१	९ २	११ २३	१३ २७	१५ ८	१६ ३३	१७ ५६	१९ २८	२१ २३	२३ ३७	१ ५९	४ १९
	१५	३०	६ ३७	८ ५९	११ १९	१३ २३	१५ ४	१६ २९	१७ ५२	१९ २४	२१ १९	२३ ३३	१ ५५	४ १५
	१६	का१	६ ३३											

दैनिक लग्न सारणी, चंडीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं. टा.]

कार्तिक

माह	अंग्रेज़ी तारीखें	कार्तिक प्रविष्टे	तुला		वृश्चिक		धनु		मकर		कुंभ		मीन		मेष		वृष		मिथुन		कर्क		सिंह		कन्या	
			घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
अक्तूबर	१६	१	८	५५	११	१५	१३	१९	१५	०	१६	२५	१७	४८	१९	२०	२१	१५	२३	२९	१	५१	४	११	६	२९
	१७	२	८	५१	११	११	१३	१५	१४	५६	१६	२१	१७	४४	१९	१६	२१	११	२३	२५	१	४७	४	७	६	२५
	१८	३	८	४७	११	७	१३	११	१४	५२	१६	१७	१७	४०	१९	१३	२१	७	२३	२१	१	४४	४	४	६	२१
	१९	४	८	४३	११	३	१३	८	१४	४८	१६	१४	१७	३६	१९	९	२१	३	२३	१७	१	४०	४	०	६	१७
	२०	५	८	३९	१०	५९	१३	४	१४	४५	१६	१०	१७	३२	१९	५	२०	५९	२३	१३	१	३६	३	५६	६	१३
	२१	६	८	३५	१०	५५	१३	०	१४	४१	१६	६	१७	२८	१९	१	२०	५५	२३	९	१	३२	३	५२	६	९
	२२	७	८	३१	१०	५१	१२	५६	१४	३७	१६	२	१७	२४	१८	५७	२०	५१	२३	६	१	२८	३	४८	६	६
	२३	८	८	२७	१०	४७	१२	५२	१४	३३	१५	५८	१७	२०	१८	५३	२०	४७	२३	२	१	२४	३	४४	६	२
	२४	९	८	२३	१०	४३	१२	४८	१४	२९	१५	५४	१७	१६	१८	४९	२०	४४	२२	५८	१	२०	३	४०	५	५८
	२५	१०	८	१९	१०	३९	१२	४४	१४	२५	१५	५०	१७	१२	१८	४५	२०	४०	२२	५४	१	१६	३	३६	५	५४
	२६	११	८	१५	१०	३५	१२	४०	१४	२१	१५	४६	१७	८	१८	४१	२०	३६	२२	५०	१	१२	३	३२	५	५०
	२७	१२	८	११	१०	३१	१२	३६	१४	१७	१५	४२	१७	४	१८	३७	२०	३२	२२	४६	१	८	३	२८	५	४६
	२८	१३	८	७	१०	२८	१२	३२	१४	१३	१५	३८	१७	१	१८	३३	२०	२८	२२	४२	१	४	३	२४	५	४२
	२९	१४	८	३	१०	२४	१२	२८	१४	९	१५	३४	१६	५७	१८	२९	२०	२४	२२	३८	१	०	३	२०	५	३८
	३०	१५	८	०	१०	२०	१२	२४	१४	५	१५	३०	१६	५३	१८	२५	२०	२०	२२	३४	०	५६	३	१६	५	३४
	३१	१६	७	५६	१०	१६	१२	२०	१४	१	१५	२६	१६	४९	१८	२१	२०	१६	२२	३०	०	५२	३	१२	५	३०
नवम्बर	१	१७	७	५२	१०	१२	१२	१६	१३	५७	१५	२२	१६	४५	१८	१७	२०	१२	२२	२६	०	४८	३	९	५	२६
	२	१८	७	४८	१०	८	१२	१२	१३	५३	१५	१८	१६	४१	१८	१३	२०	८	२२	२२	०	४५	३	५	५	२२
	३	१९	७	४४	१०	४	१२	९	१३	४९	१५	१५	१६	३७	१८	९	२०	४	२२	१८	०	४१	३	१	५	१८
	४	२०	७	४०	१०	०	१२	५	१३	४६	१५	११	१६	३३	१८	६	२०	०	२२	१५	०	३७	२	५७	५	१४
	५	२१	७	३६	९	५६	१२	१	१३	४२	१५	७	१६	२९	१८	२	१९	५६	२२	११	०	३३	२	५३	५	१०
	६	२२	७	३२	९	५२	११	५७	१३	३८	१५	३	१६	२५	१७	५८	१९	५२	२२	७	०	२९	२	४९	५	७
	७	२३	७	२८	९	४८	११	५३	१३	३४	१४	५९	१६	२१	१७	५४	१९	४९	२२	३	०	२५	२	४५	५	३
	८	२४	७	२४	९	४४	११	४९	१३	३०	१४	५५	१६	१७	१७	५०	१९	४५	२१	५९	०	२१	२	४१	४	५९
	९	२५	७	२०	९	४०	११	४५	१३	२६	१४	५१	१६	१३	१७	४६	१९	४१	२१	५५	०	१७	२	३७	४	५५
	१०	२६	७	१६	९	३६	११	४१	१३	२२	१४	४७	१६	९	१७	४२	१९	३७	२१	५१	०	१३	२	३३	४	५१
	११	२७	७	१२	९	३२	११	३७	१३	१८	१४	४३	१६	५	१७	३८	१९	३३	२१	४७	०	९	२	२९	४	४७
	१२	२८	७	८	९	२९	११	३३	१३	१४	१४	३९	१६	२	१७	३४	१९	२९	२१	४३	०	५	२	२५	४	४३
	१३	२९	७	५	९	२५	११	२९	१३	१०	१४	३५	१५	५८	१७	३०	१९	२५	२१	३९	०	१	२	२१	४	३९
	१४	३०	७	१	९	२१	११	२५	१३	६	१४	३१	१५	५४	१७	२६	१९	२१	२१	३५	२३	५७	२	१७	४	३५
	१५	मा.१	६	५७																						

मार्गशीर्ष

माह	अंग्रेज़ी तारीखें	मार्गशीर्ष प्रविष्टे	वृश्चिक		धनु		मकर		कुंभ		मीन		मेष		वृष		मिथुन		कर्क		सिंह		कन्या		तुला	
			घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
नवम्बर	१५	१	९	१७	११	२१	१३	२	१४	२७	१५	५०	१७	२२	१९	१७	२१	३१	२३	५३	२	१३	४	३१	६	५३
	१६	२	९	१३	११	१७	१२	५८	१४	२३	१५	४६	१७	१८	१९	१३	२१	२७	२३	५०	२	१०	४	२७	६	४९
	१७	३	९	९	११	१३	१२	५४	१४	१९	१५	४२	१७	१५	१९	९	२१	२३	२३	४६	२	६	४	२३	६	४५
	१८	४	९	५	११	१०	१२	५०	१४	१६	१५	३८	१७	११	१९	५	२१	१९	२३	४२	२	२	४	१९	६	४१
	१९	५	९	१	११	६	१२	४७	१४	१२	१५	३४	१७	७	१९	१	२१	१६	२३	३८	१	५८	४	१५	६	३७
	२०	६	८	५७	११	२	१२	४३	१४	८	१५	३०	१७	३	१८	१७	२१	१२	२३	३४	१	५४	४	१२	६	३३
	२१	७	८	५३	१०	५८	१२	३९	१४	४	१५	२६	१६	५९	१८	५३	२१	८	२३	३०	१	५०	४	८	६	२९
	२२	८	८	४९	१०	५४	१२	३५	१४	०	१५	२२	१६	५५	१८	५०	२१	४	२३	२६	१	४६	४	४	६	२५
	२३	९	८	४५	१०	५०	१२	३१	१३	५६	१५	१८	१६	५१	१८	४६	२१	०	२३	२२	१	४२	४	०	६	२१
	२४	१०	८	४१	१०	४६	१२	२७	१३	५२	१५	१४	१६	४७	१८	४२	२०	५६	२३	१८	१	३८	३	५६	६	१७
	२५	११	८	३७	१०	४२	१२	२३	१३	४८	१५	१०	१६	४३	१८	३८	२०	५२	२३	१४	१	३४	३	५२	६	१३
	२६	१२	८	३३	१०	३८	१२	१९	१३	४४	१५	७	१६	३९	१८	३४	२०	४८	२३	१०	१	३०	३	४८	६	९
	२७	१३	८	३०	१०	३४	१२	१५	१३	४०	१५	३	१६	३५	१८	३०	२०	४४	२३	६	१	२६	३	४४	६	६
	२८	१४	८	२६	१०	३०	१२	११	१३	३६	१४	५९	१६	३१	१८	२६	२०	४०	२३	२	१	२२	३	४०	६	२
	२९	१५	८	२२	१०	२६	१२	७	१३	३२	१४	५५	१६	२७	१८	२२	२०	३६	२२	५८	१	१८	३	३६	५	५८
	३०	१६	८	१८	१०	२२	१२	३	१३	२८	१४	५१	१६	२३	१८	१८	२०	३२	२२	५४	१	१४	३	३२	५	५४
दिसम्बर	१	१७	८	१४	१०	१८	११	५९	१३	२४	१४	४७	१६	२०	१८	१४	२०	२८	२२	५१	१	११	३	२८	५	५०
	२	१८	८	१०	१०	१५	११	५५	१३	२१	१४	४३	१६	१६	१८	१०	२०	२४	२२	४७	१	७	३	२४	५	४६
	३	१९	८	६	१०	११	११	५२	१३	१७	१४	३९	१६	१२	१८	६	२०	२०	२२	४३	१	३	३	२०	५	४२
	४	२०	८	२	१०	७	११	४८	१३	१३	१४	३५	१६	८	१८	२	२०	१७	२२	३९	०	५९	३	१६	५	३८
	५	२१	७	५८	१०	३	११	४४	१३	९	१४	३१	१६	४	१७	५८	२०	१३	२२	३५	०	५५	३	१३	५	३४
	६	२२	७	५४	९	५९	११	४०	१३	५	१४	२७	१६	०	१७	५४	२०	९	२२	३१	०	५१	३	९	५	३०
	७	२३	७	५०	९	५५	११	३६	१३	१	१४	२३	१५	५६	१७	५१	२०	५	२२	२७	०	४७	३	५	५	२६
	८	२४	७	४६	९	५१	११	३२	१२	५७	१४	१९	१५	५२	१७	४७	२०	१	२२	२३	०	४३	३	१	५	२२
	९	२५	७	४२	९	४७	११	२८	१२	५३	१४	१५	१५	४८	१७	४३	१९	५७	२२	१९	०	३९	२	५७	५	१८
	१०	२६	७	३८	९	४३	११	२४	१२	४९	१४	११	१५	४४	१७	३९	१९	५३	२२	१५	०	३५	२	५३	५	१४
	११	२७	७	३५	९	३९	११	२०	१२	४५	१४	८	१५	४०	१७	३५	१९	४९	२२	१	०	३१	२	४९	५	१०
	१२	२८	७	३१	९	३५	११	१६	१२	४१	१४	४	१५	३६	१७	३१	१९	४५	१२	२७	०	२७	२	४५	५	७
	१३	२९	७	२७	९	३१	११	१२	१२	३७	१४	०	१५	३२	१७	२७	१९	४१	२२	३	०	२३	२	४१	५	३
	१४	३०	७	२३	९	२७	११	८	१२	३३	१३	५६	१५	२८	१७	२३	१९	३७	२१	५९	०	१९	२	३७	४	५९
	१५	पौ.१	७	१९																						

दैनिक लग्न सारणी, चंडीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा. स्टैं. टा.]

पौष

मास	अंग्रेज़ी तारीखें	पौष प्रविष्टे	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.
दिसम्बर	१५	१	९ २३	११ ४	१२ २९	१३ ५२	१५ २४	१७ १९	१९ ३३	२१ ५६	० १६	२ ३३	४ ५५	७ १५
	१६	२	९ १९	११ ०	१२ २५	१३ ४८	१५ २१	१७ १५	१९ २९	२१ ५२	० १२	२ २९	४ ५१	७ ११
	१७	३	९ १६	१० ५६	१२ २२	१३ ४४	१५ १७	१७ ११	१९ २५	२१ ४८	० ८	२ २५	४ ४७	७ ७
	१८	४	९ १२	१० ५३	१२ १८	१३ ४०	१५ १३	१७ ७	१९ २२	२१ ४४	० ४	२ २१	४ ४३	७ ३
	१९	५	९ ८	१० ४९	१२ १४	१३ ३६	१५ ९	१७ ३	१९ १८	२१ ४०	० ००	२ १७	४ ३९	६ ५९
	२०	६	९ ४	१० ४५	१२ १०	१३ ३२	१५ ५	१६ ५९	१९ १४	२१ ३६	२३ ५६	२ १४	४ ३५	६ ५५
	२१	७	९ ०	१० ४१	१२ ६	१३ २८	१५ १	१६ ५६	१९ १०	२१ ३२	२३ ५२	२ १०	४ ३१	६ ५१
	२२	८	८ ५६	१० ३७	१२ २	१३ २४	१४ ५७	१६ ५२	१९ ६	२१ २८	२३ ४८	२ ६	४ २७	६ ४७
	२३	९	८ ५२	१० ३३	११ ५८	१३ २०	१४ ५३	१६ ४८	१९ २	२१ २४	२३ ४४	२ २	४ २३	६ ४३
	२४	१०	८ ४८	०२ ९	११ ५४	१३ १६	१४ ४९	१६ ४४	१८ ५८	२१ २०	२३ ४०	१ ५८	४ १९	६ ३९
	२५	११	८ ४४	१० २५	११ ५०	१३ १२	१४ ४५	१६ ४०	१८ ५४	२१ १६	२३ ३६	१ ५४	४ १५	६ ३६
	२६	१२	८ ४०	१० २१	११ ४६	१३ ९	१४ ४१	१६ ३६	१८ ५०	२१ १२	२३ ३२	१ ५०	४ १२	६ ३२
	२७	१३	८ ३६	१० १७	११ ४२	१३ ५	१४ ३७	१६ ३२	१८ ४६	२१ ८	२३ २८	१ ४६	४ ८	६ २८
	२८	१४	८ ३२	१० १३	११ ३८	१३ १	१४ ३३	१६ २८	१८ ४२	२१ ४	२३ २४	१ ४२	४ ४	६ २४
	२९	१५	८ २८	१० ९	११ ३४	१२ ५७	१४ २९	१६ २४	१८ ३८	२१ ०	२३ २०	१ ३८	४ ०	६ २०
	३०	१६	८ २४	१० ५	११ ३०	१२ ५३	१४ २६	१६ २०	१८ ३४	२० ५७	२३ १७	१ ३४	३ ५६	६ १६
	३१	१७	८ २०	१० १	११ २६	१२ ४९	१४ २२	१६ १६	१८ ३०	२० ५३	२३ १३	१ ३०	३ ५२	६ १२
जनवरी	१	१८	८ १६	९ ५७	११ २२	१२ ४४	१४ १७	१६ ११	१८ २६	२० ४८	२३ ८	१ २५	३ ४७	६ ७
	२	१९	८ १२	९ ५३	११ १८	१२ ४०	१४ १३	१६ ७	१८ २२	२० ४४	२३ ४	१ २१	३ ४३	६ ३
	३	२०	८ ८	९ ४९	११ १४	१२ ३६	१४ ९	१६ ३	१८ १८	२० ४०	२३ ०	१ १७	३ ३९	५ ५९
	४	२१	८ ४	९ ४५	११ १०	१२ ३२	१४ ५	१५ ५९	१८ १४	२० ३६	२२ ५६	१ १४	३ ३५	५ ५५
	५	२२	८ ०	९ ४१	११ ६	१२ २८	१४ १	१५ ५६	१८ १०	२० ३२	२२ ५२	१ १०	३ ३१	५ ५१
	६	२३	७ ५६	९ ३७	११ २	१२ २४	१३ ५७	१५ ५२	१८ ६	२० २८	२२ ४८	१ ६	३ २७	५ ४७
	७	२४	७ ५२	९ ३३	१० ५८	१२ २०	१३ ५३	१५ ४८	१८ २	२० २४	२२ ४४	१ २	३ २३	५ ४३
	८	२५	७ ४८	९ २९	१० ५४	१२ १६	१३ ४९	१५ ४४	१७ ५८	२० २०	२२ ४०	० ५८	३ १९	५ ३९
	९	२६	७ ४४	९ २५	१० ५०	१२ १३	१३ ४५	१५ ४०	१७ ५४	२० १६	२२ ३६	० ५४	३ १५	५ ३६
	१०	२७	७ ४०	९ २१	१० ४६	१२ ९	१३ ४१	१५ ३६	१७ ५०	२० १२	२२ ३२	० ५०	३ १२	५ ३२
	११	२८	७ ३६	९ १७	१० ४२	१२ ५	१३ ३७	१५ ३२	१७ ४६	२० ८	२२ २८	० ४६	३ ८	५ २८
	१२	२९	७ ३२	९ १३	१० ३८	१२ १	१३ ३३	१५ २८	१७ ४२	२० ४	२२ २४	० ४२	३ ४	५ २४
	१३	[illegible]	७ २८											

माघ

मास	अंग्रेज़ी तारीखें	माघ प्रविष्टे	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.
जनवरी	१३	१	९ ९	१० ३४	११ ५७	१३ २९	१५ २४	१७ ३८	२० ०	२२ २०	० ३८	३ ०	५ २०	७ २४
	१४	२	९ ५	१० ३०	११ ५३	१३ २६	१५ २०	१७ ३४	१९ ५७	२२ १७	० ३४	२ ५६	५ १६	७ २०
	१५	३	९ १	१० २७	११ ४९	१३ २२	१५ १६	१७ ३०	१९ ५३	२२ १३	० ३०	२ ५२	५ १२	७ १७
	१६	४	८ ५८	१० २३	११ ४५	१३ १८	१५ १२	१७ २६	१९ ४९	२२ ९	० २६	२ ४८	५ ८	७ १३
	१७	५	८ ५४	१० १९	११ ४१	१३ १४	१५ ८	१७ २३	१९ ४५	२२ ५	० २२	२ ४४	५ ४	७ ९
	१८	६	८ ५०	१० १५	११ ३७	१३ १०	१५ ४	१७ १९	१९ ४१	२२ १	० १९	२ ४०	५ ०	७ ५
	१९	७	८ ४६	१० ११	११ ३३	१३ ६	१५ १	१७ १५	१९ ३७	२१ ५७	० १५	२ ३६	४ ५६	७ १
	२०	८	८ ४२	१० ७	११ २९	१३ २	१४ ५७	१७ ११	१९ ३३	२१ ५३	० ११	२ ३२	४ ५२	६ ५७
	२१	९	८ ३८	१० ३	११ २५	१२ ५८	१४ ५३	१७ ७	१९ २९	२१ ४९	० ७	२ २८	४ ४८	६ ५३
	२२	१०	८ ३४	९ ५९	११ २१	१२ ५४	१४ ४९	१७ ३	१९ २५	२१ ४५	० ३	२ २४	४ ४४	६ ४९
	२३	११	८ ३०	९ ५५	११ १७	१२ ५०	१४ ४५	१६ ५९	१९ २१	२१ ४१	२३ ५९	२ २०	४ ४१	६ ४५
	२४	१२	८ २६	९ ५१	११ १४	१२ ४६	१४ ४१	१६ ५५	१९ १७	२१ ३७	२३ ५५	२ १६	४ ३७	६ ४१
	२५	१३	८ २२	९ ४७	११ १०	१२ ४२	१४ ३७	१६ ५१	१९ १३	२१ ३३	२३ ५१	२ १३	४ ३३	६ ३७
	२६	१४	८ १८	९ ४३	११ ६	१२ ३८	१४ ३३	१६ ४७	१९ ९	२१ २९	२३ ४७	२ ९	४ २९	६ ३३
	२७	१५	८ १४	९ ३९	११ २	१२ ३४	१४ २९	१६ ४३	१९ ५	२१ २५	२३ ४३	२ ५	४ २५	६ २९
	२८	१६	८ १०	९ ३५	१० ५८	१२ ३०	१४ २५	१६ ३९	१९ २	२१ २२	२३ ३९	२ १	४ २१	६ २५
	२९	१७	८ ६	९ ३१	१० ५४	१२ २७	१४ २१	१६ ३५	१८ ५८	२१ १८	२३ ३५	१ ५७	४ १७	६ २२
	३०	१८	८ २	९ २८	१० ५०	१२ २३	१४ १७	१६ ३१	१८ ५४	२१ १४	२३ ३१	१ ५३	४ १३	६ १८
	३१	१९	७ ५९	९ २४	१० ४६	१२ १९	१४ १३	१६ २८	१८ ५०	२१ १०	२३ २७	१ ४९	४ ९	६ १४
फरवरी	१	२०	७ ५५	९ २०	१० ४२	१२ १५	१४ ९	१६ २४	१८ ४६	२१ ६	२३ २३	१ ४५	४ ५	६ १०
	२	२१	७ ५१	९ १६	१० ३८	१२ ११	१४ ५	१६ २०	१८ ४२	२१ २	२३ २०	१ ४१	४ १	६ ६
	३	२२	७ ४७	९ १२	१० ३४	१२ ७	१४ २	१६ १६	१८ ३८	२० ५८	२३ १६	१ ३७	३ ५७	६ २
	४	२३	७ ४३	९ ८	१० ३०	१२ ३	१३ ५८	१६ १२	१८ ३४	२० ५४	२३ १२	१ ३३	३ ५३	५ ५८
	५	२४	७ ३९	९ ४	१० २६	११ ५९	१३ ५४	१६ ८	१८ ३०	२० ५०	२३ ८	१ २९	३ ४९	५ ५४
	६	२५	७ ३५	९ ०	१० २२	११ ५५	१३ ५०	१६ ४	१८ २६	२० ४६	२३ ४	१ २५	३ ४५	५ ५०
	७	२६	७ ३१	८ ५६	१० १९	११ ५१	१३ ४६	१६ ०	१८ २२	२० ४२	२३ ०	१ २१	३ ४२	५ ४६
	८	२७	७ २७	८ ५२	१० १५	११ ४७	१३ ४२	१५ ५६	१८ १८	२० ३८	२२ ५६	१ १७	३ ३८	५ ४२
	९	२८	७ २३	८ ४८	१० ११	११ ४३	१३ ३८	१५ ५२	१८ १४	२० ३४	२२ ५२	१ १४	३ ३४	५ ३८
	१०	२९	७ १९	८ ४४	१० ७	११ ३९	१३ ३४	१५ ४८	१८ १०	२० ३०	२२ ४८	१ १०	३ ३०	५ ३४
	११	३०	७ १५	८ ४०	१० ३	११ ३५	१३ ३०	१५ ४४	१८ ६	२० २६	२२ ४४	१ ६	३ २६	५ ३०
	१२	फा. १	७ ११											

दैनिक लग्न सारणी, चंडीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं. टा.]

फाल्गुन

मास	अंग्रेज़ी तारीखें	फाल्गुन प्रविष्टे	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.
फरवरी	१२	१	८ ३६	९ ५९	११ ३२	१३ २६	१५ ४०	१८ ३	२० २३	२२ ४०	१ २	३ २२	५ २६	७ ७
	१३	२	८ ३३	९ ५५	११ २८	१३ २२	१५ ३६	१७ ५९	२० १९	२२ ३६	० ५८	३ १८	५ २३	७ ४
	१४	३	८ २९	९ ५१	११ २४	१३ १८	१५ ३२	१७ ५५	२० १५	२२ ३२	० ५४	३ १४	५ १९	७ ०
	१५	४	८ २५	९ ४७	११ २०	१३ १४	१५ २९	१७ ५१	२० ११	२२ २८	० ५०	३ १०	५ १५	६ ५६
	१६	५	८ २१	९ ४३	११ १६	१३ १०	१५ २५	१७ ४७	२० ७	२२ २५	० ४६	३ ६	५ ११	६ ५२
	१७	६	८ १७	९ ३९	११ १२	१३ ६	१५ २१	१७ ४३	२० ३	२२ २१	० ४२	३ २	५ ७	६ ४८
	१८	७	८ १३	९ ३५	११ ८	१३ ३	१५ १७	१७ ३९	१९ ५९	२२ १७	० ३८	२ ५८	५ ३	६ ४४
	१९	८	८ ९	९ ३१	११ ४	१२ ५९	१५ १३	१७ ३५	१९ ५५	२२ १३	० ३४	२ ५४	४ ५९	६ ४०
	२०	९	८ ५	९ २७	११ ०	१२ ५५	१५ ९	१७ ३१	१९ ५१	२२ ९	० ३०	२ ५०	४ ५५	६ ३६
	२१	१०	८ १	९ २३	१० ५६	१२ ५१	१५ ५	१७ २७	१९ ४७	२२ ५	० २६	२ ४६	४ ५१	६ ३२
	२२	११	७ ५७	९ २०	१० ५२	१२ ४७	१५ १	१७ २३	१९ ४३	२२ १	० २२	२ ४३	४ ४७	६ २८
	२३	१२	७ ५३	९ १६	१० ४८	१२ ४३	१४ ५७	१७ १९	१९ ३९	२१ ५७	० १९	२ ३९	४ ४३	६ २४
	२४	१३	७ ४९	९ १२	१० ४४	१२ ३९	१४ ५३	१७ १५	१९ ३५	२१ ५३	० १५	२ ३५	४ ३९	६ २०
	२५	१४	७ ४५	९ ८	१० ४०	१२ ३५	१४ ४९	१७ ११	१९ ३१	२१ ४९	० ११	२ ३१	४ ३५	६ १६
	२६	१५	७ ४१	९ ४	१० ३६	१२ ३१	१४ ४५	१७ ७	१९ २७	२१ ४५	० ७	२ २७	४ ३१	६ १२
	२७	१६	७ ३७	९ ०	१० ३३	१२ २७	१४ ४१	१७ ४	१९ २४	२१ ४१	० ३	२ २३	४ २८	६ ८
	२८	१७	७ ३४	८ ५६	१० २९	१२ २३	१४ ३७	१७ ०	१९ २०	२१ ३७	२३ ५९	२ १९	४ २४	६ ५
मार्च	१	१८	७ ३०	८ ५२	१० २५	१२ १९	१४ ३३	१६ ५६	१९ १६	२१ ३३	२३ ५५	२ १५	४ २०	६ १
	२	१९	७ २६	८ ४८	१० २१	१२ १५	१४ ३०	१६ ५२	१९ १२	२१ २९	२३ ५१	२ ११	४ १६	५ ५७
	३	२०	७ २२	८ ४४	१० १७	१२ ११	१४ २६	१६ ४८	१९ ८	२१ २६	२३ ४७	२ ७	४ १२	५ ५३
	४	२१	७ १८	८ ४०	१० १३	१२ ८	१४ २२	१६ ४४	१९ ४	२१ २२	२३ ४३	२ ३	४ ८	५ ४९
	५	२२	७ १४	८ ३६	१० ९	१२ ४	१४ १८	१६ ४०	१९ ०	२१ १८	२३ ३९	१ ५९	४ ४	५ ४५
	६	२३	७ १०	८ ३२	१० ५	१२ ०	१४ १४	१६ ३६	१८ ५६	२१ १४	२३ ३५	१ ५५	४ ०	५ ४१
	७	२४	७ ६	८ २८	१० १	११ ५६	१४ १०	१६ ३२	१८ ५२	२१ १०	२३ ३१	१ ५१	३ ५६	५ ३७
	८	२५	७ २	८ २४	९ ५७	११ ५२	१४ ६	१६ २८	१८ ४८	२१ ६	२३ २७	१ ४८	३ ५२	५ ३३
	९	२६	६ ५८	८ २१	९ ५३	११ ४८	१४ २	१६ २४	१८ ४४	२१ २	२३ २३	१ ४४	३ ४८	५ २९
	१०	२७	६ ५४	८ १७	९ ४९	११ ४४	१३ ५८	१६ २०	१८ ४०	२० ५८	२३ २०	१ ४०	३ ४४	५ २५
	११	२८	६ ५०	८ १३	९ ४५	११ ४०	१३ ५४	१६ १६	१८ ३६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	१२	२९	६ ४६	८ ९	९ ४१	११ ३६	१३ ५०	१६ १२	१८ ३२	२० ५०	२३ १२	१ ३२	३ ३६	५ १७
	१३	३०	६ ४२	८ ५	९ ३८	११ ३२	१३ ४६	१६ ९	१८ २९	२० ४६	२३ ८	१ २८	३ ३२	५ १३
	१४	[illegible]	६ ३८	[illegible]										

चैत्र

मास	अंग्रेज़ी तारीखें	चैत्र प्रविष्टे	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुंभ घं. मि.
मार्च	१४	१	८ १	९ ३४	११ २८	१३ ४२	१६ ५	१८ २५	२० ४२	२३ ४	१ २४	३ २९	५ ९	६ ३५
	१५	२	७ ५७	९ ३०	११ २४	१३ ३८	१६ १	१८ २१	२० ३८	२३ ०	१ २०	३ २५	५ ६	६ ३१
	१६	३	७ ५३	९ २६	११ २०	१३ ३५	१५ ५७	१८ १७	२० ३४	२२ ५६	१ १६	३ २१	५ २	६ २७
	१७	४	७ ४९	९ २२	११ १६	१३ ३१	१५ ५३	१८ १३	२० ३०	२२ ५२	१ १२	३ १७	४ ५८	६ २३
	१८	५	७ ४५	९ १८	११ १२	१३ २७	१५ ४९	१८ ९	२० २७	२२ ४८	१ ८	३ १३	४ ५४	६ १९
	१९	६	७ ४१	९ १४	११ ९	१३ २३	१५ ४५	१८ ५	२० २३	२२ ४४	१ ४	३ ९	४ ५०	६ १५
	२०	७	७ ३७	९ १०	११ ५	१३ १९	१५ ४१	१८ १	२० १९	२२ ४०	१ ०	३ ५	४ ४६	६ ११
	२१	८	७ ३३	९ ६	११ १	१३ १५	१५ ३७	१७ ५७	२० १५	२२ ३६	० ५६	३ १	४ ४२	६ ७
	२२	९	७ २९	९ २	१० ५७	१३ ११	१५ ३३	१७ ५३	२० ११	२२ ३२	० ५२	२ ५७	४ ३८	६ ३
	२३	१०	७ २५	८ ५८	१० ५३	१३ ७	१५ २९	१७ ४९	२० ७	२२ २८	० ४९	२ ५३	४ ३४	५ ५९
	२४	११	७ २२	८ ५४	१० ४९	१३ ३	१५ २५	१७ ४५	२० ३	२२ २५	० ४५	२ ४९	४ ३०	५ ५५
	२५	१२	७ १८	८ ५०	१० ४५	१२ ५९	१५ २१	१७ ४१	१९ ५९	२२ २१	० ४१	२ ४५	४ २६	५ ५१
	२६	१३	७ १४	८ ४६	१० ४१	१२ ५५	१५ १७	१७ ३७	१९ ५५	२२ १७	० ३७	२ ४१	४ २२	५ ४७
	२७	१४	७ १०	८ ४२	१० ३७	१२ ५१	१५ १३	१७ ३३	१९ ५१	२२ १३	० ३३	२ ३७	४ १८	५ ४३
	२८	१५	७ ६	८ ३८	१० ३३	१२ ४७	१५ १०	१७ ३०	१९ ४७	२२ ९	० २९	२ ३३	४ १४	५ ३९
	२९	१६	७ २	८ ३५	१० २९	१२ ४३	१५ ६	१७ २६	१९ ४३	२२ ५	० २५	२ ३०	४ १०	५ ३६
	३०	१७	६ ५८	८ ३१	१० २५	१२ ३९	१५ २	१७ २२	१९ ४०	२२ १	० २१	२ २६	४ ७	५ ३२
	३१	१८	६ ५४	८ २७	१० २१	१२ ३६	१४ ५८	१७ १८	१९ ३६	२१ ५७	० १७	२ २२	४ ३	५ २८
अप्रैल	१	१९	६ ५०	८ २३	१० १७	१२ ३२	१४ ५४	१७ १४	१९ ३२	२१ ५३	० १३	२ १८	३ ५९	५ २४
	२	२०	६ ४६	८ १९	१० १३	१२ २८	१४ ५०	१७ १०	१९ २८	२१ ४९	० ९	२ १४	३ ५५	५ २०
	३	२१	६ ४२	८ १५	१० १०	१२ २४	१४ ४६	१७ ६	१९ २४	२१ ४५	० ५	२ १०	३ ५१	५ १६
	४	२२	६ ३८	८ ११	१० ६	१२ २०	१४ ४२	१७ २	१९ २०	२१ ४१	० १	२ ६	३ ४७	५ १२
	५	२३	६ ३४	८ ७	१० २	१२ १६	१४ ३८	१६ ५८	१९ १६	२१ ३७	२३ ५७	२ २	३ ४३	५ ८
	६	२४	६ ३०	८ ३	९ ५८	१२ १२	१४ ३४	१६ ५४	१९ १२	२१ ३३	२३ ५३	१ ५८	३ ३९	५ ४
	७	२५	६ २७	७ ५९	९ ५४	१२ ८	१४ ३०	१६ ५०	१९ ८	२१ २९	२३ ५०	१ ५४	३ ३५	५ ०
	८	२६	६ २३	७ ५५	९ ५०	१२ ४	१४ २६	१६ ४६	१९ ४	२१ २६	२३ ४६	१ ५०	३ ३१	४ ५६
	९	२७	६ १९	७ ५१	९ ४६	१२ ०	१४ २२	१६ ४२	१९ ०	२१ २२	२३ ४२	१ ४६	३ २७	४ ५२
		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१४ १८	१६ ३८	१८ ५६	२१ १८	२३ ३८	१ ४२	३ २३	४ ४८
	११	२९	६ ११	७ ४३	९ ३८	११ ५२	१४ १४	१६ ३४	१८ ५२	२१ १४	२३ ३४	१ ३८	३ १९	४ ४४
	१२	३०	६ ७	७ ४०	९ ३४	११ ४८	१४ ११	१६ ३१	१८ ४८	२१ १०	२३ ३०	१ ३५	३ १५	४ ४१
	१३	३१	६ ३											

भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल

इस पंचाग में जो दैनिक लग्नसारणी दी गई है, वह चण्डीगढ़ में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) बतलाती है। इसी लग्नसारणी से नीचे दिए गए कोष्ठक की सहायता से भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) आसानी से इस प्रकार जाना जा सकता है :-दैनिक लग्नसारणी से अपनी अभीष्ट तारीख को चण्डीगढ़ में लग्न का समाप्तिकाल जान लीजिए और उसमें अपने नगर के आगे और लग्न के नीचे इस कोष्ठक में लिखे मिनटों को चिह्न के अनुसार जोड़ने या घटाने से उस नगर में लग्न का समाप्ति काल मालूम हो जाएगा। जैसे-मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुन लग्न का समाप्ति काल जानना है। ९ अप्रैल को चण्डीगढ़ में मिथुन का समाप्तिकाल १२ घं. ० मि. है, यह हमने दैनिक लग्नसारणी से ज्ञात किया। नीचे कोष्ठक में मद्रास, के आगे मिथुन के नीचे + १९ मिनट लिखे हैं। + होने से १९ मिनटों को १२ घं. ० मिनट में जोड़ने पर १२ घं. १९ मिनट मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुनलग्न का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) बन गया।

लग्न / नगर	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
अजमेर	+१७	+१८	+१७	+१४	+१०	+६	+१	-१	०	+४	+८	+१२
अम्बाला	०	०	०	०	०	०	-१	-१	-१	०	०	०
अमृतसर	+७	+६	+६	+७	+८	+९	+१०	+१०	+१०	+९	+८	+७
अलवर	+७	+८	+७	+५	+२	-२	-५	-६	-६	-३	०	+४
अलीगढ़	+१	+२	+१	-१	-४	-८	-११	-१२	-१२	-९	-६	-२
अहमदाबाद	+३०	+३३	+३१	+२५	+१८	+११	+४	-१	+१	+८	+१५	+२३
आगरा	+१	+३	+२	-१	-४	-८	-११	-१३	-१३	-९	-६	-२
उज्जैन	+१८	+२१	+१९	+१३	+६	-१	-८	-१३	-११	-४	+३	+११
उदयपुर	+२४	+२६	+२५	+२०	+१४	+८	+२	-२	०	+५	+१२	+१८
इन्दौर	+१८	+२२	+२०	+१४	+५	-३	-१०	-१५	-१३	-६	+३	+१०
करनाल	+१	+१	+१	०	०	-१	-२	-२	-२	-१	-१	०
कलकत्ता	-३२	-२८	-३०	-३६	-४५	-५३	-६०	-६५	-६३	-५६	-४७	-४०
कांगड़ा	०	-१	-१	+१	+२	+३	+५	+६	+५	+४	+३	+१
कानपुर	-६	-५	-६	-९	-१३	-१७	-२२	-२४	-२३	-१९	-१५	-११
काशी	-१५	-१३	-१४	-१८	-२४	-२९	-३४	-३७	-३६	-३१	-२५	-२०
कुरुक्षेत्र	+२	+२	+२	+१	+१	०	-१	-१	-१	०	०	+१
कोटा	+१४	+१६	+१५	+११	+५	०	-५	-८	-७	-२	+४	+९
गुड़गांव	+४	+४	+४	+२	०	-२	-४	-५	-५	-३	-१	+१
गुरदासपुर	+३	-२	-२	+४	+५	+६	+८	+९	+८	+७	+६	+४
गोरखपुर	-१८	-१७	-१८	-२१	-२५	-२९	-३४	-३६	-३५	-३१	-२७	-२३
ग्वालियर	+३	+५	+४	०	-४	-९	-१३	-१६	-१५	-११	-६	-२
चम्बा	-१	-२	-१	०	+२	+५	+७	+८	+७	+६	+३	+१
जम्मू	+४	+३	+४	+५	+७	+१०	+१२	+१३	+१२	+११	+८	+६
जयपुर	+११	+१२	+११	+८	+५	+१	-३	-५	-४	०	+३	+७
जालन्धर	+५	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+५
जीन्द	+५	+६	+५	+४	+३	+१	०	-१	-१	+१	+२	+४
जैसलमेर	+३१	+३२	+३१	+२८	+२५	+२१	+१७	+१५	+१६	+२०	+२३	+२७
जोधपुर	+२३	+२५	+२४	+२०	+१६	+११	+७	+४	+५	+९	+१४	+१८
झांसी	+३	+५	+४	०	-६	-११	-१६	-१९	-१८	-१३	-७	-२
दिल्ली	+३	+३	+३	+१	-१	-३	-५	-६	-६	-४	-२	०
देहरादून	-५	-५	-५	-५	-५	-५	-६	-६	-६	-५	-५	-५
नागपुर	+८	+११	+१०	+२	-७	-१७	-२६	-३१	-३९	-२०	-११	-२
नाभा	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+२	+२	+२	+३	+३	+३

लग्न / नगर	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
नैनीताल	-८	-७	-८	-९	-१०	-१२	-१३	-१४	-१४	-१२	-११	-९
पटियाला	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१	+१	+१	+२	+२	+२
पठानकोट	+१	+१	+१	+३	+४	+६	+८	+९	+८	+७	+५	+३
पटना	-२४	-२२	-२३	-२७	-३२	-३८	-४२	-४५	-४४	-३९	-३४	-२९
पुंछ	+४	+३	+४	+७	+१०	+१४	+१८	+२०	+१९	+१५	+१२	+८
प्रयाग	-११	-९	-१०	-१४	-१९	-२४	-२९	-३१	-३१	-२६	-२१	-१६
फरीदकोट	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८
फिरोजपुर	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९
बम्बई	+३६	+४१	+३८	+२९	+१८	+७	-४	-१०	-८	+३	+१४	+२५
बरेली	-६	-६	-६	-८	-१०	-१२	-१४	-१५	-१५	-१३	-११	-९
बंगलौर	+२६	+३३	+३०	+१७	०	-१६	-३२	-४०	-३७	-२२	-६	+११
बुलन्दशहर	०	०	०	-२	-४	-६	-८	-९	-९	-७	-५	-३
भटिण्डा	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+७	+७	+७	+८	+८	+८
भरतपुर	+३	+५	+४	+१	-२	-६	-९	-११	-११	-७	-४	०
भुवनेश्वर	-१८	-१४	-१६	-२४	-३४	-४४	-५४	-५८	-५७	-४८	-३८	-२८
भोपाल	+११	+१४	+१२	+६	-१	-८	-१५	-२०	-१८	-११	-४	+४
मद्रास	+१५	+२२	+१९	+६	-११	-२७	-४३	-५१	-४८	-३३	-१७	०
मथुरा	+३	+४	+३	+१	-२	-६	-९	-१०	-१०	-७	-४	०
मण्डी (हि.प्र.)	-२	-३	-३	-२	-१	०	+२	+२	+२	+१	०	-१
मलेरकोटला	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३	+३	+३	+४	+४	+४
मेरठ	-१	०	-१	-२	-३	-५	-६	-७	-७	-५	-४	-२
रोपड	+१	+१	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१
रोहतक	+४	+५	+४	+३	+१	०	-२	-३	-३	-१	+१	+२
लखनऊ	-९	-८	-९	-१२	-१५	-१९	-२३	-२५	-२४	-२०	-१७	-१३
लुधियाना	+३	+३	+३	+३	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३
शिमला	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-१	-१	-१	-२
श्रीनगर (का.)	+१	०	+१	+४	+७	+११	+१५	+१७	+१६	+१२	+९	+५
सहारनपुर	-१	-१	-१	-२	-२	-३	-४	-४	-४	-३	-३	-२
हरिद्वार	-४	-४	-४	-५	-५	-६	-७	-७	-७	-६	-६	-५
हिसार	+७	+८	+७	+६	+५	+३	+२	+१	+१	+३	+४	+६
हैदराबाद	+१५	+२१	+१८	+८	-५	-१७	-२९	-३५	-३३	-२२	-९	+३
होशियारपुर	+२	+१	+१	+२	+३	+४	+५	+५	+५	+४	+३	+२

अक्षांशादि सारणी (भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांशादि)

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	सै.
अकोला (म.)	२०	४२	७७	२	—२१	५२
अगरतल्ला (त्रि.)	२३	४९	९१	१८	+३५	१२
अंकलेश्वर (गु.)	२१	३८	७३	३	—३७	४८
अखनूर (का.)	३२	५४	७४	४५	—३१	०
अजन्ता (म.)	२०	३३	७५	४८	—२६	४८
अजमेर (रा.)	२६	२७	७४	४२	—३१	१२
अनन्तनाग (का.)	३३	४३	७५	१७	—२८	५२
अनामलै (ता.)	१०	३४	७६	५०	—२२	४०
अनूपशहर (उ.प्र.)	२८	२१	७८	१६	—१६	५६
अमरावती (म.)	२०	५६	७७	४८	—१८	४८
अमरेली (ता.)	२१	३६	७१	१५	—४५	०
अमरोहा (उ.प्र.)	२८	५४	७८	३१	—१५	५६
अमृतसर (पं.)	३१	३७	७४	५५	—३०	२०
अमेठी (उ.प्र.)	२६	८	८१	५०	—२	४०
अम्बाला (ह.)	३०	२१	७६	५२	—२२	३२
अयोध्या (उ.प्र.)	२६	४८	८२	१४	—१	४
अरकोणम् (ता.)	१३	५	७९	४३	—११	८
अर्की (हि.प्र.)	३१	९	७६	५८	—२२	८
अल्मोड़ा (उ.प्र.)	२९	३७	७९	४०	—११	२०
अलवर (रा.)	२७	३४	७६	३८	—२३	२८
अलीगढ़ (उ.प्र.)	२७	५४	७८	६	—१७	३६
अहमदनगर (मं.)	१९	५	७४	४८	—३०	४८
अहमदाबाद (गु.)	२३	२	७२	३८	—३९	२८
आगरा (उ.प्र.)	२७	१०	७८	५	—१७	४०
आजमगढ़ (उ.प्र.)	२६	५	८३	१२	+ २	४८
आनन्द (गु.)	२२	३२	७६	०	—३८	०
आबू (राज.)	२४	४०	७३	४५	—३९	०
आरा (बि.)	२५	३४	८४	३४	+ ८	१६
आसनसोल (बं.)	२३	४२	८७	१	+ १८	४
इटारसी (म.प्र.)	२२	३७	७७	४५	—१९	०
इटावा (उ.प्र.)	२६	४७	७६	२	—१३	५२
इन्दौर (म.प्र.)	२२	४४	७५	५०	—२६	४०
इम्फाल (मणि.)	२४	४४	९३	५८	—४५	५२
उज्जैन (म.प्र.)	२३	९	७४	४३	—२७	८
उदयपुर (रा.)	२४	३५	७३	४२	—३५	१२
उन्नाव (उ.प्र.)	२६	३४	८०	३०	—८	०
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	—२९	१२

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	सै.
ऊना (हि.प्र.)	३१	३२	७६	१८	—२४	४८
एकलिंगजी (राज.)	२४	४३	७३	४६	—३४	५६
एटा (उ.प्र.)	२७	३५	७८	४०	—१५	२०
एर्नाकुलम् (के.)	१०	०	७६	१५	—२५	०
एलिचपुर (म.)	२१	१८	७७	३३	—१९	४८
एलेप्पे (के.)	९	३०	७६	२३	—२४	२८
ऐलोरा (म.)	२०	२	७५	१३	—२९	८
ओरंगाबाद (आं.)	१९	५३	७५	२३	—२८	२८
कटक (उ.)	२०	२८	८५	५४	+ १३	३६
कटनी (म.प्र.)	२३	५०	८०	२३	—८	२८
कठुआ (का.)	३२	१७	७५	३६	—२७	३६
कण्डाघाट (हि.प्र.)	३०	५७	७७	६	—२१	३६
कन्नौज (उ.प्र.)	२७	३	७९	५८	—१०	८
कपूर्थला (पं.)	३१	२३	७५	२५	—२८	२०
करतारपुर (पं.)	३१	२७	७५	३२	—२७	५२
करनाल (हरि.)	२९	४२	७७	२	—२१	५२
करौली (रा.)	२६	३०	७७	४	—२१	४४
कलकत्ता (बं)	२२	३४	८८	२४	+२३	३६
कसौली (हि.प्र.)	३०	५३	७७	१	—२१	५६
काँगड़ा (हि.प्र.)	३२	५	७६	१८	—२४	४८
कांचीपुरम् (ता.)	१२	५०	७९	४५	—११	०
काठियाबाड़ (गु.)	२२	०	७१	०	—४६	०
कानपुर (उ.प्र.)	२६	२७	८०	२४	—८	२४
कारगिल (का.)	३४	३०	७६	१३	—२५	८
कालका (ह.)	३०	५०	७७	१	—२१	५६
काशी (उ.प्र.)	२५	२०	८३	०	+ २	०
किसनगढ़ (राज.)	२७	५३	७०	३७	—४७	३२
कुराली (पं.)	३०	५०	७६	३५	—२३	४०
कुरुक्षेत्र (हरि.)	३०	०	७६	४८	—२२	४८
कुल्लू (हि.प्र.)	३१	५८	७७	६	—२१	३६
कुमारी (अन्तरीप)	८	५	७७	३४	—१९	४४
कुम्भकोणम् (ता.)	१०	५८	७९	२५	—१२	२०
कैथल (ह.)	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कोचीन (के.)	९	५८	७६	१७	—२४	५२
कोटखाई (हि.प्र.)	३१	८	७७	३६	—१९	३६
कोटा (राज.)	२५	१०	७५	५२	—२६	३२
[illegible] (ता.)	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	—२९	५२

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	सै.
कोल्हापुर (म.)	१६	४२	७४	१६	—३२	५६
कोहिमा (ना.)	२५	४१	९४	७	+ ४६	२८
खन्ना (पं.)	३०	४२	७६	१३	—२५	८
खुर्जा (उ.प्र.)	२८	१५	७७	५०	—१८	४०
गया (बिहार)	२४	४९	८५	१	+ १०	४
गंगटोक (सि.)	२७	२०	८८	४०	+२४	४०
गढ़शंकर (पं.)	३१	१३	७६	११	—२५	१६
गाजियाबाद (उ.प्र.)	२८	४०	७७	२८	—२०	८
गाजीपुर (उ.प्र.)	२५	३४	८३	३५	+ ४	२०
गिलगित (का.)	३५	५५	७४	२२	—३२	३२
गुड़गांव (हरि.)	२८	२७	७७	४	—२१	४४
गुरदासपुर (पं.)	३२	२	७५	२७	—२८	१२
गोंड़ा (उ.प्र.)	२७	१०	८१	५७	—२	१२
गोरखपुर (उ.प्र.)	२६	४५	८३	२४	+ ३	३६
गोहाटी (आसाम)	२६	११	९१	४५	+ ३७	०
ग्वालियर (म.प्र.)	२६	१४	७८	१०	—१७	२०
चण्डीगढ़ (पं.)	३०	४४	७६	५२	—२२	३२
चन्दौसी (उ.प्र.)	२८	२७	७८	४९	—१४	४४
चम्बा (हि.प्र.)	३२	२९	७६	१०	—२५	२०
चित्तौडगढ़ (रा.)	२४	५४	७४	४२	—३१	१२
चीरापूंजी (मे.)	२५	१७	९१	४७	+ ३७	८
चूरू (राज.)	२८	१९	७५	१	—२९	५६
छतरपुर (म. प्र.)	२४	५४	७९	३८	—११	२८
छपरा (बिहार)	२५	४७	८४	४१	+ ८	४४
जबलपुर (म.प्र.)	२३	१०	७९	५९	—१०	४
जम्मू (का.)	३२	४४	७४	५४	—३०	२४
जयपुर (राज.)	२६	५५	७५	५२	—२६	३४
जलगांव (म.)	२१	५	७५	४०	—२७	२०
जलपाई गुड़ी (बं.)	२६	३२	८८	४६	+ २५	४
जामनगर (गुज.)	२२	२७	७०	७	—४९	३२
जालंधर (पं.)	३१	१९	७५	३४	—२७	४०
जालोर (राज.)	२५	२२	७२	३८	—३९	२८
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	—१२	२८
जीन्द (हरि.)	२९	१९	७६	२३	—२४	२८
जूनागढ़ (गु.)	२१	३१	७०	३६	—४७	३६
जैसलमेर (राज.)	२६	५५	७०	५७	—४६	१२
जोगिन्दर नगर (हि.प्र.)	३१	५०	७६	४५	—२३	०

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	सै.
जोधपुर (राज.)	२६	१८	७३	४	—३७	४४
जौनपुर (उ. प्र.)	२५	४६	८२	४४	+ ०	५६
ज्वालाजी (हि.प्र.)	३१	५६	७६	२२	—२४	३२
जालना (म.)	१९	५१	७५	५६	—२६	१६
झरिया (बि.)	२३	५०	८६	३३	+ १६	१२
झांसी (उ.प्र.)	२५	२७	७८	३७	—१५	३२
झालरापाटन (रा.)	२४	३२	७६	१२	—२५	१२
झालाबाड़ (रा.)	२४	३६	७४	९	—३३	२४
झुंझुनू (रा.)	२८	६	७५	२५	—२८	२०
टाडाउरमुर (पं.)	३१	४०	७५	४१	—२७	१६
टिहरी (उ.प्र.)	३०	२०	७८	२०	—१६	०
टोंक (राज.)	२६	११	७५	५०	—२६	४०
टोडारायसिंह (रा.)	२६	०	७५	२९	—२८	४
ट्रावनकोर (के.)	९	०	७७	०	—२२	०
डगशई (हि.प्र.)	३०	५३	७७	६	—२१	३६
डलहोजी (हि.प्र.)	३२	३२	७५	५९	—२६	४
डिबाई (उ.प्र.)	२८	१२	७८	१५	—१७	०
डिब्रूगढ़ (आ.)	२७	२९	९४	५६	+ ४९	४४
डीडवाना (राज.)	२७	२४	७४	३४	—३१	४४
डीसा (गु.)	२४	१४	७२	१३	—४१	८
डूंगरपुर (राज.)	२३	५०	७६	४६	—३५	८
तिरुपति (आंध्र.)	१३	४०	७९	२०	—१२	५०
त्रिचनापल्ली (ता.)	१०	५०	७८	४६	—१४	५६
त्रिचुर (के.)	१०	३०	७६	१५	—२५	०
त्रिवेन्द्रम् (के.)	८	३०	७६	५७	—२२	१२
थराड (गु.)	२४	२३	७१	३७	—४३	३२
थानेसर (हरि.)	२९	५८	७६	५६	—२२	१६
दतिया (म.प्र.)	२५	३९	७८	२७	—१६	१२
दमोह (म.प्र.)	२३	५०	७९	२९	—१२	४
दरभंगा (बिहार)	२६	१०	८५	५७	+ १३	४८
दसूआ (पं.)	३१	४९	७५	४२	—२७	१२
दार्जिलिंग (बं.)	२७	३	८८	१८	+ २३	१२
दिल्ली	२८	३८	७७	१२	—२१	१२
दीनानगर (पं.)	३२	८	७५	३१	—२७	५६
देवबन्द (उ.प्र.)	२९	४२	७७	४३	—१९	८
देवरिया (उ.प्र.)	२३	३३	८३	४५	+ ५	०
देवास (म.प्र.)	२२	५८	७६	६	—२५	३६

अक्षांशादि सारणी (भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांशादि)

नगर	अक्षांश (उतर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	सै.
देव प्रयाग (उ.प्र.)	३०	९	७८	३७	-१५	३२
देहरादून (उ.प्र.)	३०	१९	७८	४	-१७	४४
द्वारिका (गु.)	२२	१४	६९	७	-५३	३२
धनबाद (बि.)	२३	४७	८६	३०	+ १६	०
धर्मशाला (हि.प्र.)	३२	१६	७६	२३	-२४	२८
धारवाड़ (क.)	१५	२७	७५	५	-२९	४०
धौलपुर (रा.)	२६	४२	७७	५३	-१८	२८
नडियाद (गु.)	२२	४१	७२	५५	-३८	२०
नरैना (रा.)	२३	५०	७४	११	-३३	१६
नवलगढ़ (रा.)	२७	५१	७५	१८	-२८	४८
नसीराबाद (रा.)	२६	१८	७४	४६	-३०	५६
नागपुर (म.)	२१	९	७९	९	-१३	२४
नागौर (रा.)	२७	११	७३	४०	-३५	२०
नाचना (रा.)	२७	२९	७१	७५	-४३	०
नाथद्वारा (रा.)	२४	५६	७६	५२	-३४	३२
नान्देड़ (म.)	१९	९	७७	२७	-२०	१२
नाभा (पं.)	३०	२५	७६	९	-२५	३६
नारनौल (ह.)	२८	२	७६	१४	-२५	४
नालागढ़ (हि.प्र.)	३१	३	७६	४२	-२३	१२
नाहन (हि.प्र.)	३०	३३	७७	२१	-२०	३६
नासिक (म.)	२०	२	७३	५०	-३४	४०
निम्बहेड़ा (रा.)	२४	३७	७४	४५	-३१	०
नीमच (म.प्र.)	२४	२७	७४	५२	-३०	३२
नूरपुर (हि.प्र.)	३२	१८	७५	५६	-२६	१६
नैनवा (रा.)	२५	४५	७५	५७	-२६	१२
नैनीताल (उ.प्र.)	२९	२३	७९	३०	-१२	०
नोहर (राज.)	२९	११	७४	४६	-३०	५६
नौशेरा (का.)	३३	१३	७४	१७	-३२	५२
पचपदरा (रा.)	२५	५५	७२	२१	-४०	३६
पंचमढ़ी (म.प्र.)	२२	३०	७८	२२	-१६	३२
पंचकूला (हरि.)	३०	४६	७६	५६	-२२	१६
पंजिम (गोआ)	१५	२९	७३	४९	-३४	४४
पटना (बि.)	२५	३७	८५	१३	+ १०	५२
पटियाला (पं.)	३०	२०	७६	२५	-२४	२०

नगर	अक्षांश (उतर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	सै.
पटौदी (ह.)	२८	४८	७६	४८	-२२	४८
पठानकोट (पं.)	३२	१७	७५	४२	-२७	१२
पन्ना (म.प्र.)	२४	४४	८०	१४	-९	४
पाटन (गु.)	२३	५३	७२	१०	-४१	२०
पाण्डिचेरी	११	५६	७९	५३	-१०	२८
पालमपुर (हि.प्र.)	३२	७	७६	३२	-२३	५२
पाली (रा.)	२५	४६	७३	२५	-३६	२०
पूंछ (का.)	३३	५१	७४	८	-३३	२८
पुरनिया (वि.)	२५	४९	८७	३१	+ २०	४
पुरी (उडी.)	१९	४८	८५	५२	+ १३	२८
पूना (म.)	१८	३०	७३	५६	-३४	२८
पोरबन्दर (गु.)	२१	३७	६९	४९	-५०	४४
पोर्टब्लेअर	११	४०	९२	४६	+४१	४
प्रतापगढ़ (उ.प्र.)	२५	५४	८१	५९	-२	४
प्रतापगढ़ (म.प्र.)	२४	२	७४	४०	-३१	२०
प्रयाग (उ.प्र.)	२५	२८	८१	५४	-२	२४
फगबाड़ा (पं.)	३१	१४	७५	४६	-२६	५६
फतेहाबाद (उ.प्र.)	२७	१	७८	१९	-१६	४०
फतेहाबाद (ह.)	२९	३१	७५	३०	-२८	००
फरीदकोट (पं.)	३०	४०	७४	४०	-३१	२०
फरीदबाद (ह.)	२८	२५	७७	२२	-२०	३२
फर्रुखबाद (उ.प्र.)	२७	२४	७९	३७	-११	३२
फाजिल्का (पं.)	३०	२५	७४	४	-३३	४४
फिरोजपुर (पं.)	३०	५५	७४	४०	-३१	२०
फुलेरा (रा.)	२६	५२	७५	१६	-२८	५६
फैजाबद (उ.प्र.)	२६	४७	८२	१२	-१	१२
बंगलोर (क.)	१२	५८	७७	३८	-१९	२८
बटाला (पं.)	३१	४९	७५	१४	-२९	४
बदायूं (उ. प्र.)	२८	२	७९	१०	-१३	२०
बड़ोदा (गु.)	२२	१८	७३	१२	-३७	१२
बम्बई (म.)	१९	०	७२	५४	-३८	२४
बद्रीनाथ (उ.प्र.)	३०	४४	७९	३२	-११	५२
बर्दवान (ब.)	२३	१६	८७	५२	+२१	२८
बलिया (उ.प्र.)	२५	४४	८४	११	+ ६	४४

नगर	अक्षांश (उतर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं.	सै.
बागलकोट (क.)	१६	१२	७५	४४	-२७	४
बाकीपुर (बि.)	२५	४०	८५	१२	+१०	४८
बांसबाड़ा (रा.)	२३	३०	७४	२४	-३२	२४
बांदा (उ.प्र.)	२५	३०	८०	२२	-८	३२
बाराबंकी (उ.प्र.)	२६	५६	८१	१३	-५	८
बारामूला (का.)	३४	१०	७४	२०	-३२	४०
वालासोर (उ.)	२१	३०	८६	५४	+१७	३६
बालोतरा (रा.)	२५	४९	७२	१५	-४१	०
बिजनोर (उ.प्र.)	२९	२३	७८	११	-१७	१६
बिलासपुर (म.प्र.)	२२	५	८२	१३	-१	८
बिलासपुर (हि.प्र.)	३१	१९	७६	५०	-२२	४०
बीकानेर (रा.)	२८	१	७३	२२	-३६	३२
बीजापुर (म.)	१६	५०	७५	४७	-२६	५२
बुलन्दशहर (उ.प्र.)	२८	२४	७७	५४	-१८	२४
बूंदी (रा.)	२५	२७	७५	४१	-२७	१६
वृन्दावन (उ.प्र.)	२७	३३	७७	४४	-१९	४
बुद्धगया (बि.)	२४	४२	८४	५९	+९	५९
भद्रवाह (का.)	३३	१	७५	४३	-२७	८
भटिण्डा (पं.)	३०	११	७५	०	-३०	०
भरतपुर (रा.)	२७	१५	७७	३०	-२०	०
भरूच (गु.)	२१	४८	७३	१	-३७	५६
भागलपुर (बि.)	२५	१४	८६	५९	+१७	५६
भिवानी (ह.)	२८	४६	७३	१८	-२४	४८
भीनमाल (रा.)	२५	०	७२	१९	-४०	४४
भुज (गुज.)	२३	१६	६९	४४	-५१	४
भुवनेश्वर (उ.)	२०	१५	८५	५२	+१३	२८
भोपाल (म.प्र.)	२३	१६	७७	२३	-२०	२८
मऊ (उ.प्र.)	२५	५८	८३	३६	+४	२४
मछलीपट्टण (आ.)	१६	९	८१	८	-५	२८
मण्डी (हि.प्र.)	३१	४३	७६	५८	-२२	८
मद्रास (ता.)	१३	४	८०	१७	-८	५२
मथुरा (उ.प्र.)	२७	२८	७७	४१	-१९	१६
मन्दसोर (म.प्र.)	२४	४	७५	५	-२९	४०
मंसूरी (उ.प्र.)	३०	२७	७८	६	-१७	३६

नगर	अक्षांश (उतर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	सै.
महेसाणा (गु.)	२३	३५	७२	२७	-४०	१२
माछीबाड़ा (पं.)	३०	५५	७६	१५	-२५	०
महेन्द्रगढ़ (हरि.)	२८	१७	७६	१४	-२५	४
मण्डवी (गु.)	२२	५१	६९	३०	-५२	०
मारबाड़ जं. (रा.)	२५	४३	७३	४०	-३५	२०
मालेगांव (म.)	२०	३०	७४	४०	-३१	२०
मालेरकोटला (पं.)	३०	३१	७५	५९	-२६	४
मिर्जापुर (उ.प्र.)	२५	१०	८२	३३	-०	१२
मीरपुर (का.)	३३	१२	७३	५१	-३४	३६
मुगलसराय (उ.प्र.)	२५	१७	८३	११	+ २	४४
मुंगेर (बि.)	२५	२३	८६	३०	+ १६	०
मुजफर न. (उ.प्र.)	२९	२८	७७	४४	-१९	४
मुजफर पुर (बि.)	२६	७	८५	२७	+११	४८
मुरादाबाद (उ.प्र.)	२८	५१	७८	४९	-१४	४४
मेरठ (उ.प्र.)	२९	१	७७	४५	-१९	०
मैननुरी (उ.प्र.)	२७	१४	७९	३	-१३	४८
मोगा (पं.)	३०	४८	७५	१०	-२९	२०
मोरार (म.प्र.)	२६	१३	७८	१४	-१७	४
मोरेना (म.प्र.)	२६	२६	७८	४	-१७	४४
यवतमाल (म.)	२०	२३	७८	११	-१७	१६
चोल (हि.प्र.)	३२	११	७६	२३	-२४	२८
रतलाम (म.प्र.)	२३	२०	७५	७	-२९	३२
रत्नागिरि (म.)	१७	२	७३	१९	-३६	४४
राजकोट (गु.)	२२	१८	७०	५०	-४६	४०
राजमहेन्द्री (आ.)	१७	५	८१	४८	-२	४८
रांची (बि.)	२३	२०	८५	२०	+ ११	२०
रानीखेत (उ.प्र.)	२९	४०	७९	३०	-११	४८
रापर (गु.)	२३	३२	७०	४०	-४७	२०
रामपुर बुशहर (हि.प्र.)	३१	२७	७७	३८	-१९	२८
रायपुर (म.प्र.)	२१	१५	८१	४१	-३	१६
रायबरेली (उ.प्र.)	२६	१२	८१	१४	-५	४
रामेश्वरम् (ता.)	९	१७	७९	२२	-१२	३२
रिवाड़ी (ह.)	२८	१२	७६	४०	-२३	२०
रीवां (म.प्र.)	२४	३१	८१	१९	-४	४४

अक्षांशादि सारणी (भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांशादि)

नगर	अक्षांश (उतर) अं. क	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	नगर	अक्षांश (उतर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	नगर	अक्षांश (उतर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	नगर	अक्षांश (उतर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.
रोपड़ (पं.)	३० ५७	७६ ३०	—२४ ०	श्रीमाधोपुर (रा.)	२७ २५	७५ ३२	—२७ ५२	सिन्दरी (बं.)	२३ ४५	८६ ४२	+ १६ ४८	सोलन (हि.प्र.)	३० ५५	७७ ९	—२१ २४
रोहतक (ह.)	२८ ५४	७६ ३८	—२३ २८	संगरूर (पं.)	३० १२	७५ ५३	—२६ २८	सिरसा (ह.)	२९ ३२	७५ ४	—२९ ४४	हाजारी बाग (बि.)	२३ ५९	८५ २५	+ ११ ४०
लखनऊ (उ.प्र.)	२६ ५५	८० ५९	—६ ४	सतारा (म.)	२७ ४२	७४ २	—३३ ५२	सिरोही (रा.)	२४ ५३	७२ ५४	—३८ २४	हमीरपुर (उ.प्र.)	२५ ५८	८० १२	—९ १२
लाडवा (ह.)	२९ ५९	७७ ५	—२१ ४०	सनावर (पं.)	३० १८	७६ ३०	—२४ ०	सिलीगुड़ी (बं.)	२६ ४२	८८ २५	+२३ ४०	हमीरपुर (हि.प्र.)	३१ ४१	७६ ३१	—२३ ५६
लुधियाना (पं.)	३० ५५	७५ ५४	—२६ २४	सरदार शहर (रा.)	२८ २७	७४ ३२	—३१ ५२	सिवाना (रा.)	२५ ३६	७२ २७	—४० १२	हनुमानगढ़ (राज.)	२[illegible] ३५	७४ २१	—३२ ३६
लेह (का.)	३४ १०	७७ ४०	—१९ २०	सरहिन्द (पं.)	३० ३८	७६ २५	—२४ २०	सिहोरा (म.प्र.)	२३ २९	८० १९	—९ २४	हरदोई (उ.प्र.)	२७ २३	८० १०	—९ २०
लोहारू (ह.)	२८ २६	७५ ४७	—२६ ५२	सवाईमघोपुर (रा.)	२६ ०	७६ ३०	—२४ ०	सिंहभूम (वि.)	२२ २४	८५ ३०	+१२ ००	हरिद्वार (उ.प्र.)	२९ ५८	७५ १३	—१७ ८
बर्धा (म.)	२० ४५	७८ ३९	—१५ २४	ससाराम (बि.)	२४ ५७	८४ ३	+६ १२	सीकर (रा.)	२७ ३६	७५ १२	—२९ १२	हाथरस (उ.प्र.)	२७ ३६	७८ ६	—१७ ३६
विजयवाड़ा (आं.)	१६ ३१	८० ३९	—७ २४	सहारनपुर (उ.प्र.)	२९ ५८	७७ ३३	—१९ ४८	सीतापुर (उ.प्र.)	२७ ३२	८० ४३	—७ ८	हापुड़ (उ.प्र.)	२८ ४३	७७ ५०	—१८ ४०
विशाखापट्टनम् (आं.)	१७ ४२	८३ २०	+ ३ २०	सागर (म.प्र.)	२३ ५०	७८ ४५	—१५ ०	सुन्दर नगर (हि.प्र.)	३१ ३२	७६ ५३	—२२ २८	हांसी (ह.)	२९ ६	७६ ०	—२६ ०
शाहदरा (दिल्ली)	२८ ४०	७७ २०	—२० ४०	सांगली (म.)	१६ ५२	७४ ३६	—३१ ३६	सूरत (गु.)	२१ १२	७२ ५२	—३८ ३२	हिसार (ह.)	२९ १०	७५ ४६	—२६ ५६
शाहावाद (उ.प्र.)	२७ ३०	८० ०	—१० ०	सांगानेर (रा.)	२६ ४९	७५ ४९	—२६ ४४	सूरतगढ़ (रा.)	२९ १९	७३ ५७	—३४ १२	हुबली (क.)	१५ २०	७५ १२	—२९ १२
शिमला (हि.प्र.)	३१ ६	७७ १३	—२१ ८	साम्भर (रा.)	२६ ५४	७५ १३	—२९ ८	सोजत (रा.)	२५ ५६	७३ ४२	—३५ १२	हैदराबाद (आं)	१७ २०	७८ ३०	—१६ ०
शिलांग (मेघा.)	२५ ३४	९१ ५४	+३७ ३६	सिकन्दराबाद (आं.)	२७ २७	७८ ३३	—१५ ४८	सोनहाट (म.प्र.)	२३ २९	८२ ३०	० ०	होशंगाबाद (म.प्र.)	२२ ४६	७७ ४५	—१९ ०
श्रीनगर (का.)	३४ ६	७४ ५१	—३० ३६	सिन्दरी (रा.)	२५ ३३	७१ ५५	—४२ २०	सोमनाथ (गु.)	२१ ४	७० २६	—४८ १६	होशियारपुर (पं.)	३१ ३२	७५ ५७	—२६ १२
												होसुर (ता.)	१२ ४४	७७ ५२	—१८ ३२

राजस्थान के नगरों के अक्षांश, रेखांश एवं स्टैण्डर्ड अन्तर

(स्टैण्डर्ड अन्तर सर्वत्र ऋण है)

अकलेरा	२४ २३	७६ ३६	२३ ३६	ओसिया	२६ ४३	७२ ५५	३८ २०	गंगानगर	२९ ४९	७३ ५०	३४ ४०	जयपुर	२६ ५५	७५ ५२	२६ ३२
अजमेर	२६ २७	७४ ४२	३१ १२	करौली	२६ ३०	७७ १	२१ ५६	गंगापुर (भीलबाड़ा)	२५ १३	७४ १६	३२ ५६	जसरासर	२७ ४५	७३ ५०	३४ ४०
अनूपगढ़	२९ ७	७३ ६	३७ ३६	कांकरोली	२५ ४	७३ ५४	३४ २४	गंगापुर (टोंक)	२६ २९	७६ ४६	२२ ५६	जसवंत पुरा	२४ ४८	७२ ३०	४० ०
अमेट	२५ २०	७३ ५९	३४ ४	कामन	२७ ३९	७७ १६	२० ५६	गिराब	२६ २	७० ३५	४७ ४०	जहाजपुर	२५ ३८	७५ १२	२९ १२
अलवर	२७ ३४	७६ ३८	२३ २८	किशनगढ़	२६ ३४	७४ ५२	३० ३२	गागरिया	२५ ४४	७० ४२	४७ १२	जाएल	२७ १५	७४ १२	३३ १२
अलीगढ़	२५ ५८	७६ ७	२५ ३०	कुशालगढ़	२३ १०	७४ २७	३२ १२	गूढ़ा	२५ १२	७१ ४८	४२ ४८	जालोर	२५ २२	७२ ३८	३९ २८
आबू	२४ ४०	७२ ४५	३९ ०	कूचामन	२७ ९	७४ ५२	३० ३२	घोटारू	२७ १८	७० ४	४९ ४४	जैसलमेर	२६ ५५	७० ५४	४६ २४
आबू रोड़	२४ २९	७२ ४७	३८ ५२	कूरी	२६ ४२	७० ४०	४७ २०	चात्सू	२६ ३६	७५ ५९	२६ ४	जोधपुर	२६ १८	७३ ४	३७ ४४
आमेर	२६ ५९	७५ ५२	२६ ३२	केकड़ी	२५ ५६	७५ १०	२९ २०	चारनवाला	२७ ५३	७२ १०	४१ २०	जोधासर	२८ ७	७३ ५०	३४ ४०
आसपुर	२३ ५८	७४ ३	३३ ४८	कोटरा	२४ २२	७३ १०	३७ २०	चित्तौड़गढ़	२४ ५४	७४ ४०	३१ २०	झालरापाटन	२४ ३३	७६ १०	२५ २०
आहोर	२५ २३	७२ ५२	३८ ३२	कोटा	२५ १०	७५ ५२	२६ ३२	चिरावा	२८ १५	७५ ३८	२७ २८	झालावाड़	२४ ३६	७६ ९	२५ २४
इन्द्रगढ़	२५ ४४	७६ १२	२५ १२	कोलायत	२७ ५०	७२ ५७	३८ १२	चीलो	२७ २२	७३ ३०	३६ ०	झुंझुनु	२८ ६	७५ २५	२८ २०
उतारनौ	२६ ६	७१ ५८	४२ ८	खण्डेला	[illegible]	[illegible]	[illegible]	चूरू	[illegible]	[illegible]	२१ ५६	टोडगढ़	२५ ४२	७४ ०	३४ ०
उदयपुर	२४ ३५	७३ ४१	३५ १६	खुईआला	२७ ६	७० २५	४८ २०	चोगू	२७ ८	७५ ४७	२६ ५२	टोड़ाराय सिंह	२६ ०	७५ २९	२८ ४
एकलिंगजी	२४ ४३	७३ ४६	३४ ५६	खेडब्रह्मा	२४ ५	७३ ३	३७ ४८	छबरा	२४ ४०	७६ ५०	२२ ४०	टौंक	२६ ११	७५ ५०	२६ ४०
[illegible]	[illegible]	७३ ६	३७ ३६	[illegible]	२४ ०	७३ ३५	३५ ४०	छोटी सादड़ी	२४ २४	७४ ४२	३१ १२	डीग	२७ २८	७७ २०	२० ४०

राजस्थान के नगरों के अक्षांश, रेखांश एवं स्टैण्डर्डअन्तर

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण मि. सै.
डीड़वाना	२७ २४	७४ ३४	३१ ४४
डूंगरपुर	२३ ५०	७३ ४३	३५ ८
डेगाना	२६ ५०	७४ १८	३२ ४८
तिजारा	२७ ५५	७६ ५०	२२ ४०
थाना कस्बा	२५ १३	७७ २०	२० ४०
थाना गाज़ी	२७ २५	७६ १९	२४ ४४
दान्ता	२४ १२	७२ ४७	३८ ५२
देओरा	२६ ३०	७० ४२	४७ १२
देचू	२६ ४७	७२ २०	४० ४०
देवलिया	२४ ३	७४ ४३	३१ ८
देवली	२५ ४६	७५ २५	३८ २०
देवीकोट	२६ ४२	७१ १२	४५ १२
देशनोके	२७ ४८	७३ २१	३६ ३६
देसुरी	२५ २०	७३ ३७	३५ ३२
धौलपुर	२६ ४२	७७ ५३	१८ २८
नरैना	२६ ५०	७४ ११	३३ १६
नवलगढ़	२७ ५१	७५ १८	२८ ४८
नसीराबाद	२६ १८	७४ ४६	३० ५६
नागौर	२७ ११	७३ ४४	३५ ४
नाचना	२६ २९	७१ ४५	४३ १०
नाथद्वारा	२४ ५६	७३ ५०	३४ ४०
निम्बेहड़ा	२४ ३७	७४ ४५	३१ ०
नीम का थाना	२७ ४४	७५ ४८	२६ ४८
नोखा	२७ ३५	७३ २९	३६ ४
नैनवा	२५ ४५	७५ ५७	२६ १२
नोहर	२९ ११	७४ ४६	३० ५६
पचपदरा	२५ ५५	७२ २१	४० ३६
परतापगढ़	२४ २	७४ ४७	३० ५२
पर्वतसर	२६ ५२	७४ ४७	३० ५२
पल्लू	२८ ५६	७४ १३	३३ ८
पाली	२५ ४६	७३ २०	३६ ४०
पिपिलोदा	२३ ३५	७४ ५०	३० ४०
पिरावा	२४ १३	७६ ३	२५ ४८
पिलानी	२८ २३	७५ ३५	२७ ४०

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण मि. सै.
पीपार रोड़	२६ २७	७३ २७	३६ १२
पुनासर	२७ २	७३ २	३७ ५२
पुष्कर	२८ ३०	७४ ३३	३१ ४८
पूगल	२८ ३१	७२ ४७	३८ ५२
प्रसाद	२४ ११	७३ ४२	३५ १२
फतेहपुर	२८ ०	७५ ०	३० ०
फलौदी	२७ ९	७२ २२	४० ३२
फुलेरा	२६ ५२	७५ १६	२८ ५६
बड़ी सादड़ी	२४ २५	७४ २८	३२ ८
पोखरन	२६ ५५	७१ ५५	४२ २०
बनस्थली	२६ २३	७५ ५०	२६ ४०
बयाना	२६ ५४	७७ १७	२० ५२
बान्दनवाड़ा	२६ ९	७४ ४२	३१ १२
बस्वा	२७ ६	७६ ३२	२३ ५२
बान्दी कुई	२७ ३	७६ ३५	२३ ४४
बाड़मेर	२५ ४५	७१ २५	४४ २०
बाड़ी	२६ ३९	७७ ३६	१९ ३६
बाप	२७ २२	७२ २२	४० ३२
बारन	२५ ६	७६ ३०	२४ ०
बांसवाड़ा	२३ ३०	७४ २४	३२ २४
बाली	२५ ५०	७४ ५	३३ ४०
बालोतरा	२५ ४९	७२ १४	४१ ४
बिरसलपुर	२८ १०	७२ १५	४१ ०
बिलारा	२६ १०	७३ ४२	३५ १२
बीकानेर	२८ १	७३ २०	३६ ४०
बून्दी	२५ २७	७५ ४०	२७ २०
ब्यावर	२६ ६	७४ २०	३२ ४०
भरतपुर	२७ १५	७७ ३०	२० ०
भवारी	२५ ४३	७२ ५२	३८ ३२
भंवरगढ़	२५ ६	७६ ५०	२२ ४०
भाद्रा	२९ १५	७५ २०	२८ ४०
भीनमाल	२५ ०	७२ १९	४० ४४
भीम	२५ ३९	७४ ९	३३ २४
भीलवाड़ा	२५ २१	७४ ४०	३१ २०

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण मि. सै.
मकराना	२७ ३	७४ ४३	३१ ८
मण्डलगढ़	२५ १२	७५ ९	२९ २४
महला	२६ ५०	७५ ३०	२८ ०
महाजन	२८ ४८	७३ ५६	३४ १६
मांगरोल	२५ २०	७६ ३०	२४ ०
मारवाड़ जंकशन	२५ ४३	७३ ४५	३५ ०
मालपुरा	२६ १८	७५ २५	२८ २०
मावली	२४ ४७	७३ ५८	३४ ८
मेड़ता	२६ ३९	७४ ६	३३ ६
मेड़ता रोड़	२६ ४३	७३ ५५	३४ २०
मियालजर	२६ १८	७० २२	४८ ३२
मुकन्दबाड़ा	२४ ४९	७५ ५९	२६ ४
मुनबाओ	२५ ४३	७० १५	४९ ०
मोदरी	२४ २५	७३ २५	३६ २०
मोहनगढ़	२७ १७	७१ १८	४४ ४८
रतनगढ़	२८ ५	७४ ३९	३१ २४
राजगढ़	२८ ३९	७५ २६	२८ १६
रानीवाड़ा	२४ ४५	७२ १३	४१ ८
रामगढ़ (जयपुर)	२७ १५	७५ १०	२९ २०
रामगढ़(जैसलमेर)	२७ २०	७० ३०	४८ ०
रामदेवरा	२७ ०	७१ ५२	४२ ३४
रायसिंह नगर	२९ ३२	७३ २७	३६ १२
रिखभदेव	२४ ४	७३ ४०	३५ २०
रींगस	२७ २१	७५ ३४	२७ ४४
रूपनगर	२६ ४८	७४ ५४	३० २४
रेनी	२८ ४१	७५ ५	२९ ४०
लछमनगढ़	२७ ४५	७५ ४	२९ ४४
लाठी	२७ ३	७१ ३०	४४ ००
लाडंनू	२७ ३९	७५ २३	३२ २८
लालसोत	२६ ३४	७६ २३	२४ २८
लूनी	२६ ०	७२ ५२	३८ ३२
लोहारिया	२३ ४८	७४ १५	३३ ००
शाहगढ़	२७ ८	६९ ५७	५० १२
शाहपुरा (जयपुर)	२७ २३	७५ ५८	२६ ८

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण मि. सै.
शाहपुरा(भीलवाड़ा)	२५ ४०	७४ ५०	३० ४०
ओओं	२६ ११	७१ १५	४५ ००
शेरगढ़ (जोधपुर)	२६ २५	७२ २१	४० ३६
सेरगढ़(झालाबाड़)	२४ ४०	७६ ३२	२३ ५२
श्री गंगानगर	२९ ४९	७३ ५०	३४ ४०
श्री डूगरगढ़	२८ ६	७४ १	३३ ५६
श्री माधोपुर	२७ २५	७५ ३२	२७ ५२
श्री मोहनगढ़	२७ १७	७१ १२	४५ १२
सम	२६ ५०	७० ३१	४७ ५६
समदरी	२५ ४९	७२ ३५	३९ ४०
सरदार शहर	२८ २७	७४ ३०	३२ ००
सरवार	२६ २	७४ ५५	३० २०
सरूप सर	२९ २२	७३ ३७	३५ ३२
सवाई माधोपुर	२५ ५८	७६ २५	२४ २०
सहारा	२५ १५	७४ १६	३२ ५६
सागवाड़ा	२३ ४१	७४ १	३३ ५६
सांगानेर	२६ ४९	७५ ४९	२६ ४४
सांगोढ़	२४ ५५	७६ २१	२४ ३६
सांचोर	२४ ४०	७१ ५०	४२ ४०
साम्भर	२६ ५४	७५ १०	२९ २०
सादूलपुर	२८ ३८	७५ २४	२८ २४
सिन्दरी	२५ ३३	७१ ५५	४२ २०
सिरमुटरा	२६ ३१	७७ २२	२० ३२
सिरोही	२४ ५३	७२ ५४	३८ २४
सिवाना	२५ ३६	७२ २७	४० १२
सीकर	२७ ३६	७५ ९	२९ २४
सुजानगढ़	२७ ४२	७४ ३०	३२ ००
सूरतगढ़	२९ ११	७३ ५७	३४ १२
सोजत	२५ ५६	७३ ४२	३५ १२
हनुमानगढ़	२९ ३५	७४ २१	३२ ३६
हिन्दौन	२६ ४३	७७ १	२१ ५६

:-दुनिया के कुछ देशों के स्टैं.टा. का भारतीय स्टैं. टा. से अन्तरः-

देश या प्रदेश के आगे लिखे घं.मि. को उस देश या प्रदेश के स्टैं. टा.में धन (+) ऋण (–) चिह्न के विपरीत घटाने या जोड़ने से उस समय का भा.स्टैं.टा. ज्ञात हो जाएगा।

देश तथा प्रदेश	देश या प्रदेश के स्टैं. टा. का भा. स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
अदन	-२।३०
अफगानिस्तान	-१।००
अर्जेण्टाइना	-८।३०
आस्ट्रेलिया	
कैपिटल टैरिटरी, विक्टोरिया, न्यू साऊथ वेल्स, क्वीन्स लैण्ड, तस्मानिया	+४।३०
साऊथ आस्ट्रेलिया, नार्दन टैरिटरी, ब्रोकन हिल एरिया	+४।०
प.आस्ट्रेलिया	+२।३०
ऑस्ट्रिया	-४।३०
बेलजियम	-४।३०
बर्मा	+१।०
कनाडा	
न्यू फाउण्ड लैण्ड	-९।०*
एटलांटिक टाईम(A.T)	-९।३०*
ईस्टर्न टाईम(E.T)	-१०।३०*
सैन्ट्रल टाईम(C.T)	-११।३०*
माउण्टेन टाईम(M.T)	-१२।३०*
पैसिफिक टाईम(P.T)	-१३।३०*
सिलोन	०।०
चीन	+२।३०
कोलम्बिया	-१०।३०
क्युबा	-१०।३०*
चेकोस्लावाकिया	-४।३०*
डेन्मार्क	-४।३०
इजिप्ट (मिस्र)	-३।३०*
इथोपिया	-२।३०

देश तथा प्रदेश	देश या प्रदेश के स्टैं. टा. का भा. स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
फिन्लैण्ड	-३।३०
फ्रांस	-४।३०
जर्मनी	-४।३०
घाना	-५।३०
ग्रीस	-३।३०
हांककांग	+२।३०
हंगरी	-४।३०
इन्डोनेशिया	
सुमात्रा, जावा, बाली, बांगका, बिलीटान	+१।३०
बोर्नियो, सेलीविस, टिमोर, फ्लोर्स	+२।३०
आरु, केई, टनिमबर, मोलुक्कस, प०इरियन	+३।३०
ईरान(पर्सिया)	-२।०
ईराक	-२।३०
आयरलैण्ड (उ.)	-५।३०*
इजरायल	-३।३०
इटली, सिसली	-४।३०*
जापान	+३।३०
जार्डन	-३।३०
केन्या	-२।३०
कोरिया	+३।३०
कुवैत	-२।३०
मलेशिया गणतन्त्र	
मलाया	+२।०
सरवक	+२।३०
मारिशस	-२।३०

देश तथा प्रदेश	देश या प्रदेश के स्टैं. टा. का भा. स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
मैक्सिको	
सैन्ट्रल टाईम(C.T)	-११।३०
माउण्टेन टाईम(M.T)	-१२।३०
पेसिफिक टाईम(P.T)	-१३।३०
नीदरलैण्ड्स(हालैण्ड)	-४।३०
न्यूजीलैण्ड	+६।३०
पाकिस्तान	-०।३०
बंगला देश	+०।३०
फिलिपाइन गणतन्त्र	+२।३०
पोलैण्ड	-४।३०*
पुर्त्तगाल	-४।३०
रोडेशिया, न्यासालैण्ड	-३।३०
रोमानिया	-३।३०
सऊदी अरब	
जेद्दा	-२।३०
धहरान, कतर	-१।३०
सिंगापुर	+२।०
सोमाली लैण्ड, सोमालिया	-२।३०
साउथ अफ्रीकन गणतन्त्र	-३।३०
स्पेन	-४।३०
सूडान	-३।३०
स्वीडन	-४।३०
स्विट्जरलैण्ड	-४।३०
सीरिया	-३।३०*
थाईलैण्ड (स्याम)	+१।३०
टर्की	-३।३०*
युगांडा	-२।३०
इंग्लैण्ड	-५।३०*
अमेरिका(U.S.A)	
ईस्टर्न टाईम(E.T)	-१०।३०*
सैन्ट्रल टाईम(C.T)	-११।३०*

देश तथा प्रदेश	देश या प्रदेश के स्टैं. टा. का भा. स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
अमेरिका	
माउण्टेन टाईम(M.T)	-१२।३०*
पेसिफिक टाईम(P.T)	-१३।३०*
रूस(U.S.S.R)	
मास्को	-२।३०
'ब्लैक सी, से कैस्पियन सी तक'	-१।३०
स्वेर्दलोवस्क, प. कजक	-०।३०
ओमस्क, पू. कजक	+०।३०
क्रस्नोयार्स्क न्यू साईबेरिया	+१।३०
इर्कुत्स्क	+२।३०
याकुत्स्क, चितिन्स्क द. सकलिन	+३।३०
खबरोब्स्क, ब्लादिवोस्तक उ. सखलिन	+४।३०
मगदन	+५।३०
पेत्रोपव्लोव्स्क	+६।३०
वियतनाम	
उत्तरी	+१।३०
दक्षिणी	+२।३०
वेनेजुएला	-९।३०
युगोस्लाविया	-४।३०
नेपाल	+०।१५
भूटान	०।०

*इन स्थलों पर Summer Time (ग्रीष्मकाल समय) प्रचलित है। ग्रीष्मकालीन समय स्टैं.टा. से एक घण्टा आगे रहता है। जिन देशों में Summer Time प्रचलित है वहां गर्मी के दिनों में घड़ियां एक घण्टा आगे कर दी जाती हैं। इसी एक घण्टा आगे किए गए टाईम को Summer Time कहा जाता है।

प्राचीन पद्धति द्वारा लग्न एवं दशम का साधन

जन्मपत्री एवं वर्षफल आदि की गणित में शुद्ध लग्न का साधन सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण एवं श्रमसाध्य विषय है। इसके लिए ज्योतिषी को स्थानीय-काल का ज्ञान होना चाहिए, नगरों के अक्षांश-रेखाओं की प्रामाणिक सूची भी उसके पास होनी चाहिए, किंच भिन्न-भिन्न अक्षांशों की लग्न सारणियां उसके पास होना नितान्त आवश्यक है, क्योंकि किसी स्थान पर लग्न स्पष्ट करने के लिए उस स्थान के अक्षांश की लग्न सारणी का ही प्रयोग होता है। आगे हमने साम्पातिक काल द्वारा लग्न एवं दशम लग्न स्पष्ट करने की नवीन विधि दी है। यह विधि अपेक्षाकृत अधिक सूक्ष्म और सुविधाजनक है। इस विधि में अभीष्ट नगर का सूर्योदय, सूर्योदयात् इष्ट काल, दिनमान और इष्ट कालिक सूर्य की जरूरत नहीं होती, जबकि प्राचीन विधि में इन सबकी जरूरत रहती है। यहां हम लग्न एवं दशम साधन की प्राचीन विधि दे रहे हैं।

लग्न-साधन विधि

जिस नगर में लग्न स्पष्ट करना है, उस नगर में उस दिन का सूक्ष्म सूर्योदय काल ज्ञात कीजिए। सूर्योदय काल से अभीष्ट समय का सूर्योदयात् इष्ट (घ.प.) बना लीजिए और इष्ट कालिक सूर्य स्पष्ट कर लीजिए। इस पंचाग में दी गई ''अक्षांशादि सारणी'' से अपने अभीष्ट नगर का अक्षांश ज्ञात कीजिए। अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्न सारणी द्वारा इस प्रकार लग्न स्पष्ट कीजिए:-

आगे २९,३०, ३१ अक्षांशों की तीन लग्न सारणियां दी गई हैं जो दिल्ली, पंजाब तथा हरियाणा के लगभग सभी नगरों के लिए पर्याप्त हैं। अपने अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्न सारणी में इष्ट कालिक स्पष्ट सूर्य की राशि के आगे और अंश के नीचे लिखे घड़ी, पलों को लेकर अलग लिख लीजिए। सारणी में इन घड़ी पलों के दाई ओर अगले अंश के नीचे जो घड़ी - पल दिए गए हैं, उनसे इन अलग लिखे गए घड़ी, पलों का अन्तर जानिये। अन्तर के इन पलों को ''सहायक सारणी'' (जो आगे दी गई है) के बाई ओर पहले कालम में देखिये। इसके आगे इस सारणी में जहां स्पष्ट सूर्य की कला-विकलाओं के बराबर या लगभग बराबर कला-विकलाएं लिखी हों उनके बिल्कुल ऊपर सारणी की पहली लाईन में जो पल लिखे हों उन्हे लेकर अलग लिखे हुए घड़ी, पलों में जोड़ दीजिए और उसमें इष्ट काल के घड़ी पल भी जोड़ दीजिए। इसे हम ''अभीष्ट घड़ी पल'' कहेंगे ''अभीष्ट घड़ी पल '' यदि ६० घड़ी से अधिक हों तो उनमें से ६० घड़ी घटाकर शेष ग्रहण करना चाहिए। ''अभीष्ट घड़ी पलों'' के बराबर (बराबर न मिले तो उनसे कुछ कम) घड़ी पल लग्न सारणी में ढूढ़िये, जिन्हे **''सारणीस्थ घड़ी पल''** कहा जाएगा। ''सारणीस्थ घड़ी पलों'' के बाई ओर लग्न सारणी के पहले कालम में लिखी राशि और सबसे ऊपर लिखे अशों को अलग लिख लीजिए। ''सारणीस्थ घड़ी पलों'' के दाई ओर सारणी के अगले अंश के नीचे दिये गए घड़ी पलों का ''सारणीस्थ घड़ी पलों'' से अन्तर कीजिए। इसे ''सारणीस्थ अन्तर'' कहेंगे। ''सारणीस्थ घड़ी पलों'' और ''अभीष्ट घड़ी पलों'' का भी अन्तर कीजिए। अन्तर के ये पल ''सहायक सारणी'' के बिल्कुल ऊपर वाली लाईन में जहाँ लिखें हैं, उसके नीचे ''सारणीस्थ अन्तर'' के बराबर पलों के आगे जो कला-विकला मिलें, उन्हें अलग लिखे राशि अंशों मे जोड़ दें। अब इसमें आगे दी गई ''अयनाँश संस्कार सारणी'' से अपने संवत् के आगे दी गई कलाओं को लेकर चिह्न के अनुसार जोड़ने या घटाने पर निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

उदाहरण- मान लीजिए- वि. स. २०२९ के वैशाख प्रविष्टे ३ को ५८ घ. ४५ प. इष्ट पर शिमला (हि.प्र.) में लग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य ० रा., २ अंश ३७ क. ४७ वि. है। शिमला के अक्षांश ३१ अंश ६क. (उत्तर) हैं, अत: ३१ अक्षांश वाली लग्न सारणी में स्पष्ट सूर्य की ० (मेष) राशि के आगे २ अंश के नीचे २ घ. ५५ प. हैं, इन्हे अलग लिखा। सारणी में २ घ. ५५ प. के दाई ओर ३ अंश के नीचे ३ घ. २ प. लिखे हैं। इनका २ घ. ५५ पल. से अन्तर ७ पल है। ''सहायक सारणी'' के बाई ओर पहले कालम में लिखे हुए ७ पल के आगे वाली पंक्ति में स्पष्ट सूर्य की ३७ क. ४७ वि. नहीं मिली। अत: सारणी में इनके लगभग बराबर ३४ क. १७ वि. देखें जिनके बिल्कुल ऊपर ४ प. लिखें हैं। इन्हे अलग लिखे २ घ. ५५ प. में जोड़ा और इष्ट काल के घ. प. भी इसमें जोड़े तो ६१ घ. ४४ प. (६० घड़ी घटाने पर १ घ. ४४ प.) 'अभीष्ट घड़ी पल' हुए। लग्न सारणी में 'अभीष्ट घड़ी पल' १घ. ४४ प. नहीं हैं, अत: इससे कुछ कम १ घ. ४० पल सारणी में देखें जो ''सारणीस्थ घड़ी पल'' हैं। इनके बाई ओर सारणी के पहले कालम में ११ राशि और बिल्कुल ऊपर की लाईन में २१ अंश लिखें है। इन ११ रा. २१ अं. को अलग लिखा। लग्न सारणी में ''सारणीस्थ घड़ी पलों'' (१ घ. ४० प.) के दाई ओर २२ अंश के नीचे १ घ. ४६ प. का १ घ. ४० पल. से अन्तर ६ प. सारणीस्थ अन्तर है। ''अभीष्ट घड़ी पल'' (१ घ. ४४ प.) ओर सारणीस्थ घड़ी पल (१ घ. ४४ प.) का अन्तर ४ पल है। सहायक सारणी की ऊपर वाली लाइन में लिखे गए ४ पल के नीचे सारणीस्थ अन्तर के बराबर ६ प. के आगे ४० क. ० वि. लिखा है। इन्हे ११ रा. २१ अं. में जोड़ने पर ११ रा. और २१ अ. ४०क. ० वि. हुआ। ''अयनांश संस्कार सारणी '' में वि. सं. २०२९ के आगे + १ कला लिखा है। इसे चिह्नानुसार ११ रा. २१ अं. ४० क. ० वि. में जोड़ने पर ११ रा. २१ अं. ४१ क. ० वि. निरयण लग्न स्पष्ट हुआ।

दशम लग्न साधन

आगे साम्पातिक काल द्वारा दशम लग्न साधन की सरल पद्धति दी है, जिससे अभीष्ट स्थल का सूर्योदय, दिनमान तथा तात्कालिक सूर्य स्पष्ट जानने की आवश्यकता नहीं होती है। प्राचीन पद्धति से, जिसका निर्देश यहां किया जा रहा है, इन सबकी आवश्यकता रहती है।

दशम साधन विधि-इष्ट काल के घ .प. में से दिनार्ध (अभीष्ट नगर के दिनमान का आधा) घटाएं। यदि दिनार्ध से इष्ट कम हो तो इष्ट में ६० घड़ी जोड़कर दिनार्ध घटाएं, जो शेष बचे वह नतकाल होगा। नतकाल के घ. प. को इष्ट के घ. प. समझकर तात्कालिक स्पष्ट सूर्य द्वारा दशम लग्न सारणी से ठीक उसी तरह दशम लग्न स्पष्ट कीजिए, जैसे कि ऊपर लग्न सारणी से लग्न स्पष्ट किया गया है। दशम लग्न सारणी सभी नगरों के लिए एक ही होती है।

सारणी (अक्षांश २९° उत्तर) (पलभा ६।३१।६)

दिल्ली, मेरठ, रोहतक, हिसार, जींद, नैनीताल, मुरादाबाद आदि के लिए।

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
० प.	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	११	१९	२७	३५	४४	५२	०	८	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८
वृष घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
१ प.	४८	५६	४	१२	२१	२९	३७	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७
मि. घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
२ प.	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११
क. घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
३ प.	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०
सिं. घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प.	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	४४
क. घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प.	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१४	२६
तु. घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६ प.	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१६	२७	३९	५०	२	१४
वृ. घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
७ प.	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९
धनु घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
८ प.	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
म. घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
९ प.	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३०	३८	४६	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३२
कु. घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
१० प.	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१४
मी. घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प.	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४८

लग्न सारणी ३०° उत्तर (पलभा ६।५५।४२)

अम्बाला, करनाल, कुरुक्षेत्र, देहरादून, नाभा, पटियाला, भटिण्डा, जैसलमेर, अल्मोड़ा, सहारनपुर और हरिद्वार आदि के लिए।

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
० प.	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४०
वृष घ.	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१ प.	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
मि. घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
२ प.	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२
क. घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३ प.	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४
सिं. घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प.	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३
क. घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प.	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०
तु. घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६ प.	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३६	४७	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	२२
वृ. घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६
७ प.	२२	३४	४५	५७	९	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०
धनु घ.	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८ प.	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०
म. घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
९ प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८
कु. घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१० प.	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५
मी. घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	३	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४

लग्न सारणी (अक्षांश ३१ उत्तर) (पलभा ७।१२।३७)

कपूरथला, चण्डीगढ़, जालंधर, फरीदकोट, फिरोजपुर, रोपड़, लुधियाना, शिमला आदि के लिए

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
० प	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४७	५५	३	११	१९	२७	३५
वृष घ	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१ प	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१
मि. घ	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
२ प	२१	३१	४१	५१	१	१०	२०	३०	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६
क. घ	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३ प	५६	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	४	१५	२७	३९	५१	३	१५	२७	३८	५०
सिं. घ	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२
क. घ	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२
तु. घ	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
६ प	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५२	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२७	३९	५१	३	१४	२६
वृ. घ	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
७ प	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	४	१५
धनु घ	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८ प	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
म. घ	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
९ प	२६	३६	४६	५६	६	१५	२५	३५	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५३	१	९	१७	२५	३३	४१
कु. घ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१० प	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२५	३२	३९	४६	५३	०	७	१४	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	८	१५
मी. घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३४	४१

दशम लग्न सारणी (सर्वत्र उपयोगी)

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८
० प	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृष घ	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३
१ प	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
मि. घ	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९
२ प	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
क. घ	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४
३ प	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
सिं. घ	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९
४ प	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३१	४०	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
क. घ	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३
५ प	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८
तु. घ	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८
६ प	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृ. घ	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३
७ प	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२४	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
धनु घ	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९
८ प	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
म. घ	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४
९ प	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
कु. घ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
१० प	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३१	४१	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
मी. घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
११ प	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८

दशमलग्न साधन का उदाहरणः-वि.सं. २०२९ के वैशाख प्रविष्ट ३ को शिमला में ५८ घ. ४५ प. इष्ट पर दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य ० रा. २ अं.३७ क. ४७ वि. है। इस दिन शिमला में दिनमान ३१ घ. ५९ प. हैं अतः दिनार्ध १६ घ. ० प. हुआ। इष्ट काल ५८ घ. ४५ प. में से दिनार्ध घटाने पर ४२ घ. ४५ प. नतकाल हुआ, जो दशमसाधन के लिए इष्टकाल है।

दशमलग्न सारणी में स्पष्ट सूर्य की ० राशि के आगे २ अंश के नीचे ३ घ. ५६ प. मिला। इसे पृथक् लिखा। सारिणी में ३ घ. ५६ प. के दाईं ओर (३ अं. के नीचे) ४ घ. ६ प. लिखा है। ३।५६ और ४।६ का अन्तर १० पल है। सहायक सारिणी में १० पल के आगे स्पष्ट सूर्य की ३७ क. ४७ वि. के लगभग बराबर ३६ क.० वि. है। इसके ऊपर सारिणी में ६ पल लिखा है। इन ६ पलों को अलग लिखे ३ घ. ५६ प. में जोड़कर इसमें नतकाल जोड़ा तो ४६ घ. ४७ प.'अभीष्ट घड़ी-पल' हुए । ''दशमलग्न सारणी'' में इन '' अभीष्ट घड़ी पलों '' से कुछ कम घ.प. ४६।४२'सारणीस्थ घ.पल'. धनु (८)राशि के आगे १६ अंश के नीचे लिखे हैं ।अतः ८ रा. १६ अं. को अलग लिखा। सारिणी में ४६। ४२ के दाईं ओर(१७ अं. के नीचे) लिखे ४६।५२ का ४६।४२ से अन्तर १० पल का ''सारणीस्थ अन्तर'' हुआ। ''सारणीस्थ घड़ी पल'' ४६।४२ और अभीष्ट घड़ी पल ४६।४७ का अन्तर ५पल है। अब 'सहायक सारणी' में १० पल के आगे ५ पल के नीचे ३०क. ० वि. मिली, इन्हें अलग लिखे ८ रा. १६ अं.में जोड़ने पर ८ रा. १६ अं. ३० क. ०.वि.हुई। इसमें ''अयनांश संस्कार सारणी'' में वि.सं. २०२९ के आगे दिया गया, अयनांश संस्कार+१क. चिह्नानुसार जोड़ने पर ८ रा. १६ अं. ३१ क. ० वि. निरयण दशमलग्न स्पष्ट हुआ।

सहायक सारणी

पल → ↓	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.
६	१०।०	२०।०	३०।०	४०।०	५०।०	६०।०							
७	८।३४	१७।९	२५।४३	३४।१७	४२।५१	५१।२६	६०।०						
८	७।३०	१५।०	२२।३०	३०।०	३७।३०	४५।०	५२।३०	६०।०					
९	६।४०	१३।२०	२०।०	२६।४०	३३।२०	४०।०	४६।४०	५३।२०	६०।०				
१०	६।०	१२।०	१८।०	२४।०	३०।०	३६।०	४२।०	४८।०	५४।०	६०।०			
११	५।२७	१०।५५	१६।२२	२१।४९	२७।१६	३२।४४	३८।११	४३।३८	४९।५	५४।३३	६०।०		
१२	५।०	१०।०	१५।०	२०।०	२५।०	३०।०	३५।०	४०।०	४५।०	५०।०	५५।०	६०।०	
१३	४।३७	९।१४	१३।५१	१८।२८	२३।५	२७।४२	३२।१९	३६।५६	४१।३३	४६।१०	५०।४७	५५।२३	६०।०

अयनांश संस्कार सारणी

विक्रम संवत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला	वि. सवंत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला
२०२२	+ ७	२०२८	+२	२०३४	-३	२०४०	-८	२०४६	-१३	२०५२	-१८
२०२३	+ ७	२०२९	+१	२०३५	- ४	२०४१	-९	२०४७	-१३	२०५३	-१८
२०२४	+ ६	२०३०	+१	२०३६	- ४	२०४२	-९	२०४८	-१४	२०५४	-१९
२०२५	+ ५	२०३१	०	२०३७	- ५	२०४३	-१०	२०४९	-१५	२०५५	-२०
२०२६	+ ४	२०३२	-१	२०३८	- ६	२०४४	-११	२०५०	-१६	२०५६	-२१
२०२७	+ ३	२०३३	-२	२०३९	- ७	२०४५	-१२	२०५१	-१७	२०५७	-२२

दुनिया के किसी भी नगर में सूक्ष्म लग्न-दशम जानने के लिए हमारी ''गणक मार्त्तण्ड'' पुस्तक की प्रतीक्षा करें, जो शीघ्र ही प्रकाशित होने वाली है। इस पुस्तक में दुनिया के सभी प्रसिद्ध नगरों (लगभग १०हजार नगरों) के अक्षांश, रेखांश तथा अन्य अनेक लग्नोपयोगी सारणियों के साथ सभी अक्षांशों की सूक्ष्मतम शुद्ध लग्नसारणियाँ दी गई हैं, जिनकी मदद से लग्न आदि सभी भाव बिना गुणा भाग के जुबानी ही तुरन्त जाने जा सकते हैं।

सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की नवीन सरल विधि

यहां हम सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की एक नवीन सरल विधी दे रहे है । स्पष्ट सूर्य द्वारा लग्न स्पस्ट करने में अधिक परिश्रम होता है, इसलिए इस विषय में पाश्चात्य ज्योतिषियों ने 'साम्पातिककाल' की पद्धति को अपनाया है । यहां हम ''साम्पातिककाल क्या है''- इस विषय का कुछ सैद्धान्तिक- विवेचन न करते हुए, इससे लग्न स्पष्ट-करने की सर्व- साधारणोपयोगी विधि प्रस्तुत कर रहे हैं ।

विधिः- सां. का. (साम्पतिककाल)से लग्न स्पष्ट करने के लिए सर्वप्रथम नीचे लिखे उपकरण (चीजें), जो इस पंचांग में दिए गए कोष्ठकों (सारणियों)से बिना किसी परिश्रम के तैयार किए जा सकते है , तैयार करें -

(१) अभीष्ट नगर के अक्षांश (उत्तर या दक्षिण)
(२) अभीष्ट नगर के रेखांश (पूर्व या पश्चिम)
(३) अभीष्ट नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर(+या-)

ये तीनों उपकरण 'अक्षांशादि सारणी'से उठाइये।

विशेष- यदि ''अक्षांशादि सारणी '' में अभीष्ट नगर न मिले तो उसके निकटतम किसी अन्य नगर के अक्षांशादि प्रयोग में लाए जा सकते है ।

ध्यान रहे- भारत के सभी नगरों के अक्षांश उत्तर और रेखांश पूर्व ही है ।

(४) अभीष्ट नगर का स्थानीयमध्यमकाल- जिस समय लग्न स्पष्ट करना हो उस समय के स्वदेशीय स्टैण्डर्ड - टाईम में अभीष्ट नगर (जहां का लग्न स्पष्ट करना हो, वहां) के स्टैण्डर्ड - अन्तर के मिनटादि(या घण्टादि) को चिन्हानुसार जोड़ने या घटाने से अभीष्ट नगर का **''स्थानीयमध्यमकाल''** बन जाता है + यह चिह्न जोड़ने की एवं- यह चिह्न घटाने की प्रक्रिया को बतलाता है ।

जैसे- चण्डीगढ में दोपहर के १२घं. ५७ मि. (भा. स्टैं टा.) पर स्थानीयमध्यकाल जानने के लिए इस (भा. स्टैं टा.)में से चण्डीगढ का स्टैण्डर्ड अन्तर -२२ मिनट ३२ सेकण्ड चिन्हानुसार घटाया, तो १२ घं. ३४ मि. २८ सें. स्थानीयमध्यमकाल बना।

१सितं.१९४२ ई. से १५ अक्तू १९४५ ई. तक भारत में युद्ध के कारण घड़ियां एक घण्टा आगे की गई थी । अतः इन दिनों में घड़ियों द्वारा जाने गए टाईम में से १ घण्टा घटा कर उसे भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम समझना चाहिए।

जैसे- सन्१९४४ की २० अग. को काई बच्चा भारत में युद्ध के समयानुसार दिन में १२ बज कर ४५ मि. पर पैदा हुआ । इसका जन्मपत्र बनाने के लिए हमें इस बच्चे का जन्म काल भा. स्टैं.टा. के अनुसार ११ घं ४५ मि. मानना होगा ।

(५) अभीष्ट तारीख का अयनांश - आगे दो [नं.(१) और नं.(२)]अयनांशसारणियां दी गई है । अयनांशसारणी नं.(१) में से अभीष्ट सन् के आगे लिखाअंशादि अयनांश लें, और अयनांशसारणी नं. (२) में से अभीष्ट मास की अभीष्ट तारीख का विकलादि फल लेकर उसमें जोड़ दें; - यह अभीष्ट तारीख का अयनांश होगा ।

जैसे - १५ जुलाई १९६९ ई. को अयनांश जानने के लिए अयनांशसारणी नं.(१) में से सन् १९६९ ई. के आगे लिखा अयनांश २३अं.२५ क २६ वि. प्राप्त किया । इसमें अयनांशसारणी नं.(२)से प्राप्त की गई १५ जुलाई की २७ वि. जोडने पर २३ अं.२५क. ५६ वि. हमारा अभीष्ट अयनांश हुआ ।

(६) इष्टकालिक साम्पातिककाल - आगे साम्पातिककाल के चार कोष्ठक दिए गये है । इनके आधार पर इष्टकालिक साम्पातिककाल इस प्रकार सरलता से बनाया जा सकता है-

सां. का. कोष्ठक नं. (१) में से अभीष्ट सन् का सां. का. उठाएं। उसमें साम्पातिक काल कोष्ठक नं.(२)से अभीष्टमास की अभीष्ट तारीख का (लीप ईयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख की जगह उससे एक आगे की तारीख का) सां. का. लेकर जोड़ें । इसमें सां. का. कोष्ठक नं.(३)से अभीष्ट नगर के रेखांशों द्वारा सैकण्डात्मक संस्कार उठा कर चिन्हानुसार जोडें या घटाएं । इस प्रकार मिले सां. का के घं. मि. में अभीष्ट स्थानीयमध्यमकाल(जिसका साधन पहले बताया जा चुका है) के घण्टा- मिनटादि जोडें और फिर इस योगफल में स्थानीयमध्यमकाल के घण्टा- मिनटों द्वारा सां. का. कोष्ठक नं.(४)से प्राप्त किए गए मिनटादि जोड़ देने से इष्टसमय का घण्टादि सां. का बन जाएगा । इस प्रकार बना सां. का. यदि २४ घं. से अधिक हो तो उसमें से २४ घटा कर शेष ही ग्रहण करना चाहिए ।

साम्पातिककाल साधन का उदाहरण - यहां हम १५ जुलाई १९६९ को भा. स्टै टा. के अनुसार प्रातः १०घं.४५मि. पर चम्बा (हि. प्र.)में सां. का. स्पष्ट करेगें । अक्षांशादि सारणी में चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. (उत्तर), रेखांश ७६ अं. १०क.(पूर्व)एंव स्टैं. अन्तर - २५ मि. २० से. है । स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण चिह्न वाला है, अतः इसे १० घण्टे४५ मि. में से घटाने पर १० घं. १९ मि. ४० से. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल हुआ । सां. का . कोष्ठक नं. (१)से सन् १९६९ ई. का सां. का. (६घं.४१ मि. २ से.) लिया । इसमें कोष्ठक नं.(२)सें लिया गया १५ जुला. का सां का. (१२घं. ४८ मि. ४९ से.)जोड़ा तो १९ घं.२९ मि. ५१ सै. हुआ । चम्बा के रेखांश ७६अं.१० क. के लिए कोष्टक नं.(३)वाला संस्कार तो० है। अब १९घं. २९ मि. ५१सैं. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल १०घं.१९मि ४० सै. जोडा तो २९घं. ४९मि. ३१ सै. हुए। इसमें कोष्ठक न. (४)से स्थानीयमध्यमकाल के १०घं. २० मि. उठाए गए १ मि. ४२सै. जोड़ने पर २९ घं. ५१ मि. १३ से. हुए । क्योकि यहां घण्टे२४से अधिक हैं अतः२४ घं. घटाए तो ५घं. ५१मि. १३से. अभीष्ट साम्पातिककाल हुआ ।

साम्पातिककाल बनाते समय नीचे लिखी इन बातों को भी ध्यान में रखेंः-

(१)यदि धन (+)चिह्न वाले स्टैण्डर्डअन्तर (स्टैं. अं.)के मिनटों को स्टैण्डर्ड टाईम में जोड़ने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं. या इससे ज्यादा हो जाए तब उसमें से २४ घण्टा घटा दें और ऊपर बतलाई विधि से प्राप्त साम्पातिककाल में ४ मि. जोड कर उसे शुद्ध साम्पातिककाल समझें । जैसे - कलकता में २जन. १९७४ ई. को २३ घंटा ५५ मि. (रात के ११ बज कर ५५ मि.)भा. स्टै. टा. पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है । कलकता का रेखांश ८८अं. २४ क, (पूर्व)और स्टैं. अन्तर +२३ मि. ३६ से. है। **स्थानीयमध्यमकाल बनाने** के लिए२३ घं. ५५ मि. में २३ मि. ३६ सै. जोड़े तो २४ घं. १८ मि. ३६से. हुए यह २४ घं. से ज्यादा हो गया है , अतः इसमें से २४ घं. घटाने पर ० घं. १८ मि. ३६ से.

स्थानीयमध्यमकाल हुआ । अब सां. का. बनाने के लिए कोष्टक नं.(१) से १९७४ केआगे लिखे ६ घं. ४० मि. १२ से. में कोष्ठक नं.(२) से लिए गए २ जन. के ० घं. ३ मि. ५७ से. जोडने पर ६ घं. ४४ मि. ९ से. हुए। इसमें कोष्ठक नं. (३) से कलकता के रेखांश ८८ से प्राप्त −८ से. चिह्न के अनुसार घटाए, तो ६ घं. ४४ मि. १ से. हुए । इसमें स्थानीयमध्यमकाल जोड़ने पर ७ घं., २ मि. ३७ से. हुए । इसमें कोष्ठक नं.(४)से स्थानीयमध्यमकाल के ० घं. १९ मि. द्वारा प्राप्त ३ से. जोडने पर ७घं. २ मि. ४० से. हुए । क्योंकि स्टैं .टा. में स्टैं. अन्तर के मिनट जोडने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं. से ज्यादा हो गया था । अतः उपरोक्त नियमानुसार इसमें ४ मि. और जोड़ने पर ७ घं. ६ मि. ४० से. हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल बना । लग्न और दशम को स्पष्ट करने के लिए इसी सां. का. को प्रयोग में लाइए ।

(२)सां. का. बनाते समय दूसरी बात यह भी ध्यान में रखें कि यदि स्टैं. टा. से ऋण चिह्न वाले स्टैं. अन्तर के मिटादि अधिक हों तो स्थानीयमध्यमकाल बनाने के लिए स्टैं. टा. में २४ घंटे जोड कर स्टैं. अन्तर घटाना चाहिए और ऐसी स्थिति में सा.का. कोष्ठक नं. (४)का प्रयोग नहीं करना चाहिए । जैसे- जयपुर में १५ मार्च १९७० को ०घं. १५ मि.(भा. स्टै. टा.) पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है । जयपुर के रेखांश ७५ अं. ५२ क. (पूर्व)और स्टैं अं.- २६ मि. ३२ से. है । यहां स्टैं टा. के घं. मि. में से स्टैं. अं. ज्यादा है, अतः स्टै. टा. में २४ घं. जोड़ कर स्टैं अं. घटाने पर २३ घं. ४८ मि. २८ से. स्थानीयमध्यमकाल बना । सां. का. के कोष्ठक नं.(१)से प्राप्त १९७० ई. के ६ घं. ४० मि. ५ से. में कोष्ठक नं. (२) से प्राप्त १५ मार्च के ४ घं. ४७ मि. ४९ से. जोड़ने पर ११ घं. २७ मि. ५४ से. हुए । जयपुर के रेखांश ७६ (पूर्व) का कोष्ठक नं. ३ वाला संस्कार लगभग ० है । अब ११ घं. २७ मि. ५४ से. में स्थानीयमध्यमकाल जोड़ा तो ३५ घं. १६ मि. २२ से. हुए । क्योंकि हमारा स्टैं. टा. हमारे नगर के ऋण स्टैं. अं. से कम था अतः यहां साम्पातिककाल कोष्ठक नं.(४)का प्रयोग हम नहीं करेगें । इसलिए हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल ११घं. १६ मि. २२ से. ही हुआ । यहां घंटे २४ से अधिक होने से उसमें से २४ घंटे घटा दिए गए हैं।

(३)जैसाकि हम पहिले भी लिख चुके हैं - लीप इयर (२९ फरवरी वाले साल)में फरवरी के बाद के महीनों की किसी तारीख का सां. का. बनाना हो तो उस तारीख में एक जोड़ कर साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२) को प्रयोग में लाना चाहिए। जैसे -मान लीजिए, १५ मार्च सन् १९४४ को किसी नगर में सां. का. स्पष्ट करना है। साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (१) में सन् १९४४ के आगे लिखे ६ घं. ३७ मि. १७ से. मिलें । क्योंकि हमारा सन् लीप इयर है और हमारी तारीख (१५ मार्च)फरवरी के बाद की भी है, इसलिए ''साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२)'' में से हम १५ मार्च की जगह १६ मार्च के घं. मि. सै. (४ घं.५१ मि. ४५ से.)ही लेगें और इन्हें ही ६ घं. ३७मि. १७ से. में जोड़ेंगे । ध्यान रहे- यदि सन् १९४४ की १० फर को हमें सां. का. स्पष्ट करना हो तो ''साम्पातिककाल कोष्ठक नं.(२)'' से १० फर के ही घं. मि. से. उठाने होगें ।

साम्पातिककाल से लग्नसाधन की विधिः-

उपर दी गई विधि से जाने गए अभीष्ट सां. का. (साम्पातिककाल) के घं. मि. को आगे दी गई लग्नसारणी के बाईं और वाले पहिले कालम में देखें । इसके आगे अभीष्ट नगर के अक्षांश के नीचे जो लग्न की अंश कला लिखी हैं, उन्हें अलग नोट कर लें। क्योंकि सारणी में सां. का. ३०-३० मिनटों के अन्तर पर और लग्नसारणी ३-३ अक्षांशों के अन्तर पर दी हुई है । अतः अधिकतर यहां सम्भव है कि आपको लग्न सारणी में अभीष्ट सां. का. के घं. मिं. न मिले और यह भी अधिकतर सभव है कि आपको लग्नसारणी में अभीष्ट सां का. के घं. मि. न मिलें और यह भी सम्भव है कि अभीष्ट अक्षांश वाली लग्नसारणी भी न मिले । ऐसी स्थिति में सारणी में अभीष्ट सां. का. के समीपतम (अभीष्ट सां. का. से कम)सां. का. के आगे और अपने अभीष्ट अक्षांश के समीपतम(अभीष्ट अक्षांश से कम) अक्षांश वाली लग्नसारणी में लिखीं लग्न की अंश - कलाएं नोट करें - यह ''स्थूलतम लग्न''है । अब ३० मि. में लग्न की गति सारणी से ही ज्ञात कीजिए, (अर्थात् यह ज्ञात कीजिए कि ३०मि. में लग्न कितना आगे बढ़ता है) ३० मि. की लग्नगति की कलाओं को सां. का. के शेष मिनटों से गुणा करके ३० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी । इन्हें ''स्थूलतम लग्न'' में जोड़ देने से ''स्थूललग्न'' बन जाएगा। अब सारणी से ही ३ अक्षांशों की लग्न की गति मालूम करें । ३ अक्षांशों में लग्न घटता है तो यह ''३ अक्षाशों की लग्नगति'' ऋण, अन्यथा धन होगी । अपने अक्षांश की शेष अंश−कलाओं की कलाएं बना कर उन्हें ''३ अक्षाशों की लग्नगति '' की कलाओं से गुणा करके १८० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी । इन्हें ''३ अक्षाशों की लग्नगति'' के धन,ऋण चिह्न के अनुसार स्थूललग्न में जोड़ने या घटाने से सायनलग्न स्पष्ट होगा । इसमें से उस दिन के अयनांश घटा देने पर फलितोपयोगी निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

दशमलग्न स्पष्ट करने की विधि :- लग्नसारणी के दूसरे कालम में दशम (दशमलग्न)दिया गया है । इससे सभी नगरों में दशमलग्न स्पष्ट किया जा सकता है (अर्थात् -दशम स्पष्ट करने के लिए अंक्षाशों की जरूरत नहीं होती।) अभीष्ट सां. का. के घं. मि. के आगे सारणी में दशम (दशमलग्न)की अंश-कलाएं उठा लें। यह ''स्थूलदशमलग्न'' है। सां.का. के शेष मिनटों से दशमलग्न की ३० मि. की गति की कलाओं को गुणा करके ३०से भाग देने पर कलाएं मिलेगी। इन्हें ''स्थूलदशमलग्न'' में जोड़ने पर इष्टकालिक सायनदशम होगा । इसमें से उसदिन का अयनांश घटा देने पर निरयण दशमलग्न स्पष्ट हो जाएगा।

लग्नसाधन का उदाहरण:-चम्बा (हि.प्र.) में १५ जुलाई सन् १९६९ को प्रातः १० घं. ४५ मि. (भा. स्टै. टा.)पर लग्न स्पष्ट करना है ।

ऊपर हमने चम्बा में १५ जुलाई १९६९ को प्रातः १० घंटे ४५मि. (भा. स्टै. टा.)पर सां.का. ५ घं. ५१ मि. १३ सै. स्पष्ट किया है । चम्बा के अक्षांश ३२ अं.२९ क. है। लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घं. ३० मि. के आगे लग्न १७३ घं. ३४ क. लिखा है । यह ''स्थूलतम लग्न'' है। लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घ. ३० मि. के आगे १७३ अं. ३४ क. और सां. का.६घं. ० मि. के आगे १८० अं.० क. लिखा है । इन दोनों का अन्तर ६अं. २६ क. (३८६ क.) लग्न की ३० मि. की गति है । हमारे अभीष्ट सां. का. ५ घ. ५१ मि. और ५ घं. ३० मि. का अन्तर २१ मि. है । इन २१ मि. (सा.का.के शेष मिनटों) से लग्न की ३० मिनट की गति कलाओं (३८६) को गुणा करके ३० का भाग देने पर २७० क. (= ४ अं. ३० क.) मिलीं। इन्हें '' स्थूलतम लग्न '' में जोड़ने पर १७८ अं. ४ क. ''स्थूल लग्न '' हुआ ।

लग्न सारणी (पूरे भारत के लिए) [भाग १ म]

साम्पातिक काल घं.	मि.	सभी स्थलों के लिए दशम अं.	क.	अक्षांश ८°(उ.) लग्न अं.	क.	अक्षांश ११°(उ.) लग्न अं.	क.	अक्षांश १४°(उ.) लग्न अं.	क.	अक्षांश १७°(उ.) लग्न अं.	क.	अक्षांश २०°(उ.) लग्न अं.	क.
०	०	०	०	९३	१२	९४	२५	९५	४०	९६	५६	९८	१४
०	३०	८	१०	१००	३	१०१	१५	१०२	२७	१०३	४१	१०४	५७
१	०	१६	१७	१०६	५४	१०८	३	१०९	१३	११०	२४	१११	३६
१	३०	२४	१८	११३	४७	११४	५३	११५	५९	११७	६	११८	१४
२	०	३२	११	१२०	४३	१२१	४५	१२२	४७	१२३	५०	१२४	५२
२	३०	३९	५५	१२७	४५	१२८	४३	१२९	४०	१३०	३६	१३१	३३
३	०	४७	२८	१३४	५४	१३५	४५	१३६	३६	१३७	२७	१३८	१८
३	३०	५४	५१	१४२	१०	१४२	५५	१४३	३९	१४४	२२	१४५	६
४	०	६२	५	१४९	३३	१५०	१०	१५०	४६	१५१	२३	१५१	५८
४	३०	६९	१२	१५७	३	१५७	३१	१५८	०	१५८	२७	१५८	५५
५	०	७६	११	१६४	३८	१६४	५८	१६५	१७	१६५	३६	१६५	५४
५	३०	८३	७	१७२	१८	१७२	२८	१७२	३८	१७२	४७	१७२	५७
६	०	९०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०
६	३०	९६	५३	१८७	४२	१८७	३२	१८७	२२	१८७	१३	१८७	३
७	०	१०३	४९	१९५	२२	१९५	२	१९४	४३	१९४	२४	१९४	६
७	३०	११०	४८	२०२	५७	२०२	२९	२०२	०	२०१	३३	२०१	५
८	०	११७	५५	२१०	२७	२०९	५०	२०९	१४	२०८	३७	२०८	२
८	३०	१२५	९	२१७	५०	२१७	५	२१६	२१	२१५	३८	२१४	५४
९	०	१३२	३२	२२५	६	२२४	१५	२२३	२४	२२२	३३	२२१	४२
९	३०	१४०	५	२३२	१५	२३१	१७	२३०	२०	२२९	२४	२२८	२७
१०	०	१४७	४९	२३९	१७	२३८	१५	२३७	१३	२३६	१०	२३५	८
१०	३०	१५५	४२	२४६	१३	२४५	७	२४४	१	२४२	५४	२४१	४६
११	०	१६३	४३	२५३	६	२५१	५७	२५०	४७	२४९	३६	२४८	२४
११	३०	१७१	५०	२५९	५७	२५८	४५	२५७	३३	२५६	१९	२५५	३
१२	०	१८०	०	२६६	४८	२६५	३५	२६४	२०	२६३	४	२६१	४६

साम्पातिक काल घं.	मि.	सभी स्थलों के लिए दशम अं.	क.	अक्षांश ८°(उ.) लग्न अं.	क.	अक्षांश ११°(उ.) लग्न अं.	क.	अक्षांश १४°(उ.) लग्न अं.	क.	अक्षांश १७°(उ.) लग्न अं.	क.	अक्षांश २०°(उ.) लग्न अं.	क.
१२	०	१८०	०	२६६	४८	२६५	३५	२६४	२०	२६३	४	२६१	४६
१२	३०	१८८	१०	२७३	४१	२७२	२७	२७१	११	२६९	५३	२६८	३३
१३	०	१९६	१७	२८०	३९	२७९	२५	२७८	९	२७६	५०	२७५	२९
१३	३०	२०४	१८	२८७	४३	२८६	३०	२८५	१५	२८३	५७	२८२	३५
१४	०	२१२	११	२९४	५७	२९३	४६	२९२	३३	२९१	१६	२८९	५५
१४	३०	२१९	५५	३०२	२१	३०१	१४	३००	४	२९८	५०	२९७	३२
१५	०	२२७	२८	३०९	५८	३०८	५६	३०७	५१	३०६	४२	३०५	२८
१५	३०	२३४	५१	३१७	४९	३१६	५४	३१५	५५	३१४	५३	३१३	४५
१६	०	२४२	५	३२५	५४	३२५	७	३२४	१७	३२३	२३	३२२	२५
१६	३०	२४९	१२	३३४	१२	३३३	३५	३३२	५५	३३२	१२	३३१	२६
१७	०	२५६	११	३४२	४१	३४२	१५	३४१	४८	३४१	१८	३४०	४५
१७	३०	२६३	७	३५१	१८	३५१	५	३५०	५१	३५०	३६	३५०	१९
१८	०	२७०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१८	३०	२७६	५३	८	४१	८	५५	९	९	९	२४	९	४१
१९	०	२८३	४९	१७	१९	१७	४५	१८	१२	१८	४२	१९	१५
१९	३०	२९०	४८	२५	४८	२६	२५	२७	५	२७	४८	२८	३४
२०	०	२९७	५५	३४	६	३४	५३	३५	४३	३६	३७	३७	३५
२०	३०	३०५	९	४२	११	४३	६	४४	५	४५	७	४६	१४
२१	०	३१२	३२	५०	२	५१	४	५२	९	५३	१८	५४	३२
२१	३०	३२०	५	५७	३९	५८	४६	५९	५६	६१	१०	६२	२८
२२	०	३२७	४९	६५	३	६६	१४	६७	२७	६८	४४	७०	५
२२	३०	३३५	४२	७२	१७	७३	३०	७४	४५	७६	३	७७	२५
२३	०	३४३	४३	७९	२१	८०	३५	८१	५१	८३	१०	८४	३१
२३	३०	३५१	५०	८६	१९	८७	३३	८८	४९	९०	७	९१	२७
२४	०	०	०	९३	१२	९४	२५	९५	४०	९६	५६	९८	१४

अब लग्न सारणी में ३२ अक्षांश और ३५ अक्षांश वाले कालमों में सां.का. ५घं. ३० मि. के आगे क्रमशः १७३ अं. ३४ क. और १७३ अं. ४४ क. लिखा है। इन दोनों का अन्तर १० क. हुआ। यह लग्न की "३ अक्षांश की गति" है। क्योंकि लग्न ३५ अक्षांश में बढ़ रहा है। अतः यह गति धन है। ३२ अक्षांश और चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. का अन्तर २९ क. है। इससे ३ अक्षांश की लग्न की गति कलाओं (१०) को गुणा करके १८० से भाग देने पर लब्धि १ क. मिली। क्योंकि ३ अक्षांशों की लग्न गति धन है अतः इसे "स्थूल लग्न" में जोड़ने पर १७८ अं. ५ क. सायन लग्न हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३अं. २६कं. घटा देने पर १५४ अं. ३९ क. (= ५ रा ४ अं. ३९ क.) नियरणलग्न बन गया।

दशमलग्न साधन का उदाहरण- १५ जुला. १९६९ ई. को प्रातः १० घं. ४५ मि. (भा.स्टै.टा.) पर ही चम्बा, हि.प्र. में दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय चम्बा में सां का ५ घं. ५१ मि. है। लग्नसारणी के दूसरे कालम में सां.का. ५ घं. ३० मिनट के आगे दशमलग्न८३ अं.७क. है, यह "स्थूल दशमलग्न" है। सारणी में सां.का. ५ घं.३०मि. और ६ घं. ० मि. के आगे क्रमशः ८३ अं. ७ क. एवं ९० अं. ० क. है इन दोनों का अन्तर ६ अं. ५३ क. (= ४१३ क.) है, यह ३० मि. की दशमलग्न की गति है। इन कलाओं को सां. का. के शेष मि. (५ घं. ५१ मि.- ५घं. ३० मि.=२१ मि.) से गुणा करके ३० का भाग देने पर २८९ क. (=४अं.४९क.) मिली। इन्हें "स्थूलदशमलग्न" में जोड़ने पर ८७ अं. ५६ क. सायन दशमलग्न स्पष्ट हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३ अं. २६ क. घटा देने पर ६४ अं.३० क. (=२ रा.४अं. ३०क.) इष्टकालिक निरयण दशम लग्न हुआ।

ध्यान दें-यहां हमने सां.का. के सेकण्ड और अयनांश की विकलाओं को अनावश्यक समझकर छोड़ दिया है। क्योंकि लग्न और दशम में विकलाओं तक की सूक्ष्मता लाने का प्रयास वस्तुतः अर्थहीन है। कला तक की सूक्ष्मता भी लग्न में संभव नहीं है; इस तथ्य का विस्तार पूर्वक स्पष्टीकरण गणित द्वारा "**गणकमार्तण्ड**" में हमने किया है वहाँ पढ़ें।

लग्न सारणी (पूरे भारत के लिए) [भाग २ य]

साम्पातिक काल घं. मि.	सभी स्थलों के लिए दशम अं. क.	अंक्षाश २३° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश २६° (उ.) लग्न अं. कं.	अंक्षाश २९° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश ३२° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश ३५° (उ.) लग्न अं. क.	साम्पातिक काल घं. मि.	सभीस्थलों के लिए दशम अं. क.	अंक्षाश २३° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश २६° (उ.) लग्न अं. कं.	अंक्षाश २९° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश ३२° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश ३५° (उ.) लग्न अं. क.
० ०	० ०	९९ ३५	१०० ५९	१०२ २६	१०३ ५७	१०५ ३४	१२ ०	१८० ००	२६० २५	२५९ १	२५७ ३४	२५६ ३	२५४ २६
० ३०	८ १०	१०६ १४	१०७ ३४	१०८ ५७	११० २४	१११ ५३	१२ ३०	१८८ १०	२६७ १०	२६५ ४३	२६४ १२	२६२ ३६	२६० ५४
१ ०	१६ १७	११२ ४९	११४ ४	११५ २२	११६ ४३	११८ ७	१३ ०	१९६ १७	२७४ ३	२७२ ३४	२७१ ०	२५९ २१	२६७ ३३
१ ३०	२४ १८	११९ २२	१२० ३३	१२१ ४५	१२३ ०	१२४ १७	१३ ३०	२०४ १८	२८१ ९	२७९ ३९	२७८ २	२७६ १९	२७४ २९
२ ०	३२ ११	१२५ ५६	१२७ ०	१२८ ७	१२९ १७	१३० २५	१४ ०	२१२ ११	२८८ ३०	२८६ ५९	२८५ २२	२८३ ३६	२८१ ४५
२ ३०	३९ ५५	१३२ ३१	१३३ २९	१३४ २९	१३५ ३०	१३६ ३२	१४ ३०,	२१९ ५५	२९६ ९	२९४ ४०	२९३ ४	२९१ २०	२८९ २६
३ ०	४७ २८	१३९ ३	१४० ००	१४० ५२	१४१ ४५	२४२ ४०	१५ ००	२२७ २८	३०४ १०	३०२ ४४	३०१ १२	२९९ २८	२९७ ३८
३ ३०	५४ ५१	१४५ ५०	१४६ ३४	१४७ १८	१४८ ४	१४८ ५०	१५ ३०	२३४ ५१	३१२ ३३	३११ १५	३०९ ४८	३०८ १३	३०६ २५
४ ०	६२ ५	१५२ ३४	१५३ १०	१५३ ४७	१५४ २४	१५५ १	१६ ०	२४२ ५	३२१ २२	३२० १३	३१८ ५६	३१७ ३०	३१५ ५४
४ ३०	६९ १२	१५९ २२	१५९ ५०	१६० १७	१६० ४६	१६१ १४	१६ ३०	२४९ १२	३३० ३५	३२९ ३९	३२८ ३६	३२७ २५	३२६ ४
५ ०	७६ ११	१६६ १३	१६६ ३२	१६६ ५०	१६७ ९	१६७ २८	१७ ०	२५६ ११	३४० ९	३३९ ३०	३३८ ४५	३३७ ५४	३३६ ५५
५ ३०	८३ ७	१७३ ६	१७३ १५	१७३ २५,	१७३ ३४	१७३ ४४	१७ ३०	२६३ ७	३५० ००	३४९ ४०	३४९ १६	३४८ ४९	३४८ १९
६ ०	९० ०	१८० ००	१८० ००	१८० ०	१८० ०	१८० ०	१८ ०	२७० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०
६ ३०	९६ ५३	१८६ ५४	१८६ ४५	१८६ ३५	१८६ २६	१८६ १६	१८ ३०	२७६ ५३	१० ०	१४ २०	१० ४४	११ ११	११ ४१
७ ०	१०३ ४९	१९३ ४७	१९३ २८	१९३ १०	१९२ ५१	१९२ ३२	१९ ०	२८३ ४९	१९ ५१	२० ३०	२१ १५	२२ ६	२३ ४
७ ३०	११० ४८	२०० ३८	२०० १०	१९९ ४३	१९९ १४	१९८ ४६	१९ ३०	२९० ४८	२९ २५	३० २१	३१ २४	३२ ३५	३३ ५६
८ ०	११७ ५५	२०७ २६	२०६ ५०	२०६ १३	२०५ ३६	२०४ ५९	२० ०	२९७ ५५	३८ ३८	३९ ४७	४१ ४	४२ ३०	४४ ६
८ ३०	१२५ ५९	२१४ १०	२१३ २६	२१२ ४२	२११ ५६	२११ १०	२० ३०	३०५ ९	४७ २७	४८ ४५	५० १२	५१ ४७	५३ ३५
९ ०	१३२ ३२	२२० ५१	२२० ००	२१९ ८	२१८ १५	२१७ २०	२१ ०	३१२ ३२	५५ ५०	५७ १६	५८ ४८	६० ३२	६२ २२
९ ३०	१४० ५	२२७ २९	२२६ ३१	२२५ ३१	२२४ ३०	२२३ २८	२१ ३०	३२० ५	६३ ५१	६५ २०	६६ ५६	६८ ४०	७० ३४
१० ००	१४७ ४९	२३४ ४	२३३ ०	२३१ ५३	२३० ४५	२२९ ३५	२२ ०	३२७ ४९	७१ ३०	७३ १	७४ ३८	७६ २४	७८ १५
१० ३०	१५५ ४२	२४० ३८	२३९ २७	२३८ १५	२३७ ०	२३५ ४३	२२ ३०	३३५ ४२	७८ ५१	८० २१	८१ ५८	८३ ४१	८५ ३१
११ ०	१६३ ४३	२४७ ११	२४५ ५६	२४४ ३८	२४३ १७	२४१ ५३	२३ ०	३४३ ४३	८५ ५६	८७ २६	८९ ०	९० ३९	९२ २६
११ ३०	१७१ ५०	२५३ ४६	२५२ २६	२५१ ३	२४९ ३६	२४८ ७	२३ ३०	३५१ ५०	९२ ५०	९४ १७	९५ ४८	९७ २४	९९ ६
१२ ०	१८० ००	२६० २५	२५९ ३	२५७ ३४	२५६ ३	२५४ २६	२४ ०	००० ०	९९ ३५	१०० ५९	१०२ २६	१०३ ५७	१०५ ३४

साम्पातिककाल कोष्ठक नं. १

सन्	घं. मि.से.	सन्	घं. मि.से.	सन	घं. मि.से.	सन्	घं. मि.से.	सन्	घं.मि.से.	सन्	घं.मि.से.	सन्	घं. मि.से.	सन्	घं. मि. से.
१९४३	६ ३८ १५	१९५०	६ ३९ २७	१९५७	६ ४० ४०	१९६४	६ ३७ ५६	१९७१	६ ३९ ७	१९७८	६ ४० १९	१९८५	६ ४१ ३२	१९९२	६ ३८ ४७
१९४४	६ ३७ १७	१९५१	६ ३८ ३०	१९५८	६ ३९ ४३	१९६५	६ ४० ५५	१९७२	६ ३८ १०	१९७९	६ ३९ २२	१९८६	६ ४० ३५	१९९३	६ ४१ ४६
१९४५	३ ४० १६	१९५२	६ ३७ ३३	१९५९	३ ३८ ४५	१९६६	६ ३९ ५७	१९७३	६ ४१ १०	१९८०	६ ३८ २४	१९८७	६ ३९ ३८	१९९४	६ ४० ४९
१९४६	६ ३९ १९	१९५३	६ ४० ३३	१९६०	६ ३७ ४७	१९६७	६ ३९ ००	१९७४	६ ४० ११	१९८१	६ ४१ २३	१९८८	६ ३८ ४०	१९९५	६ ३९ ५२
१९४७	६ ३८ २२	१९५४	६ ३९ ३५	१९६१	६ ४० ४७	१९६८	६ ३८ ३	१९७५	६ ३९ १५	१९८२	६ ४० २६	१९८९	६ ४१ ३९	१९९६	६ ३८ ५४
१९४८	६ ३७ २५	१९५५	६ ३८ ३८	१९६२	६ ३९ ५०	१९६९	६ ४१ २	१९७६	६ ३८ १७	१९८३	६ ३९ २९	१९९०	६ ४० ४१	१९९७	६ ४१ ५३
१९४९	६ ४० २४	१९५६	६ ३७ ४२	१९६३	६ ३८ ५३	१९७०	६ ४० ५	१९७७	६ ४१ १६	१९८४	६ ३८ ३२	१९९१	६ ३९ ४४	१९९८	६ ४० ५६

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० २

ता.	जनवरी			फरवरी			मार्च			अप्रैल			मई			जून		
↓	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.
१	०	०	०	२	२	१३	३	५२	३७	५	५४	५१	७	५३	७	९	५५	२१
२	०	३	५७	२	६	९	३	५६	३३	५	५८	४७	७	५७	४	९	५९	१७
३	०	७	५३	२	१०	६	४	०	३०	६	२	४३	८	१	०	१०	३	१४
४	०	११	५०	२	१४	२	४	४	२६	६	६	४०	८	४	५७	१०	७	१०
५	०	१५	४६	२	१७	५९	४	८	२३	६	१०	३६	८	८	५३	१०	११	७
६	०	१९	४३	२	२१	५५	४	१२	१९	६	१४	३३	८	१२	५०	१०	१५	३
७	०	२३	३९	२	२५	५२	४	१६	१६	६	१८	२९	८	१६	४६	१०	१९	०
८	०	२७	३६	२	२९	४८	४	२०	१२	६	२२	२६	८	२०	४३	१०	२२	५६
९	०	३१	३२	२	३३	४५	४	२४	९	६	२६	२२	८	२४	३९	१०	२६	५३
१०	०	३५	२९	२	३७	४२	४	२८	५	६	३०	१९	८	२८	३६	१०	३०	४९
११	०	३९	२५	२	४१	३१	४	३२	२	६	३४	१६	८	३२	३२	१०	३४	४६
१२	०	४३	२२	२	४५	३५	४	३५	५९	६	३८	१३	८	३६	२९	१०	३८	४२
१३	०	४७	१८	२	४९	३२	४	३९	५६	६	४२	९	८	४०	२५	१०	४२	३९
१४	०	५१	१५	२	५३	२८	४	४३	५२	६	४६	६	८	४४	४२	१०	४६	३५
१५	०	५५	१२	२	५७	२५	४	४७	४९	६	५०	२	८	४८	१८	१०	५०	३२
१६	०	५९	८	३	१	२१	४	५१	४५	६	५३	५९	८	५२	१५	१०	५४	२८
१७	१	३	४	३	५	१८	४	५५	४२	६	५७	५५	८	५६	११	१०	५८	२५
१८	१	७	१	३	९	१४	४	५९	३८	७	१	५२	९	०	८	११	२	२१
१९	१	१०	५७	३	१३	११	५	३	३५	७	५	४८	९	४	४	११	६	१८
२०	१	१४	५४	३	१७	८	५	७	३१	७	९	४५	९	८	१	११	१०	१५
२१	१	१८	५१	३	२१	५	५	११	२८	७	१३	४१	९	११	५८	११	१४	१२
२२	१	२२	४८	३	२५	१	५	१५	२५	७	१७	३८	९	१५	५५	११	१८	८
२३	१	२६	४४	३	२८	५८	५	१९	२२	७	२१	३४	९	१९	५१	११	२२	५
२४	१	३०	४१	३	३२	५४	५	२३	१८	७	२५	३१	९	२३	४८	११	२६	१
२५	१	३४	१७	३	३६	५१	५	२७	१५	७	२९	२८	९	२७	४४	११	२९	५८
२६	१	३८	३४	३	४०	४७	५	३१	११	७	३३	२४	९	३१	४१	११	३३	५४
२७	१	४२	३०	३	४४	४४	५	३५	८	७	३७	२०	९	३५	३७	११	३७	५१
२८	१	४६	२७	३	४८	४०	५	३९	५	७	४१	१७	९	३९	३४	११	४१	४७
२९	१	५०	२३	३	५२	३७	५	४३	१	७	४५	१३	९	४३	३०	११	४५	४४
३०	१	५४	२०				५	४६	५८	७	४९	१०	९	४७	२७	११	४९	४१
३१	१	५८	१६				५	५०	५४				९	५१	२४			
३२																		

जुलाई			अगस्त			सितम्बर			अक्तूबर			नवम्बर			दिसम्बर			ता.
घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	↓
११	५३	३८	१३	५५	५०	१५	५०	४	१७	५६	२१	१९	५८	३४	२१	५६	५०	१
११	५७	३४	१३	५९	४७	१६	२	०	१८	०	१७	२०	२	३१	२२	०	४७	२
१२	१	३१	१४	३	४४	१६	५	५७	१८	४	१४	२०	६	२७	२२	४	४३	३
१२	५	२७	१४	७	४०	१६	९	५३	१८	८	१	२०	१०	२४	२२	८	४०	४
१२	९	२४	१४	११	३६	१६	१३	५०	१८	१२	७	२०	१४	२०	२२	१२	३६	५
१२	१३	२१	१४	१५	३३	१६	१७	४६	१८	१६	३	२०	१८	१७	२२	१६	३३	६
१२	१७	१७	१४	१९	२९	१६	२१	४३	१८	२०	०	२०	२२	१३	२२	२०	३०	७
१२	२१	१४	१४	२३	२६	१६	२५	४०	१८	२३	५७	२०	२६	१०	२२	२४	२७	८
१२	२५	१०	१४	२७	२३	१६	२९	३७	१८	२७	५४	२०	३०	६	२२	२८	२३	९
१२	२९	६	१४	३१	२०	१६	३३	३३	१८	३१	५०	२०	३४	३	२२	३२	२०	१०
१२	३३	३	१४	३५	१६	१६	३७	३०	१८	३५	४७	२०	३८	०	२२	३६	१६	११
१३	३६	५९	१४	३९	१३	१६	४१	२६	१८	३९	४३	२०	४१	५६	२२	४०	१३	१२
१२	४०	५६	१४	४३	९	१६	४५	२३	१८	४३	४०	२०	४५	५२	२२	४४	९	१३
१२	४४	५२	१४	४७	६	१६	४९	१९	१८	४७	३७	२०	४९	४९	२२	४८	६	१४
१२	४८	४९	१४	५१	२	१६	५३	१६	१८	५१	३३	२०	५३	४५	२२	५२	२	१५
१२	५२	४५	१४	५४	५९	१६	५७	१२	१८	५५	३०	२०	५७	४२	२२	५५	५९	१६
१२	५६	४२	१४	५८	५५	१७	१	९	१८	५९	२६	२१	१	३९	२२	५९	५६	१७
१३	०	३८	१५	२	५२	१७	५	५	१९	३	२२	२१	५	३६	२३	३	५३	१८
१३	४	३५	१५	६	४८	१७	९	२	१९	७	१९	२१	९	३२	२३	७	४९	१९
१३	८	३२	१५	१०	४५	१७	१२	५८	१९	११	१५	२१	१३	२९	२३	११	४६	२०
१३	१२	२९	१५	१४	४१	१७	१६	५५	१९	१५	१२	२१	१७	२५	२३	१५	४२	२१
१३	१६	२५	१५	१८	३८	१७	२०	५१	१९	१९	८	२१	२१	२२	२३	१९	३९	२२
१३	२०	२२	१५	२२	३४	१७	२४	४८	१९	२३	५	२१	२५	१८	२३	२३	३५	२३
१३	२४	१८	१५	२६	३१	१७	२८	४४	१९	२७	१	२१	२९	१५	२३	२७	३२	२४
१३	२८	१५	१५	३०	२७	१७	३२	४१	१९	३०	५८	२१	३३	११	२३	३१	२८	२५
१३	३२	११	१५	३४	२४	१७	३६	३७	१९	३४	५४	२१	३७	८	२३	३५	२५	२६
१३	३६	८	१५	३८	२०	१७	४०	३४	१९	३८	५१	२१	४१	४	२३	३९	२१	२७
१३	४०	४	१५	४२	१७	१७	४४	३१	१९	४२	४८	२१	४५	१	२३	४३	१८	२८
१३	४४	१	१५	४६	१४	१७	४८	२८	१९	४६	४५	२१	४८	५७	२३	४७	१४	२९
१३	४८	५७	१५	५०	११	१७	५२	२४	१९	५०	४१	२१	५२	५४	२३	५१	११	३०
१३	५१	५४	१५	५४	७				१९	५४	३८				२३	५५	७	३१
															२३	५९	३	३२

लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड़ कर कोष्ठक नं० २ को प्रयोग में लाइए ।

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० ३

रेखांश	०°	पू.२०°	पू.४०°	पू.६०°	पू.८०°	पू.१००°	पू.१२०°	पू.१४०°	पू.१६०°
संस्कार सेकण्ड	+५०	+३७	+२४	+११	-२	-१५	-२८	-४१	-५४
रेखांश	१८०°	प.१६०°	प.१४०°	प.१२०°	प.१००°	प.८०°	प.६०°	प.४०°	प.२०°
संस्कार सेकण्ड	-६७/+१६१	+१५६	+१४३	+१२९	+११६	+१०३	+८९	+७७	+६३

साम्पातिक काल कोष्ठक नं. ४

मि.	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५
घं.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.
०	० ००	० १	० २	० २	० ३	० ४	० ५	० ६	० ७	० ७	० ८	० ९
१	० १०	० ११	० ११	० १२	० १३	० १४	० १५	० १६	० १६	० १७	० १८	० १९
२	० २०	० २१	० २१	० २२	० २३	० २४	० २५	० २५	० २६	० २७	० २८	० २९
३	० ३०	० ३०	० ३१	० ३२	० ३३	० ३४	० ३४	० ३५	० ३६	० ३७	० ३८	० ३९
४	० ३९	० ४०	० ४१	० ४२	० ४३	० ४४	० ४४	० ४५	० ४६	० ४७	० ४८	० ४८
५	० ४९	० ५०	० ५१	० ५२	० ५३	० ५३	० ५४	० ५५	० ५६	० ५७	० ५७	० ५८
६	० ५९	१ ००	१ १	१ २	१ २	१ ३	१ ४	१ ५	१ ६	१ ७	१ ७	१ ८
७	१ ९	१ १०	१ ११	१ ११	१ १२	१ १३	१ १४	१ १५	१ १६	१ १६	१ १७	१ १८
८	१ १९	१ २०	१ २०	१ २१	१ २२	१ २३	१ २४	१ २५	१ २५	१ २६	१ २७	१ २८
९	१ २९	१ ३०	१ ३०	१ ३१	१ ३२	१ ३३	१ ३४	१ ३४	१ ३५	१ ३६	१ ३७	१ ३८
१०	१ ३९	१ ३९	१ ४०	१ ४१	१ ४२	१ ४३	१ ४३	१ ४४	१ ४५	१ ४६	१ ४७	१ ४८
११	१ ४८	१ ४९	१ ५०	१ ५१	१ ५२	१ ५३	१ ५३	१ ५४	१ ५५	१ ५६	१ ५७	१ ५७
१२	१ ५८	१ ५९	२ ०	२ १	२ २	२ २	२ ३	२ ४	२ ५	२ ६	२ ६	२ ७
१३	२ ८	२ ९	२ १०	२ ११	२ ११	२ १२	२ १३	२ १४	२ १५	२ १६	२ १६	२ १७
१४	२ १८	२ १९	२ २०	२ २०	२ २१	२ २२	२ २३	२ २४	२ २५	२ २५	२ २६	२ २७
१५	२ २८	२ २९	२ २९	२ ३०	२ ३१	२ ३२	२ ३३	२ ३४	२ ३४	२ ३५	२ ३६	२ ३७
१६	२ ३८	२ ३९	२ ३९	२ ४०	२ ४१	२ ४२	२ ४३	२ ४३	२ ४४	२ ४५	२ ४६	२ ४७
१७	२ ४८	२ ४८	२ ४९	२ ५०	२ ५१	२ ५२	२ ५२	२ ५३	२ ५४	२ ५५	२ ५६	२ ५७
१८	२ ५७	२ ५८	२ ५९	३ ०	३ १	३ २	३ २	३ ३	३ ४	३ ५	३ ६	३ ६
१९	३ ७	३ ८	३ ९	३ १०	३ ११	३ ११	३ १२	३ १३	३ १४	३ १५	३ १५	३ १६
२०	३ १७	३ १८	३ १९	३ २०	३ २०	३ २१	३ २२	३ २३	३ २४	३ २५	३ २५	३ २६
२१	३ २७	३ २८	३ २९	३ २९	३ ३०	३ ३१	३ ३२	३ ३३	३ ३४	३ ३४	३ ३५	३ ३६
२२	३ ३७	३ ३८	३ ३८	३ ३९	३ ४०	३ ४१	३ ४२	३ ४३	३ ४३	३ ४४	३ ४५	३ ४६
२३	३ ४७	३ ४८	३ ४८	३ ४९	३ ५०	३ ५१	३ ५२	३ ५२	३ ५३	३ ५४	३ ५५	३ ५६

अयनांश सारणी नं. १

ईस्वी	अयनांश	ईस्वी	अयनांश	ईस्वी	अयनांश
सन्	अं. क. वि.	सन्	अं. क. वि.	सन्	अं. क. वि.
१९२९	२२ ५१ ५५	१९५३	२३ १२ २	१९७७	२३ ३२ ८
१९३०	२२ ५२ ४५	१९५४	२३ १२ ५२	१९७८	२३ ३२ ५८
१९३१	२२ ५३ ३६	१९५५	२३ १३ ४२	१९७९	२३ ३३ ४८
१९३२	२२ ५४ २६	१९५६	२३ १४ ३२	१९८०	२३ ३४ ३९
१९३३	२२ ५५ १६	१९५७	२३ १५ २३	१९८१	२३ ३५ २९
१९३४	२२ ५६ ७	१९५८	२३ १६ १३	१९८२	२३ ३६ १९
१९३५	२२ ५६ ५७	१९५९	२३ १७ ३	१९८३	२३ ३७ ९
१९३६	२२ ५७ ४७	१९६०	२३ १७ ५३	१९८४	२३ ३८ ०
१९३७	२२ ५८ ३७	१९६१	२३ १८ ४४	१९८५	२३ ३८ ५०
१९३८	२२ ५९ २८	१९६२	२३ १९ ३४	१९८६	२३ ३९ ४०
१९३९	२३ ० १८	१९६३	२३ २० २४	१९८७	२३ ४० ३०
१९४०	२३ १ ८	१९६४	२३ २१ १५	१९८८	२३ ४१ २०
१९४१	२३ १ ५८	१९६५	२३ २२ ५	१९८९	२३ ४२ ११
१९४२	२३ २ ४९	१९६६	२३ २२ ५५	१९९०	२३ ४३ १
१९४३	२३ ३ ३९	१९६७	२३ २३ ४५	१९९१	२३ ४३ ५२
१९४४	२३ ४ २९	१९६८	२३ २४ ३६	१९९२	२३ ४४ ४२
१९४५	२३ ५ १९	१९६९	२३ २५ २६	१९९३	२३ ४५ ३२
१९४६	२३ ६ १०	१९७०	२३ २६ १६	१९९४	२३ ४६ २२
१९४७	२३ ७ ०	१९७१	२३ २७ ६	१९९५	२३ ४७ १३
१९४८	२३ ७ ५०	१९७२	२३ २७ ५७	१९९६	२३ ४८ ०३
१९४९	२३ ८ ४१	१९७३	२३ २८ ४७	१९९७	२३।४८।५३
१९५०	२३ ९ ३१	१९७४	२३ २९ ३७	१९९८	२३।४९।४४
१९५१	२३ १० २१	१९७५	२३ ३० २७	१९९९	२३।५०।३४
१९५२	२३ ११ ११	१९७६	२३ ३१ १८	२०००	२३।५१।२४

अयनांश सारणी नं. २

तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८	तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.		वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.
जनवरी	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४	जुलाई	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२८	२९
फरवरी	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८	अगस्त	२९	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२	३३	३३
मार्च	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	सितम्बर	३४	३४	३४	३५	३५	३६	३६	३६	३७	३७
अप्रैल	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	अक्टूबर	३८	३८	३९	३९	३९	४०	४०	४१	४१	४१
मई	१७	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०	नवम्बर	४२	४२	४३	४३	४४	४४	४४	४५	४५	४६
जून	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२५	दिसम्बर	४६	४७	४७	४७	४८	४८	४९	४९	४९	५०

ईस्वी सन् १९०० से २०१९ तक का स्पष्ट सूर्य

(६-७ सैकण्डों में ही इष्टकालिक सूर्य स्पष्ट कीजिए)

लेखक : प्रियव्रत शर्मा

प्राचीन शैली से लग्न और दशम स्पष्ट करने के लिए इष्टकालिक सायन स्पष्ट सूर्य की आवश्यकता होती है। यहां दिए गए तीन कोष्ठकों [सूर्य साधन कोष्ठक (१),(२) और (३)] से सन् १९००ई. से सन् २०१९ ई. तक के १२० वर्षों में किसी भी समय का सायन सूर्य छः सात सेकण्डों में ही स्पष्ट किया जा सकता है। इन कोष्ठकों द्वारा जाने गए स्पष्ट सायन सूर्य में २ कला से ज्यादा की स्थूलता नहीं होगी। इसलिए इससे स्पष्ट किए गए लग्न एवं दशम में भी २ कला से अधिक अन्तर नहीं हो सकता। हमारे इष्टकाल में चार सैकण्ड की अशुद्धि होने पर भी लग्न, दशम में एक कला की अशुद्धि आ जाती है। सैकण्डों की तो बात ही क्या, हमारे इष्टकाल में मिनट तक की अशुद्धि अक्सर रहती ही है। अत: इन कोष्ठकों से स्पष्ट किए गए सायन सूर्य द्वारा जो लग्न व दशम स्पष्ट किया जाएगा, वह पर्याप्त सूक्ष्म होगा।

सूर्य स्पष्ट करने की विधि-कोष्ठक नं. (१) से अपने ईस्वी सन् द्वारा, कोष्ठक नं. (२) से अपने महीने की तारीख द्वारा, तथा कोष्ठक न. (३) से अपने इष्टकालिक भा.स्टै.टा. के घण्टा मिनटों और तारीख द्वारा रा.अं.क. उठाएं। इन तीनों का योग (जोड़) ही आपका इष्ट कालिक स्पष्ट सायन सूर्य होगा। योग की राशि १२ हो या १२ से अधिक हो तो उसमें १२ घण्टा घटा दें। यदि आपका वर्ष लीप इयर (लुप्तवर्ष) हो तो सिर्फ फरवरी के बाद के महीनों की तारीख में १ जोड़कर कोष्ठक (२) को प्रयोग में लाएं।

उदाहरण (१)- सन् १९४५ की १३ मई को प्रात: १० घं. ३० मि. भा.स्टै.टा. पर सायन सूर्य स्पष्ट करें। कोष्ठक नं. (१) में सन् १९४५ के आगे ९ रा. २ अं. १३ क., कोष्ठक (२) में १३ मई को ४ रा. ११ अं. ३९ क. और कोष्ठक (३) में १० घं. २४ मि. के आगे २३ अप्रैल से ३० मई के नीचे ८ अं. १२ क. है। इन तीनों का योग १३ रा. २२ अं. ४ क. हुआ। इसमें से १२ राशि घटाने पर १ रा. २२ अ. ४ क. हमारा इष्ट कालिक सायन स्पष्ट सूर्य हो गया।

उदाहरण (२)- ईस्वी सन् १९४८ की ८ अगस्त को शाम के ५ घं. ४० मि. (यानि १७ घं. ४० मि.) भा.स्टै.टा. पर सायन सूर्य स्पष्ट करना है। कोष्ठक (१) में ई. सन् १९४८ में ९ रा. १ अं. २९ क. है। हमारा सन् १९४८ लीप इयर है, और हमारी तारीख फरवरी के बाद की है, अत: कोष्ठक (२) में ८ अगस्त की जगह ९ अगस्त में देखा तो ७ रा. ५ अं. ५० क. मिली। कोष्ठक (३) में १७ घं. ३६ मि. के आगे "७ अगस्त से १४ सितम्बर" के नीचे ८ अं. २९ क. है। इन तीनों का योग १६ रा. १५ अं. ४८ क. हुआ। अत: इस समय ४ रा. १५ अं. ४८ क. स्पष्ट सायन सूर्य हुआ। इसे निरयण बनाना हो तो इसमें से अपने अभीष्ट वर्ष का अयनांश घटा दें। (अयनांश कोष्ठक आगे दिया गया है।)

ये कोष्ठक मेरे अप्रकाशित ग्रन्थ '**गणक मार्त्तण्ड** ' से उद्धृत हैं।

सूर्यसाधन कोष्ठक (१)

ई. सन्	रा.	अं.	क.	ई. सन्	रा.	अं.	क.	ई. सन्	रा.	अं.	क.	ई. सन्	रा.	अं.	क.	ई. सन्	रा.	अं.	क.	ई. सन्	रा.	अं.	क.	ई. सन्	रा.	अं.	क.
● १९००	९	२	९	१९१७	९	२	१	१९३४	९	१	५४	१९५१	९	१	४५	१९६८	९	१	३८	१९८५	९	२	३१	२००२	९	२	२४
१९०१	९	१	५४	१९१८	९	१	४६	१९३५	९	१	३९	१९५२	९	१	३१	१९६९	९	२	२४	१९८६	९	२	१७	२००३	९	२	१०
१९०२	९	१	३९	१९१९	९	१	३१	१९३६	९	१	२४	१९५३	९	२	१७	१९७०	९	२	९	१९८७	९	२	२	२००४	९	१	५५
१९०३	९	१	२४	१९२०	९	१	१७	१९३७	९	२	१०	१९५४	९	२	२	१९७१	९	१	५४	१९८८	९	१	४७	२००५	९	२	४१
१९०४	९	१	९	१९२१	९	२	३	१९३८	९	१	५५	१९५५	९	१	४८	१९७२	९	१	४०	१९८९	९	२	३४	२००६	९	२	२६
१९०५	९	१	५५	१९२२	९	१	४८	१९३९	९	१	४०	१९५६	९	१	३३	१९७३	९	२	२६	१९९०	९	२	१९	२००७	९	२	११
१९०६	९	१	४०	१९२३	९	१	३३	१९४०	९	१	२५	१९५७	९	२	१९	१९७४	९	२	११	१९९१	९	२	४	२००८	९	१	५६
१९०७	९	१	२५	१९२४	९	१	१८	१९४१	९	२	१२	१९५८	९	२	४	१९७५	९	१	५६	१९९२	९	१	४९	२००९	९	२	४२
१९०८	९	१	११	१९२५	९	२	४	१९४२	९	१	५७	१९५९	९	१	४९	१९७६	९	१	४१	१९९३	९	२	३५	२०१०	९	२	२७
१९०९	९	१	५७	१९२६	९	१	४९	१९४३	९	१	४२	१९६०	९	१	३५	१९७७	९	२	२८	१९९४	९	२	२०	२०११	९	२	१२
१९१०	९	१	४२	१९२७	९	१	३४	१९४४	९	१	२७	१९६१	९	२	२०	१९७८	९	२	१३	१९९५	९	२	५	२०१२	९	१	५७
१९११	९	१	२८	१९२८	९	१	२०	१९४५	९	२	१३	१९६२	९	२	६	१९७९	९	१	५९	१९९६	९	१	५०	२०१३	९	२	४४
१९१२	९	१	१३	१९२९	९	२	६	१९४६	९	१	५८	१९६३	९	१	५१	१९८०	९	१	४४	१९९७	९	२	३६	२०१४	९	२	३०
१९१३	९	१	५९	१९३०	९	१	५१	१९४७	९	१	४४	१९६४	९	१	३६	१९८१	९	२	३०	१९९८	९	२	२२	२०१५	९	२	१५
१९१४	९	१	४५	१९३१	९	१	३७	१९४८	९	१	२९	१९६५	९	२	२३	१९८२	९	२	१५	१९९९	९	२	७	२०१६	९	२	०
१९१५	९	१	३०	१९३२	९	१	२२	१९४९	९	२	१५	१९६६	९	२	८	१९८३	९	२	०	२०००	९	१	५२	२०१७	९	२	४६
१९१६	९	१	१५	१९३३	९	२	८	१९५०	९	२	०	१९६७	९	१	५३	१९८४	९	१	४५	२००१	९	२	३९	२०१८	९	२	३१
																								२०१९	९	२	१६

● ईस्वी सन् १९०० लीप इयर (प्लुत वर्ष) नहीं था।

* सूर्य साधन कोष्ठक (२)

तारीख	जनवरी			फरवरी			मार्च			अप्रैल			मई			जून			जुलाई			अगस्त			सितम्बर			अक्तूबर			नवम्बर			दिसंबर			तारीख
↓	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अ.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	↓
१	०	०	०	१	१	३३	१	२९	५०	३	०	४१	४	०	३	४	२९	५६	५	२८	३५	६	२८	१०	७	२७	५९	८	२७	१४	९	२७	५९	१०	२८	१३	१
२	०	१	१	१	२	३४	२	०	५०	३	१	४०	४	१	१	५	०	५३	५	२९	३२	६	२९	८	७	२८	५७	८	२८	१३	९	२८	५९	१०	२९	१४	२
३	०	२	२	१	३	३५	२	१	५०	३	२	४०	४	१	५९	५	१	५१	६	०	३०	७	०	५	७	२९	५५	८	२९	१२	१०	०	०	११	०	१५	३
४	०	३	३	१	४	३६	२	२	५०	३	३	३९	४	२	५७	५	२	४८	६	१	२७	७	१	३	८	०	५३	९	०	१२	१०	१	०	११	१	१५	४
५	०	४	५	१	५	३७	२	३	५०	३	४	३८	४	३	५५	५	३	४५	६	२	२४	७	२	०	८	१	५१	९	१	११	१०	२	०	११	२	१६	५
६	०	५	६	१	६	३७	२	४	५०	३	५	३७	४	४	५३	५	४	४३	६	३	२१	७	२	५८	८	२	५०	९	२	१०	१०	३	०	११	३	१७	६
७	०	६	७	१	७	३८	२	५	५०	३	६	३६	४	५	५१	५	५	४०	६	४	१८	७	३	५५	८	३	४८	९	३	९	१०	४	०	११	४	१८	७
८	०	७	८	१	८	३९	२	६	५०	३	७	३५	४	६	४९	५	६	३८	६	५	१६	७	४	५३	८	४	४६	९	४	८	१०	५	०	११	५	१९	८
९	०	८	९	१	९	४०	२	७	५०	३	८	३४	४	७	४७	५	७	३५	६	६	१३	७	५	५०	८	५	४४	९	५	७	१०	६	१	११	६	२०	९
१०	०	९	१०	१	१०	४१	२	८	५०	३	९	३२	४	८	४५	५	८	३२	६	७	१०	७	६	४८	८	६	४३	९	६	७	१०	७	१	११	७	२१	१०
११	०	१०	११	१	११	४१	२	९	५०	३	१०	३१	४	९	४३	५	९	३०	६	८	७	७	७	४५	८	७	४१	९	७	६	१०	८	१	११	८	२२	११
१२	०	११	१२	१	१२	४२	२	१०	५०	३	११	३०	४	१०	४१	५	१०	२७	६	९	४	७	८	४३	८	८	३९	९	८	५	१०	९	२	११	९	२३	१२
१३	०	१२	१४	१	१३	४३	२	११	५०	३	१२	२९	४	११	३९	५	११	२५	६	१०	२	७	९	४०	८	९	३८	९	९	५	१०	१०	२	११	१०	२४	१३
१४	०	१३	१५	१	१४	४३	२	१२	५०	३	१३	२८	४	१२	३७	५	१२	२२	६	१०	५९	७	१०	३८	८	१०	३६	९	१०	४	१०	११	३	११	११	२५	१४
१५	०	१४	१६	१	१५	४४	२	१३	५०	३	१४	२७	४	१३	३५	५	१३	१९	६	११	५६	७	११	३६	८	११	३५	९	११	४	१०	१२	३	११	१२	२६	१५
१६	०	१५	१७	१	१६	४४	२	१४	४९	३	१५	२५	४	१४	३३	५	१४	१७	६	१२	५४	७	१२	३३	८	१२	३३	९	१२	३	१०	१३	३	११	१३	२७	१६
१७	०	१६	१८	१	१७	४५	२	१५	४९	३	१६	२४	४	१५	३१	५	१५	१४	६	१३	५१	७	१३	३१	८	१३	३२	९	१३	३	१०	१४	४	११	१४	२८	१७
१८	०	१७	१९	१	१८	४६	२	१६	४९	३	१७	२३	४	१६	२९	५	१६	११	६	१४	४८	७	१४	२९	८	१४	३०	९	१४	२	१०	१५	४	११	१५	२९	१८
१९	०	१८	२०	१	१९	४६	२	१७	४९	३	१८	२२	४	१७	२६	५	१७	८	६	१५	४५	७	१५	२७	८	१५	२९	९	१५	२	१०	१६	५	११	१६	३१	१९
२०	०	१९	२२	१	२०	४७	२	१८	४८	३	१९	२०	४	१८	२४	५	१८	६	६	१६	४३	७	१६	२४	८	१६	२८	९	१६	२	१०	१७	५	११	१७	३२	२०
२१	०	२०	२३	१	२१	४७	२	१९	४८	३	२०	१९	४	१९	२२	५	१९	३	६	१७	४०	७	१७	२२	८	१७	२६	९	१७	१	१०	१८	६	११	१८	३३	२१
२२	०	२१	२४	१	२२	४८	२	२०	४७	३	२१	१७	४	२०	२०	५	२०	०	६	१८	३७	७	१८	२०	८	१८	२५	९	१८	१	१०	१९	७	११	१९	३४	२२
२३	०	२२	२५	१	२३	४८	२	२१	४७	३	२२	१६	४	२१	१८	५	२०	५८	६	१९	३५	७	१९	१८	८	१९	२४	९	१९	१	१०	२०	७	११	२०	३५	२३
२४	०	२३	२६	१	२४	४८	२	२२	४६	३	२३	१४	४	२२	१५	५	२१	५५	६	२०	३२	७	२०	१६	८	२०	२२	९	२०	०	१०	२१	८	११	२१	३६	२४
२५	०	२४	२७	१	२५	४९	२	२३	४६	३	२४	१३	४	२३	१३	५	२२	५२	६	२१	२९	७	२१	१३	८	२१	२१	९	२१	०	१०	२२	९	११	२२	३७	२५
२६	०	२५	२८	१	२६	४९	२	२४	४५	३	२५	११	४	२४	११	५	२३	४९	६	२२	२६	७	२२	११	८	२२	२०	९	२२	०	१०	२३	९	११	२३	३८	२६
२७	०	२६	२९	१	२७	४९	२	२५	४५	३	२६	९	४	२५	८	५	२४	४६	६	२३	२४	७	२३	९	८	२३	१९	९	२३	०	१०	२४	१०	११	२४	३९	२७
२८	०	२७	३०	१	२८	५०	२	२६	४४	३	२७	८	४	२६	६	५	२५	४४	६	२४	२१	७	२४	७	८	२४	१८	९	२४	०	१०	२५	११	११	२५	४०	२८
२९	०	२८	३१	१	२९	५०	२	२७	४३	३	२८	६	४	२७	३	५	२६	४१	६	२५	१८	७	२५	५	८	२५	१७	९	२५	०	१०	२६	१२	११	२६	४२	२९
३०	०	२९	३२	......			२	२८	४३	३	२९	४	[illegible]			[illegible]			६	२६	१६	७	२६	३	८	२६	१५	९	२५	५९	१०	२७	१२	११	२७	४३	३०
३१	१	०	३२	......			२	२९	४२	......			४	२८	५९	......			[illegible]			[illegible]			......			९	२६	५९	......			११	२८	४४	३१
																																		११	२९	४५	३२

* लीप वर्ष हो तो फरवरी के बाद के महीनों में अपनी अभीष्ट तारीख में एक जोड़ कर इस कोष्ठक को प्रयोग में लाएं ।

सूर्य साधन कोष्ठक (३)

काल (भा. स्टै. टा.)	१ जन. से १९ फर. / २७ नव. से ३१ दिसं.	२० फर. से २३ मार्च / २५ अक्टू. से २६ नव.	२४ मार्च से २२ अप्रै. / २५ सितं. से २४ अक्टू.	२३ अप्रै. से ३० मई / ७ अग. से २४ सितं.	३१ मई से ३० जून / १ जुला. से ६ अग.	काल (भा. स्टै. टा.)	१ जन. से १९ फर. / २७ नव. से ३१ दिसं.	२० फर. से २३ मार्च / २५ अक्टू. से २६ नव.	२४ मार्च से२२ अप्रै. / २५ सितं. से २४ अक्टू.	२३ अप्रै. से ३० मई / ७ अग. से २४ सितं.	३१ मई से ३० जून / १ जुला. से ६ अग.
घं. मि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
० ०	७ ४६	७ ४६	७ ४६	७ ४७	७ ४७	१२ ०	८ १६	८ १६	८ १६	८ १५	८ १५
० २४	७ ४७	७ ४७	७ ४७	७ ४७	७ ४८	१२ २४	८ १७	८ १७	८ १७	८ १६	८ १६
० ४८	७ ४८	७ ४८	७ ४८	७ ४८	७ ४९	१२ ४८	८ १८	८ १८	८ १८	८ १७	८ १७
१ १२	७ ४९	७ ४९	७ ४९	७ ४९	७ ५०	१३ १२	८ १९	८ १९	८ १९	८ १८	८ १८
१ ३६	७ ५०	७ ५०	७ ५०	७ ५०	७ ५१	१३ ३६	८ २०	८ २०	८ २०	८ १९	८ १९
२ ०	७ ५१	७ ५१	७ ५१	७ ५१	७ ५१	१४ ०	८ २१	८ २१	८ २१	८ २०	८ २०
२ २४	७ ५२	७ ५२	७ ५२	७ ५२	७ ५२	१४ २४	८ २२	८ २२	८ २२	८ २१	८ २१
२ ४८	७ ५३	७ ५३	७ ५३	७ ५३	७ ५३	१४ ४८	८ २३	८ २३	८ २३	८ २२	८ २२
३ १२	७ ५४	७ ५४	७ ५४	७ ५४	७ ५४	१५ १२	८ २४	८ २४	८ २४	८ २३	८ २३
३ ३६	७ ५५	७ ५५	७ ५५	७ ५५	७ ५५	१५ ३६	८ २५	८ २५	८ २५	८ २४	८ २४
४ ०	७ ५६	७ ५६	७ ५६	७ ५६	७ ५६	१६ ०	८ २६	८ २६	८ २६	८ २५	८ २५
४ २४	७ ५७	७ ५७	७ ५७	७ ५७	७ ५७	१६ २४	८ २७	८ २७	८ २७	८ २६	८ २६
४ ४८	७ ५८	७ ५८	७ ५८	७ ५८	७ ५८	१६ ४८	८ २८	८ २८	८ २८	८ २७	८ २७
५ १२	७ ५९	७ ५९	७ ५९	७ ५९	७ ५९	१७ १२	८ २९	८ २९	८ २९	८ २८	८ २८
५ ३६	८ ०	८ ०	८ ०	८ ०	८ ०	१७ ३६	८ ३१	८ ३०	८ २९	८ २९	८ २९
६ ०	८ १	८ १	८ १	८ १	८ १	१८ ०	८ ३२	८ ३१	८ ३०	८ ३०	८ २९
६ २४	८ २	८ २	८ २	८ २	८ २	१५ २४	८ ३३	८ ३२	८ ३१	८ ३१	८ ३०
६ ४८	८ ३	८ ३	८ ३	८ ३	८ ३	१८ ४८	८ ३४	८ ३३	८ ३२	८ ३२	८ ३१
७ १२	८ ४	८ ४	८ ४	८ ४	८ ४	१९ १२	८ ३५	८ ३४	८ ३३	८ ३३	८ ३२
७ ३६	८ ५	८ ५	८ ५	८ ५	८ ५	१९ ३६	८ ३६	८ ३५	८ ३४	८ ३४	८ ३३
८ ०	८ ६	८ ६	८ ६	८ ६	८ ६	२० ०	८ ३७	८ ३६	८ ३५	८ ३५	८ ३४
८ २४	८ ७	८ ७	८ ७	८ ७	८ ७	२० २४	८ ३८	८ ३७	८ ३६	८ ३६	८ ३५
८ ४८	८ ८	८ ८	८ ८	८ ८	८ ७	२० ४८	८ ३९	८ ३८	८ ३७	८ ३७	८ ३६
९ १२	८ ९	८ ९	८ ९	८ ९	८ ८	२१ १२	८ ४०	८ ३९	८ ३९	८ ३८	८ ३७
९ ३६	८ १०	८ १०	८ १०	८ १०	८ ९	२१ ३६	८ ४१	८ ४०	८ ३९	८ ३८	८ ३८
१० ०	८ ११	८ ११	८ ११	८ ११	८ १०	२२ ०	८ ४२	८ ४१	८ ४०	८ ४०	८ ३९
१० २४	८ १२	८ १२	८ १२	८ १२	८ ११	२२ २४	८ ४३	८ ४२	८ ४१	८ ४१	८ ४०
१० ४८	८ १३	८ १३	८ १३	८ १३	८ १२	२२ ४८	८ ४४	८ ४३	८ ४२	८ ४२	८ ४१
११ १२	८ १४	८ १४	८ १४	८ १४	८ १३	२३ १२	८ ४५	८ ४४	८ ४३	८ ४३	८ ४२
११ ३६	८ १५	८ १५	८ १५	८ १४	८ १४	२३ ३६	८ ४६	८ ४५	८ ४४	८ ४४	८ ४३
१२ ०	८ १६	८ १६	८ १६	८ १५	८ १५	२४ ०	८ ४७	८ ४६	८ ४५	८ ४४	८ ४४

अयनांश कोष्ठक

	अयनांश			अयनांश			अयनांश			अयनांश	
ई. सन्	अं.	क.	ई.सन्	अं.	क.	ई. सन्	अं.	क.	ई. सन्	अं.	क.
१९००	२२	२८	१९३१	२२	५४	१९६२	२३	२०	१९९३	२३	४६
१९०१	२२	२९	१९३२	२२	५४	१९६३	२३	२०	१९९४	२३	४६
१९०२	२२	३०	१९३३	२२	५५	१९६४	२३	२१	१९९५	२३	४७
१९०३	२२	३१	१९३४	२२	५६	१९६५	२३	२२	१९९६	२३	४८
१९०४	२२	३२	१९३५	२२	५७	१९६६	२३	२३	१९९७	२३	४९
१९०५	२२	३२	१९३६	२२	५८	१९६७	२३	२४	१९९८	२३	५०
१९०६	२२	३३	१९३७	२२	५९	१९६८	२३	२५	१९९९	२३	५१
१९०७	२२	३४	१९३८	२२	५९	१९६९	२३	२५	२०००	२३	५१
१९०८	२२	३५	१९३९	२३	००	१९७०	२३	२६	२००१	२३	५२
१९०९	२२	३६	१९४०	२३	०१	१९७१	२३	२७	२००२	२३	५३
१९१०	२२	३६	१९४१	२३	०२	१९७२	२३	२८	२००३	२३	५४
१९११	२२	३७	१९४२	२३	०३	१९७३	२३	२९	२००४	२३	५५
१९१२	२२	३८	१९४३	२३	०४	१९७४	२३	३०	२००५	२३	५६
१९१३	२२	३९	१९४४	२३	०४	१९७५	२३	३०	२००६	२३	५६
१९१४	२२	४०	१९४५	२३	०५	१९७६	२३	३१	२००७	२३	५७
१९१५	२२	४१	१९४६	२३	०६	१९७७	२३	३२	२००८	२३	५८
१९१६	२२	४१	१९४७	२३	०७	१९७८	२३	३३	२००९	२३	५९
१९१७	२२	४२	१९४८	२३	०८	१९७९	२३	३४	२०१०	२४	००
१९१८	२२	४३	१९४९	२३	०९	१९८०	२३	३५	२०११	२४	०१
१९१९	२२	४४	१९५०	२३	१०	१९८१	२३	३५	२०१२	२४	०१
१९२०	२२	४४	१९५१	२३	१०	१९८२	२३	३६	२०१३	२४	०२
१९२१	२२	४५	१९५२	२३	११	१९८३	२३	३७	२०१४	२४	०३
१९२२	२२	४६	१९५३	२३	१२	१९८४	२३	३८	२०१५	२४	०४
१९२३	२२	४७	१९५४	२३	१३	१९८५	२३	३९	२०१६	२४	०५
१९२४	२२	४८	१९५५	२३	१४	१९८६	२३	४०	२०१७	२४	०६
१९२५	२२	४९	१९५६	२३	१५	१९८७	२३	४१	२०१८	२४	०६
१९२६	२२	४९	१९५७	२३	१५	१९८८	२३	४१	२०१९	२४	०७
१९२७	२२	५०	१९५८	२३	१६	१९८९	२३	४२			
१९२८	२२	५१	१९५९	२३	१७	१९९०	२३	४३			
१९२९	२२	५२	१९६०	२३	१८	१९९१	२३	४४			
१९३०	२२	५३	१९६१	२३	१९	१९९२	२३	४५			

समस्त उत्तर भारत के नगरों की लग्न सारणियाँ

(जम्मू काश्मीर, हि.प्र., पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, गुजरात, उ.प्र., म.प्र., बिहार, बंगाल,आसाम व नेपाल आदि के लिए)

लेखकः-प्रियव्रत शर्मा

नवीन शैली (साम्पातिक काल) से लग्न स्पष्ट करने की विधि इसी पंचांग में आगे दी गई है जो लोग प्राचीन पद्धति (स्पष्ट सूर्य और इष्टकाल) द्वारा ही लग्न स्पष्ट करने का अभ्यास रखते हैं उन्हें हम यहाँ इसी पद्धति से सरलता पूर्वक लग्न साधन करने का प्रकार बतलाएंगे। एतदर्थ हमने यहाँ अगले चार पृष्ठों पर सारे उत्तर भारत (उत्तर अक्षांश २१ से ३५ तक) के लिए उपयोगी लग्न सारणियां दी हैं। इससे इष्टकाल का लग्न इस प्रकार स्पष्ट कीजिए-

इष्टकाल का सायन सूर्य स्पष्ट कीजिए। पिछले तीन पृष्ठों पर दिए गए तीन सूर्य साधन कोष्ठकों से इष्टकालिक सायन सूर्य आसानी से स्पष्ट किया जा सकता है। इष्टकाल यदि घड़ी पलों में है तो उसे घण्टा मिनटों में बदल लें। अपने नगर के अक्षांश वाली लग्न सारणी में (लग्न सारणी के अपने अक्षांश वाले कालम में) इष्टकालिक सायन सूर्य की राशि अंशों से घं.मि. उठाएं। लग्न सारणी ५-५ अंशों के अन्तर पर बनी हुई है। अतः सूर्य की शेष अंश कलाओं को कला बनाकर उन्हें सारणी में लिखे अन्तर मिनटों से गुणा करके ३०० का भाग देकर एक लब्धि (मिनट) प्राप्त करें। इसे सारणी से उठाए गए घं.मि. में जोड़ दें। अब इन घं.मि. को इष्टकाल के घण्टा मिनटों में जोड़ने पर जो घं.मि. मिलें, इन्हें अपनी (अपने अक्षांश की) लग्न सारणियों में ढूढ़िये। सारणी में जहाँ इनके बराबर या इनके लगभग घं.मि. मिलें, उनके बाई ओर पहले कालम में लिखे राशि अंशों को अलग लिख लें। शेष मिनटों को ५ से गुणा करके उन्हें सारणी में दिए गए अन्तर से भाग देकर दो लब्धियां (अं.क.) प्राप्त करें। इन्हें अलग लिखे राशि अंशों में जोड़ने पर आपका इष्ट कालिक सायन लग्न स्पष्ट हो जाएगा। इसमें से अपनी ईस्वी सन् का अयनांश (जो पिछले पृष्ठ पर दिए गए अयनांश कोष्ठक से प्राप्त किया जा सकता है) घटा देने पर निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

लग्न सारणियां आधे-आधे अक्षांशों के अन्तर पर दी गई हैं। अपने नगर के अक्षांश के समीपतम अक्षांश वाली लग्न सारणी को ही प्रयोग में लाना चाहिए।

उदाहरण (1) -चण्डीगढ़ में सन् १९७७ ई. की १५ जून को शाम के ५ बजकर २५ मिनट (भा.स्टै.टा.) पर लग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सायन सूर्य २ रा. २४ अं. १६ क. और इष्टकाल ३० घ. ७ प. और घण्टा मिनटात्मक इष्ट १२ घं. ३ मि. है। चण्डीगढ़ के अक्षांश ३० अं. ४४ क. उत्तर है। अतः इसके समीप के अक्षांश ३० अं. ३० क. वाली लग्न सारणी को प्रयोग में लाएंगे। ३० अं. ३० क. अक्षांश वाली लग्न सारणी में सायन सूर्य की २ राशि २० अं. के आगे ४ घं. १८ मि. मिले। सायन सूर्य के बाकी ४ अंश और १६ कलाओं का कला बनाया, तो २५६ कलाएं हुई। इन्हें सारणी में लिखे अन्तर मिनट २१ से गुणा करके ३०० का भाग देने पर १८ मिनट मिले। इन्हें सारणी से मिले ४ घं. १८ मिनटों में जोड़ा तो घं. ४ मिनट ३६ बने। इन्हें इष्ट के १२ घं. ३ मि. में जोड़ने पर १६ घं. ३९ मि. हुए। इन्हें ३० अं. ३० क. अक्षांश वाली सारणी में ढूढ़ने पर हमें इसके लगभग बराबर संख्या १६ घं. १७ मि. मिले। इन घण्टा मिनट के बांयी ओर पहले कालम में सारणी में ७ रा. २५ अं. लिखे हैं; -इन्हें अलग नोट किया। शेष २२ मिनटों को ५ से गुणा करके सारणी में दिए गए अन्तर २४मि. से भाग देने पर दो लब्धियां ४ अं. ३५ क. मिली। इन्हें अलग लिखे ७ रा.२५ अं. में जोड़ने पर ७ रा. २९ अं. ३५ क. हमारा इष्टकालिक सायन लग्न स्पष्ट हो गया। सन् १९७७ में अयनांश २३ अं. ३२ क. है। (देखें अयनांश सारणी)। इसे सायन लग्न में घटाने पर ७ रा. ६ अं. ३ क. हमारा इष्टकालिक निरयण लग्न स्पष्ट हो गया।

उदाहरण (२) -आगरा (उ.प्र.) में सन् १९९७ की ८ मार्च को दिन के ११ बजकर ४० मि. (भा.स्टै.टा.) पर लग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सायन सूर्य ११ रा. १७ अं. ४२ क. और घण्टा-मिनटात्मक इष्ट ५ घं. १ मि. है। आगरा के अक्षांश २७ अं. १० क. (उत्तर) हैं। २७ अं. ०० क. अक्षांश वाली लग्न सारणी में सायन सूर्य की ११ रा. १५ अं. के आगे २३ घं. १७ मि. है। सायन सूर्य के शेष २ अंश और ४२ कलाओं की कलाएं बनाई तो १६२ कलाएं हुई। इन्हें सारणी में लिखे अन्तर मिनट १४ से गुणा कर ३०० से भाग देने पर लब्धि ८ मिनट मिले। इन्हें २३ घं. १७ मि. में जोड़ने पर २३ घं. २५ मिनट हुए। इसमें इष्ट के ५ घं. १ मिनट जोड़ने पर ४ घं. २६ मिनट मिले। इसे २७ अं. ०० क. अक्षांश वाली लग्न सारणी में ढूढ़ने पर हमें बिल्कुल यही संख्या (४ घं. २६ मि.) २ रा. २० अं. के आगे मिली। इसलिए २ रा. २० अं. ०० क. ही हमारा इष्टकालिक सायन लग्न हुआ। इसमें से सन् १९९७ का अयनांश २३ अं. ४९ क. घटा देने पर १रा. २६ अं. ११ क. हमारा इष्टकालिक निरयाण लग्न बन गया।

उदाहरण (३) - कांगड़ा (हि.प्र.) में ३१ अक्तू'९६ को १८ घं.२५ मि. (भा.स्टै.टा.)पर लग्न स्पष्ट करना है। इस समय इष्ट काल ११ घं. ४१ मि.,स्पष्ट सायन सूर्य ७ रा. ८ अं. २१ क. है। कांगड़ा का अक्षांश ३२°।५ (उ.) है। ३२° अंक्षाश वाली लग्न सारणी में सायन सूर्य ७ रा. ५ अं. के आगे १४ घं. ४५ मि. और अन्तर २४ मि. है। शेष ३ अ. २१ क.की कलाओं (२०१) को २४ से गुण कर ३०० से भाग देने पर लब्धि १६ मि. मिले। इन्हे १४ घं. ४५ मि. में जोड़ने पर १५ घं. १ मि. हुए। इन्हें इष्टकाल में जोड़ने पर २ घं. ४२ मि. मिले। ३२° अक्षाश वाली लग्न सारणी में २ घं. ४२ मि. के लगभग बराबर संख्या (घं. मि.) २ घं. ४१ मि., १ रा. २५ अं.के आगे है। शेष १ मि. को ५ से गुण कर अन्तर मिनटों (१७) से भाग देने पर दो लब्धियां ० अं. १८ क. मिली। इन्हें १ रा. २५ अं. में जोड़ने पर १ रा. २५ अं. १८ क. इष्टकालिक सायन लग्न हुआ। इसमें से इस ? का अयनांश २३ अं.४८ कला घटाने पर १ रा. १ अं. ३० क. इष्ट कालिक निरयण लग्न मिल गया।

समस्त उत्तर भारत की लग्न सारणियां (भाग १)

सायन सूर्य या सायन लग्न	अक्षांश (उत्तर) २१°।००'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २१°।३०'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २२°।००'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २२°।३०'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २३°।००		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २३°।३०'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २४°।००		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २४°।३०'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २५°।००'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २५°।३०'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २६°।००'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २६°।३०		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २७°।००		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २७°।३०'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २८°।००'		अन्तर
रा.अं.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.
० ००	०	००	१५	०	००	१५	०	००	१५	०	००	१५	०	००	१५	०	००	१५	०	००	१५	०	००	१५	०	००	१५	०	००	१४	०	००	१४	०	००	१४	०	००	१४	०	००	१४	०	००	१४
० ०५	०	१५	१५	०	१५	१५	०	१५	१५	०	१५	१५	०	१५	१५	०	१५	१५	०	१५	१५	०	१५	१५	०	१५	१५	०	१५	१४	०	१४	१४	०	१४	१५	०	१४	१४	०	१४	१४	०	१४	१४
० १०	०	३१	१५	०	३०	१५	०	३०	१५	०	३०	१५	०	३०	१५	०	३०	१५	०	३०	१५	०	२९	१५	०	२९	१५	०	२९	१५	०	२९	१४	०	२९	१४	०	२९	१४	०	२८	१४	०	२८	१४
० १५	०	४६	१६	०	४६	१५	०	४६	१५	०	४५	१५	०	४५	१५	०	४५	१५	०	४५	१५	०	४४	१५	०	४४	१५	०	४४	१५	०	४४	१५	०	४३	१५	०	४३	१४	०	४३	१४	०	४३	१५
० २०	१	०२	१६	१	०१	१६	१	०१	१६	१	०१	१६	१	०१	१६	१	०	१६	१	००	१५	०	५९	१५	०	५९	१५	०	५९	१५	०	५८	१५	०	५८	१५	०	५८	१५	०	५७	१५	०	५७	१५
० २५	१	१८	१६	१	१७	१६	१	१७	१६	१	१६	१६	१	१६	१६	१	१६	१६	१	१५	१६	०	१५	१६	१	१४	१५	१	१४	१५	१	१३	१५	१	१३	१५	१	१३	१५	१	१२	१५	१	१२	१५
१ ००	१	३४	१७	१	३३	१७	१	३३	१६	१	३२	१६	१	३२	१६	१	३१	१६	१	३१	१६	१	३०	१६	१	३०	१६	१	२९	१६	१	२९	१६	१	२८	१६	१	२८	१६	१	२७	१६	१	२७	१६
१ ०५	१	५०	१७	१	५०	१७	१	४९	१७	१	४९	१७	१	४८	१६	१	४७	१६	१	४७	१६	१	४६	१६	१	४६	१६	१	४५	१६	१	४५	१६	१	४४	१६	१	४३	१६	१	४३	१६	१	४२	१६
१ १०	२	०७	१७	२	०६	१७	२	६	१७	२	०५	१७	२	०४	१७	२	०४	१७	२	०३	१७	२	०३	१७	२	०२	१७	२	०१	१७	२	०१	१६	२	००	१६	१	५९	१६	१	५९	१६	१	५८	१६
१ १५	२	२४	१८	२	२४	१७	२	२३	१८	२	२२	१८	२	२१	१८	२	२१	१७	२	२०	१७	२	१९	१७	२	१९	१७	२	१८	१७	२	१७	१७	२	१६	१७	२	१६	१७	२	१५	१७	२	१४	१७
१ २०	२	४२	१८	२	४१	१८	२	४०	१८	२	४०	१८	२	३९	१८	२	३८	१८	२	३७	१८	२	३७	१८	२	३६	१८	२	३५	१८	२	३४	१७	२	३३	१७	२	३३	१७	२	३२	१७	२	३१	१७
१ २५	३	००	१९	२	५९	१९	२	५९	१८	२	५८	१८	२	५७	१९	२	५६	१८	२	५५	१८	२	५४	१८	२	५४	१८	२	५३	१८	२	५२	१८	२	५१	१८	२	५०	१८	२	४९	१८	२	४८	१८
२ ००	३	१९	२०	३	१८	१९	३	१७	१९	३	१६	१९	३	१५	१९	३	१४	१९	३	१४	१९	३	१३	१९	३	१२	१९	३	११	१९	३	१०	१९	३	०९	१९	३	०८	१८	३	०७	१८	३	०६	१८
२ ०५	३	३८	२०	३	३७	२०	३	३६	२०	३	३५	२०	३	३४	२०	३	३३	२०	३	३३	२०	३	३२	१९	३	३१	१९	३	३०	१९	३	२९	१९	३	२८	१९	३	२७	१९	३	२६	१९	३	२५	१९
२ १०	३	५८	२०	३	५७	२०	३	५६	२०	३	५५	२०	३	५४	२०	३	५३	२०	३	५२	२०	३	५१	२०	३	५०	२०	३	४९	२०	३	४८	२०	३	४७	२०	३	४६	२०	३	४५	२०	३	४४	२०
२ १५	४	१८	२१	४	१७	२१	४	१६	२१	४	१५	२०	४	१४	२०	४	१३	२१	४	१२	२०	४	११	२१	४	१०	२०	४	०९	२०	४	०८	२०	४	०७	२०	४	०६	२१	४	०५	२०	४	०४	२०
२ २०	४	३९	२१	४	३८	२१	४	३७	२१	४	३६	२१	४	३५	२१	४	३४	२१	४	३३	२१	४	३२	२१	४	३१	२१	४	३०	२१	४	२८	२१	४	२७	२१	४	२६	२१	४	२५	२१	४	२४	२१
२ २५	५	००	२२	४	५९	२२	४	५८	२२	४	५७	२१	४	५६	२२	४	५५	२२	४	५४	२२	४	५३	२१	४	५२	२१	४	५१	२१	४	५०	२२	४	४८	२२	४	४७	२१	४	४६	२२	४	४५	२२
३ ००	५	२२	२२	५	२१	२२	५	२०	२२	५	१९	२२	५	१८	२२	५	१७	२२	५	१६	२२	५	१४	२२	५	१३	२२	५	१२	२२	५	११	२२	५	१०	२२	५	०९	२२	५	०८	२२	५	०७	२२
३ ०५	५	४४	२२	५	४३	२२	५	४२	२२	५	४१	२२	५	३९	२२	५	३८	२३	५	३७	२२	५	३६	२२	५	३५	२२	५	३४	२३	५	३३	२२	५	३२	२२	५	३१	२२	५	३०	२२	५	२९	२३
३ १०	६	०६	२२	६	०५	२२	६	०४	२२	६	३	२२	६	०२	२३	६	१	२३	६	००	२३	५	५९	२३	५	५८	२३	५	५७	२३	५	५५	२३	५	५४	२३	५	५३	२३	५	५२	२३	५	५१	२३
३ १५	६	२८	२३	६	२७	२३	६	२६	२३	६	२५	२३	६	२४	२३	६	२३	२३	६	२२	२३	६	२१	२३	६	२०	२३	६	१९	२३	६	१८	२३	६	१७	२३	६	१६	२३	६	१५	२३	६	१४	२३
३ २०	६	५१	२३	६	५०	२३	६	४९	२३	६	४८	२३	६	४७	२३	६	४६	२३	६	४५	२३	६	४४	२३	६	४३	२३	६	४२	२३	६	४१	२३	६	४०	२३	६	३९	२३	६	३८	२३	६	३७	२३
३ २५	७	१४	२३	७	१३	२३	७	१२	२३	७	११	२३	७	१०	२३	७	०९	२३	७	०८	२३	७	०७	२३	७	०६	२३	७	०५	२३	७	४	२३	७	०३	२३	७	०२	२३	७	०१	२३	७	००	२३
४ ००	७	३६	२३	७	३५	२३	७	३५	२३	७	३४	२३	७	३३	२३	७	३२	२३	७	३१	२३	७	३०	२३	७	२९	२३	७	२८	२३	७	२७	२३	७	२६	२३	७	२६	२३	७	२५	२३	७	२४	२३
४ ०५	७	५९	२२	७	५८	२३	७	५७	२३	७	५७	२३	७	५६	२३	७	५५	२३	७	५४	२३	७	५३	२३	७	५२	२३	७	५१	२३	७	५१	२३	७	५०	२३	७	४९	२३	७	४८	२३	७	४७	२३
४ १०	८	२१	२२	८	२१	२२	८	२०	२२	८	१९	२२	८	१८	२३	८	१८	२३	८	१७	२३	८	१६	२३	८	१५	२३	८	१५	२३	८	१४	२३	८	१३	२३	८	१२	२३	८	११	२३	८	११	२३
४ १५	८	४४	२२	८	४३	२२	८	४३	२२	८	४२	२२	८	४१	२२	८	४०	२३	८	४०	२३	८	३९	२३	८	३८	२३	८	३८	२३	८	३७	२३	८	३६	२३	८	३५	२३	८	३५	२३	८	३४	२३
४ २०	९	०६	२२	९	०६	२२	९	०५	२२	९	०४	२२	९	०४	२२	९	०३	२३	९	०३	२३	९	०२	२३	९	०१	२३	९	०१	२३	९	००	२३	८	५९	२३	८	५९	२३	८	५८	२३	८	५७	२३
४ २५	९	२८	२२	९	२८	२२	९	२७	२२	९	२७	२२	९	२६	२२	९	२६	२२	९	२५	२२	९	२५	२३	९	२४	२३	९	२३	२३	९	२३	२३	९	२२	२३	९	२२	२३	९	२१	२३	९	२०	२३
५ ००	९	५०	२२	९	५०	२२	९	४९	२२	९	४९	२२	९	४९	२२	९	४८	२२	९	४८	२२	९	४७	२२	९	४७	२२	९	४६	२३	९	४६	२२	९	४५	२३	९	४५	२३	९	४४	२३	९	४४	२३
५ ०५	१०	१२	२२	१०	१२	२२	१०	१२	२२	१०	११	२२	१०	११	२२	१०	१०	२२	१०	१०	२२	१०	०९	२२	१०	०९	२२	१०	०९	२२	१०	०८	२२	१०	०८	२३	१०	०७	२३	१०	०७	२३	१०	०७	२३
५ १०	१०	३४	२२	१०	३४	२२	१०	३३	२२	१०	३३	२२	१०	३३	२२	१०	३२	२२	१०	३२	२२	१०	३२	२२	१०	३१	२२	१०	३१	२२	१०	३१	२२	१०	३०	२३	१०	३०	२३	१०	३०	२३	१०	२९	२३
५ १५	१०	५६	२२	१०	५५	२२	१०	५५	२२	१०	५५	२२	१०	५५	२२	१०	५४	२२	१०	५४	२२	१०	५४	२२	१०	५४	२२	१०	५३	२२	१०	५३	२२	१०	५३	२२	१०	५३	२३	१०	५२	२३	१०	५२	२३
५ २०	११	१७	२१	११	१७	२१	११	१७	२२	११	१७	२२	११	१६	२२	११	१६	२२	११	१६	२२	११	१६	२२	११	१६	२२	११	१६	२२	११	१५	२२	११	१५	२२	११	१५	२२	११	१५	२३	११	१५	२३
५ २५	११	३९	२१	११	३८	२१	११	३८	२२	११	३८	२२	११	३८	२२	११	३८	२२	११	३८	२२	११	३८	२२	११	३८	२२	११	३८	२२	११	३८	२२	११	३७	२२	११	३७	२२	११	३७	२३	११	३७	२३
६ ००	१२	००	२१	१२	००	२१	१२	००	२२	१२	००	२२	१२	००	२२	१२	००	२२	१२	००	२२	१२	००	२२	१२	००	२३	१२	००	२२	१२	००	२२	१२	००	२२	१२	००	२२	१२	००	२२	१२	००	२३

समस्त उत्तर भारत की लग्न सारणियां (भाग २)

सायन सूर्य या सायन लग्न	अक्षांश (उत्तर) २१°।००'	अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २१°।३०'	अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २२°।००'	अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २२°।३०'	अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २३°।००'	अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २३°।३०'	अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २४°।००'	अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २४°।३०'	अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २५°।००'	अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २५°।३०'	अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २६°।००'	अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २६°।३०'	अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २७°।००'	अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २७°।३०'	अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २८°।००'	अन्तर
रा.अं.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.
६ ००	१२ ००	२१	१२ ००	२१	१२ ००	२२	१२ ००	२२	१२ ००	२२	१२ ००	२२	१२ ००	२२	१२ ००	२२	१२ ००	२२	१२ ००	२२	१२ ००	२२	१२ ००	२२	१२ ००	२२	१२ ००	२२	१२ ००	२३
६ ०५	१२ २१	२२	१२ २१	२२	१२ २२	२२	१२ २२	२२	१२ २२	२२	१२ २२	२२	१२ २२	२२	१२ २२	२२	१२ २२	२२	१२ २२	२२	१२ २२	२२	१२ २२	२२	१२ २२	२२	१२ २२	२३	१२ २३	२३
६ १०	१२ ४३	२२	१२ ४३	२२	१२ ४३	२२	१२ ४३	२२	१२ ४३	२२	१२ ४४	२२	१२ ४४	२२	१२ ४४	२२	१२ ४४	२२	१२ ४४	२२	१२ ४४	२२	१२ ४४	२२	१२ ४५	२२	१२ ४५	२३	१२ ४५	२३
६ १५	१३ ०४	२२	१३ ०५	२२	१३ ०५	२२	१३ ०५	२२	१३ ०५	२२	१३ ०६	२२	१३ ०६	२२	१३ ०६	२२	१३ ०६	२२	१३ ०७	२२	१३ ०७	२२	१३ ०७	२३	१३ ०७	२३	१३ ०८	२३	१३ ०८	२३
६ २०	१३ २६	२२	१३ २६	२२	१३ २७	२२	१३ २७	२२	१३ २७	२२	१३ २८	२२	१३ २८	२२	१३ २८	२२	१३ २८	२२	१३ २९	२२	१३ २९	२२	१३ ३०	२३	१३ ३०	२३	१३ ३०	२३	१३ ३१	२३
६ २५	१३ ४८	२२	१३ ४८	२२	१३ ४८	२२	१३ ४९	२२	१३ ४९	२२	१३ ५०	२२	१३ ५०	२२	१३ ५०	२२	१३ ५१	२२	१३ ५१	२२	१३ ५२	२२	१३ ५२	२३	१३ ५३	२३	१३ ५३	२३	१३ ५३	२३
७ ००	१४ ०९	२२	१४ १०	२२	१४ १०	२२	१४ ११	२२	१४ ११	२२	१४ १२	२२	१४ १२	२२	१४ १३	२३	१४ १३	२३	१४ १४	२३	१४ १४	२३	१४ १५	२३	१४ १५	२३	१४ १६	२३	१४ १६	२३
७ ०५	१४ ३१	२२	१४ ३२	२२	१४ ३३	२२	१४ ३३	२२	१४ ३४	२२	१४ ३४	२२	१४ ३५	२२	१४ ३५	२३	१४ ३६	२३	१४ ३७	२३	१४ ३७	२३	१४ ३८	२३	१४ ३८	२३	१४ ३९	२३	१४ ३९	२३
७ १०	१४ ५४	२२	१४ ५४	२२	१४ ५५	२२	१४ ५५	२२	१४ ५६	२२	१४ ५७	२२	१४ ५७	२३	१४ ५८	२३	१४ ५९	२३	१४ ५९	२३	१५ ००	२३	१५ ०१	२३	१५ ०१	२३	१५ ०२	२३	१५ ०३	२३
७ १५	१५ १६	२२	१५ १७	२२	१५ १७	२२	१५ १८	२२	१५ १९	२२	१५ १९	२२	१५ २०	२३	१५ २१	२३	१५ २२	२३	१५ २२	२३	१५ २३	२३	१५ २४	२३	१५ २४	२३	१५ २५	२३	१५ २६	२३
७ २०	१५ ३८	२२	१५ ३९	२३	१५ ४०	२३	१५ ४१	२३	१५ ४१	२३	१५ ४२	२३	१५ ४३	२३	१५ ४४	२३	१५ ४५	२३	१५ ४५	२३	१५ ४६	२३	१५ ४७	२३	१५ ४८	२३	१५ ४९	२३	१५ ४९	२३
७ २५	१६ ०१	२३	१६ ०२	२३	१६ ०३	२३	१६ ०३	२३	१६ ०४	२३	१६ ०५	२३	१६ ०६	२३	१६ ०७	२३	१६ ०८	२३	१६ ०८	२३	१६ ०९	२३	१६ १०	२३	१६ ११	२३	१६ १२	२३	१६ १३	२३
८ ००	१६ २४	२३	१६ २५	२३	१६ २५	२३	१६ २६	२३	१६ २७	२३	१६ २८	२३	१६ २९	२३	१६ ३०	२३	१६ ३१	२३	१६ ३१	२३	१६ ३२	२३	१६ ३३	२३	१६ ३४	२३	१६ ३५	२३	१६ ३६	२३
८ ०५	१६ ४६	२३	१६ ४७	२३	१६ ४८	२३	१६ ४९	२३	१६ ५०	२३	१६ ५१	२३	१६ ५२	२३	१६ ५३	२३	१६ ५४	२३	१६ ५५	२३	१६ ५६	२३	१६ ५७	२३	१६ ५८	२३	१६ ५९	२३	१७ ००	२३
८ १०	१७ ०९	२३	१७ १०	२३	१७ ११	२३	१७ १२	२३	१७ १३	२३	१७ १४	२३	१७ १५	२३	१७ १६	२३	१७ १७	२३	१७ १८	२३	१७ १९	२३	१७ २०	२३	१७ २१	२३	१७ २२	२३	१७ २३	२३
८ १५	१७ ३२	२२	१७ ३३	२२	१७ ३४	२२	१७ ३५	२२	१७ ३६	२२	१७ ३७	२२	१७ ३८	२३	१७ ३९	२३	१७ ४०	२३	१७ ४१	२३	१७ ४२	२३	१७ ४३	२३	१७ ४४	२३	१७ ४५	२३	१७ ४६	२३
८ २०	१७ ५४	२२	१७ ५५	२२	१७ ५६	२२	१७ ५७	२२	१७ ५८	२२	१७ ५९	२२	१८ ००	२२	१८ ०१	२३	१८ ०२	२२	१८ ०३	२३	१८ ०४	२३	१८ ०५	२३	१८ ०६	२३	१८ ०८	२३	१८ ०९	२३
८ २५	१८ १६	२२	१८ १७	२२	१८ १८	२२	१८ १९	२२	१८ २०	२२	१८ २१	२२	१८ २२	२२	१८ २४	२२	१८ २५	२२	१८ २६	२२	१८ २७	२२	१८ २८	२२	१८ २९	२२	१८ ३०	२२	१८ ३१	२२
९ ००	१८ ३८	२२	१८ ३९	२२	१८ ४१	२२	१८ ४१	२२	१८ ४२	२२	१८ ४३	२२	१८ ४४	२२	१८ ४६	२१	१८ ४७	२२	१८ ४८	२२	१८ ४९	२२	१८ ५०	२२	१८ ५१	२२	१८ ५२	२२	१८ ५३	२२
९ ०५	१९ ००	२२	१९ ०१	२१	१९ ०२	२१	१९ ०३	२१	१९ ०४	२१	१९ ०५	२१	१९ ०६	२१	१९ ०७	२१	१९ ०८	२१	१९ ०९	२१	१९ १०	२१	१९ ११	२१	१९ १३	२१	१९ १४	२१	१९ १४	२१
९ १०	१९ २१	२१	१९ २२	२१	१९ २३	२१	१९ २४	२१	१९ २५	२१	१९ २६	२१	१९ २७	२१	१९ २८	२१	१९ २९	२१	१९ ३०	२१	१९ ३१	२१	१९ ३२	२१	१९ ३४	२१	१९ ३५	२०	१९ ३६	२०
९ १५	१९ ४२	२१	१९ ४३	२०	१९ ४४	२०	१९ ४५	२०	१९ ४६	२०	१९ ४७	२०	१९ ४८	२०	१९ ४९	२०	१९ ५०	२०	१९ ५१	२०	१९ ५२	२०	१९ ५३	२०	१९ ५४	२०	१९ ५५	२०	१९ ५६	२०
९ २०	२० ०२	२०	२० ०३	२०	२० ०४	२०	२० ०५	२०	२० ०६	२०	२० ०७	१९	२० ०८	१९	२० ०९	१९	२० १०	१९	२० ११	१९	२० १२	१९	२० १३	१९	२० १४	१९	२० १५	१९	२० १६	१९
९ २५	२० २२	१९	२० २३	१९	२० २४	१९	२० २५	१९	२० २६	१९	२० २६	१९	२० २७	१९	२० २८	१९	२० २९	१९	२० ३०	१९	२० ३१	१९	२० ३२	१९	२० ३३	१९	२० ३४	१९	२० ३५	१८
१० ००	२० ४१	१९	२० ४२	१९	२० ४३	१९	२० ४४	१९	२० ४५	१९	२० ४५	१९	२० ४६	१९	२० ४७	१९	२० ४८	१८	२० ४९	१८	२० ५०	१८	२० ५१	१८	२० ५२	१८	२० ५३	१८	२० ५४	१८
१० ०५	२१ ००	१८	२१ ०१	१८	२१ ०१	१८	२१ ०२	१८	२१ ०३	१८	२१ ०४	१८	२१ ०५	१८	२१ ०६	१८	२१ ०६	१८	२१ ०७	१८	२१ ०८	१८	२१ ९	१८	२१ १०	१७	२१ ११	१७	२१ १२	१७
१० १०	२१ १८	१८	२१ १९	१८	२१ १९	१८	२१ २०	१८	२१ २१	१७	२१ २२	१७	२१ २२	१७	२१ २४	१७	२१ २४	१७	२१ २५	१७	२१ २६	१७	२१ २७	१७	२१ २७	१७	२१ २८	१७	२१ २९	१७
१० १५	२१ ३६	१७	२१ ३६	१७	२१ ३७	१७	२१ ३८	१७	२१ ३८	१७	२१ ३९	१७	२१ ४०	१७	२१ ४१	१७	२१ ४१	१७	२१ ४२	१७	२१ ४३	१६	२१ ४४	१६	२१ ४४	१६	२१ ४५	१६	२१ ४६	१६
१० २०	२१ ५३	१७	२१ ५४	१७	२१ ५४	१७	२१ ५५	१७	२१ ५५	१७	२१ ५६	१७	२१ ५७	१७	२१ ५७	१७	२१ ५८	१६	२१ ५९	१६	२१ ५९	१६	२२१०	१६	२२ १	१६	२२ ०१	१६	२२ ०२	१६
१० २५	२२ १०	१६	२२ ११	१६	२२ ११	१६	२२ ११	१६	२२ १२	१६	२२ १३	१६	२२ १३	१६	२२ १४	१६	२२ १४	१६	२२ १५	१६	२२ १५	१६	२२ १६	१६	२२ १७	१५	२२ १७	१५	२२ १८	१५
११ ००	२२ २६	१६	२२ २७	१६	२२ २७	१६	२२ २८	१६	२२ २८	१६	२२ २९	१६	२२ २९	१६	२२ ३०	१६	२२ ३०	१५	२२ ३१	१५	२२ ३१	१५	२२ ३२	१५	२२ ३२	१५	२२ ३३	१५	२२ ३३	१५
११ ०५	२२ ४२	१६	२२ ४३	१६	२२ ४३	१५	२२ ४४	१५	२२ ४४	१५	२२ ४४	१५	२२ ४५	१५	२२ ४५	१५	२२ ४६	१५	२२ ४६	१५	२२ ४६	१५	२२ ४७	१५	२२ ४७	१५	२२ ४८	१५	२२ ४८	१५
११ १०	२२ ५८	१६	२२ ५९	१५	२२ ५९	१५	२२ ५९	१५	२२ ५९	१५	२३ ००	१५	२३ ००	१५	२३ ००	१५	२३ ०१	१५	२३ ०१	१५	२३ ०१	१५	२३ ०२	१५	२३ ०२	१५	२३ ०३	१५	२३ ०३	१५
११ १५	२३ १४	१५	२३ १४	१५	२३ १४	१५	२३ १५	१५	२३ १५	१५	२३ १५	१५	२३ १५	१५	२३ १६	१५	२३ १६	१५	२३ १६	१५	२३ १६	१५	२३ १७	१५	२३ १७	१४	२३ १७	१४	२३ १७	१४
११ २०	२३ २९	१५	२३ २९	१५	२३ ३०	१५	२३ ३०	१५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२३ ३१	१४	२३ ३१	१४	२३ ३१	१४	२३ ३१	१४	२३ ३२	१४
११ २५	२३ ४५	१५	२३ ४५	१५	२३ ४५	१५	२३ ४५	१५	२३ ४५	१५	२३ ४५	१५	२३ ४५	१५	२३ ४५	१५	२३ ४५	१५	२३ ४५	१५	२३ ४५	१५	२३ ४६	१४	२३ ४६	१४	२३ ४६	१४	२३ ४६	१४
१२ ००	० ००	१५	० ००	१५	० ००	१५	० ००	१५	० ००	१५	० ००		० ००	१५	० ००	१५	० ००	१५	० ००	१४	० ००	१४	० ००	१४	० ००	१४	० ००	१४	० ००	१४

समस्त उत्तर भारत की लग्न सारणियां (भाग ३)

सायन सूर्य या सायन लग्न	अक्षांश (उत्तर) २८°।००'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २८°।३०'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २९°।००'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २९°।३०'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) ३०°।००'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) ३०°।३०'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) ३१°।००'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) ३१°।३०'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) ३२°।००'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) ३२°।३०'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) ३३°।००'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) ३३°।३०'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) ३४°।००'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) ३४°।३०'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) ३५°।००'		अन्तर
रा.अं.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.
० ००	०	००	१४	०	००	१४	०	००	१४	०	००	१४	०	००	१४	०	००	१४	०	००	१४	०	००	१४	०	००	१३	०	००	१३	०	००	१३	०	००	१३	०	००	१३	०	००	१३	०	००	१३
० ०५	०	१४	१४	०	१४	१४	०	१४	१४	०	१४	१४	०	१४	१४	०	१४	१४	०	१४	१४	०	१३	१४	०	१३	१३	०	१३	१३	०	१३	१३	०	१३	१३	०	१३	१३	०	१३	१३	०	१३	१३
० १०	०	२८	१४	०	२८	१४	०	२८	१४	०	२८	१४	०	२८	१४	०	२७	१४	०	२७	१४	०	२७	१४	०	२७	१४	०	२७	१३	०	२६	१३	०	२६	१३	०	२६	१३	०	२६	१३	०	२६	१३
० १५	०	४३	१४	०	४२	१४	०	४२	१४	०	४२	१४	०	४१	१४	०	४१	१४	०	४१	१४	०	४१	१४	०	४०	१४	०	४०	१४	०	४०	१४	०	३९	१३	०	३९	१३	०	३९	१३	०	३८	१३
० २०	०	५७	१५	०	५७	१४	०	५६	१४	०	५६	१४	०	५६	१४	०	५५	१४	०	५५	१४	०	५५	१४	०	५४	१४	०	५४	१४	०	५३	१४	०	५३	१४	०	५३	१४	०	५२	१४	०	५२	१३
० २५	०१	१२	१५	१	११	१५	१	११	१५	१	१०	१५	१	१०	१५	१	०९	१४	१	०९	१४	१	०९	१४	१	०८	१४	१	०८	१४	१	०७	१४	१	०७	१४	१	०६	१४	१	०६	१४	०१	०५	१४
१ ००	१	२७	१५	१	२६	१५	१	२६	१५	१	२५	१५	१	२५	१५	१	२४	१५	१	२४	१५	१	२३	१५	१	२२	१५	१	२२	१४	१	२१	१४	१	२१	१४	१	२०	१४	१	२०	१४	१	१९	१४
१ ०५	१	४२	१६	१	४१	१६	१	४१	१६	१	४०	१६	१	४०	१६	१	३९	१५	१	३८	१५	१	३८	१५	१	३७	१५	१	३६	१५	१	३६	१५	१	३५	१५	१	३४	१५	१	३४	१५	१	३३	१५
१ १०	१	५८	१६	१	५७	१६	१	५७	१६	१	५६	१६	१	५५	१६	१	५४	१६	१	५४	१६	१	५३	१६	१	५२	१६	१	५१	१५	१	५१	१५	१	५०	१५	१	४९	१५	१	४८	१५	१	४८	१५
१ १५	२	१४	१७	२	१३	१७	२	१३	१७	२	१२	१७	२	११	१६	२	१०	१६	२	०९	१६	२	०९	१६	२	०८	१६	२	०७	१६	२	०६	१६	२	०५	१६	२	०४	१६	२	०३	१६	२	०३	१६
१ २०	२	३१	१७	२	३०	१७	२	२९	१७	२	२९	१७	२	२८	१७	२	२७	१७	२	२६	१७	२	२५	१७	२	२४	१७	२	२३	१७	२	२२	१७	२	२१	१७	२	२०	१६	२	१९	१६	२	१८	१६
१ २५	२	४८	१८	२	४७	१८	२	४६	१८	२	४६	१८	२	४५	१८	२	४४	१८	२	४३	१८	२	४२	१८	२	४१	१७	२	४०	१७	२	३९	१७	२	३८	१७	२	३७	१७	२	३६	१७	२	३५	१७
२ ००	३	०६	१९	३	०५	१९	३	०४	१८	३	०३	१८	३	०२	१८	३	०१	१८	३	००	१८	२	५९	१८	२	५८	१८	२	५७	१८	२	५६	१८	२	५५	१८	२	५४	१८	२	५३	१८	२	५२	१८
२ ०५	३	२५	१९	३	२४	१९	३	२३	१९	३	२१	१९	३	२१	१९	३	१९	१९	३	१८	१९	३	१७	१९	३	१६	१९	३	१५	१९	३	१४	१९	३	१३	१९	३	१२	१८	३	११	१८	३	०९	१८
२ १०	३	४४	२०	३	४३	२०	३	४२	२०	३	४०	२०	३	४०	२०	३	३८	२०	३	३७	१९	३	३६	१९	३	३५	१९	३	३४	१९	३	३३	१९	३	३२	१९	३	३०	१९	३	२९	१९	३	२८	१९
२ १५	४	०४	२०	४	०३	२०	४	०१	२०	४	००	२१	३	५९	२०	३	५८	२०	३	५७	२०	३	५६	२०	३	५४	२०	३	५३	२०	३	५२	२०	३	५१	२०	३	५०	२०	३	४८	२०	३	४७	२०
२ २०	४	२४	२१	४	२३	२१	४	२२	२१	४	२१	२१	४	१९	२१	४	१८	२१	४	१७	२१	४	१६	२१	४	१५	२१	४	१३	२१	४	१२	२१	४	११	२१	४	१०	२१	४	०८	२१	४	०७	२१
२ २५	४	४५	२१	४	४४	२१	४	४३	२१	४	४२	२१	४	४०	२१	४	३९	२१	४	३८	२१	४	३७	२१	४	३५	२१	४	३४	२१	४	३३	२१	४	३२	२१	४	३०	२१	४	२९	२१	४	२८	२१
३ ००	५	०७	२२	५	०५	२२	५	०४	२२	५	०३	२२	५	०२	२२	५	०१	२२	५	००	२२	४	५८	२२	४	५७	२२	४	५६	२२	४	५४	२२	४	५३	२२	४	५२	२२	४	५१	२२	४	४९	२२
३ ०५	५	२९	२२	५	२७	२२	५	२६	२२	५	२५	२३	५	२४	२२	५	२३	२२	५	२२	२३	५	२०	२३	५	१९	२३	५	१८	२३	५	१७	२३	५	१५	२३	५	१४	२३	५	१३	२३	५	११	२३
३ १०	५	५१	२३	५	५०	२३	५	४९	२३	५	४८	२३	५	४६	२३	५	४५	२३	५	४४	२३	५	४३	२३	५	४२	२३	५	४१	२३	५	३९	२३	५	३८	२३	५	३७	२३	५	३५	२३	५	३४	२३
३ १५	६	१४	२३	६	१३	२३	६	१२	२३	६	११	२३	६	०९	२३	६	०८	२३	६	०७	२३	६	०६	२३	६	०५	२३	६	०४	२३	६	०२	२३	६	०१	२३	६	००	२३	५	५८	२४	५	५७	२४
३ २०	६	३७	२३	६	३६	२३	६	३५	२३	६	३४	२३	६	३३	२३	६	३२	२३	६	३०	२३	६	२९	२३	६	२८	२४	६	२७	२४	६	२६	२४	६	२४	२४	६	२३	२४	६	२२	२४	६	२१	२४
३ २५	७	००	२३	६	५९	२३	६	५८	२३	६	५७	२३	६	५६	२४	६	५५	२४	६	५४	२४	६	५३	२४	६	५२	२४	६	५१	२४	६	५०	२४	६	४८	२४	६	४७	२४	६	४६	२४	६	४५	२४
४ ००	७	२४	२३	७	२३	२३	७	२२	२३	७	२१	२३	७	२०	२४	७	१९	२४	७	१८	२४	७	१७	२४	७	१६	२४	७	१५	२४	७	१४	२४	७	१२	२४	७	११	२४	७	१०	२४	७	०९	२४
४ ०५	७	४७	२३	७	४६	२३	७	४५	२३	७	४४	२३	७	४३	२४	७	४३	२४	७	४२	२४	७	४१	२४	७	४०	२४	७	३९	२४	७	३८	२४	७	३६	२४	७	३६	२४	७	३५	२४	७	३३	२४
४ १०	८	११	२३	८	१०	२३	८	०९	२३	८	०८	२३	८	०७	२४	८	०६	२४	८	०५	२४	८	०५	२४	८	०४	२४	८	०३	२४	८	०२	२४	८	१	२४	८	००	२४	७	५९	२४	७	५८	२४
४ १५	८	३४	२३	८	३३	२३	८	३२	२३	८	३२	२३	८	३१	२४	८	३०	२४	८	२९	२४	८	२८	२४	८	२८	२४	८	२७	२४	८	२६	२४	८	२५	२४	८	२४	२४	८	२३	२४	८	२२	२४
४ २०	८	५७	२३	८	५७	२३	८	५६	२३	८	५५	२३	८	५४	२४	८	५४	२४	८	५३	२४	८	५२	२४	८	२५	२४	८	५१	२४	८	५१	२४	८	४९	२४	८	४८	२४	८	४८	२४	८	४७	२४
४ २५	९	२०	२३	९	२०	२३	९	१९	२३	९	१९	२३	९	१९	२३	९	१७	२४	९	१७	२४	९	१६	२४	९	१५	२४	९	१५	२४	९	१४	२४	९	१३	२४	९	१३	२४	९	१२	२४	९	११	२४
५ ००	९	४४	२३	९	४३	२३	९	४२	२३	९	४२	२३	९	४१	२३	९	४१	२३	९	४०	२३	९	४०	२४	९	३९	२४	९	३९	२४	९	३८	२४	९	३७	२४	९	३७	२४	९	३६	२४	९	३६	२४
५ ५	१०	०७	२३	१०	०६	२३	१०	०६	२३	१०	०५	२३	१०	०५	२३	१०	०४	२३	१०	०४	२३	१०	०३	२३	१०	३०	२४	१०	०३	२४	१०	०२	२४	१०	२१	२४	१०	०१	२४	१०	००	२४	१०	००	२४
५ १०	१०	२९	२३	१०	२९	२३	१०	२९	२३	१०	२८	२३	१०	२८	२३	१०	२८	२३	१०	२७	२३	१०	२७	२३	१०	२६	२३	१०	२६	२४	१०	२६	२४	१०	२५	२४	१०	२५	२४	१०	२४	२४	१०	२४	२४
५ १५	१०	५२	२३	१०	५२	२३	१०	५२	२३	१०	५१	२३	१०	५१	२३	१०	५१	२३	१०	५०	२३	१०	५०	२३	१०	५०	२३	१०	५०	२४	१०	५९	२४	१०	४९	२४	१०	४९	२४	१०	४८	२४	१०	४८	२४
५ २०	११	१५	२३	११	१५	२३	११	१४	२३	११	१४	२३	११	१४	२३	११	१४	२३	११	१४	२३	११	१३	२३	११	१३	२३	११	१३	२४	११	१३	२४	११	१३	२४	११	१२	२४	११	१२	२४	११	१२	२४
५ २५	११	३७	२३	११	३७	२३	११	३७	२३	११	३७	२३	११	३७	२३	११	३७	२३	११	३७	२३	११	३७	२३	११	३७	२३	११	३७	२३	११	३६	२३	११	३६	२४	११	३६	२४	११	३६	२४	११	३६	२४
६ ०	१२	००	२३	१२	००	२३	१२	००	२३	१२	००	२३	१२	००	२३	१२	००	२३	१२	००	२३	१२	००	२३	१२	००	२३	१२	००	२३	१२	००	२३	१२	००	२४	१२	००	२४	१२	००	२४	१२	००	२४

समस्त उत्तर भारत की लग्न सारणियां (भाग ४)

सायन सूर्य या सायन लग्न	अक्षांश (उत्तर) २८° ।००'	लग्न	अक्षांश (उत्तर) २८° ।३०'	लग्न	अक्षांश (उत्तर) २९° ।००'	लग्न	अक्षांश (उत्तर) २९° ।३०'	लग्न	अक्षांश (उत्तर) ३०° ।००'	लग्न	अक्षांश (उत्तर) ३०° ।३०'	लग्न	अक्षांश (उत्तर) ३१° ।००'	लग्न	अक्षांश (उत्तर) ३१° ।३०'	लग्न	अक्षांश (उत्तर) ३२° ।००'	लग्न	अक्षांश (उत्तर) ३२° ।३०'	लग्न	अक्षांश (उत्तर) ३३° ।००'	लग्न	अक्षांश (उत्तर) ३३° ।३०'	लग्न	अक्षांश (उत्तर) ३४° ।००'	लग्न	अक्षांश (उत्तर) ३४° ।३०'	लग्न	अक्षांश (उत्तर) ३५° ।००'	लग्न
रा.अं.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.
६ ००	१२ ००	२३	१२ ००	२३	१२ ००	२३	१२ ००	२३	१२ ००	२३	१२ ००	२३	१२ ००	२३	१२ ००	२३	१२ ००	२३	१२ ००	२३	१२ ००	२३	१२ ००	२४	१२ ००	२४	१२ ००	२४	१२ ००	२४
६ ०५	१२ २३	२३	१२ २३	२३	१२ २३	२३	१२ २३	२३	१२ २३	२३	१२ २३	२३	१२ २३	२३	१२ २३	२३	१२ २३	२३	१२ २३	२३	१२ २३	२४	१२ २४	२४	१२ २४	२४	१२ २४	२४	१२ २४	२४
६ १०	१२ ४५	२३	१२ ४५	२३	१२ ४५	२३	१२ ४६	२३	१२ ४६	२३	१२ ४६	२३	१२ ४६	२३	१२ ४६	२३	१२ ४७	२३	१२ ४७	२३	१२ ४७	२४	१२ ४७	२४	१२ ४७	२४	१२ ४८	२४	१२ ४८	२४
६ १५	१३ ०८	२३	१३ ०८	२३	१३ ०८	२३	१३ ०९	२३	१३ ०९	२३	१३ ०९	२३	१३ ०९	२३	१३ १०	२३	१३ १०	२३	१३ १०	२३	१३ ११	२४	१३ ११	२४	१३ ११	२४	१३ १२	२४	१३ १२	२४
६ २०	१३ ३१	२३	१३ ३१	२३	१३ ३१	२३	१३ ३२	२३	१३ ३२	२३	१३ ३२	२३	१३ ३३	२३	१३ ३३	२३	१३ ३३	२३	१३ ३४	२४	१३ ३४	२४	१३ ३५	२४	१३ ३५	२४	१३ ३६	२४	१३ ३६	२४
६ २५	१३ ५३	२३	१३ ५४	२३	१३ ५४	२३	१३ ५५	२३	१३ ५५	२३	१३ ५६	२३	१३ ५६	२३	१३ ५७	२३	१३ ५७	२४	१३ ५७	२४	१३ ५८	२४	१३ ५९	२४	१३ ५९	२४	१४ ००	२४	१४ ००	२४
७ ००	१४ १६	२३	१४ १७	२३	१४ १७	२३	१४ १८	२३	१४ १८	२३	१४ १९	२३	१४ २०	२३	१४ २०	२४	१४ २१	२४	१४ २१	२४	१४ २२	२४	१४ २३	२४	१४ २३	२४	१४ २४	२४	१४ २४	२४
७ ०५	१४ ३९	२३	१४ ४०	२३	१४ ४१	२३	१४ ४१	२३	१४ ४२	२३	१४ ४३	२३	१४ ४३	२४	१४ ४४	२४	१४ ४५	२४	१४ ४५	२४	१४ ४६	२४	१४ ४७	२४	१४ ४७	२४	१४ ४८	२४	१४ ४९	२४
७ १०	१५ ०३	२३	१५ ०३	२३	१५ ०४	२३	१५ ०५	२३	१५ ०५	२४	१५ ०६	२४	१५ ०७	२४	१५ ०८	२४	१५ ०८	२४	१५ ०९	२४	१५ १०	२४	१५ ११	२४	१५ ११	२४	१५ १२	२४	१५ १३	२४
७ १५	१५ २६	२३	१५ २७	२३	१५ २७	२४	१५ २८	२४	१५ २९	२४	१५ ३०	२४	१५ ३१	२४	१५ ३२	२४	१५ ३२	२४	१५ ३३	२४	१५ ३४	२४	१५ ३५	२४	१५ ३६	२५	१५ ३६	२५	१५ ३७	२५
७ २०	१५ ४९	२३	१५ ५०	२३	१५ ५१	२४	१५ ५२	२४	१५ ५३	२४	१५ ५४	२४	१५ ५५	२४	१५ ५६	२४	१५ ५६	२४	१५ ५७	२४	१५ ५८	२४	१५ ५९	२४	१६ ०१	२४	१६ ०१	२४	१६ ०२	२४
७ २५	१६ १३	२३	१६ १४	२३	१६ १५	२४	१६ १६	२४	१६ १६	२४	१६ १७	२४	१६ १८	२४	१६ १९	२४	१६ २०	२४	१६ २१	२४	१६ २२	२४	१६ २३	२४	१६ २४	२४	१६ २५	२४	१६ २६	२४
८ ००	१६ ३६	२३	१६ ३७	२३	१६ ३८	२४	१६ ३९	२४	१६ ४०	२४	१६ ४१	२४	१६ ४२	२४	१६ ४३	२४	१६ ४४	२४	१६ ४५	२४	१६ ४६	२४	१६ ४७	२४	१६ ४९	२४	१६ ५०	२४	१६ ५१	२४
८ ०५	१७ ००	२३	१७ ०१	२३	१७ ०२	२३	१७ ०३	२३	१७ ०४	२४	१७ ०५	२४	१७ ०६	२४	१७ ०७	२४	१७ ०८	२४	१७ ०९	२४	१७ १०	२४	१७ ११	२४	१७ १३	२४	१७ १४	२४	१७ १५	२४
८ १०	१७ २३	२३	१७ २४	२३	१७ २५	२३	१७ २६	२३	१७ २७	२३	१७ २८	२३	१७ २९	२३	१७ ३१	२३	१७ ३२	२३	१७ ३३	२३	१७ ३४	२३	१७ ३५	२४	१७ ३७	२४	१७ ३८	२४	१७ ३९	२४
८ १५	१७ ४६	२३	१७ ४७	२३	१७ ४८	२३	१७ ४९	२३	१७ ५०	२३	१७ ५२	२३	१७ ५३	२३	१७ ५४	२३	१७ ५५	२३	१७ ५६	२३	१७ ५८	२३	१७ ५९	२३	१८ ००	२३	१८ ०१	२३	१८ ०३	२३
८ २०	१८ ०९	२२	१८ १०	२२	१८ ११	२२	१८ १२	२२	१८ १४	२२	१८ १५	२२	१८ १६	२३	१८ १७	२३	१८ १८	२३	१८ १९	२३	१८ २१	२३	१८ २२	२३	१८ २३	२३	१८ २४	२३	१८ २६	२३
८ २५	१८ ३१	२२	१८ ३२	२२	१८ ३४	२२	१८ ३५	२२	१८ ३६	२२	१८ ३७	२२	१८ ३८	२२	१८ ४०	२२	१८ ४१	२३	१८ ४२	२२	१८ ४३	२२	१८ ४५	२२	१८ ४६	२२	१८ ४७	२२	१८ ४९	२२
९ ००	१८ ५३	२२	१८ ५४	२२	१८ ५६	२२	१८ ५७	२२	१८ ५८	२२	१८ ५९	२२	१९ ००	२२	१९ ०२	२२	१९ ०३	२२	१९ ०४	२२	१९ ०५	२२	१९ ०७	२२	१९ ०८	२१	१९ ०९	२१	१९ ११	२१
९ ०५	१९ १५	२१	१९ १६	२१	१९ १७	२१	१९ १८	२१	१९ २०	२१	१९ २१	२१	१९ २२	२१	१९ २३	२१	१९ २४	२१	१९ २६	२१	१९ २७	२१	१९ २८	२१	१९ २९	२१	१९ ३१	२१	१९ ३२	२१
९ १०	१९ ३६	२०	१९ ३७	२०	१९ ३८	२०	१९ ३९	२०	१९ ४०	२०	१९ ४१	२०	१९ ४३	२०	१९ ४४	२०	१९ ४५	२०	१९ ४७	२०	१९ ४८	२०	१९ ४९	२०	१९ ५०	२०	१९ ५२	२०	१९ ५३	२०
९ १५	१९ ५६	२०	१९ ५७	२०	१९ ५८	२०	१९ ५९	२०	२० ०१	२०	२० ०२	२०	२० ०३	२०	२० ०४	२०	२० ०५	२०	२० ०७	१९	२० ०८	१९	२० ०९	१९	२० १०	१९	२० १२	१९	२० १३	१९
९ २०	२० १६	१९	२० १७	१९	२० १८	१९	२० १९	१९	२० २०	१९	२० २१	१९	२० २३	१९	२० २४	१९	२० २५	१९	२० २६	१९	२० २७	१९	२० २८	१९	२० ३०	१९	२० ३१	१९	२० ३२	१९
९ २५	२० ३५	१८	२० ३६	१८	२० ३७	१८	२० ३८	१८	२० ३९	१८	२० ४०	१८	२० ४१	१८	२० ४३	१८	२० ४४	१८	२० ४५	१८	२० ४६	१८	२० ४७	१८	२० ४८	१८	२० ४९	१८	२० ५१	१८
१०००	२० ५४	१८	२० ५५	१८	२० ५६	१८	२० ५६	१८	२० ५८	१८	२० ५९	१८	२१ ००	१८	२१ १	१८	२१ ०२	१७	२१ ०३	१७	२१ ०४	१७	२१ ०५	१७	२१ ०६	१७	२१ ०७	१७	२१ ०८	१७
१० ५	२१ १२	१८	२१ १३	१७	२१ १३	१८	२१ १४	१७	२१ १५	१७	२१ १६	१७	२१ १७	१७	२१ १८	१७	२१ १९	१७	२१ २०	१७	२१ २१	१७	२१ २२	१७	२१ २३	१६	२१ २४	१६	२१ २५	१६
१०१०	२१ २९	१७	२१ ३०	१७	२१ ३१	१७	२१ ३१	१७	२१ ३२	१६	२१ ३३	१६	२१ ३४	१६	२१ ३५	१७	२१ ३६	१६	२१ ३७	१६	२१ ३८	१६	२१ ३९	१६	२१ ४०	१६	२१ ४१	१६	२१ ४२	१६
१०१५	२१ ४६	१६	२१ ४६	१६	२१ ४७	१६	२१ ४८	१६	२१ ४९	१६	२१ ४९	१६	२१ ५०	१६	२१ ५१	१६	२१ ५२	१६	२१ ५३	१५	२१ ५४	१६	२१ ५५	१५	२१ ५५	१५	२१ ५६	१५	२१ ५७	१५
१०२०	२२ ०२	१६	२२ ०३	१६	२२ ०३	१६	२२ ४	१६	२२ ०५	१५	२२ ०५	१५	२२ ०६	१५	२२ ०७	१६	२२ ०८	१५	२२ ०८	१५	२२ ०९	१५	२२ १०	१५	२२ ११	१५	२२ ११	१५	२२ १२	१४
१०२५	२२ १८	१५	२२ १९	१५	२२ १९	१५	२२ २०	१५	२२ २०	१५	२२ २१	१५	२२ २१	१५	२२ २२	१५	२२ २३	१५	२२ २३	१५	२२ २४	१४	२२ २५	१४	२२ २५	१४	२२ २६	१४	२२ २७	१४
११००	२२ ३३	१५	२२ ३४	१५	२२ ३४	१५	२२ ३५	१५	२२ ३५	१५	२२ ३६	१५	२२ ३६	१५	२२ ३७	१५	२२ ३७	१४	२२ ३८	१४	२२ ३९	१४	२२ ३९	१४	२२ ४०	१४	२२ ४०	१४	२२ ४१	१४
११ ५	२२ ४८	१५	२२ ४९	१५	२२ ४९	१५	२२ ४९	१५	२२ ५०	१४	२२ ५०	१४	२२ ५१	१४	२२ ५२	१४	२२ ५२	१४	२२ ५२	१४	२२ ५३	१४	२२ ५३	१४	२२ ५४	१४	२२ ५४	१४	२२ ५५	१३
१११०	२३ ०३	१५	२३ ३	१५	२३ ०४	१४	२३ ०४	१४	२३ ०४	१४	२३ ०५	१४	२३ ०५	१४	२३ ०६	१४	२३ ०६	१४	२३ ०६	१४	२३ ०७	१४	२३ ०७	१४	२३ ०७	१३	२३ ०८	१३	२३ ०८	१३
१११५	२३ १७	१४	२३ १८	१४	२३ १८	१४	२३ १८	१४	२३ १८	१४	२३ १९	१४	२३ १९	१४	२३ १९	१४	२३ २०	१४	२३ २०	१४	२३ २०	१३	२३ २१	१३	२३ २१	१३	२३ २१	१३	२३ २१	१३
११२०	२३ ३२	१४	२३ ३२	१४	२३ ३२	१४	२३ ३२	१४	२३ ३२	१४	२३ ३३	१४	२३ ३३	१४	२३ ३३	१४	२३ ३३	१४	२३ ३३	१४	२३ ३४	१३	२३ ३४	१३	२३ ३४	१३	२३ ३४	१३	२३ ३४	१३
११२५	२३ ४६	१४	२३ ४६	१४	२३ ४६	१४	२३ ४६	१४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१३	२३ ४७	१३	२३ ४७	१३	२३ ४७	१३	२३ ४७	१३
१२ ०	० ००	१४	० ००	१४	० ००	१४	० ००	१४	० ००	१४	० ००	१४	० ००	१४	० ००	१४	० ००	१३	० ००	१३	० ००	१३	० ००	१३	० ००	१३	० ००	१३	० ००	१३

महर्षि-पराशरोक्त विंशोत्तरी महादशान्तर्दशा ज्ञान-चक्र

सूर्यदशा वर्ष ६ एक घड़ी में ३६ दिन				चंद्र दशा वर्ष १० एक घड़ी में ६० दिन				भौमदशा वर्ष ७ एक घड़ी में ४२ दिन				राहुदशा वर्ष १८ एक घड़ी में १०८ दिन				गुरु दशा वर्ष १६ एक घड़ी में ९६ दिन				शनि दशा वर्ष १९ एक घड़ी में ११४ दिन				बुध दशा वर्ष १७ एक घड़ी में १०२ दिन				केतुदशा वर्ष ७ एक घड़ी में ४२ दिन				शुक्रदशा वर्ष २० एक घड़ी में १२० दिन			
कृ. उ. फा. उ. षा.				रो. ह. श्रवण				मृ. चि. ध.				आर्द्रा स्वा. श.				पुन. वि. पू. भा.				पुष्य अनु. उ. भा				आश्ले. ज्ये. रे.				म. मू. अश्वि.				पू. फा. पूषा. भ.			
तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
र	०	३	१८	चं.	०	१०	०	मं.	०	४	२७	रा.	२	८	१२	बृ.	२	१	१८	श.	३	०	३	बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
चं.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	०	१८	बृ.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९	के	०	११	२७	शु.	१	२	०	र.	१	०	०
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	बृ.	०	११	६	श.	२	१०	६	बु.	२	३	६	के.	१	१	९	शु.	२	१०	०	र.	०	४	६	च.	१	८	०
रा.	०	१०	२४	बृ.	१	४	०	श.	१	१	९	बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०	र.	०	१०	६	चं.	०	७	०	म.	१	२	०
वृ.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७	के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	र.	०	११	१२	चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा.	३	०	०
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७	शु.	३	०	०	र.	०	९	१८	चं.	१	७	०	मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	बृ.	२	८	०
वु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०	र.	०	१०	२४	चं.	१	४	०	मं.	१	१	९	रा.	२	६	१८	बृ.	०	११	६	श.	३	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	र.	०	४	६	चं.	१	६	०	मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६	बृ.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	०
शु.	१	०	०	र.	०	६	०	चं.	०	७	०	मं.	१	०	१८	रा.	२	४	२४	बृ.	२	६	१२	श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

शिवोक्त योगिनी-दशाऽन्तर्दशा ज्ञानार्थ चक्र

मंगला व. १			पिंगला व. २			धान्या व. ३			भ्रामरी व. ४			भद्रा व. ५			उल्का व. ६			सिद्धा व. ७			संकटा व. ८			दशा तथा वर्ष
चन्द्र			सूर्य			गुरु			मंगल			बुध			शनि			शुक्र			केतु			दशेश ग्रहा
आर्द्रा चि. श्र.			पुन. स्वा. ध.			पुष्य. वि.श.			आश्ले. अनु.पू.भा.			भ.म.ज्ये.उभा			कृ. पू. फा. मू.रे.			रो.उ.फा.पू.षा.			मृ. ह. उ.षा			जन्म नक्षत्र
मं.	०	१०	पिं.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०	भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०	अन्तर्दशा के मास, दिन।
पिं.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०	उ.	१०	०	सि.	१४	०	सं.	१८	२०	म.	२	२०	
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	भ.	५	०	उ	८	०	सि.	११	२०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पि	५	१०	
भ्रा.	१	१०	भ	३	१०	उ	६	०	सि.	९	१०	सं	१३	१०	मं.	२		पिं.	४	२०	धा.	८	०	
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि.	७	०	स.	१०	२०	मं.	१	२०	पिं.	४	०	धा.	७	०	भ्रा.	१०	२०	
उ.	२	०	सि.	४	२०	सं.	८	०	मं.	१	१०	पिं.	३	१०	धा.	६	०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०	
सि.	२	१०	सं	५	१०	मं.	१	०	पिं.	२	२०	धा.	५	०	भ्रा.	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०	
सं.	२	२०	मं.	०	२०	पिं.	२	०	धा.	४	०	भ्रा	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०	

दशा का भुक्तभोग्य

गत नक्षत्र की घट्यादि को ६० में से घटाकर इष्ट घटी पल जोड़ने से भयात होता है। ६० में से घटाए हुए अंकों में प्रवेश नक्षत्र के घट्यादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणा कर पल बना लें। भयात के पलों को दशा के वर्षों से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध अंक वर्ष, फिर शेषांक को १२ से गुणा करें, भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध मास, फिर शेषांक को ३० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध दिन, फिर शेषांक को ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें. लब्धाँक घटी, फिर शेषांक को ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें, लब्ध पल होगें। यह वर्षादि दशा का भुक्त होता है। इसको दशा के वर्षों में से घटाने पर भोग्य दशा होती

वर्षकुंडली में तनु आदि भावों में स्थित ग्रहों का फल

ग्रह	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य	चिन्ता	नृप भी:	धनलाभ:	हानि:	कष्टम्	शत्रुनाश	पीड़ा	कष्टम्	धर्म नाश	सुखम्	धनला.	पीड़ा
चन्द्र	पीड़ा	धनलाभ:	हर्ष	शत्रुनाश	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दु:खम्	भाग्योदय:	विजय	धनला.	व्यय
भौम	व्रज:	धननाश:	जय:	व्यसन	दुर्गति:	शत्रुनाश	स्त्रीकष्टम्	पीड़ा	पुण्योदय:	राज्यला.	धनला.	विरोध
बुध	सौख्यम्	धनलाभ:	सुखम्	द्रव्यलाभ	पुत्रलाभ	कलह	धनलाभ	व्यग्रता	सुखम्	मानला.	सुखला.	विग्रह
गुरु	सुखम्	धनलाभ:	जय:	वाहन ला.	पुत्रलाभ	कष्टम्	सुखम्	रोग	धर्मलाभ	राज्यला.	धनला.	शोक
शुक्र	मानप्रा.	धनप्राप्ति	कीर्तिला	सुखलाभ	धनलाभ:	शत्रुभीति	स्त्रीसुखम्	कष्टम्	धर्मोदय	मानला.	धनला.	व्यय
शनि	वातार्ति	पीड़ा	धनलाभ:	दु:खम्	पुत्रप्री.	जय:	स्त्रीकष्टम्	रोग	भाग्यहा.	धनहा.	धनला.	चिंता
राहु	शिरोर्ति	राजभी	सुखम्	दु:खम्	बुद्धिनाश	शत्रुनाश	रोगभी:	कष्टम्	हानि	विजय.	सुलाभ.	व्याधि
केतु	चिन्ता	क्लेश	आरोग्य	राजभी:	दुर्बुद्धि	सुखम्	क्लेश:	पीड़ा	भाग्यना.	धनला.	लाभ	शोक
मुन्था	सुखम	यश,अर्थ	पुष्टि	दुखम्:	सुखाप्ति:	कष्टम्	व्यसनम्	दु:खम्	भाग्योदय	राज्यप्रा.	लाभ	कष्टम्

सूर्यसिद्धान्तीय वर्षप्रवेश-सारणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
घटी	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५
घटी	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

सूचना- वेधसिद्धि वर्षमान सूर्य सिद्धान्तीय वर्षमान से ८.५ पल कम है। अत: सूक्ष्म-वर्ष प्रवेश-कालिक इष्ट निकालने के लिए गताब्दों को ८.५ से गुणा करके पलात्मक फल को सारणी से साधित इष्ट में से घटा देना चाहिए। यही सूक्ष्म-वर्ष मानानुसारी इष्ट होगा, चाहो तो इस इष्ट पर भी फल अनुभव करें।

वर्षफल साधन प्रकार:- (१.)अभीष्ट संवत् (जिस संवत् का वर्ष निकालना हो) में से जन्म समय का संवत् हीन करने से जो शेष बचे वह गतवर्ष, (गताब्द) जाने। स्मरण रहे, कि-मेषार्क प्रवेश के प्रथम और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अनन्तर का यदि वर्ष करना हो तो पिछले संवत् से करना (**वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्र सौरात्**)। इस प्रकार गताब्द निकालकर उसी गताब्द अंक के नीचे सारणी में जो वारादि अंक हैं उनमें जन्म का वार, इष्ट घड़ी पल जोड़ने से वर्ष प्रवेश कालिक वारादि इष्ट ज्ञात हो जाता है। यदि नीचे घटयादि अंक साठ से अधिक हों तो ६० का भाग/देने से लब्धांक को ऊपर युक्त करते जाना। ऊपर से वारांक में सात से अधिक आजाय तो सात का भाग देकर लब्ध त्याग देने से वर्षप्रवेश समय का स्पष्ट वारादि इष्ट होगा। (२.) जिस दिन जन्म समय के स्पष्ट सूर्य तुल्य वर्ष में सूर्य मिले उसी दिन वर्ष प्रवेश जानना। प्रविष्टों के अनुसार कभी-कभी बार नहीं मिलता। वहाँ पर बार को ठीक जाने। इस इष्ट के अनुसार स्वदेशीय लग्न सारणी से लग्न साधन करके वर्ष कुण्डली लगाना। **मुन्थानयनप्रकार-** गताब्द संख्या में जन्म लग्न जोड़कर उसमें १२ का भाग देना जो शेष बचे वह मुन्था जानना। यह मुन्था प्रतिदिन पांच कला चलती है।

मुद्दा दशा- गत वर्ष में जन्म नक्षत्र जोड़कर उसमें दो घटायें, ९ का भाग देने से जो शेष बचे सो दशा जाननी १ बचे तो सूर्य, २ से चन्द्रमा, ३ से मंगल, ४ से राहु, ५ से गुरु, ६ से शनि, ७ से बुध, ८से केतु, ९ से शुक्र की दशा जानें।

दशा दिनादि- सूर्य के १८ दिन, चन्द्रमा के ३०, मंगल २१,राहु ५४, गुरु ४८, शनि ५७, बुध ५१, केतु २१, शुक्र ६०,यह दशा के दिन हैं।

हर्ष स्थान बल- सूर्य वर्ष लग्रन से ९ चन्द्रमा ३, मंगल ६, बुध १, गुरु ११वें, शुक्र ५वें, शनि. १२वें स्थान में हो तो ५ हर्ष बल देते हैं।

स्वोच्च बल- सू. १।५ च. २।४, मं. १।८।१०, बु. ३।६, गुरु. ९।१२।४, शु. २।७।१२, श. १०।११।७, इन स्थानों में ५ बल देते हैं। पुरुष[illegible] २।१।२।३।७।८।९ और पुरुष ग्रह (सू. मं. बृ.) ४।५।६।१०।११।१२वें स्थानों में ५ बल देते हैं। **दिनरात्रि बल-** दिन के वर्षेष्ट में पुरुषग्रह ५ बल देते हैं और रात्रि के इष्ट में स्त्रीग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
सू.	शु.	श.	शु.	गु.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	बृ.	चं.	दिनलग्नपति
बृ.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	गु.	चं.	रात्रिलग्नपति

वर्ष में दृष्टि ज्ञान और फल

वर्ष में जो ग्रह जिस भाव में पडा हो उस भाव से पांचवे ९वें भाग को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। फल - कार्य में शीघ्र सफलता, सुख, प्रेम, लाभ ओर जिन मनुष्यों के साथ पहले शत्रुता होती है, उनसे प्रेम होता है। तीसरे, ग्यारहवें गुप्त मित्र दृष्टि से देखता है। कार्य कठिनता से एंव गुप्त भाव से सफल हो, पहले सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि होती है। फल- शत्रुता उत्पन्न करे, मित्र से बैर, धन हानि, बनते काम को बिगाडना आदि फल होते है। ४-१० गुप्तशत्रु दृष्टि से देखते है। फल - कार्य बडी कठिनता से सफल हो, गुप्तरूप से शत्रु भी उत्पन्न होते हैं।

अथ वर्षेश निर्णय :- जन्म लग्नेश १, वर्ष लग्नेश २, मुन्थेश ३ त्रैराशीश ४ समयेश ५ (दिन में वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य जिसे राशि पर हो उस राशि का स्वामी और रात्रि में हो तो चन्द्रराशि का स्वामी) इन पांचों अधिकारियों में से जो सबसे बलवान हो और लग्न को देखेंवह वर्षेश होगा,। यदि पाँचों में से कोई भी लग्न को न देखता हो तो उन में से अधिक बलवान हो वही वर्षवेश्वर होगा। कई ग्रहों का बल समान हो तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि हो वह बल. दृष्टि. अधिकार यह तीनों समान हो तो मुन्थेश ही वर्षेश हो। यदि चन्द्रमा वर्षेश प्राप्त हो तो जिससे वह इत्थशाल करे या जिसकी राशि में बैठा हो वही वर्षेश हो ॥ फल - वर्षेश ६।८।१२ व अस्तंगत हीन बली हो तो वर्ष में दु:ख शोक, चिन्ता, भय विशेष होगा। यदि बलिष्ठ होकर शुभ स्थान में सुयोग के साथ बैठा हो तो वर्ष में सुखैश्वर्य की वृद्धि हो।

वर्ष में तबदीली का योग- वर्ष कुण्डली में लग्नेश - तृतीयेश वा चतर्थुश-नवमेश एक घर में हो या एक दूसरे को मित्र दृष्टि से देखें तो उस वर्ष तबदीली होगी। अगर वर्ष- लग्नेश [illegible] तो भी तबदीली होगी।

सूक्ष्म, शुद्ध वर्षमान के अनुसार वर्षप्रवेश काल

वेध द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि सूर्यसिद्धान्तीय वर्षमान वास्तविक (शुद्ध) वर्षमान से ३½-मिनट अधिक है। शुद्ध वर्षफल बनाने के लिए सूक्ष्म वर्षप्रवेशकाल का होना आवश्यक है। हम यहां "सूक्ष्म वर्ष-प्रवेश-सारणी" दे रहे हैं। जो दैवज्ञ वर्षफल के लिए सूक्ष्म वर्षप्रवेशकाल जानना चाहते हैं, उन्हें इसी सारणी का प्रयोग करना चाहिए ।

इस सारणी में घं.मि. का प्रयोग है, अत: इससे वर्षप्रवेशकाल जानने के लिए जातक के जन्म का स्टैं.टा. ही यहां प्रयोग में लाना होगा। जैसे- मान लीजिए किसी व्यक्ति के दसवें वर्ष का प्रवेशकाल जानना है। उस व्यक्ति के जन्म का वार चन्द्र और जन्मकाल (भा.स्टैं. टा.) ८ घं. २० मि. (प्रात:) है। उसके वारादि जन्मकाल (२ वा.८घं.२० मि.)में सारणी से गताब्द ९ द्वारा प्राप्त वारादि काल ४ वा. ७घं. २२ मि. जोड़ने पर ६ वा. १५ घं. ४२ मि. मिले। इसका अर्थ हुआ कि इस व्यक्ति के दसवें वर्ष का प्रवेश शुक्रवार को १५ घं. ४२ मि. (भा.स्टैं.टा.) पर होगा।

ध्यान रहे- इस सारणी के प्रयोग से प्राप्त वार रात्रि के १२ बजे बदलने वाला होगा। अत: यहां प्रयोग में लाया जाने वाला जन्मकालिक वार भी इसी प्रकार का होना चाहिए ।

सूक्ष्म वर्ष प्रवेश सारणी

गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.
१	१/६/९	१३	२/७/५९	२५	३/९/४९	३७	४/११/३९	४९	५/१३/२९	६१	६/१५/१९	७३	०/१७/९	८५	१/१८/५९	९७	२/२०/४९	१०९	३/२२/३९
२	२/१२/१८	१४	३/१४/८	२६	४/१५/५८	३८	५/१७/४८	५०	६/१९/३८	६२	०/२१/२८	७४	१/२३/१८	८६	३/१/८	९८	४/२/५८	११०	५/४/४८
३	३/१८/२७	१५	४/२०/१७	२७	५/२२/७	३९	६/२३/५७	५१	१/१/४७	६३	२/३/३७	७५	३/५/२७	८७	४/७/१७	९९	५/९/७	१११	६/१०/५७
४	५/०/३७	१६	६/२/२७	२८	०/४/१६	४०	१/६/६	५२	२/७/५६	६४	३/९/४६	७६	४/११/३६	८८	५/१३/२६	१००	६/१५/१६	११२	०/१७/६
५	६/६/४६	१७	०/८/३६	२९	१/१०/२६	४१	२/१२/१६	५३	३/१४/६	६५	४/१५/५६	७७	५/१७/४५	८९	६/१९/३५	१०१	०/२१/२५	११३	१/२३/१५
६	०/१२/५५	१८	१/१४/४५	३०	२/१६/३५	४२	३/१८/२५	५४	४/२०/१५	६६	५/२२/५	७८	६/२३/५५	९०	१/१/४५	१०२	२/३/३४	११४	३/५/२४
७	१/१९/४	१९	२/२०/५४	३१	३/२२/४४	४३	५/०/३४	५५	६/२/२४	६७	०/४/१४	७९	१/६/४	९१	२/७/५४	१०३	३/९/४४	११५	४/११/३४
८	३/१/१३	२०	४/३/३	३२	५/४/५३	४४	६/६/४३	५६	०/८/३३	६८	१/१०/२३	८०	२/१२/१३	९२	३/१४/३	१०४	४/१५/५३	११६	५/१७/४३
९	४/७/२२	२१	५/९/१२	३३	६/११/२	४५	०/१२/५२	५७	१/१४/४२	६९	२/१६/३२	८१	३/१८/२२	९३	४/२०/१२	१०५	५/२२/२	११७	६/२३/५२
१०	५/१३/३२	२२	६/१५/२२	३४	०/१७/११	४६	१/१९/१	५८	२/२०/५१	७०	३/२२/४१	८२	५/०/३१	९४	६/२/२१	१०६	०/४/११	११८	१/६/१
११	६/१९/४१	२३	०/२१/३१	३५	१/२३/२१	४७	३/१/११	५९	४/३/०१	७१	५/४/५०	८३	६/६/४०	९५	०/८/३०	१०७	१/१०/२०	११९	२/१२/१०
१२	१/१/५०	२४	२/३/४०	३६	३/५/३०	४८	४/७/२०	६०	५/९/१०	७२	६/११/०	८४	०/१२/५०	९६	१/१४/४०	१०८	२/१६/२९	१२०	३/१८/१९

-वर्षप्रवेश का लग्न किस स्थान का होना चाहिए।

जिस प्रकार जातक का जन्म जिस स्थान पर होता है उसी स्थान के अक्षांश-रेखांशानुसार ही लग्न का निर्णय किया जाता है, ठीक उसी प्रकार वर्षप्रवेश के समय जातक जिस स्थान पर हो उसी स्थान के अक्षांश -रेखांशानुसार ही वर्षप्रवेश का लग्न होना चाहिए, क्योंकि वर्ष प्रवेश भी जातक का एक 'उपजन्म' ही है। इस प्रकार न्यूयार्क (अमेरिका) में जन्म लेने वाला जातक यदि अपने किसी वर्ष के प्रवेश के समय दिल्ली (भारत) में मौजूद है तो उसके उस वर्ष का प्रवेशकालीन लग्न दिल्ली के अक्षांश-रेखांशानुसार ही लगाना चाहिए । इसी तरह यदि दिल्ली में जन्म लेने वाला जातक वर्षप्रवेश के समय न्यूयार्क में हो तो उसके उस वर्ष का प्रवेशकालीन लग्न न्यूयार्क के अक्षांश-रेखांशानुसार ही होना चाहिए । क्योंकि प्राचीन काल में अधिकतर लोग अपने जन्मस्थान को छोड़कर बहुत कम दूसरे स्थान पर जाते थे, अत: ज्योतिषी लोगों में वर्षप्रवेश के लग्न को जन्मस्थान से ही जोड़ने की परम्परा बन गई, जो तर्कसंगत नहीं है ।

इस विषय को स्पष्टता से समझने के लिए 'सं २०५२ वि. के '''श्री मार्त्तण्ड पंचांग'' में पृ. ४१-४२ पर छपा मेरा लेख ''**वर्षप्रवेश का लग्न किस स्थान का होना चाहिए?**'' पढ़ें।

मास प्रवेशकाल

भिन्न भिन्न राशियों में संचार करता हुआ सूर्य जब-जब जातक के जन्म-कालिक स्पष्ट सूर्य की अंश, कला, विकलाओं के तुल्य अंश,कला, विकलाओं पर आता है तब-तब जातक के मासों का प्रारम्भ (मास प्रवेश)होता है । उदाहरणार्थ- यदि जातक का जन्मकालिक स्पष्ट सूर्य २ रा. १० अं. २५ क. ४० वि. है, तो जब जब वह (सूर्य) जातक की आयु के विभिन्न वर्षों मे मेष आदि राशियों के १० अं. २५ क. ४० वि. पर पहुँचेगा, तब -तब जातक के तत्तद् वर्षों के मासों का प्रारम्भ माना जाएगा। सूर्य अमुक राशि के अमुक अं.क. वि. पर कब पहुँचेगा-इसका निर्णय सूर्य की मास-प्रवेश वाले दिन की गति और उस दिन के पंचांगस्थ दैनिक सूर्य तथा मास-प्रवेशकालिक सूर्य के अन्तर से त्रैराशिक द्वारा किया जा सकता है । (इसके लिए सं. २०५० वि. के ''मार्त्तण्ड पंचांग'' में पृष्ठ ४१ पर दिया गया मेरा लेख ''**स्पष्टमान से मास प्रवेश काल**'' पढ़ें।)

— प्रियव्रत शर्मा

ग्रहशील-चक्र

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	
३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	०	३।१०	३।१०	ग्रहाणां एकपाददृष्टिः
५।९	५।९	५।९	५।९	०	५।९	५।९	५।९	५।९	द्विपाददृष्टि
४।८	४।८	०	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	त्रिपाददृष्टि
७	७	४।७।८	७	५।७।९	७	३।७।१०	७	७	सम्पूर्ण दृष्टि
चं.मं. गु.	र. बु.	र. बृ. चं.	र. रा. शु.	र. चं. मं.	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श.शु.	बु.	मित्र-ग्रहाः
बु.	मं.श. गु.शु.	शु. श.	मं. गु. श.	रा. श.	मं. गु.	गु.	गु.	०	समग्रहाः
श. रा. शु.	रा.	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं.	र. चं. मं.	०	शत्रुग्रहाः
मेष	वृष	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला	मिथुन	धनु	उच्चराशयः
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५	परमोच्चांशाः
तुला	वृश्चिक	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष	धनु.	मिथुन	नीचराशयः
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५	नीचांशाः
सिंह	कर्क	मे. वृश्चि.	मि. कं.	ध. मी.	वृष, तुला	म. कुं.	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर	मूलत्रिकोण
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद	वर्ण
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पु.स्त्री.नपुंसक
मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैर्ऋत्य	नैर्ऋत्य	दिशा
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य	लोह	लोह	लोह	धातु
चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजंगपद	अपद	अपद	पाद
उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
सत्व	सत्व	तम	रज	सत्व	रज	तम	तम	तम	गुण
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	पक्षी, स्थिर	चर	पक्षी	चरादि
तिक्त	क्षार	कटु	सर्व रस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
पशु	जलभु.	दुग्ध	श्मशान	वाणी	जल	उत्कट	ऊषर	ऊषर	भूमि
पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफशुक्र	वायु	धूम्र	वायु	पित्तादि
वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पाटल	गौरश्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र	रंग
मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु	धात्वादि
वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर	स्थान

वर्ष में योगिनी के लिए जन्म नक्षत्र संख्या में गताब्द जोड़ें ३ और जोड़ें ८ से शेष करें तो मंगलादि योगिनी दशा होती है

वर्षयोगिनीमतेन मुद्दादशा (मास-दिन)

मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

गर्भ योग - वर्ष कुण्डली में लग्नेश पांचवे या सातवें पड़ा हो वा पंचमेश और सप्तमेश लग्न में पड़े हों तो उस वर्ष गर्भयोग होता है। मुंथा और चन्द्रमा बली होकर पांचवे हो और पंचमेश भी बली हो तो गर्भ होता है।

जन्मपत्री न हो तो वर्ष बनाने की रीति

स्पष्ट प्रश्न लग्न की राशि को छोड़कर अंशादिक की कला करना, फिर उसमें १५० (डेढ़ सौ)का भाग देना। लब्ध जो राश्यादि न्दर फल आवे उसकी राशि के अंक में प्रश्न लग्न की राशि अंक मिलाना, यह मुंथा का स्पष्ट लग्न जानना। और प्रश्न लग्न से चतुर्थ राशि का स्वामी जन्म लग्नेश जानना अर्थात् पंचाधिकारियों में जन्म लग्न पति के स्थान में प्रश्नलग्न से चतुर्थ राशि का स्वामी जो हो वह लिखना। प्रश्न पत्र पर वर्ष बनाने में इतना ही विशेष जानना। अन्य सर्व रीति में कुछ न्यूनाधिक नहीं है।

अरिष्ट योग :

यदि जन्म लग्न ही वर्ष लग्न होऔर जन्म नक्षत्र भी वर्ष में वहीं आ जाये तो यह द्विजन्मा वर्ष अशुभ है। वर्ष में गुरु चन्द्र शुभ न हो तो अशुभ कष्ट भय होता है। वर्ष में गुरु चन्द्र शुभ हो तो अशुभ फल नहीं होगा।

आवश्यक मुहूर्त

कोई भी कार्य वह शास्त्र- सम्मत शुभ-मुहूर्त में करें तो अवश्य सफल होकर सुखप्रद होता है। गुरु शुक्रास्त में गया-गोदावरी यात्रा में नवरात्र कृत्य में एवं चातुर्मास्य व्रत में गुरु - शुक्रास्त का दोष नहीं होता।

गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त

शुभ तिथियां- १,२,३,५,७,१०,११,१२,१३। **शुभ नक्षत्र**- तीनों उत्तरा मृ.ह.अनु.रो.स्वा.श्र.ध.श.। **शुभ लग्न**-जब लग्न और ४,५,७,९,१० स्थानों में शुभग्रह हों,३,६,११ स्थानों में पापग्रह हों सूर्य मंगल या गुरु लग्न हो देखते हों,विषम राशि के नवांशक में चन्द्रमा हो, रजोदर्शनकाल से पहली चार रात्रि छोड़ कर १६ रात्रि तक समरात्रि में गर्भ हो तो पुत्र, विषम में कन्या होती है।

चित्रा, पुन., पुष्य, अश्विनी गर्भाधान के लिए मध्यम है।

गर्भाधान के लिए अशुभ-काल

भद्रा ४,६,८,९,१४,१५, ३० **तिथियां, संक्रान्ति का दिन**। सन्ध्याकाल, मंगल, रवि, शनिवार, रजोदर्शनकाल की पहली चार रात्रियां, ज्येष्ठा, रेवती और आश्लेषा नक्षत्रों के अन्त की दो घड़ी, मूल अश्विनी और मघा के आदि की २ घड़ी ४,८,१२, लग्नों के अन्त की आधी घड़ी ५,९,१ लग्नों की आधी घड़ी ५,१,१५ तिथियों के अन्त की एक घड़ी,६,११,१ तिथियों के आदि की एक घड़ी, निर्वल तारा, जन्म नक्षत्र मूल, भरणी, अश्विनी,रेवती, मघा-नक्षत्र, ग्रहण के दिन व्यत्तिपात वैधृतियोग माता-पिता के श्राद्ध का दिन, दिन का समय, परिध योग का आधा भाग, उत्पात से हत नक्षत्र, जन्मराशि से अष्टमलग्न, पापयुक्त लग्न तथा नक्षत्र गर्भाधान के लिए वर्जित है।

गर्भ मासों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चन्द्रमा	शनि	बुध	गर्भाधान समय का लग्नेश	चन्द्रमा	सूर्य

स्त्री पुरुष के चन्द्रबल की विशेषता

गर्भाधान संस्कार में स्त्री का चन्द्रबल देखना चाहिए, और अन्य कर्मो में पति का चन्द्रबल देखना चाहिए, यह सदा स्मरण रखें।

पुंसवन का मुहूर्त - यह गर्भाधान के तीसरे मास में गुरु. रवि. मंगलवार को मृ, पुन, पु, ह, मूल और श्रवण नक्षत्रों में १,२,३,५,७,१०,११,१३,१५,तिथियों में जब लग्न से १,४,५,७,९, और १० स्थानों में शुभग्रह और ३,६,११ स्थान में पापग्रह हों तो तब शुभ होता है। तीनों उत्तरा, रोहिणी और रेवती नक्षत्र तथा सोम, बुध, और शुक्रवार भी शुभ है।

सीमान्त संस्कार का मुहुर्त - गर्भाधान के छठे या आठवें मास में, जब मास का स्वामी बली हो तब पुंसवन के मुहूर्त में निर्दिष्ट तिथियों, वारों, नक्षत्रों और लग्नों में सीमान्त शुभ होता है।

सीमन्त जातकदीनि प्राशनान्तानि यानि वै । न दोषो मलमासस्य मौढ्यस्य गुरुशुक्रयोः ॥

गर्भ-रक्षा के लिए विष्णुपूजा - गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण, रोहिणी और पुष्य नक्षत्र में शुभ लग्न, वार और तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब विष्णु की पूजा करनी चाहिए।

मेधा-जनन संस्कार - बालक उत्पन्न होने के अनन्तर नाल काटने से पहले दाहिने हाथ की अनामिका अंगली के अग्रभाग में सुवर्ण लगाकर सुवर्ण सहित अंगुली से शहद और गौ के घी को मिलाकर **''ॐ भूस्त्वयि दधामि, ॐ भुवस्त्वयि दधामि, ॐ स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भूर्भुव स्वः सर्वं त्वयि दधामि''** इन चारों मन्त्रों से बालक को थोड़ा-थोड़ा चार बार मधु चटावें, ऐसा करने से बालक बुद्धिमान और यशस्वी होता है।

स्तनपान कराने व सूतिका पथ्य का मुहूर्त - रिक्तामा. भद्रा, व्यातिपात एवं वैधृति को छोडकर शुभ तिथियां हों. वार चं. बु. गु. श. हों. नक्षत्र मृग. पुन. पु. श्र. रे. म. हो. तब स्तनपान कराना शुभ है । आगे अन्नप्राशन में कही गई तिथि नक्षत्रों में सूतिकापथ्य शुभ है ।

प्रसूता स्त्री के स्नान का मुहूर्त - रेवती तीनों उत्तरा . रो. मृ. ह. स्वा. अश्विनी और अनुराधा नक्षत्रों में रवि गुरु और भौम वारों में. १.२.३.५.७.१०.११.१३.१५. तिथियां शुभ है । आर्द्रा पुन. पु. श्र. म. भ. कृ. वि. मू. और चित्रा नक्षत्र तथा शनि और बुधवार त्याज्य है। अन्य नक्षत्र और वार मध्यम है।

प्रसूता स्त्री के जलपूजन का मुहूर्त - मास समाप्त हाने पर बुध . गुरु या चन्द्रवार की ४.९.१४. तिथियों को छोडकर अन्य तिथियों में श्र. पुन. पु. मृ. ह. मू. अनु. नक्षत्रों में जलपूजन उत्तम है । परन्तु गुरु और शुक्र के अस्त में चैत्र . पौष या अधिक मास में (मास पूरा होने पर भी) जलपूजन नहीं करना चाहिए।

जातकर्म और नामकरण का मुहूर्त - संक्रान्ति का दिन. भद्रा और व्यतिपात को छोडकर १.२.३.५.७.१०.११.१२.१३ तिथयों में जन्मकाल से ११ वें या १२ वें दिन सोम. बुध और शुक्रवार को मृ. रे. चि. अनु. तीनों उत्तरा . रो. ह. अश्विनी पुष्य . अभि . स्वा. पुन. श्र. ध. श. नक्षत्रों में जब लग्न से १,४,५,७,१० स्थनों में शुभग्रह तथा ३.६.११ स्थानों में पापग्रह हो तब शुभ होता है ।

अथ दोला (झूला) आरोहण मुहूर्त

जन्म दिन से १०।१२।१६।१८।३२ दिन शुक्रवार में मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. तीनों उत्तरा. रो. नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इनसे रहित तिथियों में १।४।७।१० इन लग्नों में शुभग्रह से युक्त हाने पर १।४।५।६।७।९।१०।११ वें शुभग्रह हों ३।६। ११वें पापग्रह हो तो उत्तम होता है ।

सूर्य नक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिनें				
५	५	५	५	७
नैरुज्य	मरण	कृशता	व्याधि	सौख्य

निष्क्रमण मुहूर्त - स्वा. अश्वि. पुन. ह.मू. पु. अनु. श्र. रो. ध. नक्षत्रों में भौम . शनि को छोडकर अन्य वारों में, रिक्ता अमा. भद्रादि से रहित शुभ दिन मे, तीसरे चौथे मास में शुभ है। शीघ्रता होवे तो १२ वें दिन बालक का निष्क्रमण करें। इसी दिन सूर्य और नक्षत्र पूजन पूर्वक सूर्य नक्षत्रों का दर्शन करावें।

भूम्युपवेशन्न मुहूर्त-पांचवे महीने में पृथ्वी वाराह का पूजन करके भौम के पूर्ण बल में तीनों उत्तरा.रो.मृ.।ज्ये.अनु.अश्वि.ह.पुष्य.अभि.इन नक्षत्रों में ४। ९। १४। ३० इन तिथियों को छोड़कर स्थिर लग्न में शुभ दिन में बालक के करधनी का त्रिसूत्र- बांध कर पृथ्वी पर बिठावें।

भूम्युपवेशन्न के लिए मंत्र-''रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे। आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये!'' इति॥ इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रखें, जिसको बालक ग्रहण करे उससे उसकी जीविका होती है।

अन्नप्राशन का मुहूर्त-जन्ममास से ६,८,१० या १२ वें मास में पुत्र का और ५,७,९ या ११वें मास में कन्या का भद्रादि- दोष रहित १,३,५,७,१०,१३,१५ तिथियों में सोम,बुध,गुरु ,और शुक्रवार को म.रे.चि.अनु.ह.अश्वि.पु.अभि.स्वा.पुन.श्र.ध.श.तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष,वृश्चिक और मीन लग्न को छोड़कर ऐसे लग्न में १,३,४,५,७,९,१० स्थानों में शुभ ग्रह हो या शुभ ग्रह की दृष्टि हो,३,६,११ स्थानों में पापग्रह हों दशम स्थान पापग्रह रहित हो ,१,६,८ स्थान में चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है किसी-किसी के मत से जन्मनक्षत्र अनु.शत-तारिका और स्वाती अशुभ है।

कर्णवेध का मुहूर्त-चैत्र पौष देवशयन (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक)जन्ममास, जन्मनक्षत्र ४,९,१४ तिथियां, जन्मतारा क्षय तिथि और सम वर्षो को छोड़कर जन्म के १२वें दिन या १६वें दिन,६वें, ७वें, ८वें मास या विषम वर्षों में सोम,बुध,गुरु ,शुक्रवार को श्र.ध.पुन.मृ.रे.चि.अनु.ह.अश्वि.पुष्य.अभि. नक्षत्रों में जब लग्न से अष्टम स्थान शुद्ध हो,१,४,५,७,९,१०,स्थानों में शुभ ग्रह हों,३,६,११,स्थानों में पाप ग्रह हों तुला,वृष,धनु,या मीन लग्न में बृहस्पतिवार हो तो कर्णछेदन श्रेष्ठ है। इस संस्कार के समय पर करने से मनुष्य के हर्निया (अंत्रवृद्धि) जैसे भयानक रोग की जड़ ही कट जाती है।

कन्या की नासिका छेदन का मुहूर्त-कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, शत.स्वा. में शुभ तिथ्यादिक शुक्लपक्ष में दिन के प्रथम प्रहर के समय नासिका वेध शुभ है।

मुण्डन मुहूर्त-गर्भाधानकाल से या जन्मकाल से विषम अर्थात् ३रे,५ वे,७ वे वर्ष में (मनु जी के मत से प्रथम वर्ष में भी)चैत्र को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में चन्द्र,बुध,गुरु,और शुक्रवार, लग्न तथा नवांशक में, जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टम लग्न को छोड़ २,३,५,७,१०,११,१३ तिथियों में संक्रान्ति के दिन को छोड़कर जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध (ग्रहरहित)हो, ३,६,११,स्थानों में पापग्रह हो ज्ये.मृ.रे.चि.स्वा.पुन.श्र.ध.शत.ह.अश्वि.पुष्य और अभिजित नक्षत्रों में शुभ है। **लड़के की माता को पांच मास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है, परन्तु पांच वर्ष से अधिक अवस्था के बालक के लिए निषेध नहीं है। जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिए।**

मुण्डन कर्म में विशेष-स्व-कुल शिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र तिथ्यादि शुभ समय में अपने-अपने इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है। सो ''यथाकुलधर्म वः'' इस स्मृति के स्मरण से ठीक ही है॥

क्षौर बनवाने का मुहूर्त-मुण्डन के लिए जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाये गये हैं वे ही हजामत बनवाने के लिए शुभ है-वर्जित काल शनि.रवि.भौमवार, हजामत में नौवें दिन, संध्याकाल, ४,८,९,१४,१५,३, तिथियां संक्रान्ति का दिन, रात्रि में, बिना आसन, संग्राम में, यात्री करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवाकर और भोजन् के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है।

विशेष फल-यज्ञ विवाह, मृतक कर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय हजामत बनवाई जा सकती है। किसी-किसी आचार्य का मत है कि जो लोग राजकार्य में नियुक्त हैं वे रुपजीवी जैसे नट-भांड आदि किसी भी दिन हजामत बनवा सकते हैं।

कर्णवेध और क्षौर का वार--ब्राह्मण को रविवार, क्षत्रिय सोमवार को,वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त-जन्म से ५वें या ७वें वर्ष में उत्तरायण सूर्य में गणेश, विष्णु,सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को ह.अश्वि.पुष्य.अभि.श्र.स्वा.रे.पुन. आर्द्रा.चित्रा.अनुराधा नक्षत्रों में बुरे योगों और भद्रा को छोड़कर २,३,५,६,१०,११,१२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है, लग्न में मेष,कर्क तुला,और मकर राशियां नहीं होनी चाहिए।

विद्यारम्भ का मुहूर्त-उत्तरायण में (कुम्भ का सूर्य छोड़कर)रवि,बुध,गुरु और शुक्रवार को २,३,५,६,१०,११,१२ तिथियों में म. आर्द्रा पुन., हस्त,चि.,स्वा. श्र.ध. शत.,अश्विनी ,म. तीनों पूर्वा , तीनों उत्तरा , रो. पुष्य, आश्ले, अनु. ,रेवती,नक्षत्रों में , जब लग्न से १,४,५,७,९,१० स्थान में शुभ ग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है ।

फारसी, अंग्रेजी विद्यारम्भ का मुहूर्त - सूर्य , भौम , शनिवार हों ,४।९।१४ तिथि हों, ज्ये. आश्ले, म. तीनों पूर्वा . भ.कृ.वि.आर्द्रा उ. षा. शत. नक्षत्र शुभ है ।

सीने पिरोने(सूचिकर्म)का मुहूर्त - अश्वि.पु. चि. अनु. ध. ये नक्षत्र , सूर्य, बुध,चन्द्र,गु., श.ये वार ,१।२।३।४।५।६ ।७ ।८।९।१०।११ ।१३ ।१५-ये तिथियां शुभ हैं।

यज्ञोपवीत संस्कार का मुहूर्त - यज्ञ और उपवीत इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है देवताओं की पूजा, संगति(सम्मेलन या कान्फ्रेंस)और जिसमें दान हों , उसे यज्ञ कहते है । उपवीत का अर्थ है पिरो देने वाला अर्थात् देव पूजा, सम्मेलन और दान के साथ पुरूष को मिला देने वाला संस्कृत (तन्तु- धागा - विशेष)यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ । बालक को गुरु चन्द्र शुद्धि देखकर जन्म से या गर्भ से(गर्भाज्जनेर्वा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः) ब्रह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११ वे. वैश्य १२वें, इन वर्षों में यदि न किया जाये तो ब्राह्मण १६ तक, क्षत्रिय २२ तक और वैश्य २५ तक संस्कार कर सकते हैं, उसके बाद सावित्री पतित व्रात्य संज्ञा वाले होते है। माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह. अश्वि. पुष्य. अभि. ३ उत्तरा, रो., आश्ले., स्वा., श्र., ध., मू., मृ., रे., चि., अनु., तीनों पूर्वा, आर्द्रा वेध रहित इन नक्षत्रों में (क्षत्रीय वैश्यों के लिए पुनर्वसु भी ग्राह्य है) सू., चं. बु. (बुधास्त हो तो बुधवार त्याष्य) श. गुरुवार को, शुक्ल २।३।१०।११।१२ तथा कृष्ण २।३।५ तिथियों में शुभ है। किंतु सोपपदा तिथि जैसे आषाढ़ शुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघशुक्ल १२ को और संक्राति दिन को तथा रोगबाण को छोड़कर मध्याह्न से पहले शुभ है। शु.गु.चं. और लग्नेश ६।८ स्थान में, चं., शु. १२वें स्थान में और १।५।८ वें, में, पापग्रह अशुभ है। शुभ ग्रह ६।८।१२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में पाप ग्रह ३।६।११ स्थानों, वृष या कर्क का पूर्ण चन्द्रमा लग्न में हो तो शुभ होता है। गुरु, शुक्र, के बाल्य वृद्धत्व, अस्त के समय को छोड़ कर उपन्यन शुभ है। यदि गोचराष्टक वर्ग से बालक के उपनयन संस्कार के लिये समय शुद्धि न मिले अथवा सिंह, मकर किंवा अशुभ स्थान में गुरु हो तो सौर चैत्र में उपनयन संस्कार किया जा सकता है-ऐसी शास्त्र की आज्ञा है।

मेलापक सारणी देखने की रीति और अष्टकूट दोषों के परिहार

लेखक:- प्रियव्रत शर्मा

आगे चार पृष्ठों पर 'मेलापक सारणी' दी गई है । इसके बाईं ओर पहिले,दूसरे कालमों में लड़की की और सबसे ऊपर वाली पहिली,दूसरी पंक्तियों में लड़के की राशियां तथा चरण-नक्षत्र दिए गए हैं । लड़की के नक्षत्र चरण के आगे लड़के के नक्षत्र-चरण के नीचे वर्ण आदि अष्टकूटों के गुण और मिलान में होने वाले वर्ण आदि दोषों का निर्देश है । वर्ण आदि दोषों के लिए नीचे लिखे सांकेतिक अक्षरों का इस सारणी में प्रयोग किया गया है:-

वर्ण दोष के लिए	= ब	राशीश दोष के लिए	= र
वश्य दोष के लिए	= व	गण दोष के लिए	= ग
तारा दोष के लिए	= त	भकूट दोष के लिए	= भ
योनि दोष के लिए	= य	नाडी दोष के लिए	= न

उदाहरणार्थ - यदि लड़की का जन्म चित्रा के ४ र्थ चरण में और लड़के का पू. भा. के ३ य चरण में हुआ हो तो इनके मिलान में इस मेलापक सारणीसे अष्टकूटों के गुण १८ १/२ मिले, और ज्ञात हुआ कि इस मिलान में त (तारा), य (योनि), ग (गण), तथा भ (भकूट) दोष हैं ।

अष्टकूट दोषों के परिहार-

वर, कन्या के राशीशों अथवा नवमांशेशों की मैत्री तथा राशीशों , नवशांशेशों की एकता द्वारा नाड़ी दोष के अलावा शेष सभी दोषों का परिहार हो जाता है । राशीश-नवमांशेशों की मैत्री-एकता के अलावा अन्य और भी अनेक परिहार हैं, जिनसे वर्ण आदि दोष दूर हो जाते हैं। इनका विवरण नीचे दिया जा रहा है -

(१) वर्ण दोष का परिवार:- वर की राशि के वर्ण से कन्या की राशि का वर्ण उत्तम होने पर वर्ण दोष होता है । लेकिन यदि वर के राशीश का वर्ण कन्या के राशीश के वर्ण से उत्तम हो तो वर्ण दोष का परिहार हो जाता है । सभी ग्रहों के वर्ण इस प्रकार हैं:-

रवि का वर्ण क्षत्रिय,चन्द्र का वैश्य,मंगल का क्षत्रिय,बुध का शूद्र, गुरु का ब्राह्मण, शुक्र का ब्राह्मण और शनि का शूद्र है ।

(२) वश्य दोष का परिहार:- वर कन्या की राशियों की योनिमैत्री होने पर वश्य दोष दूर हो जाता है ।

(३) तारा दोष का परिहार:-वर कन्या के राशीशों, नवमांशेशों की मैत्री या एकता के अलावा तारा दोष का दूसरा कोई परिहार नहीं है ।

(४) योनि दोष का परिहार:- भकूट और वश्य कूटों में से कोई एक भी यदि शुभ(ठीक) हो तो योनिदोष का परिहार हो जाता है ।

(५) राशीश दोष का परिहार:- भकूट शुभ होने पर (यानि द्विर्द्वादश, नवपंचम और षडष्टक का अभाव होने पर) राशीश दोष दूर हो जाता है ।

(६) गण दोष का परिहार:- वर -कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों या भकूट दोष न हों तो गण दोष दूर हो जाता है।

(७) भकूट दोष का परिहार :- वर कन्या के राशीशों, नवांशेशों की मैत्री या एकता ही भकूट दोष का प्रमुख परिहार है। यदि इसके साथ ताराशुद्धि या वश्यशुद्धि भी हो तो भकूट दोष का उत्तम परिहार माना जाता है ।

(८) नाड़ी दोष का परिहार :- वर,कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों, अथवा नक्षत्र एक और राशियां, भिन्न-भिन्न हों तो नाड़ी दोष दूर हो जाता है । दोनों के नक्षत्रों के चरणों का वेध न होने की स्थिति में भी नाड़ी दोष का परिहार माना जाता है ।

नाड़ी दोष के परिहार के प्रसंगमें वर-कन्या में से किसी एक का जन्म नक्षत्र के प्रथम चरण में और दूसरे का चतुर्थ चरण में अथवा एक का द्वितीय चरण में और दूसरे का तृतीय चरण में हुआ हो तो पादवेध मान लिया जाता है । लेकिन यह नियम सर्वत्र लागू नहीं होता । इसके स्पष्टीकरण के लिए सं. २०४७ के 'श्री मार्त्तण्ड पंचांग' में पृष्ठ ३४ पर दिया गया मेरा लेख "**पाद वेध द्वारा नाड़ी दोष के परिहार में परम्परागत एक भ्रांति**" पढ़ना चाहिए । यह लेख मेरी पुस्तक '**ग्रहयोग एवं दाम्पत्य जीवन**' में भी है ।

ध्यान दें:-जैसा कि ऊपर भी बता चुके हैं,वर,कन्या के राशीशों,नवमांशों की मैत्री और एकता तो वर्ण,वश्य,तारा,योनि,राशीश,गण और भकूट दोषों का परिहार कर देती है,लेकिन नाड़ी दोष का परिहार इनसे नहीं होता । नाड़ी दोष का परिहार तो केवल उपरोक्त स्थितियों में ही होता है ।

दैवज्ञ को यह विशेष रूप से ध्यान में रखना चाहिए,कि नाड़ीदोष का यदि परिहार नहीं मिले तो किसी भी स्थिति में (भले ही अन्य सातों कूट शुद्ध क्यों न हों, मिलान में गुण अठाईस भी क्यों न प्राप्त हों), सम्बन्ध करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए । इस बारे में मुहूर्तशास्त्रकारों का यही स्पष्ट निर्णय है ।

'नाड़ीदोषस्तु विप्राणाम्'-वाक्य को संहिताकारों ने मान्यता नहीं दी है । 'मुहूर्त चिन्तामणि' आदि अन्य प्रामाणिक मुहूर्तग्रन्थों ने भी इसकी उपेक्षा की है,अतः इसे मान्यता नहीं दी जा सकती।

'एकनक्षत्र जातानां नाड़ीदोषो न विद्यते'- वाक्य भी प्रामाणिक नहीं है । एक ही नक्षत्र में उत्पन्न वर,कन्या को नाड़ी दोष तब नहीं माना जाता, जबकि उनका जन्म भिन्न-भिन्न चरणों में हुआ हो । 'मुहूर्तचिन्तामणि' का वाक्य है -**'नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात्'** (अर्थात् दोनों का नक्षत्र एक होने पर दोष (नाड़ीदोष) की निवृत्ति तभी होती है,जबकि दोनों के चरण भिन्न-भिन्न हों)। **ध्यान रहे**, दोनों का जन्म एक ही नक्षत्र के एक ही चरण में होने पर नाड़ी दोष परमाधिक माना जाता है। एक ही नक्षत्र में पादवेध भी नहीं माना जाता ।

दोषपूर्ण अष्टकूटों के ,परिहारों को प्रमाणित करने वाले शास्त्रवाक्य बहुत हैं,उनको विस्तारभय से यहां उद्धृत नहीं किया गया। उन्हें मेरी पुस्तक "**ग्रहयोग एवं दाम्पत्यजीवन**" में आप देख सकते हैं)

सरलता पूर्वक एक ही दृष्टि में सभी अष्टकूटों के परिहार आ जाएं- इसके लिए नीचे दिया गया यह कोष्ठक देखें :-

अष्टकूट परिहार कोष्ठक

कूट	परिहार
वर्ण	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ वर के राशीश का वर्ण कन्या के राशीश के वर्ण से उत्तम हो।
वश्य	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ योनिमैत्री हो ।
तारा	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो।
योनि	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ वश्यशुद्धि हो। ३ सद्भकूट हो।
राशीश	१ दोनों के नवमांशेशों में मैत्री या एकता हो। २ भकूट दोष न हो।
गण	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ भकूट दोष न हो। ३ दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों ।
भकूट	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो।*
नाडी	१ दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न - भिन्न हों । २ दोनों का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न-भिन्न हों । ३ दोनों का नक्षत्र एक और चरण भिन्न - भिन्न हों । ४ पाद वेध न हो।

* यदि इस परिहार के साथ ताराशुद्धि , वश्यशुद्धि में से कोई एक भी हो तो यह परिहार उत्तम माना जाता है।

परिहृत कूट के गुण

वर्ण आदि जो कूट दोषपूर्ण होता है, उसके लिए निर्धारित पूरे गुणों को छोड़ दिया जाता है। जब उस दोषपूर्ण कूट का कोई उपरोक्त परिहार मिल जाए तब उसके पूरे गुणों को पुनः स्वीकार कर उन्हें मेलापक सारणी से प्राप्त गुण संख्या में जोड़कर उस गुणसंख्या को वास्तविक गुणसंख्या माना जाए- ऐसा कुछ आचार्यों का मत है । कुछ आचार्यों का मत है कि परिहार द्वारा दोष का पूरा नहीं, अपितु आंशिक निवारण होता है,अतः परिहृत कूट के आधे गुणों को ही स्वीकार करना चाहिए । यह (दूसरा)मत तर्कसंगत है। इसके अनुसार परिहृत कूट के आधे गुण(उस कूट के लिए निर्धारित पूरे गुणों का आधा भाग)मेलापक सारणी से मिली गुणसंख्या में जोड़कर उसे ही यथार्थ गुणसंख्या मानना युक्तियुक्त है ।

कितने गुण मिलने पर सम्बन्ध कर देना चाहिए ?

परिहृत कूटों की आधी गुणसंख्या को मेलापक सारणी में उपलब्ध गुणसंख्या में जोड़ने. पर मिली गुणसंख्या यदि १६ $\frac{१}{२}$ से कम है तो सम्बन्ध नहीं करना चाहिए । यदि षडष्टक भकूट का परिहार न मिल रहा हो तब २० से कम गुण संख्या होने पर सम्बन्ध नहीं करना चाहिए । ध्यान रहे- यहां प्रत्येक स्थिति में नाड़ी दोष का परिहार मिलना नितान्त आवश्यक है। यदि नाड़ी दोष के उपरोक्त परिहारों में से कोई एक भी परिहार न मिल रहा हो तब तो २८ गुण मिलने पर भी सम्बन्ध करने की अनुमति शास्त्रकारों ने नहीं दी है ।

यदि किसी विशेष कारण (विवशता) वश सम्बन्ध करना आवश्यक (अपरिहार्य)हो जाए, तब १६ से कम गुणों और षडष्टक तथा नाड़ीदोष के अपरिहार की स्थिति में भी गाय,अन्न,वस्त्र,सुवर्ण का यथाशक्ति दान, तथा जप -शान्ति करके सम्बन्ध किया जा सकता है । इस स्थिति में कन्या का नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाने की भी परम्परा है । लेकिन दान,जप,शान्ति करना भी इस स्थिति में अत्यन्त आवश्यक है । साधारण स्थिति में (नितान्त विवशता की स्थिति के अभाव में) लड़की का नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाना सर्वथा अशास्त्रीय है । नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाने का 'सिद्धान्त' अपनाने पर तो किसी भी लड़की का किसी भी लड़के के साथ और किसी भी लड़के का किसी भी लड़की के साथ सम्बन्ध बेरोक-टोक किया जा सकता है और वहां अष्टकूटों के गुण इच्छानुसार अधिकाधिक प्राप्त किए जा सकते हैं, जिससे दोषपूर्ण कूटों का परिहार बतलाने वाले सभी शास्त्रवाक्य अर्थहीन हो जायेंगे।

मिलान में कुछ और विचार्य विषय

यद्यपि संहिताओं में इन आठ कूटों के अतिरिक्त अनेक और भी विचार्य विषय मिलते हैं, लेकिन वर्गमैत्री और नृदूर का भी विचार करने की भी कुछ दैवज्ञों में परम्परा हैं,इन दोनों का विवेचन इस प्रकार है-

वर्गमैत्री-

वर्गमैत्री का विचार वर,कन्या के नाम के आदिम वर्णो से सम्बद्ध है। हिन्दी वर्णमाला के अकार आदि स्वर 'अवर्ग', 'क' आदि पांच वर्ण 'कवर्ग', 'च' आदि पांच वर्ण 'चवर्ग', 'ट' आदि पाँच वर्ण 'टवर्ग' त आदि पांच वर्ण 'तवर्ग' 'प'आदि पांच वर्ण 'पवर्ग', 'य' आदि पांच वर्ण 'यवर्ग' तथा 'श' आदि पांच वर्ण 'शवर्ग' कहलाते हैं। इन अवर्ग आदि आठ वर्गों को उपरोक्त क्रमानुसार क्रमशः प्रथम वर्ग, द्वितीय वर्ग, आदि संज्ञाएं दी गई हैं। इन आठ वर्गों केस्वामी क्रमशः गरुड़, मार्जार,सिंह, श्वान,

सर्प, मूषक, मृग और मेष माने गये हैं । प्रत्येक वर्गेश अपने से पंचम वर्ग के स्वामी का शत्रु माना गया है । जैसे :- गरुड़ और सर्प तथा मूषक और मार्जार परस्पर शत्रु हैं ।

नामाक्षरों से वर्ग ज्ञान कोष्ठक :

वर्ग	अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
वर्ग के वर्ण	अ, इ, उ,ए	क, ख, ग, घ,ङ	च,छ,ज, झ,ञ	ट,ठ,ड, ढ,ण	त,थ,द, ध,न	प, फ,ब, भ,म	य,र, ल,व	श,ष, स,ह
वर्गेश	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेष

वर, कन्या के नामों के आदिम वर्णों के वर्गो के स्वामी परस्पर शत्रु हों तो अच्छा नहीं माना जाता, उनका जीवन दुःखमय रहता है ।

यदि वर्गेशों में शत्रुता है तो अष्टकूटों से प्राप्त गुण १७ से अधिक होने पर ही सम्बन्ध करना चाहिए। यदि मिलान में अष्टकूटों से प्राप्त गुण लगभग १४,१५ ही हों और नाडी दोष न हो तब वर्गेश की एकता (अभिन्नता) होने पर सम्बन्ध किया जा सकता है-ऐसा कुछ लोगों का मत है

नृदूर

वर का नक्षत्र या नक्षत्र चरण यदि कन्या के नक्षत्र या नक्षत्र चरण से तुरन्त परवर्ती हो तो 'नृदूर' दोष कहलाता है। जैसे - कन्या का जन्म नक्षत्र अश्विनी और वर का भरणी, अथवा कन्या का जन्म अश्विनी के प्रथम चरण में और वर का अश्विनी के द्वितीय चरण में हो तो भी नृदूर दोष होगा। 'नृदूर' दोष का फल मुहूर्त शास्त्रों में बहुत अशुभ लिखा है।

दोनों (वर ,कन्या) की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न या दोनों का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न-भिन्न हों तों नृदूर का परिहार हो जाता है।

अष्टकूटों से प्राप्त गुण लगभग १६ $\frac{१}{२}$,१७,१८ हों और 'नृदूर' दोष का परिहार न मिले, तब नाड़ी दोष के अभाव में भी मिलान को कुछ मुहूर्त्तकार अच्छा नहीं मानते । १८ से अधिक गुण होने पर 'नृदूर' की उपेक्षा की जा सकती है।

नामराशि से अष्टकूटों का निर्णय

वर और कन्या-दोनों का यदि जन्मकाल ज्ञात न हो, तब दोनों की नामराशि, नामनक्षत्रों (नामों के आदिम अक्षरों से अबकहड़ा चक्र द्वारा निर्णीत राशि और नक्षत्रों) के आधार पर ही मेलापक सारणी से अष्ट कूटों के गुणों का निर्णय करना चाहिए। अपिच यदि वर, कन्या-दोनों में से किसी एक का जन्मकाल ज्ञात न हो तो भी दोनों की नामराशि, नामनक्षत्रों के आधार पर ही अष्टकूटों का निर्णय करना चाहिए। एक की जन्मराशि, जन्मनक्षत्र और दूसरे की नामराशि, नाम नक्षत्र के आधार पर अष्टकूटों का निर्णय करने की अनुमति शास्त्र नहीं देते।

कुज (मंगली) दोष-

निम्नलिखित स्थितियों में कुजदोष (मंगली दोष) माना गया है -

(१) जन्म कुण्डली में १,४,७,८,१२ वें भावमें मंगल या अन्य कोई क्रूर ग्रह हो।

(२) चन्द्र कुण्डली में १,४,७,८,१२ वें भाव में मंगल या कोई क्रूर ग्रह हो ।

(३) शुक्र से १,४,७,८,१२ वें भाव में मंगल या अन्य कोई क्रूर ग्रह हो ।

कुजदोष बनाने वाला ग्रह अस्त, नीचस्थ या शत्रुराशिस्थ हो तो कुजदोष का फल अधिक माना गया है । कुजदोष दाम्पत्य जीवन के लिए अच्छा नहीं माना जाता ।

कुजदोष के सामान्य कुछ परिहार -

इन स्थितियों में वर, कन्या का कुज दोष दूर हो जाता है -

(१) कुजदोष बनाने वाला ग्रह (क्रूरग्रह) उच्चस्थ, मित्रराशिस्थ, उच्चनवांश या मित्र नवांश में हो।

(२) कुजदोष बनाने वाले ग्रह पर वृहस्पति की पूर्णदृष्टि हो ।

(३) वर-कन्या दोनों की कुण्डलियों में कुजदोष विद्यमान हो तो दोनों के कुजदोष समाप्त हो जाते हैं।

ध्यान रहे, कुजदोष वाले वर और कन्या दोनों की कुण्डलियों में कुजदोषों का परिहार मिलने पर कुजदोष का कुफल समाप्त हो जाता है । दोनों की कुण्डलियों में से किसी एक की कुण्डली में ही कुजदोष परिहार हो तो कुजदोष का कुप्रभाव रहता है ।

कुण्डली मिलान की प्रामाणिकता

हमारे ज्योतिष के मानक ग्रन्थों (संहिता, जातक, मुहूर्त्त ग्रन्थों) में वर, कन्या का सम्बन्ध करने से पूर्व उनकी कुण्डलियों में ग्रहस्थितियों के मिलान द्वारा कुजदोष के परिहार की चर्चा कहीं भी नहीं की गई है। पुनरपि कुण्डली मिलान की परम्परा सभी भारतीय प्रदेशों में प्रचलित है । इसका शास्त्रीय मूल अभी तक अज्ञात है। आश्चर्य है- सभी वशिष्ठ, नारद, गर्ग आदि की संहिताओं, मुहूर्त्तमार्तण्ड, मुहूर्त्तचिन्तामणि आदि मुहूर्त्तग्रन्थों तथा वर-कन्या के सम्बन्ध की अनुकूलता के परीक्षण के लिए रचित 'विवाहवृन्दावन' आदि सभी ग्रन्थों में वर-कन्या के सम्बन्ध के लिए केवल अष्टकूटों के परीक्षण का ही निर्देश है, कुण्डली मिलान का कहीं भी नहीं ।

षट्कूट चक्र

वर्ण, वश्य, योनि, राशीश, गण और नाड़ी ज्ञापक चक्र।

राशि	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
नक्षत्र	अश्वि.	भर	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	ह.	चि.
चरण	१, २ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२
वर्ण	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.
वश्य	च.	च.	च.	च.	च.	च.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.	व.	व.	व.	द्वि.	द्वि.	द्वि.
योनि	अ.	ग.	मे.	मे.	स.	स.	स.	स्वा.	मा.	मा.	मे.	मा.	मू.	मू.	गौ.	गौ.	म	व्या.
राशीश	म.	म.	म.	शु.	शु.	शु.	बु.	बु.	बु.	च.	च.	च.	सू.	सू.	सू.	बु.	बु.	बु.
गण	दे.	म.	रा.	रा.	म.	दे.	दे.	मा.	दे.	दे.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.	रा.
नाड़ी	आ.	म.	अ.	अ.	अ.	म.	म.	आ.	आ.	आ.	म.	अ.	अ.	म.	आ.	आ.	आ.	म.
राशि	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
नक्षत्र	चि.	स्वा	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	श्रव.	ध.	ध.	श.	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा	रेव.
चरण	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४
वर्ण	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.
वश्य	द्वि.	द्वि.	द्वि.	की.	की.	की.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.
योनि	व्या.	म.	व्या.	व्या.	मृ.	मृ.	श्वा.	वा.	न.	न.	वा.	सिं.	सिं.	अ.	सिं.	सिं	गौ.	ग.
राशीश	शु.	शु.	शु.	मं.	मं.	मं.	गु.	गु.	गु.	श.	श.	श.	श.	श.	श.	गु.	गु.	गु.
गण	रा.	दे.	रा.	रा.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.	रा.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.
नाड़ी	म.	अं.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	म.	अं.	अं.	अं.	म.	म.	आ.	आ.	आ.	म.	अं.

वर्ण- ब्रा.= ब्राह्मण, क्ष= क्षत्रिय, वै= वैश्य, शू.=शूद्र

योनि- अ.=अश्व, ग=गज, मे=मेष, स=सर्प, श्वा.=श्वान, मा.=मार्जार, मू = मूषक,म=महिष, व्या=व्याघ्र, मृ=मृग, वा=वानर, न=नकुल, सिं=सिंह

गण- दे=देव, म=मनुष्य, रा=राक्षस

वश्य- च=चतुष्पद, की=कीट, व= वनचर, द्वि=द्विपद, ज=जलचर

राशीश- सू=सूर्य, चं=चन्द्र, मं.=मंगल, बु=बुध, गु=गुरु, शु=शुक्र, श=शनि

नाड़ी- आ=आद्य. म=मध्य. अं=अन्त्य

मेलापक सारणी (भाग १)

कन्या \ वर		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि. १,२,३,४	भर. १,२,३,४	कृत्ति. १	कृत्ति. २,३,४	रोहि. १,२,३,४	मृग. १,२,	मृग. ३,४	आर्द्रा १,२,३,४	पुन. १,२,३	पुन. ४	पुष्य १,२,३,४	आश्ले. १,२,३,४	मघा १,२,३,४	पू.फा. १,२,३,४	उ.फा. १	उ.फा. २,३,४	हस्त १,२,३,४	चित्रा १,२
मेष	अश्वि. १,२,३,४	२८ न	३३	२८½ त	१८½ ब भ त	२१½ ब भ त	२२½ ब भ त	२६ ब त र	१७ ब न त र	१९ बन त र	२३½ न त	३१½ त	२८ ग	२१ व भ ग	२५ व भ	१५½ व भ न त	११ ब भ न तर	९ तबभ यनर	१३ व भ त र
	भर. १,२,३,४	३४	२८ न	२९ ग	१९ ब ग भ	२१½ ब भ त	१४½ ब भ तन	१८ न ब त र	२६ ब त र	२७ ब त र	३१½ त	२३½ न त	२५½ ग त	२० ग व भ	१८ व भ न	२६ व भ	२१½ ब भ र	२० ब भ त	४ बभग नतर
	कृत्ति. १	२७½ ग त	२९ ग	२८ न	१८ ब भ न	१० ग ब न भ	१६½ ग ब भ त	२० ग ब त	२० ग ब त	२१ ग ब त र	२५½ ग त	२६½ ग त	२३½ न त	१६½ व भ न त	२० ग व भ	२० ग व भ	१५½ ग ब भ	१५½ ग ब भ र	१८ ब भ त
वृष	कृत्ति. २,३,४	१८½ ग भ त	२० ग भ	१९ भ न	२८ न	२० ग न	२६½ ग त	१७½ ग ब भ त	१७½ ब ग भ त	१८½ ग ब भ त	२२ ग त र	२३ ग त र	२० न त र	१८½ न व र त	२२ र व ग	२२ र व ग	२१ ग भ	२१ ग भ	२३½ भ त
	रोहि. १,२,३,४	२३½ भ त	२३½ भ त	११ ग भ न	२० ग न	२८ न	३६	२७½ ब भ	२३½ ब भ त	२२½ भ ब त य	२६ त र य	२७ त र	१२ ग न तरय	१०½ रवग नतय	२४½ र व त य	२७ र व	२६ भ	२६ भ	२० ग भ
	मृग. १,२	२३½ भ त	१४½ भ न त	१८½ भ त ग	२७½ त ग	३५	२८ न	१९ ब भ न	२४ ब भ	२२½ ब भ त य	२६ त य र	१९ त र न	२१ त र य ग	१९½ गरव त य	१५½ र व नतय	२४½ र व त	२३½ भ त	२६ भ	१३ भ न ग
मिथुन	मृग. ३,४	२७ त र	१८ न तर	२२ तर ग	१९½ भ ग त	२७ भ	२० भ न	२८ न	३३	३१½ त य	१९ भ व तयर	१२ भ न वतर	१४ भवत यर	२३½ व त य ग	१९½ व न त य	२८½ व त	३१½ त	३४	२१ न ग
	आर्द्रा १,२,३,४	१९ त र न	२७ त र	२१ त रग	१८½ ग भ त	२४½ भ त	२६ भ	३४	२८ न	२५ न य	१२½ भ न तयर	२० भ व त र	१३ गभर वतय	२३½ ग त व	२९½ व त	२१½ न व त	२४½ न त	२४½ न त	२७ ग य
	पुन. १,२,३	२० न त र	२७ त र	२३ त र	२०½ भ त ग	२२½ भ त	२३½ भ त य	३१½ त य	२४ न य	२८ न	१५½ न भ व र	२२½ भ व र	१७ भ व तरग	२२½ य व त ग	२६½ य व त	२१½ न व त	२४½ न त	२५½ न त	२७½ त ग
कर्क	पुन. ४	२२½ ब न त	२९½ ब त	२५½ ब त ग	२२ ब ग त र	२४ ब त य र	२५ ब त य र	१८ बभव रतय	१०½ बभव नयर	१४½ बभ रनत	२८ न	३५	२९½ त ग	१६½ बभय गत	२०½ ब भ त य	१५½ ब भ न त	१८ न ब त र	१९ न ब वतर	२१ ब ग वतर
	पुष्य १,२,३,४	३०½ ब त	२१½ ब न त	२६½ ब त ग	२३ ब त र ग	२५ ब त र	१८ ब न त र	११ बभन बतर	१८ बभ वतर	२१½ ब भ व र	३५	२८ न	३० ग	१९½ ब भ ग त	१५½ ब भ न त	२३½ ब भ त	२६ ब व त र	२७ ब व त र	१२ नबवय तरग
	आश्ले. १,२,३,४	२६ ब ग	२४½ ब ग त	२२½ न ब त	१९ न ब त र	११ गबत नयर	१९ गब तयर	१२ गबत भवयर	१२ गबभ वतयर	१५ गबत भवर	२८½ ग त	२९ ग	२८ न	१५ य ब भ न	१५½ गबय भत	१८½ ग ब भ त	२१ ग ब वतर	२१ ग ब वतर	२६ बवत र
सिंह	मघा १,२,३,४	२० ग व भ	२० ग व भ	१६½ वभ न त	१७½ वब रनत	९½ ववत गरनय	१७½ वबत गरय	२१½ वब गतय	२२½ व ब ग त	२०½ वब गयत	१६½ ग भ य त	१९½ गभ त	१६ न भ य	२८ न	३० ग	२७½ ग त	१६½ व ब गभत	१६½ व ब गभत	२१½ व ब भ त
	पू.फा. १,२,३,४	२६ वभ	१८ व भ न	२० ग व भ	२१ ब व र ग	२३½ व ब रतय	१५½ वबन रतय	१९½ व ब नतय	२८½ व ब त	२६½ व ब त य	२२½ य भ त	१७½ भ न त	१६½ ग भ य त	३० ग	२८ न	३५	२४ व ब भ	२२½ व व भ त	७½ वबत गनभ
	उ.फा. १	१८½ व भ न त	२६ वभ	२० व ग भ	२१ ब व ग र	२६ व ब र	२४½ व ब र त	२८½ व ब त	२०½ व ब न त	२१½ व ब न त	१७½ भ न त	२५½ भ त	१९½ गभ त	२७½ ग त	३५	२८ न	१७ व ब भ न	१६ व ब भ न	१३½ वयब तगभ
कन्या	उ.फा. २,३,४	१३ भ न त र	२२½ भ र	१६½ ग भ र	२१ ग भ	२६ भ	२४½ भ त	३१½ ब त	२३½ न ब त	२४½ न ब त	२० न व त र	२८ व त र	२२ ग व त र	१७½ ग व भ त	२५ भ व	१८ व भ न	२८ न	२७ न	२४½ य ग त
	हस्त १,२,३,४	१० य भ नतर	२० भ त र	१७½ भ र ग	२२ भ ग	२५ भ	२६ भ	३३ ब	२२½ न ब त	२४½ न ब त	२० न व त र	२८ व त र	२३ व त र ग	१८½ व भ त ग	२२½ व भ त	१६ व भ न	२६ न	२८ न	२८ य ग
	चित्रा १,२	१३ गभत य र	५ गभन तयर	१९ भ त य र	२३½ भत य	२० ग भ	१२ ग भ न	१९ ग ब न	२६ ग ब य	२५½ ग ब त	२१ ग व त र	१२ गनव तयर	२७ व त र	२२½ व भ त	८½ ग व भनत	१४½ व य गभत	२४½ ग य त	२७ ग य	२८ न

(ब=वर्णदोष। व=वश्यदोष । त=तारादोष । य=योनिदोष । र=राशीश दोष। ग=गणदोष। भ=भ कूट दोष। न=नाडी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग २)

कन्या \ वर		तुला: चित्रा ३,४	तुला: स्वाती १,२,३,४	तुला: विशा. १,२,३	वृश्चिक: विशा ४	वृश्चिक: अनु. १,२,३,४	वृश्चिक: ज्येष्ठा १,२,३,४	धनु: मूल १,२,३,४	धनु: पू.षा. १,२,३,४	धनु: उ.षा. १	मकर: उषा. २,३,४	मकर: श्रव. १,२,३,४	मकर: धनि. १,२,	कुम्भ: धनि. ३,४	कुम्भ: शत. १,२,३,४	कुम्भ: पू.भा. १,२,३	मीन: पू.भा. ४	मीन: उ.भा. १,२,३,४	मीन: रेव. १,२,३,४
मेष	अश्वि. १,२,३,४	२२½ बय तग	२६½ बय त	२२½ तब यग	१८½ गभ तय	२५½ भ त	१४ भन ग	१३½ भन ग	२५ भ	२३½ भ त	२५ ब तर	२६ बत र	२० बत यरग	२० बत यरग	१५ बन तरग	१६ बन तयर	१४½ नभ तय	२४½ भ त	२६ भ
	भर. १,२,३,४	१३½ बगन तय	२९½ ब त	२१½ गब तय	१७½ गभ तय	१७½ नभ त	१९½ गभ त	२० गभ	१८ नभ	२६ भ	२७½ ब र	२६ ब तर	१० बय गनतर	१० बय गनतर	२० गब तर	२४ बय तर	२२½ तभ य	१७½ नभ त	२६½ भ त
	कृत्ति. १	२७½ ब तय	१५½ बग नत	१९½ बन तय	१५½ भन तय	१९½ गभ त	२५½ भ त	२४½ भ त	१८ गभ य	१२ गभ न	१३½ बग नर	११½ बय रगन	२५ बत यर	२५ बत यर	२७ बत र	१९ बग तयर	१७½ गभ तय	१९½ गभ त	११½ गभ तन
वृष	कृत्ति. २,३,४	२२½ बभ तय	१०½ गब भनत	१४½ बभ तनय	२०½ न तय	२४½ ग त	३०½ त	२० भ तर	१३½ यग भर	७½ गभ नर	१२ गभ न	१० यग भन	२३½ भ तय	२९½ ब तय	३१½ ब त	२३½ गब तय	२० गत यर	२२ ग तर	१४ गन तर
	रोहि. १,२,३,४	१९ गब भ	१५½ बभ नत	९½ तबग नभ	१५½ गन त	२९½ त	२३½ ग त	१४ गभ तर	१९ रभ तय	११½ यभन र	१६ भय न	१७ नभ य	२० गभ	२६½ गब	२४ गब त	३०½ बत	२७ तर	[illegible]	११ र नत
	मृग. १,२	१२ बभ नग	२५ बभ	१८½ बभ तग	२४½ त ग	२१½ न त	२४½ तग	१५ भ तरग	१० नभ तयर	१७ यभ तर	२१½ भय त	२५ भ य	१३ नभ ग	१९ ब गन	२७ बग	२९½ बत	२६ तर	[illegible]	२७ तर
मिथुन	मृग. ३,४	१४ नभ ग	२७ भ	२०½ भ तग	१४ भव तरग	११ भवन तर	१४ भव तरग	२३ तर ग	१८ नतय र	२५ यतर	२० भय वत	२३½ भ यव	११½ नभ वग	१३ नभ ग	२१ भ ग	२३½ भ त	२५½ तव र	२७½ नव तर	२६½ वत र
	आर्द्रा १,२,३,४	२० गभ य	२७ भ	२० गभ य	१३½ रगव भय	१७ तभव यर	३ यतगव भनर	१६ गन तर	२८ तर	२८ तर	२३ भ वत	२३ भ वत	१७½ गभ वय	१९ गभ य	१२ गभ न	१७ नभ य	१९ नर वय	२६½ वत	२६½ वत र
	पुन. १,२,३	२०½ भ तग	२८ भ	२२ भ ग	१५½ वभ रग	२१½ वभ र	७ रगवभ नत	१४ यरतन ग	२७ तर	२७ तर	२२ वत भ	२३ वत भ	१७ वत भयग	१८½ भग तय	१४ नभ ग	१६ नभ य	१८ रन यव	२८ भव	२७½ वत र
कर्क	पुन. ४	२०½ बतर ग	२८ वरब	२२ वरब ग	२० गभ	२६ भ	११½ तग भन	८ वतब भगनय	२१ बभ वत	२१ बभ वत	२६ बत र	२७ बत र	२१ बगत यर	१२½ बभव तयगर	८ बभव नगर	१० बभर नवय	१६ नभ य	२६ भ	२५½ भ त
	पुष्य १,२,३,४	११½ गनबव तयर	२६½ ब वतर	२१ रबग वय	१९ भ यग	१८ भन	२१ भग	१७ गबभ वत	११ यबभ तनव	२१ बभ वत	२६ ब तर	२५ बय तर	१३ गबन तयर	४½ भबगय वनतर	१४½ बवत रगभ	१८ बभ वयर	२४ भ य	२८ भ	२७ भ
	आश्ले. १,२,३,४	२५½ बव तर	१२½ गबव तरन	१७½ नब वतर	१५½ नभ त	२० गभ	२६ भ	२२½ बभ वय	१६ गबव भत	८ गबव भनत	१३ गबर नत	१३ बगत नर	२६ बत यर	१७½ बभव तरय	१९½ बभ वतर	११½ गबभ वतयर	१७½ गभ तय	१९ गभ	१३ गभ न
सिंह	मघा १,२,३,४	२४½ बव तर	११½ बवत रगन	१६½ बवत रन	२२½ नव त	२५½ गव त	३३ व	२५ भव	१९ गवभ	८½ वगभ नतय	३½ बरतय गभन	४½ बरत गभन	१८½ बरत भ	२४½ बव तर	२५½ बव तर	१८½ बव रगत	१८½ गभ त	१९½ गभ त	१३ गभ न
	पू.फा. १,२,३,४	१०½ बवत रगन	२५½ बव तर	१८½ बव रगत	२४½ गव त	२३½ नव त	२५½ गव त	१९ गव भ	१७ भव न	२४ भव य	१७ बर भय	१८½ बर भत	४½ बरत गभन	१०½ बवत रगन	१९½ बव रगत	२४½ बव रत	२४½ भ त	१७½ नभ त	२५½ भत
	उ.फा. १	१६½ बवत यगर	२५½ बव तर	१६½ बवय गरत	२२½ यव गत	३१½ वत	१७½ गव नत	९½ गव नभत	२५ भव	२५ भव	२० बर भ	२० बर भ	११½ बरत गभय	१७½ बवत गरय	११½ बवत गनर	१५½ बवत नरय	१५½ नभ तय	२६½ भ त	२५½ भ त
कन्या	उ.फा. २,३,४	१६½ गबय भत	२५½ बभ त	१६½ गबय भत	१८ यवत गर	२७ व तर	१३ गव तनर	१४ गन तर	२९½ र	२९½ र	२४½ भ व	२४½ भ व	१६ गभ वतय	१६½ गब भतय	१०½ गब नभत	१४½ बभ नतय	१७½ तनव यर	२८½ वतर	२७½ वतर
	हस्त १,२,३,४	२० बभ यग	२६½ बभ त	१८½ बभ तयग	२० वग तयर	२६ वतर	१३ नवत रग	१५ नत रग	२७ तर	२८½ र	२३½ भव	२४½ भव	१८½ भग वर	१९ बभ यग	८½ बयभ नतग	१३½ बभ नतय	१६½ बनत यर	२६½ वतर	२७½ वतर
	चित्रा १,२	२० बभ न	१९ गब भय	२६½ बभ त	२८ व तर	११ गवन तयर	२५ वत यर	२७ तयर	१४ गन तर	२२ ग तर	१७ गभ त	१८½ गभ व	१५½ भ वनय	१६ बय भन	२४ बभ य	१६½ गबत भय	१९½ गव तयर	१०½ गयव नतर	१९½ वगत यर

(ब=वर्णदोष । व=वश्यदोष । त=तारादोष । य=योनिदोष । र=राशीश दोष । ग=गणदोष । भ=भकूट दोष । न=नाडी दोष ।)

मेलापक सारणी (भाग ३)

कन्या \ वर		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि. १,२, ३,४	भर. १,२, ३,४	कृत्ति. १	कृत्ति. २,३, ४	रोहि. १,२, ३,४	मृग. १,२	मृग. ३,४	आर्द्रा १,२, ३,४	पुन. १,२, ३	पुन. ४	पुष्य १,२, ३,४	आश्ले. १,२, ३,४	मघा १,२, ३,४	पू.फा. १,२, ३,४	उ.फा. १	उ.फा. २.३, ४	हस्त १,२ ३,४	चित्रा १,२
तुला	चित्रा ३,४	२२½ ग तय	१४½ गन तय	२८½ तय	२३½ भ तय	२० गभ	१२ गभ न	१३ गभ न	२१ गभ	१९½ गभ त	२०½ गर वत	११½ गनय वरत	२६½ वत र	२५½ वर त	११½ वर गनत	१७½ वय गरत	१७½ यग भत	२० गभ य	२१ भन
	स्वाती १,२, ३,४	२७½ यत	२९½ त	१७½ न त	१२½ भन त	१५½ भन त	२६ भ	२७ भ	२६ भ	२८ भ	२९ वर	२७½ व तर	१४½ नव तर	१३½ वन तग	२५½ वर त	२५½ वर त	२५½ भ त	२७½ भ त	२१ भ यग
	विशा. १,२, ३	२२½ तय ग	२२½ तय ग	२०½ तय न	१५½ तभ नय	१०½ गभ तन	१८½ गभ त	१९½ गभ त	२० गभ य	२१ गभ	२२ ग वर	२१ ग तर	१८½ नव तर	१७½ वर तन	१९½ वर तग	१७½ वय रगत	१७½ यग भत	१८½ गभ तय	२७½ भ त
वृश्चिक	विशा. ४	१६½ बग भयत	१६½ बग भयत	१४½ बभ नयत	१९½ बन तय	१४½ बग नत	२२½ बग त	१२ बवर गभत	१२½ वबय गभर	१३½ बव गभर	१९ गभ	१८ गभ य	१५½ भन त	२१½ बव नत	२३½ बव गत	२१½ बव गयत	१७ तबव गयर	१८ बवग तयर	२७ बव [illegible]र
	अनु. १,२, ३,४	२४½ बभ त	१५½ बभ नत	१९½ बभ तग	२४½ बत ग	२७½ ब त	२०½ बन त	१० बवत नभर	१५ तबव रभय	२०½ बव भर	२६ भ	१८ भन	२१ भग	२४½ बव तग	२०½ बव तन	२९½ बव त	२५ बव तर	२६ बव त	[illegible]१ बरव [illegible]तय
	ज्येष्ठा १,२, ३,४	१२ बग भन	१८½ बग तभ	२४½ बभ त	२९½ ब त	२२½ बग त	२२½ बग त	१२ तबव गभर	२ तबबय गभनर	५ तबवर गभन	१०½ त गभन	२० ग भ	२६ भ	३१ बव	२३½ बव गत	१६½ तबव गन	१२ तबव गनर	१२ तबव गनर	[illegible]४ बव [illegible]यर
धनु	मूल १,२, ३,४	१२ गभ न	२० गभ	२४½ भ त	१९ बभ तर	१३ बग तभर	१३ रबग तभ	२१ बग तर	१५ बगन तर	१२ रबग तनय	८ यगभ वनत	१७ गभ वत	२३½ भ वय	२५ वभ	१९ वग भ	९½ तवग भन	१३ तरब गन	१३ बग तनर	२६ ब य
	पू.षा. १,२, ३,४	२६ भ	१८ भन	१८ गभ य	१२½ बय गभर	१८ बभ तयर	१० रबभ तनय	१८ बन तयर	२७ ब तर	२७ ब तर	२३ भ वत	१३ यभन वत	१७ गभ वत	१९ वग भ	१७ वभ न	२५ वभ	२८½ ब र	२७ बत र	[illegible]३ [illegible]बग र
	उ.षा. १	२४½ भत	२६ भ	१२ गभ न	६½ रगब भन	१०½ बयर भन	१७ बय तभर	२५ बय तर	२७ बत र	२७ बत र	२३ भ वत	२३ भ वत	९ गभ वनत	८½ तगव यभन	२४ वभ य	२५ वभ	२८½ ब र	२८½ ब र	[illegible]१ [illegible]ब [illegible]र
मकर	उ.षा. २,३, ४	२७ तर	२८½ र	१४½ गन र	१२ गभ न	१६ भन य	२२½ यभ त	२० बय तभ	२२ बभ त	२२ बभ वत	२८ त र	२८ तर	१४ गन तर	४½ तयर गभन	२० रभ य	२१ रभ	२४½ भ त	२४½ वभ	[illegible]७ [illegible]भ [illegible]त
	श्रव. १,२, ३,४	२७ तर	२६ तर	१३½ यन र	११ यभ गन	१६ भन य	२५ भ य	२२½ बभ वय	२१ बभ वत	२२ बभ वत	२८ त	२६ यत र	१५ नत र	६½ तगर भन	१८½ रभ त	२० भर	२३½ भ व	२४½ भ व	[illegible]९½ [illegible]
	धनि. १,२	२० गत यर	११ यग नरत	२६ तय र	२३½ भ तय	२० गभ	१२ गभ न	९½ वबग भन	१६½ वयब गभ	१६ बग वतभ	२२ ग तर	१३ रगन तय	२८ तर	१९½ रभ त	५½ तगर भन	१२½ तयर गभ	१६ गभ वतय	१७½ गभ व	[illegible]५½ [illegible]न [illegible]य
कुम्भ	धनि. ३,४	२० तग यर	११ यग तनर	२६ तय र	३०½ तय	२७ ग	१९ गन	१२ गभ न	१९ गभ य	१८½ गभ त	१३½ गभ वतर	४½ तयर गभनव	१९½ भव तर	२५½ वर त	११½ वतर गन	१८½ वर गतय	१७½ गभ तय	१९ गभ य	१७ यभ न
	शत. १,२, ३,४	१५ गन तर	२१ ग तर	२८ तर	३२½ त	२५½ गत	२७ ग	२० गभ न	१२ गभ न	१३ गभ न	८ गभ वनर	१४½ गभ वतर	२०½ बभ तर	२६½ वर त	२०½ वर गत	१२½ वरत गन	११½ तग नभ	८½ तयग भन	२५ भ य
	पू.भा. १,२, ३	१८ नत यर	२५ य तर	२० गर तय	२४½ ग तय	३१½ त	३१½ त	२४½ भत	१७ भन य	१८ भन	१३ भन व	२० भर वय	१३½ गभ वतर	१९½ वर तग	२५½ वर त	१६½ वर यनत	१५½ भन त	१५½ भन तय	१७½ गभ तय
मीन	पू.भा. ४	१४½ बभ तनय	२१½ बय तभ	१६½ गब तभय	१९ गब तयर	२६ ब तर	२६ ब तर	२५½ बव तर	१८ बन वयर	१९ नब वर	१८ नभ	२५ भ य	१८½ गभ त	१७½ बग तभ	२३½ बभ त	१४½ बभ तनय	१६½ रबन वतय	१६½ रनब वतय	१८½ रबग व[illegible]
	उ.भा. १,२, ३,४	२४½ बभ त	१६½ बभ तन	१८½ गब तभ	२१ गब तर	२६ बत र	१८ नब तर	१७½ नब वतर	२५½ बर वत	२८ ब वर	२७ भ	१९ भन	२१ गभ	१८½ गब तभ	१६½ बभ न	२५½ बभ त	२७½ बव तर	२६½ बव तर	९½ वतर वयगन
	रेव. १,२, ३,४	२५ बभ	२४½ बभ त	११½ तगब भन	१४ गबन तर	१७ वन तर	२६ ब तर	२५½ बर वत	२४½ रब वत	२६½ रब वत	२५½ भ त	२७ भ	१४ भन ग	१३ बभ गन	२३½ बभ त	२३½ बभ त	२५½ बर वत	२६½ बर वत	१९½ बयर वतग

(ब=वर्णदोष। व=वश्यदोष । त=तारादोष । य=योनिदोष । र=राशीश दोष। ग=गणदोष। भ=भ कूट दोष। न=नाडी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग ४)

कन्या \ वर		तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा ३,४	स्वाती १,२,३,४	विशा. १,२,३	विशा ४	अनु. १,२,३,४	ज्येष्ठा १,२,३,४	मूल १,२,३,४	पू.षा. १,२,३,४	उ.षा. १	उपा. २,३,४	श्रव. १,२,३,४	धनि. १,२,	धनि. ३,४	शत. १,२,३,४	पू.भा. १,२,३	पू.भा. ४	उ.भा. १,२,३,४	रेव. १,२,३,४
तुला	चित्रा ३,४	२८ न	२७ ग य	३४½ त	२३½ भव त	६½ य गवत न भ	२०½ भ व त य	२७ तय र	१४ गभ तर	२२ ग त र	२५ ग त व	२६½ ग व	२३½ न व य	१८ नभ य	२६ भ य	१८½ ग भ त य	१२½ गभव तयर	३½ वत यग भन	१२½ यर गभ वत
	स्वाती १,२,३,४	२८ य ग	२८ न	२० न य ग	९ भवय नग	२१½ भव त	१६½ भव त ग	२३ तर ग	२७ त र ग	१९ तन र	२२ नव त	२३ न व त	२६½ व य ग	२१ य ग भ	२० ग य भ	२५ य भ	१९ व भ य र	१९½ व त भर	१२½ व त भनर
	विशा. १,२,३	३४½ त	१९ ग न य	२८ न	१७ भ व न	१६ ग व भय	२०½ भ व त य	२७ त य र	२२ ग त र	१४ ग न त र	१७ ग न व त	१७ ग न व त	३० व त य	२४½ भ त य	२६ भ य	२० ग भ य	१४ ग भ वयर	१३ ग य भतर	४½ गभव नतयर
वृश्चिक	विशा. ४	२२½ ब व भ त	७ बवग नभय	१६ ब व नभ	२८ न	२७ ग य	३१½ त य	२१½ ब व तयभ	१६½ ब व गभत	८½ बवग नभत	१२ गबन तर	१२ ब न गतर	२५ ब त यर	२४ ब व तयर	२५½ ब व यर	१९½ ब व गयर	१९ ग भ य	१८ ग य भ	९½ ग भ नतय
	अनु. १,२,३,४	६½ बवत भयगन	२१½ ब व भत	१६ ब व भयग	२८ य ग	२८ न	३१ ग	१५½ बवत गयभ	१३½ तबव नभ	२१½ ब व तभ	२५ ब त र	२६ ब त र	१२ तयब नरग	११ तयब वनरग	२१ बव तरग	२४½ बव यर	२४ भ य	१८ नभ	१७ भ
	ज्येष्ठा १,२,३,४	१९½ बव तभय	१५½ तबव गभ	१९½ बव भतय	३१½ त य	३० ग	२८ न	१४ ब व नभय	१६½ ब व तगभ	१६½ ब व तगभ	२० ग ब तर	२० गब तर	२५ बत यर	२४ बव तयर	१८ बव नरत	१० तबव यगनर	९½ गभ तनय	२१ गभ	२१ भ
धनु	मूल १,२,३,४	२६ त ब य र	२१ ग ब त र	२६ त ब य र	२२½ भव त य	१५½ ग व भयत	१५ यव नभ	२८ न	२८ ग	२६½ ग त	१५ ग ब भवत	१५ गब भवत	२० बभव तय	२८½ ब व य	२१½ ब न त	१४½ ग न बतय	१६ ग न वतय	२५ ग व त	२६½ व
	पू.षा. १,२,३,४	१३ ग ब तनर	२७ ब त र	२१ ग ब त र	१७½ ग व भ त	१५½ भव न त	१७½ ग व भ त	२८ ग	२८ न	३४	२२½ बभ व	२३ बभ व त	६ गबव भनतय	१४½ ग ब तनय	२३½ गब त	२८½ ब त य	३० व त य	२३ न व त	३१ त
	उ.षा. १	२१ गब तर	१९ न ब त र	१३ ग ब नतर	९½ ग व भनत	२३½ भव त	१७½ ग व भ त	२६½ ग त	३४	२८ न	१६½ बभ व न	१४½ ब भ व न	१५ गबव भ त	२३½ गब त	२३½ गब त	२९½ ब त	३१ व त	३१ व त	३३ व
मकर	उ.षा. २,३,४	२४ गब त	२२ न ब व त	१६ ग ब न त	१३ ग न त र	२७ त र	२१ ग त र	१६ गभ वत	२३½ भ व	१७½ नभ व	२८ न	२६ न	२६½ ग त	१७ गब भवत	१७ गबव भ त	२३ ब भ व त	३०½ त	३०½ त	२२½ त
	श्रव. १,२,३,४	२६½ ब व ग	२२ नब व त	१७ न ब गवत	१४ न त र	२७ त र	२२ त र	१७ भ व त ग	२३ भ व त	१४½ नभ व	२५ न	२८ न	२८ य ग	१८½ ब भ वयग	१८ बभव त ग	२१ बभ वतय	२८½ त य	२९½ त	२२½ त
	धनि. १,२	२२½ न ब व य	२४½ ग ब व य	२९ ब व त य	२६ त य र	१२ ग न तयर	२६ त य र	२१ भ व त य	७ गभय वनत	१६ गभ वत	२६½ ग त	२७ ग य	२८ न	१८½ बभ न व	२३½ बभ व य	१९ गब वतभ	२६½ ग त	१५½ गन त य	२२½ य
कुम्भ	धनि. ३,४	१८ नभ य	२० गभ य	२४½ भ त य	२५ त व य र	११ गवय तनर	२५ त व य र	२९½ त य	१५½ ग त न य	२४½ त ग	१८ गभ व त	१८½ गभ व य	१९½ भ व न	२८ न	३३ य	२८½ ग त	१८ गभ व त	७ तगभ वनय	१४ गयव भत
	शत. १,२,३,४	२६ भ य	१९ भय ग	२६ भ य	२६½ य व र	२१ ग व त र	१९ न व त र	२२½ न त	२४½ ग त	२४½ ग त	१८ गभ व त	१८ गभ व त	२४½ भ व य	३३ य	२८ न	१९ गन य	८½ गभ वनय	१७ गभ व त	१६ गभ व त
	पू.भा. १,२,३	१८½ गभ त य	२६ भ य	२० गभ य	२०½ गव य र	२६½ व य र	११ गवत यनर	१५½ नग तय	२९½ त य	३०½ त	२४ भ व त	२३ भ व त य	२० भग व त	२८½ ग त	१९ नग य	२८ न	१७½ न भ व	२२½ भ व य	२० भय व त
मीन	पू.भा. ४	११½ गबव भतयर	१९ बभ वयर	१३ गबव भयर	१९ गभ य	२५ भ य	९½ गभ नतय	१५ गब तनय	२९ ब व त य	३० ब व त	२९½ ब त	२८½ ब त य	२५½ गब त	१७ ग ब भ त	७½ गबय भतन	१६½ बभ त न	२८ न	३३ य	३०½ य त
	उ.भा. १,२,३,४	२½ यवबर गभनत	१९½ भवब त र	१२ गवर भयब	१८ गय भ	१९ नभ	२१ गभ	२४ गब वत	२२ नब वत	३० ब वत	२९½ ब त	२९½ ब त	१४½ गब तनय	६ गबव नभतय	१६ गबव भत	२१½ बभ त य	३३ य	२८ न	३५
	रेव. १,२,३,४	१२½ बभव तयर	११½ बभत वनर	४½ बभवन तगयर	१०½ नभ तयग	२७ भ	२२ भ ग	२६½ बग व	२९ ब व त	२१ नब वत	२०½ न ब त	२१½ न ब त	२२½ ब य त ग	१४ बवय भतग	१६ बभ वतग	१८ बय भवत	२९½ य त	३४	२८ न

(ब=वर्णदोष। व=वश्यदोष । त=तारादोष । य=योनिदोष। र=राशीश दोष। ग=गणदोष। भ=भकूट दोष। न=नाडी दोष।)

लग्न-गण्डान्त-कर्क सिंह वृश्चिक धनु मीन और मेष के अन्त एवं आदि की आधी घड़ी लग्न गण्डान्त होता है। वह भी जन्म में भयप्रद होता है।

अथ विवाहमासा : आचार्य चूड़ामणौ-''माङ्गल्येषु विवाहेषु कन्या-संवरणेषु च। दशमासाः प्रशस्यन्ते चैत्र-पौष-विवर्जिताः॥'' वर्षासु पाणिग्रहणं न केचित् केचिद् वदन्तीत्यपरो विशेषः। तस्मात्सदाचार इह प्रमाणं देशे यथा यत्र तथैव तत्र॥ केशवेन यदि नोररीकृतं श्रावणादिषु च पाणिपीडनम्। तेन चोक्तमपरैरुदाहृतं तद्विकल्प इति मन्यते मया॥ २॥

अथ जन्म-मासादिषु निषेधः-सबसे बड़े (जेठे) लड़के अथवा सबसे बड़ी लड़की (जेठी) के जन्ममास (अर्थात् जन्मतिथि से ३० दिन) जन्मनक्षत्र अथवा जन्म तिथि में विवाह करना शुभ नहीं है। द्वितीयादि गर्भोत्पन्न का दोष नहीं। **अत्यावश्यके परिहारः**-जातं दिनं दूषयते वसिष्ठः पञ्चैव गर्गस्त्रिदिनं तथात्रिः। तज्जन्मपक्षं किल भागुरिश्च व्रते विवाहे गमने क्षुरे च॥

यदि दो कार्यों की आवश्यकता हो तो-एक घर में दो शुभ काम करना मना है परन्तु अति आवश्यकता में ९ दिन का अन्तर देकर दो घरों में अलग-अलग मण्डप गाड़कर और जो पुरोहित पहला कार्य करा चुका है उसी से दूसरा कार्य न करावें, दूसरे आचार्य से करावें। इसी प्रकार जिस गृह में पहला कार्य हुआ हो तो दूसरे कार्य में दूसरे घर में मण्डप नाड़कर कार्य को करें।

अथ ज्येष्ठ विचारः-ज्येष्ठ पुत्र व कन्या का ज्येष्ठ मास में विवाह करना अशुभ है। अत्यावश्यकता में कृत्तिका सूर्य को छोड़कर दानादिपूर्वक करें

षट्मास के भीतर दो विवाह आदि का निर्णय-दो सगी बहनों का विवाह एक साथ या छः मास के अन्दर करें तो निस्संदेह ३ वर्ष के अन्दर अशुभ फल हो। पुत्र के विवाह के पीछे षट्मास तक कन्या का विवाह न करें और कन्या व पुत्र के पीछे छः मास तक यज्ञोपवीत न करें अर्थात् पहले कर लें और मंगल कार्य के पीछे अमंगल अर्थात् श्राद्ध तिलतर्पण भी न करें मुण्डन भी विवाह जनेऊ के पीछे न करें। वर्ष पलटने पर फिर भले ही शुभ कार्य कर लें। वहाँ छः मास का विचार नहीं है। यह ६ महीने का निषेध तीन पीढ़ी तक ही है।

विवाहादि शुभ कार्यों में मरणाशौच-साहे चिट्ठी (कुंकुम पत्रिका) आने पर विवाह दिन निश्चय हो जाने पर किसी की मृत्यु हो जावे तो माता के मरण से ६ मास, पिता के मरण से एक साल, स्त्री के मरण से तीन मास, भाई व पुत्र के मरण से १॥ मास कुल वालों के मरण से २२॥ दिन तक कोई शुभ कार्य न करें। अति संकट में ३० दिन के बाद शान्ति करके अथवा विशेष शान्ति और गोदान करके अशौच के बाद करें।

विवाह के शुद्ध मुहूर्त पंचांग के अन्त में दिये गये हैं। उनमें से उत्तम मुहूर्त देखकर और उसी दिन वर की राशि से सूर्य चन्द्र देखिए और कन्या राशि से चन्द्र गुरु देखिये, बस इसी को **त्रिबलशुद्धि कहते हैं**। यह त्रिबलशुद्धि जिस उत्तम विवाहलग्न के दिन मिले वही विवाह-दिन उत्तम हैं। यदि रवि, गुरु पूज्य हो तो मध्यम है, यदि सूर्य नेष्ट हो तो विवाह नहीं बनेगा - ऐसा कहना। इसी प्रकार कुमार के उपनयन में भी त्रिबल (गु.सू.चं) शुद्धि प्रथम देखें।''झष-चाप-कुलीरस्थो जीवोप्यशुभगोचरः अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयनादिपु॥ (वृहस्पतिः) ॥ अत्यावश्यकता में ''द्विरष्टों द्वादशस्तुर्योऽथाष्टम-स्त्रिगुणार्चनात्। उच्च उच्चांशके ग्राह्य : चन्द्रदष्टमगो रविः। नीचे नीचांशके त्याज्यः अरिलाभादिगोऽपि चेत्॥

तुलाराशौ अपूज्यःरविः-धर्म-धी-धन-गतो दिवाकरस्तौलिराशि-जनितस्य शोभनः।

आवश्यके पूज्य रवि परिहारः-गार्ग्याङ्गिरोवत्स वशिष्ठ गौतम पराशराद्या मुनयो वदन्ति। द्वितीयपञ्चांकगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात्परतःशुभावह॥ (मु०प्र०सा०)।

विवाहाद त्रिबल-शोधनम्

पूज्यगुरुः—१० ।६ ।३ ।१
श्रेष्ठगुरु :—९ ।५ ।११ ।२ ।७
नेष्टगुरु—४ ।८ ।१२
श्रेष्ठरविः—३ ।६ ।१० ।११
पूज्यरविः—२ ।५ ।९
विशेष पूज्य रविः—१ ।७
नेष्टरविः-४ ।८ ।१२
नेष्टचन्द्रः—४ ।८
श्रेष्ठचन्द्रः-१ ।२ ।३ ।५ ।६ ।७ ।९ ।१० ।११ ।१२

कन्या-वरयोः तैलादि-लापन (बन्न) दिन संख्या

राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तैत्य सं.	७	१०	५	१०	५	७	७	५	५	५	५	७

अथ विवाहे तिथि वार नक्षत्राणि -रो. मृ. उत्तरा ३. म. ह. स्वा. अनु. मू. रे. एतद्वेध-रहितेषु शुभेऽहि अमाक्षय-रहित-तिथिषु कात्यायन-मते अश्वि. चि. श्र. धनिष्ठास्वपि शुभम्॥

अथ विवाहांगकृत्यारम्भ मुहूर्त- वर कन्या की चन्द्रशुद्धि विचार कर विवाह दिन से पहिले ३। ६।९ इन दिनों को छोड़कर विवाह के नक्षत्रों में चन्द्रशुद्धि वाली सौभाग्यवती स्त्री के प्रथमोद्योग से हल्दी हाथ, दलना, पीसना, कूटना, मंगलकशादि स्थापन करना, घर लीपना, आंगन सफाई भूषण गढ़ाना, वस्त्र सिलाना, वेदी रचना, चन्दोया बांधना, गणेशादि पूजन और नान्दीश्राद्ध, मंगल स्नानादि सर्व कार्य का आरम्भ करना शुभ होता है।

विवाह-मुहूर्त में दस दोषों का विचार

विवाह के मुहूर्त में लता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चबाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धातिथि- इन दस दोषों का विचार करना आवश्यक है। इन सबका विचार करके इस वर्ष के विवाह मुहूर्त लग्न दिये हुए हैं। इन दसों दोषों में जो दोष जिस मुहूर्त में हैं वे क्रमानुसार टेढ़ी रेखा से सूचित किये गये हैं। उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है।

(१) लत्तादोष ज्ञानाय चक्रम्

सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहाः
१२	२२	३	७	६	५	८	९	लग्न नक्षत्र
दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दिशा
धननाशः	भयम्	मृत्यु	भयम्	बन्धुनाश	कार्यहानिः	कुलक्षयः	मरणं	फलम्

यथा-सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ.फा. का हो, सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिना तो, उ.फा. १२वाँ हुआ यह सूर्य की लत्तादोषयुक्त साहा हुआ। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की लत्ता भी जाने।

(२) पातदोष ज्ञानचक्र

रो.	मृ.	मघा.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा.	उभा.	रे	वि. नक्ष.	हर्षणवैधति साध्य व्यतिपात, गंड और शूल योगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इन नक्षत्रों में विवाह करने से पात दोष होता है।
आर्द्रा	मृ	अ	कृ.	भ	कृ.	अ.	रो.	भ.	भ.	अ	पातदूषित नक्षत्र	
पुन	आ	मृ	आ	मृ	श्र.	आ.	ज्ये.	पुन.	श.	ज्ये		
श	ज्ये	ज्ये	वि	श	ध.	उषा.	ध	श.	वि.	ध.		
पूफा	ध	पुष्य	पूफा	पूभ.	पुष्य.	पूभा.	श्ले.	वि.	उफा.	म.		
चि	म	ह	उ.भा.	स्वा.	ह.	पूषा.	मू.	ऽनु	पूफा.	पूफा		
मू.	ह	रे	पूभा.	म.	रे.	पूफा.	उभा.	उषा.	मू.	स्वा.		

(३)युति :-जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो उस ग्रह की युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च, मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता, किन्तु श्रेष्ठ है। सू.मं.शु.श.रा.के. की युति दारिद्र्य मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की युति विशेष करके वर्जित है।

(४) वेध दोष चक्रम्

रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा.	उभा.	रे.
अभि	उषा	श्रवण	रे.	उभा.	श.	भ.	पुन.	मृ.	ह.	उफा.

ऊपर के नक्षत्र का विवाह हो और नीचे के नक्षत्र पर ग्रह हो तो वेध दोष होता है। यह सर्वत्र अवश्य ही त्याग करना चाहिए।

(५) जामित्र दोष चक्रम्

रो	मृ	म.	उ. फा	ह.	स्वा	ऽनु	मू.	उ. षा.	उ. भा.	रे	वि. न.
अनु	ज्ये	ध.	पू. भा.	उ. भा.	अ.	कृ.	मृ.	पुन.	उ. फा.	ह.	ग्रह नक्षत्र

विवाह लग्न से सातवें ग्रह होने पर जामित्र दोष होता है। ऊपर वैवाहिक नक्षत्र और नीचे ग्रह नक्षत्र है। याने १४वें नक्षत्र में पापीग्रह का जामित्र दोष वर्जनीय है।

(७) एकार्गल-दोष

व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कम्भ, शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड ये योग हों और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित् सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है।

(८) उपग्रह

सूर्य के नक्षत्र से ५वें, ७वें, ८वें, १०वे, १४वें, १५वें, १८वें,१९वें, २१वें, २२वें, २३वें,२४वें और २५ वे नक्षत्रपर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

(९) स्थूल-क्रांतिसाम्य-दोष चक्रम्

मे.	वृ.	मि	कर्क	कन्या	तुला
सिंह.	म.	ध.	वृश्चि.	मी.	कुं.

नीचे और ऊपर की राशि पर सूर्य एवं चन्द्रमा हो तो स्थूल रूप से क्रांतिसाम्य दोष होता है यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे मेष के सूर्य सिंह के चन्द्रमा में या सिंह के सूर्य, मेष के चन्द्रमा में। सूक्ष्म क्रांतिसाम्य ही सर्वत्र वर्जित है। जिसका निर्णय महापातगणित से करना चाहिए।

(६) बाणज्ञान चक्रम्

बाण नाम	गतांशाःप्रति राशौ अर्कस्य	कर्मसु वर्ज्याः	वारे वर्ज्याः	समयपरत्वेन वर्ज्याः
रोग	८।१७।२६	व्रतबंध	रवौ	रात्रौ त्याज्यम्
अग्नि	२।११।२०।२९	गेहगोपे	भौमे	सदैव वर्ज्यम्
नृप	४।१३।२२	नृप सेवा	मन्दे	दिवा त्याज्यम्
चोर	६।१५।२४	यात्रायां	भौमे	रात्रौ वर्ज्यम्
मृत्यु	१।१०।१९।२८	विवाहे	बुधे	संध्ययोःवर्ज्यम्

(१०) दग्धातिथि दोषः

९	२	४	६	५	१०	सूर्य
१२	११	१	३	८	७	राशयः
२	४	६	८	१०	१२	तिथयः

इन संक्रांतियों में ये तिथियां दग्धा होती हैं। विशेषतःये मध्य प्रदेश में ही वर्ज्य हैं।-कश्यप

भुजंगं क्रान्तिसाम्यञ्च बाणवेधं तथैव च। लग्नहीन विवाहन्तु कलौ पञ्च विवर्जयेत्॥

लत्तादि-दोषाणां परिहार वाक्यानि-लत्ता मालवके (उज्जैन प्रान्त) देशे, पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्र बागर) जांगले (फिरोजपुर भटिण्डा प्रान्त)। एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्। ॥ उपग्रहर्क्षं कुरु वाह्लिकेषु (आगरा प्रान्त) कलिंगवंगेषु (जगन्नाथपुरी बंगाल अयोध्या) च पातितं भम्। सौराष्ट्र (काठियावाड़) शाल्वे (उज्जैन प्रान्ते) च लत्तितं भं त्यजेत्तु विद्धं किल सर्वदेशे॥ युतिदोषो भवेद् गौडे (बंगाले) जामित्रस्य च यामुने (मथुरा प्रान्ते)। मासदग्धाश्च तिथियो मध्यदेशे विवर्जिताः॥

विशेष परिहार-चित्रां गते पातविचित्रदेशे मैत्रे मघा मालवके निषिद्धाः पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजातः सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजंगपातः॥

युति परिहार-स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः। युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे तदा।। अत्यावश्यके वेधपरिहारः-पादमेकं शुभैर्विद्धमशुभैनेव कृत्स्नतः (नारद)॥ ग्रह प्रथम चरण में हो तो दूसरे नक्षत्र के चतुर्थ चरण में बेध होता है, यदि चतुर्थ चरण में हो तो प्रथम चरण विद्ध होता है। द्वितीय में हो तृतीय, तथा तृतीय चरण में ग्रह हो तो द्वितीय चरण विद्ध होता है। आवश्यकता में चरण मात्र का त्याग किया जाता है। भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च। शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः॥ अस्यापवादः-ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरयुक्तादिकानि च। भुक्त्वा चन्द्रेण युक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते। एकार्गलोपग्रह पात लत्ता-जामित्रकर्तर्युदयास्त दोषाः। नश्यन्ति चन्द्रार्क बलोपपन्ने लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषा॥ मु.चि.।

उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः।
केन्द्रसंस्थः सितो वापि पन्नगान् गरुडो यथा॥

विवाहे लग्न -शुद्धि चक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	भावाः
चं. पाप.	०	शु.	रा.	०	चं. शु. लग्नेश	सर्वो	च. मं. शुभाः लग्नेश	०	मं.	०	श.	त्याज्याः
चं.	कुलिकं क्रांतिसाम्यञ्च				चं.	मं.	चं. मं.	विद्धभञ्च				गोधूलौ त्याज्याः

लग्न भंग-योगा-व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ताः। लग्नेट् कविर्ग्लौ च रिपौ मृतौ ग्लौ लग्नेट् शुभाराश्च मदे न सर्वे (अस्तेऽब्जगुरू समौ)॥ वर्गोत्तमं विनान्त्यांशो विवाहे न शुभप्रदः। वर्गोत्तमश्चेदन्त्यांशः पुत्रपौत्रादिवृद्धिदः॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नं त्वष्टमो राशिरेव च। यदि लग्नगतः सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रदः॥ पंग्वन्धादिलग्नानां गौडमालवयोरेव त्यागः। बादरायण- मासशून्याह्वयास्तारा राशयो बधिरादयः। गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिताः।

कर्तरी दोषः-लग्नस्य पृष्ठाग्रगयोश्च साध्वोः सा कर्तरी स्यादृजुवक्रगत्योः। तावेव शीघ्रौ यदि वक्रचारौ न कर्तरी चेति पितामहोक्तिः॥ इय कर्तरी चन्द्रस्यापि द्रष्टव्या। केषाञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहारः-पापौ कर्तरिकारकौ रिपुगृहनीचास्तगौ कर्तरी दोषो नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्षष्ठदोषोऽपि न। भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद् भौमोऽष्टमो दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारिदोषोऽपि न।।

दोषापवादाः ज्योतिर्निबन्धे-दोषाश्च बहव सन्ति गुणाः स्वल्पाः कलौ युगे। तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणैः सह।। **अपवादान्तरम्**-उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः। केन्द्र संस्थः सितो वापि पक्षगान्गारुडो यथा॥ मुहूर्तलग्नषड्वर्गकुनवांश ग्रहोद्भवाः। ये दोषास्तान्निहन्त्येव यत्रैकादशगःशशी॥ अब्दायनर्तुमासोत्थाः पक्षतिथ्यृक्षसम्भवाः। ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे॥ लग्नाधिपो यदा केन्द्रे लग्नादेकादशालये। सर्वग्रहकृतं रिष्टमेकोपि विलयं नयेत्॥ बलवान् केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोषशतत्रयम्। द्यूनं विहाय दैत्येज्यः सहस्रं लक्षमंगिराः॥ स्मरण रहे, कि- पूर्वोक्त अपवाद वाक्यों में सप्तमरहित केन्द्र (१।४।१०)ही ग्रहण करना।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रद स्थानानि

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	केतु	ग्रहा.	मुहूर्त गणपतौ
३	२	३	१	१	१	३	३	३		लग्नं शुभं विवाहे स्याद् दशविंशोपकाधिकंम्,
६	३	६	२	२	२	६	६	६		
८	११	११	३	३	४	८	८	८		
११			४	४	५	११	११	११		
			५	५	९					
			६	६	१०					
			९	९	११					
			१०	१०						
			११	११						
३ ॥	५	१ ॥	२	३	२	१ ॥	१ ॥	१ ॥		विंशोपका बलम्

अथ गोधूलि लग्न विचार-लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी। तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम् ॥ लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्यद् गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति । लग्ने विशुद्धे सति वीर्य्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते ॥ मार्ग, माघ, फाल्गुन में संध्यासमय सूर्य गोलक समान दृष्टिगोचर होने पर चै. वै. में गौओं को धूली से आकाश आच्छादित होने पर, ज्येष्ठ, आषाढ़ में सूर्य आधा अस्त होने पर, श्रा. भा.आश्वि. का. में सूर्य पूर्ण अस्त होने पर गोधूलि लग्न होता है ।

गोधूलिके त्याज्या दोषाः-कुलिकं क्रातिसाम्यञ्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी । तथा गोधूलिकं त्याज्यं पञ्चदोषैस्तु दूषितम्। अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्के । अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने केपीछे । क्योंकि सूर्य अस्त से पहले वारबेला होगी और शनिवार को सूर्य अस्त से पहले (क्योंकि सूर्य अस्त हो जाने में कुलिकं मुहूर्त्त होगा) गोधूलि समझना ।

संकीर्ण वर्णसंकर चाण्डालादि जाति का विवाह मुहूर्त्त :- कृष्णपक्ष क्रूरवार निषिद्ध नक्षत्र योगों में संकीर्ण जाति वालों का विवाह धन, पुत्र , आयु प्रीति लाभ देता है । ऐसा शौनकादि मुनि कहते हैं ।

पुनर्विवाहे (रीत) सूर्यभात् शुभाशुभज्ञानाय चक्रम् ।

३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	दुर्भग	श्री	उन्नति	फल

अन्यच्च :- सूर्यभात् ४ । ११ । १८ । २५ संख्यकसाभिजिद्भेषु पुनर्विवाहे मृत्युः । अत्र तिथि- मासवेध भृगु-गुर्वस्तादि दोषोऽपि नावलोकनीयः ।

वधू प्रवेश का मूहूर्त- जब वधू विवाह हाने पर पति केघर पहले आती है वह वधू प्रवेश कह ।जाता है । विवाह से १६ दिन के भीतर सम दिनों में अथवा ५,७,९वे दिन,इनके उपरान्त एक मास तक विषम दिनों में, एकवर्ष के भीतर विषम मास में एक वर्ष के उपरांत ३ रे, ५वेंवर्ष में भी स्थिर लग्न में वधू प्रवेश शुभ है ।५वर्ष के उपरांत जब चाहे तब शुभ मुहूर्त्त में हो सकता है । १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनों में तिथ्यादि पंचागशुद्धि चन्द्रवल गुरुशुक्र के मूढत्व का भी विचार नहीं करना । व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा । अमासंक्राति - तिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि नाचरेत् ॥ रे, अश्वि रो, मृ. श्र. ध. ह. चि. स्वा. म. मू. उत्तरा ३ , पुष्य, अनु. इन नक्षत्रों में और च बु. वृ. शु. श. इन वारों में १ । २ । ३ । ५ । ६ । ७ । ८ । १० । ११। १२ । १३ । १५ तिथियों में ५ । ८ । ११ लग्नों में चतुर्थाष्टम शुद्ध हो तो वधू प्रवेश शुभ है ।

वधू-प्रवेश-समय- वधूप्रवेशो न दिवा प्रशस्तः राजप्रवेशो न निशि प्रशस्तः ।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः सत्कीर्तिदः स्यान्त्रिविधः प्रवेशः ॥

विवाहतः प्रथम वर्षे वधू-निवास फलम् - विवाह के बाद आषाढ़ मास में कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को क्षय मास में अपने शरीर को ज्येष्ठ में ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को, अधिक मास में पति को नाश करती है । विवाह के बाद चैत्र मास में पिता के घर रहे तो पिता को अशुभ है, सास आदि के अभाव में उस मास का कोई दोष नहीं ।

द्विरागमन का मुहूर्त्त- प्योके (पितृगृह) से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं । विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या पांचवे वर्ष वृश्चिक कुभ, मेष के सूर्य में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हो तब सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को २,३,६,७ या १२ वीं राशि के लग्न में ह., अश्वि., पुष्य, अभिजित्, तीनों उत्तरा, रो., स्वा., पुन., श्र., ध., श., मू., मृ., रे., चि., अनुराधा नक्षत्रों में शुभ है । शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ है ।

विशेष—द्विरागमं पाडषवासरान्त एकादशाहे समवासरेषु । नचात्र ऋक्षं न तिंदिनं योगो न वार शुद्ध्यादि विचारणीयम् ।

शुक्रस्य सम्मुखे दक्षिणे निषेध:—सम्मुख या दक्षिण शुक्र में यदि नूतन वधू जावे तो वन्ध्या हो, छोटे बालक को साथ लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो, गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न पावे । यदि ऐसे समय राजविद्रोह राजपीडन आदि उपद्रव या दुर्भिक्ष के दुख से यात्रा करनी पड़े एवं विवाह सम्बन्धी यात्रा में या देवतीर्थ यात्रा के सम्बन्ध में जाना पड़े तो सम्मुख या दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता । यदि रेवती से मृगशिर तक के चन्द्रमा में भी जावे तो दोष नहीं क्योंकि तबतक शुक्र अन्धा होता है ।

विशेष:—सिंहस्थे वा गुरौ शुक्रे संमुखेऽस्तगतेऽपि वा । शुभो दीपोत्सवे वध्वा: प्रवेश: पतिमन्दिरे ॥ अत्यावश्यकेऽभिमुखे शुक्रदोषनाशाय शान्ति:—राजते वाथ सौवर्णे कांस्य पात्रेऽथवा पुनः । शुक्लपुष्पांबरयुते श्वेत तण्डुल पूरिते ॥ निधाय राजतं शुक्रं शुचिमुक्ता फलान्वितम् । महाश्वेत गवायुक्तं सामगाय निवेदयेत् ।

प्रथम स्त्री संगम मुहूर्त—रजोदर्शनान्तर १६ रात्रि पर्यन्त ४ रात्रि के बाद समरात्रि में, (पञ्चदशवर्षोपरि रजोदर्शनाभावेऽपि) रो. मृ. पुष्य ह. चि. अनु. ध. उत्तरा ३, रिक्ता अमावस रहित तिथि में, शुभवार, रात्रि के प्रथम पहर को छोड़कर शुभ समय में चित्त को प्रसन्न कर प्रथम दिन स्त्री संगम करे । मनुष्य का स्त्री के प्रति कर्तव्य—स्त्री का अपमान या तिरस्कार न करे आदर सत्कार करे । विशेष गुप्त बात न कहे । और विशेषाधिकार भी न दे, क्योंकि स्त्री जाति पुरुष की समान कोटि में नहीं आ सकती । अपवाद में एक दो हो सकती हैं । प्रभु कृत शरीर रचना भी कोई वस्तु है, उसे समझना चाहिये । उनका दिल और दिमाग तथा ओज प्रकृति ने पुरुष से न्यून बनाया है । पशुओं में भी घोड़े हाथी सांड़ भैंस आदि अपनी स्त्री जाति पर पूर्ण प्रभुत्व रखते हैं ।

नववध्वा पाककर्ममुहूर्तं—द्विरागमनोत्तरं मृ. उत्तरा. पुष्य. कृ. ज्ये. श्र. ध. श. रो. वि. रे. एषु नक्षत्रेषु शुभावसरे (रविभौमवर्जिते), रिक्ताक्षयरहित तिथौ, २।५।८।११ लग्नेषु, चतुर्थाष्टशुद्धे सप्तमाने च बलान्विते सति पाककर्म शुभम् ।

सधवास्त्रीणां वस्त्रसुवर्णरत्नभूषणादिधारण मुहूर्त:—ह चि. स्वा. अनु. धन. रे. अश्वि. एषु भेषु बु. गु. शु. वारेषु रिक्तामावस्या रहित तिथिषु, नूतन वस्त्रसौवर्णरत्नरजत दन्तादि भूषणानां धारणं प्रशस्तम् ॥

चूड़ीचक्रम्—सूर्यनक्षत्राद गणना ८ अशुभ । ३ शुभ । ४ शुभ । ७ अशुभ । २ अशुभ । १ शुभ । २ शुभ । १ अशुभ । गुरुशुक्रोदय में शुभ ।

वस्त्र धारणे विशेष :—विप्रादेशात्तथोद्वाहे क्षमापालेन समर्पितम् । निन्द्येऽपि विष्ण्य वारादौ धारयेच्च नवाम्बरम् ।

भूषणघट्टन मुहूर्त—ह. म. पुष्य. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. उत्तरा ३. रो. एषु नक्षत्रे रिक्तामक्षय रहित तिथौ, शुभवासरे द्विपुष्करत्रिपुष्करयोगे वा भूषणं कार्यम् ॥

दुकान खोलने का मुहूर्त—ह. चि. रो. रे. उत्तरा ३. पुष्य. अश्वि. अभि. इन नक्षत्रों में ४।६।१४।३० इन तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में मंगलवार को छोड़कर अन्य वारों में, कुम्भ लग्न को छोड़कर अन्य लग्नों में २।१०।११ स्थानों में शुभ ग्रह बैठे हों, ३।६ में पापग्रह हों, ८।१२ वाँ स्थान पाप रहित हो, अपनी शुभ दशा भी चलती हो तो दुकान करना शुभ है, चन्द्र लग्न में हो तो अत्यन्त शुभ है ।

भर्तृगृहात्पितृगृहागमनमुहूर्त:—पूर्वा ३ भ. मू. म. ज्ये. आ. आश्ले. एतद्भिन्नेषु, चं. बु. शु. वारेषु सत्तिथौ शुभ लग्ने कुयोगादिराहित्य प्रशस्त: ॥

घोड़े पर चढ़ने का मुहूर्त—भ. आर्द्रा. आश्ले. म. पू. ३, ज्ये. मू. इन नक्षत्रों को छोड़कर शेष नक्षत्रों में रविवार को शुभ है ।

हट्टचक्र—सूर्य नक्षत्र से दुकान खोलने के दिन तक नक्षत्र गिनकर चक्र से शुभाशुभ फल जाने ।

नक्षत्र	२	३	४	४	३	४	४	४
स्थान	आसन	मुख	अग्नि	नैऋत	सन्मुख	वायव्य	ईशान	मध्य
फल	सौख्य	विक्रयनाश	अर्थनाश	सुख	महाश्रेष्ठ	चोर भय	सर्वहानि	शुभप्रद

सेवाकर्म (नौकरी) मुहूर्त:—अ. मृ. चि. ह. पुष्य. अनु रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, र. बु. बृ. शु. वारेषु शुभ हे लग्नस्थे, १०।११ सूर्ये भौमे वा स्वामिसेवकयो: राशीशयोर्निमैत्र्यां सत्यां शुभ: ।

व्यवहार (बही) पत्रारम्भ महूर्त—अश्वि. रो. मू. पुन. पु. उत्तरा ३, ह. चि. अनु. श्र. रे एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, सू. चं. बु. बृ. श. वारेषु शुभे युते शुभे लग्ने चरे द्विस्वभावे च व्ययाष्ट रहिते पापै: केन्द्रकोणगै: शुभै: सत् ॥

द्रव्यप्रयोगमुहूर्त—पून. स्वा. मृग. रे. चि. अनु. वि. पुष्य. श्र. ध. श. अश्वि. एषु नक्षत्रेषु, १।४।७।१० लग्नेषु ८।५।८ शुद्धिरहिते द्रव्य प्रयोग: शुभ: । अत्रावसरे ९।५ शुभग्रहाणां तु न कोऽपि दोष ।

ऋण लेने के लिये वर्जितकाल—मंगलवार, संक्रान्ति दिन, वृद्धियोग, हस्तनक्षत्रयुक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो । मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है । बुध वार को धन न देना चाहिए । कृ. रो. आर्द्रा, श्ले. उ. ३, वि. ज्ये. मू. नक्षत्रों में भद्रा व्यतिपात और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं या झगड़े आदि पर उतारू होना पड़ता है ।

श्रीकाशीनाथमते क्रयविक्रय मुहूर्त—पुष्य. पूभा. अनु. श्र. ह. म. स्वा. उतरा ३. आश्ले. रे. एषु भेषु, सत्तिथौ शुभ दिने उत्तम शकुनं विचार्य क्रयविक्रयणं कार्यम् ।

वस्तु खरीदने के नक्षत्र—रे. शत. अश्वि. स्वा. श्र. चि. वारों में बुध, रवि श्रेष्ठ माना गया है ।

वस्तु बेचने के नक्षत्र—पूफा. पूपा. पूभा. वि. कृ. श्ले. भ. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गये हैं ।

नोट—बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचने वालों को ९५ फी सदी नुकसान रहेगा इसमें संशय नहीं । इसी कारण खरीदने बेचने के नक्षत्र दिखाये गये हैं, परन्तु सम्प्रति प्रचलित सट्टे जैसे भयानक व्यापार में तो धैर्य का काम ही नहीं, सिवाय घबराहट के दिन भर में १० बार बेचना, २० बार खरीदना ऐसे व्यापारी क्या करेंगे इन नक्षत्रों को । लेकिन हमारा कहना है कि विश्वास करके परीक्षा तो कीजिये बात कहां तक सच है । सट्टे में भी प्रथम बार व्यापार करने वाले व्यापारी

अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहां तक सत्य हैं।

नालिश (अर्जी) का मुहूर्तः—४।६।१४ तिथि हो, मं. श. हो, कृ. आर्द्रा. अ.भ्र. श्ले. म. ज्ये. मू. वि. पूर्वा ३. नक्षत्र हो, भद्रा होवे तो अत्युत्तम है।

गृहादि निर्माण में आय विचार

आमभात् वासकर्तु नक्षत्रं यावद् गणना कार्या स्थाननक्षत्र फलम्		
मस्तके	७	धनलाभः
पृष्ठे	७	हानिःनैस्वम्
हृदये	७	सुखलाभः
पादे	७	पर्यटनम्

गृहस्वामी के हस्तादि लम्बाई चौड़ाई को परस्पर गुणा कर आठ का भाग देवें, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वज, २ धूम्र, ३ सिंह, ४ श्वान, ५ वृषभ ६ गदर्भ, ७ हस्ति, ८ (०)। इनमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और दो आदि सम संख्या को अशुभ जानना। गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिये और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिये। ३२ हाथ लम्बे चौड़े घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है और न चार द्वार वाले घर में ही। ब्राह्मण को ध्वजाय, क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शूद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है। अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ है।

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान

घर के क्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई चौड़ाई के गुणन) को आठ से गुणाकर २७ का भाग दे। जो अंक शेष रहे तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जाने। इस नक्षत्र को ८ से भाग देवे। शेषांक तुल्य व्यय जाने। आय से व्यय कम हो तो शुभ अन्यथा अशुभ।

वास्तु भूमि का शुभाशुभ जानना

नई बस्ती में गृहादि बनाना हो तो भूमिपूजन पूर्वक शाम को एक हाथ चौड़ा एक हाथ लम्बा एक हाथ गहरा गड्ढा बनाकर उसको जल से भर देवें। प्रातःकाल उसको देखें यदि जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हुआ हो तो अशुभ है।

मकान बनाने के लिये पृथ्वी की शुभाशुभ परीक्षा

मकान की नींव को इतना गहरा खोदे कि जल दीखने लगे अथवा दूसरी मिट्टी जब तक निकले अथवा साढ़े तीन हाथ गहरी खोदे अर्थात् मनुष्य के बराबर खोदे। खोदते समय जो जमीन में पत्थर निकले तो धन आयु की वृद्धि हो और जो गुठली निकले तो धननाश हो और जो हाड़ राख बाल निकले तो मकान बनाने वाले को व्याधि पीड़ा हो;

गृहारम्भमुहूर्तः—वैशा. श्रा. मार्ग. माघ. फाल्गुन और सौर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं. भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं। २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ और कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा इन तिथियों में, चं. बु. गु. शु श. वारों में रो. मृ. चित्र ह. स्वा. अनु. उत्तरा ३. ध. श. रे. वेधरहित नक्षत्रों में, २।३।५।६।८।११।१२ लग्नों में पञ्चवाण और भूमिशयन से रहित दिनों में लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह और ३।६।११ वें स्थान में पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्स चक्र व मासादि का विचार नहीं करना।

गृहारम्भे वत्सचक्रम्
सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ-नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें।

स्थानानि	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाहः
अ. पादे	४	शून्यमसत्
पृ. पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्तिः
द. कुक्षौ	४	लाभःशुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाशः
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीड़ा असत्

विशेषः—पुष्य. ३ रो. म. आश्ले. पूषा. इनमें से जिस पर बृहस्पति हो उस नक्षत्र में और बृहस्पति को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो. ह. अ. उफा. चि. इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्रमें बुधवार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं। बि. अ. चि. ध. श. आर्द्रा इनमें से जिसपर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धनधान्यदायक होता है।

भूमिप्रसुप्तज्ञानम्—"संक्रांति मिति दिन पांचवें सप्तम नवमं जोय। दस इक्कीस २४ में षट् दिन पृथ्वी सोय। तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५।११।७।६।२।१० एताघटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्जनीया:। अन्यच्च सूर्य के नक्षत्र से ५।७।९।१२।१९।२६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी शयन के कारण मकान की नींव, तड़ाग बापी कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता।

गृहमध्ये कूपविचार

मध्य	ई.	पू.	आ.	द.	नै.	प.	उ.	वा.
अर्थहानि	सुपुष्टि	सुप्राप्ति	पुत्रनाश	स्त्रीनाश	गृहेशनाश	संपत्	सुख	शत्रुभय

अथ चुल्लिचक्रविचारः

सूर्य के नक्षत्र से ४ नक्षत्र पीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्युप्रद। ८ बाहू के सुन्दर-सुख भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भुज के भोगदायक। २ चरण के नाशक। यह चुल्लिचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डित जन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चुल्हा बनावे तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावे।

नूतनगृहप्रवेशे मुहूर्तः

माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठ मासेषु शोभनाः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञायः सौम्य (मार्ग) कार्तिक मासयोः॥ (यहां चन्द्रमास लेना) उत्तरा ३. अनु. रो. मृ. चि. रे. इन नक्षत्रों में रिक्तामारहित तिथियों में चं. वृ. श. इन वारों में २।५।८।११ लग्नों में अत्यावश्यके ३।६।९।१२ लग्न में भी, लग्न से १।२।३।५।७।९।१० इन स्थानों में शुभग्रह हों, ३।६।११ में क्रूर हों, १।६।८।१२ वें चन्द्रमा न हो, चौथा ८ वाँ स्थान शुद्ध हो, जन्म लग्न या जन्म राशि से ८ वीं राशि लग्न में न हो, चन्द्र तारा शुभ हों और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो तो आगे गौ कन्या जलपूर्ण पुष्पमाला युक्त कलश शंखध्वनि मंगल-गान के साथ दम्पत्ति को गृह प्रवेश शुभ है।

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त—पुराने अर्थात् जीर्ण या तृण कुटीर अथवा अग्नि-वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुये नए घर में भी वै. श्रा. का. और मार्गशीर्ष. फा. मास में शत., पुष्य, स्वा., और धनि. नक्षत्रों तथा गुरु शुक्र के अस्त में भी गृह प्रवेश हो सकता है।

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्
खाते राहोर्मुखात्पृष्ठदिग्भागः शुभदो भवेत्

राहुमुख	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां	आग्नेय्यां
देवालया-रम्भे सूर्यः	मी. मेष वृष	मि. क. सिंह	कर्क तुला वृश्चिक	धनु मकर कुम्भ
गृहारम्भे सूर्यः	सि. कं. तु.	वृश्चि. ध. मकर	कुम्भ मीन मेष	वृष मिथुन कन्या
जलाशया-रम्भे सूर्यः	मि. कुं. मी.	मे. वृष मिथुन	कर्क सिंह कन्या	तुला वृश्चिक धनु
खातदिशा-ज्ञानम्	आग्नेय्यां	ऐशान्यां	वायव्याम्	नैर्ऋत्यां

द्वारशाखाचक्रम्
सूर्यनक्षत्रात्

स्थान.	न.	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्तिः
कोण	८	उद्वसनं
शाखा	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाशः
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम् ।

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम्
सूर्यभात्

५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

कूप तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त—अनु. ह. तीनों. उ., रो. ध. श. म. पू.षा. रे. पुष्य. मृ. नक्षत्र हों वा चन्द्रमा मकर के उत्तरार्ध, मीन या कर्क में हो, लग्न में बुध या गुरु हों, शुक्र १० वें स्थान में हो और पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है । यदि २।१०।४।११।१२ लग्न हों तो अत्युत्तम है ।

सूर्यनक्षत्रात्कूपवानलचक्रम्

ईशान ३ खार जल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्ने. ३ सुजल
उत्तर ३ उत्तम जल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षिण ३ निर्जल
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नैर्ऋत्य ३ अमृत जल

सूर्यभात्तडागचक्रम्

ई. २. जलनाश	पूर्व २ शोक	आ. २ जलाधिक्य
उ. २ अमृत जल	मध्य ५ बहुजल	द. २ जलनाश
वा. २ जलनाश	प. २ बहुजल	नै. २ अमृतजल

गणनाक्रम्—मध्यपूर्व आग्नेय दक्षिणादिक्रमेण बोध्यम्—

अवशिष्टानि ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति तत्फलम्—वारिवाहे वारिहानिः । गणनाक्रम—पूर्व आग्नेय द० नै० प० वा० उ० ई० मध्ये वारिवाह ।

रोहिणीभात् वापीचक्रम्

ईशान श. भ. कृ. मध्यजल	पूर्व पुन. पु. श्ले. जलाभाव	आग्नेय म. पूफा. उफा. मध्यजलम्
उत्तर पूभा. उभा. रे. मिष्टजलम्	मध्य रो. मृ. आर्द्रा शीघ्रजलम्	दक्षिण ह. चि. स्वा. जलाभाव
वायव्य श्र. ध. श. क्षारजलम्	पश्चिम मू. पू. उषा. अमृतजलम्	नैर्ऋत्य वि. अनु. ज्ये बहुजलम्

जलाशयारामदेवप्रतिष्ठामुहूर्त :—

देवतारामवाप्यादिप्रतिष्ठामुत्तरायणे ।
माघादिपञ्चमासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिने ॥
मातृभैरववाराहनारसिंहत्रिविक्रमाः ।
महिषासुरहंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने ।

अश्वि० रो० मृ० पुष्य, ह० चि० स्वा० अनु० श्र० ध० श० उत्तरा० ३. रे० एषु भेषु कुजशनिवर्जितवारेषु २। ३ । ५ । ७ । ८ १०।११।१२।१३ एतत्तिथौ शुक्ले १ । २ । ३। ५ तिथिषु कृष्णे, गुरुशुक्रयोः नीचनिर्बलास्तादि-रहितकाले, कर्तुः सूर्यचन्द्रतारानुकूल्ये सति जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नरहिते स्थिर-(२।५।८।११) लग्नेषु लग्नात् १।४।७।१०।९।५।२।११ स्थानेषु शुभैः, ६ । ११ नेन्दुभिः पापैः पूर्वाह्णे देवप्रतिष्ठा कार्या ।

देवताविशेषेण लग्नम्—सिंहे सूर्यो शिवो द्वन्द्वे लग्ने स्थाप्याः स्त्रियां हरिः । कुम्भे वेधाश्चरे क्षुद्राश्च गदेव्यः स्थिरेऽखिलाः ॥ यस्य देवस्य यत्तिथिवारनक्षत्रादिकं तद्दिनेयदि तस्य प्रतिष्ठा भूहूर्तो भवेत्तदा अत्युत्तमः ॥

वास्तुशान्तिमुहूर्तः—श्र० ध० मृ० मू. अनु० रे० ह० चि० स्वा० उत्तरा ३. पुन. पु. रो० अश्वि० एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदानपुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम् ।

'अग्नि का वास किस लोक में है—जिस दिन हवन करना हो उस दिन तिथि और वार की संख्या जोड़कर एक और जोड़ना पुनः ४ का भाग देना यदि पूरा भाग लग जाय (० शेष रहे) अथवा तीन शेष रहे तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुखकारक होता है, शेष १ बचने पर आकाश में प्राण-हानिकारक, शेष २ बचने पर पाताल में धनहानि करता है । तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से, वार गणना रविवार से करनी । इसके बाद आहुति-चक्र जरूर देखिए ।

ग्रहमुखे होमाहुतिज्ञानाय चक्रम्
(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

सू०	बु०	शु०	श०	चं०	मं०	गु०	रा०	के०	ग्रहा
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्ष०
नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट	फलम्

विशेषः—यात्राविवाहव्रतगोचरेषु चौलोपनीताद्यखिलव्रतेषु । दुर्गाविधानेषु सुत-प्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम् ।। महारुद्रव्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कास्तराहुणा । नित्यनैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत् ॥ दिग्दाहेऽप्यथवा घोर महास्ते भूमिकम्पने । केतूनामुदये शान्तौ चक्र यत्नेन चिन्तयेत् ॥ लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणे महाविधौ । देवखातभवने सरोत्सवन्नग्निचक्रमवलोकयेत्सुधी ॥ दुर्गभंगे गृहे वाऽपि विवादे शत्रुविग्रहे । शान्तिकर्म [illegible]

पापग्रहमुखहवनमध्ये शान्तिः—क्रूरग्रहमुखे चेत् सम्पाते हवने पुनः । शान्तिं विधाय

नां दद्यात् ब्राह्मणाय कुटुम्बिने । आयसीं प्रतिमां ,कृत्वा निक्षिपेत्तामधोमुखीम् । गोमूत्र-मधुगन्धाद्य रचितां प्रतिमां ततः । कुण्डे निधाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते ॥

अथ ऋणी -धनी विचार :- स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत् । अष्टभिश्च हरेद् भागं योऽधिकःस ऋणी भवेत् ॥ (अर्थात्- अपने वर्ग को दूना कर दूसरे वर्ग को जोड़ना फिर ८ का भाग देना । फिर दूसरे का वर्ग दूना करके अपना वर्ग जोड़ना फिर ८ का भाग देना । जिसका भाग - शेषांक अधिक बचे वह दूसरे का ऋणी होगा ।), लेकिन वशिष्ठ आदि का मत है कि जिसका शेषांक कम बचे वह दूसरे का ऋणी होता है ।

हलप्रवहणमुहूर्त—मृ. रे. चि. अनु. रो. उत्तरा. ३. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. स्वा. पु. श्र. ध. श. मू. म. वि. एषु भेषु रिक्तामाषष्ठषष्ठमीरहित सत्तिथौ शुभग्रहस्य वासरे, १।५।७।१०।११ लग्नेषु भूमिशयनभद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्या हलप्रवहणं शुभम् ।

हलचक्रम् सूर्यभुक्तनक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें				
३	८	६	८	नक्षत्र
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फलम्

बीजवपने राहुचक्रम् राहुनक्षत्रात् दिनभं यावत् गणना कार्या								
८	३	१	३	१	३	१	३	४
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीजवपने मुहूर्त—ह. अश्वि. पुष्य. उत्तरा ३. चि. अनु. मृ. रे. स्वा. ध. म. मू. एषु भेषु सत्तियौ भौमातिरिक्तवारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः ।

विशेषः—रवौ रौद्रा (आर्द्रा)—द्यपादस्थे यदि संजायते रजः ।
तस्माद्दिनत्रयं तत्तु बीजवापे परित्यजेत् ॥

नवान्नभक्षण मुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. विषघटी रहित नक्षत्रों में शुभ हैं; नन्दा रिक्तातिथियों और पौष चैत्र को छोड़कर सू. बु. गु. शुक्रवार शुभ हैं ।

गौ आदि पशु लेने का मुहूर्त—अश्वि. पुन. पु. ह. वि. ज्ये. धनि. शत. रे. नक्षत्र में गौ लेना बेचना । अन्य पशु पुन. पूर्वा ३, ह. अनु. ज्ये. मू. धनि. रे. में लेना बेचना शुभ है । गाय लेनी हो तो उ. फा. से दिन नक्षत्र तक गिने, ३ तक लाभदायक, ५ तक हानि, ११ तक अर्थलाभ, १६ तक सुख, २२ तक महालाभ, २३ तक वृद्धि, २७ तक भय होता है । वृषभ (बैल) लेना हो तो ६ नक्षत्र लाभदायक फिर दो दो के क्रम से गाय के समान फल जानें । महिषी (भैंस) लेनी हो तो भी गौनक्षत्रगणना क्रमसे शुभाशुभफल सूर्य नक्षत्र तक गिनें (नौमी चौदस चौथ चौपाया । मंगल हानि करे घर आया)

सूर्यनक्षत्रात्मकाष्ठादि (गुहारा आदि) संस्थापनचक्रम्							
६	२	४	४	४	४	४	नक्षत्र संख्या
उत्तमपाक शुभ	धनदहन नेष्ठ	सर्पभय नेष्ठ	मित्रलाभ शुभ	रोगभय नेष्ठ	क्वाथकर्म नेष्ठ	सुखं शुभ	फलम्

लतावृक्षारोपण मुहूर्त—मृ. रे. चि. अनु. उत्तरा ३. रो. ह. पुष्य. अश्वि. श. मू वि. नक्षत्रों में रिक्तामा रहित शुभ तिथियों में और चं. बु. बृ. शुक्रवार हों, शुक्लपक्ष में ४।१।११।१२ लग्न में शुभ हैं । तृणकाष्ठादिसंग्रहे निषेधः—तृण काष्ठ का सञ्चय और पलंग बुनवाना आदि कर्म कुम्भ मीन के चन्द्रमा में नहीं करना चाहिये ।

औषध का मुहूर्त—ह. अ. पुष्य. अभि. मृ. रे. चि. अनु. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मूल, जन्मनक्षत्र को छोड़कर इन नक्षत्रों में ४।६।१४ को छोड़कर शुभ तिथियों में, भौम शनि को छोड़कर अन्यवारों में शुभ है ।

अथ यात्रा मुहूर्तः—

ह. मं. श्र. अश्वि. पुष्य.पुन ध. अनु. रे. एषु भेषु यात्रा अत्युत्तमा; रो.उत्तरा ३. पूर्वा ३. एषु भेषु मध्या; भ. कृ. आर्द्रा आश्ले. म. चि. स्वा. वि. ज्ये. एतद्भेषु निन्द्या । तत्रात्यावश्यकेष्वपि

दिग्द्वारलग्नानि

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	[illegible]
१।५।९	२।६।१०	३।७।११	४।८।१२	शुभम्
२।६।१०	३।७।११	४।८।११	१।५।९	मध्यम
४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	३।७।११	अधमम्
१ [illegible]	४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	अ०अ०

यात्रायां भरण्यादिभानां क्रमात् ७।२१।१४।१४।११।४०।१४।१४।१४ एता घटिका गमन कर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः, २।३।५।७।१०।११।१२ कृष्णपक्षस्य प्रपित्तु द्विग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा ।

यात्रा में शुभाशुभ लग्न—जन्म लग्न और जन्म राशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांक में यात्रा कदापि न करे । शुभ लग्न वह है जब १।४।५।७।९।१० स्थानों में शुभ ग्रह और ३।६।१०।११वें पापग्रह हों । अशुभ लग्न वह है जब १।६।८।१२वें चन्द्रमा, १०वें शनि, ६वें शुक्र, १२।६।८वें लग्नेश हो । अन्यच्च यात्रायामष्टमं शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा । दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने ॥

जन्म लग्नेश दशमेश अस्त हों वा मारक दशा हो तो सुमुहूर्त में भी दूर की यात्रा न करे, प्रथम तीर्थ-यात्रा वा देवदर्शन गुरुशुक्रास्त में वर्जित है ।

दिक्शूलज्ञानायचक्रम्									नक्षत्रशूलचक्रम्			
पूर्व	आ.	दक्षि.	नैऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर	ईशा.	दिशा	पू.	द.	प.	उ.
चं. श.	चं. व.	गुरु	सू.श.	सू.शु.	भौम	मं.	बु.श.	वारा	ज्ये.	पू.भा	रोहि.	उ.फा.

दिक्शूलपरिहारः—न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्यदैत्यंज्यदिवाकराणाम् । दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवार दोषः ॥१॥ सूर्यवारे घृतं प्राश्यं चन्द्रवारे पयस्तथा । गुडमंगारके वारे बुधवारे तिलानपि । गुरुवारे दधि प्राश्यं शुक्रवारे यवानपि । माषान्भक्त्वा शनिवारे शस्ते [illegible] दोषभाक् ॥२॥

यात्रा में कालज्ञान		योगिनीवासचक्रम्								
शनौ	पूर्व	पू०	आग्नि०	दक्षि०	नैऋ०	पश्चिम	वाय०	उत्तरे	ईशा	दिशा
शुक्रे	आग्नेय	१।९	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०	तिथि
गुरौ	दक्षिणे									
बुधे	नैऋत्ये									
भौमे	पश्चिमे									
चन्द्रे	वायव्ये									
रवौ	उत्तरे									
सम्मुखं नेष्ट										

योगिनी साधारण यात्रा में सामने और दाहिने अशुभ होती है, पीछे और बायें की शुभ, युद्ध यात्रा की बायें ओर की और सम्मुख की विशेष त्याज्य है। समयशूल उषा काल में पूर्व को, गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्ध रात्रि में उत्तर को और मध्याह्नकाल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिये। गर्गगुरु अङ्गिरामुहूर्त—गर्ग जी के मत से ५ या ४ घड़ी रात रहे गमन करे। बृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करे। अङ्गिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाय। भगवान् के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करने से शुभ होता है। पञ्च पञ्च (५५) उषाकाल: सप्तपञ्चा (५७) अरुणोदय:। अष्टपञ्च (५८) भवेत्प्रात: शेषं सूर्योदयोभवेत् ॥

चन्द्रवासचक्रम्			
पूर्वे	दक्षि.	पश्चि.	उत्तरे
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

एकस्मिन् राशौ आवश्यक-घट्यात्मक चन्द्रवासचक्रम्								
पू.	द०	प०	उ०	पू०	द०	प०	उ०	दिशा
१७	१५	२१	१६	१७	१५	२०	१४	घटी

घट्यात्मक चन्द्रवास जिस दिशा का चन्द्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिये।

कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में दक्षिण को कदापि न जावे।

चन्द्रफलम्—सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुख सम्पद:। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षय: ॥१॥ सर्वे दोषालयं यान्ति पूर्णचंद्रे हि सम्मुखे ॥इति॥ सम्मुखे चन्द्र प्रशंसा-करण-भगणदोषं, वार संक्रान्ति-दोषं, कुतिथिकुलिकदोषं यामयामार्द्धदोषम्। कुजशनिरवि-दोषं राहुकेत्वादिदोषं हरति सकलदोषं चन्द्रमा सम्मुखस्थ: ॥

सर्वाङ्कसिद्धियोग:—शुक्लादि तिथि तथा वार की संख्या के जोड़ को तीन जगह रख क्रमश: ७। ८। ३ का भाग दे। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्त्य में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्र अङ्क आने से सौख्य जय लाभ हो। विजयादशमी को बिना सर्वाकादि मुहूर्तों के भी यात्रा सफल होती है। बायाँ स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायाँ चलते समय दक्षिण व नैऋत को मत जाओ, हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो कदापि न जावे, क्योंकि मुहूर्त शकुन से मन की इच्छा प्रबल है।

सर्वकालेषु प्रस्थान विधानम्—यदि यात्रा मुहूर्त किसी अत्यावश्यक कार्यवश विलम्ब हो जाय तो उसी मुहूर्त में ब्राह्मण जनेऊ माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधु घृत व रुपया और शूद्र फल को अपने वस्त्र में बांध किसी घर के या नगर के बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान रक्खे। अथवा मन की सबसे प्यारी वस्तु को रख देना चाहिये।

यात्रा के पहले त्याज्य वस्तु—यात्रा के तीन दिन पहले दूध त्याग दे, पांच दिन पूर्व हजामत, तीन दिन पूर्व तैल, सात दिन पूर्व मैथुन, समर्थ न हो तो एक दिन पहले तो सब त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य करे।

दिने चतुर्घटिका मुहूर्तम्						
सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध.	बृह.	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात्रौ चतुर्घटिका मुहूर्तम्							
घटि	सू.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.
३॥।	शु.	चं.	का	उ.	अ.	रो.	ल.
७॥	अ.	रो.	ला.	शु.	च.	का.	उ.
११।	चं.	का.	उ.	अ.	रो.	ला.	शु.
१५	रो.	ला.	शु.	चं.	का.	उ.	अ.
१८॥।	का.	उ.	अ.	रो.	ला.	शु.	च.
२२॥	ला.	शु.	चं.	का.	उ.	अ.	रो.
२६।	उ.	अ.	रो.	ला.	शु.	ज.	का.
३०	शु.	च.	का.	उ.	अ.	रो.	ल.

सूचना—यदि ३० घटी से न्यूनाधिक दिन या रात्रि का मान हो तो उसमें ८ का भाग देने से एक भाग के घटी पल ज्ञात होंगे।

यात्रायां शुभ शकुनानि—मृग बांये ते दाहिने जो आवे तत्काल। धन धन लक्ष्मी बहु मिले चलते प्रात:काल ॥ विप्र, दो अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, गोदधि, सर्षप, कमल, निर्मल वस्त्र, वाद्य, वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, ससुतस्त्री, गौरी कन्या, धोबी, कार्यसिद्धि वाक्य, सजलपूर्णघट, यात्रा पश्चाद्रिक्त घट यात्रा समय देखने में शुभ है। अशुभ शकुनानि—बन्ध्या स्त्री, चर्म, अस्थि, इन्धन, सन्यासी, भैसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मर्जार युद्ध, कुटुम्बकलि, विधवा, जातिभ्रष्ट, अङ्गहीन, छिक्का, दुष्ट-वाणी, यात्रा समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद है।

रामदैवज्ञोक्तं आवश्यके यात्रा मुहूर्तचक्रम्

पौष	मा.	फा	चै.	वै.	ज्ये	आ	श्रा	भा	आ	का	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	प्रीति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारिद्र्य	दारिद्र्य	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दु:ख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	लाभ	सौख्य
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	[illegible]	[illegible]	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश-	सिद्धि	लाभ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शुभ	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

तृतीया-त्रयोदशी, चतुर्थी-चतुर्दशी, पञ्चमी-पूर्णमासी का फल समान जानो, अमावस्या में यात्रा वर्जित है, पक्ष का विचार नहीं है ।

यात्रा में सर्वत्र चल रही नासिका के श्वास की ओर का पांव आगे उठाकर चले इसी तरह सवारी पर चढ़े कार्य सिद्धि, यात्रा सफल होगी ।

नौका यात्रामुहूर्त—चि. ह. पु. मृ. पूर्वा ३. अनु. श्र. ध. एषु भेषु सत्तियो शुभेऽह्नि चन्द्र-तारानुकूल सति शुभ: ।

यात्रानिवृत्तौ प्रवेशमुहूर्त—मृ. रे. अनु. रो. उ ३. ह. श. पुष्य. स्वा. श्र. ध. एषु भेषु चं. बु. बृ. शु. श :वारेषु १।२ ३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु, ३।५।३।८।६।११। १२ एषु लग्ने, १।४।७।१०।५।६ स्थानेषु शुभै: ३।६:११ स्थानेषु पापै: ४।८ शुद्धौ शुभ; चि. कृ. पू ३. म. भ. मू. ज्ये. आर्द्रा. पाश्ले नक्षत्राणि; ४।६।१४।६ १२।८।३० तिथय: सू. मं. वारौ. १।४।७।१० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि । मंगल को मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है । विशेष:—प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनम् । नवमे जातु नो कुर्यादिने वारे तिथाविति ।

अथ घातचन्द्रवारादीनां चक्रम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	राशया
मे.	क.	कु.	सि	म.	मि.	ध.	वृष.	मियुन	सिंह	ध.	कुम्भ	घातचन्द्र
र.	श.	च.	बु.	श.	श.	बृ.	श.	शु.	मं.	बृष.	शु.	घा
म.	ह.	स्वा.	ऽनु.	मू.	श्र.	श.	रे.	म.	रो.	आ.	इलषा	घातन
मे.	ध.	ध.	मि	वृश्चि.	वृश्चि	मी	ध.	कन्या	वृश्चि.	मि.	मेष.	चन्द्रधा
का.	मा.	पौ.	मा.	फा.	चैत्र	वै.	ज्ये.	आ.	श्रावण	भा.	आ.	घातमास
वि	शु.	प.	घृ.	प्री.	सु.	ऽगं	वृष.	वै.	गं.	व्या.	वै.	घातयोग
१	२	४	७	१०	१२	६	८	६	३१	३	५	घातलग्न
१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५	घाततिथि
६	१०	७	७	८	१०	६	३	८	६	८	१०	
११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	१४	१३	१५	

युद्ध, विवाद, राजसेवा, वाहन रोगादि कार्यों में घात चक्र देखना और तीर्थ यात्रा तथा विवाहादि शुभ कार्यों घाततिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं है । "घाततिथिर्घातारघातनक्षत्रमेव च । यात्रायां वर्जयत्प्राज्ञस्त्वन्यकर्मसु शोभनम् ।"

वाम दक्षिण निर्देश —

अग्रे चक्रांकित सर्व फल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना, पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ भयकारी फल होता है । जो फल पल्लीपात का कहा वही [illegible] [illegible] । सरट के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल वृथा होता है ।

अथाङ्गविभागे पल्ली—(छिपकली, कोढ़किरली) पतनफलम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभ	भ्रूमध्ये	राज्यसंबंध	वामपादे	नाश: ।
नासाग्रे	व्याधि	वामकर्णे	बहुलाभ	अधरोष्ठे	ऐश्वर्यलाभ
वामभुजे	राज्यभय	स्तनयो:	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यता
जानुद्वये	शुभागम	हस्तयो:	वस्त्रलाभ	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाश:
कटिभागे	अश्वलाभ	वा मणिबंधे	कीर्तिनाश:	न:श्री	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्टान्नभोजनं
ललाटे	बन्धु दर्शन	उत्तरोष्ठ	धननाश:	पादमध्ये	स्त्रीनाश
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धि	नेत्रयो:	धनप्राप्ति:	पादान्ते	मृत्यु
कण्ठे	शत्रुनाश:	उदरे	भूषणलाभ:	केशान्ते	रणम्
जंघयो:	शुभम्	स्कन्धयो:	विजय:	नखेषु	धान्यलाभ
द. मणिबंधे	मनस्ताप:	हृदये	धनलाभ:	दक्षांगुष्ठे	धनलाभ:

पल्लीपतने प्रशस्तवारतिथ्यर्णानि—यदि छिपकली १।२।३।५।६।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है । तथा चं. बु. गु. शु. इन वारों में भी शुभ फल देती है । पु. अश्विनि. रो. मृ. पुन. उफा. ह. चि. स्वा. ध. रे. अनु श. ये नक्षत्र शुभ फलदायक हैं । हतोऽन्यदभेषु निद्या: ।।

पल्लीपाते कर्त्तव्यकर्म—पल्ली (किरली) तथा सरट (गिरगट) स्पर्श होने पर वस्त्र सहित स्नान करे । जन्म नक्षत्र, मृत्युयोग, द...न भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रहयुक्तलग्न में तथा अष्टमचन्द्रमा से पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है । उसकी शान्ति के लिए जप, होम, मृत्युञ्जय का जप वा तिल-स्वर्ण दान पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छायापात्र दान भी करना उत्तम है ।

छिक्का फलम्—छिक्का प्राय सब दिशाओं की नेष्ट होती है, गौ की छिक्का मरण करती है । मदिरा के योग अथवा—छींक सूंघनी छल कर लीन्हीं, पीन सरदी घास फल होनी । छींकि पीठि की कुशल उचारे; बाईं कारज सर्व सवारे ॥१॥ सन्मुख छींक लड़ाई भाखे; छींक दाहिनी द्रव्य विनाशै ॥२॥ ऊंची छींक कहे जयकारी; नीची छींक होय भयकारी । अपनी छींक महा दुखदाई; ऐसे छींक विचारो भाई ॥३॥ कन्या विधवा मालन धोवन धोबिन रजस्वला वैश्या चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है । भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले ।

अथ शुभ छिक्का—आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजने । वामांगे पृष्ठतश्चैव षट् छिक्कास्तु: शुभावहा: । एक नाक दो छींक; काम बने सब ठीक ।।

तीर्थ में मुण्डन विचार—मुण्डन चोपवासञ्च सर्वतीर्थेष्वयं विधि:, वर्जयित्वा कुरुक्षेत्रं विशालां (उज्जयिनी) गिरिजां गयाम् ।

सुगम प्रश्न विचार

जब कभी आपको किसी भी प्रश्न के पूछने की इच्छा हो तब शुद्धतापूर्वक "ॐश्री कीर्ति भवान्यै नम:" इस मंत्र को श्रद्धा पूर्वक सात बार पढ़कर नीचे दिए गए चारों यंत्रों पर क्रमश: अंगुली रखें। फिर यंत्रों के उन चारों अंकों को, जिन पर अंगुली रखी गई हो, जोड़कर ९ से भाग दें। शेष बचे हुए अंक के सम्मुख अपनी अभीष्ट प्रश्नावली, उत्तरावली में (अर्थात् यदि मुकदमे का प्रश्न हो तो "मुकद्दमा का फल" वाली उत्तरावली में, नौकरी का प्रश्न हो तो "नौकरी का फल" वाली उत्तरावली में..... इत्यादि) अपना उत्तर देखें। उदाहरण लीजिए— आपका प्रश्न मुकद्दमा के विषय में है कि जीत होगी या नहीं? आपने चारों यंत्रों में क्रमश: ४,३,७ एवं ९ पर अंगुली रखी, जिनका योग २३ हुआ। २३ को ९ से भाग देने पर ५ शेष बचा। अब आप अपना उत्तर "मुकद्दमे का फल" शीर्षक वाली उत्तरावली में ५ संख्या के सम्मुख देखिए। उत्तर है— "विशेष खर्च करके जीत होगी"। यहां पर यह स्मरण रहे कि यदि शेष ० बचें तो उसे ९ समझें। **नोट-प्रश्न एक ही बार करना चाहिए। बार बार दिल्लगी से प्रश्न करने पर फल नहीं मिलेगा।**

अंगुल रखने के चार यंत्र

यन्त्र सम्मुख			यंत्र ऊर्ध्वमुख			यंत्र अधोमुख			यंत्र विमुख		
४	३	८	६	१	८	४	९	२	८	३	४
९	५	१	७	५	३	३	५	७	१	५	९
२	७	६	२	९	४	८	१	६	६	७	२

उत्तरावली

मित्र मिलाप फल (१)	मुकद्दमे का फल (२)	यात्रा का फल (३)	पशु लेने का फल (४)	लाभालाभ का फल (५)
१. मित्र शीघ्र ही मिलेगा।	१. मुकद्दमा देर से होगा।	१. गमन मत करो, लाभ नहीं।	१. पशु से पूरा लाभ होगा।	१. इस माल से लाभ उत्तम होगा।
२. मित्र विश्वासघाती है।	२. मुकद्दमे में जीत होगी।	२. देशाटन में हानि लाभ बराबर है।	२. पशु से हानि लाभ सम।	२. इस माल से लाभ कुछ न होगा।
३. मित्र कुछ विलम्ब से मिले।	३. हाकिम ठीक न्याय नहीं करेगा।	३. भूलकर भी मत जाओ,हानि होगी।	३. पशु मत खरीदो भला नहीं।	३. यह काम घाटे का है।
४. मित्र धोखा देगा।	४. कुछ कुछ जीत होगी।	४. शुभ दिन में जाओ लाभ होगा।	४. तेरा विचार ठीक नहीं है।	४. चोरी या नुकसान का भय है।
५. मित्र बड़ा सज्जन प्रेमी है।	५. विशेष खर्च करके जीत होगी।	५. देशाटन में कोई चमत्कार है।	५. फायदा रहेगा तो सही।	५. सांझी या व्यापारी दगा करेगा।
६. मित्र कष्टभय युक्त है।	६. कष्ट अधिक होगा।	६. शकुन विचार कर गमन करो, लाभ होगा।	६. आजकल पशु लेना देना बुरा है।	६. माल से सवाया लाभ होगा।
७. मित्र अच्छा है, शीघ्र मिलेगा।	७. तुम्हारी हार होगी।	७. यात्रा पीड़ा कारक होगी।	७. पशु संग्रह मत करो पछताओगे।	७. माल कुछ देर से लाभ देगा।
८. मित्र मतलबी है।	८. सुलह हो जायेगी।	८. यात्रा में आराम मिलेगा।	८. तेरा विचार विलम्ब से फलेगा।	८. खरीदो मत, पड़ा है तो बेचो।
९. मित्र दूसरे से मिलावट रखता है।	९.पंचायत मिलकर फैसला करेगी।	९. यात्रा सफल हो पर खर्च विशेष होगा।	९. लेना देना ठीक नहीं, हानि लाभ सम।	९. माल में गहरा नफा मिलेगा।

नौकरी का फल (६)

१. नौकरी जरूर मिलेगी।
२. देर से मिलेगी, धीरज रखो।
३. काम नहीं बनेगा, सचेत रहो।
४. खर्च करने से कार्य बनेगा।
५. यहां कुछ नहीं और फिकर करो।
६. शत्रु रुकावट करेंगे, ग्रह दान दो।
७. किसी की सहायता से काम बनेगा।
८. इस विचार से अनेक विघ्न होंगें।
९. काम सिद्ध न होगा।

विद्या परीक्षाफल (७)

१. अभी उत्तीर्ण होना दूर है ।
२. विद्या से कुछ लाभ नहीं।
३. मनोकामना पूरी होगी।
४. विद्या सामान्य सफलता देगी।
५. विद्या ही परम लाभकारी होगी।
६. उत्तीर्ण होने में कष्ट होगा।
७. अच्छे दरजे में पास होगा।
८. विद्या से विशेष लाभ न हो।
९. विद्या लाभकारी न होगी ।

परदेशी प्रश्न फल (८)

१. परदेशी शीघ्र ही आवेगा।
२. बीमारी से लाचार है।
३. मार्ग में चला आ रहा है ।
४. दूर देशान्तरों में विचरता है।
५. रास्ते में ठगा गया है ।
६. अभी लौटने का विचार नहीं है।
७. वह परदेश में ही प्रसन्न है।
८. खर्च में तंग है, कैसे आवे।
९. परदेशी पराधीन हो गया है।

शत्रुनाश प्रश्न फल (९)

१. शत्रु दुष्ट है दमन न होगा।
२. शत्रु से तुम्हारी जीत होगी।
३. शत्रु द्वारा विशेष हानि होगी।
४. मित्र की सहायता से जय हो।
५. शत्रु निर्बल हो गया, डरो मत।
६. विश्वास न करो, उससे भय है।
७. राज्य की सहायता से भय मिटे।
८. सुलह हो जायेगी।
९. शत्रु के कारण द्रव्यनाश होगा।

मंत्र सिद्ध करने का फल (१०)

१. इस साधना में उपद्रव होगा।
२. मन निश्चित चंचल होगा।
३. यह साधना शुभ नहीं ।
४. साधना गुरुकृपा से पूर्ण होगी।
५. प्रारम्भ करने पर कष्ट होगा।
६. साधना सफल नहीं होगी।
७. देरी बाद सिद्धि होगी।
८. परिणाम अच्छा नहीं होगा।
९. इस सिद्धि को खेल मत समझो।

क्रियाणा लेने का फल (११)

१. क्रियाणा लेने से अच्छा लाभ है।
२. क्रियाणा लेने में लाभ थोड़ा है।
३. क्रियाणा लेने में हानि है।
४. क्रियाणा लेने में हानि है,न लो।
५. क्रियाणा मत लो, नुकसान है।
६. क्रियाणा लेने में लाभ है।
७. क्रियाणा महंगा होगा।
८. लाभ न होगा, मत लो।
९. क्रियाणा लेने में लाभ होगा।

बाग लगाने का फल (१२)

१. बाग लगाने से अच्छा लाभ है ।
२. बाग देर से फल देगा।
३. बाग लगाने में लाभ नहीं।
४. बाग अधिक रुपया खा जावेगा।
५. जंगली जन्तु बाग को नष्ट करेंगे।
६. बाग सुरक्षित नहीं रहेगा।
७. बाग लाभप्रद होगा।
८. बाग लगाना कलह का मूल होगा।
९. मनोरथ सफल होगा।

शासक के दर्शन का फल (१३)

१. विचार छोड़ दो, कुछ लाभ नहीं।
२. राजा के दर्शन में हानि है ।
३. राजा के दर्शन से मनोरथ पूर्ण होगा ।
४. राजा का दर्शन विलम्ब में फल देगा।
५. लाभ हुआ चाहता है, वैरी रोकता है।
६. राजा के दर्शन में कोई लाभ नहीं।
७. राजा आदर करे,जगत् में नाम हो।
८. इस झगड़े में मत पड़ो, पश्चाताप होगा।
९. राजा का दर्शन अफल होगा।

बन्ध-मोक्ष फल (१४)

१. खर्च करने से सत्य छूटेगा।
२. नहीं छूटेगा, कितनी ही कोशिश करो।
३. जल्दी छूटेगा, देर नहीं होगी।
४. रुपया खर्च करने से छूटेगा ।
५. धन खर्च करने से छूटेगा।
६. देर से छूटेगा, सत्य मानो।
७. सिफारिश से छूटेगा।
८. जल्दी छूट जायेगा।
९. अभी नहीं छूटेगा।

मकान बनाने में हानि लाभ (१५)

१. मकान बनाओ सुख मिलेगा।
२. अधिक दिनों में पूरा होगा।
३. इस कार्य में लाभ नहीं ,मत करो।
४. द्रव्य का खर्च विशेष होगा।
५. इस कार्य में शत्रु उपद्रव करेगा।
६. मकान निर्बल खराब बनेगा।
७. इस मकान से लाभ होगा।
८. इस मकान पर सदा झगड़े रहेंगे ।
९. पृथ्वी का भाग पृथ्वी में रहेगा।

इच्छा पूरी होगी कि नहीं (१६)

१. इच्छा शीघ्र ही पूर्ण होगी।
२. अधूरी इच्छा पूर्ण होगी।
३. इच्छा पूर्ण होने में विघ्न।
४. निष्फलता है।
५. देर से होगी।
६. इच्छा पूर्ति में कुछ विघ्न, बाधाएं।
७. इच्छा पूर्ण होगी।
८. इच्छा पूर्ण न होगी ।
९. किसी की सहायता से पूर्ण होगी।

दुकान करूं या नहीं (१७)

१. दुकान करने से लाभ अच्छा है।
२. दुकान करने से लाभ नहीं ।
३. दुकान करो, लाभ बहुत होगा।
४. दुकान से लाभ है, परन्तु खर्च बहुत होगा।
५. दुकान मत करो, हानि है।
६. लाभ-हानि समान है, न करो।
७. लाभ अच्छा होगा, दुकान करो।
८. दुकान में लाभ न होगा।
९. दुकान में लाभ अच्छा होगा।

खेती करने का फल (१८)

१. खेती में लाभ रहेगा ।
२. वर्षा थोड़ी होने का डर है ।
३. खेती को कीड़े का भय है ।
४. मनोकामना सिद्ध होगी ।
५. जितनी मेहनत उतना लाभ।
६. खेती करो पर सावधानी से।
७. खेती में ओले का भय है।
८.वायु के कारण कुछ हानि होगी।
९. खेती में हानि रहेगी, मत करो।

रोगी का प्रश्न फल (१९)

१. यह रोगी अधिक दिन तक रहेगा।
२. ग्रहदशा खराब है, शांति करो।
३. यह रोग ईश्वर प्रकोप का फल है।
४. चिन्ता न करो, आराम होगा।
५. रोगी की आबोहवा बदली करो।
६. रोगी को पथ्य से रखो।
७. चिन्ता न करो,कुछ दिन भारी हैं।
८. आराम हो जायेगा,पर खर्च अधिक है ।
९. होनहार में किसी का वश नहीं चलता।

संतान भाग्य में क्या है? (२०)

१. संतान आपके भाग्य में नहीं।
२. प्रेतशांति से होगी।
३. संतान कमजोर होगी।
४. अपने इष्टदेव की पूजा से।
५. नेमव्रत से होगी।
६. गया या पिहोए विधि से।
७. होकर नष्ट होने का भय है।
८. संतान की आशा छोड़ो।
९. सप्ताह श्रवण से होगी ।

धर्म दीक्षा-फल (२१)

१. धर्म में प्रीति थोड़ी है ।
२. धर्म से अधिक प्रीति हो।
३. धर्म करते रोग हो।
४. धर्म में यश बढ़े ।
५. धर्म से आकुलता हो ।
६. धर्म से नाम स्थिर रहे।
७. धर्म करते मृत्यु हो।
८. धर्म से वृत्ति उखड़े।
९. धर्म-दीक्षा से शांति मिले।

अनाज खरीद फल (२२)

१. अनाज में भारी लाभ होगा।
२. नफा टोटा समान रहेगा।
३. घाटा रहेगा।
४. अन्न के खराब होने का भय है।
५. सांझा व्यापार न करें।
६. देर से बिकेगा।
७. अनाज में सवाये होंगे।
८. बेचना ठीक है, लेना मत।
९. प्रश्न फल अशुभ है ।

पुत्र गोद लेने का फल (२३)

१. गोद लेने से नाम रहेगा।
२. यह लड़का वफादार नहीं।
३. लड़का खर्च करायेगा।
४. लड़का अच्छा नहीं ।
५. अच्छी निभेगी।
६. सावधानी से गोद लेना।
७. बे-मुहब्बत निकलेगा।
८. घर में अनबन रहेगी।
९. सुखदाई नहीं ।

तबादले का प्रश्न (२४)

१. तबादला होगा।
२. कुछ रुकावट के साथ होगा।
३. तबादले में विघ्न आवे।
४. तबादला अभी नहीं।
५. तबादला होगा।
६. तबादले में देर है।
७. तबादला जरूर होवे।
८. अभी ठहरो।
९. देरी से होगा ।

कर्ज लेने देने का परिणाम (२५)

१.यहां से कर्ज लेना देना अच्छा है।
२. जैसा प्रेम अब है आगे नहीं रहे।
३. लेने देने का नतीजा खराब रहेगा।
४. अन्त में मुश्किल होगी।
५. दिया सो खोया, लिया सो कमाया।
६. इस जगह हानि-लाभ सम हैं।
७. लेने देने में कोई हरज नहीं।
८. अन्त समय अदालत में जाना होगा।
९. नफा नुकसान बराबर रहेगा।

गर्भ में क्या है ? (२६)

१. इस गर्भ की सुखाशा नहीं।
२. पुत्री का जन्म होगा।
३. शुभ लक्षण वाला पुत्र है।
४. लड़की होगी पर आयु कम।
५. गर्भ अधूरा रहे, या बच्चा मरे।
६. पुत्र का जन्म होगा।
७. दीर्घायु पुत्र होगा।
८. कन्या जन्मेगी।
९. जोड़े बालक होंगे

विवाह शादी का फल (२७)

१. विवाह देरी से होगा।
२. विवाह होगा पर स्त्री अच्छी नहीं।
३. विवाह न होगा।
४. विवाह जरूर होगा।
५. विवाह में रुकावटें होंगी।
६. किसी की खुशामद करो।
७. खर्च करो, काम बनेगा।
८. थोड़ा विलम्ब से होगा।
९. स्त्री गुण वाली मिलेगी ।

रोजगार प्रश्न फल (२८)

१. रोजगार जल्दी ही अच्छा होगा।
२. विशेष परिश्रम करने से रोजगार होगा।
३. किसी प्रकार की ठेकेदारी करो।
४. जल, मिट्टी, कोयला से लाभ होगा।
५. अब इस व्यापार में हानि होगी ।
६. दुश्मन नुकसान करेंगे, सावधान ।
७. रोजगार ठीक होने में देर है।
८. खोटे ग्रह की दशा है अभी चुप रहो।
९. जो विचारा है, वह पूर्ण नहीं होगा।

चोरी गई वस्तु का फल (२९)

१. वस्तु शीघ्र मिलेगी।
२. खर्च करने पर माल मिलेगा।
३. पता पूरा लगे पर माल न मिलेगा।
४. चोर पक्का है, माल न मिलेगा।
५. किसी की मदद से माल मिलेगा।
६. चोर ने तेरी वस्तु और को दे दी ।
७. माल आधा नष्ट हो गया ।
८. माल नहीं मिलेगा, आशा छोड़ो।
९. [illegible]

गुप्त चिन्ता का फल (३०)

१. मन की इच्छा पूर्ण होगी ।
२. काम बनने में कुछ देर है।
३. काम का नतीजा खराब होगा।
४. किसी का भरोसा न करो।
५. चिन्ता न करो, काम बनेगा।
६. मन की मन में ही रहेगी।
७. तेरा दुष्ट से वास्ता पड़ा है।
८. देरी से काम बनेगा ।
९. चिन्ता सच्ची है, किसी की मदद लो।

सांझेदारी में लाभ होगा ? (३१)

१. सांझे में लाभ होगा।
२. सांझे में लाभ कम होगा।
३. सांझे में हानि का भय है ।
४. लाभ होगा, परन्तु ठहर कर।
५. हानि का भय है।
६. लाभ होगा।
७. लाभ होगा,परन्तु अंत में गड़बड़ी का भय है
८. लाभ की आशा व्यर्थ है ।
९. लाभ होगा, विश्वास रखो।

खोया पशु किधर मिलेगा (३२)

१. पशु दक्षिण में है, नहीं मिलेगा।
२. पश्चिम में गया है,मिलेगा।
३. उत्तर-पश्चिम के कोण में गया है, नहीं मिलेगा।
४. उत्तर दिशा में ढूंढो,मिलेगा।
५. पूर्व की ओर गया है, जल्दी ढूंढने से मिलेगा
६. उत्तर में ही मिलेगा।
७. पूर्वोत्तर कोण में गया है मिलना कठिन है।
८. दक्षिण में गया है, मिलेगा।
९. पश्चिम में गया है,खर्च से मिलेगा।

मेरा यह वर्ष कैसा है ? (३३)

१. यह वर्ष शुभ रहेगा ।
२. वर्ष कष्टप्रद है।
३. वर्ष मध्यम है।
४. वर्ष अधिक कठिनाइयों वाला है।
५. वर्ष शुभ लाभप्रद है।
६. वर्ष साधारण है।
७. वर्ष शुभ है।
८. वर्ष हानिकर है, ग्रहशान्ति करो।
९. इस वर्ष भाग्यवृद्धि होगी।

कुश्ती लड़ने का फल (३४)

१. प्रभु का ध्यान करो, जीतोगे।
२. सावधान, शत्रु प्रबल है ।
३. मत लड़, गड़बड़ मचेगी।
४. लड़ाई-झगड़े का भय है ।
५. कुश्ती कर, जीतेगा।
६. मत घबड़ा, जीतेगा।
७. जीतने में शत्रु विघ्न डालेंगे।
८. तेरे हारने का योग है ।
९. विजय होगी ।

ग़ायब व्यक्ति जीवित है ? (३५)

१. जीवित नहीं।
२. वह जीवित है ।
३. जीवित नहीं है।
४. जीवन में सन्देह है ।
५. जीवित है।
६. जीवित नहीं ।
७. जीवित है ।
८. जीवित नहीं।
९. जीवित है ।

यह व्यक्ति विश्वासयोग्य है ? (३६)

१. विश्वासयोग्य है।
२. कुछ विश्वास-योग्य कम है ?
३. विश्वासयोग्य नहीं।
४. ईमानदार है ।
५. भरोसा कर सकते हैं।
६. भरोसा मत करो।
७. विश्वास-पात्र है ।
८. विश्वास-योग्य नहीं है ।
९. विश्वास-पात्र है ।

इस काम में लाभ है ? (३७)

१. इस काम से सुख-लाभ होगा ।
२. इस काम में दुःख-हानि होगी।
३. इस काम में हानि-लाभ समान ।
४. इस काम में हानि दुःख होगा।
५. इसमें लाभ सुख है।
६. लाभ सुख मध्यम।
७. सुख लाभ होगा।
८. सावधान, हानि दुःख होगा ।
९. सुख लाभ होगा ।

मुझे यहां लाभ होगा (३८)

१. अन्य स्थान पर जाओ, लाभ होगा।
२. इसी स्थान पर लाभ होगा।
३. अन्य स्थान पर जाना लाभप्रद है।
४. अन्य स्थान पर लाभ रहेगा।
५. यहीं ठहरो, कुछ दिन बाद लाभ होगा
६. यहीं ठहरो, दूसरी जगह भी कष्ट हो
७. यह स्थान मत छोड़ो, देर से लाभ है
८. दूसरी जगह जाना ठीक है।
९. परिश्रम करो, ग्रहशान्ति से लाभ होगा

यह खबर झूठी है या सच्ची (३९)

१. यह खबर सच्ची है।
२. यह बात झूठी है ।
३. बात सच्ची है।
४. बात झूठी है ।
५. बात सत्य है ।
६. सत्य है ।
७. कुछ सत्य है ।
८. निराधार है ।
९. सच्ची है ।

आज का दिन अच्छा है ? (४०)

१. आज का दिन अच्छा है ।
२. आज सावधान रहें।
३. अच्छा दिन है ।
४. खराब है ।
५. अच्छा दिन है ।
६. अशुभ चिन्ताप्रद है।
७. शुभ दिन है ।
८. बहुत ज्यादा खराब है ।
९. मध्यम है ।

रोग, ग्रह-दोष या अन्य पीड़ा (४१)

१. कर्मजन्य शारीरिक कष्ट है ।
२. रोग से ही पीड़ित है ।
३. ग्रहकृत मानसिक रोग है।
४. प्रेतपीड़ा है, शान्ति करावें।
५. शत्रुकृत टोना आदि कसर है।
६. ग्रहपीड़ा है, शान्ति करावें।
७. शत्रु ने कुछ कराया है, रामरक्षा पढ़ें।
८. रोग कष्टसाध्य है, शिवार्चन करें।
९. कर्मजन्य फल से विवश है ।

नया नल, कूप आदि कैसा रहेगा ? (४२)

१. शीघ्र जल मिलेगा।
२. खण्डित जल मिलेगा।
३. सुन्दर जल मिलेगा।
४. जल नहीं मिलेगा।
५. अमृत जल मिलेगा।
६. जल मिलेगा।
७. मिश्रित, कम जल मिलेगा।
८. अभी जल नहीं मिलेगा।
९. जल कम वा क्षार मिलेगा।

इस व्यक्ति से कार्य सिद्ध होगा (४३)

१. इस व्यक्ति के द्वारा सफलता होगी।
२. इसके द्वारा कार्य सिद्ध नहीं होगा।
३. कार्यसिद्धि में सहायता मिलेगी।
४. इससे काम सिद्ध न होगा।
५. इसके द्वारा कार्य सिद्ध हो जायेगा।
६. यह दिल से काम नहीं करेगा।
७. बड़ी खुशामद से सिद्ध होगा।
८. इससे कुछ आशा न करो।
९. मिलो , कार्य बनेगा ।

मुझे इस काम में सफलता मिलेगी ? (४४)

१. सफलता की कम आशा है।
२. बड़े परिश्रम से सफलता होगी।
३. सफलता मिलेगी।
४. सफल होना मुश्किल है।
५. सफल हो जाओगे, डटे रहो।
६. सफलता देर से मिलेगी।
८. किसी की सहायता से सफलता मिलेगी।
८. सफलता की आशा नहीं ।
९. निराशा के बाद सफलता मिलेगी ।

केरल मत से प्रश्न के पिण्ड द्वारा शुभाशुभ फल

प्रश्नकर्त्ता के मुख से जो अक्षर निकले- उसी से प्रश्न-पिण्ड बनाएं। यदि प्रश्न में बहुत अक्षर बोलें- अथवा अस्पष्ट (साफ नहीं) हों तो यदि प्रश्नकर्त्ता ब्राह्मण हो तो उससे किसी फूल का नाम, क्षत्रिय हो तो नदी का नाम, वैश्य हो तो देवता का नाम, यदि शूद्र हो तो किसी फल का नाम ग्रहण कराएं।

॥ स्पष्टार्थ चक्र (स्वर ध्रुवांक-चक्र)॥

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं
१२	२१	११	१८	१५	२२	१८	३२	२५	१९	२५

॥ व्यञ्जन ध्रुवांक चक्र ॥

क्	ख्	ग्	घ्	ङ्	च्	छ्	ज्	झ्	ञ्	ट्
१३	११	२१	३०	१०	१५	२१	२३	२६	२६	१०
ठ्	ड्	ढ्	ण्	त्	थ्	द्	ध्	न्	प्	फ्
१३	२२	३५	४५	१४	१८	१७	२२	३५	२८	१८
ब्	भ्	म्	य्	र्	ल्	व्	श्	ष्	स्	ह्
२६	२७	८६	१६	१३	१३	३५	२६	३५	३५	१२

उदाहरण:-जैसे किसी ब्राह्मण ने प्रश्न किया तो उससे पुष्प का नाम ग्रहण करवाने से गुलाब का नाम लिया । ध्रुवांक के चक्रों से अंक ग्रहण किए। जैसे (ग् = २१, उ = १५, ल्= १३, आ = २१, ब्= २६, अ = १२) वर्ण और स्वर के सब ध्रुवों का योग किया तो १०८ यह प्रश्न-पिण्ड हुआ ।

लाभ के प्रश्न विचार

लाभालाभ का प्रश्न हो तो प्रश्न-पिण्ड में ४२ जोड़कर ३ से भाग देने पर १ शेष में लाभ, २ शेष में अल्प लाभ, ० शेष में हानि समझना ।

जय-पराजय प्रश्न-विचार

जय पराजय प्रश्न-पिण्ड में ३४ जोड़कर ३ से भाग देने पर १ शेष में जय, २ में सन्धि, ० में पराजय कहना चाहिए ।

सुख-दु:ख प्रश्न विचार

सुख-दु:ख प्रश्न-पिण्ड में ३८ जोड़कर २ से भाग देने पर १ शेष में सुख, ० शेष में दु:ख समझना चाहिए ।

गमन-प्रश्न विचार

गमन प्रश्न-पिण्ड में ३३ जोड़कर ३ से भाग देने पर १ शेष में गमन, २ शेष में स्थिर और ० शेष में आधे रास्ते से ही लौटना पड़े ।

जीवन -मरण विचार

जीवन-मरण प्रश्न-पिण्ड में ४० जोड़कर ३ से भाग देने पर १शेष में जीवन, २ में कष्ट से जीवन, शून्य में मरण फल कहना चाहिए।

यात्रा-प्रश्न

यात्रा-सम्बन्धी प्रश्न-पिण्ड में ३९ जोड़कर ३ से भाग देने से १ शेष में उत्तम यात्रा, २ में अल्प यात्रा तथा शून्य में यात्रा नहीं होती ।

वर्षा-प्रश्न

वर्षा प्रश्न पिण्ड में ३२ जोड़कर ३ से भाग देने पर १ शेष में पूर्ण वर्षा, २ में मध्यम और शून्य में वहां वर्षा नहीं होती ।

गर्भ-विचार प्रश्न

गर्भ है या नहीं इस प्रश्न-पिण्ड में २६ जोड़कर ३ से भाग देने पर १ शेष में गर्भ, २ में गर्भ-स्राव सन्देह, ० शेष में गर्भ नहीं है इस प्रकार समझें।

तेजी-मन्दी का प्रश्न

प्रश्न-पिण्ड में ३ के भाग से १ शेष में सस्ता (मन्दी), २ में समान और शून्य में तेजी समझना ।

सत्यासत्य प्रश्न

यह बात सत्य है या असत्य, ऐसे प्रश्न पिण्ड में २ के भाग से १ शेष में सत्य और शून्य में असत्य कहना ।

पुत्र कन्या जन्म-प्रश्न

प्रश्न-पिण्ड में ३ के भाग से १ शेष में पुत्र, २ में कन्या और शेष शून्य में गर्भ का अभाव व नपुसंक कहना ।

विवाह-प्रश्न

प्रश्न-पिण्ड में ८ से भाग देकर १ शेष में बिना यत्न से , २ में अधिक यत्न से, विवाह कहना। ३ शेष में विवाह नहीं हो । ४ शेष में कन्या का मरण, ५ में चाचा आदि का मरण, ६ में राजभय, ७ में वर-कन्या दोनों का मरण व श्वसुर का मरण, ८ याने ० शेष हो तो विवाह से सन्तान का मरण कहना ।

कार्यसिद्धि-प्रश्न

प्रश्नकर्त्ता श्री देवी जी का स्मरण करके,पंचदशी यंत्र पर अंगुली धरे । यदि १/ ५/९ पर धरे तो शीघ्र कार्य सिद्ध हो । ३/७ पर धरे तो सहारे से कार्य सिद्ध होवे । ४/६ पर धरे तो भी कार्य सिद्ध होवे । २/८ अंक पर अंगुली धरे तो कार्य सिद्ध नहीं होता है ।

पंचदशी यंत्र

६	१	८
७	५	३
२	९	४

विवाहादि मुहूर्त्त (सं. २०५६ वि.)

प्रो. प्रियव्रत शर्मा ५९/६,(अभिजित्),पंचकूला-१३४१०९

समय शुद्धि

गुरुअस्त :- चैत्र शु. ४ रवि, (२१ मार्च '९९) से वैशाख ५ मंगल, (२० अप्रै. '९९)तक गुरु अस्त रहेगा।

शुक्र अस्तः- श्राव. कृ. १२ रवि (८ अग. '९९)से श्राव. शु. १३ मं.(२४ अग. '९९) तक शुक्र अस्त रहेगा ।

अधिक मासः- इस वर्ष १६ मई से १३ जून '९९ तक ज्येष्ठ अधिक (मल) मास रहेगा, जिसे सभी मांगलिक कृत्यों में वर्जित किया गया है ।

अक्षांश भेद से भारत के सभी स्थलों पर गुरु-शुक्र का उदय-अस्त

अक्षांश	+ १०°	+ २०°	+ ३०°	+ ३५°
गुरु अस्त	२२ मार्च '९९	२२ मार्च '९९	२१मार्च '९९	२१मार्च '९९
गुरु उदित	१४ अप्रै. '९९	१६ अप्रै. '९९	२० अप्रै. '९९	२३ अप्रै. '९९
शुक्र पश्चिम में अस्त	१३अग. '९९	११ अग. '९९	९ अग. '९९	७ अग. '९९
शुक्र पूर्व में उदित	१३ अग. '९९	२४अग.९९	२५अग. '९९	२६अग. '९९

ध्यान रहे- यहां नीचे दिए गए विवाहादि मुहूर्तों में गुरु-शुक्रास्त की तारीखें पंजाब, हरियाणा, हि.प्र. दिल्ली आदि की ही ली गई हैं। अन्य प्रान्तों के लिए विवाहादि मुहूर्तों का विचार करते समय अक्षांश के आधार पर उन प्रान्तों में उदयास्त की तारीखों का ध्यान रखना जरुरी है ।

मुहूर्तों में जिस लग्न का कुछ भाग किसी विशेष दोष के कारण वर्जित है, उस लग्न के आगे कोष्ठक में भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम के अनुसार यह निर्देश दिया गया है कि इस लग्न को इस टाईम के बाद अथवा पहले ही मुहूर्तों में स्वीकार करें।

यहां मुहूर्तों में क्रान्तिसाम्य (महापात) दोष का विचार सूक्ष्म गणित से किया गया है। सूर्य एवं चन्द्र की राशियों के आधार पर निर्णीत क्रान्तिसाम्य नितांत स्थूल होता हैं । भास्कर आदि आचार्यों ने इसके निर्णय के लिए एक विशेष गणित प्रक्रिया निर्दिष्ट की है। कई पंचांगकार इसकी जटिल गणित-प्रक्रिया से डरकर स्थूल क्रान्तिसाम्य के आधार पर ही मुहूर्तों का निर्णय कर देते हैं, जो सर्वथा भ्रामक है ।

यहां दिए गए मुहूर्तों में जहां युति, वेध, कर्त्तरी, दग्धातिथि, अष्टमस्थ भौम, षष्ठाष्टमस्थ, चन्द्र-शुक्र आदि दोषों के परिहार मिल गए हैं, उन मुहूर्तों को शास्त्रानुसार शुद्ध माना गया है और वहां लग्न लगा दिए गए हैं ।

ध्यान दें- यहां मुहूर्तों में दी गई अंग्रेजी तारीखें सूर्योदय कालिक हैं। जो मुहूर्तकाल (लग्न) रात के १२ वजे के बाद और सूर्योदय से पहिले पड़ता है, वहां अंग्रेजी तारीख अग्रिम (परवर्ती) समझनी चाहिए।

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०५६ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख १९९९ई.	विवाह नक्षत्र	विवाहलग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	लत्ता आदि दश दोष रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है)
वैशा. शु. ११ चं.	वैशा. १३	अप्रै. २६	उ.फा.	सिंह	मेष	मीन	ऽ सू।।। ऽ अ।।। ।	ल. गोधू.,(२५/१६बाद गुरु पादवेध है)
,, ,, १२ मं	,, १४	,, २७	,,	कन्या	,,	,,	ऽ सू ।।।।।।।	दि.ल. २(७/४६ बाद)(श.दा.),३,(७/४६तक गुरु का एवं १४/१७ बाद बुध का पादवेध है)
,, ,, १३ बु.	,, १५	,, २८	हस्त	,,	,,	,,	ऽ सू ऽ ।।। ऽ नृ ।।।	दि.ल. २ (श.दा.), ३, गोधू.,
,, ,, १४ गु.	,, १६	,, २९	चित्रा	,,	,,	,,	।।।ऽ बु.शु. । ऽ।।।	दि.ल. २ (श.दा.),३,
प्र.ज्ये.कृ. ४ मं.	,, २१	मई ४	मूल	धनु	,,	,,	।।।ऽशु ऽ अ । ऽ ।।	ल. ११,(२३/५८ तक मृत्युबाण),
,, ,, ४ बु.	,, २२	,, ५	,,	,,	,,	,,	।।। ऽ शु ऽ अ । ऽ।।	दि.ल. ३ (चं. दा.)
,, ,, ५ गु.	,, २३	,, ६	उ.षा.	मकर	,,	,,	ऽ चं ऽ । ऽ शु । ऽ नृ।।। ऽ	ल. ११, (१८/३४ से २५/४ तक शुक्र पादवेध),दग्धा परिहार,
,, ,, ६ शु.	,, २४	,, ७	श्रव.	,,	,,	,,	ऽ बु ।।।।। ऽ ।।	ल. ११,
,, ,, ७ श.	,, २५	,, ८	,,	,,	,,	,,	ऽ बु ।।।।। ऽ ।।	ल. गोधू. (१४/४४ तक क्रान्तिसाम्य)

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०५६ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख १९९९ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			लत्ता आदि दश दोष रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि		
प्र.ज्ये.कृ. १० मं.	वैशा. २८	मई ११	उ.भा.	मीन	मेष	मीन	॥॥। ऽ रो ऽऽ ॥	ल. ११,
,, ,, ११ बु.	,, २९	,, १२	,,	,,	,,	,,	॥॥॥ ऽऽ ॥	दि.ल.३,
,, ,, ११ बु.	,, २९	,, १२	रेव.	,,	,,	,,	॥ऽगु. ॥॥ऽ ॥	ल. ११,
द्वि.शुद्ध ज्ये.शु.८चं.	आषा. ७	जून २१	हस्त	कन्या	मिथुन	मेष	। ऽ ॥॥ ऽ ॥।	दि.ल. ५ (११/११ बाद),८, गोधू.,
,, ,, ,, ९ मं.	,, ८	,, २२	,,	,,	,,	,,	। ऽ ॥। ऽ चौ ऽ ॥।	दि.ल.५(१०/२ तक),
,, ,, १० बु.	,, ९	,, २३	स्वा.	तुला	,,	,,	॥॥॥॥ऽ ॥	दि.ल.८, गोधू.,११,
,, ,, १५ चं.	,, १४	,, २८	मूल	धनु	,,	,,	॥॥॥। ऽ ॥	दि.ल. ८, रा.ल.११,
आषा. कृ. २ बु.	,, १६	,, ३०	उ.षा.	धनु/मकर	,,	,,	॥॥॥॥।।	दि.ल.५,,८(१७/१४ तक),
,, ,, ७ मं.	,, २२	जुला. ६	रेव.	मीन	,,	,,	॥॥। ऽ अ ऽऽ । ऽ	दि.ल.८, गोधू.,२ (श.दा.), दग्धा परिहार,
,, ,, ९ बु.	,, २३	,, ७	अश्वि.	मेष	,,	,,	॥॥।ऽ अ ऽऽ ॥	दि.ल. ५(१०/२४ बाद),गोधू.,२ (श.दा.)
,, ,, १२ श.	,, २६	,, १०	रोहि.	वृष	,,	,,	।ऽ ॥॥।ऽ ॥	दि.ल.५,८ (१७/३७ तक),(चं.दा.)
आषा.शु. ५ श	श्राव. २	,, १७	उ.फा.	सिंह	कर्क	,,	॥॥॥॥	दि.ल.८(१६/७ बाद),९,
,, ,, ७ चं.	,, ४	,, १९	हस्त	कन्या	,,	,,	॥॥। ऽ अ ऽऽ ॥	दि.ल.,८,९ (१७/३४ तक)
,, ,, ७ चं.	,, ४	,, १९	चित्रा	,,	,,	,,	॥॥। ऽ अ । ऽ ॥	दि.ल.९ (१८/४६ बाद),गोधू.,२ (२५/४० तक),(श.दा.)
,, ,, ८ मं.	,, ५	,, २०	चित्रा	तुला	,,	,,	॥॥॥ऽऽ ॥	दि.ल.८,९, गोधू.,
श्राव.कृ. ४ र.	,, १७	अग. १	उ.भा.	मीन	,,	,,	॥॥। ऽ चौ । ऽ ॥	दि.ल.९ (१७/१५ बाद),गोधू., २ (श.दा.),
,, ,, ५ चं.	,, १८	,, २	उ.भा.	,,	,,	,,	॥॥।ऽ चौ । ऽ ॥	दि.ल. ८ (१५/३८ तक),
,, ,, ५ चं.	,, १८	,, २	रेव.	,,	,,	,,	॥॥।ऽ चौ ॥ ऽ ।	दि.ल. ९ (१६/५० बाद),गोधू.,२(श.दा.),दग्धा परिहार,
भाद्र॰ कृ. २ श.	भाद्र. १२	,, २८	उ.भा.	,,	सिंह	,,	॥॥।ऽअ ॥॥	ल.३ (अत्यावश्यकता में)
,, ,, ४ चं.	,, १४	,, ३०	अश्वि.	मेष	,,	,,	। ऽ ॥। ऽ नृ । ऽ ॥	ल.३(अत्यावश्यकता में)
,, ,, ७ गु.	,, १७	सितं. २	रोहि.	वृष	,,	,,	ऽ बु. ॥। ऽ मं. ऽ चौ. । ऽ ॥	ल. गोधू., १२,३ (अत्यावश्यकता में)
,, ,, ८ शु.	,, १८	,, ३	मृग.	वृष	,,	,,	ऽ शु. ॥॥। ऽऽ ॥	ल.गोधू., १२,
भाद्र॰ शु. २ श.	,, २६	,, ११	हस्त.	कन्या	,,	,,	॥॥। ऽ चौ. ऽ ॥।	दि.ल. ९, रा.ल.१२ (चं.दा.),
,, ,, ३ र.	,, २७	,, १२	चित्रा	,,	,,	,,	॥॥॥॥	दि.ल.९, रा.ल.१२ (चं.दा.),(१९/७से २४/३९ तक क्रान्तिसाम्य)
,, ,, ४ चं.	,, २८	,, १३	स्वा.	तुला	,,	,,	॥।ऽ चं. । ऽ रो ॥॥।	दि.ल.९(१३/३८ बाद),चन्द्र पादवेध नहीं,
,, ,, ९ र.	आश्वि. ३	,, १९	उ.षा.	धनु	कन्या	,,	॥॥। ऽ अ । ऽ ॥	ल. ५ (२९/३८ बाद)
,, ,, १० चं.	,, ४	,, २०	उ.षा.	मकर	,,	,,	॥॥। ऽ अ । ऽ ॥	दि.ल.९,११ (मं.दा.),गोधू.,
,, ,, १२ बु.	,, ६	,, २२	धनि.	मकर/कुम्भ	,,	,,	ऽ सू. ॥ ऽ शु. ऽ शु. । ऽ ॥।	दि.ल.११(मं.दा.),गोधू॰, ३,५(चं.दा.),(८/४७से१४/५५तक,शुक्र पादवेध)
आश्वि.शु. १ र.	,, २४	अक्तू. १०	स्वा.	तुला	,,	,,	॥ऽबु. ।ऽगु. ।ऽ ॥।	ल. ५,
,, ,, २ चं.	,, २५	,, ११	स्वा.	,,	,,	,,	॥ऽबु. ।ऽगु. ॥। ॥	दि.ल.८
,, ,, ८ चं.	कार्ति. २	,, १८	उ.षा.	मकर	तुला	,,	ऽ मं. ॥॥॥ ऽऽ ।	दि.ल. ८,दग्धा परिहार,
,, ,, १२ शु.	,, ६	,, २२	उ.भा.	मीन			॥॥। ऽ नृ ॥।	ल.गोधू.

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०५६ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख १९९९-२०००ई.	विवाह नक्षत्र	विवाहलग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	लत्ता आदि दश दोष रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है)
आश्वि.शु. १३ श.	कार्ति. ७	अक्तू. २३	उ.भा.	मीन	तुला	मेष	॥॥॥॥॥	दि.ल.८,
,, ,, १३ श.	,, ७	,, २३	रेव.	,,	,,	,,	॥॥ऽऽ॥	ल.गोधू.,
,, ,, १५ र.	,, ८	,, २४	अश्वि.	मेष	,,	,,	॥ऽगु.ऽशु.।ऽचौऽऽ॥	दि.ल.१२(१६/२बाद)(मं.दा.),५(२५/४३बाद),(२०/१९से२५/४३ तक शुक्र पादवेध)
कार्ति.कृ. ३ बु.	,, ११	,, २७	रोहि.	वृष	,,	,,	॥॥ऽबु.॥॥।	दि.ल.१२(१६/२५ बाद)(मं.दा.),गोधू.,
,, ,, ४ गु.	,, १२	,, २८	मृग.	मिथुन	,,	,,	॥॥।ऽअ॥॥	ल.५(२५/१८तक),(२३/१० तक मृत्युबाण)
कार्ति.शु. ३ गु.	,, २६	नवं. ११	मूल	धनु	,,	,,	॥॥।ऽचौ॥॥	ल. गोधू.,५
मार्ग. कृ. १ बु.	मार्ग. ९	,, २४	रोहि.	वृष	वृश्चि.	,,	॥॥ऽ॥ऽ॥	दि.ल.११(१३/३१ तक),
,, ,, ९ बु.	,, १६	दिसं. १	उ.फा.	सिंह/कन्या	,,	,,	॥॥।ऽचौ।ऽ।ऽ	दि.ल.९, गोधू.,५(शु.दा.),(सिंह लग्न में दग्धा परिहार)
,, ,, १० गु.	,, १७	,, २	हस्त	कन्या	,,	,,	॥॥॥ऽऽ॥	ल. ५ (शु.दा.),
,, ,, ११ शु.	,, १८	,, ३	चित्रा	कन्या	,,	,,	॥ऽशु.॥।ऽऽ॥	दि.ल.९,गोधू.;(२१/३बाद शुक्र युति का परिहार नहीं है)
,, ,, १२ श.	,, १९	,, ४	स्वाती	तुला	,,	,,	॥॥ऽगु.ऽरो।ऽ।।	दि.ल.११,
मार्ग. शु. ३ श.	,, २६	,, ११	उ.षा.	धनु/मकर	,,	,,	॥॥।ऽचौ॥॥	दि.ल.११,गोधू.,
,, ,, ५ चं.	,, २८	,, १३	धनि.	मकर/कुम्भ	,,	,,	॥॥।ऽरो.ऽ॥।	दि.ल.९(८/४४बाद),११,गोधू.,५(चं.शु.दा.)
,, ,, ६ मं.	,, २९	,, १४	धनि.	कुम्भ	,,	,,	॥॥॥ऽ॥।	दि.ल.९,
पौष. शु. ९ श.	माघ २	जन. १५	अश्वि.	मेष	मकर	,,	॥ऽगु॥।ऽऽ॥	दि.ल.१२,
,, ,, ११ चं.	,, ४	,, १७	रोहि.	वृष	,,	,,	॥॥॥॥।ऽ	ल.८ (चं.दा.),दग्धा परिहार,
,, ,, १२ मं.	,, ५	,, १८	रोहि.	वृष	,,	,,	॥॥॥॥।ऽ	दि.ल.१२,दग्धा परिहार,
माघ कृ. ५ मं	,, १२	,, २५	हस्त	कन्या	,,	,,	॥॥।ऽअऽऽ॥	ल.९,
,, ,, ६ बु.	,, १३	,, २६	हस्त	कन्या	,,	,,	॥॥।ऽअऽऽ॥	दि.ल.१२(चं.दा.),गोधू.,
,, ,, १२ बु.	,, २०	फर. २	मूल	धनु	,,	,,	॥॥॥ऽऽ।ऽ	दि.ल.१२, दग्धा परिहार,
माघ. शु. ४ बु.	,, २७	,, ९	रेव.	मीन	,,	,,	।ऽ।।। ऽ रो ऽऽ॥	ल.८,९,
,, ,, ५ गु.	,, २८	,, १०	रेव.	मीन	,,	,,	।ऽ॥।ऽरोऽऽ॥	दि.ल.११,गोधू.,
,, ,, ५ गु.	,, २८	,, १०	अश्वि.	मेष	,,	,,	ऽ मं. ॥॥॥।	ल.९,
,, ,, ६ शु.	,, २९	,, ११	अश्वि.	मेष	,,	,,	ऽ मं. ॥॥॥।	दि.ल. ११,(१२/३५ बाद मृत्युबाण),
,, ,, १५ श.	फाल्गु. ७	,, १९	मघा	सिंह	कुम्भ	,,	॥॥ऽऽ चौऽऽ॥	दि.ल.२ (११/११ से १२/७ तक)(श.दा.),रा.ल.८(शु.दा.),९,
फाल्गु.कृ. २ चं.	,, ९	,, २१	उ.फा.	सिंह/कन्या	,,	,,	॥॥ऽबु.ऽरो॥॥	दि.ल.२(श.दा.),गोधू.,८(शु.दा.),९(२७/५९तक)
,, ,, ९ चं.	,, १६	,, २८	मूल	धनु	,,	,,	॥॥।ऽचौ ऽऽ॥	ल.गोधू.,८(शु.दा.),
फाल्गु.शु. १ मं.	,, २४	मार्च ७	उ.भा.	मीन	,,	,,	॥॥॥॥	दि.ल.२(१०/२८ बाद)(श.दा.), रा.ल.८(शु.दा.),९,
,, ,, ३ गु.	,, २६	,, ९	अश्वि.	मेष	,,	,,	॥॥॥ ।ऽ	दि.ल.२(श.दा.),गोधू.,(८/४९ तक क्रान्तिसाम्य है),दग्धा परिहार,

सं. २०५७ वि. में गुरु-शुक्रास्त - (गुरु अस्त)-लगभगवैशाख कृष्ण दशमी(२९ अप्रैल २००० ई.) से ज्ये.कृ.८(२६मई २०००ई.)तक गुरु अस्त रहेगा।
(शुक्र अस्त) -लगभग वैशाख शुक्ल चतुर्थी (७ मई २००० ई.) से आषाढ़ पूर्णिमा (१६ जुलाई २०००ई.)तक शुक्रअस्त रहेगा ।

सं. २०५६ वि. में भिन्न-भिन्न राशि वाले वरों और कन्याओं के विवाह-निर्णय के लिए त्रिबल-शुद्धि

(अर्थात् किस राशि वाले वर और कन्या के लिए सं. २०५६ वि. में कुल कितने विवाह-मुहूर्त्त किन किन तारीखों को बनते हैं)

लोग अपनी सुविधा के अनुसार किसी खास महीने में या किसी खास तारीख के आस-पास ही विवाह-मुहूर्त(साहा) निकालने के लिए ज्योतिषियों से अनुरोध किया करते हैं। ऐसी स्थिति में ज्योतिषी को विवाह मुहूर्त्तों में त्रिबल-शुद्धि जानने का झंझट करना पड़ता है । इस झंझट से ज्योतिषियों को छुटकारा दिलाने के लिए हम यहां नीचे 'त्रिबलशुद्धि कोष्ठक' दे रहे हैं। संवत् २०५६ वि. के शुद्ध विवाह-मुहूर्त्त इस पंचांग में पहले दिए गए हैं। किस किस महीने में किस किस तारीख वाले विवाह मुहूर्त्त में किस किस राशि वाले लड़के-लड़कियों के विवाह हो सकते हैं- यह त्रिबलशुद्धि के अनुसार नीचे दिए गए 'त्रिवल-शुद्धि कोष्ठक' में लिख दिया गया है। अमुक राशि वाले लड़के और अमुक राशि वाली कन्या के लिए इस वर्ष कुल कितने विवाह मुहूर्त्त किन किन तारीखों को बनते हैं- इस कोष्ठक द्वारा साधारण व्यक्ति भी यह एक ही नजर में तुरन्त जान सकता है। इस कोष्ठक से यह भी तुरन्त जाना जा सकता है कि अमुक राशि वाली लड़कियों और लड़कों का विवाह इसवर्ष किन-किन तारीखों को हो सकता है । वर के लिए 'सूर्य की पूजा' और कन्या के लिए 'गुरु की पूजा' वाले दिन भी इस कोष्ठक में दिए गए हैं। लड़का-लड़की की राशियों वाले कालमों में जो जो तारीखें समान रूप से मिलती हों उन तारीखों में उस लड़के-लड़की का विवाह हो सकता है । **जैसे मिथुन राशि वाले लड़के और मेष राशि वाली लड़की का विवाह सं. २०५६ वि. में मई'९९के महीने में किन किन तारीखों को हो सकता है-यह मालूम करना है।** नीचे 'त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक' देखें- लड़के वाले कालम में मिथुन के आगे मई की केवल ४,५,११,१२ तारीखें हैं, जबकि लड़की वाले कालम में मेष के आगे मई की ४,५,६,७,८,११,१२ तारीखें हैं। इसलिए यह समझना चाहिए कि मई में मिथुन राशि वाले लड़के और मेष राशि वाली लड़की का विवाह केवल ४,५,११,१२ तारीखों को ही हो सकता है, क्योंकि मई की केवल यही तारीखें दोनों वर-कन्या की राशियों (मिथुन-मेष)में एक सी मिलती हैं। इस प्रकार विवाह की तारीखों का निश्चय करके शुद्ध विवाह-मुहूर्तों से इस दिन विवाह के लग्न का निर्णय कर लीजिए। क्योंकि आजकल लड़कियों का विवाह बड़ी अवस्था में होता है, अत: चतुर्थ-अष्टम -द्वादश गुरु को शास्त्र निर्देशानुसार नेष्ट न मानकर पूज्य माना गया है । इस वर्ष २६ मई'९९ तक गुरु अपनी राशि (मीन) में रहेगा, अत: किसी भी राशि वाली कन्या के लिए यह नेष्ट या पूज्य नहीं होगा ।

नाम या जन्म राशि	त्रिबल शुद्धि कोष्ठक (सं. २०५६ विक्रमी.) (१८ मार्च'९९ से ४ अप्रै. २००० ई. तक) (कोष्ठकों में दिया गया काल भा.स्टैं.टा.है।)			लड़की के लिए पूज्य गुरु
	लड़का	लड़के के लिए पूज्य सूर्य	लड़की	
मेष	अप्रै. २६,२७,२८,२९, मई ४,५,६,७,८,११,१२, जून २१,२२,२३,२८,३०,जुला. ६,७,१०,अग.२८,३०,सितं.२,३,११,१२,१३,१९,२०,२२, अक्तू. १०,११, १८,२२, २३,२४, २७,२८, नवं. ११, जन.१५,१७,१८,२५,२६, फर. २,९,१०,११,१९,२१,२८, मार्च ७,९,	१३ अप्रै. से १३ जून १६ अग. से १५ सितं. १६ अक्तू. से १४ नवं.	अप्रै.२६,२७,२८,२९,मई ४,५,६,७,८,११,१२,जून २१,२२,२३,२८,३०, जुला. ६,७,१०,१७,१९,२०,अग. १,२,२८,३०, सितं. २, ३, ११, १२, १३, १९,२०,२२, अक्तू. १०, ११, १८, २२, २३, २४, २७, २८,नवं. ११, २४,दिसं. १, २,३, ४,११,१३,१४,जन. १५,१७,१८,२५,२६,फर. २,९,१०,११,१९,२१,२८, मार्च, ७,९,	२६ मई बाद
वृष	जून २१,२२,२३,३०(१२/४७बाद),जुला. ६,७,१०,१९,२०, अग.१,२, सितं. २०,२२, अक्तू. १०,११,१८,२२,२३,२४,२७,२८, नवं.२४, दिसं. १(११/२६ बाद), २,३,४,११(१०/४बाद),१३,१४,जन.१५,१७,१८,२५,२६,फर. ९, १०, ११, २१(१४/९बाद), मार्च ७,९,	१५ मई से १५ जुला. १६ सितं. से १६ अक्तू. १५ नवं. से १४ दिसं. १३ जन. से ११ फर.	अप्रै. २७,२८,२९,मई ६,७,८,११,१२, जून २१,२२,२३,३०,(१२/४७ बाद),जुला. ६,७,१०,१९,२०, अग. १,२,२८,३०, सितं. २,३,११,१२,१३,२०,२२, अक्तू. १०,११,१८,२२,२३,२४,२७,२८, नवं. २४, दिसं. १(११/२६बाद), २, ३, ४, ११ (१०/४ बाद),१३,१४,जन. १५,१७,१८,२५,२६,फर. ९,१०,११,२१ (१४/९ बाद), मार्च ७,९,	२६ मई बाद
मिथुन	अप्रै.२६, मई ४,५,११,१२, जून २३,२८,३०(१२/४७तक),जुला.६,७,१०,१७,२०,अग. १, २, २८, ३०, सितं. २, ३, १३, अक्तू. २२, २३, २४, २७, २८, नवं. ११,२४, दिसं.१ (११/२६ तक), ४,११ (१०/४ तक), १३(२१/४६ बाद), १४,फर.१९,२१(१४/९ तक),२८, मार्च ७,९,	१४ जून से १५ अग. १६ अक्तू. से १४ नवं १२ फर. से १३ मार्च	अप्रै. २६ मई ४,५,११,१२, जून. २३,२८,३०(१२/४७ तक),जुला. ६,७,१०,१७,२०,अग. १,२,२८,३०, सितं. २,३,१३,१९,२२,(२१/२बाद),अक्तू. १०,११, २२, २३, २४, २७, २८, नवं. ११,२४, दिसं. १(११/२६ तक),४, ११(१०/४ तक), १३(२१/४६ बाद),१४, जन. १५,१७,१८,फर. २,९,१०, ११, १९, २१ (१४/९तक), २८, मार्च, ७,९,	—
कर्क	अप्रै.२६,२७,२८,२९, मई ४,५,६,७,८,११,१२, जुला:१७,१९, अग.१,२,२८,३०,सितं. २,३,११,१२,१९,२०,२२(२१/२ तक),नवं.२४, दिसं. १,२,३,११,१३(२१/४६ तक), जन. १५,१७,१८,२५,२६, फर.२, ९,१०,११,	१६ जुला. से १५ सितं. १५ नवं. से १४ दिसं. १३ जन. से ११ फर.	अप्रै. २६,२७,२८,२९, मई ४,५,६,७,८,११,१२, जून २१,२२,२८,३०, जुला. ६, ७, १०,१७,१९,अग.१,२,२८,३०,सितं. २,३,११,१२,१९,२०,२२(२१/२तक), अक्तू.१८, २२, २३, २४,२७,२८, नवं. ११,२४, दिसं. १,२,३,११,१३(२१/४६ तक), जन. १५, १७,१८,२५,२६,फर. २,९,१०,११,१९,२१,२८, मार्च ७,९,	२६ मई बाद

त्रिबल शुद्धि कोष्ठक (सं. २०५६ विक्रमी) (१८ मार्च'९९ से ४ अप्रै. २००० ई. तक)

(कोष्ठकों में दिया गया भा.स्टैं.टा.है।)

नाम या जन्म राशि	लड़का	लड़के के लिए पूज्य सूर्य	लड़की	लड़की के लिए पूज्य गुरु
सिंह	अप्रै. २६,२७,२८,२९, मई,४,५,६,७,८,जून २१,२२,२३,२८,३०,जुला. ७,१०,अग. ३०, सितं. २, ३, ११, १२, १३, १९,२०,२२, अक्तू. १०,११,१८,२४,२७,२८, नवं.११, जन. १५, १७,१८,२५,२६,फर. २,१०,११,१९,२१,२८,मार्च ९,	१३ अप्रै. से १३ मई १६ अग. से १६ अक्तू. १२ फर. से १३ मार्च	अप्रै.२६,२७,२८,२९,मई, ४, ५,६,७,८, जून,२१,२२,२३, २८,३०,जुला.७,१०, १७,१९,२०,अग.३०,सितं.२,३,११,१२,१३,१९,२०,२२,अक्तू. १०,११,१८,२४,२७,२८, नवं. ११,२४, दिसं. १,२,३,४,११,१३, १४, जन.१५, १७,१८, २५,२६, फर. २,१०,११,१९,२१,२८,मार्च ९,	—
कन्या	जून,२१,२२,२३,३० (१२/४७ बाद), जुला. ६, १०, १७, १९, २०, अग. १, २,सितं. २०,२२, अक्तू. १०,११,१८,२२,२३,२७,२८,नवं. २४, दिसं. १,२,३,४,११ (१०/४ बाद), १३,१४, जन. १७,१८,२५,२६,फर. ९,१०,१९,२१,मार्च, ७,	१४ मई से १३ जून १६सितं. से २४ नवं. १३ जन. से १२ फर.	अप्रै. २६,२७,२८,२९, मई ६,७,८,११,१२,जून २१,२२,२३,३० (१२/४७ बाद), जुला. ६,१०,१७,१९,२०, अग. १,२,२८,सितं.२,३,११,१२,१३,२०,२२,अक्तू. १०,११,१८,२२,२३,२७,२८,नवं. २४, दिसं १,२,३,४,११(१०/४ बाद)१३,१४,जन. १७,१८,२५,२६,फर.९,१०,१९,२१,मार्च ७,	२६ मई बाद
तुला	अप्रै.२६,२७,२८,२९, मई ४,५,११,१२,जून २१,२२,२३,२८,३०(१२/४७ तक),जुला. ६,७,१७,१९,२०, अग. १,२,२८,३०, सितं. ११,१२,१३, अक्तू.२२,२३,२४,२८,नवं. ११,दिसं. १,२,३,४,११(१०/४ तक),१३(२१/४६ बाद),१४, फर. १९, २१,२८, मार्च. ७,९,	१४ अप्रै. से १३ मई १४ जून से १५ जुला. १६ अक्तू. से १४ दिसं. १२ फर. से १३ मार्च	अप्रै.२६,२७,२८,२९, मई, ४,५,११,१२,जून २१,२२,२३,२८,३० (१२/४७ तक), जुला. ६, ७,१७,१९,२०,अग. १,२,२८,३०,सितं. ११,१२,१३,१९,२२(२१/२ बाद), अक्तू. १०,११,२२,२३,२४,२८,नवं. ११,दिसं. १,२,३,४,११(१०/४ तक), १३ (२१/४६ बाद), १४ जन.१५,२५,२६,फर. २,९, १०,११,१९, २१,२८, मार्च,७,९,	—
वृश्चिक	अप्रै. २६,२७,२८,२९,मई ४,५,६,७,८,११,१२,जुला. १७,१९,२०,अग. १,२,२८,३०,सितं. २,३,११,१२,१३,१९,२०,२२(२१/२ तक),अक्तू.१०,११,नवं. २४,दिसं.१,२,३,४,११,१३(२१/४६ तक),जन. १५,१७,१८,२५,२६,फर. २,९,१०,११,	१४ मई से १३ जून १६ जुला. से १५ अग. १५ नवं. से १५ दिसं.	अप्रै. २६,२७,२८,२९,मई ४,५,६,७,८,११,१२, जून २१,२२,२३,२८,३० जुला.६,७,१०,१७,१९,२०,अग.१,२,२८,३०,सितं. २,३, ११,१२, १३,१९, २०, २२(२१/२ तक), अक्तू.१०,११,१८,२२,२३,२४,२७,नवं. ११,२४, दिसं.१,२,३,४,११,१३(२१/४६तक),जन.१५,१७,१८,२५,२६, फर.२,९,१०,११,१९,२१,२८, मार्च ७,९,	२६ मई बाद
धनु	अप्रै.२६,२७,२८,२९,मई ४,५,६,७,८, जून २१,२२,२३,२८,३०, जुला. ७,१०,अग. ३०,सितं. २,३,११,१२,१३,१९,२०,२२, अक्तू. १०,११,१८,२४,२७,२८, नवं. ११, जन. १५,१७,१८,२५,२६,फर. २,१०,११,१९,२१,२८, मार्च ९ ,	१३ अप्रै. से १३ मई १४ जून से १५ जुला. १६ अग. से १५ सितं. १३ जन. से १२ फर.	अप्रै. २६,२७,२८,२९,मई ४, ५,६,७,८,जून २१,२२,२३,२८,३०जुला. ७,१०,१७,१९,२०,अग. ३०,सितं. २,३,११,१२,१३,१९,२०,२२,अक्तू. १०,११,१८,२४,२७,२८,नवं. ११,२४, दिसं. १,२,३,४,११,१३,१४, जन. १५,१७,१८,२५,२६, फर. २,१०,११,१९,२१,२८,मार्च ९,	—
मकर	जून २१,२२,२३,२८,३०,जुला.६,१०,१९,२०,अग.१,२,सितं. १९,२०, २२,अक्तू.१०, ११, १८, २२, २३, २७, २८, नवं. ११,२४,दिसं.१(११/२६ बाद)२, ३,४,११, १३, १४,जन. १७,१८,२५,२६,फर. २,९,१०,२१(१४/९ बाद),२८, मार्च ७ ,	१४ मई से १३ जून १६ जुला. से १५ अग. १६ सितं. से १५ अक्तू. १३ जन. से १३ मार्च	अप्रै. २७,२८,२९,मई ४,५,६,७,८,११,१२,जून २१,२२, २३,२८, ३०, जुला. ६, १०, १९,२०,अग. १,२,२८,सितं. २,३,११,१२,१३,१९,२०,२२, अक्तू. १०,११,१८,२२,२३,२७,२८,नवं. ११,२४, दिसं. १(११/२६ बाद), २,३, ४, ११, १३,१४,जन. १७,१८,२५,२६, फर. २,९,१०,२१(१४/९बाद), २८, मार्च ७,	२६ मई बाद
कुम्भ	अप्रै. २६,मई ४,५,६,७,८,११,१२,जून २३,२८,३०, जुला. ६,७,१७,२०,अग. १,२, २८,३०,सितं. १३,अक्तू. १८,२२,२३,२४,२८, नवं. ११, दिसं. १(११/२६ तक), ४,११, १३,१४, फर. १९,२१(१४/९तक), २८, मार्च ७,९,	१४ जून से १५ जुला. १६ अग. से १५ सितं. १६ अक्तू. से १४ नवं. १२ फर. से १३ मार्च	अप्रै. २६, मई ४,५,६,७,८,११,१२,जून २३,२८,३०,जुला. ६,७,१७,२०,अग. १,२,२८,३०,सितं. १३,१९,२०,२२,अक्तू. १०,११,१८,२२,२३,२४,२८,नवं. ११, दिसं. १(११/२६ तक), ४,११,१३,१४,जन. १५,फर. २,९,१०,११, १९, २१ (१४/९तक),२८, मार्च ७,९,	२६ मई बाद
मीन	अप्रै. २६,२७,२८,२९, मई ४,५,६,७,८,११,१२,जुला. १७,१९, अग. १,२,२८,३० , सितं.२,३,११,१२,१९,२०,२२, नवं.२४ , दिसं. १,२,३,११,१३,१४, जन. १५, १७,१८,२५,२६, फर. २,९,१०,११,	१४ अप्रै. से १३ मई १६ जुला. से १५ अग. १६ सितं. से १६अक्तू. १५ नवं. से १४ दिसं.	अप्रै. २६,२७,२८,२९, मई ४,५,६,७,८,११,१२,जून २१,२२,२८,३०,जुला. ६,७,१०,१७,१९, अग. १,२,२८,३०,सितं. २,३,११,१२,१९,२०,२२,अक्तू. १८,२२,२३,२४,२७, नवं. ११,२४,दिसं. १,२,३,११,१३,१४,जन. १५, १७, १८, २५, २६, फर २,९,१०,११,१९,२१,२८, मार्च ७,९,	—

अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०५६ वि.)

प्रतिवर्ष हमारे कार्यालय में ज्योतिषियों एवं अन्य लोगों के ऐसे अनेकों पत्र हमें उपलब्ध होते हैं, जिनसें वे ऐसे अनेक विवाह मुहूर्त्तों के बारे में हमसे स्पष्टीकरण चाहते हैं, जिन्हें हमने अपने पंचांग में तो अशुद्ध विवाह मुहूर्त्तों की कोटि में रखा होता है, लेकिन किसी अन्य पंचांग में उन्हें शुद्ध विवाह-मुहूर्त्त मानकर उनमें विवाह-लग्न लगाए होते हैं। इस समस्या को दृष्टि में रखकर अशुद्ध विवाह मुहूर्त्तों का स्पष्टीकरण हम इस स्तम्भ में दिया करते हैं। विश्वास है, यह स्तम्भ ज्योतिषियों को शुद्ध और अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त-सम्बन्धी दुविधा से मुक्त कराने में काफी हद तक समर्थ होगा और वे इससे स्वयं यह भली भांति जान सकेंगे कि अमुक दिन या अमुक समय में विवाह करना शास्त्रविरुद्ध क्यों है। यहां साथ-साथ उन दोषों का निर्देश भी किया गया है, जिनके कारण विवाह नक्षत्र होते हुए भी वहां विवाह नहीं किया जा सकता । जहां भद्रा, व्यतीपात, क्रूर ग्रहवेध आदि से रहित होने से विवाह नक्षत्र का काल शुद्ध होने पर भी षष्ठाष्टमस्थ शुक्र, चन्द्र, भौम और लग्नेश आदि के कारण शुद्ध लग्न नहीं बन रहा हो, वहां लग्नाभाव दोष लिखा गया है । ध्यान रहे- यहाँ जिन युति, वेध आदि दोषों का निर्देश किया गया है, वे सभी ऐसे हैं जिनका कोई परिहार नहीं है।

वर्षारम्भ से वैशा. कृ.१३ बु.(१४ अप्रै. '९९ ई. तक मीनस्थ रवि), चैत्र शु.१ शुक्रवार (१८ मार्च, '९९ई.)से गुरु वार्धक्य प्रारम्भ। चैत्र शु. ४ रविवार(२१ मार्च, '९९ई.)से वैशा. शु. ५मंगलवार(२० अप्रैल, '९९ ई.) तक गुरु अस्त ।
वैशा. शु.९ शनिवार (२४ अप्रै., '९९ई.)को १५ घं.५४ मि. तक गुरुबाल्य।

तिथि-वार	तारीख १९९९ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
वैशा. शु. ९ श.	अप्रै. २४	मघा	मृत्युबाण, लग्नाभाव,
,, ,, १० र.	,, २५	,,	मृत्युबाण,
,, ,, १२ मं.	,, २७	हस्त	लग्नाभाव,
,, ,, १३ बु.	,, २८	चित्रा	लग्नाभाव,
,, ,, १४ गु.	,, २९	स्वा.	भद्रा, भौमयुति,
,, ,, १५ शु.	,, ३०	स्वा.	भौमयुति, व्यतीपात,
प्र.ज्ये.कृ. २ र.	मई २	अनु.	सूर्य-शनि वेध,
,, ,, ३ चं.	,, ३	अनु.	परिघार्ध,सूर्यशनि वेध
,, ,, ६ शु.	,, ७	उ.षा.	दग्धा दोष,
,, ,, ७ श.	,, ८	धनि.	राहुवेध, केतु युति,
,, ,, ८ र.	,, ९	धनि	राहुवेध,केतु युति,

१३ मई से १३ जून , '९९ई. तक ज्येष्ठ अधिक मास

तिथि-वार	तारीख १९९९ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
द्वि.(शुद्ध)ज्ये.शु.१चं.	जून १४	मृग.	क्षीणचन्द्र,मासान्त, मृत्युबाण
,, ,, ५ शु	,, १८	मघा	केतुवेध,
,, ,, ६ श.	,, १९	मघा	नक्षत्रान्त, केतुवेध,
,, ,, ७ र.	,, २०	उ.फा.	लग्नाभाव,
,, ,, ८ चं.	,, २१	उ.फा.	व्यतीपात,
,, ,, ९ मं.	,, २२	चित्रा	भौमयुति,
,, ,, १० बु.	,, २३	चित्रा	भौमयुति,
द्वि.(शुद्ध)ज्ये.शु.११ गु.	जून २४	स्वा.	भद्रा
,, ,, १२ शु.	,, २५	अनु.	शनिवेध,
,, ,, १३ श.	,, २६	अनु.	शनिवेध
,, ,, १४ र.	,, २७	मूल	भद्रा
आषा. कृ. २ गु.	,, ३०	उ.षा.	वैधृति,
,, ,, २ गु.	,, ३०	श्रव.	वैधृति, भद्रा,केतुयुति
,, ,, ३ शु.	जुला.२	श्रव.	केतुयुति,
,, ,, ३ शु.	,, २	धनि.	राहुवेध,
,, ,, ४ श.	,, ३	धनि.	राहुवेध,
,, ,, ६ चं.	,, ५	उ.भा.	मृत्युबाण,
,, ,, ७ मं.	,, ६	उ.भा.	मृत्युबाण,
,, ,, ९ बु.	,, ७	रेव.	लग्नाभाव,
,, ,, १० गु.	,, ८	अश्वि.	लग्नाभाव,
,, ,, ११ शु.	,, ०	रोहि.	लग्नाभाव
,, ,, १२ श.	,, १०	मृग.	क्षीणचन्द्र
आषा. शु. ३ गु.	,, १५	मघा	मासान्त / केतुवेध,
,, ,, ४ शु.	,, १६	मघा	संक्रान्ति, केतुवेध,
,, ,, ६ र.	,, १८	उ.फा.	मृत्युबाण,
,, ,, ६ र.	,, १८	हस्त	मृत्युबाण,
,, ,, ८ मं.	,, २०	स्वा.	भौमयुति,
,, ,, ९ बु.	,, २१	स्वा.	भौमयुति,
,, ,, १० गु.	,, २२	अनु.	शनिवेध,
,, ,, १० शु.	,, २३	अनु.	शनिवेध,
,, ,, १२ र.	,, २५	मूल	क्रान्तिसाम्य,
,, ,, १३ चं.	,, २६	मूल	वैधृति,
,, ,, १४ मं.	,, २७	उ.षा.	मृत्युबाण,
,, ,, १५ [illegible]	,, २८	उ.षा.	[illegible]
आषा. शु. १५ बु.	जुला. २८	श्रव.	केतुयुति,
श्राव. कृ. १ गु.	,, २९	श्रव.	केतुयुति,
,, ,, १ गु.	,, २९	धनि.	राहुवेध,
,, ,, २ शु.	,, ३०	धनि.	राहुवेध,
,, ,, ६ मं.	अग. ३	रेव.	लग्नाभाव,
,, ,, ६ मं.	,, ३	अश्वि.	भुजङ्गपात,
,, ,, ७ बु.	,, ४	अश्वि.	भुजङ्गपात,

श्रावण कृ.८ गु. (५ अग. '९९ई.) से शुक्रवार्धक्य,
श्रावण कृ. १२ र. (८ अग., '९९ ई.) से श्रावण शु. १३ मं. (२४ अग. '९९ ई.) तक शुक्र अस्त,
भाद्र.कृ.२श.(२८अग., '९९ ई.)को१५घं.५९मिं.तक शुक्र बाल्य,

तिथि-वार	तारीख १९९९ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
भाद्र. कृ. ३ र.	अग. २९	उ.भा	लग्नाभाव.
,, ,, ३ र.	,, २९	रेव	भुजङ्गपात,
,, ,, ४ चं.	,, ३०	रेव	भुजङ्गपात,
,, ,, ५ मं.	,, ३१	अश्वि.	सूर्यवेध.
,, ,, ८ शु.	सितं. ३	रोहि.	लग्नाभाव,
,, ,, ९ श.	,, ४	मृग.	लग्नाभाव,
भाद्र. शु. १ शु.	,, १०	उ.फा.	लग्नाभाव,
,, ,, २ श.	,, ११	उ.फा.	लग्नाभाव,
,, ,, ३ र.	,, १२	हस्त	लग्नाभाव,
,, ,, ४ चं.	,, १३	चित्रा	लग्नाभाव,
,, ,, ५ मं.	,, १४	स्वा.	चन्द्रपादवेध,
,, ,, ५ बु.	,, १५	अनु.	शनिवेध,भौमयुति,
,, ,, ६ गु.	,, १६	अनु.	मासान्त, शनि वेध, भौमयुति,
,, ,, ७ शु.	,, १७	मूल	संक्रान्ति,

अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०५६ वि.)

तिथि-वार	तारीख १९९९ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
भाद्र. शु. ८ श.	सितं. १८	मूल	मृत्युबाण,
,, ,, ११ मं.	,, २१	उ.षा.	नक्षत्रान्त,
,, ,, ११ मं.	,, २१	श्रव.	केतुयुति,
,, ,, १२ बु.	,, २२	श्रव.	केतुयुति
,, ,, १३ गु.	,, २३	धनि.	लग्नाभाव
,, ,, १५ श.	,, २५	उ.भा.	प्रौष्ठपदि श्राद्ध
श्राद्ध पक्ष (२६ सितं. से ९ अक्तू., '९९ ई. तक)			
आश्वि. शु. १ र.	अक्तू. १०	चित्रा	वैधृति, क्षीणचन्द्र,
,, ,, ३ मं.	,, १२	अनु.	शनिवेध,
,, ,, ४ बु.	,, १३	अनु.	शनिवेध,
,, ,, ६ शु.	,, १५	मूल	भौमयुति,
,, ,, ७ श.	,, १६	मूल	मासान्त, भौमयुति,
,, ,, ७ र.	,, १७	उ.षा.	संक्रान्ति,
,, ,, ८ चं.	,, १८	श्रव.	केतुयुति,
,, ,, ९ मं.	,, १९	श्रव.	केतुयुति,
,, ,, ९ मं.	,, १९	धनि.	भुजङ्गपात,
,, ,, १० बु.	,, २०	धनि.	भुजङ्गपात,
,, ,, १५ र.	,, २४	रेव.	भद्रा
कार्ति. कृ. १ चं.	,, २५	अश्वि.	लग्नाभाव,
,, ,, ३ बु.	,, २७	मृग.	परिघार्ध,
,, ,, ९ चं.	नवं. १	मघा.	केतुवेध,
,, ,, १० मं.	,, २	मघा.	केतुवेध,
,, ,, ११ बु.	,, ३	उ.फा.	लग्नाभाव,
,, ,, १२ गु.	,, ४	उ.फा.	वैधृति,
,, ,, १२ गु.	,, ४	हस्त.	क्षीणचन्द्र, वैधृति, वज्र,
कार्ति. शु. १ मं.	,, ९	अनु.	शनिवेध,
,, ,, २ बु.	,, १०	अनु.	शनिवेध,
,, ,, ४ शु.	,, १२	मूल	भद्रा
,, ,, ५ श.	,, १३	उ.षा.	भुजङ्गपात, भौमयुति,
,, ,, ६ र.	,, १४	उ.षा.	भुजङ्गपात, भौमयुति,
,, ,, ६ र.	,, १४	श्रव.	केतुयुति,
,, ,, ७ चं.	,, १५	श्रव.	मासान्त, केतुयुति,
,, ,,			

तिथि-वार	तारीख १९९९ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
कार्त्ति. शु. ७ चं.	नवं. १५	धनि.	भद्रा, मासान्त,
,, ,, ८ मं.	,, १६	धनि.	संक्रान्ति,
,, ,, १० गु.	,, १८	उ.भा.	लग्नाभाव,
१९ से २३ नवम्बर तक भीष्मपंचक			
मार्ग. कृ. १ बु.	नवं. २४	मृग.	भौमवेध,
,, ,, ३ गु.	,, २५	मृग.	भौमवेध,
,, ,, ६ र.	,, २८	मघा	केतुवेध,
,, ,, ७ चं.	,, २९	मघा	केतुवेध,
,, ,, ८ मं.	,, ३०	उ.फा.	लग्नाभाव,
,, ,, ९ बु.	दिसं. १	हस्त	भद्रा,
,, ,, ११ शु.	,, ३	हस्त.	नक्षत्रान्त,
,, ,, १२ श.	,, ४	चित्रा	शुक्रयुति,
मार्ग. शु. १ बु.	,, ८	मूल	भुजङ्गपात,
,, ,, २ गु.	,, ९	मूल	भुजङ्गपात
,, ,, २ शु.	दिसं. १०	उ.षा.	लग्नाभाव,
,, ,, ३ श.	,, ११	श्रव.	भद्रा, भौम-केतु युति,
,, ,, ४ र.	,, १२	श्रव.	भौम, केतुयुति,
,, ,, ५ चं.	,, १३	श्रव.	नक्षत्रान्त,
धनुस्थ रवि मार्ग.शु.८गु. से पौष शु.७ शुक्रवार तक			
(सन् २००० ई.)			
पौष शु. १२ मं.	जन. १८	मृग.	सूर्यवेध,
,, ,, १३ बु.	,, १९	मृग.	सूर्यवेध,
माघ कृ. २ श.	,, २२	मघा	केतुवेध
,, ,, ३ र.	,, २३	मघा	केतुवेध,
,, ,, ४ चं.	,, २४	उ.फा.	मृत्युबाण,
,, ,, ५ मं.	,, २५	उ.फा.	मृत्युबाण, लग्नाभाव,
,, ,, ६ बु.	,, २६	चित्रा	भौमवेध,
,, ,, ७ गु.	,, २७	चित्रा	भौमवेध,
,, ,, ७ गु.	,, २७	स्वा.	भुजङ्गपात,
,, ,, ८ शु.	,, २८	स्वा.	भुजङ्गपात,
,, ,, ९ श.	,, २९	अनु.	शनिवेध

तिथि-वार	तारीख २०००ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
माघ कृ. १० र.	जन. ३०	अनु.	शनिवेध,
,, ,, ११ मं	फर. १	मू.	दग्धा परिहार नहीं।
माघ शु. १ र.	,, ६	धनि.	लग्नाभाव,
,, ,, ३ मं.	,, ८	उ.भा.	भौमयुति,
,, ,, ४ बु.	,, ९	उ.भा.	भौमयुति,
,, ,, ८ र.	,, १३	रोहि.	संक्रांति,
,, ,, ९ चं.	,, १४	रोहि.	लग्नाभाव,
,, ,, ९ चं.	,, १४	मृग.	केतुवेध,
,, ,, १० मं.	,, १५	मृग.	केतुवेध,
फाल्गु. कृ. १ र.	,, २०	मघा	लग्नाभाव
फाल्गु. कृ. ३ मं.	फर. २२	उ.फा.	भद्रा, नक्षत्रान्त,
,, ,, ३ मं.	,, २२	हस्त	भुजङ्गपात, भौमवेध,
,, ,, ४ बु.	,, २३	हस्त	नक्षत्रान्त, भुजङ्गपात, भौमवेध,
,, ,, ४ बु.	,, २३	चित्रा	लग्नाभाव, मृत्युबाण,
,, ,, ५ गु.	,, २४	चित्रा	बुध-पादवेध, मृत्युबाण,
,, ,, ५ गु.	,, २४	स्वा.	सूर्यवेध,
,, ,, ६ शु.	,, २५	स्वा.	सूर्यवेध,
,, ,, ७ श.	,, २६	अनु.	शनिवेध,
,, ,, ८ र.	,, २७	अनु.	शनिवेध,
,, ,, १० मं.	,, २९	मूल	लग्नाभाव,
,, ,, ११ बु.	मार्च १	उ.षा.	केतुयुति,
,, ,, १२ गु.	,, २	उ.षा.	केतुयुति,
,, ,, १२ गु.	,, २	श्रव.	शुक्रयुति,
,, ,, १२ शु.	,, ३	श्रव.	परिघार्ध, क्षीणचन्द्र,
फाल्गु. शु. २ बु.	,, ८	उ.भा.	नक्षत्रान्त,
,, ,, २ बु.	,, ८	रेव.	भौमयुति,
,, ,, ३ गु.	,, ९	रेव.	नक्षत्रान्त, भौमयुति,
,, ,, ६ श.	,, ११	रोहि.	लग्नाभाव,
,, ,, ७ र.	,, १२	रोहि.	लग्नाभाव, मृत्युबाण,
,, ,, ७ र.	,, १२	मृग.	भद्रा, केतुवेध, मृत्युबाण,
,, ,, ८ चं.	,, १३	मृग.	मासांत, केतुवेध, होलाष्टक

होलाष्टक (१३ से २० मार्च २०००ई. तक),
फाल्गु. शु.९मं.(१४ मार्च २००० ई. से वर्षान्त)तक मीनस्थ रवि,

मुण्डनादि के अन्य मुहूर्त्त (सं. २०५६वि.) (सर्वत्र भा. स्टैं.टा. दिया गया है)

अथ मुण्डन मुहूर्त्त (सन् १९९९ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा.शु.१३ बु.	वैशा.१५	अप्रै.२८	हस्त	
प्र.ज्ये.कृ.९ चं.	„ २७	मई १०	शत.	१०/३६ बाद,
„ „ „ १३ गु.	„ ३०	„ १३	रेवती	१६/२३ तक,
द्वि.(शु.)ज्ये.शु.३बु.	आषा.२	जून १६	पुन.	७/४२ तक,
„ „ „ „ ३बु.	„ २	„ १६	पुष्य	८/५४ से १४/२९ तक,

सन् २०००ई.

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल (भा.स्टैं.टा.)
पौष शु. १३ बु.	माघ ६	जन.१९	मृग.	९/८ तक,
माघ कृ. ११ चं.	„ १८	„ ३१	ज्ये.	
माघ शु. २ चं.	„ २५	फर.७	शत.	
„ „ ५ गु.	„ २८	„ १०	रेव.	
„ „ १३ गु.	फाल्गु.५	„ १७	पुन.	१३/ ५२ तक,
फाल्गु.कृ.५ गु.	„ १२	„ २४	चित्रा	७ / १४ तक,
„ „ ५ गु.	„ १२	„ २४	स्वा.	८ / २६ बाद,
फाल्गु. शु.२ बु.	„ २५	मार्च ८	रेव.	७ / १४ बाद,
„ „ ३ गु.	„ २६	„ ९	अश्वि.	६/४६ से ८/३१ तक,

मुण्डन में विशेष- किसी देवस्थल तीर्थ पर बिना मुहूर्त्त के भी मुण्डन करवाना शुभ माना गया है। नवरात्रों के दिनों में भी शक्तिपीठों, (देवी-मन्दिरों) के समीप मुण्डन करवाने की पंजाब, हि.प्र.आदि प्रदेशों में पुरानी परम्परा है।

अथ उपनयन मुहूर्त्त (सन् १९९९ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल
द्वि.(शु.) ज्ये.शु.३बु.	आषा. २	जून १६	पुन.	७/४२ तक,
„ „ „ „ ३बु.	„ २	„ १६	पुष्य	८ / ५४ बाद,

सन् २००० ई.

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल
माघ शु. २ चं.	माघ २५	फर.७	शत.	१०/११ बाद,
„ „ ६ शु.	„ २९	„ ११	अश्वि.	
फाल्गु.कृ.२ चं.	फाल्गु.९	„ २१	उ.फा.	८ /१८ से १०/०तक,

अथ अक्षरारम्भ मुहूर्त्त (सन् १९९९ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल
द्वि.(शु.)ज्ये.शु.३बु.	आषा.२	जून १६	पुन.	७/४२तक,
„ „ „ „ ३बु.	„ २	„ १६	पुष्य	८/५४ से १४/५९ तक,

अथ अक्षरारम्भ मुहूर्त्त (सन् २००० ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल (भा.स्टैं.टा.)
माघ कृ. ६ बु.	माघ १३	जन.२६	हस्त	
माघ शु. ५ गु.	„ २८	फर.१०	रेव.	
„ „ ६ शु.	„ २९	„ ११	अश्वि.	
„ „ ११ बु.	फाल्गु.४	„ १६	आर्द्रा	८/४३ से १५ / ५६तक,
फाल्गु.कृ. ५ गु.	„ १२	„ २४	स्वा.	८ / २६ बाद,
„ „ ६ शु.	„ १३	„ २५	स्वा.	८ / ४३ तक,
फाल्गु. शु.२ बु.	„ २५	मार्च ८	रेव.	७ /१४ बाद,
„ „ ३ गु.	„ २६	„ ९	अश्वि.	६ / ४६ बाद,
चैत्र कृ. २ बु.	चैत्र ९	„ २२	चित्रा	९ / १०तक,१२/४६बाद,
„ „ ११ शु.	„ १८	„ ३१	श्रव.	११/ ५२ तक,

अथ विद्यारम्भ मुहूर्त्त (सं. २०५६ वि.) (सन् २००० ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल
पौष शु. ३ र.	पौष २५	जन.९	श्रव.	१३ / १३ तक,
माघ शु. ६ शु.	माघ २९	फर.११	अश्वि.	
चैत्र कृ. ११ शु.	चैत्र १८	मार्च३१	श्रव.	११ / ५१ तक,
„ „ १३ र.	„ २०	अप्रै. २	शत.	१४/२५तक,

अक्षरारम्भ और विद्यारम्भ के मुहूर्त्त

बच्चे को वर्णमाला का ज्ञान करवाने के लिए अक्षरारम्भ के और संस्कृत, अंग्रेजी, गणित, रसायन आदि विषयों का अध्ययन प्रारम्भ करने के लिए विद्यारम्भ के मुहूर्त्तों का प्रयोग करना चाहिए।

अथ द्विरागमन मुहूर्त्त (सन् १९९९ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल
वैशा.शु. ११च.	वैशा. १३	अप्रै.२६	उ.फा.	१३ / १३ बाद,
„ „ १३बु.	„ १५	„ २८	हस्त	१६ / १६ तक,
„ „ १५शु.	„ १७	„ ३०	स्वा.	७ / १९ बाद,
प्र.ज्ये.कृ. ४बु.	„ २२	मई ५	मूल	५ / २२ से १४ / ५३ तक,
„ „ „ ५गु.	„ २३	„ ६	उ.षा.	१८ / ३४ बाद,
„ „ „ ११बु.	„ २९	„ १२	उ.भा.	७ / १६ से १८/४२ तक,
„ „ „ १३गु.	„ ३०	„ १३	रेव.	१६ / २३ तक,
मार्ग.कृ १बु.	मार्ग. ९	नवं. २४	रोहि.	१२ / ३१ तक,
„ „ १बु.	„ ९	„ २४	मृग.	१४ / ४३ बाद,
„ „ ३गु.	„ १०	„ २५	मृग.	१० / ३६ तक,
„ „ ९बु.	„ १६	दिसं. १	उ.फा.	१६ / ४७ बाद,
मार्ग.शु. २गु.	„ २४	„ ९	मूल	११ / ४४ तक,१४/८बाद,

अथ द्विरागमन मुहूर्त्त (सन् २००० ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल (भा.स्टैं.टा.)
माघ शु. १३ गु.	फाल्गु.५	फर.१७	पुन.	१३ / ५२ तक,
फाल्गु.कृ. २ चं.	„ ९	„ २१	उ.फा.	८ / १८ बाद,
„ „ ५ गु.	„ १२	„ २४	स्वा.	८ / २६ बाद,
„ „ १२ गु.	„ १९	मार्च२	उ.षा.	
„ „ १२ शु.	„ २०	„ ३	श्रव.	१६/४५ बाद,
फाल्गु.शु. २ बु.	„ २५	„ ८	रेव.	७ / १४ बाद,
„ „ ३ गु.	„ २६	„ ९	अश्वि.	६ / ४६ से ८ / ३१ तक,

द्विरागमन में विशेष-विवाह के दिन से १६ दिन के भीतर द्विरागमन के उपरोक्त मुहूर्त्तों के बिना भी द्विरागमन हो सकता है। यदि नव-विवाहित वधू का द्विरागमन दिवाली के दिन प्रदोष के समय दीपकों के प्रकाश में हो तो अच्छा माना जाता है।

अभिजित् मुहूर्त्त

स्थानीय दिनमानार्ध के घं.मि. को स्थानीय सूर्योदय काल में जोड़ने पर 'स्पष्ट दिनार्ध' होता है, दिनमान का ३०वां भाग मुहूर्त्तार्ध कहलाता है। मुहूर्त्तार्ध को स्पष्ट दिनार्ध में घटाने और जोड़ने पर अभिजित् मुहूर्त्त का क्रमश: प्रारम्भ और समाप्तिकाल ज्ञात हो जाता है। इस काल में लगभग सभी दोषों को समाप्त कर डालने की अद्भुत शक्ति मानी गयी है। जब मुण्डन, अक्षरारंभ आदि मुहूर्त्तों में शुद्ध लग्न न मिल रहा हो, तब अभिजित् मुहूर्त्तों को प्रयोग में लाना चाहिए।

अथ गेहारम्भ मुहूर्त्त (सन्१९९९ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल
वैशा.शु. १३ बु.	वैशा.१५	अप्रै.२८	हस्त	१६ / १६ तक,
श्राव. कृ. १ गु.	श्राव.१४	जुला.२९	धनि.	१७/२९बाद,
„ „ २ शु.	„ १५	„ ३०	धनि.	१५ /४२ तक,

सन् २००० ई.

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल
फाल्गु. कृ. ४बु.	फाल्गु.११	फर. २३	चित्रा	१६ / ४८ से २५ / ० तक,

अथ नूतन-गृहप्रवेश मुहूर्त्त (सन्१९९९ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल
प्र.ज्ये.कृ. ११बु.	वैशा.२९	मई १२	उ.भा.	७ / १६ तक,
„ „ „ १३ गु.	„ ३०	„ १३	रेव.	१६/२३ तक,

अथ पुरातन गृह प्रवेश मुहूर्त्त (सन् १९९९ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल (भा.स्टैं. टा.)
वैशा.कृ. २शु.	चैत्र २०	अप्रै.२	चित्रा	१८/७ तक,
,, ,, २शु.	,, २०	,, २	स्वा.	१९ / १९ बाद,
,, ,, ४चं.	,, २३	,, ५	अनु.	१२/४९ से १८/१३तक,
,, ,, ११चं.	,, ३०	,, १२	धनि.	१२/४६ तक,
,, ,, ११चं.	,, ३०	,, १२	शत.	१३/५८ से २०/३४ तक,
वैशा.शु. ४चं.	वैशा.६	,, १९	मृग.	१९/४८ बाद,
प्र.(अधि.)ज्ये.शु.२चं.	ज्ये. ३	मई १७	मृग.	५/३८ से २५/४६ तक,
,, ,, ,, ,, ५बु.	,, ५	,, १९	पुष्य	२३/१५ बाद
,, ,, ,, ,, ६गु.	,, ६	,, २०	पुष्य	२१/१५तक,
प्र.अधि.ज्ये.शु.१०चं.	,, १०	,, २४	उ.फा.	२५/१८तक,
,, ,, ,, ,,१३गु.	,, १३	,, २७	स्वा.	७/२६ बाद,
द्वि.अधि.ज्ये.कृ.४गु.	,, २०	जून ३	उ.षा.	२०/१६ से २५/२५ तक,
,, ,, ,, ,,१०बु.	,, २६	,, ९	रेव.	१७/४५ से २५/५४ तक,
श्राव.कृ. १गु.	श्राव.१४	जुला.२९	धनि.	१७/२९ बाद,
,, ,, २शु.	,, १५	,, ३०	धनि.	१५/४२ तक,
,, ,, २शु.	,, १५	,, ३०	शत.	१६/५४से २९/२७ तक,
,, ,, ५चं.	,, १८	अग.२	उ.भा.	१५/३८ तक,
,, ,, ५चं.	,, १८	,, २	रेव.	१६/५०बाद,
,, ,, ९शु.	,, २२	,, ६	रोहि.	११/५३ से १८/९ तक,
श्राव. शु. ७बु.	भाद्र.२	,, १८	स्वा.	६ /२२ तक,
कार्त्ति.कृ.४ गु.	कार्ति.१२	अक्तू.२८	मृग.	१३/१५ से २५/१८ तक,
,, ,, ११बु.	,, १८	नवं. ३	उ.फा.	२३/३३ से २८/२१ तक,
कार्ति.शु.२ बु.	,, २५	,, १०	अनु.	१०/४४ तक,
,, ,, ,, १० गु.	मार्ग.३	,, १८	उ.भा.	२८/३१ बाद,
,, ,, ११ शु.	,, ४	,, १९	उ.भा.	१३/४७ तक,
मार्ग.कृ. ३ गु.	,, १०	,, २५	मृग.	१०/३६ तक,
,, ,, ९ बु.	,, १६	दिसं.१	उ.फा.	१६/५७ से २९/६ तक,
,, ,,११ शु.	,, १८	,, ३	चित्रा	७ /५९ से १९/१२ तक,
मार्ग. शु .२ शु.	,, २५	,, १०	उ.षा.	२७/२१ बाद,
,, ,, ५चं.	,, २८	,, १३	धनि.	८/४४ बाद,

नोटः— सरकारी या अन्य नौकरी वाले तथा दूसरे लोग भी ट्रांसफर आदि के कारण अक्सर किराये वाले पुराने मकानों में यदा-कदा प्रवेश करते रहते हैं। ऐसे लोगों के लिए ही ये पुरातन गृह प्रवेश मुहूर्त्त हैं। इन मुहूर्त्तों में गुरु-शुक्र अस्त और अधिकमास का दोष नहीं माना जाता। इसलिए इनका इन मुहूर्त्तों में विचार नहीं किया गया है। क्लश चक्र का विचार भी यहां नहीं किया जाता ।

अथ विपणि (दुकान) खोलने के मुहूर्त्त (सन् १९९९ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा.शु.१३ बु.	वैशा.१५	अप्रै.२८	हस्त	१६ / १६तक,
प्र.ज्ये.कृ.२ र.	,, १९	मई २	अनु.	७ / २३ बाद,
,, ,, ,, ११बु.	,, २९	,, १२	उ.भा.	७/१६ से १८/४२ तक,
,, ,, ,,१३ गु.	,, ३०	,, १३	रेव.	१६/२३ तक,
द्वि.(शु.)ज्ये.शु.३बु.	आषा.२	जून १६	पुष्य	८ / ५४ से १४ /५९तक,
,, ,, ,, ,, ७र.	,, ६	,, २०	उ.फा.	७/३४ से ११/१८ तक,
,, ,, ,, १० बु.	,, ९	,, २३	चित्रा	१२/३७ तक,
,, ,, ,, ,, १३श.	,, १२	,, २६	अनु.	२१/२३ तक,
आषा.कृ. २ बु.	,, १५	,, ३०	उ.षा.	६/१७ से १७/१४ तक,
,, ,, ६ चं.	,, २१	जुला. ५	उ.भा.	१८/४३ बाद,
,, ,, १०गु.	,, २४	,, ८	अश्वि.	७ / ४३ तक,
,, ,, १३ र.	,, २७	,, ११	मृग.	१४/१७ तक,
आषा.शु. २ बु.	,, ३०	,, १४	पुष्य	१६/२० तक,
,, ,, ५ शु.	श्राव.२	,, १७	उ.फा.	१६/७ बाद,
,, ,, ७ चं.	,, ४	,, १९	हस्त	१७/३४ तक,
,, ,, ७ चं.	,, ४	,, १९	चित्रा	१८/४६ बाद,
,, ,, १० शु.	,, ८	,, २३	अनु.	७/५७ तक,
श्राव. कृ. ४ र.	,, १७	अग.१	उ.भा.	१७/१५बाद,
,, ,, ५ चं.	,, १८	,, २	उ.भा.	१५/३८ तक,
,, ,, ७ बु.	,, २०	,, ४	अश्वि.	११/५९तक,
भाद्र.कृ. ३ र.	भाद्र.१३	,, २९	उ.भा.	१४/१८ तक,
,, ,, ९ श.	,, १९	सितं.४	मृग.	१२/२९ से १३/२०तक,
,, ,, ११ चं.	,, २१	,, ६	पुष्य	१२/७ बाद,
भाद्र शु. २ श.	,, २६	,, ११	उ.फा.	९ /४२ तक,
,, ,, ३ र.	,, २७	,, १२	हस्त	१०/४७ तक,
,, ,, ३ र.	,, २७	,, १२	चित्रा	११/५९ बाद,
,, ,, १० चं.	आश्वि.४	,, २०	उ.षा.	१८/४५ तक,
आश्वि.शु. १३ श.	कार्त्ति.७	अक्तू.२३	उ.भा.	८/ ५ तक,
कार्त्ति.कृ.४ गु.	,, १२	,, २८	मृग.	१३/१५ बाद,
,, ,, १३ शु.	,, २०	नवं.५	हस्त	
कार्त्ति.शु. २ बु.	,, २५	,, १०	अनु.	१०/ ४४ तक,
,, ,, १२ श.	मार्ग. ५	,, २०	रेव.	
मार्ग.कृ. १ बु.	,, ९	,, २४	रोहि.	८/४४ से १३/३१तक,

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल (भा.स्टै.टा.)
मार्ग.कृ. १ बु.	मार्ग.९	नवं. २४	मृग.	१०/४३ बाद,
,, ,, ३ गु.	,, १०	,, २५	मृग.	१०/३६ तक,
,, ,, ५ श.	,, १२	,, २७	पुष्य	७/६ बाद,
,, ,, ९ बु.	,, १६	दिसं.१	उ.फा.	१६/५७ बाद,
,, ,, १२ श.	,, १९	,, ४	चित्रा	८/५४ तक,
,, ,, १२ श.	,, १९	,, ४	स्वा.	१०/६ बाद,
,, ,, १३ र.	,, २०	,, ५	स्वा.	११/२२ तक,
मार्ग. शु. ३ श.	,, २६	,, ११	उ.षा.	११/३४ तक,
सन् २०००ई.				
पौष. शु. १३ बु.	माघ ६	जन. १९	मृग.	९/८ तक,
माघ कृ. ७ गु.	,, १४	,, २७	चित्रा	१२/१९ से १७/४५तक,
,, ,, १० र.	,, १७	,, ३०	अनु.	१७/४१ तक,
माघ.शु. ५ गु.	,, २८	फर. १०	रेव.	
,, ,, १३ गु.	फाल्गु. ५	,, १७	पुष्य	१५/४ बाद,
फाल्गु. कृ.२ चं.	,, ९	,, २१	उ.फा.	८/ १८ बाद,
,, ,, ४ बु.	,, ११	,, २३	चित्रा	१६ / ४८ बाद,
,, ,, ५ गु.	,, १२	,, २४	स्वा.	८/२६ से १७/१४ तक,
,, ,, ७ श.	,, १४	,, २६	अनु.	१२/४ बाद,
,, ,, १२ गु.	,, १९	मार्च २	उ.षा.	
फाल्गु. शु. २ बु.	,, २५	,, ८	रेव.	७/१४ बाद,
,, ,, ३ गु.	,, २६	,, ९	अश्वि.	६/४६ से ८/३१तक,
,, ,, ७ र.	,, २९	,, १२	रोहि.	

अथ सात्त्विक देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् १९९९ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल
वैशा.शु. १३ बु.	वैशा.१५	अप्रै.२८	हस्त	
प्र.ज्ये.कृ. ६ शु.	,, २४	मई ७	उ.षा.	९/३६ तक,
,, ,, ,, ९ चं.	,, २७	,, १०	शत.	१०/३६ बाद,
,, ,, ,, ११ बु.	,, २९	,, १२	उ.भा.	
,, ,, ,, १३ गु.	,, ३०	,, १३	रेवती	
द्वि.(शुद्ध)ज्ये.शु.३बु.	आषा.२	जून १६	पुन.	७/४२ तक,
,, ,, ,, ,, ३बु.	,, २	,, १६	पुष्य	८/५४ बाद,
,, ,, ,, ,, ७ र.	,, ६	,, २०	उ.फा.	७/३४ से ११/१८ तक,
,, ,, ,, ,, ८ चं.	,, ७	,, २१	हस्त	११/११ बाद,
पौष कृ. २ शु.	पौष ९	दिसं.२४	पुन.	
,, ,, ७ बु.	,, १४	,, २९	उ.फा.	११/४२ तक,
,, ,, ९ शु.	,, १६	,, ३१	चित्रा	९/१३ बाद,

अथ सात्त्विक देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २०००ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल (भा.स्टैं.टा.)
पौष कृ. १२चं.	पौष १९	जन. ३	अनु.	
पौष शु. १शु.	,, २३	,, ७	उ.षा.	९/२२ बाद,
माघ कृ. ६ बु.	माघ १३	,, २६	हस्त	
,, ,, ८ शु.	,, १५	,, २८	स्वा.	
,, ,, १०र.	,, १७	,, ३०	अनु.	
माघ शु. १ र.	,, २४	फर. ६	धनि.	
,, ,, २ चं.	,, २५	,, ७	शत.	१०/११ बाद,
,, ,, ५ गु.	,, २८	,, १०	रेव.	
,, ,, ६ शु.	,, २९	,, ११	अश्वि.	
,, ,, १३ गु.	फाल्गु.५	,, १७	पुन.	
फाल्गु.कृ. २ चं.	,, ९	,, २१	उ.फा.	८/१८ बाद,
,, ,, ८ र.	,, १५	,, २७	अनु.	
,, ,, १२गु.	,, १९	मार्च २	उ.षा.	
चैत्र कृ. ११ शु.	चैत्र १८	,, ३१	श्रव.	११/५१ तक,
,, ,, १३ र.	,, २०	अप्रै. २	शत.	

तामस देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् १९९९ ई.)

आषा. कृ.२ बु.	आषा.१६	जून ३०	उ.षा.	६/१७ बाद,
,, ,, ५ र.	,, २०	जुला.४	शत.	१०/२९ तक,
,, ,, १०गु.	,, २४	,, ८	अश्वि.	७/४३,
,, ,, १३ र.	,, २७	,, ११	मृग.	
आषा.शु. २ बु.	,, ३०	,, १४	पुष्य	
,, ,, ६ र.	श्राव.३	,, १८	उ.फा.	८/३३ बाद,
,, ,, ७ चं.	,, ४	,, १९	हस्त	
मार्ग.कृ. १ बु.	मार्ग.९	नवं. २४	रोहि.	
,, ,, १० गु.	,, १७	दिसं.२	हस्त	
,, ,, ११ शु.	,, १८	,, ३	चित्रा	७/५९ बाद,
,, ,, १३ र.	,, २०	,, ५	स्वा.	११/२२ तक,
मार्ग.शु. ५ चं.	,, २८	,, १३	धनि.	८/४४ बाद,

श्री गणेश प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् १९९९ई.)

प्र.ज्ये.कृ. ४ मं.	वैशा.२१	मई ४		
आषा.कृ. ३ गु.	आषा.१८	जुला.२	धनि.	७ /११ बाद,
मार्ग.कृ. ४ शु.	मार्ग.११	नवं. २६	पुन.	९/१३ बाद,

श्री गणेश प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २००० ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल (भा.स्टैं.टा.)
माघ कृ. ४ चं.	माघ ११	जन. २४		
चैत्र कृ. ३ गु.	चैत्र १०	मार्च २३	स्वा.	९/२० बाद,

श्री दुर्गा प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् १९९९ ई.)

द्वि.(शुद्ध)ज्ये.शु.९मं.	आषा.८	जून २२	हस्त	१०/२ तक,
आषा. शु.९ बु.	श्राव.६	जुला.२१	स्वा.	
मार्ग.शु. २ गु.	मार्ग.२४	दिसं. ९	मूल	११/४४ तक,
,, ,, ९ शु.	पौष २	,, १७	उ.भा.	११/४ बाद,

सन् २००० ई.

पौष शु. ९ श.	माघ २	जन. १५	अश्वि.	
माघ कृ. १२ बु.	,, २०	फर. २	मूल	
फाल्गु. कृ.१०मं.	फाल्गु.१७	फर. २९	मूल	
चैत्र कृ. ७ चं.	चैत्र १४	मार्च२७	मूल	९/ २७ बाद,

श्री शिव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् १९९९ई.)

आषा.कृ. १३ र.	आषा.२७	जुला.११	मृग.	
,, ,, १४ चं.	,, २८	,, १२	आर्द्रा	१२/१२ तक,
मार्ग.कृ. ४ शु.	मार्ग.११	नवं. २६	आर्द्रा	८/ २ तक,
पौष कृ. १ गु.	पौष ८	दिसं.२३	आर्द्रा	

सन् २००० ई.

पौष कृ. १३ मं.	पौष २०	जन. ४		
पौष शु. १३ बु.	माघ ६	,, १९	आर्द्रा	१०/२० बाद ,
माघ कृ. १३ गु.	,, २१	फर. ३		
माघ शु. ११ बु.	फाल्गु.३	,, १६	आर्द्रा	८/४३ बाद,
फाल्गु. कृ.१३श.	,, २१	मार्च ४	धनि.	९/४१ तक,

श्री गौरी प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् १९९९ ई.)

द्वि.(शुद्ध) ज्ये.शु.३बु.	आषा.२	जून १६	पुष्य	८/५४ बाद,
मार्ग. शु. ३ श.	मार्ग.२६	दिसं.११	उ.षा.	

सन् २००० ई.

पौष शु. ३ र.	पौष २५	जन. ९	श्रव.	
फाल्गु. शु. २ बु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] बाद,

देव प्रतिष्ठा वाले मुहूर्त्तों के बारे में कुछ स्पष्टीकरण

श्री विष्णु , राम, कृष्ण, शिव, गणेश, गौरी आदि सात्त्विक देवता हैं, इसलिए इनकी प्रतिष्ठा यद्यपि उपरोक्त ''सात्त्विक देव प्रतिष्ठा'' वाले मुहूर्तों में हो सकती है, फिर भी मुहूर्त्तशास्त्रों में इनकी प्रतिष्ठा के लिए विशेष मुहूर्त्त काल बताए गए हैं, जिनका निर्देश हमने यहां अलग से किया है। यहां यह समझ लेना चाहिए कि 'सात्त्विक देव प्रतिष्ठा' वाले मुहूर्त्त श्री विष्णु, राम, कृष्ण, गणेश, शिव, सरस्वती आदि सभी सत्वप्रधान प्रकृति वाले देवी-देवताओं के लिए समान रूप से प्रयोग में लाये जा सकते हैं, जबकि श्री गणेश, दुर्गा, गौरी, शिव आदि देवी-देवताओं के लिए यहां पृथक् रूप में लिखे गए प्रतिष्ठामुहूर्त्त केवल इन्हीं के लिए हैं। सभी देवताओं की प्रतिष्ठा पूर्वाह्णकाल में (मध्याह्न से पूर्व) ही की जाती है ।

ध्यान दें- गौरी, गणेश, दुर्गा और शिव की प्रतिष्ठा के मूहुर्त्त के लिए शास्त्रों में क्रमशः शुक्ल तृतीया, कृष्ण चतुर्थी , शुक्ल नवमी और कृष्ण चतुर्दशी तिथियां शुभ मानी गई हैं, तदनुसार ही यहां इनके मूहूर्त्तों में केवल इन तिथियों का निर्देश किया गया है, नक्षत्रों का नहीं, हां, जहां कहीं इन तिथियों के समय कोई देव प्रतिष्ठा मूहूर्त्त का नक्षत्र भी मिल गया है, वहां उस तिथि के साथ उसका भी निर्देश कर दिया गया है। श्री दुर्गा प्रतिष्ठा के लिए मूल और शिव प्रतिष्ठा के लिए आर्द्रा नक्षत्र भी शुभ माने गए हैं। इनके अनुसार भी यहां दुर्गा-शिव प्रतिष्ठा के मुहूर्त्त दिए गए हैं ।

दशावतार प्रतिष्ठा

श्री राम, कृष्ण आदि देवताओं की मूर्त्ति-प्रतिष्ठा इन देवताओं की अपनी-अपनी अवतार तिथियों के दिन भी पूर्वाह्ण काल में बिना पंचांग-शुद्धि के भी की जा सकती हैं। अतवार की तिथि यदि गुरु शुक्रास्तकाल में पड़े, तब तो उस दिन मूर्त्ति-प्रतिष्ठा नहीं करनी चाहिए।

चार अणपुच्छ मुहूर्त्त

(१) चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
(२) अक्षय तृतीया (वैशाख शुक्ल तृतीया)
(३) दशहरा
(४) दीपावली (सायं दीप के प्रकाश में)

इन मुहूर्त्तों को आम जनता अणपुच्छ मुहूर्त्त के नाम से जानती है, इन मुहूर्त्तों में कोई भी शुभ कार्य किया जा सकता है । लेकिन विवाह आदि के लिए तो पंचांग में दिए गए मुहूर्त्त को ही स्वीकार करना होगा।

दैनिक उपयोग में आने वाले शुभ मुहूर्त निकालना सरल बात है

ज्योतिष काल-शास्त्र है। शुभकाल (मुहूर्त) में किया गया कार्य निर्विघ्न रूप से शीघ्र ही सम्पन्न एवं सफल होकर सुख-समृद्धि कारक होता है-ज्योतिष की मुहूर्तशाखा का यह सिद्धान्त है। मुण्डन, अक्षरारम्भ, उपनयन, विवाह, द्विरागमन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, देवप्रतिष्ठा आदि के मुहूर्तों का विस्तृत विवेचन विगत पृष्ठों पर दिया गया है। आभूषण, स्वर्ण, वस्त्र आदि खरीदना, पहनना, यात्रा आरम्भ करना, मुकद्दमा दायर करना, ग्रह-शान्त्यर्थ रत्नधारण करना, किसी परीक्षा-प्रतियोगिता या नौकरी के लिए आवेदनपत्र भरना- आदि आदि कार्यो के शुभ मुहूर्त जानने के लिए अब आपको किसी ज्योतिषी के पास जाने की आवश्यकता नहीं है। अगले पृष्ठों पर तीन शुभ योगों (सर्वार्थसिद्धि, रवि, सिद्धि योगों) के प्रारम्भ और समाप्त होने की तारीखें एवं समय (भा.स्टै.टा.) दिया है। इन योगों के समय जो कार्य प्रारम्भ किये जाएंगे वे सफल होंगे ।

सर्वार्थसिद्धि आदि योगों के बारे में आवश्यक विवरण नीचे दिया जा रहा है:-

सर्वार्थसिद्धि एवं अमृतसिद्धि योग

वारों का विशेष नक्षत्रों से सम्बन्ध होने पर **'सर्वार्थसिद्धियोग'** बनते हैं। जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट है, इस योग के समय कोई भी शुभ कार्य किया जाए तो वह सफल होता है। यात्रा,गृहप्रवेश, नूतन कार्यारम्भ आदि सभी कार्यो के लिए शीघ्रता या अन्य किसी अपरिहार्य कारणवश यदि व्यतीपात, वैधृति, गुरु-शुक्रास्त, अधिमास एवं वेध आदि का विचार संभव न हो तो सर्वार्थसिद्धि योगों का आश्रय लेना चाहिए। रविवार का हस्त, चन्द्रवार का मृगशिरा, मंगलवार का अश्विनी, बुधवार का अनुराधा, गुरुवार का पुष्य, शुक्रवार का रेवती और शनिवार का रोहिणी नक्षत्र से सम्बन्ध होने पर जो सर्वार्थसिद्धि योग बनता है, उसे **'अमृतसिद्धि योग'** की विशेष संज्ञा दी गई है । अमृतसिद्धि योग के दिन कुछ तिथियां वर्जित मानी गई है, जिन्हें यहां दिए गए अमृतसिद्धियोगों के काल में से निकाल दिया गया है । अमृतसिद्धि योग संज्ञा वाले सर्वार्थसिद्धि योग विशेष फलदायक माने गए हैं।**ध्यान रहे**-गुरुवार वाले अमृतसिद्धि योग (जिन्हें गुरुपुष्यामृत भी कहा जाता है)के समय विवाह, मंगलवार वाले अमृतसिद्धि योग के समय नए घर में प्रवेश, तथा शनिवार वाले अमृतसिद्धि योग के समय यात्रा नहीं करनी चाहिए। शेष सभी कार्यो के लिए इन्हें प्रयोग में लाइए। **अमृतसिद्धि योगों को कोष्ठकों में दिया गया है।** अमृतसिद्धियोग के समय जो वार है, उसे कोष्ठक के दाईं ओर लिखा गया है।

यद्यपि मुहूर्त-ग्रन्थों में गुरुवार वाले अमृतसिद्धि को छोड़कर शेष सभी सर्वार्थसिद्धि योगों में विवाह करने की भी आज्ञा है, परन्तु विशेष विवशता की स्थिति में ही इस योग में प्रणय विवाह आदि ही करना चाहिए- ऐसा हमारा मत है । इस योग में विवाह करने के लिए लग्न शुद्धि अवश्य देख लेनी चाहिए।

रवि योग

रवियोग भी सर्वार्थसिद्धि योगों की भांति ही सभी शुभ कार्यो के लिए शुभ माने जाते हैं। शास्त्रों का कथन है-रवियोग सभी बुरे योगों को नष्ट करने की शक्ति रखता है (''कुयोग-विध्वंस- करा: शुभेषु'') इस योग में वे सभी काम किये जा सकते हैं जो सर्वार्थसिद्धि योगों में किये जा सकते हैं।

सिद्धियोग

सिद्धियोग भी सर्वार्थसिद्धि और रवियोगों की भान्ति ही महत्त्वशाली है । सर्वार्थसिद्धियोग और रवियोगों में किए जाने वाले सभी कार्य इनमें भी किए जा सकते हैं। शास्त्रों का कहना है कि सिद्धियोग में यमघण्ट, विष आदि कुयोगों का प्रभाव समाप्त हो जाता है ।

अशुभ-योग
(क्रकच, विष, दग्ध, यमघण्ट, मृत्यु, हुताशन)

कोई भी शुभ काम करना हो तो क्रकच आदि अशुभ योगों के समय को छोड़कर उसे प्रारम्भ करें। शास्त्र कहते हैं, कि इन योगों में प्रारम्भ किया गया काम या तो सफल होता ही नहीं, या फिर उस काम में भारी विघ्न बाधाएं उपस्थित होंगी। लेकिन ऊपर बतलाये गए सर्वार्थसिद्धि, रवि और सिद्धि योगों के समय में यदि क्रकच आदि में से काई योग आ पड़े तो उस समय को शुभ कार्य के लिए निषिद्ध नहीं समझना चाहिए, क्योंकि शुभ योग के प्रभाव के कारण ये अशुभ योग अपना कुफल देने में लगभग असमर्थ हो जाते हैं।

त्रिपुष्कर और द्विपुष्कर योग
(बहुमूल्य चीजें खरीदने के लिए शुभ मुहूर्त)

यद्यपि पूर्वोक्त तीन, (सर्वार्थसिद्धि आदि) शुभ योगों में भी जमीन, हीरे, जवाहरात, कार, ट्रक, ट्रैक्टर, टैलीविजन,आभूषण, घोड़ा, गाय, भैंस आदि बहुमूल्य चीजें खरीदी जा सकती हैं , तथापि इसके लिए त्रिपुष्कर तथा द्विपुष्कर योग ज्यादा महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं। यदि कोई चीज त्रिपुष्कर योग में खरीदी जाए तो वह निकट भविष्य में तिगुनी, द्विपुष्कर योग में खरीदी जाए तो दुगनी हो जाती है। अत: इन योगों में बहुमूल्य चीजें खरीदिए या बैंक में रुपया जमा करवाइए। इन योगों में मुकदमा दायर करना तथा दवा खरीदना अच्छा नहीं समझा जाता।

इन योगों के समय अपनी कोई कीमती चीज बेचिए भी नहीं, अन्यथा आगे चलकर उससे तिगुनी या दुगनी बेचने की स्थिति पैदा हो सकती है। धन या अन्य सम्पत्ति के संचय के लिए ये योग अद्वितीय हैं।

सर्वार्थसिद्धि योग (सं. २०५६ वि.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
१९९९ ई.	घं. मि.	१९९९ ई.	घं. मि.
१८ मार्च	२२ ५८	१९ मार्च	सू. उ.
(१९ ,,	सू. उ.	१९ ,,	२० ३९) शु.
१९ ,,	२० ३९	२० ,,	सू. उ.
२४ ,,	सू. उ.	२४ ,,	१० ५६
२५ ,,	१० ०७	२६ ,,	सू. उ.
३१ ,,	१४ ४७	१ अप्रै.	सू. उ.
३ अप्रै.	सू. उ.	३ अप्रै.	२२ ००
५ ,,	सू. उ.	६ अप्रै.	३ ५३
१० ,,	१३ ११	११ ,,	सू. उ.
१५ ,,	९ २५	१६ ,,	सू. उ.
(१६,,	सू. उ.	१६ ,,	६ ४९) शु.
१६ ,,	६ ४९	१७ ,,	३ ५८
१९ ,,	सू. उ.	१९ ,,	१९ ४८
(१९	१९ ४८	२० ,,	सू. उ.) चं.
२२ ,,	सू. उ.	२२ ,,	१५ ३५
(२२ ,,	१५ ३५	२३ ,,	सू. उ.) गु.
३ मई	सू. उ.	३ मई	१० २१
७ ,,	२० ३६	८ ,,	सू. उ.
८ ,,	सू. उ.	८ ,,	२२ ०१
११ ,,	२१ ३५	१२ ,,	सू. उ.
१३ ,,	सू. उ.	१३ ,,	१७ ३५
१३ ,,	१७ ३५	१४ ,,	सू. उ.
१४ ,,	सू. उ.	१४ ,,	१४ ४८
(१७ ,,	५ [illegible]	१८ ,,	२ ५८) चं.
(२० ,,	सू. उ.	२० ,,	२२ २७) गु
२४ ,,	० ३२	२४ ,,	सू. उ.
४ जून	सू. उ.	५ जून	४ २९
८ ,,	५ ४२	९ ,,	४ ४४
१० ,,	सू. उ.	११ ,,	० ५३
(१२,,	१९ २२	१३ ,,	सू. उ.) श.
(१४ ,,	सू. उ.	१४ ,,	१३ ३३) चं.
(१७,,	सू. उ.	१७ ,,	७ २६) गु.
२० ,,	७ ३४	२१ ,,	सू. उ.
२८ ,,	१ २३	२८ ,,	सू. उ.

प्रारम्भ		समाप्त	
१९९९ ई.	घं. मि.	१९९९ ई.	घं. मि.
२ जुला.	सू. उ.	२ जुला.	९ ५२
६ ,,	सू. उ.	६ ,,	११ २४
८ ,,	,, ,,	८ ,,	८ ५५
(१० ,,	,, ,,	११ ,,	२ १७) श.
१६ ,,	१५ ५३	१७ ,,	सू. उ.
१८ ,,	सू. उ.	१८ ,,	१७ ०६
(१८ ,,	१७ ०६	१९ ,,	सू. उ.) र.
२३ ,,	२ ३६	२३ ,,	सू. उ.
२५ ,,	८ २१	२६ ,,	,, ,,
१ अग.	१७ १५	२ अग.	,, ,,
११ ,,	३ १३	११ ,,	,, ,,
१३ ,,	सू. उ.	१४ ,,	५ २८
(१५ ,,	सू. उ.	१६ ,,	१३ ४६) र.
१९ ,,	१० २०	२० ,,	सू. उ.
२२ ,,	सू. उ.	२२ ,,	१८ ४६
२९ ,,	,, ,,	२९ ,,	२२ ५१
१ सितं.	१८ ५४	२ सितं.	सू. उ.
६ ,,	१२ ०७	७ ,,	सू. उ.
७ ,,	११ १२	८ ,,	सू. उ.
१० ,,	सू. उ.	१० ,,	१० २०
(१५ ,,	१८ २४	१६ ,,	सू. उ.) बु.
१६ ,,	सू. उ.	१६ ,,	२१ १८
२० ,,	५ ३८	२० ,,	सू. उ.
२६ ,,	सू. उ.	२६ ,,	६ ५२
२९ ,,	१ ११	२९ ,,	सू. उ.
२९ ,,	सू. उ.	३० ,,	,, ,,
३ अक्तू.	१७ ४७	४ अक्तू.	,, ,,
४ ,,	सू. उ.	४ ,,	१७ १५
५ ,,	,, ,,	५ ,,	१७ ०३
(१३ ,,	,, ,,	१४ ,,	५ ००) बु.
१७ ,,	१३ ५७	१८ ,,	सू. उ.
१८ ,,	१६ २०	१९ ,,	,, ,,
२४ ,,	१४ ५५	२५ ,,	,, ,,
२६ ,,	९ ५२	२७ ,,	,, ,,

प्रारम्भ		समाप्त	
१९९९ ई.	घं. मि.	१९९९ ई.	घं. मि.
२७ अक्तू.	सू. उ.	२८ अक्तू.	सू. उ.
३० ,,	० ४२	३० ,,	,, ,,
७ नवं.	४ १६	७ नवं.	,, ,,
(१० ,,	सू. उ.	१० ,,	११ ५६) बु.
१४ ,,	,, ,,	१४ ,,	२३ ५७
१५ ,,	,, ,,	१६ ,,	२ १३
(२० ,,	३ ३४	२० ,,	सू. उ.) शु.
२१ ,,	सू. उ.	२१ ,,	२३ ३२
२३ ,,	,, ,,	२३ ,,	१७ ४६
२४ ,,	,, ,,	२५ ,,	सू. उ.
२६ ,,	९ १३	२७ ,,	सू. उ.
२ दिसं.	६ १८	२ दिसं.	,, ,,
४ ,,	१० ०६	५ ,,	,, ,,
६ ,,	१५ १७	७ ,,	,, ,,
१२ ,,	६ १२	१२ ,,	,, ,,
१३ ,,	सू. उ.	१३ ,,	८ ४४
(१७ ,,	१२ ४६	१८ ,,	१७ १६) शु.
१९ ,,	सू. उ.	१९ ,,	१० १३
२२ ,,	,, ,,	२२ ,,	२३ ११
२३ ,,	२० ११	२४ ,,	सू. उ.
२४ ,,	सू. उ.	२४ ,,	१७ २९
२९ ,,	१२ ५४	३० ,,	सू. उ.

(सन् २००० ई.)

प्रारम्भ		समाप्त	
२००० ई.	घं. मि.	२००० ई.	घं. मि.
१ जन.	सू. उ.	१ जन.	१८ ३३
३ ,,	,, ,,	४ ,,	० २०
८ ,,	१२ ०४	९ ,,	सू. उ.
१३ ,,	१९ ३२	१४ ,,	,, ,,
(१४ ,,	सू. उ.	१४ ,,	१९ २१) शु.
१७ ,,	१५ १५	१८ ,,	सू. उ.
१९ ,,	सू. उ.	१९ ,,	१० २०
२० ,,	७ ३८	२१ ,,	४ ५७
(२१ ,,	४ ५७	२१ ,,	सू. उ.) गु.
२६ ,,	सू. उ.	२६ ,,	२२ ११
४ फर.	१८ ३९	५ फर.	सू. उ.
५ फर.	सू. उ.	५ फर.	२० ४८
९ ,,	० ३६	९ ,,	सू. उ.
१० ,,	सू. उ.	११ ,,	,, ,,
११ ,,	,, ,,	१२ ,,	० २९
१४ ,,	,, ,,	१४ ,,	२० ५४
(१४ ,,	२० ५४	१५ ,,	सू. उ.) चं.
१७ ,,	सू. उ.	१७ ,,	१५ ४
(१७ ,,	१५ ०४	१८ ,,	सू. उ.) गु.
२३ ,,	सू. उ.	२३ ,,	७ ४२
७ मार्च	७ १९	८ मार्च	सू. उ.
९ ,,	सू. उ.	१० ,,	६ ००
(१२ ,,	३ ५१	१२ ,,	सू. उ.) श.
(१३ ,,	सू. उ.	१४ ,,	१ १४) चं.
(१६ ,,	सू. उ.	१६ ,,	२१ ०४) गु.
१९ ,,	१७ ४७	२० ,,	सू. उ.
२७ ,,	१ ५३	२७ ,,	,, ,,
३१ ,,	सू. उ.	३१ ,,	१३ ०३
४ अप्रै.	,, ,,	४ अप्रै.	१५ २५

रवियोग(सं. २०५६ वि.) सन् १९९९ ई.

प्रारम्भ		समाप्त	
२१ मार्च	सू. उ.	२१ मार्च	१५ २९
२३ ,,	सू. उ.	२३ ,,	१२ १३
२६ ,,	,, ,,	२७ ,,	९ ५७
३० ,,	,, ,,	३० ,,	१३ ०१
७ अप्रै.	६ ४७	८ अप्रै.	९ २६
१८ ,,	२२ १७	१९ ,,	१९ ४८
२० ,,	१७ ४७	२१ ,,	१६ २१
२३ ,,	१५ २८	२५ ,,	१७ ०९
२७ ,,	२० ४७	२८ ,,	३ ०२
२८ ,,	२३ ०८	३० ,,	१ ४३
६ मई	१८ ३४	७ मई	२० ३६
१८ ,,	३ ५८	१९ ,,	० ४८
१९ ,,	२३ १५	२० ,,	२२ २७

रवियोग (सं. २०५६ वि.) (भा. स्टैं.टा.)

प्रारम्भ १९९९ ई.	घं. मि.	समाप्त १९९९ ई.	घं. मि.
२२ मई	२३ ०८	२५ मई	२ ३०
२८ ,,	१० २८	२९ ,,	१३ २४
५ जून	४ १९	६ जून	५ २७
१६ ,,	८ ५४	१७ ,,	७ २६
१८ ,,	६ ४२	१९ ,,	६ ४४
२१ ,,	९ ०६	२२ ,,	११ १४
२२ ,,	१४ १३	२४ ,,	१६ ४०
२६ ,,	२२ ३५	२८ ,,	१ २३
४ जुला.	११ ४१	५ जुला.	११ ४९
१५ ,,	१६ २३	१६ ,,	१५ ५३
१७ ,,	१६ ०७	१८ ,,	१७ ०६
२१ ,,	२३ ४१	२४ ,,	५ ३२
२६ ,,	१० ५३	२७ ,,	१३ ०३
२ अग.	१६ ५०	३ अग.	१२ २०
३ ,,	१६ ०२	४ ,,	१४ ५५
१४ ,,	१ २८	१५ ,,	२ ०३
१६ ,,	३ १८	१७ ,,	५ १०
१७ ,,	९ ५६	१८ ,,	७ ३४
२० ,,	१३ १६	२२ ,,	१८ ४७
२४ ,,	२२ ४०	२५ ,,	२३ ४५
१ सितं.	१८ ५४	२ सितं.	१७ २४
१३ ,,	२३ ४८	१४ ,,	१५ ४८
१५ ,,	१८ २४	१६ ,,	२१ १८
१९ ,,	३ ०९	२१ ,,	७ ३३
२३ ,,	९ १७	२४ ,,	९ ०४
३० ,,	२१ २६	१ अक्तू.	१९ ५४
१३ अक्तू.	२ ०९	१४ ,,	५ ००
१५ ,,	८ ०३	१६ ,,	११ ०७
१८ ,,	१६ २०	२० ,,	१८ ५९
२२ ,,	१८ २२	२३ ,,	१६ ५६
३० ,,	० ४२	३० ,,	२३ २५
११ नवं.	१४ ५९	१२ नवं.	१८ ०७
१३ ,,	२१ १०	१४ ,,	२३ ५७
१७ ,,	३ ४९	१९ ,,	४ ३१
२१ नवं.	२३ ३२	२२ नवं.	२० ४७
२८ ,,	५ ३६	२९ ,,	४ ४६
११ दिसं.	३ २१	१२ दिसं.	६ १२
१३ ,,	८ ४४	१४ ,,	१० ४७
१७ ,,	१२ ४६	१९ ,,	१० १३
२१ ,,	५ १५	२२ ,,	२ १६

सन् २०००ई.

प्रारम्भ	घं. मि.	समाप्त	घं. मि.
९ जन.	१४ २८	१० जन.	१६ २३
१२ ,,	१९ ०५	१३ ,,	१९ ३२
१५ ,,	१८ ३३	१७ ,,	१५ १५
१९ ,,	१० २०	२० ,,	७ ३८
२६ ,,	२२ ११	२७ ,,	२३ ४१
९ फर.	० ३६	१० फर.	० ५९
११ ,,	० ५६	१२ ,,	० २९
१३ ,,	१२ २६	१५ ,,	१९ ०६
१७ ,,	१५ ०४	१८ ,,	१३ ०१
२५ ,,	९ ५५	२६ ,,	१२ ०४
९ मार्च	६ ४६	१० मार्च	६ ००
११ ,,	५ ००	१२ ,,	३ ५१
१४ ,,	१ १४	१५ ,,	२२ २७
१८ ,,	१८ ४०	१९ ,,	१७ ४७
२५ ,,	२३ ०४	२७ ,,	१ ४३

सिद्धियोग (सं. २०५६ वि.) सन् १९९९ ई.

प्रारम्भ	घं. मि.	समाप्त	घं. मि.
२५ मार्च	१० ०७	२६ मार्च	सू. उ.
३ अप्रै.	सू. उ.	३ अप्रै.	२२ ००
२२ ,,	,, ,,	२२ ,,	१५ ३५
११ मई	२१ ३५	१२ मई	सू. उ.
८ जून	५ ४२	९ जून	४ ४४
६ जुला.	सू. उ.	६ जुला.	११ २४
२५ ,,	८ २१	२६ ,,	सू. उ.

सिद्धियोग (सं. २०५६ वि.) सन् १९९९ ई.

प्रारम्भ १९९९ ई.	घं. मि.	समाप्त १९९९ ई.	घं. मि.
१३ अग.	सू. उ.	१४ अग.	१ २८
१० सितं.	,, ,,	१० सितं.	१० २०
२९ सितं.	,, ,,	२९ ,,	२३ १३
२७ अक्तू.	,, ,,	२७ अक्तू.	७ १३
७ नवं.	४ १६	७ नवं.	सू. उ.
४ दिसं.	१० ०६	५ दिसं.	,, ,,
२३ ,,	२० ११	२४ ,,	,, ,,

सन् २०००ई.

प्रारम्भ	घं. मि.	समाप्त	घं. मि.
१ जन.	सू. उ.	१ जन.	१८ ३३
२० ,,	७ ३८	२१ ,,	४ ५७
१७ फर.	सू. उ.	१७ फर.	१५ ०४
७ मार्च	७ १९	८ मार्च	सू. उ.
२७ ,,	१ ५३	२७ ,,	,, ,,
४ अप्रै.	सू. उ.	४ अप्रै.	१५ २५

त्रिपुष्करयोग (सं. २०५६ वि.) सन् १९९९ई.

प्रारम्भ	घं. मि.	समाप्त	घं. मि.
१३ अप्रै.	१३ ०८	१३ अप्रै.	१८ ४८
२७ ,,	सू. उ.	२७ ,,	१४ ३४
१५ जून	१० ५९	१५ जून	१७ ४२
२० ,,	७ ३४	२० ,,	११ ४८
२८ अग.	सू. उ.	२८ अग.	२३ ४४
११ सितं.	,, ,,	११ सितं.	१० ५४
२६ अक्तू.	९ ५२	२६ अक्तू.	१९ ४७
३० ,,	८ ०५	३० ,,	२३ २५
२८ दिसं.	१२ २१	२९ ,,	सू. उ.

सन् २००० ई.

प्रारम्भ	घं. मि.	समाप्त	घं. मि.
८ जन.	सू. उ.	८ जन.	१२ ०४
११ मार्च	२७ २८	११ मार्च	२७ ५१

द्विपुष्कर योग(सं. २०५६वि.) (सं.१९९९ई.)

प्रारम्भ	घं. मि.	समाप्त	घं. मि.
२३ मार्च	१२ १३	२४ मार्च	४ ४१
१२ अप्रै.	२० ३४	१३ अप्रै.	सू. उ.
१७ मई	५ ३८	१७ मई	९ ५३
२६ मई	४ ५४	२६ मई	सू. उ.
६ जून	सू. उ.	६ जून	५ २७

द्विपुष्कर योग(सं. २०५६वि.) (सं.१९९९ई.)

प्रारम्भ १९९९ ई.	घं. मि.	समाप्त १९९९ ई.	घं. मि.
८ अग.	२ १३	८ अग.	सू. उ.
२२ सितं.	८ ४७	२२ सितं.	१९ ४८
१० अक्तू.	१८ ०७	१० अक्तू.	२१ ३१
४ दिस.	सू. उ.	४ दिस.	१० ०४

सन् २०००ई.

प्रारम्भ	घं. मि.	समाप्त	घं. मि.
१८ जन.	१२ ५६	१८ जन.	२० २३
६ फर.	१९ ४८	६ फर.	२२ ३१
२१ मार्च	१७ १४	२२ मार्च	सू. उ.
१ अप्रै.	सू. उ.	१ अप्रै.	१४ ४२

अमृतसिद्धि-योग (सन् २०५६ वि.) सन् १९९९ ई.

प्रारम्भ	घं. मि.	समाप्त	घं. मि.
(१९मार्च)	सू. उ.	१९ मार्च	२० ३९) शु.
(१६ अप्रै.	,, ,,	१६ अप्रै.	६ ४९) शु.
(१९ ,,	१९ ४८	२० अप्रै.	सू उ.) च.
(२२ ,,	१५ ३५	२३ अप्रै.	,, ,,) गु.
(१७मई	५ ३८	१८ मई	२ ५८) च.
(२० मई	सू. उ.	२० मई	२२ २७) गु.
(१२जून	१९ २२	१३ जून	सू. उ.) शं.
(१४,,	सू. उ.	१४ ,,	१३ ३३) चं.
(१७ ,,	,, ,,	१७ ,,	७ २६) गु.
(१०जुला.	,, ,,	११ जुला.	२ १७) श.
(१८,,	१७ ०६	१९ ,,	सू. उ.) र.
(१५अग.	सू. उ.	१६ अग.	१६ ४६) र.
(१५सितं.	१८ २४	१६ सितं.	सू. उ.) बु.
(१३अक्तू.	सू. उ.	१४ अक्तू.	५ ००) बु.
(१०नवं.	,, ,,	१० नवं.	११ ५६) बु.
(२० नवं.	३ ३४	२० ,,	सू. उ.) शु.
(१७दिसं.	१२ ४६	१८ दिसं.	१७ १६) शु.

सन् २००० ई.

प्रारम्भ	घं. मि.	समाप्त	घं. मि.
(१४ जन.	सू. उ.	१४ जन.	१९ २१) शु.
(२१ ,,	४ ५७	२१ ,,	सू. उ.) गु.
(१४ फर.	२० ५४	१५ फर.	,, ,,) चं.
(१७फर.	१५ ०४	१८ ,,	,, ,,) गु.
(१२ मार्च	३ ५१	१२ ,,	,, ,,) शं.
(१३ मार्च	सू. उ.	१४ मार्च	१ १४) च.
(१६मार्च	,, ,,	१६ ,,	२१ ४) गु.

USEFUL & IMPORTANT BOOKS ON ASTROLOGY ETC.

V. K. CHAWDHRY's

- ✻ Self learning course in Astrology 40/-
  (Very useful book to learn the Astrology in an easy way)
- ✻ How to Study Divisional charts 100/-
- ✻ System's Approach for interpreting the horoscopes 100/-
- ✻ How to identify significant events (Through transit) 55/-
- ✻ Impact of Ascending Signs 80/-
- ✻ How to Analyse married Life 55/-

J. C. LUTHRA's

- ✻ Practical Mundane Astrology-(Basic Principles) 70/-
- ✻ Practical Mundane Astrology 200/-
  (How to Judge a Mundane chart)

MANU BHAI SHAH's

- ✻ A Book of Astrological correct predictions (2 Vols.) 125/-
- ✻ How to find out Birth chart from finger prints (2 Vols.) 150/-
- ✻ How to find out a day fo future event from the birth chart (4 Vols.) 105/-
- ✻ An easy way of casting the Horoscope (2 Vols) 45/-
- ✻ Results of Planets & its time 25/-
- ✻ Correct & Scientific Method of Yearly Reading 45/-
- ✻ Grades of financial position from the Birth Chart (2 Vols) 45/-
- ✻ Test your Astrological knowledge (2 Vols.) 45

BOOK BY L. R. CHAWDHRY's

- ✻ Scientific Analysis of Horoscope 275/-
  (An exhaustive study based on Hindu Predictive Astrology)
- ✻ Saturn-A friend or a foe 130/-
- ✻ Mars & Astrology 130/-
- ✻ The fascinating jupiter 80/-
- ✻ Conjunction of Planets 80/-
- ✻ Practical Remedial Measures 80/-
- ✻ Transit of Planets 175/-
- ✻ Complete Astro-Palmistry 200/-
  (How to cast a horoscope from the lines & Signs of the hand) 175/-
- ✻ Practicals of Yantras 150/-
- ✻ Practicals of Mantras & Tantras 225/-
- ✻ Women & Astrology
  (Complete Book on female Horoscopy first of its kind)

SUMEET CHUGH's

- ✻ Yogini & Kalchakra Dasa 60/-
- ✻ Varshphal or Annual Horoscope 60/-
- ✻ Horary Astrology & Swarodaya shastra 60/-
- ✻ Conditional Dasa of sage parasara 50/-
- ✻ Determining profession-(Ups & Down in carrier) 100/-

- ✻ Marriage, Love, Sex & Children 75/-

PALMISTRY, NUMEROLOGY ETC.

- ✻ All the secrets of palmistry *-Prof. Dayanand* 75/-
- ✻ Palmistry-How to Master it 70/-
- ✻ Hand of Man-*Noel Jaquin* 98/-
- ✻ Art of Hand Analysis *-Mir Bashir* 125/-
- ✻ Hasta Samudrika Shastra-*K. C. Sen* 260/-
- ✻ The study of palmistry-*Saint-German* 250/-
- ✻ Cheir's Language of The Hand 195/-
- ✻ Palmastra-*M. M. Gaffar* 350/-
- ✻ Endypacdia of Palm Reading-*M. Katakkar* 175/-
- ✻ Book of Numbers -Cheiro 125/-
- ✻ Numbers & Your fortune-M.V. Tuli 60/-
- ✻ Kabala of Numbers-Sepharial 170/-
- ✻ You & Your Star-Cheiro 197/-
- ✻ How to beat races by numerology 98/-
- ✻ Dial your birth number *-M. Katakkar* 110/-

BY AN OUTSTANDING RESEARCH SCHOLAR *-K. N. RAO*

- ✻ Ups & Down in Carrier 130/-
- ✻ Planets & Children 80/-
- ✻ Jaimini's Chara Dasa 150/-

PROF. B. SURYANARAIN RAO's

- ✻ Jaimini Sutras 54
- ✻ Stri Jataka 35
- ✻ Jatak Chandrika (Zerox)
- ✻ Shat Yoga Manjari (Zerox)
- ✻ Brihat Jatak

J. N. BHASIN's

- ✻ Art of Prediction 50
- ✻ Astro-sutras 50
- ✻ Events & Nativties 35
- ✻ Dictionary of Astrology 80
- ✻ Astrology in Vedas 40

M. C. JAIN's

- ✻ Stars & Your future 45
- ✻ Mundane Astrology 35
- ✻ Rahu & Ketu in Predictive Astrology 35
- ✻ Karmic Control Planets 80
- ✻ Astrology in Marriage counselling 50
- ✻ Occult Power of Gems 60

- ✻ Jaimini's Mondook Dasa 150/-
- ✻ Astrology Destiny & Wheel of time 130/-
- ✻ Yogi's Destiny & Wheel of time 200/-
- ✻ Timing events through vimshottri dasa 120/-
- ✻ Astrological journey through history, mystery & Horoscope 200/-
- ✻ Advanced technique of astrological predictions 150/-
- ✻ A text book of varshpha - *K. S. Charak* 150/-
- ✻ Essentials of medical astrology 150/-
- ✻ Elements of vedic astrology (2 Vols.) 300/-
- ✻ Yogas in Astrology 150/-
- ✻ Subtleties in medical astrology 130/-
- ✻ Profession-Col.- *A. K. Gaur* 125/-
- ✻ Astronomy & Mathematical Astrology-*Deepak Kapoor* 135/-

IMMORTAL ASTROLOGICAL CLASSICS ON ASTROLOGY

FIRST TIME PUBLISHED IN ENGLISH TRANSLATION WITH SANSKRIT TEXT

- ✻ Brihat Parasara Hora Shastra
  (First & Last word in Hindu Astrology) Two Vols. Set 600/-
- ✻ Brihat Samhita by varahamihira (2 Vols) 500/-
- ✻ Uttar Kalamrita—*Kalidasa* 70/-

नोट : पुस्तकों के मूल्य बदलते रहते हैं। अतः पुस्तक भेजते समय जो रेट होंगे वही लगेंगे

NOTE:- PLEASE SEND THE FULL VALUE OF BOOKS IN ADVANCE

AGGARWAL BOOK DEPOT(REGD.)

460, KHARI BAOLI, DELHI-6

PH.: 2943254

बी. भारद्वाज दूरभाष: - 0172-779137(PP)

नमिता कम्प्यूटर सेन्टर

LASER TYPE SETTING
{ HINDI, SANSKRIT, ENGLISH & PUNJABI }
BOOK & THESIS WORK
TRANSLATION WORK

कोठी नं. 1530, सैक्टर-11, चण्डीगढ़

...मिता कम्प्यूटर ग्राफिक्स, कोठी न० 1530, सैक्टर-11, चण्डीगढ़, Ph.code-0172-779137(PP)

दुर्लभ, प्राचीन भृगु संहिता

(संस्कृत-हिन्दी)

यह ग्रंथ प्राचीन काल से ही श्रवणगोचर होता रहा है। इस विद्या के प्रमुख आचार्य श्री भृगु जी महाराज हैं इसी कारण यह महाविद्या शास्त्र भृगु संहिता के नाम से जहां तहां प्रकट है एवं जन्मपत्र के फलित के विषय में अद्वितीय जाना और माना गया है। यह ग्रंथ प्राचीन एवं जीर्ण दशा में कठिनता से प्राप्त किया गया है। इस अनुपलब्ध ग्रन्थ में दस खण्ड हैं:-

1. संतान उपाय खण्ड
2. कुंडली खंड
3. फलित खंड
4. स्त्री फलित खंड
5. नरपति जयचर्या
6. नष्ट जन्मांग दीपिका
7. मूक प्रश्न विचार
8. राज खंड
9. जातक प्रकरणम्
10. सर्वारिष्ट निवारण खंड

अब इस अप्राप्य, दुर्लभ भृगसंहिता के फुलस्केप आकार के 2500 पृष्ठों की इलैक्ट्रोस्टेट प्रति उपलब्ध की जा सकती है।

तीन जिल्दों में फुलक्लाथ बाइडिंग सहित (बड़ा साईज) मूल्य 4800/-

★ कृपया आदेश के साथ पेशगी 1000/- रुपया अवश्य भेजें।

★ डाक व्यय अलग 100/- रुपया।

अधिक जानकारी के लिए लिखें।

★ इसके अतिरिक्त हमारे यहाँ ज्योतिष, हस्तरेखा, तंत्र-मंत्र-यंत्र एवं कर्मकाण्ड संबंधी पुस्तकों का विशाल भण्डार है। कुछ दुर्लभ एवं प्राचीन ग्रंथ भी समय-समय पर आते रहते हैं। नवीन पुस्तकों के लिए भी सम्पर्क रखें।

★ हिन्दी एवं अंग्रेजी पुस्तकों की विस्तृत सूची- पत्र अलग से मंगवायें।

व्यापारिक तेजी मंदी संबंधी उत्तम पुस्तकें

वायदे और तैयारी दोनों काम में सहायक

व्यापार चिन्तामणि

लेखक-पं. गंगा प्रसाद ज्योतिषाचार्य 200/-

जिसमें सोना, चांदी रुई. ग्वार, मटर, सरसों, तेल, तिलहन, अलसी, शेयर, तांबा, लोहा, घी, गेहूँ और वारदाना आदि के सदैव के लिए तेजी-मंदी के शास्त्रीय नियम व कुछ उपाय और अपने तमाम जीवन के अनुभव सरल भाषा में लिखे गए हैं। इसके अतिरिक्त प्रत्येक वस्तु की दैनिक, साप्ताहिक, मासिक टकेवार तेजी-मंदी निकालने की विधि, कुछ विशेष व्यक्तियों के इस लाइन पर अनुभव, लक्ष्मी प्राप्ति और परेशानी दूर करने के लिए कुछ अनुभूत योग, यंत्र-मंत्र, जप और सिद्धियाँ इत्यादि का विस्तृत उल्लेख है।

तेजी मंदी की अन्य अनुपम पुस्तकें

- आधुनिक तेजी मंदी का विधान 125/-
  अंशात्मक 2772 दृष्टि योगों का विश्लेषण (हमेशा काम देने वाली तेजी मंदी की उत्तम पुस्तक)
- अनुभव योग माला (इसमें तेजी मंदी के अचूक चांस दिए गए हैं) 240/-
- सर्वतोभद्र चक्र एवं सर्वतोभद्र चक्र की कुंजी और वाणिज्य सर्वस्व 260/-
  -लेखक पंड्या मोतीलाल नागर
- Vedic Astrology In Money matters- *P.K. Vasudeva* 300/-
- अनूभूत व्यापार भविष्य-*पं० महावीर प्रसाद (शिष्य पं० मीठालाल व्यास)* 325/-
- Varahmihira's Sarvato Bhadra Chakra 260/-
- Perpetual Market Forecast & Business Astrology 80/-

Besides, Books by B.V.Raman Bangalore, K.S.Krishnamurti Madras, By Foreign Scholars, Ephemeris by N.C. Lahiri Calcutta can also be had from:

के. के. गोयल एण्ड कम्पनी

K.K. Goyal & Co.

214, दरीबा कलां, दिल्ली-110006 फोन : 3253604

214, Dariba Kalan, Delhi-110006 PH : 3253604

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार की नई एवं प्रमुख पुस्तकें

ज्योतिष संबंधी पुस्तकें

असली लाल किताब का सरल अध्ययन–उर्दू–फारसी भाषा में लिखी गई ज्योतिष की अनुपम लाल किताब का सरल अध्ययन आपको ज्योतिष फटाफट सिखाने में सक्षम है। इसे आपके लिये सरल किया है–**डॉ. उमेशपुरी 'ज्ञानेश्वर'** ने। *मूल्य : रु. 225/-*

लाल किताब के अद्भुत टोटके एवं उपाय–लाल किताब के अद्भुत टोटके एवं उपाय सरल, सस्ते और शीघ्र प्रभावी हैं। इनको सरल ढंग से समझा रहे हैं, आपके प्रिय लेखक **डॉ. उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'**। इसे पढ़कर लाभ उठाएं। *मूल्य : रु. 120/-*

सम्पूर्ण लाल किताब और हस्तरेखा ज्ञान–सम्पूर्ण लाल किताब आपको भविष्य जानने का सरल व अनुपम मार्ग दिखलायेगी। पुस्तक पढ़कर इस विषय का अभूतपूर्ण ज्ञान प्राप्त करें। *मूल्य : रु. 360/-*

नवग्रह उपासना और ग्रहदोष के उपाय–प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य *डॉ. उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'* ने इस पुस्तक में ग्रहों की उपासना विधि और अन्य साधनों की चर्चा की है जिससे आप नवग्रहों के शोषण से बचकर आत्मविश्वास सहित उन पर शासन कर सकें। इसे पढ़कर ग्रहदोष के उपाय जानकर उनसे मुक्ति पायें। *मूल्य : 60/-*

प्राचीन भारतीय फलित शास्त्र–अनुवाद एवं व्याख्या-**डॉ. उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'** कुण्डली बनाने की अपेक्षा अपना कल कहना अत्यन्त कठिन है। यदि आप ज्योतिषी बनकर कुण्डली के रहस्यों को खोल लेना चाहते हैं तो वराहमिहिर कृत बृहज्जातकम् पर आधारित इस पुस्तक को अवश्य पढ़ें। *मूल्य : रु. 80/-*

ब्रह्माण्ड और ज्योतिष रहस्य– महाविद्वान *श्री नंदलाल दशोरा* रचित इस पुस्तक में राशियों, नक्षत्रों, सितारों, हमारा सौरमण्डल, आकाशगंगा, नीहारिकाएँ, ग्रहों आदि के वर्णन के साथ-साथ सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का विस्तृत परिचय दिया है जो मानवोपयोगी है। *मूल्य : रु. 75/-*

कल्याणकारी शनि देवता– क्या शनि सचमुच क्रूर है? क्या शनि दारुण दुःखों का दाता है? नहीं, ऐसा नहीं है, शनि जैसा उपकारी और कल्याणकारी ग्रह दूसरा नहीं है। **पं. रामकृष्ण शर्मा 'राजर्षि'** द्वारा रचित दुःख दारिद्य निवारण और शान्ति प्राप्त करने हेतु इस अनूठी पुस्तक को पढ़कर शनिदेव को निकट से जानें। *मूल्य : रु. 48/-*

मुहूर्त निकालिए–सफलता के लिए समय को पहचानना आवश्यक है। मुहूर्त विचार से समय की शुभाशुभता ज्ञात होती है। **डॉ. उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'** रचित इस पुस्तक को पढ़कर मुहूर्त निकालना और समय की शुभाशुभता स्वयं जानें। *मूल्य : रु. 40/-*

भृगुसूत्रम्–महर्षि भृगु रचित कुण्डली का फल बतलाने वाले अद्वितीय ग्रन्थ की सोदाहरण सरल व्याख्या की है **डॉ. उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'** ने। *मू.: रु. 30/-*

भारतीय ज्योतिष संग्रह–आप ज्योतिष सीखना चाहते हैं तो **डॉ. उमेशपुरी 'ज्ञानेश्वर'** द्वारा रचित सम्पूर्ण ज्योतिष ज्ञान का प्राथमिक एवं शीघ्रबोध कराने में सक्षम पुस्तक पढ़ें। *मूल्य : रु. 45/-*

वर्ष फल विचार–वर्ष कुण्डली स्वयं बनाकर अपना फल जानने के लिए *डॉ. उमेशपुरी 'ज्ञानेश्वर'* रचित इस पुस्तक को अवश्य पढ़ें। इसके द्वारा वर्ष का सम्पूर्ण फल आप स्वयं जान सकेंगे व अन्य व्यक्तियों का वर्षफल बना सकेंगे। *मूल्य : रु. 75/-*

वास्तुकला सम्बन्धी पुस्तकें

विश्वकर्मा प्रकाश–वास्तु पितामह द्वारा रचित ग्रन्थ जो भवन निर्माण द्वारा सुखी बनाने में सक्षम है। संस्कृत श्लोक और उनका सरल हिन्दी अनुवाद पढ़कर लाभ उठाएँ। *मूल्य: रु. 120/-*

वास्तुकला और भवन निर्माण–वास्तुकला की रूपरेखा से लेकर भवननिर्माण में इसको उपयोगिता के बारे में बता रहे हैं *डॉ. उमेशपुरी 'ज्ञानेश्वर'*। *मूल्य : रु. 125/-*

भारतीय वास्तुशास्त्र– प्राचीन भारतीय विद्या वास्तु के सम्बन्ध में एक सम्पूर्ण ग्रन्थ जिसमें स्थापात्कला के सभी अंगों पर प्रकाश डाला गया है। अनेक रेखाचित्रों से भरपूर *डॉ. उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'* का यह ग्रन्थ सर्वोपयोगी है। *मूल्य : रु. 75/-*

अध्यात्म-ज्ञान सम्बन्धी पुस्तकें

ध्यान योग चिकित्सा-असाध्य रोगों का बिना दवा उपचार करके वैज्ञानिक जगत् को चुनौती देने वाली, *श्री नंदलाल दशोरा* कृत अनोखी पुस्तक। इस पद्धति के द्वारा गुरुदेव मोहन जी ने जिन हजारों रोगियों को रोगमुक्त किया है उनका विवरण भी इस पुस्तक में सचित्र दिया है। *मूल्य : रु. 90/-*

मानसिक शान्ति–*(लेखक: श्री नंदलाल दशोरा)* ज्ञान के बिना शान्ति की आशा करना मृगमारीचिका के समान मिथ्या है। अज्ञानवश ही मनुष्य को भ्रम हो गया है कि सांसारिक पदार्थ और परिवार उसे सुख दे सकता है जिनके पास यह सब कुछ भी है वे भी दुःखी हैं तो इसका अर्थ है कि सुख अन्यत्र है। यहीं से ज्ञान प्राप्ति की जिज्ञासा करके हम मानसिक शान्ति की ओर बढ़ चलें, इसी भावना से यह पुस्तक आपके लिए लिखी गई है। *मूल्य : रु. 50/-*

आत्मिक आनन्द–*(लेखक: श्री नंदलाल दशोरा)* पैदा होकर आयु की समाप्ति पर मर जाना ही जीवन नहीं है। इस मनुष्य जीवन को धर्म के साथ संयुक्त करके अच्छे परिणाम प्राप्त किये जा सकते हैं। इन अच्छे परिणामों की प्राप्ति का प्रयत्न ही हमारी जीवन साधना है और यथोचित जीवन साधना से आत्मिक आनन्द की प्राप्ति हो सकती है। *मूल्य : रु. 50/-*

आत्मा की जीवन यात्रा–मानव आत्मा की जीवन यात्रा कब और कहाँ से प्रारम्भ होती है? आत्मा की जीवन यात्रा कब समाप्त होती है? गृहस्थाश्रम का इस जीवन यात्रा में क्या महत्व है? मानव जीवन में दुःखों से बचने के क्या उपाय हैं? जीवन मुक्ति का क्या तात्पर्य है? परमात्मा के पास आत्मा का मूल्यांकन कैसे होता है? इत्यादि प्रश्नों का उत्तर लेखक *दयाकृष्ण शर्मा* ने इस पुस्तक में देकर सराहनीय कार्य किया है। *मूल्य : रु. 40/-*

हमारे सोलह संस्कार : औचित्य और महत्व-संस्कार का अर्थ किसी को दोषमुक्त करना है। वस्तु को जिस प्रक्रिया से दोश रहित किया जाये और उसमें अतिशय का आधान कर देना ही संस्कार है। सोलह संस्कारों की प्रक्रिया मन के शोधन की है। पूर्व जन्म के संस्कार दोष दूर करके नवीन उत्तम संस्कारों से मनुष्य को अनुप्राणित किया जाना ही हिन्दू धर्म में संस्कार है। इस विषय को *श्री नंदलाल दशोरा* ने इस पुस्तक में समझाया है। *मूल्य : रु. 30/-*

ध्यान साधना-ध्यान साधना पर बीस वर्षों के आध्यात्मिक अनुभवों को जो लेखक *श्री नंदलाल दशोरा* ने अपने गुरुओं, सत्संग, स्वाध्याय, गुरु एवं ईश्वर कृपा से प्राप्त किया है को इस पुस्तक में साधकों के हित हेतु प्रस्तुत किया है। *मूल्य : रु. 60/-*

मन की अद्भुत शक्तियाँ–सफल जीवनयापन के लिये मन की अद्भुत शक्तियों एवं उसकी कार्यप्रणाली को जान लेना जरूरी है। इसी को समझाने का प्रयास *श्री नंदलाल दशोरा* ने अपनी इस पुस्तक में किया है। *मूल्य: रु. 60/-*

चमत्कारी कुण्डलिनी शक्ति –कुण्डलिनी शक्ति के जागरण पर अद्वितीय पुस्तक *(डॉ. कमल प्रकाश अग्रवाल)* अनेक चित्रों से सुसज्जित अभूतपूर्व ग्रन्थ जिसे आप देखते ही अभिभूत हो उठेंगे। *मूल्य : रु. 300/-*

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की प्रमुख वाणियाँ–सरल हिन्दी अनुवाद सहित (आकर्षक सुनहरी जिल्द) *मूल्य : रु. 250/-*

चमत्कारी हिप्नाटिज्म–*(प्रभावशाली सम्मोहन विद्या, रोगोपचार और त्राटकसाधना)* **एस. एम. बहल** की पुस्तक पढ़कर आप स्वत: बिना गुरु के हिप्नाटिज्म की सम्पूर्ण जानकारी सरल ढंग से पा सकेंगे। *मूल्य : रु. 80/-*

अष्टांग योग रहस्य (घेरण्ड संहिता)–*पं. रामकृष्ण शर्मा 'राजर्षि'*–घेरण्ड ऋषि योग विद्या के महान मर्मज्ञ थे। वह योग की प्रत्येक समस्या का समाधान थे अत: यह ग्रन्थ भारतीय संस्कृति की विरासत है। यह अज्ञान रूपी तमस को मिटाने वाली ज्ञानरूपी शलाका है। *मूल्य : रु. 50/-*

चारों वेदों का सार– सम्पादन : **डॉ. उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'**–*ऋग्वेद सार, सामवेद सार, यजुर्वेद सार एवं अथर्ववेद सार* नामक पुस्तकों में प्रत्येक वेद का ज्ञानामृत 108 सूक्तियों में संकलित है। *वेदाध्ययन कैसे करें?*-वेदों का अध्ययन सच्चे अर्थों में जीवन का निर्माण करना है। वेदों का गूढ़ार्थ समझने व वेद पढ़ने से पूर्व इस पुस्तक का अध्ययन अवश्य करें। **डॉ. उमेशपुरी 'ज्ञानेश्वर'** की यह पुस्तक आपको वेद पढ़ने की ओर अग्रसर करेगी। *प्रत्येक का मूल्य : रु. 20/- सैट का मूल्य : रु. 100/-*

मन को वश में कैसे करें?–*डॉ. उमेशपुरी 'ज्ञानेश्वर'* कृत मन का स्वरूप एवं मनोनिग्रह की सरल रीतियाँ समझाने वाली अनमोल पुस्तक। *मूल्य : रु. 50/-*

रहस्यमयी विद्या REIKI स्पर्श चिकित्सा

आध्यात्मिक उपचार की जापानी (उशुई) पद्धति

रेकी चिकित्सा–(भारत की एक प्राचीन लुप्त विधि)

लेखक : *श्री नंदलाल दशोरा*

यदि आप स्वस्थ व निरोगी रहना चाहते हैं।
यदि आप स्वयं का व दूसरों का उपचार करना चाहते हैं।
यदि आप व्यग्रता, हताशा, दुश्चिता, आकुलता, अवसाद, विषाद जैसी स्थितियों से मुक्ति पाना चाहते हैं।
यदि आप मानसिक तनावों से मुक्त रहकर शान्ति व आनन्द प्राप्ति के इच्छुक हैं तो भारत की इस अति प्राचीन लुप्त विद्या को सीखिये व लाभ उठाइये।

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार की सस्ती, सुन्दर और उपयोगी पुस्तकें

मंत्र-तंत्र-यंत्र संबंधी

दश महाविद्या तन्त्र सार (योगीराज यशपाल जी)	५०/-
बगलामुखी महासाधना (योगीराज यशपाल जी)	५०/-
यंत्र विधान (योगीराज यशपाल जी)	१०५/-
संकट मोचिनी कालिका सिद्धि (योगीराज यशपाल जी)	१००/-
यंत्र माला (योगीराज यशपाल जी)	४०/-
सृष्टि का रहस्य : दश महाविद्या (योगीराज यशपाल जी)	२५/-
संजीवनी विद्या : महामृत्युंजय प्रयोग (योगीराज यशपाल जी)	३५/-
सिद्ध शाबर मंत्र (योगीराज यशपाल जी)	४५/-
तंत्र प्रयोग (लेखक : योगीराज यशपाल जी)	४०/-
आदित्य हृदय स्तोत्र-सूर्योपासना सहित (यशपाल जी)	२०/-
उड्डीश तंत्र (सम्पादन : योगीराज यशपाल जी)	२५/-
दत्तात्रेय तंत्र (सम्पादन : योगीराज यशपाल जी)	२५/-
मंत्र रामायण रामचरित मानस के सिद्ध मंत्र (योगीराज यशपाल जी)	२२/-
आदि मंत्र शास्त्र (योगीराज यशपाल जी)	२५/-
तंत्र महायोग (योगीराज अवतार सिंह अटवाल)	३५/-
महाविद्या तन्त्र मन्त्र (योगीराज अवतार सिंह अटवाल)	३५/-
सचित्र तान्त्रिक जड़ी बूटी दर्शन (योगीराज अवतार सिंह अटवाल)	४५/-
गुरु नानक मंत्र शक्ति (योगीराज अवतार सिंह अटवाल)	२५/-
मन्त्र पोथी (योगीराज अवतार सिंह अटवाल)	३०/-
बावन जंजीरा (यशपाल जी व अटवाल जी)	५०/-
मंत्र दीक्षा और रहस्य (पं. महावीर प्रसाद मिश्र)	४०/-
तंत्र के अचूक प्रयोग (तांत्रिक बहल)	३०/-
पृथ्वी में गढ़ा धन कैसे पायें (तांत्रिक बहल)	३०/-
गायत्री साधना (एस. एम. बहल)	५०/-
नाग और नागमणि (तांत्रिक बहल)	२५/-
तंत्र मंत्र द्वारा रोग निवारण (तांत्रिक बहल)	३५/-
सौन्दर्य लहरी (यंत्र और व्याख्या सहित) प्रस्तुति तांत्रिक बहल	३०/-
गोरख तंत्र (तांत्रिक बहल)	३०/-
मुस्लिम तंत्र (तांत्रिक बहल)	२५/-
मृत आत्माओं से सम्पर्क और अलौकिक साधनाएँ (तांत्रिक बहल)	४०/-
वनस्पति तंत्र (तांत्रिक बहल)	३०/-
चमत्कारी मंत्र साधना (तांत्रिक बहल)	२५/-
तंत्र द्वारा मनोकामना सिद्धि (पं. भृगुनाथ मिश्र)	२५/-
सुखी जीवन के लिए टोटके और मंत्र (तांत्रिक बहल)	३५/-
सुगम तांत्रिक क्रियाएँ (तांत्रिक बहल)	३०/-
तंत्र मंत्र यंत्र (चाणक्य विरचित) प्रस्तुति तांत्रिक बहल	३५/-
पराविज्ञान की साधना और सिद्धियाँ (तांत्रिक बहल)	२५/-
मंत्र साधना कैसे करें (तांत्रिक बहल)	२५/-
तंत्र साधना कैसे करें (तांत्रिक बहल)	२५/-
त्रिसूक्तम् : यंत्र और अनुवाद सहित (पं. हरिओम कौशिक)	२५/-
तंत्र द्वारा यश, धन और विद्या प्राप्ति (पं. हरिओम कौशिक)	२५/-
तंत्र द्वारा दूर करें दुर्भाग्य (गोपाल राजू)	३०/-
धनदायक तांत्रिक प्रयोग (गोपाल राजू) रंगीन चित्रों सहित	३०/-
अन्धविश्वास सत्य और तथ्य (गोपाल राजू)	२०/-
तंत्र सिद्धि (पं. राधाकृष्ण श्रीमाली)	२५/-
यंत्र विद्या के १२१ प्रयोग (बाबा औढरनाथ तपस्वी)	५०/-
मंत्र प्रयोग (बाबा औढरनाथ तपस्वी)	२५/-
मंत्र तंत्र और टोटके (डॉ. रामकृष्ण उपाध्याय)	२५/-

योग एवं चिकित्सा सम्बन्धी

चमत्कारी कुण्डिलिनी शक्ति (डॉ. कमल प्रकाश)	३००/-
उपयोगी जड़ी बूटियाँ : चित्र, परिचय व प्रयोग (डॉ. उपाध्याय)	१२०/-
प्राकृतिक उपायों द्वारा स्वास्थ्य रक्षा (डॉ. उपाध्याय)	३०/-
सामान्य रोगों की सरल चिकित्सा (डॉ. उपाध्याय)	२०/-
रत्न परिचय और चिकित्सा विज्ञान (डॉ. उपाध्याय)	३०/-
स्वास्थ्य और आहार (आचार्य प्रकाश)	२०/-
सचित्र स्वास्थ्य और योग (आचार्य प्रकाश)	३०/-
कुण्डलिनी सिद्धि (प्रकाशनाथ तंत्रेश) सचित्र	३५/-
स्वरोदय विज्ञान (नासिका छिद्रों से श्वास प्रक्रिया पर आधारित)	३०/-

कर्मकाण्ड सम्बन्धी पुस्तकें

कर्मकाण्ड भारती (मौनी बाबा)	६०/-
पूजन चन्द्रिका (पशुपतिनाथ शर्मा गढ़वाली)	६०/-
नित्यकर्म पूजा पद्धति और पूजा विधान (पं. ज्वाला प्रसाद)	५०/-
वृहद् स्तोत्र रत्नाकर (४६४ स्तोत्र)	७५/-

ज्योतिष सम्बन्धी पुस्तकें

आपका राशिफल और लाटरी गाईड (बहल)	२०/-
बच्चों के भाग्यशाली नाम (३५०० सार्थक नामों के शब्दकोश सहित)	३५/-
सामुद्रिक ज्ञान : पंचागुली साधना (बहल) चित्रों सहित	४०/-
हस्त रेखायें देखना कैसे सीखें (बहल) सचित्र	२५/-
हस्त रेखाओं के गूढ़ रहस्य (बहल) सचित्र	२५/-
सचित्र शरीर लक्षण विज्ञान (बहल)	२५/-
सरल ज्योतिष-प्रवेश (भृगुनाथ मिश्र)	१५/-
सरल ज्योतिष फल दीपिका (भृगुनाथ मिश्र)	२०/-
कन्या की शादी शीघ्र कैसे करें (भृगुनाथ मिश्र)	२०/-
स्वप्न सिद्धान्त (योगीराज यशपाल जी)	२०/-
स्वप्न सिद्धिप्रद मंत्रों सहित स्वप्न रहस्य (म.प्र. मिश्र)	२०/-
स्वप्न फल विचार (श्रीनाथ जी)	१०/-
हनुमान ज्योतिष (भविष्य ज्ञान प्रश्नावली सहित)	२०/-
सम्पूर्ण राशि विचार (डॉ. उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर')	१०/-
अंक ज्योतिष (योगीराज यशपाल जी)	३०/-
शकुन अपशकुन विचार (योगीराज यशपाल जी)	१५/-
शेयर बाजार और आपका भाग्य (डॉ. उमेशपुरी ज्ञानेश्वर)	२५/-
ग्रह परिचय (डॉ. उमेशपुरी ज्ञानेश्वर)	३०/-
नक्षत्र ज्ञान (डॉ. उमेशपुरी ज्ञानेश्वर)	३०/-
लघु पाराशरी (सम्पादन : डॉ. उमेशपुरी ज्ञानेश्वर)	२०/-
ज्योतिष गुप्त प्रश्नोत्तरी (सम्पादन : डॉ. उमेशपुरी ज्ञानेश्वर)	२०/-
आपकी राशि क्या कहती है (डॉ. उमेशपुरी ज्ञानेश्वर)	२५/-
अंक बोलते हैं (डॉ. उमेशपुरी ज्ञानेश्वर)	४०/-
गोचर ज्योतिष (डॉ. उमेशपुरी ज्ञानेश्वर) (नया बड़ा संस्करण)	५०/-
वृहदवकहडाचक्रम् अर्थात् होड़ा चक्र (डॉ. उमेशपुरी ज्ञानेश्वर)	३०/-
शीघ्र बोध (डॉ. उमेशपुरी ज्ञानेश्वर)	३०/-
जन्म कुण्डली में ग्रह बाधा और निदान (पं. रामकृष्ण शर्मा 'राजर्षि')	३२/-

डाक द्वारा पुस्तकें मंगाने वाले यदि 100/- या इससे अधिक मूल्य की पुस्तकें मंगायें तो कुल पुस्तकों का मूल्य जोड़कर मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट भेजें, डाक व्यय हम स्वयं देंगें, रकम आने पर पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक पैकेट द्वारा भेज देंगें। यदि 100/- से कम मूल्य की पुस्तकें मंगायें तो मूल्य के साथ डाक व्यय 25/- जोड़कर रकम भेजें, हम पुस्तकें रजिस्ट्री द्वारा भेज देंगें। वी. पी. नहीं भेजी जाती है।

रणधीर प्रकाशन रेलवे रोड, हरिद्वार पिन कोड : 249401 • फोन : (0133) 426297-428510

श्री मार्तण्ड पंचांग ज्योतिषकार्यालय के नियम

हमारे यहां जन्मपत्र एवं वर्षफल शुद्धगणित से बनाये जाते हैं, जिनमें आयु,रोग,सन्तान,स्त्री,धन एवं भाग्योदय , तरक्की आदि का निर्णय किया जाता है ।

जन्मपत्र की फीस :- साधारण जन्मपत्र की फीस कम से कम 351 रु. और बडे जन्मपत्र की फीस 400 रु.है। डाकव्यय अलग होगा । विदेशी जन्मपत्र कम्प्यूटर से तैयार की गई सारणियों से बड़ी सावधानी के साथ बनाए जाते हैं , गणित विशेष परिश्रम से करनी पड़ती है, अत: जिनका जन्म विदेश में हुआ हो , उनके साधारण जन्मपत्र की फीस कम से कम 501रु. है। यदि आप वर्षफल बनवाना चाहते हैं, तो अपनी जन्मकुण्डली की नकल व पेशा लिख कर भेजें। जन्मपत्र बनवाने के लिए जन्म, तारीख, मास, सन्, जन्मसंवत् , जन्मटाईम , जन्मस्थान,जाति, पेशा एवं विशेष विचारणीय विषय भी लिखना न भूलें। टेवा की फीस 51 रु . है ।

वर्षफल की फीस – साधारणतया 101 रु.है। विस्तृत फलादेश वाले वर्षफल की फीस 151 रु. है। जिनकी जन्मकुण्डली न हो, वे व्यक्ति पत्र लिखने का समय ,तारीख एवं अपनी अन्दाजन उम्र ,पेशा, जाति अवश्य लिखें। वर्षफल का आर्डर देते समय यह लिखना जरूरी है, कि इसवर्ष आपके वर्षफल में किन बातों पर विशेष रूप से विचार किया जाए। शुद्ध विवाहमुहूर्त जानने की फीस 51 रु. है, और वर-कन्या की कुण्डली मिलान की फीस 151 रु. है । जन्मपत्र एवं वर्षफल हिन्दी और पंजाबी में सुन्दर और विस्तृत फलादेश सहित बनाए जाते हैं। आर्डर के साथ पूरी फीस पेशगी भेंजें। **विशेष प्रश्न की फीस 101 रु. है । सर्वसाधारण प्रश्न फीस 51 रु. है।**

नोट- प्रत्येक काम की पूरी फीस आर्डर के साथ ही भेजें । वी. पी. पी. नहीं की जाएगी । बिना पेशगी के कोई भी कार्य नहीं किया जायेगा।

घर बैठे प्रश्न पूछने की रीति- यद्यपि सामने आकर प्रश्न पूछने से सब शंकाएं निवृत्त हो जाती हैं, फिर भी यदि कोई सज्जन किसी विशेष कारण से प्रत्यक्ष न मिल सके, तो वह अपनी अन्दाजन उम्र, पेशा, जाति, प्रश्न लिखने की तारीख एवं टाईम लिख दें। जो प्रश्न पूछना हो उसे स्पष्ट शब्दों में खुलासा तौर पर लिखें।

व्यापारियों के लिए चांस -हम समय समय पर रुई, बिनौला, सरसों,गुड़, खांड एवं शेयर मार्कीट आदि के चांस देते हैं । वर्षों से अनेकों व्यापारी हमारे परामर्श से लाभ उठाते आ रहें हैं।

यदि आप भी लाभ उठाना चाहते हैं, तो आप आज ही 501 रु. का मनीआर्डर भेजकर एक मास की रिपोर्ट प्राप्त करें । वर्ष भर की फीस 5000 रु. है। जो व्यापारी साल में प्रमुख- प्रमुख एक-दो चांस ही चाहते हैं, 201 रु. भेजकर रजि.में नाम दर्ज करा सकते हैं । जिन व्यापारियों के नाम रजिस्टर में दर्ज होंगे, उन्हें ही अपने विचार भेज सकेंगे।

—: पण्डित जी से प्रत्यक्ष मिलने का समय :—

सर्दियों में- प्रात: ९ से २ बजे तक।

गर्मियों में- प्रात: ८ से 1 बजे तक।

दूर से आने वाले सज्जन पत्र द्वारा या टैलीफोन से पूज्य पण्डित जी से बातचीत का दिन एवं समय आने से पूर्व ही निश्चित्र कर लें।

पुंसवनी–
पुत्रदाता दिव्य–औषधि

इस ईश्वरप्रदत्त प्रभावयुक्त दिव्यौषधि को गर्भ के दूसरे मास के अन्त में सेवन करने से पुत्र ही उत्पन्न होता है । इस अद्भुत औषधि की प्रशंसा में असंख्य पत्र और ईनाम प्राप्त हुए हैं। मूल्य ३२५रु. पैकिंग एवं डाकव्यय सहित ३५१रु.भेंजे । वी. पी. पी. नहीं की जाएगी ।

सिद्ध शनियन्त्र – विधिपूर्वक शुभमुहूर्त में बने इस यन्त्र को धारण करने से शनिजन्य अशुभफल, पीड़ा, चिन्ता, आदि से मुक्ति मिलती है,अनुभव करें। भेंट-251 रु. है ।

श्री लक्ष्मी यन्त्र – अष्टगंधादि से विधिपूर्वक सिद्धमुहुर्त में बनाए गए इस यंत्र को विधिवत् पूजास्थान या गल्ले में रखने से लक्ष्मी की कृपा रहती है , कोष में भारी बरकत रहती है, तुजुर्बा लें । भेंट 501 रु. डाक व्यय अलग ।

अठराहा नाशक यन्त्र – जिन औरतों के प्यारे बच्चे देवदोष , गर्भदोष व अठराहा, मसानदोष के कारण मर जाते हैं, उनके लिए यह यन्त्र वरदानरूप सिद्ध हो चुका है। इस विधिपूर्वक निर्मित यन्त्र के प्रभाव से बच्चे दीर्घायु होकर सैकड़ों माता पिताओं को सुखी कर रहे हैं । तजुर्बा करके चमत्कार देखें । विधानपत्र यन्त्र के साथ भेजा जाता है। भेंट 251 रु. डाक व्यय पृथक् ।

सिद्ध गोपाल यन्त्र – इससिद्ध यन्त्र को विधिपूर्वक श्रद्धासहित स्त्री धारण करे, तो चिरंजीव पुत्र की प्राप्ति होती है । आर्डर देते समय स्त्री का नाम, जाति लिखें । विधानपत्र साथ भेजा जाएगा । भेंट २५१रु. डाकखर्च पृथक्।

गुरुवार को कार्यालय बन्द रहता है ।

पत्र व्यवहार के लिए पता- **पं.इन्दुशेखर शास्त्री , ज्योतिषाचार्य , एम. ए.**
श्री मार्तण्डपंचांग ज्योतिष कार्यालय ,
मु. पो. कुराली [रोपड़] पंजाब
फोन : [01888] 33277

...टैंग :- नमिता कम्प्यूटर ग्राफिक्स , कोठी नं० 1530, सैक्टर-11,चण्डीगढ़, Ph.code-0172-779137(PP)